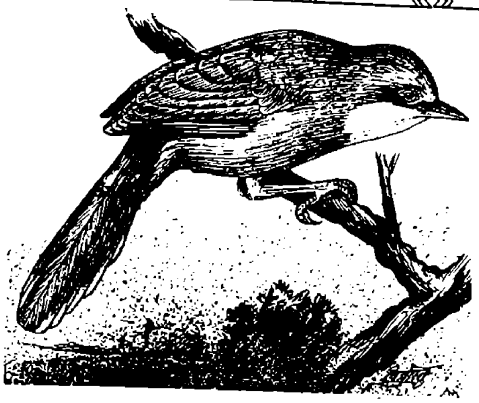
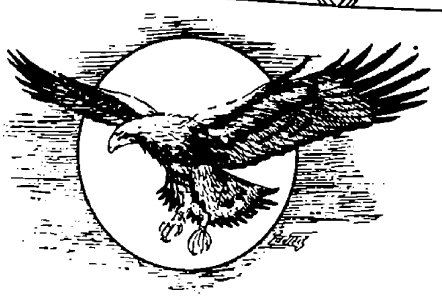
हिन्दी समिति ग्रन्थमाला :: २१८



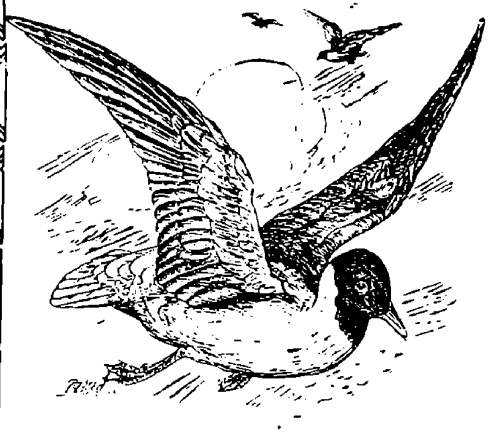


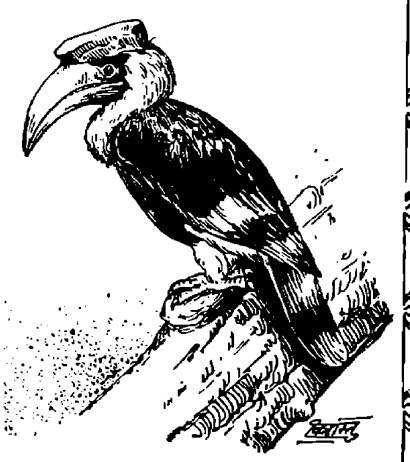


# भारतीय पक्षी

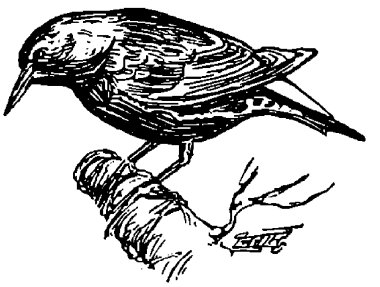
●

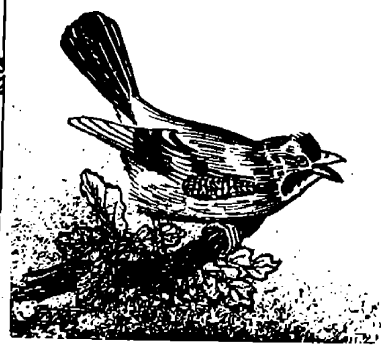
—सुरेश सिंह—

















● भारतीय पक्षी

प्रथम संस्करण : जनवरी, १९७४ ई०

● मूल्य : २० रुपये

● प्रकाशक

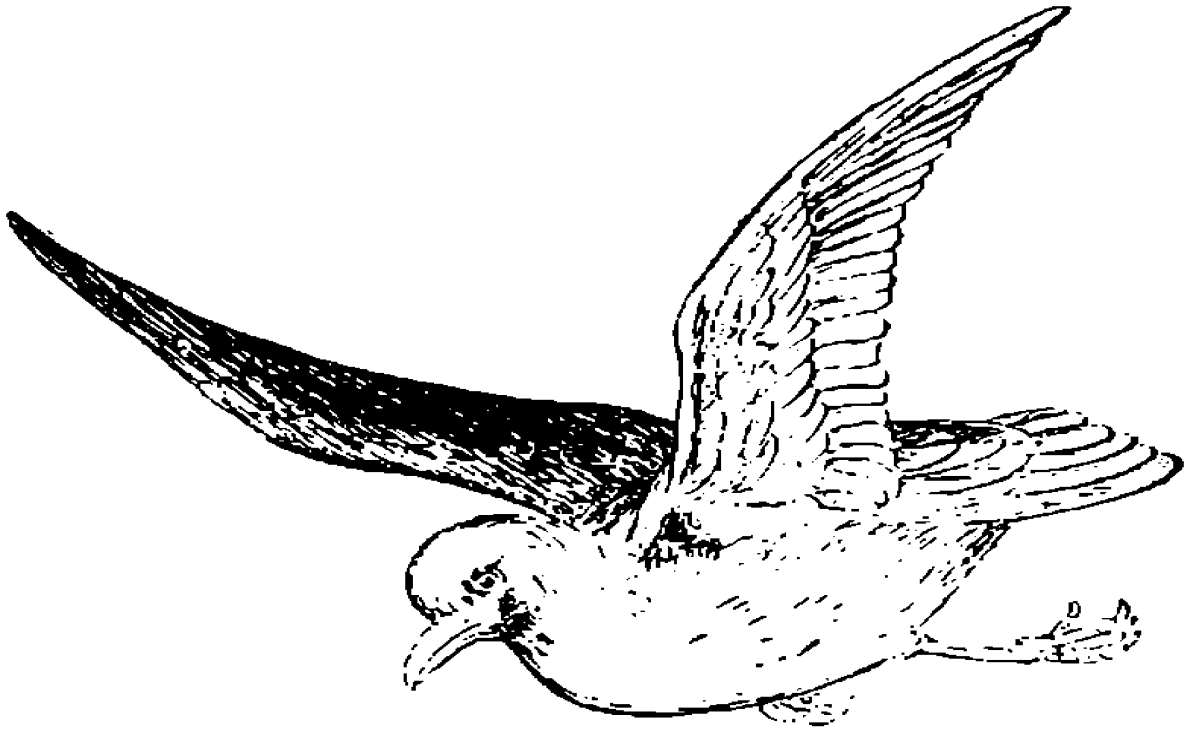
हिन्दी समिति

उत्तर प्रदेश शासन

'राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन'

महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ

● मुद्रक : जॉब प्रिण्टर्स, ११९ स्वामी विवेकानन्द मार्ग, इलाहाबाद



परम प्रिय प्रकाश को

सस्नेह

●

सुरेश सिंह

# हिन्दी काव्य में पक्षियों का चित्रण

हंसा बगुला एक-सा, मानसरोवर माहिं।
बग ढंढोरै माछरी, हंसा मोती खाँहिं ।। —कबीरदास

• • •

खंजन नयन रूप-रस माते,
अतिसय चारु चपल अनियारे पल-पिंजरा न समाते। —सूरदास

• • •

चातक कोकिल कीर चकोरा, कूजत विहंग नटत कल मोरा।।

• • •

ऊँची जाति पपीहरा, पियतन नीचौ नीर।
कै जाँचै घनश्याम सों, कै दुख सहै सरीर।।

• • •

चरन चौंच लोचन रंगौ, चलौ, मराली चाल।
छीर नीर बिबरन समय, बक उघरत तेहि काल।।

• • •

जानि सरद ऋतु खंजन आये। पाइ समय जिमि सुकृत सुहाये।। —तुलसीदास

• • •

नयन जो देखा कँवल भा, निरमल नीर सरीर।
हँसत जो देखा हंस भा, दसन-जोति नग हीर।। —जायसी

• • •

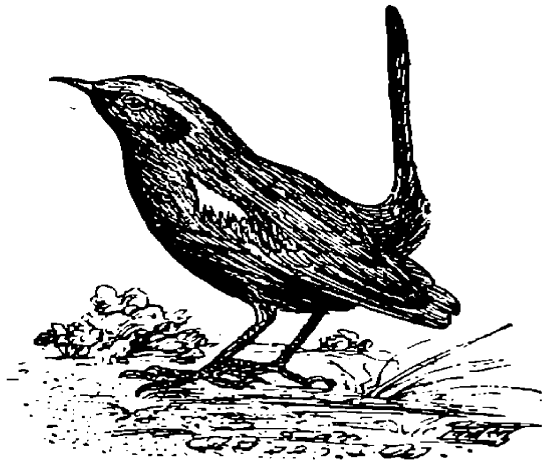
नाचत मंजुल मोर, भौंर साजत सारंगी।
करति कोकिला गान, तान तानति बहुरंगी।।
स्यामा सीटी देत, चटक चुटकी चुटकावत।
घूमि, झूमि, झुकि कल कपोत तबला गुटकावत।। —जगन्नाथदास 'रत्नाकर'

• • •

दादुर टर-टर करते, झिल्ली बजती झन-झन।
'म्याँव'-'म्याँव' रे मोर, 'पीउ'-'पीउ' चातक के गन।।
उड़ते सोन बलाक, आर्द्र सुख से कर क्रन्दन।
घुमड़-घुमड़ घिर मेघ गगन में भरते गर्जन।। —पन्त

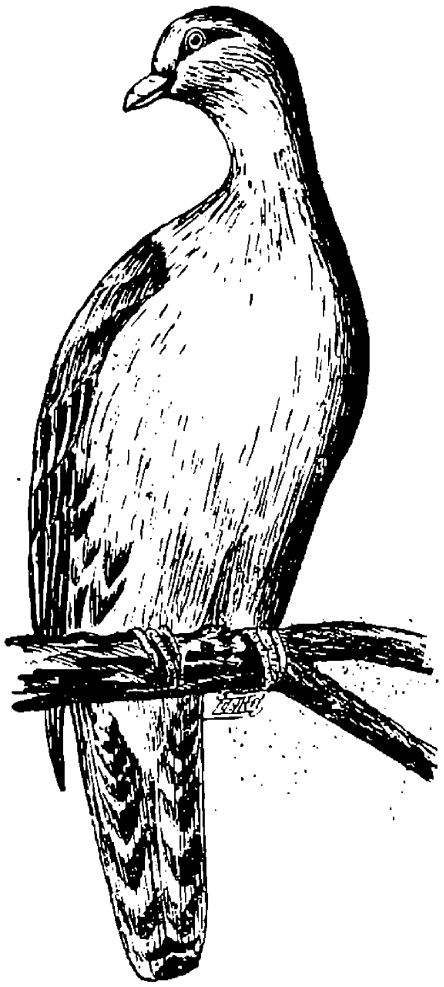
• • •

तरुवर की ऊँची डाली पर दो पंछी बैठे अनजाने,
दोनों का हृदय उछाल चले जीवन के दर्द भरे गाने
पतझड़ आयी, ले गयी उड़ा, वन-वन के सूखे पत्र-सुमन
दो पंछी मिले चमन में, पर चोंचों में लेकर शूल चले। —गोपाल सिंह नेपाली



# प्रकाशकीय

'भारतीय पक्षी' हिन्दी समिति का एक उत्कृष्ट और आवश्यक प्रकाशन है, यह लिखते हुए हमें सुख और सन्तोष होता है। नित्यप्रति हम नाना प्रकार के पक्षियों को देखते हैं और उनकी गति-विधि देखकर कभी उल्लसित और कभी विस्मित हो उठते हैं। घर के आँगन में विचरण और नील गगन में स्वच्छन्द विहार करने वाले दूरगामी पक्षियों को देखकर कुछ कुतूहल-सा होता है और हमारा मन भी उनके साथ उड़ने लगता है। प्रकृति के विशाल और व्यापक क्षेत्र में नाना रंग-रूप वाले द्विजकुल को देखकर विधाता की सृष्टि-रचना पर मुग्ध हो जाना पड़ता है। पक्षी, खग, द्विज, विहग, विहंगम, पतंग, पतत्री, शकुन्त, वय, विहाय, पत्त्री, गरुत्मान्, विकिर, अंडज, वाजी, नीडज, नगौक, चंचु-मृत्, नभंगम, नाड़ीचरण, पत्रवाह, द्युग आदि नामों से इस वर्ग के प्राणियों का स्मरण किया जाता है। जिस प्रकार मानव समाज में नाना प्रकार की प्रकृति और आचरण वाले व्यक्ति और समुदाय होते हैं, उसी प्रकार पक्षि-जगत् में भी यदि कुछ क्रूर, कुछ शिकारी, कुछ उद्दंड, कुछ स्वच्छन्द होते हैं तो कुछ सीधे-सादे और सरल प्रकृति के भी होते हैं। कुछ पक्षी घरेलू भी होते हैं और अनाहूत, अनिमन्त्रित और स्थायी अतिथि बनकर मनुष्य के घरों में स्वच्छन्द और अपनेपन के साथ विहार और निवास करते हैं। कुछ अपने रूप-रंग और वाणी के कारण पिंजरों में पाले-पोसे जाते हैं। हमारी इच्छा और जिज्ञासा होती है, हम इन्हें देखें, समझें और इन प्राणियों के बारे में भी अधिकाधिक जानकारी प्राप्त करें।



साहित्य और साहित्य-रचना में भी पक्षियों की विशद प्रेरणा और भूमिका रही है। क्रौंच-वध को देखकर वाल्मीकि की करुणा काव्यमयी होकर कविता के रूप में अवतरित हुई। मोर, हंस, काक, कपोत, कोकिल, चातक, पपीहा, खंजन आदि पक्षियों के सम्बन्ध में सरस, काव्यमय और आकर्षक विवरण संस्कृत और हिन्दी साहित्य में प्रचुरता से उपलब्ध है। प्रायः सभी कवियों और रसज्ञों ने इन पक्षियों की विरुदावली प्रस्तुत की है और इनके संबंध में अनेक गीत गाये हैं। कहने का आशय यह है कि पक्षियों की दुनिया हमारी जाति और जीवन के सर्वाधिक निकट है।

'**भारतीय पक्षी**' का प्रकाशन इसी उद्देश्य से प्रस्तुत है। संभवतः हिन्दी में इस प्रकार की यह प्रथम और प्रत्येक दृष्टि से उपयोगी पुस्तक है। हम इसके पूर्व '**जीव जगत्**' और '**शिकार के पक्षी**' नामक ग्रंथ प्रकाशित कर चुके हैं। दोनों ग्रंथ लोकप्रिय और सम्मानित हुए। इसी से प्रभावित होकर इन

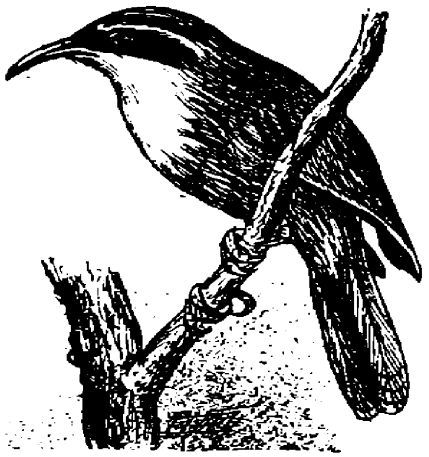
दोनों पुस्तकों के लेखक श्री सुरेश सिंह ने हमारे अनुरोध पर '**भारतीय पक्षी**' का प्रणयन किया है। श्री सुरेश सिंहजी का हिन्दी जगत् को परिचय देने की आवश्यकता नहीं; इन्होंने पशु-पक्षियों के सम्बन्ध में विस्तृत अध्ययन और अनुभव किया है, और अपना काफी समय और श्रमनिष्ठा और प्रतिष्ठा के साथ इस प्रकार के साहित्य-सर्जन में लगाया है। हमारे पाठक इस ग्रन्थ को देखकर प्रसन्न और प्रभावित होंगे, ऐसा विश्वास है। इसमें ४०० भारतीय पक्षियों का विस्तृत और रोचक विवरण है। लेखक ने अपनी विशद भूमिका में पक्षियों की शरीर-रचना, प्रकृति, स्वभाव, रूप-गुण, निवास और प्रवास एवं उनके आचरण और गति-विधि का आकलन किया है। हम इसे विशेष आकर्षक, मनोहर और अधिक चित्रों से विभूषित करना चाहते थे, किन्तु कागज की महार्घता तथा अन्य सामग्रियों की दुर्लभता के कारण इसको इच्छित रूप न दे सके। फिर भी, इसकी बाह्य रूपरेखा से, इसकी भाषा, भाव और सरस शैली से हमारे पाठक सन्तुष्ट होंगे, इस आशा के साथ हिन्दी-जगत् को यह ग्रन्थ समर्पित कर रहे हैं। इसका मूल्य व्ययसाध्य होते हुए भी कम रखा गया है, ताकि अधिकाधिक व्यक्तियों और विद्यालयों के पास यह सहज रूप में पहुँच सके।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन में चिड़ियों के चितेरे 'चित्रास्तु' के अतिरिक्त हमें जिन व्यक्तियों से सहयोग मिला है, हम उनके कृतज्ञ हैं। जाब प्रिण्टर्स (प्रयाग) ने मूल पाठ एवं जी० डब्लू० लारी तथा श्रीमन्त एम० एल० भार्गव (लखनऊ) ने मनोयोग से रंगीन तथा सादे चित्र मुद्रित किये हैं।

हमें विश्वास है, '**भारतीय पक्षी**' का सर्वतोभावेन स्वागत होगा, और यह ग्रन्थ प्रत्येक परिवार और पुस्तकालय के लिए 'आवश्यक' सिद्ध होगा। हमारी इस कामना को बल मिले, और हम इस दिशा में अन्य अनेक ग्रन्थ प्रकाशित करने के लिए समर्थ हो सकें, इस प्रकाशन का यही उद्देश्य है। 'गणतन्त्र-दिवस' पर हिन्दी समिति की ओर से पुस्तक-जगत् को हमारी यह भेंट मनोरम और लोकप्रिय सिद्ध होगी, इस कामना के साथ,

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन
लखनऊ
गणतन्त्र-दिवस, १९७४

**काशीनाथ उपाध्याय 'भ्रमर'**
सचिव, हिन्दी समिति
उत्तर प्रदेश शासन



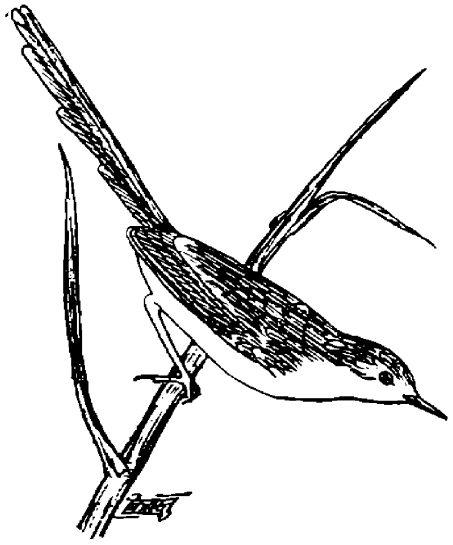


उपहार

.....

.....

.....



## इस ग्रन्थ में

(१) लेखक की भूमिका
(२) मूल ग्रन्थ
(३) पक्षियों की सूची
(४) अनुक्रमणिका

चित्र

(१) हंस
(२) मयूर : राष्ट्रीय पक्षी
(३) विविध १४ पक्षी (रंगीन)
(४) विविध ८ पक्षी (रंगीन)
(५) विविध ११ पक्षी (रंगीन)
(६) विविध ६ पक्षी (रंगीन)
(७) विविध ६ पक्षी (रंगीन)
(८) उड़ान
(९) नीड़ और निवास
इनके अतिरिक्त १४५ पक्षियों के रेखाचित्र

# इस पुस्तक में


पृष्ठ

● शाखाशायी वर्ग (Order PASSERES.) ●

**काक परिवार (Family CORVIDAE)**

डोम कौआ .. .. १
काला कौआ .. .. २
पाती कौआ .. २
पहाड़ी कौआ .. ३
डिगडाल .. ४
मुटरी .. ५
बनसर्रा .. ५
जाग .. ६

**गंगरा परिवार (Family PARIDAE)**

राम गंगरा .. ७
हरी गंगरा .. ७
काली गंगरा .. ८
पीली गंगरा .. .. ९
ललसिरी गंगरा .. .. ९

**कठफोरिया परिवार (Family SITTIDAE)**

ललमेटी कठफोरिया .. .. १०
निलछती कठफोरिया .. .. ११

**चिलचिल परिवार (Family TIMALIDAE)**

सितकंठी चिलचिल .. .. ११
ललसिरी चिलचिल .. .. १२

पृष्ठ

सतरंगी चिलचिल .. .. १२
तितली चिलचिल .. .. १३
पहाड़ी चिलचिल .. .. १४
सतबहनी चरखी .. .. १४
सितसिरी चरखी .. .. १५
चरखी .. .. १६
गौगाई .. .. १७
दक्षिणी खीहा .. .. १७
ललमुखी खीहा .. .. १८
चुरचुरा .. .. १९
गुलाब चश्म .. .. १९
खैर .. .. २०

पृष्ठ

कलसिरी चरखी .. .. २०
सिलेटी चरखी .. .. २१
सिबिया .. .. २२
नान-चुरा .. .. २२
सौबिगा .. .. २३
हरेवा .. .. २४
नेपाली हरेवा .. .. २४

**बुलबुल परिवार (Family PYCNONOTIDAE)**

बन बकरा .. .. २५
गुलदुम बुलबुल .. .. २६
काँगड़ा बुलबुल .. .. २७
सिपाही बुलबुल .. .. २७
पीली बुलबुल .. .. २८
मछरिया बुलबुल .. .. २९

**रेंगनी परिवार (Family CERTHIIDAE)**

पहाड़ी रेंगनी .. .. २९
मुसचिरी .. .. ३०

**चुबिया परिवार (Family- CINCLIDAE)**

चुबिया .. .. ३१

**पिद्दा परिवार (Family TURDIDAE)**

पिद्दा .. .. ३२
काला पिद्दा .. .. ३२
कलचिरी .. .. ३३
घुमैला पिद्दा .. .. ३४
पिदारा .. .. ३४
ढोलना .. .. ३५
देसी सावाँ .. .. ३६
पुली .. .. ३६
थिरथिरा .. .. ३७
सितसिरा थिरथिरा .. .. ३७
सिलेटी थिरथिरा .. .. ३८
निलकंठी .. .. ३९
दामा .. .. ४०
दँहगल .. .. ४०
श्यामा .. .. ४१
कंडू .. .. ४१
कस्तूरा .. .. ४२

कस्तूरी .. ४३
ललसिरी कस्तूरी .. ४३
कृष्ण पट्टी .. ४४
पंडू .. ४५
कालजीत .. ४५
मालावार कालजीत .. .. ४६

**मछरमरनी परिवार (Family MSUSSCICAPIDAE)**

सिफिया ४७
श्यामचिरी ४७
निलकटकटिया ४८
नीली मछमरनी ४८
खैरी मछमरनी ४९
पिलपेटी मछमरनी ४९
जक्की ५०
दूधराज ५१
मछरेटा ५१
छतरदुमा .. .. ५२

**लहटोरा परिवार (Family LANI IDAE)**

दूधिया लहटोरा .. ५३
पचानक .. ५३
माटिया लहटोरा .. .. ५४
काजला लहटोरा .. .. ५५
लहटोरिया .. ५५
खरकटा लहटोरा .. .. ५६

**सहेली परिवार (Family CAMPEPHAGIDAE)**

सहेली .. .. ५७
छोटी सहेली .. .. ५७
राज लाल .. .. ५८
कलसिरी कसया .. .. ५९
कसया .. .. ५९

**कठगोल परिवार (Family ARTHAMIDAE)**

कठगोल .. .. ६०

**भुजंगा परिवार (Family CICRURIDAE)**

भुजंगा .. .. ६१
साहिम .. .. ६१
केशराज .. .. ६२
भृंगराज .. .. ६३

**फुदकी परिवार (Family SYLVIIDAE)**

पोदेना .. .. ६४
छोटा पोदेना .. .. ६४
दरजिन फुदकी .. .. ६५
टुनटुनी फुदकी .. ६६
पिटपिटी फुदकी .. .. ६६
टिकटिकी फुदकी .. .. ६७
चुटचुटिया फुदकी .. .. ६८
हरी फुदकी .. .. ६८
घानी फुदकी .. .. ६९
अवलखी फुदकी .. .. ६९
मछमरनी फुदकी .. .. ७०
पहाड़ी फुदकी .. ७०
डोरिया फुदकी .. ७१
सिलेटी फुदकी .. ७२
जंगली फुदकी .. .. ७२
घुरिया फुदकी .. .. ७३

**नीलमी परिवार (Family IRENIDAE)**

नीलमी .. ७४

**पीलक परिवार (Family ORIOLIDAE)**

पीलक .. .. ७५
हरदुआ .. .. ७५

**पहाड़ी मैना परिवार (Family GRACULIDAE)**

पहाड़ी मैना .. .. ७६

**मैना परिवार (Family STURNIDAE)**

टेसुआरी .. .. ७७
तिलोरा .. ७७
गलार .. .. ७८
पवई .. ७८
किलहँटा .. .. ७९
चही .. ८०
गलगल ८०
अबलखा मैना .. ८१

**बया परिवार (Family PLOCEIDAE)**

बया .. ८१
तेलिया बया .. .. ८२
चिड़क्का .. .. ८३
तेलिया मुनियाँ .. .. ८३
लाल मुनियाँ .. .. ८४

**चटक परिवार (Family FRINGILLIDAE)**

नकशी .. .. ८५
नकलोल .. ८५
गुलाबी तूती .. ८६
हरी तूती .. .. ८६
राजी .. .. ८७

गौरैया .. .. ८८
पहाड़ी गौरैया .. .. ८८
पथर चिरटा .. .. ८९
पहाड़ी चिरटा .. .. ९०
गंदम .. .. ९१
ललसिरा चिरटा .. .. ९१
चोटीदार पथर चिरटा .. .. ९२
छोटा चिरटा .. .. ९३

**अबाबील परिवार (Family HIRUDINIDAE)**

अबाली .. ९३
खैर अबाली .. ९४
लीशरा .. ९५
अबाबील .. .. ९५
बैंगन कुटी .. ९६
ललपिठी अबाबील .. ९७

**खंजन परिवार (Family MOTACILLIDAE)**

खंजन .. .. ९८
ममोला .. .. ९८
खैरैया .. ९९
पिलकिया .. .. १००
मुसचिरी .. .. १००
चिचरी .. .. १०१
चिल्लू .. .. १०२
रूगेल .. .. १०२

**भरत परिवार (Family ALAUDIDAE)**

भरत .. १०३
बगेरी .. १०४
रैंतल .. १०५
अगिन .. .. १०५
मालती .. .. १०६
अगिया .. .. १०६
चंडूल .. १०७
भरदूल .. १०७
उसर बगेरी .. .. १०८

**बाबुना परिवार (Family ZOSTEROPIDAE)**

बाबुना .. १०९

**शकरखोरा परिवार (Family NECTARINIDAE)**

पिलपिठा शकरखोरा .. १०९
शकरखोरा .. ११०
जुगजुगी .. १११

**फुलचुही परिवार (Family DICAEIDAE)**

फुलचुही .. .. ११२
फुलसुंघी .. .. ११२

**सतरंगा परिवार (Family PITTIDAE)**

सतरंगा .. .. ११३

**● काष्ठ-कुट्ट-कठफोर वर्ग (Order PICI) ●**

**कठफोर परिवार (Family PICIDAE)**

टकटोला .. ११४
तुरकान .. ११४
चीतल कठफोर .. .. ११५
छोटा कठफोर .. .. ११६
ललपिठा कठफोर .. .. ११६
सोनपिठा कठफोर .. .. ११७
गर्दन ऐंठा .. .. ११७

**बसंता परिवार (Family CAPITONIDAE)**

भायहो .. .. ११८
बड़ा बसंता .. .. ११९
कुदरू .. .. ११९
ठठेरा .. .. १२०

**नीलकण्ठ वर्ग (Order ANISODACTYLI)**

**● नीलकंठ परिवार (Family CORACIADAE) ●**

नीलकंठ .. .. १२१

**पतेना परिवार (Family MEROPIDAE)**

पतेना .. .. १२२
पतिरंग .. .. १२२

**कौड़िल्ला परिवार (Family ALCEDINIDAE)**

कौड़िल्ला .. .. १२३
कौड़िल्ली .. .. १२४
किलकिला .. .. १२५

**घनेश परिवार (Family BUCEROTIDAE)**

होमराय .. .. १२५
घनेश .. .. १२६

**हुदहुद परिवार (Family UPUPIDAE)**

हुदहुद .. .. १२७

**● बतासी वर्ग (Order MACROCHIRES) ●**

**बतासी परिवार (Family MICROPODIDAE)**

बतासी १२८
तलचट्टा १२९
चोटीदार बतासी १३०

छपका परिवार (Family CAPRIMULGIDAE)

छपका .. .. १३१

● कोयल वर्ग (Order COCCYGES) ●

कोयल परिवार (Family CUCULIDAE)

फुप्पू .. .. १३२
काफल पाक्को .. .. १३३
पपीहा .. .. १३३
वन कोकिल .. .. १३४
चातक .. .. १३५
कोयल .. .. १३६
मालकोहा .. .. १३६
सिरकीर .. .. १३७
महोख .. .. १३७

● शुक वर्ग (Order PSITTACI) ●

शुक परिवार (Family PSITTACIDAE)

परवत्ता .. .. १३८
तोता .. .. १३९
सुग्गी .. .. १४०
मदनगौर तोता .. .. १४०

● उलूक वर्ग (Order STRIGES) ●

उलूक परिवार (Family STRIGIDAE)

करपेंची उल्लू .. .. १४१
मुआ .. .. १४१
घुग्घू .. .. १४२
हूहू .. .. १४२
बब्बू .. .. १४३
रेरुआ .. .. १४३
डुंडुल .. .. १४४
चितला खूसट .. .. १४५
करैल .. .. १४५
जंगली चुगद .. .. १४६

● गृद्ध वर्ग (Order ACCIPITRES) ●

गिद्ध परिवार (Family GYPIDAE)

राज गिद्ध .. .. १४६
पहाड़ी गिद्ध .. .. १४७
चमर गिद्ध .. .. १४८
गोबर गिद्ध .. .. १४९

श्येन परिवार (Family ACCIPITRES)

अरगुल .. १४९
उकाब .. .. १५०
गरुड़ .. .. १५१
शाह बाज .. .. १५२
दोगरा चील .. १५३
टीसा .. .. १५४
पटरस .. .. १५४
मछारंग .. .. १५५
खेमकरी .. .. १५६
चील .. .. १५७
कुतर .. १५७
बाज .. .. १५८
काली चील .. .. १५९
मुसमार .. .. १६०
शिकरा .. .. १६०
लगर .. .. १६१
बहरी .. .. १६२
तुरमुती .. .. १६२
खैरमुतिया .. .. १६३

● कपोत वर्ग (Order COLUMBAE) ●

कपोत परिवार (Family COLUMBIDAE)

हारिल .. .. १६४
कोकला .. .. १६५
राज हारिल .. .. १६६
कबूतर .. .. १६६
काल्हक फ़ाखता .. .. १६७
चितरोखा फ़ाखता .. .. १६७
टुटरूँ फ़ाखता .. .. १६८
घवर फ़ाखता .. .. १६८
इंटकोहरी फ़ाखता .. .. १६९
तुसल .. .. १६९

● भट-तीतर वर्ग (Order PTEROCLETES) ●

भटतीतर परिवार (Family PTEROCLIDAE)

बनचूर .. .. १७०
भटबन .. .. १७१
कुहार भटतीतर .. .. १७२
गुटू भटतीतर .. .. १७२

● तित्तिर वर्ग (Order GALLINAE) ●

तित्तिर परिवार (Family PHASIANIDAE)

मोर .. .. १७३
कुमरी .. .. १७४
जंगली मुरगी .. .. १७५

कालिज .. .. १७६
कोकलास .. .. १७७
पोकरास .. .. १७८
जोवार .. .. १७८
कठमोर .. .. १७९
चिलमें .. .. १८०
मोनाल .. १८०
चेड़ .. १८२
लुंगी .. १८२
परवतिया १८३
चकोत्री .. .. १८३
असकोल .. १८४
घाघस बटेर .. १८५
चिनिंग बटेर .. १८६
गिरजा बटई .. .. १८६
रोली बटई .. .. १८७
ककुनी बटई .. .. १८८
सरसैया बटई .. १८८
गोपाल बटई .. १८९
गुड़रू बटई .. १८९
पहाड़ी बटेर .. १९०
चकोर १९१
सी सी तीतर .. १९२
राम चकोर .. १९३
काला तीतर .. १९३
तेलिया तीतर .. १९४
तीतर .. १९५
पिउरा तीतर .. १९६
जंगूरिया तीतर .. १९६
चीनी तीतर .. १९७
केहा तीतर .. १९८
सन तीतर .. .. १९८
बन तीतर .. .. १९९

● लवा वर्ग (Order HEMIPODII) ●

लवा परिवार (Family TURNICIDAE)

छोटा लवा .. १९९
लवा .. २००

● कुलंग वर्ग (Order GRALLAE) ●

जल-मुरगी परिवार (Family RALLIDAE)

डाउक .. .. २०१
जल-मुरगी .. .. २०१
खैरी पनकुकरी .. .. २०२
छोटी जलबोदर .. .. २०३
पनकुकरी .. .. २०३
छोटी पनकुकरी .. .. २०४
गोदन .. .. २०५
कैमा .. .. २०५
कोरा .. .. २०६
टिकरी .. .. २०७

कुलंग परिवार (Family GRUIDAE)

कुलंग .. .. २०७
करकरा .. .. २०८
सारस .. .. २०९

चरत परिवार (Family OTIDIDAE)

खरमोर .. .. २१०
चरत .. .. २११
सोहन चिड़िया .. .. २१२
होबार .. .. २१३

● टिट्टिभ वर्ग (Order LIMICOLAE) ●

खरबानक परिवार (Family BURHINIDAE)

खरबानक .. .. २१४
बड़सिरी .. .. २१४

नुकरी परिवार (Family GLAREOLIDAE)

नुकरी .. .. २१५
कजरी .. .. २१५

जलमखानी परिवार (Family JACANIDAE)

जल मखानी .. .. २१६
जलमोर .. .. २१७

टिटिहरी परिवार (Family CHARADRUDAE)

टिटिहरी .. .. २१७
गंगटिटी .. .. २१७
जरदी .. .. २१८
जीरा .. .. २१९
बटान .. .. २२०
लमगोड़ा .. .. २२०
सामुक भंगा .. .. २२१
सूजी .. .. २२१
करलू .. .. २२२
गोइँयार .. .. २२३
गुदेरा .. २२३
पनेवा .. .. २२४
टुटआरी .. .. २२४
चुपका .. .. २२५

टिमटिमा .. .. २२६
टिलुआ .. .. २२६
सूरमा .. .. २२७
गेहवाला .. .. २२७
पनलव .. .. २२८
रूझनी .. .. २२८
गौर .. .. २२९
सिमतीतर .. .. २२९
चहा .. .. २३०
मरक .. .. २३१
बनचहा .. .. २३२
छोटा चहा .. .. २३२

**ओहारी परिवार (Family ROSTRATULIDAE)**

ओहारी .. .. २३३

**● कुररी वर्ग (Order GAVIAE) ●**

**कुररी परिवार (Family LARIDAE)**

सामुद्रिक .. .. २३३
घोमरा .. .. २३४
कुररी .. .. २३५
बड़ी कुररी .. .. २३५
कलपेटी कुररी .. .. २३६
छोटी कुररी .. .. २३७
पनचिरा .. .. २३७

**● जलसिंह वर्ग (Order STEGANOPODES) ●**

**जलसिंह परिवार (Family PELECANIDAE)**

जलसिंह .. .. २३८

**पनकौआ परिवार (Family PHALACROCORACIDAE)**

छोटा पन-कौआ .. .. २३८
पनकौआ .. .. २३९
बानवर .. .. २३९

**● महाबक वर्ग (Order HERODIONES) ●**

**बुज्जा परिवार (Family IBIDIDAE)**

सफेद बुज्जा .. .. २४०
काला बुज्जा .. .. २४१
कौआरी .. .. २४१

**दाबिल परिवार (Family PLATALEIDAE)**

दाबिल .. .. २४२

**लगलग परिवार (Family CICONIIDAE)**

लगलग .. .. २४२
लोहा सारंग .. .. २४३
सुरमई .. .. २४४
चमरघेंच .. .. २४४
छोटा चमरघेंच .. .. २४५
जाँघिल .. .. २४६
घोंघिल .. .. २४६
गैंवर .. .. २४७

**बक परिवार (Family ARDIEDAE)**

आँजन बगुला .. .. २४७
नरी बगुला .. .. २४८
करछिया बगुला .. .. २४९
मलंग बगुला .. २४९
गाय बगुला .. .. २५०
चमर बगुली .. .. २५१
वाक .. .. २५१
खैरी बगुली .. .. २५२

**● हंस वर्ग (Order ANSERES) ●**

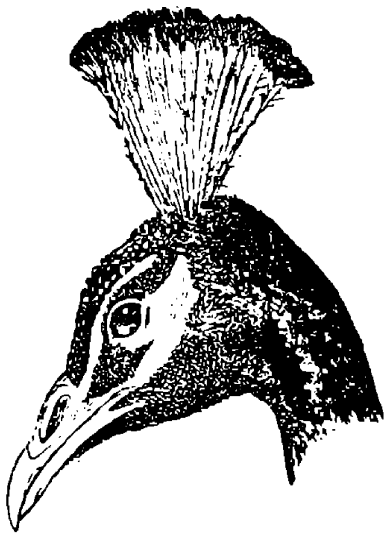
**हंस परिवार (Famliy ANATIDAE)**

हंज .. .. २५२
हंस .. .. २५३
देवहंस .. .. २५४
सवन .. .. २५४
बड़ी बत .. २५५
नकटा .. .. २५६
छोटी सिलही .. .. २५७
बड़ी सिलही .. .. २५८
बेर .. .. २५८
गिर्री .. .. २५९
शाह चकवा .. .. २६०
सुरखाब .. २६०
मैल .. २६२
पतेरा .. २६२
चैती .. २६३
चैता .. .. २६४
नीलसर .. .. २६५
सीखपर .. .. २६६
तिदारी .. .. २६७
बुड़ार .. .. २६८
लालसर .. .. २६९
करछिया .. .. २६९
अबलख .. .. २७०
निहनी .. .. २७१
आरी चोंच .. .. २७२

**● पनतितरी वर्ग (Order PYGOPODES) ●**

**पनतितरी परिवार (Family PODICIPIDAE)**

पनतिरी .. .. २७३
डुबडुबी .. .. २७३



# भूमिका

हमारे देश में पक्षिशास्त्र का अध्ययन कभी वैज्ञानिक ढंग से नहीं हुआ। इसीसे इस विषय की कोई प्रामाणिक पुस्तक हमारे साहित्य में उपलब्ध नहीं है। लेकिन दिन भर आकाश में चक्कर लगाने वाली इन सुन्दर चिड़ियों ने हमारे विद्वानों का ध्यान अपनी ओर आर्कषित न किया हो, यह कैसे संभव था।

एक ओर जहाँ जीवन की जटिल समस्याओं को सुलझाने में व्यस्त ऋषि-मुनि अपने तपोवनों में पशु-पक्षी पालने के लिए समय निकाल लेते थे, वहीं कल्पना के पंख लगाकर दूर की उड़ान भरने वाले हमारे कवियों ने गगन-विहारी पक्षियों से हमारे साहित्य-उद्यान को सुसज्जित करने में कोई कोर-कसर नहीं उठा रखी। उन्होंने पक्षियों के रंग-रूप, बोली, उड़ान, सौन्दर्य-प्रदर्शन तथा प्रणय-क्रीड़ा से प्रभावित होकर अपने नख-शिख, प्राकृतिक सौन्दर्य और विरह-वर्णन में हमारे कतिपय पक्षियों को लाकर उन्हें साहित्य में अमर कर दिया है। इन पक्षियों के बारे में कुछ काल्पनिक कथाएँ भी इन कवियों ने गढ़ ली हैं जो सत्य न होने पर भी इतनी सुन्दर हैं कि आज भी साहित्य के क्षेत्र में वे उसी प्रकार व्यवहृत होती हैं--चन्द्र-चकोर का प्रेम, चातक की स्वाति-जल की रटन, हंस का नीर-क्षीर विवेक और चकवा-चकई की रात को बिलग हो जाने की कथाएँ इतनी बार इन कवियों ने दुहरायी हैं कि साधारण लोगों के लिए वे सत्य जैसी हो गयी हैं।

हमें, जो कुछ भी हो, इतना तो मानना ही पड़ेगा कि हमारे यहाँ पक्षियों का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन भले ही न हुआ हो और उनके वर्गीकरण, शरीर-रचना, विकास तथा प्रवास-गमन आदि विषयों पर आधुनिक ढंग से भले ही न विचार किया गया हो, लेकिन पक्षियों की ओर से हमारे विद्वान कभी उदासीन नहीं रहे। कोयल की दूसरे के घोंसले में अंडे देने की क्रिया, जिसे आज-कल के वैज्ञानिक भी पूर्णरूप से नहीं समझ पाये हैं, हमारे यहाँ के विद्वान जानते थे। उन्होंने अपने ढंग से पक्षियों का इतना सूक्ष्म निरीक्षण किया है जैसा संसार के किसी और देश में पहले नहीं किया गया।

हंस, मयूर, शुक, सारिका तथा चक्रवाक आदि कुछ पक्षी हमारे संस्कृत साहित्य में वर्णित हैं लेकिन हमारी ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली के साहित्योद्यान में जिन चिड़ियों का वर्णन मिलता है, उनमें मुख्य हैं हंस, चक्रवाक या चकई-चकवा, मोर, तोता, मैना, खंजन, कौआ, बगुला, कबूतर, चकोर, कोयल और पपीहा।

हमारे साहित्य के सूरदास, तुलसीदास और जायसी सरीखे महाकवियों ने अपनी रचनाओं में पक्षियों का विशद वर्णन किया है। गोस्वामीजी ने तो काक-भुशुण्डि के मुख से 'रामचरित-मानस' कहला कर कौए को अमर बना दिया है। सूरदासजी ने भी भ्रमर-गीत में काले वर्ण वालों के निर्मोही स्वभाव का वर्णन करते समय कौए को नहीं भुलाया। लेकिन चपल नेत्रों के लिए उनकी खंजन की उपमा लाखों में एक है। जिसने चपल नेत्रों वाली इन चितकबरी चंचल चिड़ियों को मैदानों में इधर-उधर घूमते-फिरते देखा है, वही इसका रस ले सकता है।

जायसी तो पक्षियों के वर्णन में सबसे आगे बढ़ गये हैं। उनके 'पदमावत' में पक्षियों का जैसा सुन्दर वर्णन मिलता है वैसा हिन्दी साहित्य में और कहीं नहीं मिलता। उन्होंने केवल काल्पनिक कथाओं पर ही संतोष नहीं किया वरन् अपने सूक्ष्म निरीक्षण से भी काफी मदद ली है। हमें 'पद्मावत' में पक्षियों के साहित्यिक नामों के साथ ही साथ उनके लोकप्रिय प्रचलित नामों का भी पता चलता है।

अब हम प्रत्येक 'साहित्यिक' पक्षी के सम्बन्ध में अलग-अलग विचार करेंगे जिससे हमें ज्ञात हो जाय कि उनसे हमारे साहित्य-कार क्या-क्या काम लेते हैं। पहले कौए को ही लें, क्योंकि इसका अभी उल्लेख हो चुका है। इसका रंग कवियों को प्रिय नहीं। रंग और स्वभाव भी अच्छा नहीं अतः इसका वर्णन कवियों ने बोली के मामले में कोयल और रंग के मामले में हंस या बगुले की तुलना में किया है।

हंस अपनी सुन्दर चाल के लिए याद किया जाता है जो ठीक ही है; लेकिन साथ ही साथ इसे दूध और पानी के अलग करने का काम भी कवियों ने सौंप दिया है जो सत्य न होने पर भी सुन्दर है। इसी तरह इस सुन्दर पक्षी के रहने के लिए मानसरोवर और उसके चुगने के लिए मोती की जो कल्पना कवियों ने की है, वह ठीक ही है।

हंस के बाद कोयल और पपीहा आते हैं जो जान पड़ता है जैसे विरहियों का दिल दुखाने के लिए ही बनाये गये हों। कोयल तो स्वयं विरह में जल-जलकर काली हो गयी है। लेकिन पपीहा 'पी कहाँ–पी कहाँ' रटते-रटते प्राण दे देता है लेकिन सिवा स्वाति-जल के और दूसरा जल नहीं पीता। उधर चकोर चन्द्रमा के वियोग में चिनगारी को चन्द्रमा के टुकड़े समझकर खा लेता है और उसी की ओर देखता रहता है, भले ही उसकी गरदन क्यों न टूट जाये। इसी प्रकार रात होते ही चकवा-चकई बिछुड़ कर एक दूसरे से अलग हो जाते हैं और सबेरा होने पर कहीं जाकर वे एक दूसरे से मिलते हैं। इस प्रकार इन कवियों ने इन पक्षियों के बारे में जो काल्पनिक कथाओं का निर्माण किया है उनसे हमारा साहित्य भरा पड़ा है।

तोता जहाँ किस्से सुनाने और प्रेमी-प्रेमिकाओं का संदेश ले जाने का काम करता है वहीं उसकी टेढ़ी चोंच नायिकाओं की नाक की तुलना में याद की जाती है। मैना केवल किस्से सुनाती है और कबूतर तो प्रेम का प्रतीक ही माना जाता है। लेकिन गुणों से हीन सफेद दूध जैसे पर वाले बगुले जब पंक्ति बाँधकर नीलाकाश में उड़ते हैं तो कौन-सा भावुक हृदय है जो इस दृश्य को देखकर पुलकित नहीं हो जाता।

इस प्रकार हमारे साहित्य में जिन पक्षियों को स्थान मिला है उनका संक्षिप्त वर्णन ऊपर दिया जा चुका है, लेकिन इनके अलावा हमारी सैकड़ों चिड़ियाँ छूट ही गयीं, जिनके वर्णन की कौन कहे आज हम जिनका नाम तक नहीं जानते। इसका मुख्य कारण यह है कि हमारे देश में अभी कविता का काल समाप्त नहीं हुआ था और हमारा सारा साहित्य पद्य की शृंखला में जकड़ा था। हमारे गद्य की कोई रूप-रेखा नहीं बनी थी और बिना गद्य के परिष्कार के इस प्रकार के वैज्ञानिक विषयों पर लिखा जाना संभव नहीं था।

लेकिन इस संक्रान्ति काल में जो विदेशी हमारे ऊपर हुकूमत कर रहे थे वे बड़े विद्या-प्रेमी और लगन के आदमी थे। उन्होंने हमारी भाषा, व्याकरण आदि के साथ ही साथ हमारे जीव-विज्ञान की ओर जितना अथक परिश्रम किया है उसे हम कभी नहीं भुला सकते। आज हमारे पास अपने देश के जीव-विज्ञान का जो कुछ भी वैज्ञानिक लेखा-जोखा है वह उन्हीं लोगों के कठिन परिश्रम का फल है और यदि हम उनकी डाली हुई नींव पर निरन्तर काम करते रहें तो हमारा पक्षिशास्त्र सर्वांग-पूर्ण हो सकता है।

हम अपने भारतीय पक्षिशास्त्र को, जो अभी शैशवकाल में ही है, इस प्रकार चार भागों में बाँट सकते हैं :

पहला काल जरडन और ब्लिथ का है। इस काल में श्री जरडन ( Jerdon ) तथा श्री ब्लिथ ( Blyth ) ने पक्षियों के अन्वेषण का कार्य बड़े परिश्रम से किया है। सन् १८६२ में जरडन ने भारत के पक्षी (Birds of India) नामक पुस्तक निकाली जो उस समय की अमूल्य पुस्तक थी।

दूसरा काल ह्यूम का कहा जाता है। इस काल में श्री ह्यूम ( Allan Hume ) प्रमुख रहे। ये वे ही मिस्टर ह्यूम हैं जिहोंने भारतीय कांग्रेस की स्थापना की थी। इन्होंने बहुत-से विद्वान पक्षिशास्त्रियों का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया और उनकी सहायता से इस ओर प्रशंसनीय कार्य किया। इस समय उनके कार्य का विवरण हमें पुस्तकों के रूप में तो मिलता ही है साथ ही साथ उनके सहयोग से 'स्ट्रे फेदर्स' ( Stray Feathers ) नाम की एक पत्रिका भी निकाली गयी जिसमें इस विषय के अच्छे तथा गम्भीर लेख निकले। यह पत्रिका सन् १८८८ तक निकलती रही।

तीसरा काल ब्लेन फोर्ड तथा ओट्स का है, जिसमें श्री ब्लेन फोर्ड (Blan Ford) और श्री ओट्स (Oates) ने १८८९ में Fauna of British India नामक पुस्तक बड़े परिश्रम से तैयार की जिसमें भारतीय पक्षियों का बहुत सुन्दर वर्णन है। इसके चार भाग क्रम से प्रकाशित हुए जो सन् १९२२ तक भारतीय पक्षिशास्त्र की प्रमुख पुस्तक मानी जाती रही।

चौथा काल स्टुअर्ट बेकर का है जो सन् १९२२ से लेकर आज तक चला जा रहा है। श्री स्टुअर्ट बेकर ( Stuart Baker) ने Fauna of British India का नवीन और परिवर्तित संस्करण निकाला जो इस समय भारतीय पक्षिशास्त्र का अधिकारपूर्ण ग्रन्थ है।

इसके अलावा बम्बई की 'बाम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी' नाम की संस्था एक लम्बे काल से हमारे देश के प्राणिशास्त्र का बड़े अच्छे ढंग से अनुसंधान कर रही है और उसको श्री सालिम अली-जैसे विद्वान् का सहयोग प्राप्त है, जिन्होंने हमारे देश के पक्षियों पर गहरा अध्ययन और अन्वेषण किया है और कुछ पुस्तकें भी लिखी हैं।

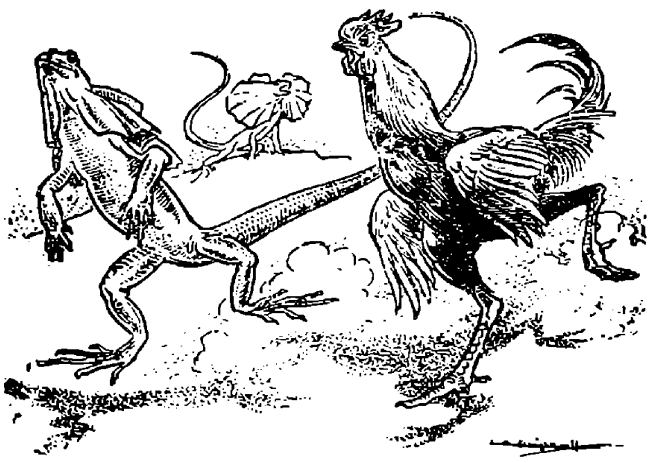
दूसरी संस्था नयी और छोटी है, लेकिन उसका कार्य भी स्तुत्य है। यह है गुजरात की "प्रकृति-मंडल"। इसके कर्ताधर्ता हैं श्री हरनारायणजी 'वनेचर'। इस संस्था ने अपने प्रान्त के जीवों के बारे में बहुत सराहनीय कार्य किया है और कर रही है। इस प्रकार की संस्थाएँ यदि प्रत्येक प्रदेश में स्थापित हो जायँ तो हमारा कार्य बहुत आसान हो सकता है।

लेकिन हमारे हिन्दी भाषाभाषी प्रान्तों में, जहाँ की भाषा राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा घोषित हो चुकी है, अभी तक इस प्रकार की कोई संस्था नहीं है। न तो कोई पत्रिका ही इस विषय की इन प्रदेशों में है और न इस ओर किसी प्रकार का काम ही हो रहा है। मैंने कुछ दिन पहले डाक्टर वासुदेव शरण अग्रवाल, डाक्टर वीरबल साहनी, डाक्टर बहल आदि विद्वानों के सहयोग से लखनऊ में "हिन्दी प्रकृतिमंडल" नाम की एक ऐसी संस्था की स्थापना की थी, लेकिन धनाभाव से वह कुछ दिन चलकर

बंद हो गयी। जब तक हमारी सरकार इस कार्य में हाथ नहीं बँटाती तब तक किसी एक व्यक्ति से इतना बड़ा काम होना संभव नहीं तो कठिन अवश्य है।

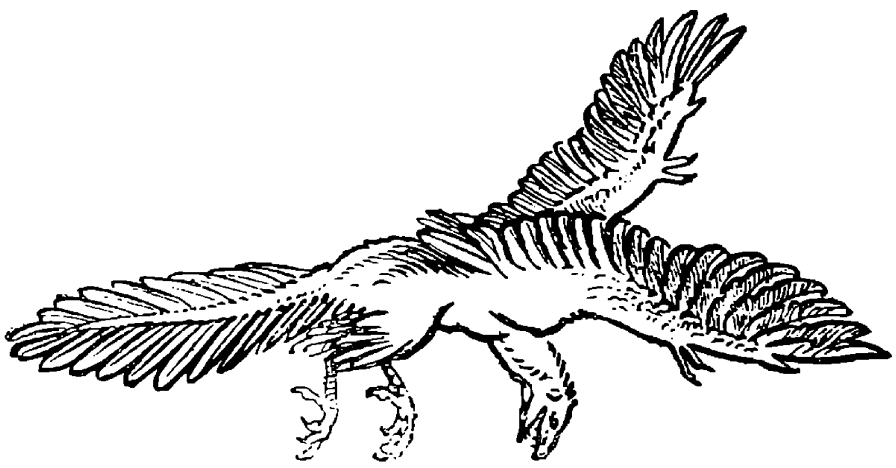
## ● चिड़ियों के पूर्वज

चिड़ियों के पूर्वज सरीसृप थे, इस कथन में सत्यता होते हुए भी सहसा यह विश्वास करने को जी नहीं चाहता कि आकाश में उड़ने वाली इन रंग-बिरंगी चिड़ियों के सम्बन्धी साँप और छिपकलियाँ हैं। लेकिन वैज्ञानिक अनुसंधानों से यह बात स्पष्ट हो गयी है कि पक्षियों ने अपना विकास इन्हीं सरीसृपों से किया और धीरे-धीरे लाखों करोड़ों वर्षों के बाद वे हवा में उड़ने के योग्य हो गये। अब भी यदि हम चिड़ियों को ध्यान से देखें तो हमें उनमें और सरीसृपों में समानता के कुछ चिह्न दिखाई पड़ेंगे। जहाँ पक्षियों के पर सरीसृपों के शल्कों के विकसित रूप ही हैं वहीं उनके पंजे भी, ध्यान से देखा जाय तो सरीसृपों के पंजों के अनुरूप ही दिखाई पड़ते हैं।



**चित्र १—मुर्गे और गिरगिट की कलँगी की समता।**

मुर्गे के सिर पर की लाल कलँगी और गिरगिट अथवा बहुरूपी के सिर की कलँगी में जहाँ हमें एक प्रकार की अनुरूपता मिलती है, वहीं चिड़ियों के और कछुओं के दन्तहीन मुख में भी एक प्रकार की समानता पायी जाती है। चिड़ियों के पैर के शल्क तो आज भी सरीसृपों के पैर के शल्कों से मिलते-जुलते हैं। यही नहीं, ये दोनों आज भी एक ही तरह के अंडे देते हैं और दोनों के बच्चे अब भी अपने डिम्ब-दन्त से अंडे का छिलका तोड़कर बाहर निकलते हैं। इस विकासक्रम का हमें जो कुछ भी पता चला है वह उनके पूर्वजों के पथराये हुए कंकालों ( Fossils ) से ही चला है, जो एक सूत्र में संबद्ध न होकर, इधर-उधर बिखरे पड़े हैं।



**चित्र २—आर्कियोप्टेरेक्स।**

सन् १८६१ में बवेरिया (जर्मनी) में दस करोड़ वर्ष पूर्व का एक फासिल मिला जिसे हम चिड़ियों के पूर्वज का फासिल कह सकते हैं। यह जिस जीवधारी का पथराया स्वरूप है उसका नाम वैज्ञानिकों ने आर्कियोप्टेरेक्स ( Archaeopteryx ) रखा है। यद्यपि इस जीव के डैने, दुम, पंजे और पर थे जिनकी छाप पत्थर पर स्पष्ट दीखती है, पर इसे पक्षी के वेष में सरीसृप कहना ही अधिक उपयुक्त होगा, क्योंकि इस जीव के मुख में अब भी दाँत मौजूद थे। इसकी दुम अब भी सरीसृप की तरह लम्बी थी, यद्यपि उसके बीसों जोड़ों के किनारों पर दोनों ओर एक-एक जोड़े पर निकल आये थे जो देखने में खजूर के पत्ते से लगते थे। इस आर्कियोप्टेरेक्स नाम के जीवधारी को ही हम पक्षियों का पूर्वज या पक्षियों और सरीसृपों की उस अवस्था का प्राणी कह सकते हैं जहाँ से ये दोनों एक दूसरे से अलग होते हैं।

१८७७ ई० में बवेरिया में ही एक दूसरा फासिल (Fossil) आर्कियोप्टेरेक्स (Archaeopteryx) का मिला जो कद में पहले से बहुत छोटा होने पर भी और बातों में उससे मिलता-जुलता था। इसके भी चोंच नहीं थी, बल्कि सरीसृपों की तरह मुँह में दाँत थे। नाक के छेद नोक पर थे और इसका अस्थि-पंजर कोमल और दुर्बल था। डैनों के सिरे पंखों से ढँके न रहकर खुले थे। यही नहीं, उनमें एक-एक पंजा भी मौजूद था जो पेड़ पर चढ़ने में सहायक होता था। इसके शरीर में एक बात और ताज्जुब की थी कि इसके उड़ने वाले बड़े पंखों के किनारे वाले दोनों पंख चिड़ियों की तरह अन्य पंखों से बड़े न होकर सबसे छोटे थे। इससे लाभ यह था कि जब पेड़ पर चढ़ते समय डैनों के सिरे वाले पंजे इस्तेमाल किये जायँ तो ये पंख उसमें बाधा न पहुँचा सकें।

इन दोनों उदाहरणों तथा इनके अलावा और दूसरे फासिलों को देखने से हमें इस बात में संदेह नहीं रह जाता कि ये पक्षी सरीसृपों से ही विकसित हुए, पर जब हम इन्हें चिड़ियों का पूर्वज

मानते हैं और इन्हीं से उनका विकास प्रमाणित करते हैं तो हमें इनमें और चिड़ियों में कुछ समानता दिखानी पड़ेगी ।

इसके लिए वैसे तो पक्षिशास्त्र के विशेषज्ञ अनेक प्रमाण देते हैं पर यहाँ हम उन्हीं दो को दे रहे हैं जिनका उल्लेख हमने इन दोनों फासिलों का वर्णन देते समय विशेष रूप से किया है।

पहले दाँत को ही लें । यदि हम चिड़ियों को भ्रूणावस्था में देखें तो उनकी चोंच में ऊपर-नीचे अब भी दाँतों की एक स्पष्ट रेखा दीख पड़ेगी, जो इस बात की साक्षी है कि वहाँ पहले दाँतों की पंक्ति थी । अब रही चारों पैरों से चलने की बात, तो उसके लिए जलमुर्गी आदि कुछ चिड़ियों के बच्चों को घोंसले से निकाल कर जमीन पर रख दिया जाय तो वे अब भी अपने पैरों के अलावा अपने डैनों की नोंक को, जो पहले हाथ रहे हैं, जमीन पर टेककर चलने की कोशिश करते हैं । यह उसी प्रकार की आदिकाल की प्रसुप्त भावना की एक प्रेरणा है जिस प्रकार बन्दरों और मनुष्यों के पूर्वज एक होने के कारण आज भी मनुष्यों के शिशुओं में बन्दरों की तरह मुट्ठी में डाली पकड़ने की एक प्रेरणा प्रावस्था में वर्तमान है, जो छोटे बच्चों में मुट्ठी बाँधे रहने के कारण देखी जा सकती है ।

इस विकासक्रम में एक बात ध्यान रखने योग्य है कि इस बीच में कुछ ऐसे पक्षियों का विकास और नाश हुआ जो उड़ने में असमर्थ रहे । डोडो ( Do Do–Didus ineptus ) नाम का कबूतर जाति का पक्षी, जो हंस से भी बड़ा होता था और जो अब संसार से सदा के लिए लुप्त हो गया, उड़ने में असमर्थ ही रहा । पनडुब्बी ( Grebe ) आदि कुछ तालाबी चिड़ियाँ अब भी पंख के मामले में इतनी बदनसीब होती हैं कि उन्हें उड़ने से पहले कुछ दूर सूखी जमीन पर दौड़ना पड़ता है ।

जहाँ एक ओर यह है वहीं दूसरी ओर ऐसी चिड़ियाँ भी हैं जिन्होंने अपने अथक परिश्रम से अपना ऐसा विकास कर लिया है कि आज उड़ने में उनका कोई सानी नहीं है । बतखों-जैसी लम्बी तथा अबाबील-जैसी तेज उड़ान, हुदहुद-जैसी गिरहबाजी और फुलचुही और कौड़िल्ले-जैसा एक स्थान पर स्थित होकर उड़ते रहने का अभ्यास देखकर कौन आश्चर्यचकित नहीं हो जाता है ।

इन पथराये कंकालों से हमें कुछ उड़ने वाले जानवरों का भी पता चलता है जो पंख न होने पर भी हवा में उड़ या तैर लेते थे । इनमें सबसे ज्यादा उड़ने वाले पत्रांगुष्ठ या टेरोडेक्टल (Pterodactyls) थे जिनका एक काल्पनिक चित्र यहाँ दिया जा रहा है, उसे देखने से उनका और उनके संबंधियों का बहुत कुछ अनुमान किया जा सकता है ।

पत्रांगुष्ठ के पंख तो होते नहीं थे, लेकिन उनके अगले पंजों से लेकर पिछले पंजों तक चमगादड़ों की तरह एक खाल जरूर होती थी, जिसके सहारे वे हवा में थोड़ा-बहुत उड़ लेते थे । पर इनको हम चिड़ियों के पुरखे नहीं कह सकते ।



चित्र ३—टेरोडेक्टल ।

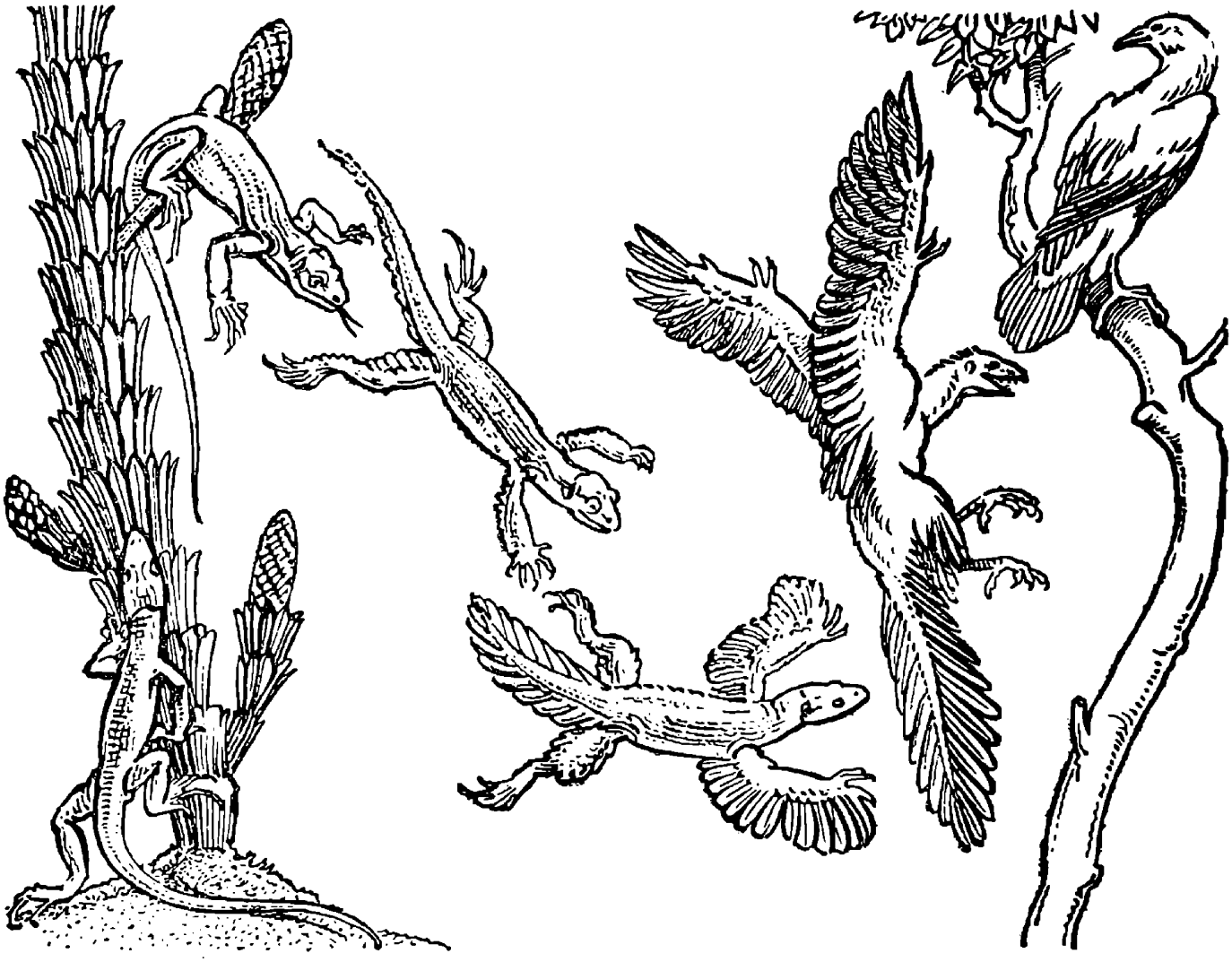
चिड़ियों के असली पुरखे तो प्रत्नपुंखीय या आर्कियोप्टेरेक्स ( Archaeopteryx ) ही थे, जिनका वर्णन ऊपर किया जा चुका है ।

## ● चिड़ियों का विकास

मनुष्यों की भाँति पक्षियों के विकास की कथा भी बहुत दिलचस्प और रोचक है । आज से करोड़ों, अरबों वर्ष पहले एक समय ऐसा भी था जब इस पृथ्वी पर इन हवा में उड़ने वाली चिड़ियों के पूर्वज सरीसृपों के रूप में कीचड़ों में लोटा करते थे ।

जिस पहले पक्षी का हमें अभी तक पता चल सका है वह सरीसृपों के युग का प्राणी था । इसकी रूप-रेखा बहुत कुछ सरीसृपों-जैसी ही थी, लेकिन इसके और सरीसृपों के बीच की कड़ी अभी तक जुड़ नहीं सकी है । फिर भी यह अनुमान किया जाता है कि पक्षियों के पूर्वज ऐसे सरीसृप रहे होंगे जो कँगारू की तरह अपने पिछले पैरों से भागने का और अगलों से अपनी रक्षा का काम लेते होंगे । ये जीव भागते समय अपने दोनों अगले पैर चलाते रहे होंगे और कुछ काल बीतने पर इनके पैरों ने डैनों का आकार ग्रहण कर लिया होगा । धीरे-धीरे इन डैनों का और अधिक विकास हुआ होगा और वे उनको पृथ्वी से कुछ ऊपर तक हवा में ले जाने लगे होंगे । फिर धीरे-धीरे वह समय भी आ गया होगा जब इन्हीं डैनों के द्वारा वे चिड़ियों के रूप में हवा में उड़ने के योग्य बन गये होंगे ।

कुछ विद्वानों का यह भी अनुमान है कि चिड़ियों का विकास ऐसे सरीसृपों से हुआ है जो पेड़ पर रहने वाले थे । ये सरीसृप एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर जाने के लिए उसी तरह हवा में तैरने



चित्र ४—सरीसृपों से पक्षियों तक का विकास।

लगे जैसे आज भी उड़ने वाली छिपकलियाँ या गिलहरियाँ करती हैं। धीरे-धीरे लाखों वर्षों के बाद ये हवा में तैरने वाले सरीसृप विकसित होकर हवा में उड़ने वाले पक्षी बन गये।

प्रारम्भिक पक्षी आजकल के पक्षियों की शक्ल-सूरत के नहीं थे। उनकी शक्ल चिड़ियों से अधिक अपने पूर्वज सरीसृपों से मिलती-जुलती होती थी। उनकी दुम लम्बी होती थी, जिसमें दोनों ओर कतार में पंख खुंसे रहते थे और डैने के ऊपर तीन पंजे भी रहते थे जिससे वे पेड़ की डालियाँ आसानी से पकड़ लेते थे। उनका मुख भी चिड़ियों की तरह दन्तहीन नहीं होता था बल्कि उसमें तेज दाँत होते थे।

## ● पंख

चिड़ियों के शरीर के ये सुन्दर पर धीरे-धीरे कैसे शल्क से बदलकर इस रूप में आये, यह तो नहीं जाना जा सकता है, लेकिन ऐसा अनुमान किया जाता है कि धीरे-धीरे ये शल्क पतले होते गये होंगे, यहाँ तक कि वे शरीर में चिपके रहने के बजाय उठकर फट गये होंगे और फिर उनकी शक्ल आजकल के परों-जैसी हो गयी होगी।

खैर, चाहे जैसे भी इनका विकास हुआ हो, यह तो मानना ही पड़ेगा कि इन परों ने चिड़ियों के आगे विकसित होने के लिए एक नया मार्ग खोल दिया और इनके द्वारा उनके जीवन में एक बहुत बड़ा परिवर्तन हो गया।

चिड़ियों का हलका शरीर जहाँ इन परों की सहायता से आकाश में विचरण करने योग्य हो गया, वहीं उनका शरीर इन्हीं परों के कारण सदैव गरम रहने लगा, नहीं तो पृथ्वी के ऊपर की ठंडी हवा में उड़ना उनके लिए कभी भी संभव न होता। इनके परों के बीच-बीच में जो हवा की परतें रहती हैं वे इनके शरीर के तापमान को एक समान रखती हैं।

सरीसृपों के युग के अन्तिम काल में, जो पृथ्वी का शीतकाल कहलाता है, ऐसी भयंकर सरदी पड़ी कि पृथ्वी के डायनासार आदि भीमकाय प्राणी सदा के लिए लुप्त हो गये, लेकिन पक्षियों

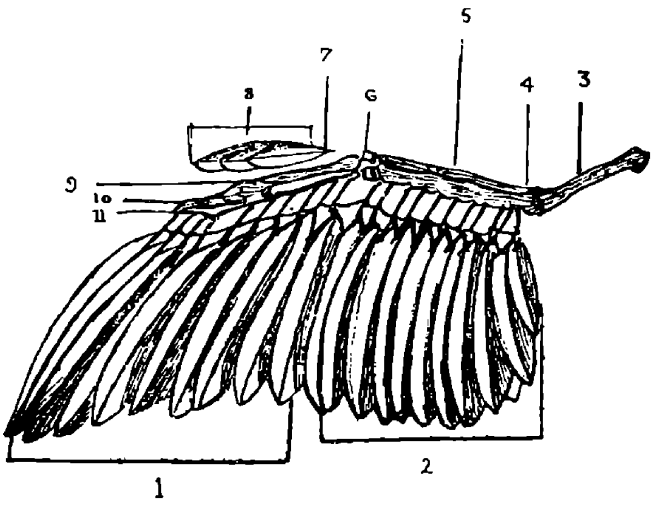
ने अपने परों के कारण उस कठिन सरदी पर विजय पा ली और आज हम आकाश में इन्हीं का एकछत्र राज्य देखते हैं।

चिड़ियों और सरीसृपों में इन्हीं परों के कारण यहाँ तक भेद हो गया कि आज हम सहसा इस पर विश्वास नहीं कर पाते कि इन दोनों के पूर्वज एक ही थे। चिड़ियाँ जहाँ परों के कारण अपने शरीर का तापमान सदैव एक-सा रखने में समर्थ हो गयीं और हम उन्हें गरम खून का प्राणी कहने लगे, वहीं सरीसृपों को परों के अभाव के कारण सूरज की गरमी पर निर्भर रहना पड़ा और उन्हें ठंडे खून का प्राणी कहा जाने लगा। शीतकाल में वे बिना सूर्य की गरमी के काहिल और सुस्त होकर पड़े रहते हैं, लेकिन चिड़ियाँ भोर होते ही आकाश में उड़ने लगती हैं।

लेकिन शीत युग आने पर पृथ्वी पर ये डायनासोर आदि भीमकाय सरीसृप वहीं पड़े रहकर मर गये, पर भोजन की तलाश में दूर न जा सके।

चिड़ियों के पूर्वजों के शरीर की बनावट आजकल के पक्षियों से बहुत भिन्न थी, लेकिन धीरे-धीरे उन्होंने अपने शरीर का ऐसा विकास कर लिया कि वे हवा में उड़ने में कुशल हो गये। परों के अलावा उनका शरीर हलका हो गया और उनकी बनावट सूच्याकार हो गयी, जिससे हवा में उड़ते समय उनको कम से कम रुकावट हो।

जिस प्रकार मनुष्य ने अपने अगले दोनों पैरों का विकास करके हाथ का स्वरूप दे दिया है, उसी प्रकार पक्षियों ने अपने अगले दोनों पैरों या हाथों का विकास करके डैने का रूप दे दिया है। यदि हम चिड़ियों के डैने को गौर से देखें तो हमें उसमें और आदमियों के हाथ में बहुत कुछ समता मिलेगी। नीचे के चित्र को देखने से यह बात भली भाँति समझ में आ जायेगी।

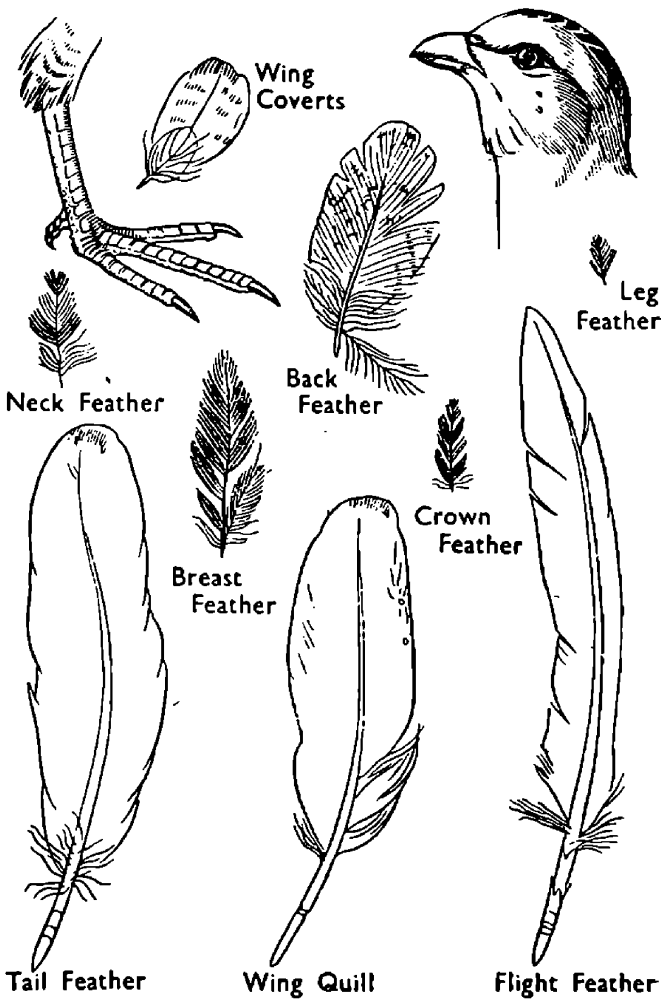



चित्र ५—हाथ और डैने की तुलना।

1. बड़े पंख—Primaries
2. छोटे पंख—Secondaries
3. ऊपरी भुजा—Upper Arm
4. कोहनी—Elbow
5. आगे की भुजा—Fore Arm
6. कलाई—Wrist
7. अँगूठा—Thumb
8. पखनी—False Wing
9. हथेली—Palm of Hand
10. दूसरी और तीसरी उँगली—2nd and 3rd Fingers

चिड़ियों के दोनों हाथ जो बदल कर उनके डैने बन गये थे आगे चलकर उनके लिए बहुत उपयोगी साबित हुए और उन्हीं के कारण आज आकाश में उनका आधिपत्य हो गया। इसलिए इनके इन परों के बारे में हमें कुछ जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है, क्योंकि संसार में पक्षी ही ऐसे जीव हैं जिन्हें प्रकृति ने पर-जैसी अनमोल वस्तु प्रदान की है।

हमने ऊपर के चित्र में देखा ही है कि चिड़ियों के डैने और हमारे हाथ में कोई खास भेद नहीं है। चिड़ियों के डैनों में उँगलियों और हथेलियों के सिरे पर लम्बे-लम्बे पंख निकल आये जो उनके उड़ने में सबसे अधिक सहायक होते हैं। ये पंख Primaries या बड़े पंख कहलाते हैं। उनके पीछे उनसे कुछ छोटे पंख रहते हैं जो Secondries या छोटे पंख कहलाते हैं।

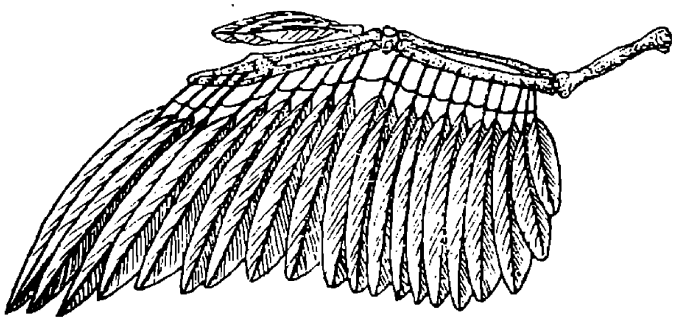



चित्र ६—तीतर के पंख।

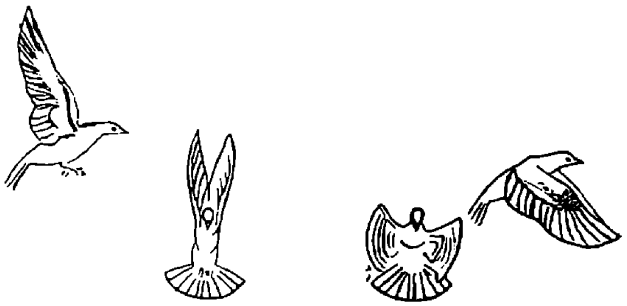
| | |
|---|---|
| Neck Feather—गरदन के पर | Back Feather—पीठ के पर |
| Leg Feather—पैर के पर | Breast Feather—सीने के पर |
| Crown Feather—चोटी के पर | Tail Feather—दुम के पर |
| Wing quill—डैने के पर | Flight Feather—उड़ान वाले पर |
| Wing Coverts—डैने के ढकने | |

ये छोटे पंख भी उनकी उड़ान में काफी मदद देते हैं। इन दोनों प्रकार के पंखों के अलावा पक्षियों के शरीर में दो प्रकार के पर और भी होते हैं जो उनके शरीर को ढके रहते हैं। इनमें पतले और मुलायम पर तो रोएँ या Down Feathers कहलाते हैं और जो पंख की शक्ल-सूरत के किन्तु उनसे छोटे होते हैं, वे पर या Covering Feathers कहे जाते हैं। चित्र सं० ९ से हम यह भली भाँति समझ सकेंगे कि चिड़ियों के शरीर पर किस स्थान पर रोएँ रहते हैं और किस स्थान पर पर। उड़ने वाले बड़े परों अथवा पंखों के बारे में हम पहले ही जान चुके हैं।

अब ये पंख चिड़ियों की उड़ान में किस प्रकार सहायक होते हैं, इसे जानने से पहले हमें बनावट के बारे में थोड़ा बहुत जान लेना चाहिए। नीचे पंख का एक चित्र दिया जा रहा है, जिसके बीच की डंडी के दोनों ओर पतली-पतली शाखें निकली हैं जैसे पेड़ में होती हैं। इन्हें अंकुसे ( Barbs ) कहते हैं। इन अंकुसों में फिर दोनों ओर पतली-पतली शाखें टहनियों की तरह निकली रहती हैं जो अंकुसियाँ ( Barbules ) कहलाती हैं। ये आपस में एक प्रकार की अंकुड़ी से इस प्रकार फँस जाती हैं कि फिर उनमें से होकर हवा नहीं गुजर सकती। इस प्रकार हमने देखा कि चिड़ियों के शरीर पर चार तरह के पर होते हैं। डैने के बड़े और छोटे पंख जिनसे चिड़ियाँ उड़ने का काम लेती हैं और रोएँ और पर जो उनके शरीर को ढके रखते हैं।



शरीर को ढँकने वाले रोएँ और परों ने तो बालों से विकसित होकर यह रूप पाया है और उनका मुख्य काम चिड़ियों के शरीर का तापमान सदैव एकसा रखना है। लेकिन डैने या उड़ान के पर किस प्रकार चिड़ियों के ठोस शरीर को उड़ाकर आकाश में पहुँचा देते हैं यह जानना जरूरी है। जिस प्रकार हमको पानी में तैरते समय अपने हाथ से पानी को ढकेल कर आगे बढ़ना पड़ता है, ठीक उसी प्रकार चिड़ियाँ भी अपने डैनों को ऊपर-नीचे चलाकर और हवा को ढकेल कर आगे बढ़ती हैं। चिड़ियाँ डैने पंखे की तरह सीधे-सीधे ऊपर-नीचे नहीं चलातीं, बल्कि डैने को नीचे से ऊपर की ओर ले जाते समय उसको उसी प्रकार गोलाकार घुमा देती हैं जैसा हम तैरते समय अपने हाथों को पीछे से आगे की ओर ले जाते समय करते हैं। इस प्रकार चिड़ियों द्वारा डैनों को ऊपर-नीचे और फिर ऊपर की ओर चलाने में हवा पीछे की ओर ढकेल दी जाती है और चिड़ियाँ आगे की ओर बढ़ जाती हैं। चित्र में डैनों की यह क्रिया भली भाँति समझायी गयी है।



**चित्र ७—कबूतर की उड़ान, पंखों का ऊपरी आघात** (Up Stroke), **निचला आघात** (Down Stroke) :
**( ऊपर के चार चित्रों में पहला और चौथा बगल की ओर से तथा मध्य के दो सामने की ओर से अंकित हैं। )**

चिड़ियों के बड़े और छोटे पंख जड़ के पास आपस में एक फैलने वाली पट्टी से कसे रहते हैं। जब चिड़ियाँ अपने पंख को ऊपर की ओर चलाती हैं तो यह पट्टी फैल जाती है और पंखों के फैल जाने से हवा उनके बीच में होकर निकल जाती है। लेकिन पंख के नीचे की ओर चलाते समय यह पट्टी कसी ही रहती है जिससे सारे पंख आपस में ऐसे सट जाते हैं कि उनमें होकर हवा किसी प्रकार नहीं गुजर सकती और चिड़ियों को उसे ठेलकर आगे बढ़ना पड़ता है। उन पंखों के नीचे जो छोटे-छोटे पर रहते हैं वे जड़ के पास की संधि में से जाने वाली हवा को रोक लेते हैं और समूचा डैना हवा को काटने के लिए लकड़ी के पतवार जैसा हो जाता है।

जिस दिन हवा तेज चलती रहती है उस दिन चिड़ियों को उड़ने में बहुत आसानी हो जाती है। वे अपने डैने के लम्बे पंखों को जरा-सा तिरछा कर देती हैं जिसमें हवा उनसे टकरा कर उन्हें ऊपर उठाती जाती है। चिड़ियाँ केवल इन थोड़े से मुलायम पंखों की सहायता से ही वायु के थपेड़ों को नहीं सह लेतीं। हवा को चीरकर आकाश में उड़ने के लिए उन्हें उतना ही बल लगाना पड़ता है जितना हमें पानी को काटकर तैरने में। अतः चिड़ियों के डैने की मांसपेशी उनके शरीर की अन्य मांसपेशियों से बड़ी और बलवान् होती है। इसका एक सिरा तो डैने के ऊपरी भाग ( Upper Arm ) में जुड़ा रहता है और दूसरा सिरा छाती की हड्डी (Keel) से। जब चिड़ियों की यह मांसपेशी सिकुड़ती है तो यह अपने साथ डैनों को छाती की ओर खींच लाती है और हम डैने को नीचे की ओर जाते देखते हैं, फिर उसके फैलने पर डैना ऊपर की ओर चला जाता है।

चिड़ियों की उड़ान में उनकी दुम भी कम सहायता नहीं पहुँचाती। जिस प्रकार नाव का पतवार नाव को इधर-उधर घुमाता है उसी प्रकार चिड़ियों की दुम चिड़ियों को दायें-बायें घुमाने में सहायक होती है।

यही नहीं, वह उनकी चाल कम करने में भी सहायक होती है। जमीन पर उतरते समय चिड़ियाँ अपनी दुम के पर फैलाकर

पैराशूट की तरह उसी के सहारे नीचे उतर आती हैं। चिड़ियों की दुम के पर हमेशा छोटे ही होते हैं। मोर आदि लम्बी पूँछ वाले पक्षियों के पर वास्तव में उनकी दुम के पर नहीं हैं, वे तो दुम के ऊपरी ढक्कन (Upper Tail Coverts) पर उगने वाले लम्बे पंख हैं जो दुम के ऊपर होकर बाहर निकले रहते हैं।

चिड़ियों के परों में प्रकृति ने रंग किस हिसाब से भरा है इसका तो किसी को ठीक तरह से पता नहीं है, लेकिन इतना तो हम सब जानते ही हैं कि पास-पड़ोस के रंग में मिलाने के लिए प्रकृति ने कोई कोर-कसर नहीं उठा रखी। रेत में रहने वाली घोबिन का रंग रेतीला, मिट्टी में रहने वाले तीतर और बटेर का रंग मटीला तथा हरे पेड़ की हरी डालियों पर रहने वाले हरियल, बसंता तथा तोतों की हरी पोशाक इसीलिए की गयी है कि वे अपने पास-पड़ोस के रंग में छिप जायँ और उनके दुश्मनों की निगाह उन पर जल्द न पड़ सके।

## ● शरीर-रचना

चिड़ियों की शरीर-रचना के बारे में भली भाँति जानने के लिए हमें वायुयान की मशीन और उसकी बनावट को ध्यान में रखना चाहिए। । वायुयान के समान बनावट रखने वाली इन चिड़ियों को यदि हम प्रकृति के जीवित वायुयान कहें तो अनुचित न होगा, जिनका अस्थि-पंजर वायुयान का ढाँचा, हृदय वायुयान का मोटर, फेफड़ा वायुयान को ठंडा रखने का यंत्र, पाकयंत्र आदि पैट्रोल की टंकी, दुम वायुयान का रडर और एलिवेटर और पर वायुयान के पर की तरह होते हैं।

इसके पहले कि हम चिड़ियों की शरीर-रचना के बारे में और कुछ कहें, हमें वायुयान के उड़ने की प्रारम्भिक बातों को बता देना उचित होगा, नहीं तो उसका और चिड़ियों का तुलनात्मक विवेचन अधूरा ही रह जायेगा।

जैसा स्वाभाविक है, मनुष्यकृत मशीन प्रकृति की इस रचना की तरह पूर्ण नहीं हो पायी है। चिड़ियों का ढाँचा उनके शरीर को देखते हुए बहुत ही हलका होता है। इसके अलावा उनकी हड्डियाँ आवश्यक जगहों पर इस तरह एक दूसरे में जाकर मिल जाती हैं कि जैसे एक ही हों और उनकी मजबूती में किसी प्रकार की कमी नहीं आती, बल्कि दुगुनी ताकत आ जाती है। यही नहीं, डैने आदि की हड्डियाँ वायुयान के पंखों की तरह एक जगह स्थायी रूप से न रहकर आवश्यकतानुसार मोड़ी भी जा सकतीं हैं जिससे चिड़ियों को उड़ने में हर प्रकार की सुविधा हो जाती है।

चिड़ियों के भीतरी अवयव पसलियों के पिंजड़े के भीतर रहते हैं जिसके आगे की ओर सीने की हड्डी और पीछे की ओर रीढ़ की हड्डी रहती है। इसके चारों ओर एक घेरा ( Girdle ) रहता है जो हम लोगों की हँसली की हड्डी के स्थान की पूर्ति करता है। सीने की हड्डी की ऊँचान बहुत कुछ चिड़ियों की उड़ान और उनके डैने के परिश्रम पर निर्भर रहती है। जो चिड़ियाँ अधिक डैने न चला कर अपना अधिक समय हवा में ऊपर चढ़ने (Soaring) में व्यतीत करती हैं उनकी सीने की हड्डी की ऊँचान उतनी ही कम रहेगी, पर फुलचुही आदि अधिक डैने चलाने वाली चिड़ियों में इस हड्डी का विकास स्पष्ट देखा जा सकता है।

चिड़ियों को गरदन मोड़ने की सहूलियत प्रकृति ने बहुत सोच-समझ कर दी है। उनको यदि यह आसानी न होती तो अपने बचाव, भोजन और अपने बदन की सफाई आदि में उन्हें बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता। चिड़ियों की गरदन में साँप से भी अधिक मुड़ने की शक्ति रहती है। हंस की गरदन में तो २३ हड्डियों के जोड़ रहते हैं। हंस को छोड़ दें तो गौरैया जैसी छोटी गरदन वाली चिड़ियाँ भी १४ टुकड़ों से कम हड्डियों की गरदन नहीं रखतीं, जब कि इतनी लम्बी गरदन वाले जिराफ की गरदन में केवल सात ही टुकड़े होते हैं।

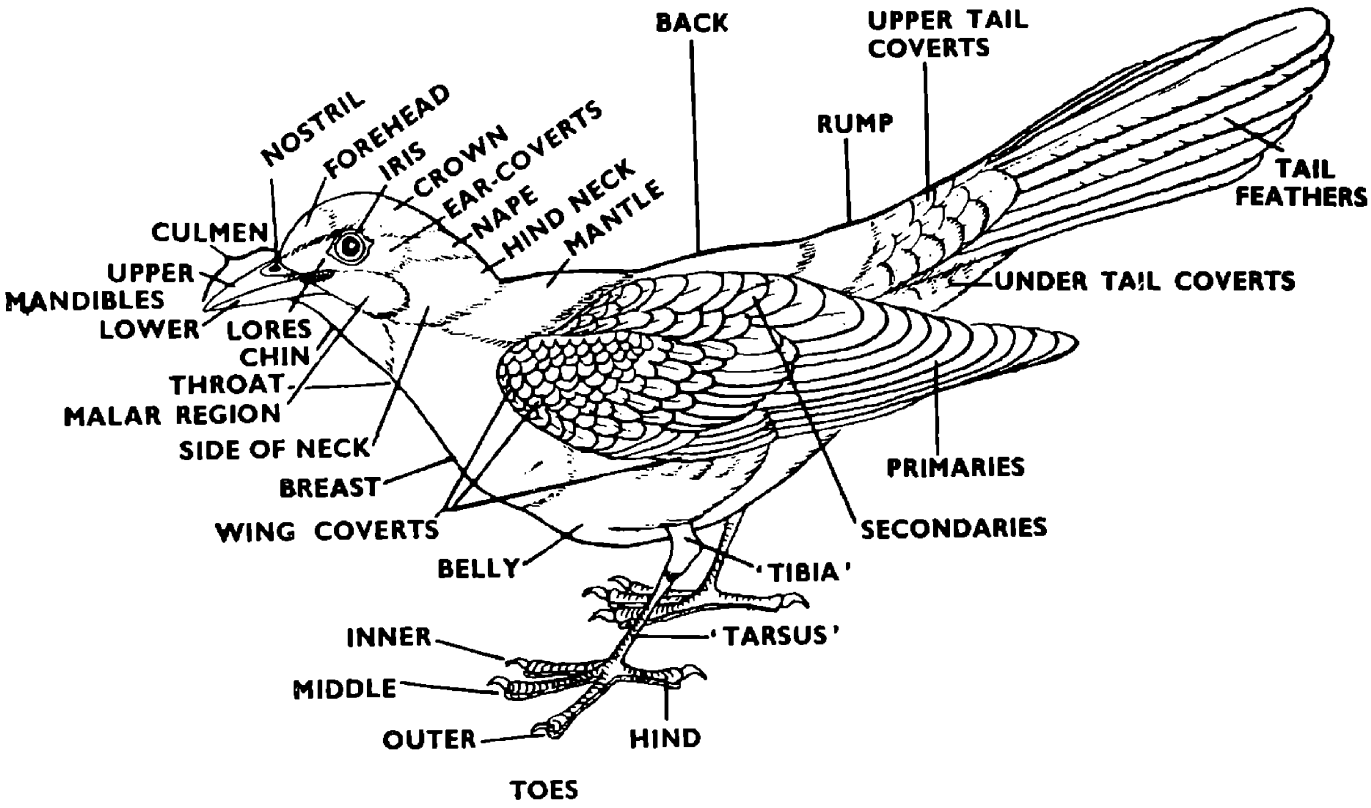
उड़ने में आसानी करने के लिए प्रकृति ने चिड़ियों का शरीर हर तरह से हलका करने की कोशिश की है। इसी से उनका कुल शरीर भरतू नहीं होता, बल्कि स्थान-स्थान पर हवा की थैलियों से भरा रहता है। उनके फेफड़े तक से पतली-पतली नलियाँ निकलती हैं और हड्डियाँ भी पोली होने के कारण हवा से भरी रहती हैं। इस प्रकार कोई भी कसर उनके शरीर को हलका बनाने में बाकी नहीं रखी गयी है। अब यह बात दूसरी है कि किसी-किसी पक्षी की हड्डियाँ ज्यादा पोली होती हैं तो किसी-किसी की कम, लेकिन यह तो आवश्यकता और जरूरत को देख कर किया गया है। गैनेट ( Gannet ) नाम के पक्षी की पसलियाँ, सीने की हड्डी, डैने और रीढ़ की हड्डी तक पोली होती हैं जब कि अबाबील के डैने तक की हड्डियाँ भरतू रहती हैं। बहुधा होता यह है कि बड़े शरीर वाले पक्षियों की हड्डियाँ अधिक पोली होती हैं, क्योंकि उनको भारी शरीर का बोझ लेकर हवा में उड़ना पड़ता है और छोटी चिड़ियों की हड्डियाँ, जिनका शरीर हलका होता है, कम पोली होती हैं। हर बात की सत्यता का प्रमाण इसी से मिल जायेगा कि पीलो या जलसिंह ( Palican ) जैसे भारी शरीर वाली चिड़िया का, जिसका वजन १२ सेर तक होता है, ढाँचा लगभग २० औंस का होता है।

चिड़ियों के साँस लेने में भी एक विचित्रता रहती है। वे स्तनपायी प्राणियों की तरह भीतर की ओर साँस न खींचकर बाहर की ओर साँस छोड़ती हैं। उनके फेफड़े पसलियों, रीढ़ और कुछ हद तक सीने की हड्डी से दबाव पाकर साँस बाहर की ओर निकालते हैं। कुछ विद्वानों का ऐसा विचार है कि उड़ते समय चिड़ियों को डैने चलाने से भी साँस लेने में सहायता मिलती है, पर इस पर कोई निश्चित मत निर्धारित नहीं हो सका है।

चिड़ियाँ अपने पूर्वज सरीसृपों से विकास करके एकदम बदल तो गयीं पर उनकी बहुत कुछ आदतों से अभी तक उनका पीछा नहीं छूटा है। इनमें एक यह है कि सरीसृपों की तरह इनके पसीना नहीं निकलता। इनको अपने शरीर के तापमान को नियमित करने के लिए कुछ तो अपनी भीतर खींची हुई साँस पर निर्भर

रहना पड़ता है और थोड़ा-बहुत फेफड़े और हवा की थैलियों की भीतरी सतह से उफने हुए पानी से इसके लिए सहायता मिलती है। इस प्रकार चिड़ियों के शरीर को ठंडा करके नियमित तापमान रखने के लिए यह प्राकृतिक ढंग वायुयान के यंत्रों से कहीं पूर्ण है।

चिड़ियाँ जल्दी-जल्दी साँस लेती हैं। उनके हृदय की गति तीव्र होती है और उनके खून में अन्य सभी प्राणियों से अधिक रक्ताणु ( Red Corpuscles ) होते हैं। इसी कारण उनमें सबसे अधिक तेजी और फुर्ती भी होती है। पर इस फुरतीली और तेज शरीर रूपी मशीन को ठीक से चलाने के लिए




चित्र ८—पक्षी का अङ्ग-विन्यास।

1. NOSTRIL—नासाछिद्र
2. FOREHEAD—माथा
3. IRIS—आँख की पुतली
4. CROWN—चोटी
5. EAR COVERTS—कान के ढकने
6. NAPE—गुद्दी
7. HIND NECK—गरदन का पिछला भाग
8. MANTLE—पीठ का अगला भाग
9. BACK—पीठ
10. RUMP—दुमगजा
11. UPPER TAIL COVERTS—ऊपरी दुम ढकने
12. TAIL FEATHERS—दुम
13. UNDER TAIL COVERTS—निचले दुम ढकने
14. PRIMARIES—बड़े पंख
15. SECONDARIES—छोटे पंख
16. TIBIA—जाँघ
17. TARSUS—टाँग
18. TOES—पंजे
19. HIND TOE—पिछला पंजा
20. OUTER TOE—बाहरी पंजा
21. MIDDLE TOE—बीच का पंजा
22. INNER TOE—भीतरी पंजा
23. BELLY—पेट
24. WING COVERTS—डैने के ढकने
25. BREAST—सीना
26. SIDE OF NECK—गरदन का बगली हिस्सा
27. MALAR REGION—गाल
28. THROAT—गला
29. CHIN—ठुड्डी
30. LORES—आँख के छल्ले
31. LOWER MANDIBLES—निचली चोंच
32. MANDIBLES—चोंच
33. UPPER MANDIBLES—ऊपरी चोंच
34. CULMEN—चोंच का ऊपरी भाग

अधिक ईंधन भी चाहिए। इसी कारण चिड़ियों की खूराक काफी होती है। कौए के बच्चे रोज अपने शरीर के तौल तक की खूराक खा जाते हैं।

चिड़ियों की इस फुर्ती और तेजी के बारे में अधिक जानने के लिए हमें उनकी मांसपेशियों के रंग से भी काफी सहायता मिलती है। उनकी मांसपेशियों को जिस प्रकार का काम करना पड़ता है उसका ठीक पता उनकी गठन से अधिक उनके रंग हमें देते हैं।

चिड़ियों के उस स्थान की मांसपेशियाँ जिन्हें जल्दी और फुर्ती से काम करना पड़ता है, उस स्थान की मांसपेशियों से रंग में अधिक पीली होती हैं जिन्हें लम्बी उड़ान या कम मेहनत करनी पड़ती है। यह उदाहरण देकर समझाने से अधिक सरल हो जायेगा। तीतर आदि शिकार के पक्षियों में, जिन्हें खटका पाते ही फुर्ती से उड़ जाना पड़ता है, उनके डैनों को उठाने वाली मांसपेशी ( Elevator muscle ) से, जो फुर्ती से डैनों को उठाती है, डैनों को गिराने वाली मांसपेशी ( Large depressor muscle), जिसका काम डैने को नीचे गिराना है, ज्यादा पिलछौंह रहती है।

डैने को गिरानेवाली मांसपेशियाँ भले ही फुर्ती से काम न कर सकें, पर यह बात नहीं है कि उन्हें मेहनत न करनी पड़ती हो। उन्हें एलिवेटर से कहीं ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है, क्योंकि पंख खोलते समय तो चिड़ियों को समेटे हुए परों को ही एक बार उठाना पड़ता है, किन्तु उड़ते समय हवा की ताकत को ठेलकर ऊपर से नीचे पंख गिराने में उन्हें चौगुनी ताकत लगानी पड़ती है। इसका जो नतीजा होता है वह जाहिर है। अधिक परिश्रम करने के कारण ये गिराने वाली मांसपेशियाँ बड़ी और सुडौल हो जाती हैं और इनका वजन कभी-कभी चिड़ियों के बाकी कुल हिस्से के बराबर हो जाता है।

चिड़ियाँ रात को सोते समय डाल पर से गिर क्यों नहीं पड़तीं, यह प्रश्न बहुधा हमारे मन में उठा करता है। इसके लिए उनके पंजों का जैसा विकास हुआ है उसे देखकर हमें ताज्जुब में पड़ जाना पड़ता है। चिड़ियाँ जब अपने पंजों से डाल पकड़कर बैठती हैं तो उनके शरीर के बोझ से उनके घुटने और टाँगें झुक-सी जाती हैं, जिससे उनके पैर के निचले हिस्से की हड्डी के साथ चलने वाला माग अपने आप कस-सा उठता है और इससे उनके पैर के अँगूठे ऐसे जकड़ जाते हैं कि जब तक चिड़ियाँ फिर अपना शरीर सीधा न करें, उनके पंजे की पकड़ से डाल छूट नहीं सकती। प्रकृति की ओर से इतना प्रबन्ध होने के बाद, सोते हुए पक्षियों के गिरने का खतरा भला कैसे हो सकता है।

## ● आँखें

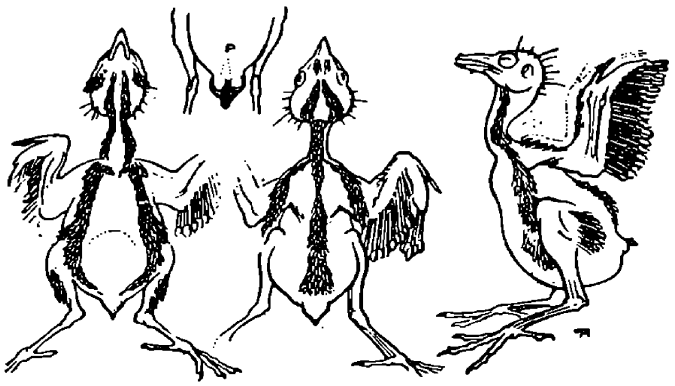
वैसे तो चिड़ियों की कई इन्द्रियाँ आश्चर्यजनक हैं पर उनके नेत्र जितने विकसित हुए हैं उतने शायद किसी भी प्राणी के नहीं हुए हैं। जरा कल्पना तो कीजिये कि चिड़ियाँ जमीन पर पड़े हुए अपने शिकार को देखती हुई हवा में ६०-७० मील प्रति घंटा की रफ्तार से उड़ती जा रही हैं। इतनी रफ्तार से उड़ते रहने पर भी उस वस्तु पर से उनके नेत्र का फोकस एक जैसा रहता है और उनका शिकार उन्हें एक ही शक्ल में बराबर दिखाई पड़ता रहता है। इतनी शीघ्रता से नेत्र का फोकस बदलने की शक्ति हासिल करने में चिड़ियों ने वाकई कमाल कर दिखाया है।

इतना ही नहीं, चिड़ियों को इसके अलावा दूर तक देखने की अद्भुत शक्ति भी प्रकृति ने दी है। गिद्ध अपनी दृष्टि के लिए प्रसिद्ध ही है। सैकड़ों हजारों फुट ऊँचे से भी गिद्ध पृथ्वी पर की मामूली हरकत भी बड़ी आसानी से देख लेता है जिसे हम लोग बिना दूरबीन के कभी भी नहीं देख सकते। चिड़ियों की आँख में एक कमी जरूर रहती है कि उनकी आँखें सामने न होकर बगल में रहती हैं और वे मनुष्यों की आँखों की तरह घुमायी-फिरायी नहीं जा सकतीं। पर चूँकि उनकी गरदन बहुत आसानी से घूम सकती है इससे उन्हें ज्यादा कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता। बगल में आँखों के रहने से चिड़ियों को करीब-करीब चारों ओर का नजारा दिखाई पड़ता रहता है, पर उल्लू इस सहूलियत से वंचित ही रहता है। उसे अपने को बचाने का ज्यादा डर नहीं रहता, बल्कि उसे खुद ही हमला करना रहता है। इससे उसकी आँखें मनुष्यों की तरह सामने ही रहती हैं, पर गरदन घुमाने की उसको इतनी ज्यादा सहूलियत प्रकृति ने दे दी है कि उसको यह कमी कभी नहीं जान पड़ती। उल्लू के बारे में यह गलत-फहमी फैली हुई है कि वह दिन में देख ही नहीं सकता, पर बात ऐसी नहीं है। करीब-करीब सभी उल्लू अपनी पुतली को फैलाने और सिकोड़ने में सफल होने के कारण दिन में भी देख सकते हैं।

चिड़ियों की आँख में एक और पतली झिल्ली होती है जो आँख को सदा नम रखकर उसे गर्द-गुबार से सुरक्षित रखती है और रात में उड़ने वाली चिड़ियों की आँख को तेज रोशनी से बचाती है। उल्लू के अलावा और चिड़ियाँ भी सूर्य की तेज किरणों की ओर उड़ते समय इस पारदर्शी झिल्ली को चढ़ा लेती हैं।

एक बात में हम अवश्य पक्षियों की आँख को अपनी आँख से कम पाते हैं। वह है उनके रंग-भेद की शक्ति। चिड़ियाँ उतने प्रकार के रंग नहीं देख पातीं जितने प्रकार के हम लोग देख सकते हैं। एक विद्वान् ने, जिसने इस ओर बड़ा परिश्रम किया है, यह पता लगाया है कि चिड़ियाँ पीला और नारंगी रंग तो देख लेती हैं पर वे नीला और बैंगनी रंग ठीक-ठीक नहीं देख पातीं। इस अन्वेषण में अभी बहुत मतभेद हैं, क्योंकि यदि ऐसा होता तो जोड़ा बाँधने के समय बहुत-से पक्षियों के नर अपनी नीली और बैंगनी पोशाक पहन कर बेकार ही में क्यों मादा को रिझाने का उद्योग करते ?

चिड़ियों के शरीर पर के पर सबसे अद्भुत और विचित्र होते हैं जो किसी भी प्राणी को नसीब नहीं हुए हैं। जैसा हम ऊपर बता आये हैं, इनकी उत्पत्ति उन सेहर या छिलकों के विकास से हुई है जो इन पक्षियों के पूर्वजों के शरीर को ढके रहते थे। परों के रूप में आ जाने पर उनकी उपयोगिता पक्षियों के लिए जितनी बढ़ गयी है यह हम सभी जानते हैं। चिड़ियों का ही नहीं, बल्कि किसी भी प्राणी का कोई भाग निर्जीव हो जाने पर इतना उपयोगी नहीं हो सका है जितने पक्षियों के पर हैं। इनके बारे में ठीक-ठीक समझाने में हमें विस्तार में जाना पड़ेगा।



चित्र ९—बच्चों के प्रारम्भिक परों के स्थान।

पक्षिशावकों की खाल को भेद कर पहले एक प्रकार के नोकीले रोएँ निकलते हैं, जो कई शाखाओं में होकर खाल की सतह पर आड़े-आड़े फैल जाते हैं। कुछ समय बीतने पर ये सूख कर रेशम से भी मुलायम हो जाते हैं। इन रोओं से पक्षिशावकों का शरीर शुरू-शुरू में ढँका रहता है, पर बाद में इनकी जड़ को भीतर से असली पर ढकेल कर ऊपर निकल आते हैं और इन रोओं का खातमा हो जाता है। अब जो नये पर निकलते हैं वे एक बड़ी खोल में सावधानी से लिपटे रहते हैं जो भीतर से ज्यों-ज्यों बाहर की ओर ठेलकर निकलते हैं त्यों-त्यों खुलकर फैलते जाते हैं और इस प्रकार पक्षी का सारा शरीर परों से ढँक जाता है। कौए और चरखियों के बच्चे अंडा फूटने पर करीब-करीब नंगे ही रहते हैं, लेकिन तीतर, बटेर आदि के बच्चों का शरीर अंडे के बाहर आने पर रोओं से भरा रहता है।

इससे पहले कि चिड़ियों के परों की बनावट के बारे में कुछ कहा जाय, परों के भेद के विषय में थोड़ा बता देना आवश्यक है, क्योंकि परों की नाप और स्थान अलग-अलग होने पर भी उनकी बहुत कुछ बनावट एक-जैसी ही होती है। चिड़ियों के शरीर को ढकने वाले पर, "पर" कहलाते हैं। ये छोटे और चौड़े रहते हैं और इनका काम केवल शरीर की रक्षा है। चिड़ियों के शरीर का दूसरा महत्वपूर्ण हिस्सा उनका डैना है। पंख वाले बाजुओं को हम डैना ( Wing ) कहते हैं। इसमें पाँच तरह के पर होते हैं। कुछ सबसे बड़े जो बड़े पंखे ( Primaries ) कहलाते हैं जिनसे पक्षियों को उड़ने में सहायता मिलती है। इनके बाद छोटे पंखे (Secondaries) होते हैं। ये भी फैल कर डैनों को चौड़ा बनाते हैं जिससे वे हवा में पक्षियों के सफलतापूर्वक उड़ने में सहायक हो सकें। इनके अलावा पखने (Primary Coverts) और पखनियाँ (Secondary Coverts) होती हैं जो क्रमशः बड़े पंखों और छोटे पंखों की जड़ों को ढँकने के काम आती हैं। इन पखने और पंखियों की जड़ें फिर परों से ढँकी रहती हैं। डैनों में दो-तीन पर और होते हैं जो पंखुड़ी ( Bastard Wing ) कहलाते हैं। इनका कोई खास काम नहीं रहता। इसके अलावा ऊपर और नीचे के दुम के ढँकने (Upper and Undertail Coverts), कान के ढँकने (Ear Coverts) और रान के ढँकने होते हैं, जो मामूली परों की तरह होते हैं।

चिड़ियों की चोटी के पर अलग-अलग तरह के होते हैं और दुम के पंख भी भिन्न-भिन्न शक्ल-सूरत के रहते हैं, जिनमें प्रायः बीच के दो पर बड़े होते हैं और किनारे के दूसरे रंग के। मोर जैसे पक्षियों की दुम के ऊपर कुछ लम्बे और सुन्दर बनावट के पर होते हैं, जिन्हें प्रायः लोग धोखे से उनकी दुम ही समझते हैं। इनका काम प्रायः मादा को रिझाना ही रहता है। किसी जीवधारी का कोई अंग निर्जीव हो जाने पर भी उसके लिए इतना उपयोगी हो सकता है, यह हमें इन परों से ज्ञात होता है।

अब पंखों या परों की बनावट के बारे में कुछ जान लेना चाहिए। पंख के बीच के हिस्से को हम पंख की डंडी या क्विल ( Quill ) कहते हैं। पंख का निचला हिस्सा शरीर के भीतर तो जरूर होता है, पर इसमें खून का प्रवाह बन्द हो जाने के कारण यह निर्जीव हो जाता है और इसको निकालने में पक्षियों को दर्द नहीं होता। एक पंख या पर के निकल जाने पर उसी जगह दूसरा पर भीतर से निकल आता है।

क्विल के दोनों ओर आड़े-आड़े अंकुशों (Barbs) की पंक्ति निकलती है जो आपस में जुटे रह कर पूरा पंख बनाते हैं। इनके दोनों ओर अंकुशियों (Barbules) की श्रेणी रहती है जिनके बीच में एक प्रकार के हुक से रहते हैं जो आपस में मिल कर अंकुशों और अंकुशियों को एक में ऐसा कस लेते हैं कि इनके भीतर हवा का जाना संभव नहीं होता। उलटी ओर हाथ फेरने से ये हुक अलग हो जाते हैं और सीधी ओर हाथ फेरने से वे फिर पहले की तरह जुड़ जाते हैं। इसको भली प्रकार से समझने के लिए एक पंख को लेकर उसका भली भाँति निरीक्षण करना अधिक सरल होगा।

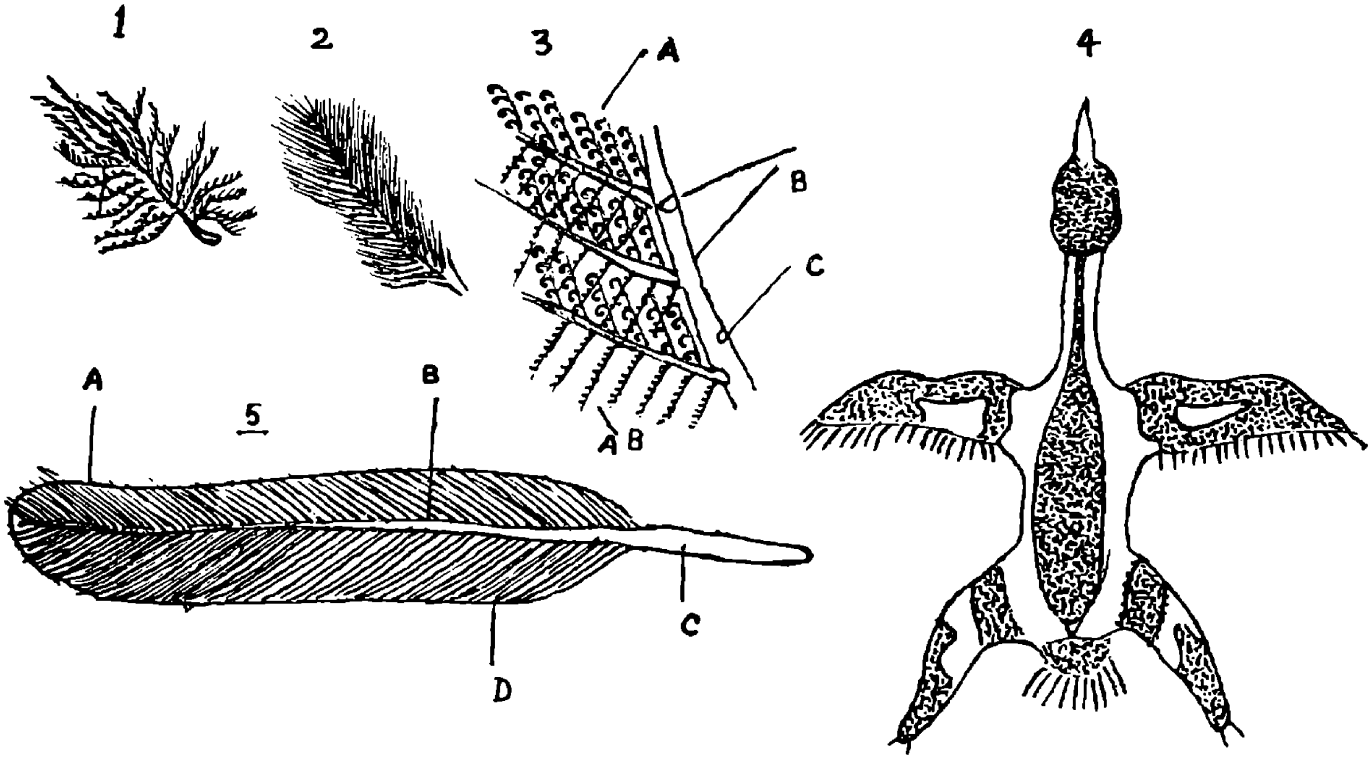
यह एक मामूली-सी बात है कि चिड़ियों के पंख और दुम के पर, जिन्हें नित्य काफी परिश्रम करना पड़ता है, शीघ्र ही पुराने और जीर्ण हो जाते हैं और जिसकी वजह से चिड़ियों की उड़ान में कमी का हो जाना स्वाभाविक है। प्रकृति ने इस दिक्कत को दूर करने के लिए चिड़ियों के पर गिरने और नये पर निकलने का समय निश्चित कर दिया है। कुछ चिड़ियों के पर साल में

एक बार गिरते हैं और कुछ चिड़ियों के पर साल में दो या तीन बार। कुछ पक्षी जो अपने पर बसंत में गिराकर नये और सुन्दर परों की पोशाक पहनते हैं, उनका मुख्य उद्देश्य मादा को रिझाकर अपना घर बसाना रहता है। कुछ पक्षी जाड़ों में स्थान-परिवर्तन के लिए अपने पुराने पर गिरा कर नये पर धारण करते हैं।

खुश्की में रहनेवाली चिड़ियों के पंख गिराने का ढंग अनोखा है। यदि उनके पंख सब एक साथ गिर जायँ तो वे उड़ने में असमर्थ हो जायँ और दुश्मनों के द्वारा उनका ख़ातमा ही हो जाय। इससे प्रकृति ने उन्हें यह सहूलियत दी है कि वे अपने दोनों डैनों के एक-एक पंख एक साथ गिरा सकें और नये पंख का जोड़ा निकलने पर फिर दूसरा पुराना जोड़ा गिरा सकें। इस प्रकार क्रमशः पुराने पंख जोड़े में गिरते जाते हैं और दो नये पंख निकलते आते हैं। इस प्रकार धीरे-धीरे दो-दो करके डैने के सभी पंख नये हो जाते हैं। बत्तख की जाति की कुछ तालाबी चिड़ियाँ अपने सब बड़े पंख एक साथ गिराकर उड़ने में एकदम असमर्थ हो जाती हैं। यह समय निकट आया देख कर वे ऐसे स्थान पर चली जाती हैं जहाँ स्थल के जन्तुओं की पहुँच न हो सके। कुछ पनडुब्बी चिड़ियाँ भी अपने पंख एक साथ गिरा कर कुछ दिनों के लिए एकदम पानी की चिड़ियाँ हो जाती हैं और मेढक, मछलियों की तरह अपना समय बिताती हैं।

डैने का वर्णन करते समय, पर की बनावट का जिक्र बीच में आ जाने से, डैने का कुछ बयान रह ही गया। डैने पक्षियों के शरीर में सबसे जटिल और भली भाँति विकसित अंग हैं, इससे उनका वर्णन यदि कुछ विस्तृत भी हो जायगा तो अनुचित न होगा। चिड़ियों को ऊपर चढ़ते समय और नीचे उतरते समय अपने डैनों और पंखों को अलग-अलग ढंग से रखना पड़ता है। उन्हें घूमने के लिए, रुकने के लिए और अपने बचाव तथा गिरहबाजी करने के लिए अपने डैनों, पंखों और दुम का इस्तेमाल करना पड़ता है, जो देखने में तो सरल जरूर जान पड़ता है, पर जिसका अभिनय बहुत कठिन है।

चिड़ियों के उड़ने वाले या बड़े पंख इस प्रकार लगे रहते हैं जिसमें वे जड़ के पास थोड़ा एक दूसरे पर चढ़े रहें। इसका नतीजा यह होता है कि नीचे की ओर डैना चलाने से या बिना डैना चलाये ही नीचे या ऊपर की ओर जाने में हवा का पूरा दबाव पूरे डैने को भीतर की ओर से एक साथ ढक लेता है, पर डैना ऊपर की ओर चलाते समय ये पंखे अलग हो जाते हैं और जरूरत से ज्यादा हवा इन संधों से होकर बाहर निकल जाती है।




चित्र १०—पंखों के अवयव।

1. कोमल पिच्छ या रोएँ–Down
2. शरीर ढँकने वाले पर–Courmy Feathers
3. पर के अंकुश और अँकुशियाँ–Barbs & Borbulets Shaft
   A. अंकुश, B. अँकुशियाँ, C. पर की डंडी
4. बच्चों के शरीर के भाग, जहाँ पहले पर निकलते हैं।
5. पंख–Wing Feathers
   A. और D. पंख फलक या पंख को जोड़नेवाली अँकुशियाँ और अंकुश
   B. भरतू डंडी–Shaft
   C. पोली डंडी या पंख-पिच्छ–Quill

उकाब, गिद्ध और बाज़ आदि पक्षियों में, जिन्हें ऊपर की ओर बिना डैना चलाये उड़ने की सहूलियत मिली है, एक बात ध्यान देने योग्य होती है। आगे की ओर या ऊपर की ओर उड़ते समय इनके पंखों के बाहरी सिरे एक दूसरे से अलग होकर इस शक्ल के हो जाते हैं जैसे किसी ने उँगली फैला रखी हो। इससे उड़ान में क्या सहूलियत मिलती है यह आगे बताया जायेगा, यहाँ तो केवल इतना जान लेना काफी है कि इन पंखों के सिरों का वेग कहीं ज्यादा न हो जाये, इसलिए प्रकृति ने बड़े पंखों के सिरे के उस हिस्से को, जो दूसरे पंख से दबा रहता है, कुछ ऐसा हुकनुमा बना दिया है कि वह उसे ज्यादा फैलने नहीं देता।

इस प्रकार के एक नहीं, अनेकों गुण और प्रकृति की अनुपम कारीगरी को हम किसी पक्षी के पंख में देख सकते हैं, लेकिन किताबी ज्ञान से कहीं अधिक सहायता हमें हमारा स्वयं का निरीक्षण ही देगा। एक पंख को यदि हम हाथ में लेकर देखें तो उसका हलकापन, उसकी बनावट में सम्पूर्णता, उसके अंकुश और अंकुशियों के आपस में मिल जाने की शक्ति, जिससे हवा भी पार न हो सके और उसका लचीलापन स्पष्ट दिखाई देगा।

## ● वर्गीकरण

पक्षियों के वर्गीकरण के बारे में विद्वानों में बहुत मतभेद है और इस मामले में शायद पक्षिशास्त्र-विशेषज्ञ एकमत नहीं होना चाहते। अलग-अलग विद्वानों ने पक्षियों का अलग-अलग ढंग से वर्गीकरण किया है और इसका कारण भी स्पष्ट है। पक्षियों के शरीर-गठन में एक दूसरे से उतना भेद नहीं रहता जितना स्तन-प्राणियों में और करीब-करीब एक ही जैसे ढाँचे वाले जीवों का केवल शरीर-रचना के दृष्टिकोण से वर्गीकरण करना कठिन हो जाता है। इसलिए भिन्न-भिन्न विद्वानों ने वर्गीकरण के भिन्न-भिन्न तरीके अपनाये हैं। लेकिन पक्षियों का जो वर्गीकरण सबसे अधिक ख्याति पा चुका है, उसमें उनको २४ वर्गों में विभाजित किया गया है।

यहाँ इसी वर्गीकरण का संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है:

१. **चटक-वर्ग**– Order Passeres
शाखाशायी पक्षिगण– Pearching Birds

२. **कोकिल-वर्ग**– Order Picariae
कोकिल, कठफोर तथा घनेश आदि पक्षी–Cuckoos, Wood Peckers, HornGills etc.

३. **शुक-वर्ग**– Order Psittaci
तोते–Parrots

४. **उलूक-वर्ग**– Order Striges
उल्लू– Owls

५. **मीनश्येन-वर्ग**– Order Pandiones
मछारंग– Ospreys

६. **श्येन-वर्ग**– Order Accipitres
बाज, बहरी तथा गिद्ध आदि पक्षी– Eagles Falcons, Vultures etc.

७. **जलकाक-वर्ग**– Order Steganopodes
जलसिंह, पनकौआ आदि पक्षी–Pelicans Cormorants etc.

८. **बक-वर्ग** Order Herodiones
बगुले, जांघिल, घोघिल आदि महाबक–Herons and Storks

९. **हंसावर-वर्ग**– Order Odontoglossi
हंसावर–Flamingos

१०. **हंस-वर्ग**– Order Anseres
हंस, बत और बत्तखें–Swans, Geese and Ducks

११. **स्क्रीमर-वर्ग**– Order Palamedeae
स्क्रीमर– Screamers

१२. **कपोत-वर्ग**– Order Columbae
कबूतर, फाख्ता और मटतीतर–Pigeons, Doves and Sand–Crouse

१३. **कुक्कुट-वर्ग**– Order Gallinae
मुर्गियाँ, फैजेंट आदि शिकार के पक्षी– Fowls, Pheasants and other Game–Birds

१४. **जलकुक्कुट-वर्ग**– Order Fulicariae
जल-कुक्कुट– Rails and Coots

१५. **क्रौञ्च-वर्ग**– Order Alectorides
सारस, करकरा, कुलंग तथा चरत आदि–Caranes and Bustards

१६. **चहा-वर्ग**– Order Limicolae
चहे, बटान तथा करलू आदि पंकचारी पक्षी–Snipes, Plovers, Curlews. etc.

१७. **कुररी-वर्ग**– Order Gaviae
कुररी और सामुद्रिक– Terns and Gulls

१८. **समुद्री-काक-वर्ग**– Order Tubinares
समुद्री काक (पेटरल) और एलबैटरास– Petrels and Albatrosses

१९. **पनडुब्बी-वर्ग**– Order Pygopodes
पनडुब्बियाँ- Divers Grebes etc.

२०. **पेंगुइन-वर्ग**– Order Impennes
पेंगुइन–Penguins

२१. **टिनामस-वर्ग**– Order Crypturi
टिनामस– Tinamus

२२. **शुतुरमुर्ग-वर्ग**– Order Ratitae
शुतुरमुर्ग, इम्मू आदि पक्षी–Ostriches, Emeus etc.

२३. **सदन्त-वर्ग**– Order Odontornithes
सदन्त लुप्त पक्षी–Toothed Birds (extinct)

२४. **लम्बपुच्छ-वर्ग**– Order Saururae
लम्बपुच्छ लुप्त पक्षी–Long Tailed Birds (extinct)

## (१) चटक-वर्ग

**शाखाशायी पक्षिगण :** इस वर्ग के अन्तर्गत पक्षिजगत की लगभग आधी चिड़ियाँ आ जाती हैं। इन पक्षियों में विशेषता यह होती है कि इनके पैर के पंजों में अँगूठा मौजूद रहता है जिसे ये आसानी से इधर-उधर घुमा-फिरा सकते हैं। इसी अँगूठे के सहारे ये डाल को मजबूती से पकड़ कर रात को पेड़ों पर बसेरा लेते हैं और इनके सोते समय अँगूठों की पकड़ ढीली नहीं हो जाती कि ये रात में जमीन पर गिर पड़ें।

इनके बच्चे अंडा फूटने पर बत्तखों और मुरगियों के बच्चों की तरह तैरने और दौड़ने नहीं लगते, बल्कि कुछ दिन इन बच्चों को असहाय अवस्था में घोंसले में बिताने पड़ते हैं, क्योंकि इन बच्चों के बदन पर परों के स्थान पर रोएँ होते हैं जो इनको उड़ने में किसी प्रकार की सहायता नहीं पहुँचाते।

## (२) कोकिल-वर्ग

**कोयल, पपीहे, कठफोर और घनेश आदि :** इस वर्ग की चिड़ियों की विशेषता यह है कि ये सफेद अंडे देती हैं और अपने अंडों के लिए घोंसला नहीं बनातीं। मादा पक्षी किसी पेड़ के खोंथे या जलाशय के किनारे किसी भीटे के सूराख में या किसी छिपी हुई जगह में अपने अंडे देती है। कोयल जाति के कुछ पक्षियों की मादा तो दूसरी चिड़ियों के घोंसले में अपने अंडे दे आती है।

## (३) शुक-वर्ग

**तोते :** इस वर्ग में हर किस्म के तोते आते हैं, जिनकी खास विशेषता यह है कि ये बहुत थोड़ी मेहनत से ही पालतू हो जाते हैं और पढ़ाये जाने पर बहुत आसानी से आदमियों की बोली की नकल करने लगते हैं। इनकी याददाश्त बहुत तेज होती है और पालतू हो जाने पर ये २०-२५ वर्षों तक बड़े मजे में पिंजड़ों में रह लेते हैं। इनके पर बहुत सुन्दर होते हैं और पंजों की चौथी उँगली हमेशा पीछे की ओर रहती है। इनकी टेढ़ी चोंच बहुत कड़ी और मजबूत होती है जिससे ये बड़ी आसानी से कड़ी से कड़ी लकड़ी को काट डालते हैं। ये शाकाहारी पक्षी हैं।

## (४) उलूक-वर्ग

**उल्लू और खूसट :** इस वर्ग में सब तरह के छोटे और बड़े उल्लू आते हैं जो अपने मुलायम परों के लिए प्रसिद्ध हैं। ये रात्रिचारी पक्षी हैं जिनकी आँखें अन्य पक्षियों की तरह बगल में में न होकर मनुष्यों की तरह सामने की ओर रहती हैं।

## (५) मीनश्येन-वर्ग

**मछरंगा :** इस वर्ग में मछरंगा अकेला पक्षी है, जिसकी आदतें उल्लुओं से बहुत कुछ मिलती-जुलती जरूर होती हैं, लेकिन इसकी आँखें उनकी तरह सामने न होकर अन्य चिड़ियों की तरह बगल में रहती हैं। इसके पर भी काफी बड़े, मजबूत और कड़े होते हैं।

## (६) श्येन-वर्ग

**बाज, बहरी उकाब और गिद्ध आदि :** इस वर्ग के पक्षी शिकारी पक्षी कहलाते हैं। इनकी विशेषता यह है कि इनकी चोंच टेढ़ी और पंजे मजबूत होते हैं। मछरंगा की तरह इनके पर भी बहुत कड़े और मजबूत होते हैं।

## (७) जलकाक-वर्ग

**पनकौआ, बानवर और जलसिंह आदि :** इस वर्ग में वे पक्षी सम्मिलित किये गये हैं जिनका अधिक समय पानी में ही बीतता है। ये जालपाद होते हैं। इन पक्षियों के पैर छोटे होते हैं और इनके बच्चे अंडा फूटने पर असहाय और बिना पर के रहते हैं। इनके पैर छोटे होते हैं, सर भी छोटा होता है, लेकिन गरदन लम्बी होती है। ये सब मांसाहारी पक्षी हैं जो ज्यादातर मछलियों से अपना पेट भरते हैं।

## (८) वक-वर्ग

**बगुले, कौआरी, लगलग, लौहासारंग, महाबक आदि :** इस वर्ग में बगुले तथा अन्य लम्बी टाँग वाली चिड़ियाँ हैं जिन्हें महाबक कहा जाता है। ये अपनी टाँगों के सहारे छिछले पानी या कीचड़ में रह कर अपनी खूराक इकट्ठा करते रहते हैं। इनके पैर वैसे तो जालपाद नहीं होते और यदि किसी के हुए भी तो इनके पंजे का अँगूठा तो कभी भी झिल्ली से जुटा नहीं रहता। इनकी गरदन लम्बी होती है और चोंच लम्बी होने के साथ ही साथ नोकीली भी रहती है।

## (९) हंसावर-वर्ग

**हंसावर :** इस छोटे वर्ग में केवल हंसावर रखे गये हैं, जो हंस और बत्तख के निकट सम्बन्धी होते हुए भी अपनी लम्बी गरदन और लम्बी टाँगों के कारण उनसे अलग कर दिये गये हैं।

हंसावरों को हम बत्तखों और लगलग, कौआरी आदि लम्बी टाँग वाली चिड़ियों के बीच की कड़ी कह सकते हैं। इनकी चोंच टेढ़ी और अद्भुत बनावट की होती है।

ये पानी में रहनेवाले पक्षी हैं जो अपनी लम्बी टाँगों के सहारे छिछले पानी और कीचड़ में रह लेते हैं, साथ ही साथ गहरे पानी में तैरने और डुबकी लगाने में भी ये उस्ताद होते हैं। ये झुंड में रहते हैं और मौसमी पक्षी होने के कारण लम्बी उड़ान में दक्ष होते हैं।

(१०) हंस-वर्ग

**हंस, बत और बत्तखें** : इस वर्ग में सब तरह की बत्तखें और हंस एकत्र किये गये हैं जिनकी खास विशेषता उनकी उँगलियों का एक झिल्ली से जुटा रहना है। इसी से इन पक्षियों को जाल-पाद कहा जाता है। इनके बच्चे अंडे से बाहर निकलने के थोड़ी देर बाद ही पानी में तैरने लगते हैं। इनके पैर छोटे, चोंच सीधी और चपटी तथा पर घने और चिकने होते हैं जिन पर पानी नहीं ठहरता। जब ये अपनी पोशाक बदलते हैं तो इनके पर इस तेजी से गिर जाते हैं कि ये कुछ समय के लिए उड़ने में असमर्थ हो जाते हैं। ये शाकाहारी और मांसाहारी दोनों होते हैं लेकिन इनमें ज्यादा संख्या उन्हीं की है जो घास-पात और सेवार आदि से अपना पेट भरते हैं।

(११) स्क्रीमर-वर्ग

**स्क्रीमर** : इस वर्ग में स्क्रीमर नाम के पक्षी रखे गये हैं जो दक्षिण अमेरिका के निवासी हैं। ये वैसे तो हंसावर और बत्तखों के निकट सम्बन्धी हैं, लेकिन इनके पैर न तो हंसावर जैसे लम्बे और न बत्तखों-जैसे छोटे होते हैं। इनकी चोंच बत्तखों की तरह न होकर मुरगियों की तरह होती है। पैर के अँगूठे लम्बे और पैरों में दो-दो मजबूत खार रहते हैं। तीसरे और चौथे अँगूठे जड़ के पास झिल्ली से जुटे रहते हैं। सर पर परों की एक लम्बी चोटी रहती है जो आगे की ओर झुकी रहती है।

(१२) कपोत-वर्ग

**कबूतर, फाख्ता और मटतीतर** : इस वर्ग में कबूतर, हारिल, फाख्ता और मटतीतर इकट्ठे किये गये हैं जो हमारे बहुत परिचित पक्षी हैं। इन्हीं में से डोडो (Dodo) नाम का एक पक्षी था जो अब लुप्त हो गया है।

इन पक्षियों की शरीर-रचना सुडौल होती है। डैने मजबूत और उड़ान लम्बी होती है।

कबूतर रोज अपने शरीर के वजन से ज्यादा खाना खा लेता और मटतीतर की तरह अपनी चोंच तब तक पानी में डाले रहता है जब तक पेट भर पानी नहीं पी लेता।

(१३) कुक्कुट-वर्ग

**शिकार के पक्षी, मुरगियाँ, फेजेन्ट आदि** : इस वर्ग में वे सब पक्षी एकत्र किये गये हैं जिन्हें शिकार की चिड़ियाँ कहा जाता है। इनका शरीर गठीला, गरदन कुछ लम्बी, सर बड़ा और चोंच मजबूत होती है। ऊपरी चोंच कुछ टेढ़ी और नीचे की चोंच पर चढ़ी रहती है। पैर मजबूत और जमीन पर भागने के लिए उपयुक्त होते हैं।

इनके डैने नोकीले और छोटे होते हैं जिससे ये फौरन ही जमीन पर से हवा में उठ जाते हैं, लेकिन वे थोड़ी ही दूर जाकर फिर जमीन पर उतर आते हैं।

उड़ते समय ये बहुत शोर करते हैं और इनके बच्चे अंडा फूटते ही दौड़ने-भागने लगते हैं।

(१४) जल-कुक्कुट-वर्ग

**जल-मुर्गियाँ** : इस वर्ग में हर तरह की जल-मुर्गियाँ आती हैं जो बत्तखों से ज्यादा शिकार की चिड़ियों की निकट सम्बन्धी कही जा सकती हैं।

इनमें अधिकांश चिड़ियाँ ऐसी हैं जिन्होंने अपने डैनों के इस्तेमाल न करने के कारण उड़ने की बहुत कुछ शक्ति गवाँ दी है। इनके पैर लम्बे और अँगूठे बढ़े हुए होते हैं। डैने गोलाई लिये हुए और कमजोर रहते हैं। दुम छोटी, शरीर पतला और दबादबा-सा, गरदन लम्बी और सर छोटा रहता है, लेकिन किसी-किसी की चोंच लम्बी भी रहती है।

(१५) क्रौञ्च-वर्ग

**सारस, चरत, करकरा और क्रौञ्च आदि पक्षी** : इस वर्ग में सारस और चरत जैसी चिड़ियाँ सम्मिलित की गयी हैं जिनके बच्चे अंडे फूटने पर ही भागने दौड़ने लगते हैं। इनकी टाँगें लम्बी होती हैं और कद भी बड़ा होता है जिससे ये काफी तेज भाग लेते हैं।

इन पक्षियों के तीन ही अँगूठे होते हैं। ये पक्षी ज्यादातर खुले मैदानों में रहते हैं।

इस वर्ग में जो पक्षी सारस से मिलते-जुलते रहते हैं, उनकी टाँगें, चोंच और गरदन लम्बी रहती हैं, पैर में चार अँगूठे रहते हैं, जिनमें पहला छोटा और ऊपर की ओर उठा रहता है।

(१६) चहा-वर्ग

**चहा, बटन, करबानक आदि** : इस वर्ग में चहा, बटन, करबानक, चुपका आदि पानी के किनारे रहने वाले पक्षी हैं जो अपनी लम्बी चोंच के लिए प्रसिद्ध हैं। इनके बच्चे अंडा फूटते ही इधर-उधर दौड़ने-भागने लगते हैं। इनके डैने लम्बे और नोकीले होते हैं और दुम छोटी रहती है। इनमें स्थान-परिवर्तन करने वाले पक्षी अधिक हैं।

(१७) कुररी-वर्ग

**कुररी, सामुद्रिक आदि पक्षी** : इस वर्ग में सब प्रकार के सामुद्रिक और कुररियों को रखा गया है जिनकी पोशाक प्रायः सफेद या सिलेटी रहती है। इनके पैर में अगले तीन अँगूठे पूरे जालपाद रहते हैं। इन पक्षियों के डैने काफी लम्बे होते हैं, जिनके सहारे ये काफी लम्बी उड़ान भरने में समर्थ होते हैं। पहला अँगूठा औरों से कुछ ऊपर रहता है और वह झिल्ली से जुटा नहीं रहता। ये गिरोह में रहने और शोर मचाने वाले पक्षी हैं।

(१८) समुद्री काक-वर्ग

**समुद्री काक (पेटरल) और एल्बाट्रास** : इस वर्ग में समुद्री काक (पेटरल) और एल्बाट्रास रखे गये हैं जो समुद्री जल-पक्षी

हैं और समुद्र के ऊपर लम्बी उड़ान भरने के लिए जिनको लम्बे और मजबूत डैने मिले हैं।

समुद्री काक का कद कुछ छोटा जरूर होता है, लेकिन इसके पर भी लम्बे और चोंच मजबूत होती है।

## (१९) पनडुब्बी-वर्ग

**पनडुब्बियाँ :** इस वर्ग में वे चिड़ियाँ रखी गयी हैं जो पानी में डुबकी लगाने में उस्ताद होती हैं। इनके पैर छोटे और पीछे की ओर मुड़े रहते हैं। इनमें आगे के अँगूठे या तो जालपाद या अर्धजालपाद रहते हैं। पहला अँगूठा या तो होता नहीं या फिर प्रारम्भिक अवस्था-जैसा छोटा-सा रह जाता है। इनके बच्चे अंडे फूटते ही पानी में तैरने लगते हैं। इनके डैने छोटे, चोंच कभी सीधी और कभी टेढ़ी और अक्सर चपटी रहती है।

## (२०) पेंगुइन-वर्ग

**पेंगुइन :** इस वर्ग में केवल पेंगुइन नाम के पक्षी हैं जो अन्य सब पक्षियों से निराले हैं। इन्होंने अपनी उड़ने की शक्ति खो दी है और अपना जीवन तैर कर ही बिता देते हैं। इनके डैने पर प्रारम्भिक पर जरूर रहते हैं लेकिन ये डैने न रह कर पतवारनुमा अंग बन गये हैं, जिसके सहारे ये पानी के भीतर मछलियों की तरह तैर लेते हैं। इनकी टाँगें बहुत छोटी होती हैं जो पीछे की ओर रहती हैं। इसी के सहारे पेंगुइन सीधे खड़े हो जाते हैं। इनके बच्चे अंडे से बाहर निकलने पर असहाय रहते हैं।

ये समुद्री पक्षी हैं जो पूर्ण रूप से मांसभक्षी हैं। इनकी चोंच लम्बी, नोकीली और दोनों ओर से चपटी रहती है। पैर के तीनों अँगूठे जालपाद होते हैं और पहला बहुत छोटा रहता है।

## (२१) टिनामस-वर्ग

**टिनामस :** इस वर्ग में दक्षिणी अमेरिका का टिनामस नाम का पक्षी है जो बहुत कम उड़ पाता है। इनकी कुछ बातें शिकार के पक्षियों से और कुछ शुतुरमुर्गों से मिलती-जुलती होती हैं। इनकी शक्ल-सूरत तीतर-जैसी होती है लेकिन इनका सर छोटा होता है। इनकी चोंच छोटी, पतली और मुड़ी हुई रहती है, पैर मजबूत और डैने छोटे गोलाई लिये रहते हैं।

इनके बच्चे अंडे से बाहर होते ही दौड़ने लगते हैं।

## (२२) शुतुरमुर्ग-वर्ग

**शुतुरमुर्ग, इम्भू आदि पक्षी :** इस वर्ग में शुतुरमुर्ग सरीखे उन पक्षियों को रखा गया है जो खुश्की में रह कर भी उड़ने में असमर्थ हो गये हैं।

## (२३) सदन्त-वर्ग

**सदन्त लुप्त पक्षी :** इस वर्ग में वे लुप्त चिड़ियाँ इकट्ठी की गयी हैं जिनके दाँत थे।

## (२४) लम्बपुच्छ-वर्ग

**लम्बपुच्छ लुप्त पक्षी :** इस वर्ग में वे लुप्त चिड़ियाँ हैं जिनके जबड़ों में दाँत तो थे ही, साथ ही साथ इनके छिपकली की तरह लम्बी दुम भी थी, जिसका नमूना आर्किआप्टेरेक्स है।

पक्षियों के वर्गीकरण के साथ ही हमें उनके विभाजन के बारे में कुछ बता देना आवश्यक है। जीवों का वर्गीकरण करते समय उनकी शरीर-रचना, व्यवहार तथा उनके विशेष गुणों को ध्यान में रख कर ही वैज्ञानिकों ने इनका बड़े परिश्रम से वर्गीकरण किया है।

पहले सारे जीव-जगत् (Animal Kingdom) को विद्वानों ने दो उप-जगतों में विभाजित किया है :

१. **अमेरुदंडीय उप-जगत्**
२. **मेरुदंडीय उप-जगत्**

अमेरुदंडीय उप-जगत् में बिना रीढ़ वाले सभी जीव एकत्र किये गये हैं। इनमें एककोषीय कामरूपी (अमीबा), स्पंज, प्रवाल, अनिलपुष्प, कृमि, तारा मछली, जलसाही, सीप, घोंघे तथा सभी प्रकार के कीट-पतंग शामिल हैं।

मेरुदंडीय उप-जगत् में मछलियाँ, मेढक, साँप, कछुए, मगर, छिपकली आदि रेंगने वाले जीव तथा पक्षी और जानवर आते हैं।

उप-जगत ( Sub-Kingdom ) विभागों (Phylum) में बाँटे गये हैं और ये विभाग फिर श्रेणियों ( Classes ) में विभक्त किये गये हैं। श्रेणियाँ वर्गों ( Orders ) में बाँटी गयी हैं और वर्गों को परिवारों ( Families ) में तथा परिवारों को वंशों ( Genuses ) में विभक्त किया गया है। वंशों को सुविधा के लिए जातियों ( Species ) में बाँट दिया गया है जिससे हम किसी जीव के बारे में जान सकें कि वह किस जाति, वंश, परिवार तथा वर्ग का प्राणी है।

नीचे इसे क्रम से दिया जा रहा है—

उप-जगत (Sub Kingdom)
विभाग (Phylum)
श्रेणी (Class)
वर्ग (Order)
परिवार (Family)
वंश (Genus)
जाति (Species)

## ● भौगोलिक विभाजन

हमारी पृथ्वी को संसार के राजनीतिज्ञ चाहे जिस प्रकार विभाजित करते रहें लेकिन जीवविज्ञान के दृष्टिकोण से प्राणि-शास्त्र के विद्वानों ने पृथ्वी को निम्नलिखित भागों में विभक्त किया है—

१. **होलआर्कटिक क्षेत्र** (Holarctic Region), **यह क्षेत्र दो भागों में बाँटा गया है :**

(१) पेलीआर्कटिक उप-खंड (Palaearctic Sub Division)

(२) निआर्कटिक उपखंड (Nearctic Sub Division)

होलआर्कटिक (Holarctic Region) उत्तरी गोलार्ध में है जिसमें यूरोप, अफ्रीका का थोड़ा हिस्सा, उत्तरी और मध्य एशिया तथा उत्तरी अमेरिका शामिल हैं।

२. **ईथियोपियन क्षेत्र** (Ethiopian Region)
इसमें अफ्रीका और अरब शामिल हैं।

३. **भारतीय या प्राच्य क्षेत्र** (Indian or Oriental Region)
इसमें भारत, चीन, लंका और मलाया शामिल हैं।

४. **न्यूजीलैंड** (Newziland)
इसमें पूरा न्यूजीलैंड शामिल है।

५. **आस्ट्रेलिया** (Australia)
इसमें आस्ट्रेलिया के अलावा प्रशान्त महासागर के द्वीप भी शामिल हैं।

६. **नव उष्णकटिबंधीय क्षेत्र** (New Tropical Region)
इसमें मैक्सिको से केप हार्न (Cape Horn) तक का प्रदेश शामिल है।

हमें चूँकि यहाँ भारतीय क्षेत्र से ही ज्यादा मतलब है, इससे हम यहाँ इसी क्षेत्र का विस्तार के साथ वर्णन कर रहे हैं।

वैसे तो भारत, बरमा और लंका इन्हीं तीनों को हम वास्तव में भारतीय क्षेत्र कह सकते हैं और इसमें भी हमें हिमालय को इसलिए छोड़ देना पड़ता है कि वहाँ के पक्षी भारत से ज्यादा चीन के पक्षियों से मिलते-जुलते होते हैं। लेकिन श्री ब्लैनफोर्ड (Blanford) ने भारत, बरमा और लंका को निम्नलिखित पाँच हिस्सों में बाँटा है। वैसे तो अब भारत से बरमा, लंका और पाकिस्तान निकल गये हैं लेकिन यहाँ हम पक्षियों का विभाजन ब्लैनफोर्ड (Blanford) के अनुसार ही कर रहे हैं। ये पाँचों भाग इस प्रकार हैं:

(१) **उत्तरी भारत**—यह भाग सारे उत्तर भारत में अरब सागर से लेकर बंगाल की खाड़ी तक फैला है, जिसमें बाँगला देश और पश्चिमी पाकिस्तान भी शामिल हैं। इसकी दूसरी उत्तरी सीमा कराँची से पेशावर और हिमालय से भूटान तक की तराई है और पूर्वी सीमा सुन्दर बन तक फैल जाती है। दक्षिणी सीमा कच्छ की खाड़ी से दिल्ली तक और वहाँ से आगरा, राजमहल की पहाड़ियों पर होते हुए बंगाल की खाड़ी तक चली जाती है।

(२) **हिन्द प्राय द्वीप**—इस भाग में वह सारा हिन्द प्रायद्वीप शामिल है जो पहले भाग के दक्षिण की ओर स्थित है।

(३) **लंका**—इसमें पूरा लंका द्वीप शामिल है।

(४) **हिमालय**—यह भाग उत्तर भारत के ऊपर की ओर तराई से लेकर हिमालय में जहाँ १९,००० फुट तक वृक्ष पाये जाते हैं वहाँ तक फैला है।

(५) **आसाम और बरमा** : इस भाग में आसाम और बरमा शामिल हैं।

ये पाँचों हिस्से फिर से विभक्त किये जा सकते हैं जिनमें हिमालय में ऊँचाई के दृष्टिकोण से और मैदानों में वर्षा के दृष्टिकोण से विभाजन किया जा सकता है, लेकिन इसके लिए बहुत विस्तार में जाना होगा।

हमारे देश के पक्षिशास्त्र के विद्यार्थियों को इस लम्बे-चौड़े देश के कारण एक दिक्कत यह पड़ती है कि स्थान-स्थान के पक्षियों में कुछ भेद जरूर रहता है। मसलन एक ही जाति के उत्तर और धुर दक्षिण के पक्षी रंग-रूप में भिन्न होते हैं।

हिमालय में मिलने वाली चिड़ियों में भी यही भेद पाया जाता है। वहाँ की चिड़ियाँ दो हिस्सों में बाँट दी गयी हैं, पूर्वी और पश्चिमी, जिनके विभाजन की रेखा नेपाल से होकर जाती है। नेपाल के पूर्व पाये जाने वाले पक्षी पूर्वी किस्म के पक्षी कहलाते हैं, जिनका रंग उसी जाति के पश्चिमी पक्षियों से गहरा जरूर होता है, लेकिन वे पश्चिमी पक्षियों से कद में छोटे होते हैं।

यही हाल उत्तरी भारत और हिन्द-प्रायद्वीप का है। अगर कोई पक्षी सारे उत्तरी और दक्षिणी भारत में फैला है तो उसकी कई किस्में जरूर पायी जायेंगी और स्थान-स्थान के पक्षियों के रंग और कद में जरूर कुछ न कुछ भेद रहेगा। अर्थात् भारत के उत्तरी-पश्चिमी रेगिस्तान, आसाम और पूर्वी हिमालय के तराई, उत्तर भारत के मैदान, पश्चिमी घाट के किनारे से ट्रावनकोर तक का निचला हिस्सा जहाँ काफी वर्षा होती है, एक ही जाति के पक्षियों में हम कुछ न कुछ भेद अवश्य पायेंगे। रेगिस्तानों की चिड़ियों का रंग हलका और हिमालय की चिड़ियों का रंग गहरा रहता है। उत्तर और पश्चिम की चिड़ियाँ जहाँ कद में बड़ी होती हैं वहीं दक्षिण और पूर्व की चिड़ियाँ कद में उनसे कुछ छोटी होती हैं।

अन्त में हमें चिड़ियों के स्थान-परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए यह जान लेना चाहिये कि यह आवश्यक नहीं है कि मौसम के अनुसार यहाँ प्रत्येक स्थान पर मौसमी चिड़ियाँ आती-जाती ही रहें। यहाँ देश में रहने वाली बारहमासी चिड़ियाँ भी थोड़ा-बहुत स्थान-परिवर्तन करती रहती हैं, जो स्थानीय परिवर्तन कहलाता है।

मौसमी चिड़ियों के स्थान-परिवर्तन के बारे में विस्तार से आगे लिखा जायेगा, लेकिन यहाँ हमें अपने देश के बारे में इतना जान लेना चाहिये कि हमारा देश उत्तरी और मध्य एशिया के धुर दक्षिण में है, जहाँ जाड़े में काफी सर्दी पड़ती है और गरमियों का समय चंद महीनों का ही रहता है। यही कारण है कि शीत-काल में हमारे देश में जहाँ कीड़े-मकोड़ों और फलों की बहुतायत

रहती है, मौसमी चिड़ियों की काफी बड़ी संख्या यहाँ चली आती है।

हमारे यहाँ इन चिड़ियों का आना जुलाई से आरम्भ हो जाता है जो सितम्बर तक अपने पूरे ज़ोर पर पहुँच जाता है। ये चिड़ियाँ हिमालय पर्वत के दोनों सिरों से होकर हमारे देश में आती हैं और देश के दोनों किनारों से बढ़ती हुई लंका तक पहुँच जाती हैं। जाड़े के अन्त में, यानी फरवरी में इनका लौटना शुरू हो जाता है और इन चिड़ियों की लहर दक्षिण से उत्तर की ओर चलने लगती है। मई के अन्त तक ये हमारे देश से वापस चली जाती हैं।

इस स्थान-परिवर्तन के अलावा हमारे देश में स्थानीय स्थान-परिवर्तन भी होता रहता है जिसका मुख्य कारण वर्षा और शीत की कमी और बेशी है। लगातार वर्षा होने के कारण चिड़ियाँ उस स्थान को छोड़कर चली जाती हैं, लेकिन अच्छी बरसात से खुराक की अधिकता हो जाती है और वहाँ चिड़ियों का झुंड जा पहुँचता है।

इसी तरह सर्दी के कारण हिमालय में चिड़ियाँ ऊपर-नीचे आती-जाती रहती हैं। जाड़े में ज्यों-ज्यों बरफ की रेखा नीचे की ओर सरकती आती है, वहाँ की चिड़ियाँ भी नीचे की ओर चली आती हैं, यहाँ तक कि जाड़े में वे मैदानों तक में उतर आती हैं लेकिन गरमी आने पर वे फिर पहाड़ों की ओर लौट जाती हैं।

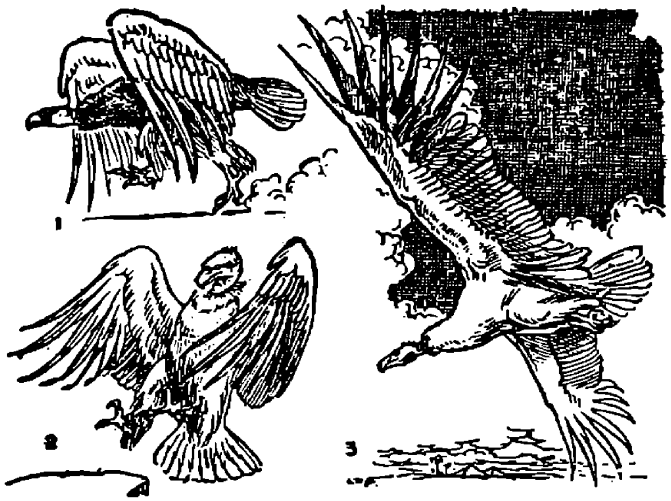
## ● उड़ान

चिड़ियों की उड़ान के बारे में अक्सर लोग विस्तार से लिखना छोड़ ही जाते हैं, क्योंकि चिड़ियाँ उड़ती हैं, यह एक मामूली-सी बात समझ कर इस पर कुछ लिखना शायद जरूरी नहीं समझा जाता। पर, यदि वास्तव में देखा जाय तो चिड़ियों के विकास, शरीर-रचना तथा प्रवास-गमन से अधिक कठिन और दिलचस्प विषय चिड़ियों की उड़ान है। अतः यहाँ इस बारे में कुछ लिखना आवश्यक है।

चिड़ियों की उड़ान तीन तरीके की होती है। पंख मारना (Flapping), नीचे उतरना (Gliding) और ऊपर चढ़ना (Soaring)।

पंख मारने में चिड़ियाँ डैने चलाकर आगे की ओर बढ़ती हैं। नीचे उतरने में चिड़ियाँ डैने रोककर नीचे की ओर उतरती हैं और ऊपर चढ़ने में भी चिड़ियों के डैने तने रहते हैं, पर वे उन्हें टेढ़ा करके ऊपर की ओर चढ़ती जाती हैं।

पंख मारना देखने में जितना सरल जान पड़ता है उतना है नहीं। अगर किसी से पूछिये कि चिड़ियाँ कैसे पंख मारकर उड़ती हैं तो वह यकीनन यही उत्तर देगा कि चिड़ियाँ उड़ने के लिए अपने डैने ऊपर-नीचे की ओर चलाती हैं। किन्तु यदि ऐसा होता तो ऊपर-नीचे की ओर डैने चलने से चिड़ियाँ आगे की ओर न बढ़कर उलट कर नीचे गिर जातीं। चिड़ियाँ तो आगे, नीचे, पीछे और ऊपर की ओर अपने डैने गोलाकार चलाकर हवा में उसी तरह तैरती हैं, जिस तरह पानी में तैरा जाता है। यह विवरण बहुत से विद्वान् देते हैं जिसके किसी कदर सही और सरल होने पर भी हमें पंख मारने को भली भाँति समझने के लिए जरा विस्तार में जाना पड़ेगा।



चित्र ११—गिद्ध की उड़ान, (खुले पंखों का फैलाव ८ फुट)। 1. ऊपर उठना, 2. पृथ्वी पर उतरना, 3. हवा में तैरना।

तैरना शब्द से पंख मारने का पूरा अर्थ नहीं निकलता, क्योंकि डैने एकदम नाव के डाँड़ की तरह न चलकर हवाई जहाज के प्रोपेलर की तरह चलते हैं, जिनमें दोनों किनारे अर्ध गोलाकार घूमते हैं और ऊपर-नीचे का पंख-संचालन तो सिवा सीधी उड़ान के और होता ही नहीं। मामूली तेज सीधी उड़ान में ही अक्सर डैने क्रमशः ऊपर, पीछे, नीचे और आगे की ओर चलते हैं।

अब हम पक्षियों की उड़ान के तीनों तरीकों में से एक-एक को विस्तार से लेते हैं। पहले पंख मारकर आगे की ओर बढ़ने को ही लें।

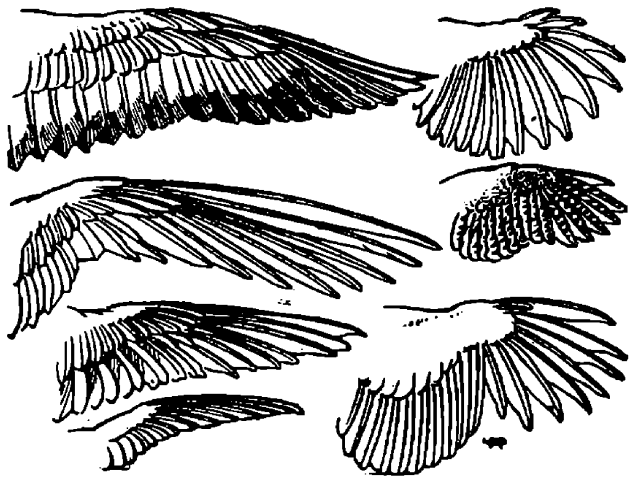
पंख चलाने में ऊपर का स्ट्रोक या पंख-संचालन सबसे महत्व-पूर्ण है। इसके लिए कुछ तो डैने की बनावट सहायक होती है और कुछ पंखों के संचालन की सहूलियत भी। डैने की ऊपर उभरी हुई सतह बिना जोर डाले हवा के बाहर निकल जाने में सहायता पहुँचाती है। बड़े पंख फैल जाते हैं और हवा उनकी संधियों से होकर बाहर निकल जाती है। होता ऐसा है कि नीचे से आगे की ओर होकर जब डैने को ऊपर का आघात लगाना होता है तो पहले डैने की कलाई ऊपर की ओर उठती है, फिर बड़े पंख आगे की ओर फैलकर घूम जाते हैं, यहाँ तक कि उनकी गोलाई और बढ़ जाती है और उसी समय एक झटके के साथ पूरा डैना ऊपर की ओर चला जाता है। इस प्रकार ऊपर का पूरा आघात समाप्त होता है।

एक आसानी इस आघात में और होती है। इसी झटके से डैना हवा के झोंके से पीछे की ओर चला जाता है और इस

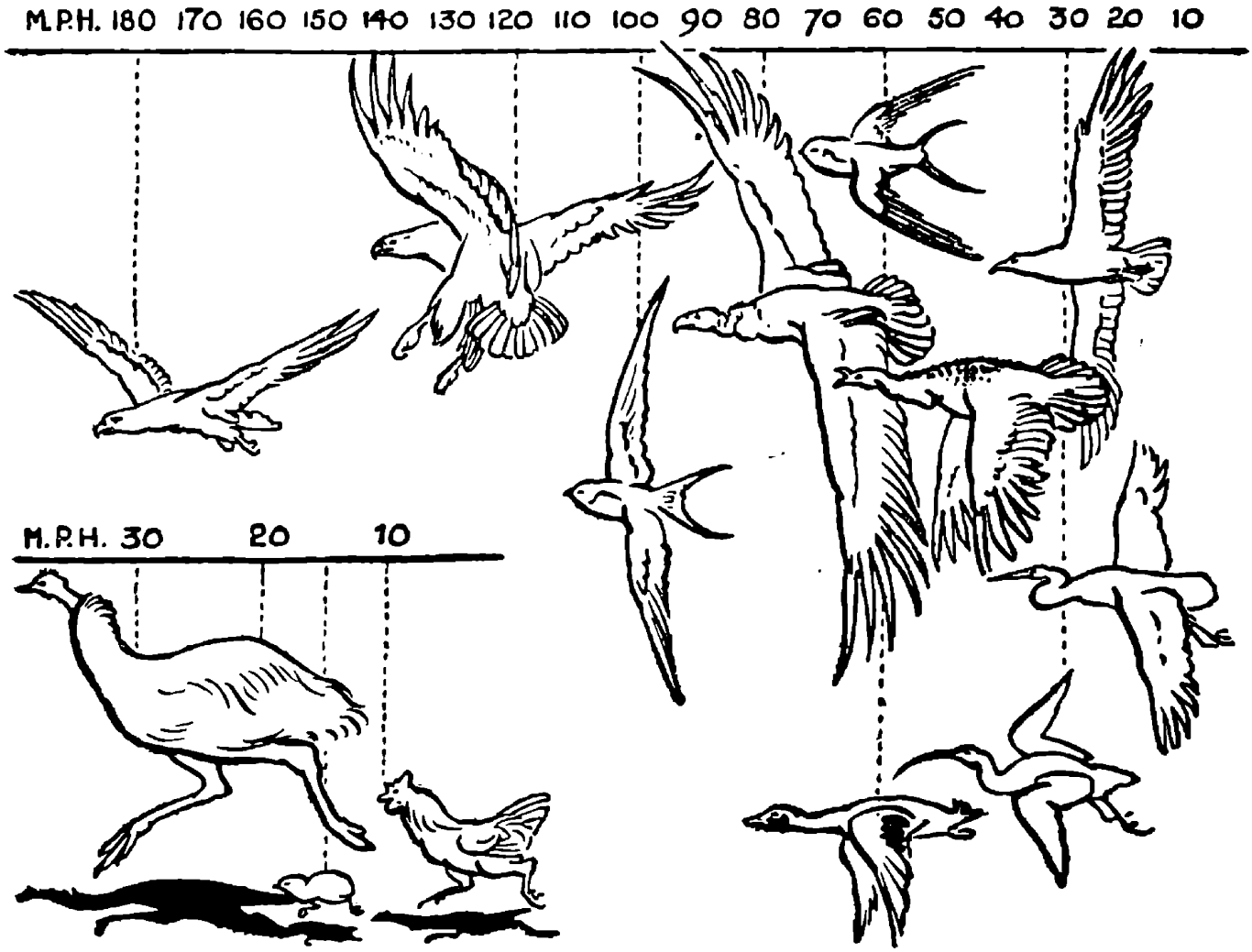
प्रकार अपने आप ही पिछला आघात भी अधिक दूर तक पहुँच जाता है। पीछे जाकर उसे फिर नीचे की ओर जाना पड़ता है जहाँ से आगे और फिर वैसे ही ऊपर की ओर जाना होता है। इसी प्रकार का यह चक्र बड़ी तेजी से चलता रहता है।

पर इस पंख-संचालन से हम चिड़ियों की रफ्तार का सही-सही अंदाज नहीं लगा सकते। उसके लिए तो हमें अन्य साधनों का सहारा लेना पड़ेगा।

पहले तो हमें तेज रफ्तार वाली चिड़ियों के शरीर और पंख की बनावट की ओर गौर से देखना चाहिए। उनके शरीर की बनावट बहुत साफ-सुथरी और सूच्याकार (Stream Lined) होती है जिसमें हवा कहीं जरा भी न रुककर फिसलती हुई चली जाय।



चित्र १२—डैनों के नमूने : गोल और नोकदार पंख।




चित्र १३—पक्षियों की उड़ान (चित्र में अंकित मील, प्रति घण्टा)
[बायें से] बत्तख, चील, गौरैया, गिद्ध, स्विफ्ट, मैलार्ड, टर्की, समुद्री चील, करल्यू, इग्रेट
[जमीन पर दौड़ते हुए] ऐमू, क्वेल, हेन (मुर्गी)।

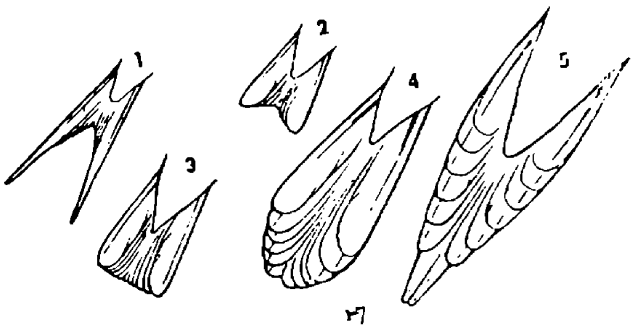
अबाबील आदि तेज उड़ने वाली चिड़ियों के डैने लम्बे और पतले होते हैं। इनके डैनों की नोक पतली तो रहती ही है, एक बात इन उड़ाकी चिड़ियों में और रहती है कि इनके डैने का निचला भाग गहरा न होकर चौरस रहता है।

डैनों की एक नहीं हजारों डिजाइनें हैं जो अलग-अलग महत्व-पूर्ण कार्य के लिए ही जैसे बनायी गयी हों। अबाबील, बतासी, बहरी और शकरखोरे के डैने पतले और नोकीले होते हैं। बाज आदि के डैने लम्बे और नोकीले होते हुए भी कलाई पर इसलिए मुड़े-से रहते हैं कि उन्हें तेजी से नीचे उतरने में सहूलियत हो। अगर इस प्रकार के डैने भरत या लवा आदि पक्षियों के, जिन्हें जल्दी से जमीन पर से उड़ना पड़ता है, हो जायँ तो उन्हें बड़ी दिक्कत उठानी पड़े। उनके डैने तो छोटे और कुछ घूमे हुए से होते हैं जिससे वे जमीन पर से आसानी से उड़ सकें। गौरैया और बटेर आदि छोटी चिड़ियाँ भी, जो झाड़ियों से भर से उड़ जाती हैं, छोटे डैने वाली होती हैं। धीरे-धीरे हवा में ऊपर की ओर चढ़ने वाले पक्षी बड़े और चौड़े डैने वाले होते हैं। सामुद्रिक (Gull) और कुररी ( Tern ) आदि पानी के किनारे घूमने वाली चिड़ियों के डैने लम्बे, पतले और नोकीले होते हैं, जिससे वे हवा में बिना किसी कठिनाई के ठहर सकें, तेज उड़ सकें और जरूरत पड़ने पर तीर की तरह पानी में टूट कर अपना शिकार पकड़ सकें।

बतासी ( Swift ) की उड़ान के बारे में कुछ विद्वान् यह संदेह करते हैं कि पंख मारकर आगे बढ़ते समय वह अपने डैने एक साथ न चला कर आगे-पीछे चलाती है। इस पर अभी कोई निश्चित मत नहीं पाया गया है कि क्या दरअसल बतासी के डैने पंख मारते समय आगे-पीछे चलते हैं और यदि ऐसा है तो इससे क्या लाभ है? पर इतना तो जरूर है कि बतासी उड़ते समय जरा भी इधर-उधर घूमी नहीं कि ऐसा धोखा हो जाता है कि उसके डैने आगे-पीछे चल रहे हैं । बहुत मुमकिन है कि इस सर्वश्रेष्ठ उड़ाके पक्षी को, जिसकी रफ्तार १०० मील प्रति घंटा आँकी गयी है और जिसे ६०-७० मील प्रति घंटा की रफ्तार में मुड़ कर कीड़े-फतिंगे पकड़ने का अभ्यास है, प्रकृति ने इस प्रकार के डैने चलाने की कोई खास सहूलियत प्रदान की हो।

डैनों के साथ-साथ चिड़ियों की दुम के बारे में भी कुछ लिखना जरूरी हो जाता है, क्योंकि उड़ने में डैने से कम इन दुम के परों का हाथ नहीं है। दुम को पतवार की तरह इधर-उधर घुमाने का काम तो करना ही पड़ता है साथ ही साथ उसे संतुलन की जिम्मेदारी भी उठानी पड़ती है।

दुमें एक नहीं, अनेक तरह की होती हैं। उनकी कौन-सी शक्ल चिड़ियों की उड़ान में क्या सहूलियत या बाधा पहुँचाती है, इसका ठीक-ठीक अन्वेषण अभी तक नहीं हो सका है, पर इतना तो सभी जानते हैं कि छोटी दुम वाली चिड़ियों को जल्दी मुड़ने में बहुत बाधा पहुँचती है। छोटी दुम होने के कारण बत्तखों की उड़ान प्रायः सीधी ही होती है। मोर आदि लम्बी दुम वाले पक्षी अपनी सुन्दर दुम से अपनी मादा को भले ही आसानी से रिझा लेते हों, पर उड़ने में तो उनकी दुम उनके लिए एक बोझ ही हो जाती है।




**चित्र १४—दुम के कुछ नमूने ।**

**1. लीशरा, 2. अबाबील, 3. नीलकंठ, 4. फाख्ता, 5. फुदकी ।**

उड़ने के समय चिड़ियों का अपने शरीर का नियंत्रण बहुत जरूरी है। पर उड़ जाने के बाद उनके घूमने-फिरने, नीचे-ऊपर आने-जाने और कलाबी काटने या गिरहबाजी करने में उनकी दुम का काम शुरू हो जाता है।

चिड़ियों की उड़ान में उनकी दुम उनके रुख बदलने का मुख्य काम करती है। यह उड़ान चाहे ऊपर की ओर हो चाहे नीचे की ओर, दुम को खोलने व बन्द करने से उन्हें घूम जाने में आसानी हो जाती है ।

दाहिनी ओर, और बायीं ओर घूमने के लिए पक्षियों को अपनी दुम के सिरे को पतवार की तरह विपरीत दिशा में नहीं घुमाना पड़ता बल्कि इसके लिए वे अपने डैने और सिर से भी मदद लेती हैं। अगर उन्हें दाहिनी ओर घूमना है तो दुम का सिरा बायीं ओर झुकने से वे दाहिनी ओर घूम तो जाती हैं, पर यदि और जल्दी है तो वे अपनी गरदन का बोझ भी उसी ओर डाल देती हैं और उसी ओर के डैने को भी थोड़ा झुका देती हैं। लम्बी गरदन वाली सवन और बगुले आदि पक्षी अपनी लम्बी गरदन से घूमने के अलावा एक और काम लेते हैं। आगे की ओर तेजी से उड़ते समय वे अपनी लम्बी गरदन आगे की ओर बढ़ा देते हैं, इससे शरीर का गुरुत्व-केन्द्र (Center of Gravity) पीछे की ओर से हट कर कुछ आगे की ओर चला जाता है और इस प्रकार नीचे या पीछे का खिंचाव कुछ कम हो जाता है।

यह तो एक मामूली बात है कि जमीन से उड़ते समय चिड़ियों की शक्ति पहले ज्यादा खर्च होती है और फिर कुछ उड़ने पर उन्हें उसी तरह ज्यादा शक्ति नहीं लगानी पड़ती। जिस प्रकार मोटर को शुरू में पहले गेयर में चलाना पड़ता है, जिसमें ज्यादा शक्ति खर्च होती है, पर फिर एक बार थोड़ा चल जाने पर और तेजी पकड़ लेने पर उसे चलाने के लिए थोड़ी ही शक्ति की

जरूरत रहती है और इसलिए हम मोटर को क्रमशः दूसरे, तीसरे या चौथे गेयर में कर देते हैं जिसमें पहले के मुकाबले में बहुत कम शक्ति खर्च होती है ।

कुछ पक्षी जो प्रसिद्ध उड़ाके हैं और जिनके डैने बहुत लम्बे और पैर छोटे होते हैं, बिना कुछ दूर दौड़े नहीं उड़ पाते। अबाबील को ही लीजिए। वह कभी जमीन पर नहीं बैठती, क्योंकि जमीन पर बैठ जाने के बाद वह अपने लम्बे डैनों के कारण आसानी से उड़ नहीं पाती। इसलिए उड़ते-उड़ते या तो वह अपने घोंसले पर ही जाकर बैठती है या किसी मकान के छज्जे पर, जहाँ से उसे हवा में कूदने का मौका मिल सके और वह अपने लम्बे डैनों को हवा में फैला कर अपने शरीर को जमीन पर गिरने से सँभाल ही न ले, बल्कि हवा में तैरने भी लगे ।

अब हम चिड़ियों की उड़ान के दूसरे हिस्से अर्थात् ऊपर चढ़ने को लेते हैं । ऊपर चढ़ने में, जैसा पहले बताया गया है, चिड़ियों को डैने नहीं चलाने पड़ते, बल्कि वे अपने पंख फैला कर अपने डैनों को ऐसा तिरछा कर देती हैं कि हवा उनमें टकरा कर उनके शरीर को ऊपर की ओर चढ़ा ले जाती है ।

यह ठीक उसी प्रकार होता है जिस प्रकार वायुयान अपने पंख को थोड़ा तिरछा करके हवा में ऊपर उठ जाता है । इस प्रकार हवा में ऊपर चढ़ने में चिड़ियों को पहले तो हवा का झोंका मदद करता है जो ऊपर चल कर तेज होता जाता है और फिर हवा का प्रवाह सीधा न होकर तिरछा होता है, इससे वह भी ऊपर चढ़ने में कम मदद नहीं देता । इसके अलावा चिड़ियों के डैनों की बनावट ऐसी होती है कि वे हर तरह से अपने डैनों को तिरछा करके हवा के झोंके से फायदा उठा सकती हैं और ऊपर की ओर उठ सकती हैं ।

एक बात और ध्यान में रखनी चाहिए कि पानी की सतह एक-सी होने के कारण उस पर हवा की तेजी जमीन की सतह से ज्यादा रहती है । पानी की सतह पर की हवा ५० फुट ऊपर की हवा से, तेजी में तीन गुनी तेज हो जाती है । जब कुररी आदि पानी की सतह पर उड़ने वाली चिड़ियों को ५० फुट से उतर कर पानी की सतह के करीब आना पड़ता है तो उन्हें ऐसा लगने लगता है कि जैसे उनकी उड़ान में बहुत कमी आ गयी है और उन्हें अपनी पहले-जैसी रफ्तार कायम रखने के लिए तिगुनी तेजी से डैने चलाने पड़ते हैं ।

गिद्ध, बाज, उकाब आदि कुछ ऊपर चढ़ने वाले पक्षियों के डैनों की बनावट में एक खासियत होती है जिसका जिक्र पहले भी किया जा चुका है । उनके बड़े पंखों का निचला आधा हिस्सा तो चौड़ा रहता है, पर अगला आधा हिस्सा पतला हो जाता है । इससे जब वे अपने इन पंखों को फैला लेते हैं तो इनके बीच में थोड़ी-थोड़ी जगह हो जाती है और दूर से ऐसा जान पड़ता है, जैसे हाथ की उँगलियाँ फैली हों ।

डैने की इस प्रकार की बनावट से पक्षियों को ऊपर चढ़ने और नीचे उतरने में बहुत सहायता मिलती है ।

## ● भोजन

मनुष्यों की तरह चिड़ियाँ भी मांसाहारी और शाकाहारी होती हैं, लेकिन उनको चार श्रेणियों में बाँटने से हम उनके भोजन के बारे में और भी अच्छी तरह से समझ सकते हैं :

१. शाकभोजी पक्षी, २. मांसभोजी पक्षी
३. संयुक्तभोजी पक्षी, ४. अखाद्यभोजी पक्षी

(१) **शाकभोजी पक्षी**--इस श्रेणी में वे पक्षी आते हैं जो मांसभक्षी नहीं हैं । ये अपना पेट फूल-फल, बीज तथा कोंपल और कलियों से भरते हैं । कलियों के बारे में तो लोगों में मतभेद है, क्योंकि कुछ लोगों का कहना है कि गंगरा आदि पक्षी वास्तव में कलियाँ नहीं खाते, बल्कि वे उनके भीतर छिपे हुए कीड़ों के लिए उन्हें काटते हैं । खैर, जो कुछ भी हो, लेकिन शकरखोरा के बारे में तो यह मालूम ही है कि वह अपनी लम्बी चोंच से फूलों का रस ही पीता है ।

(२) **मांसभोजी पक्षी**--मांसाहारी पक्षियों की संख्या बहुत ज्यादा है और यह हम लोगों के लिए अच्छा ही है, क्योंकि साल भर में ये न जाने कितने चूहे आदि नुकसान पहुँचाने वाले जीवों को नष्ट कर डालते हैं, नहीं तो इन सबकी संख्या इतनी बढ़ जाती कि हमारी फसल को बचाना संभव न होता । उल्लू जाति के पक्षी इन छोटे और नुकसान पहुँचाने वाले जीवों का बहुत अधिक सफाया करते हैं । बाज परिवार के प्रायः सभी शिकारी पक्षी मांसभक्षी होते हैं और मछली खाने वाले पक्षियों की तो काफी बड़ी संख्या है जो सब मांसाहारी पक्षियों की श्रेणी में आते हैं ।

(३) **संयुक्तभोजी पक्षी**--इस श्रेणी में सबसे अधिक पक्षी आते हैं । ये मांसाहारी और शाकाहारी दोनों होते हैं और मांस, मछली, अंडे और कीड़े-मकोड़े के साथ ही साथ फल, फूल, तरकारियाँ, बीज और गल्ला भी खाते हैं । चरखी, मैना, कौए, बुलबुल, बत्तखें आदि इसी श्रेणी में आती हैं ।

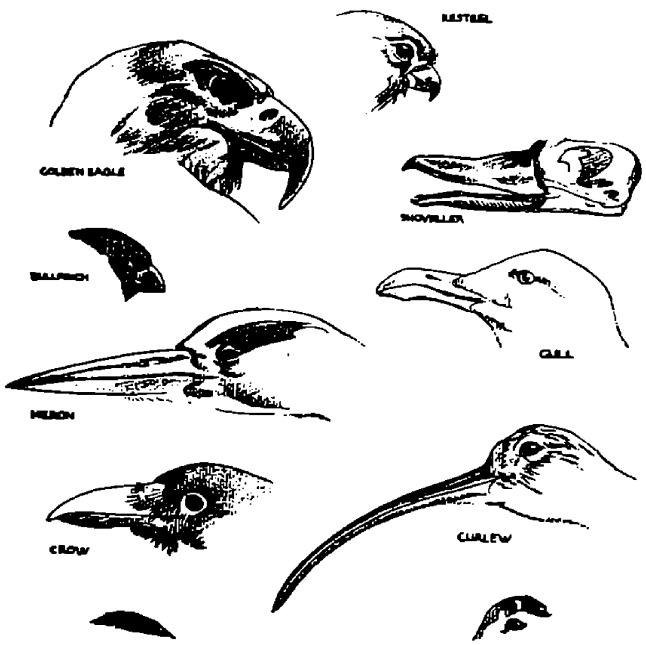
(४) **अखाद्यभोजी पक्षी**--इस श्रेणी में वे पक्षी रखे गये हैं जो हमारे यहाँ मेहतर का काम करते हैं । ये पक्षी मरे हुए जीवों को खाकर हमारे यहाँ की सफाई कायम रखने में हमारा बहुत हाथ बँटाते हैं । ये मुर्दाखोर तो होते ही हैं, साथ ही साथ ये बहुत-सी गंदी और सड़ी-गली चीजों को खाकर हमारी सफाई में हमारी बहुत सहायता करते हैं । इनमें गिद्ध परिवार सबसे अधिक प्रसिद्ध है ।

इस प्रकार हमने देखा कि पक्षियों को भिन्न-भिन्न खूराक के लिए अलग-अलग तरह की चीजों की जरूरत पड़ती है और यह भी हम जानते हैं कि चिड़ियों के मुँह में दाँत नहीं होते और वे अपनी इन्हीं चोंचों से मुँह और हाथ का काम लेती हैं, इससे

चिड़ियों की चोंच का विकास उनकी कई जरूरतों के अनुसार ही हुआ है और उनकी चोंच उनके लिए बहुत ही कीमती और उपयोगी अंग है।

## ● चोंच

जिस प्रकार चिड़ियों की एक नहीं अनेकों किस्में हैं उसी प्रकार इनकी चोंचें भी उनकी आवश्यकताओं को देखते हुए अलग-अलग बनावट की होती हैं। लेकिन ये प्रायः कड़ी, नोकीली और तेज होती हैं जिससे ये अपनी खूराक इकट्ठा करती और खाती हैं।




चित्र १५—पक्षियों की चोंच।

| | |
|---|---|
| Golden Eagle-**उकाब** | Kestrel-**खैरमुतिया** |
| Bull Finch-**तूती** | Shoveller-**तिवारी** |
| Heron-**बगुला** | Gull-**समुद्रिका** |
| Crow-**कौआ** | Curlew-**करलू** |

साधारण तौर पर अधिकांश पक्षियों की चोंचें बड़ी नोकीली और तेज होती हैं। कौए की चोंच इसका सुन्दर नमूना है। लेकिन कुछ अन्य पक्षियों की चोंचें टेढ़ी, पतली, चौड़ी या तिकोनी रहती हैं, जिनका वर्णन आगे किया जा रहा है।

शिकारी पक्षी की चोंच छोटी, मजबूत और टेढ़ी होती है। यह आगे की ओर मुड़ी रहती है और इतनी तेज होती है कि इससे कड़े से कड़ा मांस भी बड़ी आसानी से काटा जा सकता है। शिकार करने के लिए इससे सुन्दर और कोई चोंच नहीं होती। बाज, बहरी, गिद्ध आदि पक्षियों की ये चोंचें उनके शिकार पकड़ने, उनकी खाल उधेड़ने, उनकी मजबूत नसें काटने तथा उनका सिर तोड़ने और उनका मांस नोच-नोच कर खाने के लिए बहुत उपयोगी होती हैं।

तोतों की चोंचें भी इसी प्रकार टेढ़ी और तेज होती हैं, लेकिन फलाहारी होने के कारण वे अपनी तेज चोंचों से कड़े फल और बीज आदि तोड़ने के अलावा पेड़ों में अपना घोंसला बनाने के लिए उसके तने में गोल सूराख करने का काम लेते हैं।

मछली पकड़ने वाले पक्षियों की चोंचों की बनावट इस प्रकार की रहती है कि मछलियाँ उनकी पकड़ से फिसल न जायें। जलसिंहों की चोंच तो बड़ी होती ही है, साथ ही साथ उसके नीचे एक बड़ी थैली भी लटकती रहती है जिसमें वे १ फुट व १॥ फुट की मछलियों को पकड़ कर भरते जाते हैं। मछली पकड़ने वाली चिड़ियों की चोंच लम्बी, पतली, नोकीली और तेज होती है, लेकिन पनचिरा नाम के पक्षी की चोंच की बनावट निराली ही रहती है। वह चाकू के फल की तरह पतली होती है और चोंच का निचला हिस्सा ऊपरी हिस्से से काफी दूर तक आगे बढ़ा रहता है। पनचिरा पानी की सतह पर से मिलकर इस तरह उड़ता है कि उसकी निचली लंबी चोंच पानी को चीरती हुई चलती है और अगर कोई छोटी मछली इसके ऊपर आ जाती है तो वह उछल कर उसके मुँह में चली जाती है।

कीड़े खाने वाली चिड़ियों की चोंच, छोटी, पतली, नोकीली और तेज होती है। लहटोरा और मछमरनी आदि की चोंचें इसी प्रकार की होती हैं, लेकिन अबाबील और छपके की तरह हवा में उड़ते-उड़ते कीड़े-फतिंगे पकड़ने वाले पक्षियों की चोंच छोटी होती है, जिससे उनका मुँह काफी चौड़ा फैल सके।

गौरैया आदि दाना खाने वाली चिड़ियों की चोंच छोटी, मोटी और मजबूत होती है, जिससे वे कड़े बीज और फलों को आसानी से तोड़ सकें।

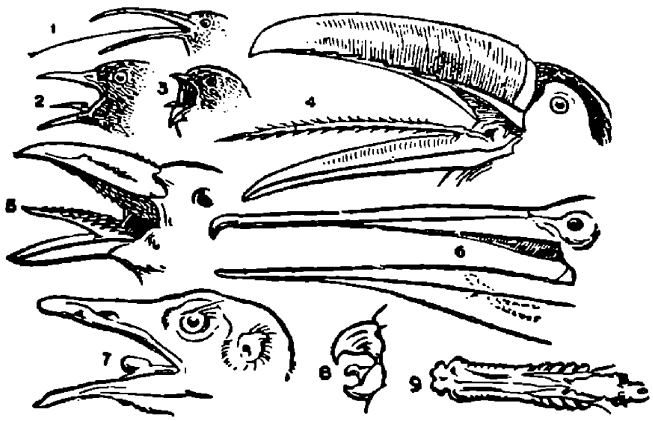
इस प्रकार हम चिड़ियों की चोंचों की बनावट में उनकी आवश्यकता की स्पष्ट छाप देखते हैं और इन चोंचों की बनावट से हम बड़ी आसानी से उनके भोजन का पता चला सकते हैं।

चोंचों के अलावा चिड़ियों की जबान से भी हमें उनके भोजन का पता चल सकता है।

जलसिंह और कौड़िल्ले आदि पक्षी जो समूची मछली निगल जाते हैं उनकी जबान बहुत छोटी होती है, जिससे वह किसी प्रकार की रुकावट न डाल सके। कठफोर जो पेड़ की पपड़ियों से कीड़े पकड़-पकड़ कर खाता है, उसकी जबान बहुत लम्बी होती है और वह इस तेजी से आगे-पीछे चलती है कि जैसे उसकी जड़ पर स्प्रिंग लगी हो। इसी लम्बी जीभ को वह पपड़ियों की दराज में डालता है और उसी में छोटे-छोटे कीड़े चिपक कर चले आते हैं।

लेकिन जो कठफोर कीड़े नहीं खाते हैं और रस पीकर ही अपना पेट भरते हैं, उनकी जबान उतनी लम्बी नहीं होती और उसके सिरे की बनावट ब्रश जैसी रहती है। शकरखोरा और

फुलचुही की जबान भी बहुत लम्बी होती है क्योंकि उसी के सहारे वे फूलों से रस चूसती हैं।



चित्र १६--जीभ।

1. शकरखोरा, 2. कस्तूरा, 3. बतासी, 4. टाउकैन, 5. पेंगुइन, 6. जलसिंह, 7. शुतुरमुर्ग, 8. काकातुआ, 9. बत्तख।

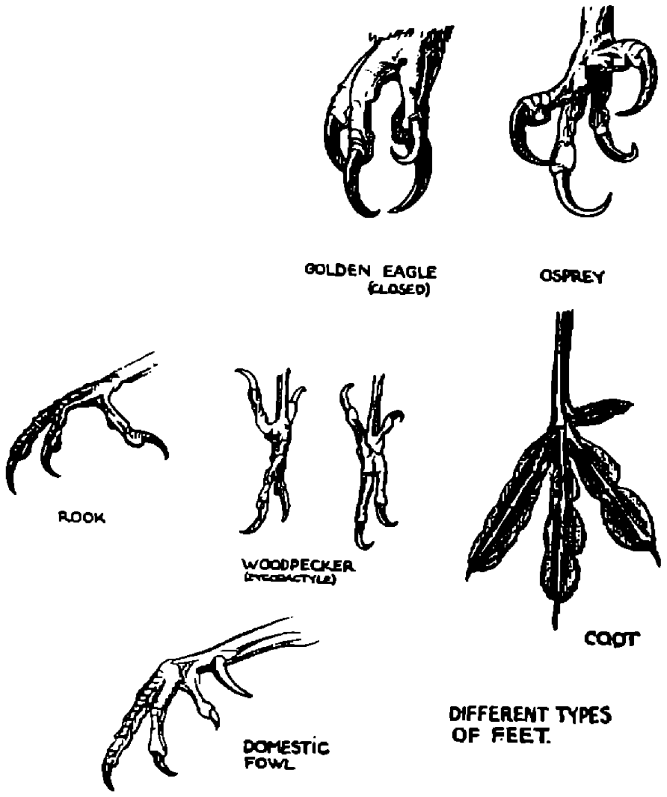
बत्तखों की चौड़ी और दाँतेदार चोंचों के साथ ही साथ उनकी जबान भी चौड़ी और दाँतेदार होती है जिससे वे कीचड़ के कीड़े-मकोड़े को आसानी से पकड़ सकें। तिदारी नाम की बत्तख जो ज्यादातर कीचड़ में रहती है और जिसकी चोंच और जबान काफी चौड़ी होती है, जब अपनी चोंच में कीचड़ भर कर दबाती है तो कीचड़ तो उसकी दाँतेदार चोंच से बाहर निकल जाता है, लेकिन उसमें के कीड़े उसकी खुरदुरी जबान के सहारे उसकी चोंच में ही रुक जाते हैं।

इस प्रकार हम चिड़ियों की जबान की बनावट से भी उनकी खूराक का पता चला सकते हैं, क्योंकि चिड़ियों की जबान का क्रमिक विकास उनकी आवश्यकता के अनुसार ही हुआ है।

यही हाल चिड़ियों के पैरों का है। उनकी बनावट को देख कर हम उनकी खूराक का पता चला सकते हैं। इतना तो हम जानते ही हैं कि पैर चिड़ियों के चलने, दौड़ने, तैरने और डाल पर बैठने के लिए बने हैं, लेकिन चिड़ियाँ बेकार में नहीं तैरतीं या दौड़तीं। उनका दिन भर दौड़ना, उड़ना और तैरना खूराक तलाश करके अपना अस्तित्व कायम रखने के लिए होता है। इसलिए उनके पैरों का विकास भी इसी दृष्टिकोण को सामने रखकर हुआ है और इसीलिए हम उनके पैरों की बनावट से उनकी खूराक को समझ सकते हैं।

थोड़े पानी या कीचड़ में टहल कर मेढ़क-मछली पकड़ने वाले महाबक आदि पक्षियों की टाँगें लम्बी होती हैं, तो पानी में तैरने वाली बत्तखें जालपाद होती हैं।

अबाबील आदि हवा में उड़कर कीड़े पकड़नेवाली चिड़ियों के पैर बहुत छोटे होते हैं, क्योंकि उनको पैरों की जरूरत बहुत कम पड़ती है। लेकिन बाज, बहरी आदि शिकारी पक्षियों के पैर औसत नाप के होते हैं और उनके पंजे नुकीले और बहुत मजबूत होते हैं।




चित्र १७--विभिन्न प्रकार के पंजे।

Golden eagle-उकाब, Osprey-मछरंग, Rook-कौआ, Woodpecker-कठफोर, Coot-टिकरी, Domestic Fowl-मुर्गी

उल्लू अपने पंजे का चौथा अँगूठा उलटी ओर बड़ी आसानी से घुमा लेता है और पैर से ही चूहे और चिड़ियों को पकड़ लेता है, लेकिन मछरंगा जो अपने पंजे से मछली पकड़ता है उसको यह सहूलियत भी मिली है कि मछली पकड़ने पर उसके पंजे का भीतरी हिस्सा ऐसा कटावदार बन जाता है कि उसकी पकड़ से चिकनी से चिकनी मछली भी किसी प्रकार नहीं फिसल सकती।

इस प्रकार हमने देखा कि भिन्न-भिन्न पक्षियों के भोजन की वस्तुएँ ही नहीं, उनके प्राप्त करने का ढंग भी भिन्न है। यदि इन सब पक्षियों के भोजन के बारे में विस्तार से लिखा जाय तो एक पुस्तक तैयार हो सकती है, क्योंकि सब जाति के पक्षियों का भोजन-व्यापार अलग-अलग रहता है।

कौड़िल्ला जिस प्रकार अपने को हवा में एक स्थान पर स्थिर रख कर उड़ता रहता है और फिर ऊपर से ढेले की तरह मछली पर गिरता है, यह हमने देखा ही होगा। ठीक उसी तरह खैर-मुतिया आसमान से चूहों पर टूटती है। लहटोरा छोटा होने पर भी बहुत शिकारी होता है। वह जब कोई बड़ा शिकार मारता है तो उसे पेड़ के किसी बड़े काँटे में खोंस देता है और फिर धीरे-धीरे उसे खाता है। एक जाति की चरखी जो कटुए और घोंघे

खाती है, कटुए को अपनी चोंच से पकड़कर ऊपर उड़ जाती है और उसे ऊपर से किसी चट्टान पर गिरा देती है और जब वह चूर-चूर हो जाता है तो नीचे आकर उसे खा लेती है। इसी प्रकार यूनान का एक बड़ा उकाब कछुए को पकड़कर बहुत ऊपर उड़ जाता है और उसे ऊपर से किसी चट्टान पर छोड़ देता है। चट्टान पर गिरने से कछुए के टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं। तब वह नीचे उतरकर उसे आसानी से खा लेता है।

कठफोर को हमने देखा ही होगा कि किस प्रकार वह पेड़ की पपड़ियों को ठोक-ठोक कर और अपनी लम्बी जबान को दराजों में डाल कर कीड़े-मकोड़ों को उसी में चिपका लेता है। पेड़ पर चूहे की तरह रेंगने वाली रेंगनी भी अपनी टेढ़ी और लम्बी चोंच से पेड़ के तनों की पपड़ियों से छोटे कीड़े-मकोड़े पकड़ लेती हैं। हवा में अपना चौड़ा मुँह फैलाकर उड़ने वाली अबाबील और बतासी उड़ते-उड़ते ही कीड़े-फतिंगों को बड़ी आसानी से पकड़ लेती हैं।

इसी प्रकार लम्बी चोंच वाला बगुला नदी किनारे बक-ध्यान लगा कर कैसा चुपचाप खड़ा रहता है और मछलियों और मेंढकों को निकट पाकर किस तेजी से उसकी बर्छी-जैसी नोकीली चोंच चलती है, यह भी हमने देखा ही होगा।

चहा अपनी चोंच को कीचड़ में डालकर कीचड़ में के छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़ों को किस तरह पकड़ता है, यह भी कम आश्चर्य की बात नहीं है। उसकी चोंच के ऊपर एक पतली खाल चढ़ी रहती है जिस पर इतना अधिक स्पर्श-ज्ञान रहता है कि चोंच के पास के कीड़ों की मौजूदगी का चहा को पता चल जाता है और वह उन्हें बड़ी आसानी से पकड़ लेता है।

इस प्रकार अलग-अलग चिड़ियों के भोजन और उनके प्राप्त करने के अलग-अलग ढंग हैं, जिनको हम थोड़े निरीक्षण से भली-भाँति समझ सकते हैं।

चिड़ियों के भोजन के वर्णन के साथ ही उनके आमाशय तथा उनकी पाचन क्रिया के बारे में भी कुछ जान लेना आवश्यक हो जाता है। चिड़ियों की पाचन क्रिया इतनी अच्छी होती है कि हम उनको बहुत कम बीमार देखते हैं। उनके मुँह के पीछे एक नली होती है। आगे चलकर यही नली फैल कर थैली-जैसी हो जाती है और क्राप (Crop) कहलाती है। कबूतर आदि इसी क्राप में दाना भर लेते हैं। क्राप के आगे चिड़ियों का आमाशय आता है। यह दो प्रकार का होता है। कुछ चिड़ियों का आमाशय सादी थैली-जैसा होता है और कुछ का दो हिस्सों में बँटा रहता है। इस दो खंड वाले आमाशय की भीतरी दीवार की मांसपेशियाँ ऐसी होती हैं कि वे भोजन को अच्छी तरह पीसकर लुगदी कर देती हैं और तब पाचन क्रिया बहुत आसान हो जाती है। दाना चुगने वाली चिड़ियाँ दाने के साथ कुछ कंकड़ियाँ भी चुग लेती हैं जो उनके आमाशय में जाकर दाना पीसने के काम में बहुत सहायक होती हैं। जब ये कंकड़ियाँ रगड़ते-रगड़ते चिकनी हो जाती हैं तो चिड़ियों की वीट के साथ बाहर निकल जाती हैं और उन्हें फिर खुरदुरी कंकड़ियाँ चुगने की आवश्यकता पड़ जाती है।

## ● चिड़ियों की बोली और गाना

चिड़ियों की बोली आज भी हमारे लिए एक पहेली बनी हुई है। हम उनके क्रोध के कर्कश स्वर, साथियों को सतर्क करने के संकेत-शब्द तथा प्रणय-क्रीड़ा के समय के प्रेम-गान में भेद जरूर पाते हैं, लेकिन उनकी सब बोलियों का अर्थ क्या होता है, इसका ठीक-ठीक पता अभी तक नहीं चल सका है।

कुछ चिड़ियाँ गाने वाली होती हैं और कुछ का स्वर बहुत कर्कश होता है। गाने वाली चिड़ियों को हम इसलिए गाने वाली नहीं कह सकते कि उनकी बोली में हमारे यहाँ के संगीत की अनुरूपता पायी जाती है, बल्कि उन्हें यह उपाधि इसलिए दी गयी है कि उनका स्वर हमारे कानों को मधुर लगता है और उसको सुनकर हमारे हृदय को सुख मिलता है। कौए का प्रणय-संगीत हमारे लिए कर्कश होने पर भी उसकी मादा को तो मधुर लगता ही होगा। इसी प्रकार बगुले, नीलकंठ, चरखी आदि के शब्द हमें बहुत कर्कश जान पड़ते हैं। हमें तो कोयल और पपीहे के स्वर में जो मिठास और तड़पन सुनाई पड़ती है, उसका अन्य किसी पक्षी में आभास भी नहीं मिलता। अतः इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि हम उन्हीं पक्षियों को 'गानेवाले पक्षी' कहते हैं, जिनके स्वर से हम सुख और आनन्द का अनुभव करते हैं। हमारे यहाँ ऐसे पक्षियों की संख्या सौ से अधिक नहीं है और यह बड़े आश्चर्य की बात है कि इनमें से अधिकांश चिड़ियाँ हमारे चटक-वर्ग की हैं जो शाखाशायी पक्षी कहे जाते हैं।

चटक-वर्ग वैसे भी सब वर्गों में बड़ा है, जिसमें पेड़ पर बसेरा लेने वाली सब चिड़ियाँ एकत्र की गयी हैं। लेकिन फिर भी प्रायः सभी गाने वाले पक्षी इसी वर्ग के हों, यह एक आश्चर्य की बात है। कुछ विद्वान् इसका अर्थ यह लगाते हैं कि पंजे से पेड़ की डाली को पकड़ कर बैठने और बसेरा लेने का सम्बन्ध शायद पक्षियों की मीठी बोली से है, लेकिन अभी तक इसको वैज्ञानिक ढंग से साबित नहीं किया जा सका है।

चिड़ियों की मीठी और सुरीली बोली को तो हम उनका गाना कहते हैं, लेकिन उनकी अन्य बोलियों की ओर हमारा ध्यान नहीं जाता। यदि हम उनकी सब प्रकार की बोलियों पर ध्यान दे सकें और उनके अध्ययन पर अपना थोड़ा समय व्यतीत करें, तो हमें प्रत्येक पक्षी की बोली के अनेक भेद सुनाई पड़ेंगे, जिनका अर्थ भी अलग-अलग होता है। यहाँ हम चिड़ियों की भिन्न-भिन्न प्रकार की बोलियों की एक तालिका दे रहे हैं, जो उनके भिन्न-भिन्न भावों को प्रकट करती है :

(१) **आनन्द गान**—इसके अन्तर्गत चिड़ियों का वह गाना या सुरीली बोली आती है, जो वे अक्सर डाली पर बैठकर काफी देर तक सुनाती रहती हैं। इसमें मादा को रिझाने वाले गाने के अलावा उनका प्रणय-गीत भी शामिल है।

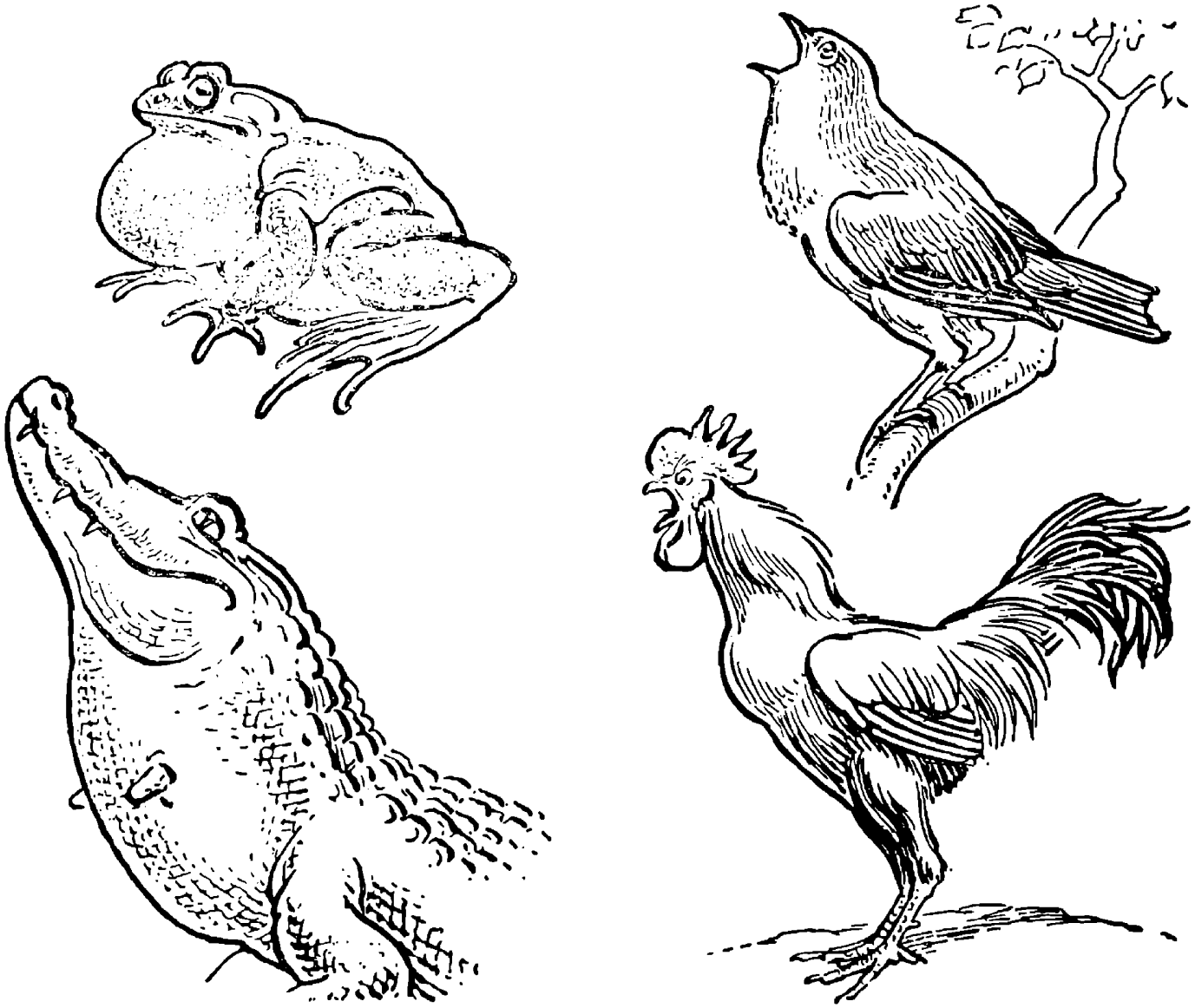
(२) **संक्षिप्त गान**—इसमें पक्षियों की वह सुरीली बोली आती है, जो वे बहुत संक्षेप में बोलते हैं। इस प्रकार की मीठी बोली हमें प्रायः अपने बाग-बगीचों में सुनाई पड़ती है, जिसे चिड़ियाँ एक डाली से फुदक कर दूसरी डाली पर जाते समय बोलती रहती हैं। हमें अक्सर संक्षिप्त गान टेलीग्राफ के तार पर बैठी हुई छोटी चिड़ियों द्वारा सुनाई पड़ता है, जिसे वे रह-रहकर गाया करती हैं।

(३) **लम्बी बोली**—इसके अन्तर्गत चिड़ियों की वह लम्बी या विस्तार की बोली आती है, जो न तो उनका आनंद गान ही है और न संक्षिप्त गान ही। यह लम्बी बोली अक्सर कुछ पक्षी बोलते हैं, जो उनके संतोष को भले ही प्रकट करती हो, लेकिन उसका कोई स्पष्ट अर्थ समझ में नहीं आता। मसलन कौए के काँ-काँ-काँ-काँ का स्वर और पड़की को घुघू-घुघू-घू-घू-घू का स्वर काफी लंबा होकर भी किसी खास परिस्थिति का द्योतक नहीं होता।

(४) **बातचीत की बोली**—चिड़ियों की यह बोली ऐसी जान पड़ती है, जैसे वे आपस में बातचीत कर रही हों, लेकिन हम उसका अर्थ नहीं समझ पाते। यह बोली अक्सर मादा चिड़िया बोलती हैं। रामगंगरा, दामा, दँहगल आदि पक्षी अक्सर ऐसी बोली बोलते हैं।

(५) **पुकारने की बोली**—चिड़ियों की इस बोली से हम सभी परिचित हैं। इस बोली से एक पक्षी दूसरे पक्षी या अपने झुंड की उपस्थिति को बतलाता रहता है और आँख की ओट हो जाने पर इसी बोली से वह अपने साथियों का पता लगाने में समर्थ होता है। कुछ पक्षियों की यह बोली बहुत स्पष्ट होती है और हम उसको सुन कर तुरंत पहचान लेते हैं, लेकिन कुछ चिड़ियों की यह बोली जल्द पहचानने में नहीं आती।

(६) **उड़ान की बोली**—चिड़ियों की यह बोली हमें अक्सर सुनने को मिलती है। आकाश में उड़ते समय की इस उड़ान



चित्र १८—जलचरों एवं पक्षियों के गायन के समय की मुखमुद्रा।

की बोली के अलग-अलग अर्थ होते हैं। कभी-कभी कोई पक्षी अकेले उड़ते-उड़ते थोड़ी-थोड़ी देर पर बोल उठता है, जैसे वह अपना विज्ञापन कर रहा हो। कभी-कभी हम किसी-किसी पक्षी का जोड़े में उड़ते समय चहकना सुनते हैं, जैसे वे अपने प्रणय से संतुष्ट होकर प्रसन्नता से चहक रहे हों। इसी प्रकार जाड़ों में हमें अक्सर आकाश में उड़ती हुई मौसमी बत्तखों की उड़ान की बोली सुनाई पड़ती है, मानो वे रह-रहकर एक दूसरे को पंक्तिबद्ध होकर उड़ने के लिए सतर्क करती हों।

(७) **सतर्क करने की बोली**—चिड़ियों की यह बोली इतनी स्पष्ट होती है और इसमें इतनी आतुरता रहती है कि हम उसके समझने में भूल नहीं कर सकते। किसी दुश्मन की आहट पाने पर या और कोई खतरा निकट आने पर चिड़ियाँ बहुत उत्तेजित होकर इस बोली का प्रयोग करती हैं। मुर्गियों के बच्चों के पास जाने पर मुर्गी खतरे को निकट देखकर बहुत शोर मचाने लगती है, जैसे वह इस संकट से बचाने के लिए अपने नर-पक्षी को बुला रही हो। मुर्गा कहीं पास-पड़ोस से उसका उत्तर देता है, मानो वह कह रहा हो कि "डरो नहीं, मैं मदद के लिए आ पहुँचा।" दूसरा उदाहरण चरखियों का लीजिए। आठ-दस के गिरोह में रहने वाली गरीब चरखियों के झुण्ड पर जब शिकरा आदि शिकारी पक्षी हमला करते हैं, तो सारी-की-सारी चरखियाँ उत्तेजित होकर इतना शोर मचाती हैं कि अक्सर उन्हें भागना ही पड़ता है। उस समय चरखियों की बोली में डर और उतेजना से अधिक क्रोध की मात्रा रहती है। वे जैसे अनुभव करती हैं कि गिरोह में रहने में ही शक्ति और बल है। उनकी इस बोली में अपने साथियों को खतरे से सतर्क करने की पुकार रहती है।

(८) **प्रेम की बोली**—चिड़ियों की इस बोली के बारे में अधिक विस्तार में जाने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि इससे प्रायः हम सभी परिचित हैं। जोड़ा बाँधने के समय प्रायः सभी पक्षी, चाहे वे मीठी बोली बोलने वाले हों या कर्कश बोली बोलने वाले, मीठी बोली बोलते हैं। उनकी इस बोली में और समय से अधिक मिठास आ जाती है।

(९) **क्रोध की बोली**—चिड़ियों की यह बोली इतनी स्पष्ट होती है कि इसको समझने में कुछ भी कठिनाई नहीं होती। छोटी चिड़ियाँ कोयल, पपीहे आदि पक्षियों को अपनी झाड़ी के निकट देखकर क्रोध प्रकट करती हैं, लेकिन कभी-कभी नीलकंठ, कठफोर आदि पक्षी भी अपने अंडे के निकट किसी आगंतुक को देखकर ऐसी कर्कश बोली बोलते हैं कि जान पड़ता है, जैसे वे उसे डाँट रहे हों। सामुद्रिक और कुररी आदि पक्षी भी छोटी चिड़ियों को कर्कश बोली बोलकर डरा देते हैं। इसी प्रकार कुछ अन्य पक्षी भी क्रोध की यह बोली दूसरे पक्षियों को डराने के लिए इस्तेमाल करते हैं, जो स्पष्ट रूप से उनकी डाँट जान पड़ती है।

(१०) **गर्व और शारीरिक सुख की बोली**—इस बोली की सबसे अच्छी मिसाल हमें मुर्गे की कुकड़ूँ-कूँ-कूँ से मिलती है, जो वह रोज प्रातःकाल के आगमन के समय गर्व से बोलता है। मुर्गी भी अंडा देने के बाद शारीरिक सुख का अनुभव करके एक प्रकार की संतोष की बोली बोलती है।

(११) **लोरी या दुलार की बोली**—बहुत-से पक्षी एक प्रकार की मीठी बोली अपने बच्चों को दुलारते समय बोलते हैं। उनकी यह प्यार और दुलार की बोली अन्य प्रकार की बोलियों से नहीं छिपती।

(१२) **कराहने की बोली**—घायल हो जाने पर चिड़ियाँ एक प्रकार की दर्द-भरी बोली बोलती हैं, जिसमें पीड़ा और कराह मिली रहती है। इस बोली के पहचानने में भी ज्यादा दिक्कत नहीं होती।

चिड़ियाँ क्यों बोलती या गाती हैं, इसका ठीक-ठीक उत्तर देना बहुत ही कठिन है। पक्षि-शास्त्र के एक विद्वान् ने इस विषय पर बहुत अनुसंधान करने के बाद इस प्रश्न का यही उत्तर दिया है कि चिड़ियाँ इसलिए गाती हैं कि उन्हें गाना ही चाहिए, अर्थात् अन्य प्राकृतिक उद्रेकों की तरह चिड़ियों का उद्रेक समय आने पर अपने-आप ही उनके कंठ से फूट निकलता है। लेकिन इस उत्तर से हम संतुष्ट नहीं हो सकते। इस प्रश्न को हमें दो दृष्टिकोणों से देखना चाहिये : शारीरिक दृष्टिकोण से और मानसिक दृष्टिकोण से। उनके गाने में उनकी शारीरिक और मानसिक अवस्था अथवा स्थिति की जानकारी बहुत आवश्यक है। उनके मीठे स्वर के लिए उनके शरीर की रचना कितनी जिम्मेदार है और उनके हृदय का उल्लास किस प्रकार सुरीले गाने के रूप में उनके कण्ठ से फूट पड़ता है, इस पर भी विचार करना जरूरी है। उनके और मनुष्यों के स्वर में बहुत भेद होता है और उनकी बोली को हम अपने शब्दों या अक्षरों में सही-सही नहीं लिख सकते। मसलन कोयल के स्वर को हम कुहू-कुहू तथा पपीहे की बोली को पी-कहाँ, पी-कहाँ कहते या लिखते हैं, लेकिन यदि हम उनकी बोली को गौर से सुनें, तो हम देखेंगे कि ये पक्षी न तो कुहू-कुहू कहते हैं और न पी-कहाँ, पी-कहाँ ही। उनका स्वर इनसे मिलता-जुलता जरूर होता है, लेकिन उसको लिपिबद्ध करना असंभव ही है।

चिड़ियों के स्वर उसी प्रकार उनके ध्वनि-यंत्र और चोंच की सहायता से उनके मुख से बाहर निकलते हैं, जिस प्रकार हमारे स्वर हमारे फेफड़े, घोष-यंत्र तथा ओठों की सहायता से हमारे मुख के बाहर निकलते हैं। लेकिन हमारे ओठ और चिड़ियों की चोंच में बहुत बड़ा अन्तर है। अपने ओठों से हम जिस प्रकार तरह-तरह के भाव प्रदर्शन कर सकते हैं, वह चोंच से किसी प्रकार नहीं हो सकता और ओठ हमारी जीभ को छूकर जिस प्रकार शब्दों का उच्चारण कर सकते हैं, वह चोंच के द्वारा किसी भी प्रकार संभव नहीं है। स्तन-प्राणियों का स्वर-तंतु, जिससे

स्वर उत्पन्न होते हैं, उनके घोष-यंत्र में रहता है, जो उनकी वायु-नली के ऊपर गले के पास रहता है, लेकिन गाने वाली चिड़ियों का स्वर-तंतु, उनके ध्वनि-यंत्र में रहता है, जो उसकी वायु-नली के नीचे रहता है। इसी ध्वनि-यंत्र की दो नलियाँ दोनों फेफड़ों से जुड़ती हैं।

ध्वनि-यंत्र की शक्ल एक थैली-जैसी होती है, जिसके भीतरी हिस्से में हड्डियों का ढाँचा रहता है और उसके भीतर पतली झिल्लियों की तहें होती हैं। जब इन झिल्लियों पर चिड़िया के शरीर के भीतर की हवा फैलती है तो वह ध्वनि में बदल जाती है। यह ध्वनि जब चिड़िया अपनी चोंच से बाहर निकालती है, हम उसको उसका गाना या उसकी बोली कहते हैं।

अब हम इस प्रश्न के दूसरे दृष्टिकोण को लें। यह उल्लास उनके हृदय में उस प्रकार नहीं उत्पन्न होता, जिस प्रकार हम किसी विषय पर विचार करके प्रसन्न हो उठते हैं, क्योंकि पक्षियों का मस्तिष्क उतना विकसित नहीं होता। यह सच है कि चिड़ियों की कुछ इन्द्रियाँ हम लोगों से अधिक विकसित हैं। उदाहरणार्थ, उनकी आँखों का बहुत अधिक विकास हुआ है और इसी कारण वे बहुत तेज रफ्तार से उड़ते समय भी पृथ्वी पर की चीजों को ठीक से देखती रहती हैं। इसी प्रकार उनके रक्त का तापमान भी हमारे रक्त के तापमान से अधिक रहता है, जो उन्हें इतनी फुरतीली बनाये रखता है। लेकिन बुद्धि तो प्रकृति की एक ऐसी देन है, जो केवल मनुष्यों को ही उपलब्ध हुई है।

चिड़ियों तथा अन्य जीवों को प्रकृति ने बुद्धि के स्थान पर एक सहज ज्ञान अवश्य प्रदान किया है, जो उनके लिए बुद्धि की ही तरह उपयोगी है। इसके द्वारा प्रेरणा पाने पर भी कुछ बाहरी परिस्थितियाँ चिड़ियों को गाने के लिए प्रभावित करती हैं, जो इस प्रकार हैं—बसंत ऋतु आने पर; प्रणय-क्रीड़ा के अवसर पर; किसी स्थान पर अधिकार जमाने के लिए आपस में लड़ने की तैयारी होने पर और सुखमय जीवन व्यतीत होते देखकर प्रसन्न होने पर। ये चारों परिस्थितियाँ चिड़ियों को अलग-अलग गाने के लिए प्रेरित कर सकती हैं। लेकिन प्रायः ये परिस्थितियाँ क्रम से ही चलती हैं। बसंत के आगमन पर जब सारी प्रकृति में नवजीवन की लहर बहने लगती है, तो चिड़ियों के आनन्द-गान से सारा वन-उपवन गूँज उठता है। उसके बाद उनकी प्रणय-क्रीड़ा का समय आ जाता है और नर पक्षी अपनी मीठी बोली से मादा को रिझाने के लिए प्रयत्न करता दिखाई देता है। जोड़ा बँध जाने पर नर चुनकर एक स्थान उस पर अपना अधिकार जमा लेता है और दूसरे पक्षी के वहाँ आने पर कर्कश स्वर में युद्ध का आह्वान करता है। अपना अधिकार सुरक्षित कर लेने पर वह मादा की सहायता से अपना घोंसला बनाता है और अंडे-बच्चों को सुरक्षित देखकर आराम से किसी डाली पर बैठकर अपना आनन्द-गान सुनाने लगता है।

लेकिन उपर्युक्त चारों परिस्थितियों को हम किसी नियम में नहीं बाँध सकते, क्योंकि हम देखते हैं कि पिंजड़े में बन्द रहने वाले पक्षी, जिन्हें किसी भी प्रकार बसंत का पता नहीं चलने दिया गया, बसंत के आगमन पर कारावास में रहने पर भी चहकने लगते हैं, तो पहली बात का अपने आप खंडन हो जाता है।

यहाँ एक बात हम देखते हैं कि प्रकृति ने जिन पक्षियों को सुरीला कंठ दिया है, उन्हें सुन्दर रूप नहीं दिया। हमारे यहाँ के गाने वाले पक्षी कोयल, पपीहा, कस्तूरा, चिलचिल, दँहगल, श्यामा, दामा, थिरथिरा, मैना, तूती, पथरचिरा, हरेवा, भरत, चंडूल, गंगरा, टिसी, पोदना आदि हैं, जिनमें से किसी को भी सुन्दर पोशाक नहीं मिली है। दूसरी ओर मोर, मुनाल, जंगली मुर्गी, बत्तख आदि चिड़ियाँ सुन्दर पोशाक पाकर भी बड़ी भद्दी बोली बोलती हैं।

## प्रणय-क्रीड़ा

**सौन्दर्य-प्रदर्शन और जोड़ा बाँधना**—पक्षियों के जोड़ा बाँधने से पहले उनके सौन्दर्य का प्रदर्शन प्रारम्भ हो जाता है। लेकिन उससे भी पहले वे किसी एक निश्चित स्थान पर अपना अधिकार जमा लेते हैं।

कुछ चिड़ियाँ बारहों महीने गिरोह में रहती हैं और कुछ जाड़ों में तो गिरोह बनाकर रहती हैं, लेकिन समय आने पर जोड़ों में बँट जाती हैं। इन पक्षियों में पहले नर पक्षी गिरोह से अलग हो जाते हैं। गिरोह के सारे-के-सारे नर एक साथ गिरोह छोड़ देते हों सो बात नहीं है। पहले कुछ नर अलग होते हैं जो कुछ दिन तो साथ रहते हैं लेकिन फिर वे अपनी पसन्द की जगह पसन्द कर अलग-अलग रहने लगते हैं। हर एक नर अपनी छाँटी हुई जगह में रहकर किसी ऊँचे स्थान पर बैठकर गाता है और दिन-प्रतिदिन उसका स्वर तेज होता जाता है। धीरे-धीरे वह अपने को उस स्थान का अधिकारी समझने लगता है और अपनी जाति के दूसरे नर को वहाँ देखकर उसे वहाँ से भगाने के लिए उस पर आक्रमण कर बैठता है। कभी-कभी वह अपने अनुरूप दूसरी जाति के पक्षियों पर भी धोखे से हमला कर देता है। हमला करते समय उसका अभिप्राय दूसरे पक्षी से लड़ना नहीं, वरन् उसको डराना होता है।

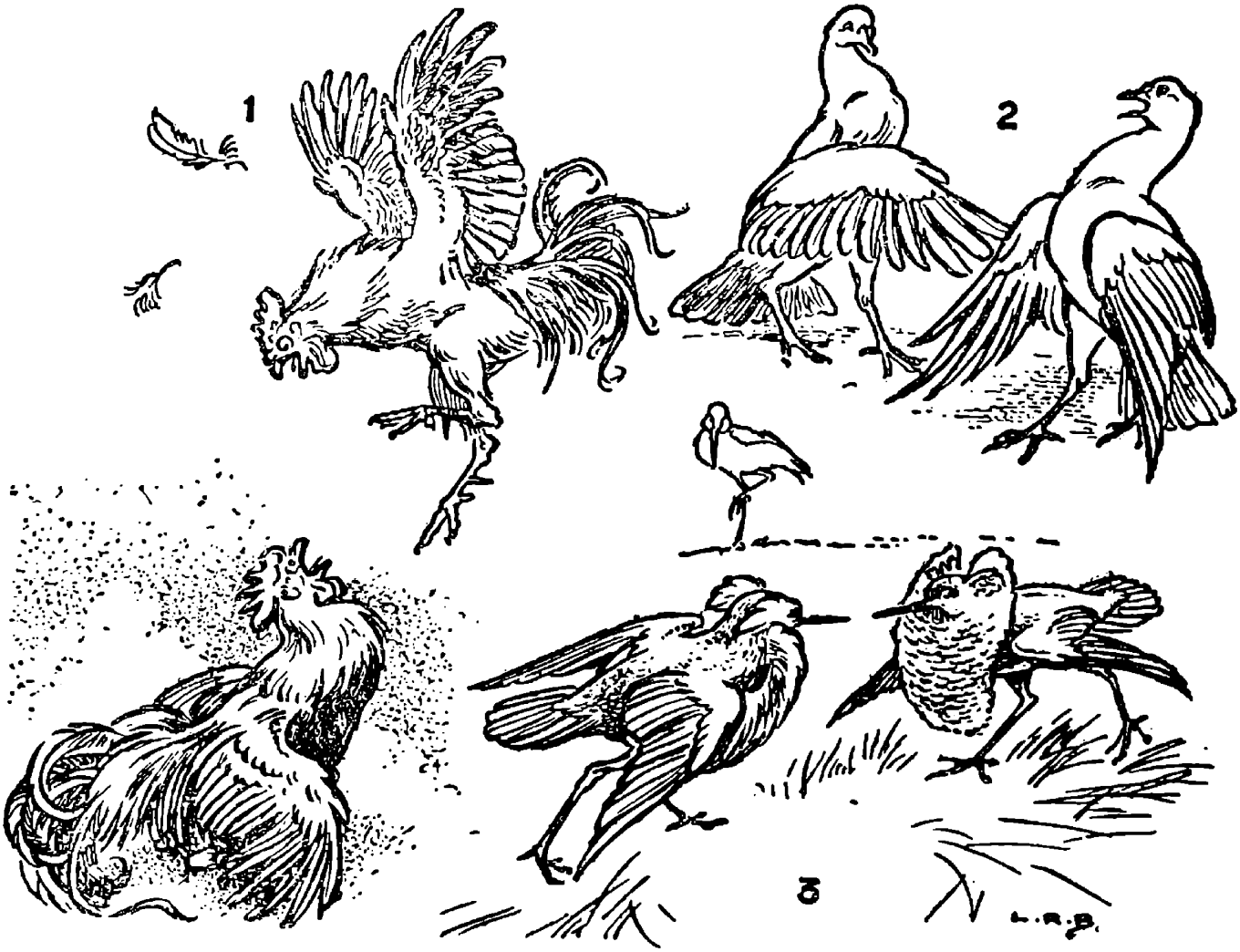
वह अपने पंख फुलाकर और चोटी खड़ी करके जहाँ तक हो सकता है अपना रूप भयंकर बनाता है, जिससे नवागन्तुक डरकर उस स्थान से भाग जाय और बहुधा यही होता भी है। क्योंकि नया पक्षी जो इस आक्रमण के लिए तैयार नहीं रहता, प्रायः वहाँ से भाग जाता है। कभी-कभी दोनों पक्षियों में युद्ध भी हो जाता है, लेकिन ऐसा शायद ही कभी होता है कि एक पक्षी दूसरे से लड़कर उसे मार डालता हो और इस प्रकार थोड़ी बन्दर-घुड़की से ही नर-पक्षी अपनी इच्छित भूमि पर अपना अधिकार बनाये रखता है।

इस प्रकार थोड़े से स्थान पर अपना अधिकार जमाने का भाव पक्षियों में क्यों जागृत हो उठता है, इसका ठीक-ठीक उत्तर अभी तक नहीं मिल सका है। लेकिन कुछ विद्वानों का यह अनुमान है कि नर पक्षी अपने लिए थोड़ा स्थान इसलिए सुरक्षित बना लेते हैं कि उनके बच्चों को भोजन की कमी न रह जाय। लेकिन यह बात सब पक्षियों के विषय में नहीं लागू होती, क्योंकि शिकारी पक्षी जिन्हें अपने शिकार के लिए दूर-दूर तक जाना पड़ता है, इस प्रकार स्थान को सीमित करके अपना काम नहीं चला सकते। फिर जब किसी के राज्य की सीमा छोटी रहती है और किसी की बड़ी तो एक की सीमा का दूसरे की सीमा को ढँक लेना स्वाभाविक होता है। टिटिहरी आदि की सीमा उनके घोंसले के चारों ओर गोलाई में रहती है तो कुररी आदि झुंड में रहने वाली चिड़ियों की सीमा उनके घोंसले के चारों ओर और दूर तक रहती है। इस प्रकार किसी निश्चित स्थान को पसन्द करके उस पर अपना आधिपत्य जमाने की भावना इन पक्षियों में उस समय इस तेजी से जाग उठती है कि उसको यों ही छोड़ा नहीं जा सकता।

स्थान के लिए पक्षियों में यह संघर्ष चाहे भोजन की अधिकता से अथवा स्थान के सुरक्षित होने से अथवा घोंसले बनाने की सामग्री पर्याप्त मात्रा में पाने की आशा से या अन्य किसी कारण से, जिसे हम नहीं जान पाते, चलता रहता है, जो धीरे-धीरे जोड़ा बँध जाने पर और घोंसला बन जाने पर अपने आप शान्त हो जाता है।

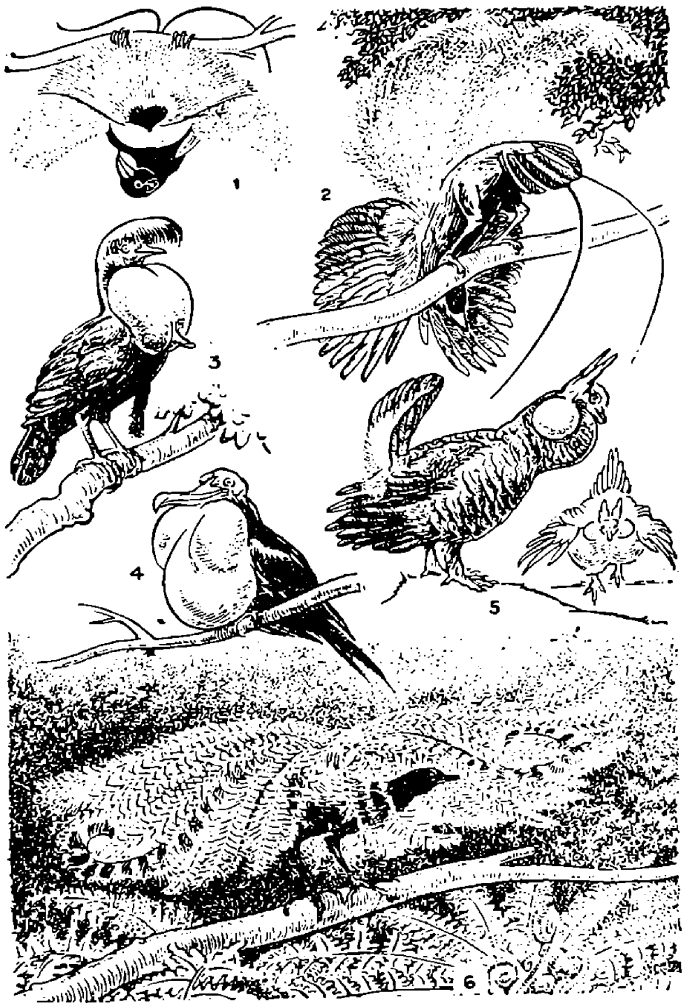
जोड़ा बाँधने के समय मादा को रिझाने के लिए और अपने स्थान पर आधिपत्य दिखाने के लिए पक्षी जैसी भाव-भंगी का प्रदर्शन करते हैं उसमें बहुत थोड़ा ही भेद हम लोगों को मालूम पड़ता है, क्योंकि दोनों ही में नर पक्षी अपने पर फुला कर अपना प्रदर्शन करते हैं।

मादा को रिझाने के लिए किये जाने वाले सौन्दर्य-प्रदर्शन के कई ढंग हमें पक्षियों में देखने को मिलते हैं। इनमें गाना, प्यार से मीठी बोली बोलना, पंख फड़काना आदि कुछ तो साधारण हैं जिनको हम बहुत-से पक्षियों में देख सकते हैं; लेकिन इसके अलावा इस समय प्रत्येक नर पक्षी के शरीर में जो कुछ भी




चित्र १९—मादा के लिए नरों का युद्ध
1. कुक्कुट, 2. कपोत, 3. गेहूवाला

सौन्दर्य रहता है वह उसे मादा को दिखाने में नहीं चूकता है। कोई अपने सिर की कलँगी को हिलाकर दिखाता है, तो कोई अपने रंगीन परों को फैलाकर मादा के सामने करता है। कोई हवा में उड़कर मादा को अपनी गिरहबाजी दिखाता है तो कोई नाच-नाचकर मादा को रिझाने का उद्योग करता है। मादा चुपचाप बैठी सब कुछ देखती रहती है।




चित्र २०—सौन्दर्य-प्रदर्शन।

1. स्वर्ग का पक्षी, 2. स्वर्ग का पक्षी, 3. छत्रक पक्षी, 4. फ्रिगेट, 5. प्रेअरी तीतर, 6. वीणा पक्षी।

कुछ नर अपनी प्रेयसी मादा के सामने केवल नाच-गाकर ही संतुष्ट नहीं हो जाते, बल्कि वे मस्त होकर मादा के निकट चले आते हैं और उसकी गरदन के पास अपनी चोंच से धीरे से खोद देते हैं।

जोड़ा बँध जाने पर चोंच की यह खोद-खाद एक साधारण बात हो जाती है। हम अक्सर नर कबूतरों को पर फुलाकर "गुटरगूं" करते और मादा की गरदन के पास चोंच से कुरेदते देख सकते हैं।

जोड़ा बाँधने का निश्चय हो जाने पर बहुधा एक बात और देखी जाती है कि नर पक्षी मादा को पृथ्वी अथवा आकाश में काफी समय तक खदेड़ते हैं। प्रेम की इस दौड़ में हार-जीत का सवाल नहीं रहता, बल्कि नर इस प्रकार मादा को अपना प्रेम प्रदर्शन करके उसे घोंसला बनाने के प्रस्तावित स्थान की ओर लाता है।

जोड़ा बाँधने के लिए जो सौन्दर्य-प्रदर्शन होता है उसे हम तीन भागों में बाँट सकते हैं। पहले का सम्बन्ध सुनने से है, दूसरे का देखने से और तीसरे का छूने से। मादा के खदेड़ने की क्रिया को हम इसमें शामिल नहीं कर रहे हैं, क्योंकि इसका तो उद्देश्य ही दूसरा रहता है। लेकिन इन तीनों प्रदर्शनों के बाद जोड़ा बाँधने के सम्बन्ध में एक प्रश्न यह उठता है कि मादा नरों का प्रदर्शन देखने के बाद किसी खास नर को क्यों पसन्द कर लेती है? इसे नर का कौन-सा गुण आकर्षित कर लेता है?

इस पर कई विद्वानों की अलग-अलग रायें हैं। एक विद्वान् का ख्याल था कि सबसे सुन्दर गाने वाला नर ही मादा द्वारा चुना जाता है। लेकिन कुछ विद्वानों ने अपने अनुभव तथा निरीक्षण के आधार पर यह मत प्रकट किया है कि नर का सुन्दर होना ही उसके सफल होने का कारण होता है।

जो भी हो, अभी तक इस पर कोई निश्चित राय कायम नहीं हो सकी है। लेकिन विद्वानों का ऐसा अनुमान है कि इस विषय में नाचना, गाना, रंग-रूप तथा प्रेम-प्रदर्शन सभी कुछ-न-कुछ अपना महत्व रखते ही हैं।

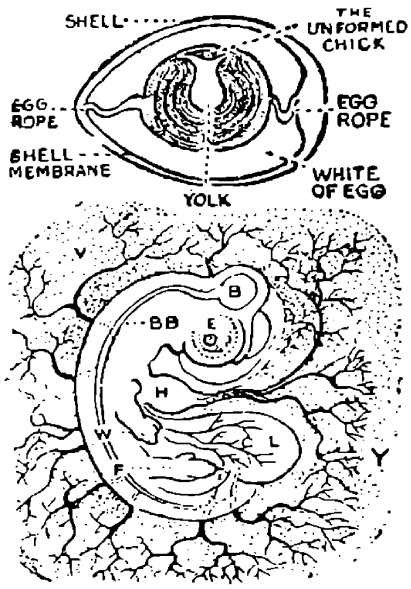
## ● अंडे

पक्षी अंडे से पैदा होते हैं, लेकिन केवल पक्षी ही अंडे से पैदा होते हों सो बात नहीं है; संसार के कीड़े-मकोड़े, मछलियाँ, सरीसृप आदि और भी अनेक जीव हैं जिनका जन्म अंडों से होता है। यहीं नहीं, यदि हम इस विषय को गहराई से देखें तो हमें ज्ञात होगा कि प्रायः सभी जीव अंडज हैं, लेकिन चूँकि स्तन-प्राणी अपने दुश्मनों के डर से अपने अंडों को अपने शरीर के भीतर ही रखने लगे, इससे उनके अंडे कड़ी खोल का आवरण धारण करके बाहर नहीं आते और वे उनके गर्भाशय के भीतर ही रहकर उसी तरह बढ़ते हैं जैसे अंडे के भीतर का जीव-बिन्दु। दोनों के भ्रूण का विकास ठीक एक ही जैसा होता है।

जोड़ा बँध जाने और घोंसला तैयार हो जाने पर मादा पक्षी घोंसले में अंडे देती है, जो संख्या में शायद ही कभी १२ से अधिक होते हैं। आम तौर पर उनकी संख्या ४-५ रहती है। इसके बारे में कोई विशेष नियम नहीं है, लेकिन प्रायः यह देखा जाता है कि जिन पक्षियों के अंडों को दुश्मनों द्वारा नष्ट होने का अधिक डर रहता है उनकी संख्या अधिक होती है और बाज, बहरी आदि शिकारी चिड़ियाँ, जिनके अंडे सुरक्षित रहते हैं, प्रायः एक ही अंडा देती हैं।

इसके अलावा चिड़ियों के कद पर भी उनके अंडों की संख्या बहुत कुछ निर्भर रहती है। चिड़ियाँ जितने अंडे अपने नीचे सेने के लिए ढँक सकती हैं वे प्रायः उतने ही अंडे देती हैं, नहीं तो बाकी अंडे बाहर रहकर खराब हो जायँ। तीतर और चहे के अंडे नाप में बराबर ही होते हैं लेकिन चूँकि चहा कद में छोटा होता है इससे उसकी मादा प्रायः चार ही अंडे देती है और तीतरी कद में बड़ी होने के कारण १२ तक अंडे दे डालती है।

यदि हम अंडे और बीज को देखें तो इन दोनों में बहुत समानता दिखाई पड़ेगी। जिस प्रकार बीज में एक जीव-बिन्दु रहता है और सारे बीज का गूदा तब तक उसकी खूराक के काम आता है जब तक उसमें से निकला हुआ पौधा अपनी जड़ों और पत्तियों से बाहर से खूराक न ले सके, उसी प्रकार अंडे के भीतर के जीव-बिन्दु के लिए सफेद और पीले रंग का गाढ़ा पदार्थ भरा रहता है। अंडे के भीतर का जीव धीरे-धीरे आकार-प्रकार ग्रहण करता है और भीतर की जरदी और सफेदी को खा-खाकर पोषित होता रहता है।



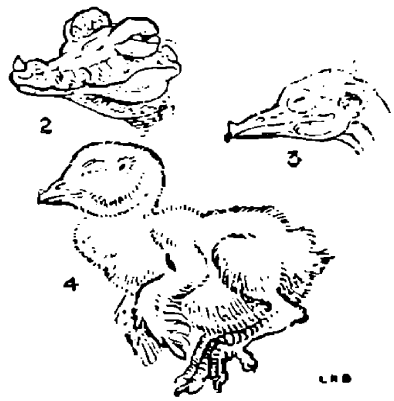

**चित्र २१—अंडे की भीतरी स्थिति।**

Shell-छिलका, Unformed Chick-**अविकसित शिशु**, Egg Rope-**अंडतंतु**, Shell Membrane-**डिंब की झिल्ली**, Yolk-**जरदी**, White of Egg-**अंडे की सफेदी**।

अंडे के बीच में गोली के शक्ल में जरदी रहती है जो झिल्ली से ढँकी रहती है और जिसके दोनों सिरे अंडे के छिलके से जुटे रहते हैं। इसी के सहारे वह सफेदी के बीच में लटकती रहती है और सफेदी उसके लिए चारों ओर से मुलायम गद्दी का काम करती है। यही नहीं, अंडे का कोई भी सिरा नीचे क्यों न रहे, यह उसके ऊपरी हिस्से की ओर अंडे के छिलके के पास लग जाती है, इससे भ्रूण को हमेशा अपनी माता के शरीर की गरमी का अधिक से अधिक लाभ प्राप्त हो जाता है।

अंडे के छिलके में उसी तरह बारीक छिद्र रहते हैं जिस प्रकार सुराही में, जिनमें से होकर हवा भीतर-बाहर आती-जाती रहती है और बच्चे को साँस लेने में किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता। इसके अलावा अंडे के पेंदे की ओर कुछ जगह भी खाली रहती है जिसमें हवा भरी रहती है।

अंडा फूटने के समय तक भीतर का बच्चा अंडे की सारी खूराक समाप्त कर चुकता है और उसे अंडा तोड़कर बाहर निकलना भर रह जाता है। वह पेंदे की ओर की एकत्र हवा वाले स्थान से जोर से साँस खींचता है और अपनी चोंच के ऊपर उभरे हुए हिस्से से छिलके को तोड़कर अंडे से बाहर निकल आता है।




**चित्र २२—सरीसृपों तथा पक्षियों के डिम्ब-दन्त।**
**2. मगर का शिशु, 3. चिलचिल, 4. मुर्गे का बच्चा**

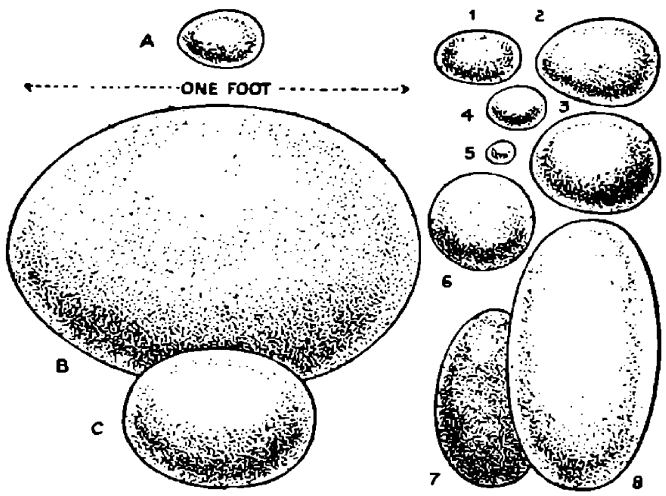
चोंच के ऊपर का यह उभरा हुआ हिस्सा डिम्बदन्त (Egg Tooth) कहलाता है। यह चिड़ियों के ही नहीं, सरीसृपों के भी रहता है और थोड़े ही दिनों बाद गिर जाता है।

अलग-अलग पक्षियों के अंडे फूटने का अलग-अलग समय होता है। दामा के अंडे १३ दिन में, अबाबील के १५ दिन में, मुर्गी के २२ दिन में, बत्तख के २८ दिन में और हंस के ४२ दिन में फूटते हैं।

अब हमें अंडों की नाप, रंग, बनावट आदि के बारे में भी थोड़ा-बहुत जान लेना चाहिये। संसार का सबसे छोटा अंडा हमिंग बर्ड (Humming Bird) का और सबसे बड़ा शुतुरमुर्ग (Ostrich) का होता है जो मुर्गी के अंडे से पचीस-गुना बड़ा होता है। लेकिन हमारे देश में सबसे छोटा अंडा फुलचुही या शकरखोरा का होता है और सबसे बड़ा हंस का।

अंडों की छोटाई-बड़ाई के बारे में पहले लिखा ही जा चुका है। अन्त में एक बात और जान लेनी चाहिये कि जिन चिड़ियों के बच्चे अंडे फूटते ही उड़ने या दौड़ने-भागने लगते हैं, उनके अंडे नाप में बड़े होते हैं, क्योंकि उनके बच्चों को ज्यादा खूराक की जरूरत होती है। और जिनके बच्चे अंडा फूटने पर कुछ दिनों तक असहाय रहते हैं उनको ज्यादा खूराक की जरूरत नहीं पड़ती और उनके अंडे नाप में छोटे होते हैं।

चिड़ियों के अंडे वैसे तो गोल भी होते हैं और बेर की शक्ल के भी, लेकिन वे ज्यादातर बैजाबी या अंडाकार ही होते हैं, अर्थात् उनका एक सिरा पतला नोकीला रहता है और दूसरा चौड़ा और चपटा। इसके लिए कई विद्वानों के कई मत हैं। डारविन का कहना है कि यदि अंडे बैजाबी न होकर गोल या बेर की शक्ल के होते तो तेज हवा चलने से उनके इधर-उधर लुढ़कने का डर रहता। ऐसी दशा में वे चिड़ियाँ, जो चट्टानों पर या मचाननुमा घोंसलों पर अंडे देती हैं, उनके अंडे सुरक्षित न रहते, लेकिन अंडाकार होने के कारण वे लुढ़कने पर वहीं गोलाकार घूमकर रह जाते हैं और उनके बाहर गिरने का कोई डर नहीं रह जाता।




**चित्र २३—विभिन्न पक्षियों के अंडे**

[बायीं ओर] A मुर्गी, B विलुप्त-पक्षी तुंग विहंग (एपीऑर्निस), C शुतुरमुर्ग। [दाहिनी ओर] 1. बड़ा स्थलीय घोंघा, 2. कबूतर, 3. उल्लू, 4. प्लेटीपस नामक स्तनपायी जन्तु जो अंडे देता है, 5. हमिंग बर्ड, 6. बड़ा स्थलीय कछुआ, 7. जंगली बत्तख, 8. घड़ियाल।

एक दूसरे विद्वान् अंडों के बैजाबी होने का कारण यह बताते हैं कि इसके लिए घोंसले में थोड़ी जगह लगती है, क्योंकि इस शक्ल के होने के कारण यदि अंडों की नोक भीतर की ओर करके रखी जाय तो कम जगह घिरेगी, लेकिन गोल या बेर की शक्ल के होने पर सहूलियत नहीं रह जाती।

अंडों के अलग-अलग रंग देखकर हम यह सोचने लगते हैं कि उनको प्रकृति ने इस प्रकार रंग क्यों दिये हैं। कुछ अंडे नीले रंग के होते हैं तो कुछ पत्थरी रंग के, कुछ की जमीन हरी रहती है, तो कुछ की पिलछौंह और कुछ पर बैंगनी, कत्थई, भूरी और लाल चित्तियाँ और बिन्दियाँ पड़ी रहती हैं। लेकिन कुछ रंगीन न होकर एकदम दूध-जैसे सफेद ही रहते हैं। क्या इनको अलग-अलग रंग मिलने का कोई विशेष कारण है या इन्हें ये रंग निरर्थक ही मिले हैं?

इस विषय पर काफी खोज करने पर पक्षिशास्त्र के विद्वान् लोग इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि अंडों के ये रंग उनको दुश्मनों से बचाने के लिए बहुत सहायक होते हैं। जमीन पर अंडा देने वाले पक्षियों के अंडे इसीलिए चितकबरे रहते हैं कि वे घास-फूस और पत्तियों के रंग में छिप जाते हैं और रेत में अंडा देने वाली टिटिहरी के अंडे रेत के रंग से इस प्रकार मिल जाते हैं कि निकट जाने पर हम जल्द उन्हें नहीं देख पाते। लेकिन कौड़िल्ले आदि पक्षी जो बिल में सफेद अंडे देते हैं उनको अंधेरे में छिपाने के लिए किसी खास रंग की जरूरत नहीं होती, इसीलिए, प्रकृति ने उन पर फिजूल में रंग खर्च करना उचित नहीं समझा।

फाख्ता अपने अंडे मचाननुमा खुले घोंसले में देती है जिस पर हमेशा तेज धूप चमकती है। सफेद होने के कारण इन अंडों पर जल्द दुश्मनों की निगाह नहीं पड़ती, लेकिन घास-फूस के निकट वाले अंडे हरे और जमीन पर के मटमैले न होकर सफेद हों तो उनका दुश्मनों से बचना कठिन ही हो जाय।

## ● घोंसले

चिड़ियों के घोंसलों की इतनी किस्में हैं कि उनके बारे में कोई एक नियम नहीं बनाया जा सकता। कोई अपना घोंसला घास-फूस का बनाती है तो कोई पेड़ की टहनियों का। कोई पेड़ में सूराख काट कर ही अपने रहने का स्थान बना लेती है तो कोई भीटों में बिल खोदना ही उचित समझती है। कुछ चिड़ियाँ पत्ती और घास के रेशों से बहुत ही सुन्दर और आराम-देह घोंसला बनाती हैं तो कुछ मिट्टी को अपने थूक से सान कर उसी जोड़ की कारीगरी दिखाती हैं। लेकिन कुछ ऐसी काहिल चिड़ियाँ भी हैं जो जमीन पर ही दो-चार पर या पत्तियों को रखकर घोंसले का नाम कर लेती हैं, और कुछ उनसे भी आगे बढ़ गयी हैं जो दूसरों के घोंसले में अंडा देकर अपने कर्तव्य से छुट्टी पा जाती हैं।

इसीलिए इन घोंसलों के बारे में हम कोई एक नियम नहीं बना सकते। हाँ, इतना हम अवश्य कह सकते हैं कि चिड़ियों के घोंसला बनाने का उद्देश्य उनके अंडों-बच्चों तथा किसी अंश तक उनकी मादा की सुरक्षा के लिए ही होता है। चिड़ियाँ घोंसला बनाना किसी से सीखती नहीं, वरन् इसको हम उनकी स्वाभाविक अनुभूति ही कह सकते हैं, जो समय आने पर अपने आप ही उनमें दिखाई पड़ने लगती है और नये जोड़े उसी शक्ल-सूरत का घोंसला बनाने लगते हैं जैसे उसकी जाति वाले पक्षी बनाते हैं।

ये घोंसले अक्सर पेड़ की दुबली डाल पर बनाये जाते हैं जिससे वे गिर न पड़ें और उनके लिए उन्हें टहनियों, रेशे, ऊन, पर तथा घास-फूस का सहारा लेना पड़ता है। नर बहुधा इन चीजों को इकट्ठा करता है और मादा उनसे घोंसला बनाती है, जो कटोरानुमा रहता है। मादा उसमें बैठकर गोलाई से घूमती

है और उसे दबा-दबाकर खूब मुलायम और गोल बना देती है। इस प्रकार के घोंसले अधिक पक्षियों के होते हैं।

लेकिन कौए और बगुले आदि अपना बड़ा-सा घोंसला टहनियों से बनाते हैं जो सूखी लकड़ियों का ढेर-सा दिखाई पड़ता है। पड़की आदि चिड़ियाँ सीधा मचान-सा घोंसला बनाती हैं जिसको देखकर यह डर लगता है कि कहीं हवा चलने पर टहनियाँ उड़ न जायँ या अंडे लुढ़क कर नीचे न गिर जायँ। कबूतर इन सबसे आगे है, उसकी मादा किसी सूराख में या कार-निस पर दो-चार पर या तिनके रखकर अंडे दे देती है।

झाड़ी में रहने वाले पक्षी जमीन पर ही अंडे देते हैं और यही हाल रेत पर रहने वाली टिटिहरियों और कुररियों का है। ये सब खुली रेत पर झुंड में अंडे देती हैं।

सारस और हंसावर छिछले ताल के बीच में कोई ऊँचा स्थान चुन लेते हैं और वहीं अपना घोंसला बनाते हैं। सारस तो जमीन पर टहनियों, घास-फूस और सेवार का बड़ा-सा घोंसला बनाता है, लेकिन हंसावर जमीन को ऊँचा करके एक चबूतरा बना लेता है जिस पर उसका अंडा खुले में ही रखा रहता है।

पतेने और कौड़िल्ले मिट्टी के भीटों में लम्बा बिल खोद कर अपना घोंसला बनाते हैं। इनके सुरंगनुमा बिल काफी दूर तक चले जाते हैं जिनके सिरे पर कुछ घास-फूस रखकर ये अंडे देने का स्थान बना लेते हैं। कौड़िल्ले तो घास-फूस की जगह मछलियों की हड्डियों का ढेर लगा देते हैं और उन्हीं पर मादा अंडे देती है।

कठफोर, धनेश, कठफोरिया और तोते आदि तेज चोंच वाले पक्षी पेड़ के खोंये या सूराखों में अपना घोंसला बनाते हैं। यदि उन्हें ठीक सूराख न मिला तो वे अपनी तेज चोंच से किसी पुराने पेड़ के तने को काटकर सूराख बना लेते हैं और उसी में घास-फूस आदि रखकर घोंसले का काम चला लेते हैं।

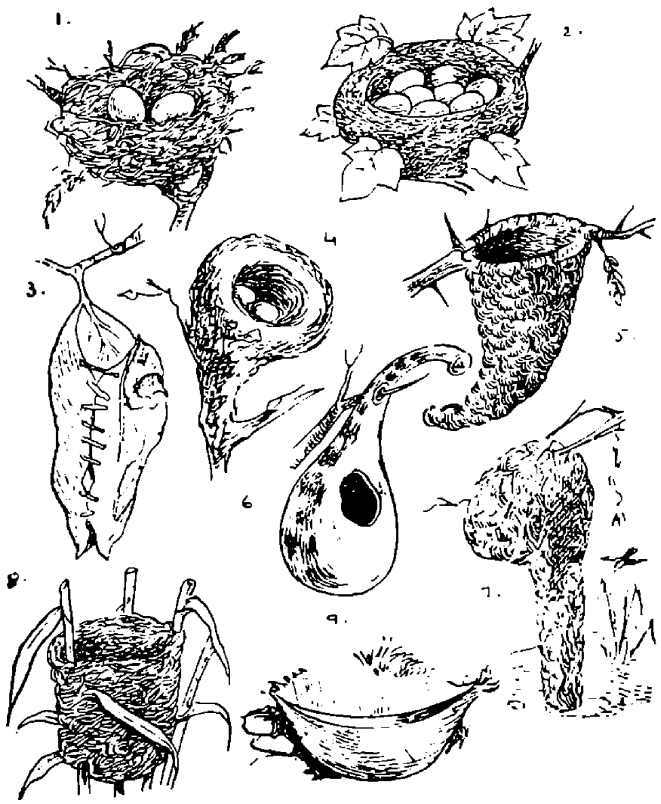
धनेश का घोंसला सबसे विचित्र होता है। मादा पेड़ के खोंथे में मिट्टी भरकर बैठने की जगह बना लेती है, फिर नर




**चित्र २४—मचान वाले घोंसले।**
**1. बगुला, 2. कौआ, 3. ओरांग-उटांग वनमानुष।**

खोंथे का मुँह बन्द कर देता है जिसमें से सिर्फ मादा की चोंच बाहर निकली रहती है। नर बाहर से मादा को बराबर खिलाता रहता है और मादा उसी में बन्द रह कर अंडा सेती रहती है।

अन्त में हमें उन कारीगर चिड़ियों के बारे में भी कुछ बता देना चाहिए जिनके घोंसलों को देख कर हम आश्चर्यचकित हो जाते हैं। हमारे यहाँ की बया और दरजिन फुदकी इनमें बहुत प्रसिद्ध हैं। बया अपनी चोंच से सरपत, रामबाँस, केला और काँस के पतले-पतले रेशों से अपना सुन्दर लौकीनुमा लम्बा घोंसला बनाती है। वे इतने हलके होते हैं कि हवा से इधर-उधर ज्यादा हिलने से बचाने के लिए इनमें मिट्टी के टुकड़े रखने पड़ते हैं। ये घोंसले नीचे गोल होकर ऊपर पतले हो जाते हैं जहाँ उन्हें बबूल आदि के पेड़ में लटका दिया जाता है। इसमें घुसने के लिए नीचे से रास्ता रहता है। घोंसले



चित्र २५—पक्षियों के कलापूर्ण घोंसले।

1. **फाखता**–Dove
2. **फुदकी**–Wren
3. **दरजिन फुदकी**–Tailor Bird
4. **शकरखोरा**–Sun Bird
5. **मछमरनी**–Fly Catcher
6. **अबाबील**–Martin
7. **बया**–Weaver Bird
8. **चिरटा**–Bunting
9. **अबाबील**–Swallow

के भीतर दो हिस्से रहते हैं। एक नीचे का रास्ते वाला, दूसरा उससे ऊपर का जिसमें अंडे रहते हैं। इस तरह किसी दुश्मन का अंडों तक पहुँचना संभव नहीं रह जाता।

इतना ही नहीं, बया इन घोंसलों के अलावा एक प्रकार का घोंसला और बनाती हैं जिसे झूला कहा जाता है। यह छाता-नुमा होता है जिसका ऊपरी हिस्सा पेड़ से लटका रहता है और जिसके नीचे एक लकड़ी लगी रहती है जिस पर बैठकर नर फुरसत के समय झूला करता है।

बया के बाद दरजिन फुदकी का नम्बर आता है। इसको यह नाम अपने घोंसले को सीकर बनाने के कारण ही मिला है। यह अपने मुलायम घोंसले दो बड़ी या कई पत्तियाँ सीकर बनाती है और उसके भीतर अंडे रख देती है। पहले यह अपनी तेज चोंच से पत्तियों के किनारों पर छेद कर लेती है, फिर उनमें मकड़ी के जाले और रुई आदि को मिलाकर बनाये हुए डोरे को इस तरह पिरो देती है जैसे कोई होशियार दरजी थैली सीता है। पत्तियों की इस थैली में दरजिन सेमल, मदार आदि की नरम रुई भर देती है और इस प्रकार उसका घोंसला तैयार हो जाता है। ये सुन्दर घोंसले किसी पेड़ की डाल से लटका दिये जाते हैं।

अबाबील और बतासी के घोंसले भी कारीगरी के नमूने कहे जा सकते हैं। ये घोंसले घास-फूस के न होकर मिट्टी के होते हैं जो प्रायः स्थायी रूप से बने रहते हैं। ये चिड़ियाँ उड़ते-उड़ते किसी भीटे से अपनी चोंच में मिट्टी भर लेती हैं और उसे अपने थूक से चिपचिपी बना लेती हैं। फिर इसी से ये किसी छत पर अपना कटोरानुमा घोंसला बनाती हैं, जिसमें भीतर जाने के लिए एक छेद रहता है।

लेकिन बतासी अपने घोंसलों के लिए मिट्टी का सहारा न लेकर अपने थूक में घास और परों आदि को मिलाकर एक मजबूत चिपचिपा पदार्थ बना लेती हैं। फिर इसी से किसी छत पर अबाबीलों की तरह कटोरानुमा घोंसले बनाती हैं जो काफी गरम और मुलायम रहते हैं।

इस प्रकार चिड़ियों के घोंसले अलग-अलग ढंग के होते हैं जिन्हें चिड़ियाँ अपनी सहूलियत को देखकर अपने अंडों-बच्चों की रक्षा के लिए जोड़ा बांध लेने पर बनाने लगती हैं।

## बच्चों का लालन-पालन

अंडे फूटने के बाद जब बच्चे संसार में पदार्पण करते हैं तो उन्हें अपने माँ-बाप की सहायता की बहुत आवश्यकता होती है। तोते, कबूतर तथा चटक वर्ग के अन्य पक्षियों के बच्चे शुरू में एकदम असहाय रहते हैं। उनके शरीर पर थोड़े से रोएँ रहते हैं और वे न उड़ सकते हैं और न अपने लिए भोजन ही इकट्ठा कर सकते हैं। उनके लिए नर पक्षी को दिन भर

भोजन की तलाश में इधर-उधर चक्कर लगाना पड़ता है और तीतर, बतख आदि के बच्चे, जो अंडा फूटते ही दौड़ने-भागने या तैरने लगते हैं, उनके भी माँ-बाप को उन्हें तैरने, भागने और छिपने की शिक्षा देनी पड़ती है।

यहाँ प्रश्न यह उठता है कि क्या पक्षी अपने अंडे और बच्चों को पहचानते हैं ? और क्या उनमें इनके प्रति सहज स्नेह-भाव रहता है ?

इस विषय में अभी तक जो खोज हुई है उससे यही पता चलता है कि चिड़ियाँ अपने अंडों को नहीं बल्कि अपने घोंसलों को ज्यादा पहचानती हैं। उदाहरणार्थ यदि कबूतर के अंडे को उसके घोंसले से हटाकर डेढ़ फुट की दूरी पर रख दिया जाय तो कबूतरी अपने अंडे की ओर ध्यान न देकर अपने घोंसले में बैठकर सेने का काम जारी रखेगी। यह हाल सिर्फ कबूतर का ही नहीं है, बल्कि अन्य चिड़ियों का भी है। कुछ तो अंडों को घोंसले के निकट पाकर उन्हें लुढ़का कर अपने घोंसले में कर लेती हैं, वे चाहे दूसरे के ही अंडे क्यों न हों, क्योंकि उन्हें तो किसी गीली चीज को अपने नीचे रखकर उस पर बैठने की एक स्वाभाविक प्रेरणा प्रकृति की ओर से मिलती है, जिसे वे किसी प्रकार नहीं छोड़ सकतीं। इसी कारण जब कुछ चिड़ियों के अंडों को हटाकर उनकी जगह पत्थर के गोल टुकड़ों को रख दिया गया तो उन पर मादा इस तरह बैठकर सेने लगी कि जैसे कुछ हुआ ही नहीं।

चिड़ियाँ अंडों पर बैठकर केवल उनकी रक्षा ही नहीं करतीं, बल्कि उनके फूट जाने पर वे बच्चों को अपने नीचे छिपाकर उनको धूप, आँधी-पानी और दुश्मनों से बचाती भी हैं।

अंडों के सेने के तीन तरीके प्रायः पक्षियों में देखे जाते हैं। पहले में मादा अंडे सेती है और नर बच्चों के लिए भोजन लाता है। दूसरे में नर अंडा सेता है और तीसरे में नर-मादा दोनों पारी-पारी से अंडे सेते हैं।

अंडा सेते समय कुछ पक्षियों के निचले हिस्से का कुछ स्थान परों से खाली हो जाता है और वहाँ उनकी खाल साफ दिखाई पड़ने लगती है। ऐसे स्थान जब अंडों से सटे रहते हैं तो उनसे अंडों को पक्षियों के शरीर से ज्यादा गर्मी मिलती है और उन्हें समय से फूटने में आसानी हो जाती है।

पक्षियों के शरीर की दुम के पास स्थित प्रीन (Preen) या पिच्छ-प्रसाधन नाम की ग्रन्थि से एक प्रकार की गन्ध निकलती है जिसके सहारे दुश्मनों को उनका पता चल जाता है। लेकिन जब चिड़ियाँ अंडे सेती रहती हैं तो उनकी यह गन्ध बिलकुल या बहुत कम हो जाती है। यही कारण है कि तीतर और फैजेन्ट आदि पक्षियों का पता शिकारी कुत्ते इसी गन्ध से लगा लेते हैं। लेकिन जब वे अंडों पर बैठे रहते हैं तो उनके निकट पहुँच जाने पर भी कुत्तों को उनकी मौजूदगी का पता नहीं चलता।

चिड़ियों के वे बच्चे जो अंडा फूटने पर दौड़ने-भागने लगते हैं, उनके खिलाने-पिलाने का भार माँ-बाप पर बहुत कम रहता है, लेकिन वे बच्चे जो असहाय अवस्था में रहते हैं, उनके भोजन पहुँचाने का भार नर-मादा या अधिकतर नर पर पड़ता है और इस कार्य में नर को इतनी मेहनत करनी पड़ती है कि वह थोड़े ही दिनों में बहुत दुबला और कमजोर हो जाता है।



चित्र २६—चूजे

हम भोजन लाने के कठिन परिश्रम को आसानी से नहीं समझ सकते, लेकिन जरा कल्पना तो कीजिए कि गंगरा जैसी छोटी चिड़ियों को प्रति दिन ३०-४० जोराइयाँ अपने बच्चों के लिए तलाश करनी पड़ती हैं और जोराइयाँ ऐसी आसानी से तो मिल नहीं जातीं। उनको तलाशने में काफी मेहनत करनी पड़ती है। नर को इसके लिए सैकड़ों बार उड़कर बाहर आना-जाना पड़ता है और अपनी चोंच में कीड़े-मकोड़े या दूसरी खूराक ला-लाकर बच्चों के मुँह में रख देना पड़ता है।



चित्र २७—चूजे

चिड़ियाँ अपने बच्चों की चोंच को आसानी से देख सकें इसके लिए शुरू में उनके शरीर की तुलना में उनका सिर बड़ा और मुँह चौड़ा रहता है। इतना ही नहीं, उनके मुँह के भीतर का रंग भी चटकीला रहता है, जिससे कुछ अँधेरा रहने पर भी चिड़ियाँ उन्हें देख सकती हैं और मुँह की चौड़ाई के कारण उनका लाया हुआ खाना इधर-उधर न गिरकर मुँह में चला जाता है।

लेकिन सब चिड़ियाँ अपने बच्चों को कीड़े-मकोड़े या जोराइयाँ नहीं खिलातीं, कुछ मछलियाँ खिलाती हैं, तो कुछ फल-फूल।

कबूतर के नर-मादा अपनी चोंच से अपने बच्चे को एक प्रकार का दूध जैसा गाढ़ा पदार्थ खिलाते हैं जो कबूतरी के चुगे हुए अध-पके दानों से उसके गले की थैली के भीतर बनता है।

कुछ चिड़ियाँ अपने घोंसले की सफ़ाई का काफी ध्यान रखती हैं। वे अपनी चोंच से चिड़ियों की बीट उठा-उठाकर बाहर फेंकती रहती हैं और किसी प्रकार की गंदगी घोंसले में नहीं रहने पाती, लेकिन कौड़िल्ले आदि कुछ पक्षी ऐसे भी हैं जिनके घोंसले बहुत गंदे और बदबूदार रहते हैं।

बच्चों के बड़े होने पर उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी माँ-बाप की ओर से कोई कमी नहीं होने पाती। हमारी पालतू मुर्गियाँ तक अपने बच्चों को अलग-अलग बोली का मतलब समझा देती हैं और मादा की आवाज सुनते ही बच्चे उसके पास दौड़कर पहुँच जाते हैं। तीतरों की एक खास किस्म की बोली सुनते ही बच्चे खतरे की संभावना देखकर फौरन जहाँ रहते हैं वहीं दुबक जाते हैं और तब तक वहीं दुबके रहते हैं जब तक अपनी माँ की दूसरी आवाज नहीं सुनते।

बच्चों के शरीर पर जब उड़ने योग्य पर निकल आते हैं तो उनको हवा में उड़ने की शिक्षा दी जाती है। उन्हें धीरे-धीरे पहले एक डाली से दूसरी डाली पर उड़कर पहुँचना सिखाया जाता है, फिर यह दूरी बढ़ा कर वे धीरे-धीरे आकाश में उड़ने लगते हैं।

पानी की पनडुब्बी तो अपने बच्चों को अपनी पीठ पर बिठाल कर पानी में तैराती है और तैरते-तैरते वह एकाएक पानी में गोता लगा लेती है। बच्चे ऊपर की सतह पर रहकर धीरे-धीरे तैरना सीख लेते हैं।

बाज, बहरी आदि शिकारी पक्षी अपने बच्चों के सामने हवा में मांस के टुकड़े उछाल देते हैं जिन्हें पकड़ने के लिए बच्चे घोंसले से निकल कर हवा में कूद पड़ते हैं।

चिड़ियों को अपने बच्चों की रक्षा का भी काफी ध्यान रहता है, नहीं तो उनकी जाति अब तक पृथ्वी पर से लुप्त हो जाती। चिड़ियाँ रक्षा के लिए दुश्मनों पर इस जोर का हमला करती हैं कि उनके निकट किसी दुश्मन की जाने की हिम्मत नहीं पड़ती। रेत में अंडा देने वाली टिटिहरियों के अंडे जहाँ रहते हैं वहाँ यदि कोई आदमी पहुँच जाता है तो टिटिहरियों का गिरोह उसके सर के ऊपर उड़कर इतना शोर मचाता है कि जान पड़ता है वह हमला कर बैठेंगी। कभी-कभी तो वे दुश्मन को अंडों के निकट देखकर अपना एक पंख इस तरह झुकाकर चलती हैं कि जान पड़ता है वे घायल हो गयी हैं। इस प्रकार दुश्मन धोखे में पड़ कर उनका पीछा करने लगता है और उनके बच्चों से दूर चला जाता है और वे तब बच्चों को सुरक्षित देखकर आकाश में उड़ जाती हैं।

कुछ सीधी और भोली चिड़ियाँ अपना घोंसला उसी पेड़ पर बनाती हैं जिस पर भुजंगे आदि बहादुर पक्षियों के घोंसले रहते हैं। भुजंगों की बहादुरी मशहूर ही है। वे अपने से चौगुने कद वाले दुश्मन पर आक्रमण कर बैठते हैं जिसे अपनी जान लेकर भागना ही पड़ता है।

अंडे, बच्चे और घोंसले के वर्णन के साथ यदि हम कोयल का जिक्र न करें तो यह वर्णन अधूरा ही रह जायेगा।

ये अपना घोंसला न बनाकर चरखी आदि पक्षियों के घोंसले में अंडा दे आती हैं और अंडे वहीं रहकर फूटते हैं। कोयल के बच्चे कद में बड़े होने पर भी उन्हें विमाता पहचान नहीं पातीं और वे उन्हें अपने बच्चों के समान ही खिलाती-पिलाती रहती हैं। कोयल की पूरी रामकहानी आगे दी गयी है।

## ● प्रवास-गमन

मौसमी चिड़ियों के बारे में हम लोगों के मन में अनेकों प्रश्न उठा करते हैं जिनका उत्तर अभी तक संतोषजनक तो नहीं मिल सका, लेकिन उनको लेकर पक्षिशास्त्र के विद्वानों ने काफी खोज की है।

ये मौसमी चिड़ियाँ कहाँ से आती हैं और कहाँ जाती रहती हैं? इन्हें कौन-सी प्रेरणा यह वार्षिक यात्रा करने के लिए उद्-वेलित करती है? वे कैसे अपने निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचने का निश्चित समय निर्धारित कर लेती हैं? घने कुहरे और अन्धकार में समुद्र संतरण की लम्बी यात्रा समाप्त करने में कौन-सी शक्ति उनकी सहायक होती है? और कैसे नये पक्षी, जिन्होंने पहले कभी प्रवास-गमन नहीं किया, बिना किसी पुराने पक्षी द्वारा राह बताये अपनी पहली विदेश-यात्रा सकुशल समाप्त करके फिर अपने देश को सकुशल लौट जाते हैं? ये प्रश्न ऐसे हैं जिनके अनेक उत्तर अनेक विद्वानों ने दिये हैं। इनमें से कुछ तो ऐसे हैं जो बहुत पुराने और सारहीन हो गये हैं और जिनका यहाँ जिक्र करने से कोई लाभ नहीं है।

अब आधुनिक वैज्ञानिकों और विद्वानों ने पक्षियों के स्थान-परिवर्तन का जो कुछ भी मत निर्धारित किया है उसी को ध्यान में रखकर हम इस प्रश्न को लेते हैं।

पहली आश्चर्य की बात तो यह है कि नये नौजवान पक्षी, जिन्हें और कभी अपना जन्मस्थान छोड़ने का मौका नहीं आया, निश्चित समय आने पर अपना स्थान छोड़कर बिना किसी पुराने साथी के सैकड़ों मील की यात्रा करने दक्षिण की ओर चले आते हैं और जाड़ा बिताने के बाद समुद्र, पहाड़, अन्धकार, कुहरा और तूफान की परवाह न करके फिर अपने जन्म-स्थान को लौट जाते हैं। ये दोनों बातें हम लोगों को ही नहीं, वैज्ञानिकों को भी आश्चर्य में डाल देती हैं।

जाड़ों में पक्षियों के दक्षिण की ओर आने का कारण उनके उत्तर की ओर लौटने से कुछ अधिक स्पष्ट है, क्योंकि जाड़े का प्रकोप और तूफानी आबहवा, जिसमें सभी प्राणियों को अधिक खाने की आवश्यकता महसूस होती है और जब छोटे दिन इस कठिनाई को और भी बढ़ा देते हैं, पक्षियों को विदेश यात्रा करने के लिए प्रेरित करते हैं। इसके अलावा इनके रहने का स्थान छोटे बच्चों और वृद्ध पक्षियों से भर-सा जाता है, जिसके कारण खाने की कमी हो जाना स्वाभाविक है और यह भी एक कारण इनकी दक्षिणी यात्रा का हो जाता है।

जब हम पक्षियों की उत्तर की वापसी यात्रा के कारणों की ओर देखते हैं तो हमें कोई अकाट्य उत्तर नहीं मिलता, हालाँ कि कई विद्वानों ने कई कारण पेश किये हैं। एक विद्वान् का यह मत है कि ये मौसमी पक्षी अंडा देने का समय निकट आने पर अपने जन्म-स्थान को सुरक्षित जानकर उसी ओर लौट जाते हैं। दूसरे विद्वान् हमें बताते हैं कि आदि काल में पक्षियों का जन्म-स्थान पृथ्वी के उत्तर भाग में ही था, इसी कारण वंशवृद्धि के लिए उनमें उत्तर की ओर लौट जाने की एक आत्मप्रेरणा होना स्वाभाविक है।

यद्यपि दोनों मत हमारी जिज्ञासा को शान्त नहीं करते, क्योंकि दक्षिण में न तो खाने की ही इतनी कमी हो जाती है कि चिड़ियाँ भूखों मरने लगें और न बसन्त आते ही उनके इतने शत्रु ही बढ़ जाते हैं कि उनको उत्तर की ओर लौट जाना पड़े। पर जब तक हमें कोई निश्चित कारण नहीं ज्ञात हो जाता तब तक हमें इन्हीं कारणों पर संतोष करना होगा। जैसा ऊपर बताया जा चुका है, पक्षिशास्त्र-विशारद पक्षियों के प्रवास-गमन के वास्तविक कारण का पता लगाने में अपनी पूरी शक्ति लगा रहे हैं, लेकिन अभी तक उन्हें इतना ही पता चल सका है कि चिड़ियों को इस विदेश-गमन के लिए कुछ उत्तेजना तो बाहरी वातावरण से मिलती है और इसके अलावा उन्हें कुछ आन्तरिक उत्तेजना भी मिलती है जिससे वे प्रवास-गमन करती हैं।

बाह्य उत्तेजना के सम्बन्ध में विस्तार करते हुए हम इस सिद्धान्त को ठीक नहीं समझते कि पक्षियों के प्रवास-गमन के मूल कारणों में भोजन की न्यूनता है, क्योंकि कुछ चिड़ियाँ इतने पहले प्रवास-गमन कर देती हैं कि तब भोजन की कोई कमी उन प्रदेशों में नहीं रहती। तापमान को भी मुख्य कारण नहीं माना जा सकता, क्योंकि तापमान प्रतिवर्ष उसी स्थान में एक-जैसा नहीं रहता, पर चिड़ियों के प्रवास-गमन का समय करीब-करीब नियमित ही रहता है। फिर यदि तापमान ही मुख्य कारण होता तो दुनिया के किसी-न-किसी हिस्से में पक्षियों का प्रवासगमन सदैव होता ही रहता।

एक विद्वान् ने दिन की घटत-बढ़त पर अनेक तजुर्बे किये हैं। उन्होंने अपने चिड़ियाखाने में नवम्बर के महीने में नकली प्रकाश से दिन की लम्बाई बढ़ी जाहिर करनी शुरू की और जनवरी तक इतना तापमान भी रखा जैसा बसन्त का हो। इससे हुआ यह कि उन पक्षियों में प्रवास-गमन की भावना उत्तेजित हो गयी। उनके यौन अंगों ( Sex organs ) में बदलाव होने लगा और उनकी अवस्था वैसी ही हो गयी जैसी संतान-वृद्धि के लिए जोड़ा बाँधने के समय हो जाती है।

जब हम इन पक्षियों के प्रवास-गमन के निश्चित मार्ग की ओर देखते हैं तो हमें संदेह होने लगता है कि क्या इस प्रकार का प्राप्त ज्ञान भी उन्हें वसीयत में मिल सकता है। हालाँ कि यह कभी वैज्ञानिकों द्वारा साबित नहीं किया जा सका है, पर इसका खंडन भी तो नहीं किया जा सका है। नहीं तो यह एक दैवी बात-सी जान पड़ती है कि अनेकों जाति के नये नौजवान पक्षी, जिन्होंने कभी अपना देश नहीं छोड़ा, बिना अपने बड़े-बूढ़ों को साथ लिये उन्हीं निर्धारित मार्गों से होकर निधड़क दक्षिण की ओर की लम्बी यात्रा समाप्त कर लेते हैं।

कुछ चिड़ियाँ ऐसी जरूर हैं जो उत्तर से आतीं तो एक मार्ग से हैं, पर लौटतीं दूसरे मार्ग से हैं। पर उनके भी आने और लौटने के मार्ग में एक क्रम है। फिर दूसरे मार्ग से लौटने का कारण बहुत कुछ खाने की सहूलियत भी हो सकती है।

ये चिड़ियाँ अपने एक ही निर्धारित मार्ग में होकर बिना खटके कैसे प्रतिवर्ष चली आती हैं, इसका कोई सही उत्तर नहीं मिलता। जितनी ज्ञानेन्द्रियाँ चिड़ियों में हैं उन सबका निरीक्षण करने पर भी कोई नतीजा नहीं निकलता। अब प्रश्न यह उठता है कि क्या इनको कोई छठी ज्ञानेन्द्रिय प्राप्त है, जो इनका मार्गप्रदर्शन करती है।

पक्षियों की घ्राणेन्द्रिय मामूली ही है। जानवरों की तरह इनको सूँघने से मदद नहीं लेनी पड़ती। इससे इनकी चोंच की जड़ के पास नाक के महज छिद्र-हीं-छिद्र रह गये हैं। इनमें स्पर्श-ज्ञान भी बहुत कम होता है। इनके निर्जीव परों से ढँके शरीर में जब तक खाल से कोई चीज छू नहीं जाती तब तक इन्हें पता ही नहीं चलता।

स्वाद का ज्ञान इनमें जरूर है पर बहुत मामूली ही। और इनके कान भी तेज होते हुए भी कोई विशेषता नहीं रखते। इनकी आँखें हम लोगों से कहीं ज्यादा विकसित जरूर हैं, पर वे इस मार्ग-प्रदर्शन में शायद ही उनकी ज्यादा सहायक हो सकती हों। ऊँची-से-ऊँची जगह से जहाँ चिड़ियाँ पायी गयी हैं, आसमान के बहुत साफ रहने पर उन्हें पृथ्वी का मण्डल २०० मील तक का दिखाई देता है। इससे निश्चित स्थान पर पहुँचकर एक निश्चित केन्द्र पहचानने में उन्हें भले ही सहायता मिले पर हजारों मील से निश्चित मार्ग तलाश कर उनका इन आँखों के भरोसे आना तो संभव नहीं है। इसके बाद फिर वही प्रश्न उठता है कि क्या पक्षियों को कोई छठी इन्द्रिय प्राप्त है?

इस मत को यद्यपि अभी तक किसी विद्वान् ने स्वीकार नहीं किया है पर इसके लिए नाना प्रकार के तजुरबे किये गये और किये जा रहे हैं। रेडियो से भी इसकी परीक्षा में बहुत सहायता मिल रही है। देखें, नतीजा क्या निकलता है।

अब संक्षेप में दो-चार लम्बी और ऊँची उड़ान वाले पक्षियों का परिचय भी दे देना अप्रासंगिक न होगा।

आर्कटिक कुररी ( Tern ) की प्रति वर्ष लौटाफेरी की यात्रा लगभग २२००० मील लम्बी हो जाती है। बटान ( Golden Plover ) प्रति वर्ष करीब ३००० मील जाकर फिर वहीं लौट आता है। आकाश में ऊँचे उड़ने वाले पक्षी भी कम ऊँचाई तक नहीं उड़ते। सारस २००० फुट की ऊँचाई तक, भरत ६००० फुट और उकाब १०००० फुट की ऊँचाई तक उड़ते पाये गये हैं। इतना ही नहीं, कौआ ११००० फुट, चुपका १२००० फुट और गुदेरा २०००० फुट तक की ऊँचाई पर उड़ते पाये गये हैं। कुछ वर्ष पूर्व एक पर्वतारोही ने गौरीशंकर की चोटी पर चढ़ते समय २५००० फुट की ऊँचाई पर अरगुल को उड़ते पाया और देहरादून में एक वैज्ञानिक ने सूर्य का चित्र लेते समय २९००० फुट (५.½ मील) की ऊँचाई पर, जो हमारे गौरीशंकर (सरगमाथा) की ऊँचाई के लगभग है, एक बत्तखों के गिरोह का चित्र प्राप्त किया जो नायाब चित्र है।

इस प्रकार पाँच साढ़े पाँच मील से भी अधिक ऊँचाई पर उड़ने वाले इन पक्षियों के उड़ने और इनके प्रवास-गमन का रहस्य एक रहस्य ही रहेगा या इसका उद्घाटन भी कभी होगा, यह अभी भविष्य के गर्भ में है। हमारी आशाभरी दृष्टि उत्सुकतापूर्वक उन वैज्ञानिकों की ओर लगी है जो अपना सारा जीवन इस अनुसंधान की ओर लगाकर यह महत्वपूर्ण कार्य करने में दत्तचित्त हैं।

## ● कोयल की कहानी

कोयल किस प्रकार अपने अंडे को दूसरे पक्षियों के घोंसले में सेने के लिए छोड़ आती है और घोंसले में कैसे उसके बच्चे उन्हीं पक्षियों द्वारा पाले-पोसे जाते हैं, इसके बारे में थोड़ा बहुत तो हम सब जानते ही हैं, लेकिन इसका पूरा विवरण इतना रोचक है कि यहाँ विस्तार से देना ठीक होगा। कोयल की जाति की कई चिड़ियाँ हमारे देश में पायी जाती हैं, जो दूसरों के घोंसले में अपने अंडे दे आती हैं। उनमें कुछ खास के नाम यहाँ दिये जाते हैं। कुक्कू (यूरोपीय कोयल), काफलपाको (भारतीय कोयल), पपीहा (हॉक कुक्कू), चातक (पाइड-क्रेस्टेड कुक्कू) और कोयल। इन सब पक्षियों ने न जाने कितने समय से अपने अंडों को सेना छोड़ दिया है और अब ये दूसरे पक्षियों के घोंसले में अपने अंडे इसलिए चालाकी से रख आते हैं कि उन्हें दूसरे पक्षी अपने अंडे समझकर सेने लगें और अंडा फूटने पर उनके बच्चों का उन्हीं के द्वारा पालन-पोषण हो। इन पक्षियों को इस काम में प्रकृति की ओर से कितनी सहायता मिलती है, यह देखकर आश्चर्य होता है।

हमारे देश में तो पक्षियों का निरीक्षण बहुत कम हुआ है, लेकिन विदेशों में पक्षियों की एक-एक आदत जानने के लिए इतना अथक परिश्रम किया जाता है कि सहसा हम उस पर विश्वास नहीं कर सकते। केवल कोयल के रहस्योद्घाटन के लिए वहाँ के विशेषज्ञों ने पचीसों वर्ष लगा दिये, तब कहीं जाकर उन्हें कोयल की सच्ची कहानी का पता चला। पिछले लोगों का विश्वास था कि कोयल अपने अंडे कहीं जमीन पर देती है और वहीं से उन्हें एक-एक करके अपनी चोंच से उठाकर दूसरे पक्षियों के घोंसले में रख आती है। इस विश्वास का मुख्य कारण यह था कि अंडा देने का समय आने पर हमें अक्सर कोयल अपनी चोंच में अंडा लिये हुए उड़ती दिखाई पड़ती है। लेकिन थोड़े ही दिन हुए, श्री एडगर चांस ने कोयल के रहस्योद्घाटन के लिए बहुत परिश्रम किया और अन्त में उन्होंने इसका पता लगा लिया कि कोयल किस प्रकार अपने अंडे दूसरे के घोंसलों में रख आती है।

श्री एडगर चांस ने कई वर्षों तक कोयल का निरीक्षण किया और कोयल के अंडा देने की पूरी क्रिया को सिनेमा के कैमरे से चलचित्र खींचकर यह साबित कर दिया कि किस प्रकार कोयल अपने अंडे को दूसरे पक्षियों के घोंसले में रख आती है। उनके इस कार्य से पुराने मतों का पूर्णरूप से खंडन हो गया और अब सब लोग कोयल के रहस्य को जानने लगे हैं। यदि श्री एडगर चांस सिनेमा फिल्म का सहारा न लेते तो पुराने मत वाले विद्वान् इसे कभी स्वीकार न करते कि कोयल अपने अंडे बाहर देकर चोंच से दूसरे पक्षियों के घोंसले में नहीं रखती, क्योंकि उनके पास अपने मत के समर्थन के लिए और भी कई सुन्दर दलीलें थीं। पुराने मत वाले कहते थे कि कोयल को इतना समय नहीं मिलता कि वह निश्चिन्त होकर दूसरे के घोंसले में अंडा दे। इससे यही जान पड़ता है कि वह अपने अंडे कहीं बाहर देती है और वहाँ से एक-एक अंडे को उठाकर चालाकी से दूसरे के घोंसले में रख देती है। दूसरा प्रमाण जो वे लोग देते थे, वह यह था कि कोयल के अंडे कुछ ऐसी चिड़ियों के घोंसलों में पाये जाते हैं, जो बहुत छोटे, गोल और गुम्बद के आकार के होते हैं और जिनमें घुसना कोयल के लिए संभव नहीं है। अतः कोयल इन घोंसलों में केवल चोंच डालकर ही अपने अंडे रख सकती है।

ये दोनों प्रमाण ऐसे अकाट्य थे कि इनके विरोध में कुछ कहना आसान नहीं था। लेकिन श्री एडगर चांस के सिनेमाफिल्म ने इन सब विरोधों का उत्तर एक साथ ही दे दिया है, और अब जो नतीजा निकला है, वह द्रष्टव्य है। श्री एडगर चांस ने चित्र लेने के लिए कुक्कू (यूरोपीय कोयल) को चुना, क्योंकि कोयल तो केवल भारत की ही चिड़िया है। यूरोप में इस जाति की दूसरी चिड़िया कुक्कू कहलाती है, जो वहाँ काफी संख्या में पायी जाती है। दोनों की आदतों में ज्यादा फर्क नहीं होता। फिर

अंडा देने के मामले में हमारी कोयल कुक्कू, काफलपाको, पपीहा तथा चातक सब एक ही जैसे होते हैं। कुक्कू अक्सर चिचरी (पिपिट) के घोंसले में अंडे देती है। इसलिए चिचरी का एक ऐसा घोंसला चुना गया जो कटीली झाड़ियों के बीच में था। उस झाड़ी को और भी काँटों से अच्छी तरह रूँध दिया गया जिससे वहाँ तक पहुँचने के लिए सिर्फ एक पतला सूराख रह जाय और जिसमें कुक्कू अपनी चोंच भर डालकर अंडा रख सके तथा खुद न जा सके। समय आने पर मादा कुक्कू झाड़ी के पास पहुँच गयी। उसने झाड़ी में घुसने की कोशिश की, लेकिन उसमें घुसना संभव नहीं था। घोंसले के सामने खाली जमीन पड़ी थी, जिस पर कुक्कू अंडे दे सकती थी, लेकिन उसने वहाँ अंडा नहीं दिया बल्कि झाड़ी के ऊपर बैठकर उसमें घुसने के लिए कोशिश करने लगी। धीरे-धीरे वह काँटों को इधर-उधर दबाकर चिचरी के घोंसले तक पहुँच ही गयी। उसके कई पर उखड़ गये। घायल हो गयी, लेकिन उसने तब तक दम नहीं लिया, जब तक वह घोंसले तक नहीं पहुँची। वहाँ पहुँच कर उसने अपनी चोंच में चिचरी का एक अंडा उठा लिया और उसके स्थान पर खुद एक अंडा देकर झाड़ी से बाहर निकल आयी और चिचरी के अंडे को एक डाल पर बैठकर चट कर गयी। इससे यह स्पष्ट हो गया कि कुक्कू अपने अंडे जमीन पर न देकर सीधे दूसरे पक्षियों के घोंसले में ही देती है।

कोयल अथवा कुक्कू के बारे में और जो बातें निरीक्षण से ज्ञात हुई हैं, वे इस प्रकार हैं। कोयल और उसकी जाति के अन्य पक्षी कौए, चरखी, चिचरी, पोदना आदि के घोंसलों में अपने अंडे देते हैं। ये अंडे एक ही दिन नहीं दिये जाते बल्कि इन्हें कोयल एक-एक दिन का अन्तर देकर देती है। उसे जिस दिन अंडा देना होता है वह किसी पेड़ की डाल पर उसी तरह घंटों बैठी रहती है, जिस प्रकार अन्य चिड़ियाँ अंडे देने से कुछ समय पहले चुपचाप बैठ जाती हैं। फिर अंडा देने का समय आने पर वह हवा में उड़कर उस घोंसले पर पहुँच जाती है जिसे वह पहले से ही चुने रहती है। वहाँ पहुँचकर वह अपना समय नहीं नष्ट करती और फौरन ही एक अंडे को अपनी चोंच में उठाकर उसके स्थान पर खुद अंडा देकर उड़ जाती है। इन सबमें उसे मुश्किल से १० सेकेंड का समय लगता है। कोयल उसका अंडा लेकर किसी डाल पर जा बैठती है और वहीं उसे निगल जाती है। ४-६ घंटे के कठिन परिश्रम के बाद उसे यही पहला भोजन मिलता है। अपना अंडा दूसरे के घोंसले में देकर कोयल उसे भूल नहीं जाती, बल्कि समय-समय पर उसे देखती रहती है और यदि वहाँ अपने अंडे को नहीं पाती, तो फिर वहीं दूसरा अंडा दे आती है। इस प्रकार वह तब तक बार-बार अंडे देती रहती है, जब तक वह उन्हें सुरक्षित नहीं देख लेती। वैसे तो कोयल साधारणतया चार-पाँच अंडे देती है, लेकिन इस प्रकार अंडे नष्ट हो जाने पर उसे २५ अंडे तक देते देखा गया है।

लगभग १३ दिन में कोयल का अंडा फूट जाता है और उसमें से कोयल का भद्दा-सा बच्चा निकलता है। शुरू में उसकी आँखें नहीं खुली रहतीं और वह असहाय घोंसले के बीच में लोथड़ के समान पड़ा रहता है। पहले दिन तो वह चुपचाप पड़ा रहता है, लेकिन दूसरे दिन शाम को या तीसरे दिन सबेरे तक उसमें न जाने कहाँ से इतनी शक्ति और सहज ज्ञान आ जाता है कि वह घोंसले के दूसरे बच्चों और अंडों को बाहर फेंकने में ही अपनी भलाई देखता है और वह उन्हें घोंसले से बाहर फेंकने का काम शुरू कर देता है। इस काम में उसे कठिनाई जरूर पड़ती है, लेकिन इसमें उसे प्रकृति की ओर से भी काफी सहायता मिलती है। इस समय उसकी पीठ पर एक प्रकार का गढ़ा-सा हो जाता है, जसमें वह कोशिश करके दूसरे बच्चों को रख लेता है और उसके बाद वह अपने मजबूत पंजों से घोंसले के दोनों किनारों को पकड़कर अपनी दोनों भुजाओं को इस प्रकार चलाता है कि पीठ की मांस-पेशियाँ मथानी की तरह चलती हैं और पीठ पर के गढ़े में जो उस पक्षी का बच्चा रहता है वह उछलकर घोंसले के बाहर जा गिरता है। इसी प्रकार वह एक-एक करके सब बच्चों को बाहर निकाल फेंकता है और घोंसले में उसका एकछत्र राज्य स्थापित हो जाता है।

अब कोयल का यह बच्चा घोंसले में सौतेले माँ-बाप के लाये हुए भोजन को अकेले ही खा-खाकर खूब मोटा होता जाता है और धीरे-धीरे उसका शरीर मुलायम परों से ढक जाता है, शरीर घोंसले से बड़ा हो जाता है और वह बड़ी मुश्किल से उस पर किसी प्रकार अपने को संभाले रहता है। कुछ दिन बाद उसके उड़ने की पारी आती है और वह थोड़ी दूर उड़कर किसी डाल पर बैठकर बड़े मीठे स्वर में बोलता है। उसकी बोली सुनकर आस-पास के पक्षी, जो इधर-उधर से अपने बच्चों के लिए खाना लेकर गुजरते हैं, इसकी खुली चोंच और फैले हुए मुँह को देखकर इसके मुँह में खाना रख देते हैं। इस प्रकार यह परजीवी पक्षी दूसरे के भोजन से अपना पेट भरकर बड़ा हो जाता है और अन्त में एक दिन पालन-पोषण करने वाले भी उसे छोड़कर उड़ जाते हैं। ऐसी हालत में उसकी दशा बहुत शोचनीय हो जाती है। उसे बैठे-बैठे कीड़ों-मकोड़ों की नरम जोराइयाँ तथा इसी प्रकार के अन्य पदार्थ मिलने बन्द हो जाते हैं और उसे बड़े संकट का सामना करना पड़ता है। वह मजबूरन शाकाहारी हो जाता है और नरम कोपलों और पत्तियों से अपना पेट भरने लगता है। लेकिन उसे इस प्रकार थोड़े ही दिन व्यतीत करने पड़ते हैं और अन्त में वह अपने असली भोजन कीड़े-मकोड़ों आदि से अपना पेट भरना शुरू कर देता है और थोड़े ही समय में पूर्णरूप से कोयल बन जाता है। इस प्रकार कोयल का रहस्यमय जीवन एक साधारण पक्षी की तरह बीतने लगता है। ●

सुरेश सिंह

राष्ट्रीय पक्षी
'मोर'



भारतीय पक्षी

हिन्दी समिति

# भारतीय पक्षी

## १ डोम कौआ (Raven Corvus : Carax)

**पर्याय** : डोम काक, बड़ा कौआ, डोड, द्रोण काक।

**पहचान** : डोम कौआ या डोम काक कद में अन्य कौओं से बड़ा और धुर काले रंग का होता है। यह अपनी कर्कश बोली तथा गले के कंठीनुमा उभरे हुए परों के कारण अन्य कौओं से आसानी से पहचान लिया जाता है।



डोम कौआ

**रंग-रूप** : इस कौए की लम्बाई लगभग २४ इंच होती है और इसके नर-मादा एक रंग-रूप के होते हैं। इसका सारा शरीर धुर चमकीला काला होता है, जिसमें हल्की-सी बैंगनी और नीली झलक होती है। इसकी आँख की पुतली गाढ़ी भूरी तथा चोंच और पैर काले होते हैं। गले के चारों ओर के पर कंठीनुमा फूले-फूले-से रहते हैं।

**निवास** : हमारे देश में ये कौए पश्चिमोत्तर प्रदेशों में पाये जाते हैं। पंजाब तथा राजस्थान के पश्चिमी भागों में भी ये कौए काफी संख्या में फैले हुए हैं।

**विवरण** : पंजाब के पश्चिमी भाग से लेकर पश्चिमोत्तर के सारे सूखे और उजाड़ स्थान में डोम कौए काफी संख्या में दिखाई पड़ते हैं। हरे-भरे खेतों तथा घने जंगलों में ये कम दिखाई पड़ते हैं।

डोम कौए अक्सर १५-२० के गोल में रहते हैं। ये काफी ढीठ पक्षी हैं और इन्हें गाँव और बस्तियों के आस-पास देख पाना कठिन नहीं। ये जमीन पर निडर होकर फुदक-फुदक कर चलते हैं और कूड़े-करकट में अपना भोजन तलाशते रहते हैं।

डोम कौओं के डैने बहुत मजबूत होते हैं, इससे इनकी उड़ान सीधी और तेज होती है। उड़ते समय इनका सिर और चोंच आगे की ओर बढ़े रहते हैं।

डोम कौए संभवतः जीवन भर के लिए जोड़ा बाँध लेते हैं, लेकिन रात को बसेरा लेते समय इनका एक ही जोड़ा नहीं, बल्कि २०-२५ जोड़े किसी एक पेड़ पर इकट्ठे हो जाते हैं।

डोम कौए सर्वभक्षी पक्षी हैं, अच्छी चीजों के साथ ही साथ हर तरह के गलीज़ से अपना पेट भरते हैं। इतना ही नहीं, ये फसल को भी काफी नुकसान पहुँचाते हैं और अक्सर तोतों की तरह खेतों की बालियाँ काट डालते हैं। किसी जानवर के मरने पर जब उसे खाने के लिए गिद्धों की मंडली जमा होती है तो ८-१० डोम कौए भी वहाँ जरूर उपस्थित रहते हैं।

**घोंसला** : डोम काक वैसे तो छोटे-छोटे गिरोहों में ही रहते हैं, लेकिन घोंसला बनाते समय ये अपने जोड़े के साथ अकेले ही रहना पसन्द करते हैं। इनके जोड़ा बाँधने का समय वैसे तो दिसम्बर से मार्च तक है, लेकिन इनके अंडे अधिकतर जनवरी और फरवरी में मिलते हैं। डोम काक का घोंसला बड़ा मजबूत होता है जिसे कौए सूखी टहनियों से मजबूत बनाते हैं। यह घोंसला किसी बड़े पेड़ की दुफंकी डाल पर या पहाड़ की किसी ऊँची दराज में रखा रहता है। घोंसले के भीतरी हिस्से में ऊन, बाल, पर तथा चीथड़े रहते हैं जिससे वह मुलायम रहे और मादा को बैठ कर अंडे सेने में तकलीफ न हो।

समय आने पर मादा चार से पाँच तक अंडे देती है जो लगभग २ × १.३० इंच के अंडाकार होते हैं। इन अंडों का रंग कभी हरापन लिये नीला और कभी पथरीला रहता है जिन पर गाढ़ी भूरी, कत्थई और हल्की बैंगनी चित्तियाँ और निशान पड़े रहते हैं। अंडों पर एक प्रकार की चमक रहती है जो पुराने होने पर कुछ कम हो जाती है।

## २ काला कौआ (Jungle Crow : Corvus macrorhynchps)

**पर्याय** : जंगली कौआ, कगार कौआ, दग्घ काक, दह काक, वनाश्रय कौआ, घाल कौआ, करियल, वन काक ।

**पहचान** : काला कौआ घुर काले रंग का पक्षी है जो कद में डोम काक से कुछ छोटा और पाती कौआ से कुछ बड़ा होता है । इसकी चोंच बड़ी होती है और इसकी काँ-काँ की बोली काफी कर्कश होती है ।

**रंग-रूप** : इस कौए की लम्बाई १९ इंच के लगभग होती है और इसके नर-मादा एक रंग-रूप के होते हैं । इसका सारा शरीर घुर काला होता है जिसमें नीली या बैंगनी चमक रहती है । इसकी आँख की पुतली गाढ़ी भूरी तथा चोंच और पैर काले होते हैं ।

**निवास** : हमारे यहाँ काला कौआ हिमालय की ऊँचाइयों को छोड़कर सारे देश में पाया जाता है । इसकी तीन जातियाँ हमारे देश में पायी जाती हैं। कद में बड़े होकर भी इन तीनों जातियों के कौए रंग-रूप में एक जैसे होते हैं।

**विवरण** : काला कौआ गिरोह में रहने वाला पक्षी है, लेकिन इसके गिरोह पाती कौए के गिरोह से छोटे होते हैं। वैसे तो यह शहरों और घनी बस्तियों में भी दिखाई पड़ता है, लेकिन इसकी अधिक संख्या देहातों में ही फैली रहती है। पाती कौए के साथ-साथ ये भी सबेरा होते ही हमारे घरों के आसपास पहुँच जाते हैं, लेकिन ढिठाई में उनसे कम ही पड़ते हैं। गाँव, बस्तियों से दूर घोर जंगलों में भी ये कौए काफी संख्या में रहते हैं। मरे हुए जानवरों के पास गिद्धों के साथ जो कौए दिखाई पड़ते हैं, उनमें अधिक संख्या इन्हीं की रहती है। चोरी में काले कौए पाती कौओं से कम उस्ताद नहीं होते, दूसरे पक्षियों के अंडे-बच्चों को इनसे बहुत नुकसान पहुँचता है। इनके डैने बहुत मजबूत और उड़ान बहुत तेज होती है। कभी-कभी पहाड़ों पर जब तेज हवा चलती है तो ये आसमान में ऊँचाई तक उड़कर ऐसी गिरह-बाजी दिखाते हैं, जिसे देख कर कबूतरों की याद आ जाती है।

काले कौए की बोली उतनी कर्कश नहीं होती, जितनी डोम कौए की । इसकी बोली काँ-आँ-आँ-काँ-आँ-आँ से मिलती-जुलती होती है जिससे हम सब परिचित हैं।

काला कौआ भी अन्य कौओं की तरह सर्वभक्षी होता है। यह सभी प्रकार की गंदी चीजों से अपना पेट भरता है। कूड़े-करकट के ढेर और घूरों को कुरेद-कुरेद कर अपना भोजन तलाशता रहता है। जहाँ यह एक ओर अंडों, कीड़ों-पतिंगों, मेढक, छिपकली तथा अन्य छोटे-छोटे जानवरों से अपना पेट भरता है, वहीं इससे गल्ला, फल-फूल और तरकारियाँ भी नहीं बचतीं। यही नहीं, यह मुरदाखोर भी होता है।

**घोंसला** : काले कौए के घोंसला बनाने का समय दिसम्बर से मार्च तक रहता है। इसका घोंसला डोम कौए के घोंसले की तरह भद्दा, मजबूत, बड़ा और गहरा होता है। घोंसले का भीतरी हिस्सा ऊन, बाल तथा घास-फूस से मुलायम कर दिया जाता है जिसमें बैठकर मादा ४–५ अंडे देती है। इसके घोंसले किसी बड़े पेड़ की चोटी के पास की दुफंकी शाखा पर रखे रहते हैं जिनमें अक्सर कोयल भी उनको धोखा देकर अपने अंडे दे जाती है।

इनके अंडे लगभग १.७० × १.२० इंच के होते हैं जो शक्ल-सूरत में डोम कौए के अंडों से मिलते-जुलते होते हैं। इनका रंग हलका हरापन लिये नीला, हलका भूरा या पत्थरी होता है जिस पर गाढ़ी भूरी कत्थई और बैंगनी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

## ३ पाती कौआ (Indian House Crow : Corvus Splendens)

**पर्याय** : नौआ कौआ, देशी कौआ, नाऊ कौआ, ग्राम काक।

**पहचान** : पाती कौआ काले कौए से कद में छोटा होता है। इसका सीना और गले के चारों ओर का हिस्सा सिलेटी और बाकी सारा शरीर घुर काले रंग का होता है। यह सब कौओं से ढीठ होता है और घरों में बहुत आजादी के साथ घूमता रहता है।

**रंग-रूप** : इस कौए की लम्बाई लगभग १७ इंच होती है और इसके नर और मादा एक रंग-रूप के होते हैं। इसकी गरदन और गुद्दी का रंग काला होता है। उसके बाद गरदन से लेकर सीने तक भूरे-सिलेटी रंग की चौड़ी पट्टी रहती है। सीने से लेकर नीचे तक का हिस्सा कलछौंह भूरा और बाकी सारा शरीर घुर काले रंग का होता है जिसमें एक प्रकार की बैंगनी-नीली और हरी चमक रहती है। गले के पर कुछ उभरे-उभरे से रहते हैं। इसकी आँख की पुतली गाढ़ी भूरी और चोंच तथा पैर काले होते हैं।

**निवास** : पाती कौआ हमारे देश का बारहमासी पक्षी है जो सारे देश में फैला हुआ है। हिमालय में यह ४,००० फुट की ऊँचाई तक पाया जाता है। इसकी कई जातियाँ हमारे देश में पायी जाती हैं जिनके रंग में स्थान के अनुसार थोड़ा-बहुत फर्क रहता है।

**विवरण** : पाती कौआ हमारा सबसे अधिक परिचित पक्षी है। सबेरा हुआ नहीं कि इनसे कोई गाँव, बस्ती और शहर खाली नहीं रह जाता। सूरज निकलते ही इनकी काँव-काँव शुरू हो जाती है। दिन-भर इनके ऊधम से हमें परेशान होना पड़ता है। फिर शाम को सूरज डूबने पर बसेरा लेने के स्थान की

ओर ये तांता बांध कर उड़ते दिखाई पड़ते हैं। यही इनकी दिनचर्या है।

पाती कौआ गिरोह में रहने वाला पक्षी है जिसके गिरोह काफी बड़े होते हैं। शाम के समय जब किसी पेड़ पर बसेरा लेने के लिए सब कौए जमा होते हैं तो इनके गिरोह की संख्या का कुछ अनुमान हो सकता है। कभी-कभी तो हजारों कौए एक ही जगह कई पेड़ों पर बसेरा लेते हैं।

ये कौए बहुत ज्यादा ढीठ होते हैं, साथ ही ये इतने चालाक और मक्कार होते हैं जिसका मुकाबिला कोई और पक्षी नहीं कर सकता। चौकन्ने तो ये इतने रहते हैं कि आपका हाथ उठा नहीं कि ये उड़कर दूर चले जाते हैं। इनकी चोरी का हाल बताये बिना तो इनका वर्णन ही अधूरा रह जायेगा। ये इतने ढीठ और चोरी में इतने उस्ताद होते हैं कि दूसरे पक्षियों के अंडे-बच्चों से लेकर हमारे घर में खाने-पीने की कोई खुली हुई चीज़ इनकी चोरी से नहीं बच सकती।

पाती कौए उड़ने में भी अन्य कौओं की तरह बहुत प्रवीण होते हैं। आसमान में ऊँचाई तक उड़ने के बाद कभी-कभी इनका गिरोह तेजी से उतरता है तो ऐसी आवाज़ होती है, जैसे बत्तखों का झुंड सिर पर से निकल गया हो। इनकी बोली कॉ-आँ-आँ, कॉ-आँ-आँ होने पर भी काले कौए के बराबर कर्कश नहीं होती।

इतना सब होते हुए भी कोयल इनकी आँख में धूल झोंक कर इनके घोंसले में अपने अंडे दे आती है और ये बेवकूफी के नाते कोयल के अंडों को अपना अंडा समझ कर सेते हैं।

अन्य कौओं की तरह पाती कौए भी सर्वभक्षी हैं। इनसे खाद्य-अखाद्य कुछ नहीं बचता। मनुष्य के खाने की सब चीजें तो ये खाते ही हैं, साथ ही किसी सड़ी-गली चीज से भी इनको कोई परहेज़ नहीं।

**घोंसला** : पाती कौए के अंडे देने का समय स्थान-स्थान पर भिन्न होता है। वैसे अप्रैल से जुलाई तक इसके अंडे मिलते हैं। कभी-कभी तो हमको इसके घोंसले दिसम्बर और जनवरी में भी दिखाई देते हैं।

ये कौए अपना घोंसला किसी पेड़ की दुफंकी डाल पर बनाते हैं जो अक्सर तितरी-बितरी टहनियों का ढेर सा लगता है। लेकिन ये सुन्दर घोंसला न बना सकते हों सो बात नहीं, कभी-कभी इनका घोंसला बहुत सुडौल और कटोरेनुमा होता है। ये अपने घोंसले के भीतर घास-फूस, ऊन, रुई तथा चिथड़े आदि लगा कर उसे खूब मुलायम बना देते हैं जिससे इनके बच्चों को किसी प्रकार की तकलीफ न हो।

घोंसला बन जाने पर मादा ४ से ५ तक अंडे देती है जो लगभग १.४५ × १.५ इंच के होते हैं। इनका रंग हरापन लिये नीलछौंह रहता है और इन पर काफी चमक रहती है। इन अंडों पर गाढ़ी कत्थई, भूरी अथवा सिलेटी चित्तियाँ और निशान पड़े रहते हैं।

## ४ पहाड़ी कौआ (Jack daw : Corvus monedula)

**पर्याय** : चौरि काक, चोर कौआ।

**पहचान** : पहाड़ी कौआ अपने छोटे आकार तथा गरदन की पट्टी के कारण घरेलू कौओं से आसानी से पहचाना जाता है।



पहाड़ी कौआ

**रंग-रूप** : इसकी लम्बाई १३ इंच होती है और इसके नर-मादा दोनों एक ही जैसे होते हैं। इसके सारे शरीर का ऊपरी भाग, पंख तथा पूंछ चमकीले काले रहते हैं और एक चौड़ी भूरी पट्टी सिर के चारों ओर तथा गरदन के पिछले भाग तक चली जाती है जो पीले रंग की चमक के कारण सफेद दिखाई देती है। ठोड़ी, गला तथा गरदन का अगला हिस्सा काला तथा शरीर का शेष भाग कलछौंह सिलेटी रहता है। आँख की पुतली सफेद तथा पैर और चोंच काली होती हैं।

**निवास** : पहाड़ी कौआ पश्चिमी एशिया के क्षेत्रों में पाया जाता है। जाड़े में यह अक्तूबर से मार्च तक पंजाब तथा हिमालय के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में अधिक दिखाई पड़ता है।

**विवरण** : कश्मीर घाटी के लोग इन पहाड़ी कौओं से अपरिचित न होंगे। यह साल भर अपने जाने-पहचाने संगीतमय स्वर से वहाँ के प्रदेशों को मुखरित किया करते हैं। ये कौए श्रीनगर

में मकानों और पेड़ों पर निवास करते हैं। ये जाड़ों में पंजाब में भी झुंडों में दिखाई देते हैं। वहाँ आकर ये अन्य कौओं के झुंडों में मिल जाते हैं। इनकी उड़ान तेज होती है, साथ ही इनको उड़ते समय इनके छोटे आकार से भी पहचाना जा सकता है। अन्य कौओं की अपेक्षा इनकी आवाज संगीतमय होती है। ये बहुत ही ढीठ और निडर होते हैं और अक्सर लोग इन्हें पालते भी हैं।

**घोंसला**: कश्मीर में इनके जोड़ा बाँधने का समय अप्रैल से जून तक रहता है। इनका घोंसला छिछले प्याले जैसा होता है जो ऊन, चिथड़ों, बाल इत्यादि से मुलायम किया जाता है। उसका ऊपरी भाग काँटेदार टहनियों और शाखाओं से बना होता है। ये अपने घोंसले प्रायः चट्टानों और मकानों के सूराखों में अथवा पेड़ों पर बनाते हैं। कश्मीर की प्रसिद्ध डल झील में भी पानी की घास के बीच इनके घोंसले देखे जा सकते हैं।

इनके अंडों की संख्या चार से छह तक होती है जो दोनों सिरों पर नुकीले होते हैं। अंडे हरछौंह नीले रंग के होते हैं जिसपर गहरे कलछौंह बादामी धब्बे और धारियाँ पड़ी रहती हैं।

आकार में ये अंडे लगभग १.४० × ०.९८ इंच के होते हैं।

## ५ डिगडाल (Yellow-billed blue-magpie : Urocissa Haviros tris)

**पर्याय**: पीत चंचु, पूर्ण कूट।

**पहचान** : डिगडाल अपनी लम्बी दुम के कारण आसानी से पहचाना जाता है। यह गिरोह में रहता है और इतना शोर मचाता है कि सहज ही लोगों का ध्यान इसकी ओर चला जाता है। इसकी पीली चोंच और गुद्दी पर के सफेद धब्बे से इसको पहचानने में धोखा नहीं हो सकता।



डिगडाल

**रंग-रूप**: यह पक्षी लगभग २६ इंच लम्बा होता है जिसमें इसकी १८ इंच की दुम भी शामिल है। इसके नर व मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं।

डिगडाल का सिर, गरदन और सीना काला होता है। इसकी गुद्दी पर एक सफेद चित्ता रहता है। इसके बाद सारा ऊपरी हिस्सा नीला होता है जो दुम तथा डैनों के पास पहुँचते-पहुँचते चटक हो जाता है। डैनों के सिरे पर सफेदी रहती है और इसी प्रकार दुम का सिरा भी सफेद रहता है। इसकी लम्बी दुम धड़ के पास चौड़ी होकर धड़ के निचले सिरे तक जाते-जाते पतली हो जाती है।

इसकी आँख की पुतली चटक पीली, चोंच गंदी पीली और पैर चटक नारंगी रंग के होते हैं।

**निवास** : डिगडाल हिमालय के ६,००० से १०,००० फट ऊँचे क्षेत्रों का बारहमासी पक्षी है। लेकिन यह नेपाल के पश्चिम की ओर हिमालय के पश्चिमी भागों में अधिकतर पाया जाता है। इसकी एक और भी जाति हमारे देश में पायी जाती है, जिसका रंग-रूप तो इसी की तरह होता है, लेकिन उसकी चोंच पीली न होकर लाल रहती है।

**विवरण**: डिगडाल ऊँचे पहाड़ों पर रहने वाला बहुत परिचित पक्षी है जो अपने सुन्दर रूप के कारण घने जंगलों में लोगों का ध्यान अपनी ओर खींच लेता है। यह ५–७ का गिरोह बाँध कर रहता है। जिस स्थान को यह एक बार पसंद कर लेता है फिर उसे छोड़ कर दूसरी जगह नहीं जाता। वैसे तो यह घने जंगलों में हमेशा पेड़ों पर ही रहता है, लेकिन कभी-कभी खेतों में भी उतर आता है। जमीन पर उतरने पर इसे अपनी लंबी दुम उठा कर फुदक-फुदक कर चलना पड़ता है जिससे इसकी दुम जमीन पर रगड़ न जाय।

डिगडाल वैसे तो बहुत तेज और फुर्तीला पक्षी है, लेकिन इसकी लम्बी दुम इसके उड़ने में बहुत बाधा डालती है और लम्बी दुम वाले मोर की तरह, इसकी उड़ान भी लहराती हुई और बहुत भारी होती है।

डिगडाल बहुत शोर मचाने वाला पक्षी है जिसकी कई तरह की बोलियाँ सुनने को मिलती हैं। इनमें दो-एक को छोड़ कर प्रायः सब कर्कश ही होती हैं।

डिगडाल के भोजन में छोटे-छोटे जानवरों, चिड़ियों के बच्चों और कीड़ों-मकोड़ों के अलावा जंगली फल भी शामिल हैं। इस प्रकार यह पक्षी भी कौए की तरह सर्वभक्षी कहा जा सकता है।

**घोंसला**: यह पक्षी अपना घोंसला करीब ३० फुट की ऊँचाई पर बनाता है, जो अक्सर किसी घनी दुकंकी डाल पर स्थित होता है और आसानी से दिखाई नहीं पड़ता। यह घोंसला

बड़ा और ढीला-ढाला सा रहता है, जिसको डिगडाल पतली-पतली डालियों और घास-फूस तथा पौधों की जड़ों की सहायता से बनाता है। डिगडाल की मादा एक बार में तीन-चार अंडे देती है जो लगभग १.२० × १ इंच के होते हैं। इन अंडों का रंग पिलछौंह पत्थरी होता है, जिनपर भूरेपन की झलक रहती है। अंडों पर भूरी और बैंगनी रंग की चित्तियाँ, धारियाँ और बिन्दियाँ पड़ी रहती हैं।

## ६ मुटरी (Indian Tree pic : Dendrocitta vagabunda)

**पर्याय** : महलाट, महताब, चाँद, रुकमिन, मूतरी, तमड़ौर, भारत कृटाकूट।

**पहचान** : मुटरी को इसकी लम्बी दुम के कारण पहचानना कुछ कठिन नहीं होता। इसकी कंजई दुम का सिरा काला होता है और ललछौंह कत्थई बदन पर काले और सफ़ेद पंख इसको पहचानने में बहुत मदद करते हैं।

**रंग-रूप** : मुटरी की लम्बाई लगभग १८ इंच होती है, जिसमें इसकी १२ इंच लम्बी दुम भी शामिल है। इसके डैने ६ इंच, टाँगें १.३ इंच और चोंच १.३ इंच की होती है। नर और मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। इसके सिर, गरदन और सीने का रंग कलछौंह भूरा और बाकी शरीर का भाग कत्थई रहता है। पीठ का रंग गाढ़ा और पेट का उससे कुछ हल्का रहता है। परों के ढकने वाली मायल सफ़ेद रहते हैं और इसकी लम्बी दुम सिरे की ओर जाते-जाते पतली हो जाती है और सिरा काले रंग का होता है। इसकी आँख की पुतली ललछौंह भूरी, चोंच सिलेटी और पैर गाढ़े भूरे होते हैं।

**निवास** : मुटरी हमारे देश के प्रायः सभी स्थानों में पायी जाती है। यह यहाँ की प्रसिद्ध बारहमासी चिड़िया है जो हमारा देश छोड़ कर बाहर नहीं जाती। हिमालय में यह ७,००० फुट ऊपर तक चली जाती है।

**विवरण** : मुटरी हमारे यहाँ की प्रसिद्ध चिड़िया है जो अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग नामों से पुकारी जाती है। इसी से मिलती-जुलती और इसी जाति की एक और चिड़िया है जो हिमालय के निचले क्षेत्रों में पायी जाती है जो कोकिया काक ( Himalayan Tvcepie ) के नाम से प्रसिद्ध है। यह राखी और भूरे रंग की चिड़िया है जिसकी शक्ल-सूरत और लम्बी दुम अन्य मुटरियों की तरह होती है।

मुटरी पेड़ पर रहने वाली चिड़िया है, जो शायद ही कभी जमीन पर उतरती हो, क्योंकि इसकी लम्बी दुम इसे जमीन पर चलने-फिरने में काफी बाधा पहुँचाती है। लेकिन इसको हम कभी-कभी मोटे पेड़ों के खुरदुरे तनों पर कठफोड़वा की तरह पंजों के सहारे कीड़े-मकोड़े पकड़ते देख सकते हैं। मुटरी को घने जंगलों से ज्यादा बाग-बगीचे पसन्द हैं। यह बस्तियों के आस-पास के पेड़ों पर रहना बहुत पसन्द करती है, लेकिन शरमीली इतनी होती है कि इसका अधिकतर समय किसी घने पेड़ की पत्तियों में छिपे-छिपे ही बीत जाता है। लम्बी दुम के कारण इसको उड़ने में दिक्कत होती है, इसलिए यह दो-चार बार हवा में पंख मार कर कुछ दूर तक उसी के सहारे तैरती-सी चली जाती है।

मुटरी वैसे तो जोड़े में रहती है, लेकिन अक्सर गिरोह में भी देखी जा सकती है। यों, यह बहुत मीठे स्वर में बोलती है, लेकिन गुस्सा होने पर या छेड़ी जाने पर इसका स्वर बहुत कर्कश हो जाता है।

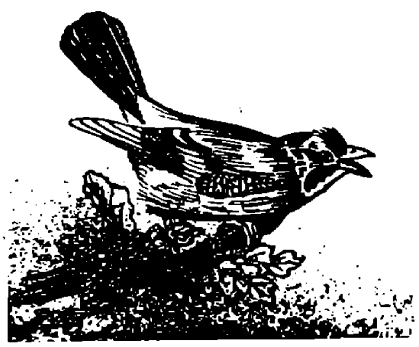
मुटरी कौए की तरह सर्वभक्षी पक्षी है। फूल-फल, कीड़े-मकोड़े, छिपकली, चिड़ियों के अंडे और बच्चे, चूहे, छोटे-छोटे साँप कुछ भी तो इससे बचने नहीं पाते। चिड़ियों के अंडों और बच्चों का नुकसान करने में तो यह कौओं के भी कान काटती है।

**घोंसला** : मुटरी के अंडा देने का समय अप्रैल से जुलाई तक है। यह अपना घोंसला किसी पेड़ की फुनगी के पास की दुफंकी डाल पर बनाती है। घोंसला कटोरानुमा होता है, तो भीतर की ओर घास-फूस और ऊन आदि से बनाया जाता है। इस घोंसले में मादा ४-५ अंडे देती है जो अंडाकार और कुछ नुकीले होते हैं। ये अंडे नाप में लगभग १.१७ × ०.८५ इंच के होते हैं और इनका रंग एक-जैसा नहीं होता। कुछ तो हल्के हरे रंग के होते हैं जिन पर भूरी और कत्थई या बैंगनी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं और कुछ प्याजी रंग के होते हैं जिन पर ललछौंह गाढ़ी भूरी और गाढ़ी बैंगनी चित्तियाँ और बिन्दियाँ रहती हैं।

## ७ बनसर्रा (Black-throated Jay : Garrulus lanceolatus)

**पर्याय** : कालकंठ, वनचाष।

**पहचान** : बनसर्रा शोर मचाने वाली चंचल चिड़िया है। यह प्रायः गिरोह में रहती है और अपने काले चोटीदार सिर के कारण दूर ही से पहचान ली जाती है। पंख और दुम पर नीली और काली आड़ी धारियाँ रहती हैं।



बनसर्रा

**रंग-रूप** : यह लगभग १३ इंच का पक्षी है जिसके नर और मादा एक रंग-रूप के होते हैं। इसके सिर का अगला आधा हिस्सा काला होता है और ठोड़ी और गले का भाग भी काला ही रहता है, लेकिन उस पर काफी सफेद धारियाँ पड़ी रहती हैं। शरीर हलकी ललाई लिये सिलेटी रंग का रहता है। डैने काले होते हैं जिनपर आठ खड़ी, नीली लकीरें पड़ी रहती हैं, आगे की ओर एक चित्ता भी रहता है। दुम काली होती है जिसका सिरा सफेद रहता है और सारी दुम में नीली धारियाँ पड़ी रहती हैं। इसकी आंख की पुतली ललछौंह, चोंच सिलेटी और पैर भी सिलेटी होते हैं।

**निवास** : बनसर्रा हिमालय का निवासी है, जिसका क्षेत्र कश्मीर से नेपाल तक फैला है। यह पक्षी गर्मियों में ५,००० से ८,००० फुट की ऊँचाई और कभी-कभी १८,००० फुट पर भी रहता है, लेकिन जाड़ों के आने पर काफी नीचे तक उतर आता है। जाड़ों में हम इसे देहरादून में काफी संख्या में देख सकते हैं। इसका एक और निकट संबंधी पक्षी पहाड़ो में इसके साथ दिखाई देता है। उसके सिर का रंग काला नहीं रहता है और न उसके सिर पर चोटी ही दिखाई देती है। इसे खाकखर्रा (Nutcracker) कहते हैं।

**विवरण** : बनसर्रा चरखी आदि की तरह गिरोह में रहने वाला पक्षी है जिसका गिरोह चरखियों से कम शोर नहीं मचाता। लेकिन जोड़ा बाँध लेने पर इसे जैसे सारा शोर मचाना भूल जाता है और फिर तो यह अपने अंडे, बच्चों की रखवाली में ही सारा समय बिताता है। जाड़ों में तो इसका गिरोह ४,५ से बढ़ कर ४०-५० तक का हो जाता है।

बनसर्रा वैसे तो सर्वभक्षी पक्षी है, लेकिन इसका मुख्य भोजन हर तरह के कीड़े-मकोड़े हैं। यह पक्षी फल और गल्ला भी खा लेता है।

**घोंसला** : बनसर्रा के अंडे देने का समय अप्रैल से जून तक रहता है। तब नर और मादा जोड़ा बाँध कर गिरोह से अलग हो जाते हैं। इसके घोंसले पतली-पतली टहनियों के होते हैं, जिनकी शकल छिछले प्याले-जैसी होती है। इन घोंसलों को घास-फूस और सूखी जड़ों से मुलायम कर दिया जाता है। ये घोंसले किसी घनी झाड़ी या पेड़ पर जमीन से ३०-३५ फुट ऊपर रखे रहते हैं।

मादा एक बार में ४ से ५ तक अंडे देती है, जिनका रंग पत्थरी या उससे हलका रहता है। कभी-कभी ये हलके हरे और मूरापन लिये भी होते हैं। अंडों पर बहुत छोटी-छोटी हलके बादामी रंग की चित्तियाँ पड़ी रहती हैं। ये लगभग १.२ × ०.८५ इंच के होते हैं।

## ८ जाग (Red-billed Cough : Pyrrhocorase)

**पर्याय** : रक्त चंचु काक, सुवर्ण काक।

**पहचान** : यह रंग-रूप में कौए-जैसा होता है, लेकिन इसकी मीठी बोली और मूँगे के रंग के पैर तथा चोंच के कारण इसे अन्य कौओं से शीघ्र ही अलग पहचाना जा सकता है।



जाग

**रंग-रूप** : जाग कौए के बराबर का लगभग १७ इंच लम्बा पक्षी है, जिसके नर और मादा एक रंग-रूप के होते हैं। इसका सारा शरीर घुर काला होता है, जिस पर एक प्रकार की चमक-सी होती है।

इसकी चोंच मूँगे जैसे लाल रंग की और पैर गाढ़े मूँगे के रंग के होते हैं। आँख की पुतली गाढ़ी भूरी होती है।

**निवास** : जाग हिमालय का निवासी है। यह शिमला से भूटान तक फैला हुआ है। वैसे यह हमारे देश से बाहर बिलोचिस्तान तथा उसके भी आगे पूर्वी यूरोप तक पाया जाता है। यह ऊँचे पहाड़ों पर रहना ज्यादा पसन्द करता है और अक्सर १०,००० फुट से १२,००० फुट की ऊँचाई पर पाया जाता है। वैसे जाड़ों में यह ५,००० फुट नीचे उतर आता है।

**विवरण** : जाग काले रंग का होने पर भी बहुत सुन्दर पक्षी है और अन्य कौओं से इसके बदन की बनावट भी सुडौल रहती है। इसकी बोली भी और कौओं की तरह कर्कश नहीं होती, बल्कि उसे हम सुरीली ही कह सकते हैं।

अपने क्षेत्र में भी इनका बँटवारा समान नहीं है। कहीं तो इनके झुंड के झुंड दिखाई पड़ते हैं और कहीं इनकी बहुत कम संख्या दिखाई पड़ती है। कहीं ये दो-चार ही दिखाई पड़ेंगे तो कहीं इन्हें बिल्कुल ही नहीं देखा जा सकेगा। यह उड़ने में सब कौओं से उस्ताद होते हैं और इन्हें हम अक्सर हवा में ही ऊँची उड़ान भर कर मनोरंजक गिरहबाजी और खेल करते देख सकते हैं।

अन्य कौओं की भाँति जाग भी सर्वभक्षी पक्षी है, लेकिन यह कीड़े-मकोड़े के अलावा गल्ला भी काफी खाता है।

**घोंसला :** जाग के जोड़ा बाँधने और घोंसला बनाने का समय मार्च से मई तक है। ये अपना घोंसला पहाड़ की दरारों और सूराखों में बनाते हैं जहाँ किसी मनुष्य का पहुँचना सम्भव नहीं। कभी-कभी ये घरों के किसी सूराख में भी ऊन वगैरह रख कर छिछला घोंसला बना लेते हैं, जिसमें बैठ कर मादा अंडे देती है। वैसे इनके घोंसले मामूली टहनियों के होते हैं, जिनका भीतरी हिस्सा ऊन और बाल वगैरह से मुलायम बना लिया जाता है।

मादा एक बार में तीन-चार अंडे देती है जो अंडाकार होते हैं। नाप में ये १.७५ × १.२० इंच के होते हैं। इन अंडों का रंग सफेद रहता है जिसमें बहुत हलकी बादामी झलक रहती है। अंडों पर हलकी भूरी बैंगनी और सिलेटी चित्तियाँ और धारियाँ होती हैं।

## ९ राम गंगरा (Indian Grey Tit : Parus major)

**पर्याय :** भस्म बल्गुली।

**पहचान :** इस छोटी चिड़िया का ऊपरी हिस्सा निलछौंह सिलेटी और निचला सफेद रहता है। गरदन काली और गाल पर सफेद चित्ता रहता है, जिससे यह आसानी से पहचानी जा सकती है। यह प्रायः अकेली या जोड़े में अक्सर पेड़ों पर ही रहती है।



राम गंगरा

**रंग-रूप :** राम गंगरा ५ इंच की छोटी सी चिड़िया है जो कद में गौरैया के बराबर होती है। इसके नर और मादा में में कोई अन्तर नहीं होता। दोनों कान, सिर, सीना और गरदन चमकीले होते हैं और पेट के नीचे एक पट्टी रहती है, दोनों गालों पर एक-एक सफेद चौड़ा चित्ता रहता है और गुद्दी का हिस्सा कुछ सफेदी लिये रहता है। नीचे का हिस्सा काफी सफेद और ऊपर का कत्थई रहता है। डैनों के किनारे पर सफेद धारियाँ पड़ी रहती हैं। दुम काली और सिलेटी होती है और पैरों के किनारे सफेद होते हैं। आँख की पुतली गाढ़ी भूरी, चोंच काली और पैर गाढ़े सिलेटी रंग के होते हैं।

**निवास :** राम गंगरा हमारे देश में फैली हुई है। यह बहुत घने जंगलों को छोड़कर प्रायः सभी स्थानों पर देखी जा सकती है। पहाड़ों पर यह ९,००० फुट की ऊँचाई तक देखी जा सकती है। दूसरे देशों में भी राम गंगरा काफी संख्या में फैली हुई है। इसकी कई जातियाँ हमारे देश में पायी जाती हैं, जिनका रंग-रूप भिन्न होने पर भी आदतें एक-जैसी ही रहती हैं।

**विवरण :** राम गंगरा प्रायः अकेली या जोड़े में दिखाई पड़ती है, लेकिन कभी-कभी यह छोटे-छोटे गिरोह भी बना लेती है। यह बहुत प्रसन्न रहने वाली चिड़िया है जो खाने की तलाश में इधर-उधर फुदका करती है। यह वैसे तो पेड़ पर रहने वाली चिड़िया है, लेकिन इसे हम अंगूर आदि की झाड़ियों में और कभी-कभी जमीन पर भी देख सकते हैं।

राम गंगरा वैसे तो मैदानों में भी काफी संख्या में दिखाई पड़ती है, लेकिन इसे पहाड़ी चिड़िया कहना ही ज्यादा ठीक होगा। इसे ३,००० फुट की ऊँचाई और फूलों से भरे हुए जंगल बहुत ज्यादा पसंद हैं। यह वैसे तो यहाँ की बारहमासी चिड़िया है, लेकिन जोड़ा बाँधने के समय मैदानों की ओर चली जाती है। राम गंगरा का मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े हैं, लेकिन यह दाना और फल खूब मजे में खाती है।

**घोंसला :** राम गंगरा के अंडे देने का समय मार्च से जुलाई तक रहता है। इसी समय नर-मादा जोड़ा बाँध कर घोंसला बनाने की फिक्र में लग जाते हैं। मादा साल में दो बार अंडे देती है जो संख्या में ५-६ और नाप में ०.७१ × ०.५४ इंच के होते हैं। अंडों का रंग गुलाबीपन लिये सफेद रहता है जिन पर कत्थई व लाल और बैंगनी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं। पेंदे की ओर ये चित्तियाँ घनी हो जाती हैं।

## १० हरी गंगरा (Green-backed Tit : parus monticolus)

**पर्याय :** हरित्पृष्ठ बल्गुली।

**पहचान :** यह गंगरा से छोटी और चंचल होती है, जिसका



हरी गंगरा

ऊपरी हिस्सा हरा रहता है और निचला हिस्सा पीला। इसका रंग काला होता है और गाल पर सफेद चित्ता पड़ा रहता है।

**रंग-रूप** : हरी गंगरा भी राम गंगरा के बराबर होती है और इसके भी नर-मादा एक-जैसे होते हैं। इसका सारा सिर, गरदन, सीना चटक काला होता है और पेट के नीचे एक काली पट्टी होती है। राम गंगरा की तरह इसके भी दोनों गालों के ऊपर एक-एक सफेद चित्ते और गुद्दी सफेद मायल रहती है। नीचे का हिस्सा गाढ़ा पीला और ऊपर का धानी रहता है। दुमगाजा और डैने से दुम तक का रंग सिलेटी नीला रहता है और डैनों पर दो सफेद पट्टियाँ रहती हैं। आँख की पुतली भूरी, चोच काली और पैर सिलेटी रंग के होते हैं।

**निवास** : हरी गंगरा सारे हिमालय में कश्मीर से भूटान तक पायी जाती है, यह ४,००० से ८,००० फुट की ऊँचाई पर काफी संख्या में पायी जाती है।

**विवरण** : यह गंगरा राम गंगरा से बहुत कुछ मिलती-जुलती है और इसे घने जंगली मैदानों, खेतों और झाड़ियों से भरे मैदानों में काफी संख्या में देखा जा सकता है। यह वैसे तो पेड़ पर रहने वाली चिड़िया है, लेकिन इसे कभी-कभी भोजन की तलाश में जमीन पर भी देखा जा सकता है। राम गंगरा की तरह यह अक्सर अकेले या जोड़े में दिखाई पड़ती है, लेकिन कभी-कभी इसके झुंड भी दिखाई पड़ जाते हैं।

इसकी बोली मीठी तो नहीं कही जा सकती, लेकिन उसको कर्कश कहना भी ठीक न होगा। अन्य गंगरों की तरह यह भी टिस-टिस की तेज आवाज करती है जो सुरीली न होकर भी भली लगती है।

इसका मुख्य भोजन भी कीड़े-मकोड़े तथा फल-फूल हैं, साथ ही यह गल्ला और बीज भी मजे में खाती है।

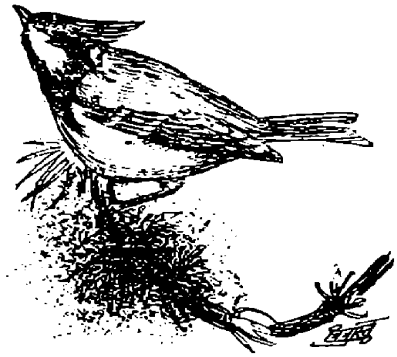
**घोंसला** : हरी गंगरा के घोंसला बनाने तथा अंडा देने का समय मार्च से जून तक है। यह अपना घास-फूस का भद्दा-सा घोंसला किसी दराज, पेड़ के नीचे, झाड़ी में या पेड़ की दोफंकी डाल पर रख देती है। ये घोंसले छिछले प्यालेनुमा होते हैं, जो भीतर से बाल, पर और ऊन से मुलायम कर दिये जाते हैं।

मादा समय आने पर ५ से ८ तक अंडे देती है, जिनका रंग सफेद रहता है। इन पर लाल कत्थई और भूरी बिन्दियाँ पड़ी रहती हैं, जो पेंदे की ओर अधिक घनी हो जाती हैं। अंडों की नाप ०.७२ × ०.५२ इंच होती है।

## ११ काली गंगरा (Crested Black Tit : Lophophanes melanolophus)

**पर्याय** : कृष्ण चूड़ा बलगुली।

**पहचान**: यह चोटीदार गंगरा अपनी खड़ी रहने वाली चोटी, गाल और गुद्दी पर के सफेद धब्बे तथा पखनियों पर की बिन्दियों की दुहरी धारियों से शीघ्र ही पहचान ली जाती है।



काली गंगरा

**रंग-रूप** : काली गंगरा राम गंगरा से कद में कुछ छोटी होती है, लेकिन अपनी तिकोनी चोटी के कारण उससे कहीं ज्यादा भड़कीली लगती है। इसकी ऊँचाई ४.३ इंच, दुम १.७ इंच, डैने २.५ इंच, टाँगें ०.६ इंच और चोंच ०.४ इंच की होती है।

काली या चोटीदार गंगरा के नर और मादा एक रंग-रूप के होते हैं। इसके गालों और गुद्दी पर के सफेद हिस्सों को छोड़ कर सारा सिर, चोटी, गरदन और सीना धुर काले रंग का होता है। ऊपर का हिस्सा कंजई या सिलेटी रहता है और डैनों पर ललछौंह बिन्दियों की दो आड़ी धारियाँ पड़ी रहती हैं। डैनों के छोटी पखनियों के सिरे सफेद रहते हैं। नीचे का हिस्सा सीने से नीचे की ओर सिलेटी रहता है और दुम के नीचे तथा पर के ऊपर कत्थई चित्ते पड़े रहते हैं। आँख की पुतली भूरी, चोंच काली तथा पैर बिल्कुल सिलेटी रंग के होते हैं।

**निवास** : काली गंगरा ने हिमालय के पश्चिमी भाग में अपना निवास-स्थान बना रखा है और उस ओर यह नैनीताल से लेकर मरी तक ६,००० फुट से १२,००० फुट की ऊँचाई पर काफी संख्या में पायी जाती है। जाड़ों में यह और नीचे उतर आती है, लेकिन इसे मैदान में देख पाना संभव नहीं है।

**विवरण** : काली गंगरा को पहाड़ी पक्षी कहना ठीक ही होगा; क्योंकि यह मैदानों की ओर भूले-भटके भी नहीं आती। पहाड़ों पर इसे हम काफी संख्या में देख सकते हैं और नुकीली चोटी के कारण आसानी से पहचान भी सकते हैं। यह दिन-भर भोजन की तलाश में इधर-उधर मारी-मारी फिरती है और कभी इस झाड़ी में तो कभी उस झुरमुट में चक्कर ही लगाती दीखती है।

काली गंगरा वैसे अकेली ही रहती है, लेकिन जाड़ों में यह ४० से ५० के झुंड में भी दिखाई पड़ती है। यह बहुत ही चंचल पक्षी है, जिसे हम देखते नहीं थकते, लेकिन जाड़ों में जोड़ा बाँध लेने पर इसकी चंचलता बहुत कुछ कम हो जाती है और यह

किसी डाल पर बैठ कर टी-टुट, टी-टुट की बोली बोलती दिखाई पड़ती है ।

काली गंगरा का मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े हैं ।

**घोंसला** : काली गंगरा का जोड़ा बाँधने का समय मार्च से जून तक रहता है, जब यह किसी ऊँचे या पेड़ पहाड़ के किसी सूराख में बाल, ऊन या परों का मुलायम घोंसला बना कर ६ से ८ तक अंडे देती ।

इसके अंडें गुलाबीपन लिये सफेद रहते हैं, जिन पर चटक कत्थई चित्तियाँ पड़ी रहती हैं । अंडों की लम्बाई लगभग ०.६१ इंच तथा चौड़ाई ०.४७ इंच रहती है ।

## १२ पीली गंगरा (Yellow-cheeked Tit : Machlolophus xanthogenys)

**पर्याय** : पीत-कपोल बलगुली ।

**पहचान** : यह गंगरा अपनी उठी हुई काली चोटी और हरे पीले रंग के कारण कहीं छिपी नहीं रह सकती । इसका ऊपरी हिस्सा हरा, गाल का पीला और नीचे का काला रहता है । यह घने जंगलों में और हमेशा पेड़ों पर ही रहती है ।

**रंग-रूप** : पीली गंगरा भी, कद में करीब-करीब राम गंगरा के बराबर ५ इंच की चिड़िया होती है । इसके नर और मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं । इसकी दुम २.३ इंच, डैने २.८ इंच, टाँगें ०.७ इंच और चोंच ०.५ इंच की होती है । इसका निचला हिस्सा और चोटीदार सिरा काले रंग का होता है, लेकिन दोनों बगल और गालों का हिस्सा हल्दी जैसा पीला रहता है । ऊपर का हिस्सा धानी रंग का रहता है, लेकिन डैने काले रंग के होते हैं, जिनमें कुछ परों के किनारे कंजई या सफेद रहते हैं । इसकी दुम काली रहती है जिसके दोनों किनारे सफेद रहते हैं ।

**निवास** : पीली गंगरा भी पहाड़ी पक्षी है, जो जाड़ों में भले ही मैदानों की ओर चला आता है, लेकिन गर्मियों में इसे हिमालय के ४,००० से ७,००० फुट तक के ऊँचे प्रदेशों में ही देखा जा सकता है । इसका क्षेत्र कश्मीर के पूर्वी हिस्से से लेकर नेपाल तक माना जाता है । इसी में इसकी तीन जातियाँ पायी जाती हैं जिनमें थोड़ा-थोड़ा भेद होता है ।

**विवरण** : पीली गंगरा हमारी परिचित चिड़ियों में से एक है, जो हमें अक्सर पहाड़ों पर ही दिखाई पड़ती है । यह वैसे तो अकेली रहती है, लेकिन जोड़ा बाँधने का समय आने पर हम इसे छोटे-छोटे गिरोहों में भी देख सकते हैं ।

यह हमारे यहाँ की बारहमासी चिड़िया है, जो जमीन पर बहुत कम उतरती है और अपना अधिक समय पेड़ो पर ही बिताती है । इसकी आदतें बहुत कुछ अन्य गंगरों से मिलती-जुलती होती हैं ।

पीली गंगरा का मुख्य भोजन तो कीड़े-मकोड़े हैं, लेकिन यह फल-फूल भी नहीं छोड़ती ।

**घोंसला** : पीली गंगरा के जोड़ा बाँधने और अंडा देने का मुख्य समय अप्रैल से मई तक है । तब यह किसी पेड़ या मकान के सूराख में भद्दा सा लेकिन ऊन, पर और बाल आदि का मुलायम घोंसला बनाती है जिसमें मादा ४–५ अंडे देती है । इन अंडों का रंग सफेद रहता है जिन पर ईंट सी ललछौंह चित्तियाँ पड़ी रहती हैं । नाप में ये अंडे ०.७० इंच लम्बे तथा ०.५२ इंच चौड़े होते हैं ।

## १३ ललसिरी गंगरा (Red-headed Tit : Aegithaliscus Concinnus)

**पर्याय** : रक्तशीर्ष बलगुली ।

**पहचान** : यह छोटी-सी गंगरा गिरोह बाँध कर घने पेड़ों और झाड़ियों में रहती है और अपनी तेज चहचहाहट से जंगल को गुलजार किये रहती है । लम्बी दुम और सिर पर की सफेद कत्थई धारियों के कारण इसको पहचानना कठिन नहीं होता ।



**ललसिरी गंगरा**

**रंग-रूप** : ललसिरी गंगरा दूसरी गंगराओं से कद में कुछ छोटी होती है । इसके नर और मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं, जिनके दोनों गालों पर काले चित्ते रहते हैं, सिर कत्थई और ठोड़ी सफेद रहती है और आँख के ऊपर से एक सफेद चन्द्राकार पट्टी चली जाती है । नीचे का हिस्सा मोर्चे के रंग का होता है । दुम तक का ऊपरी हिस्सा निलछौंह सिलेटी होता है । डैने भी इसी रंग के होते हैं । दुम के बाहरी परों पर सफेदी पड़ी रहती है ।

आँख की पुतली पीली और चोंच काले रंग की होती है । पैर मटमैले पीले रंग के होते हैं ।

**निवास** : ललसिरी गंगरा ने भी अपना निवास-स्थान हिमालय में चुना है । इसका क्षेत्र कश्मीर से बर्मा तक ही नहीं, चीन के कुछ हिस्सों तक माना जाता है । वहाँ यह ६,००० से १२,००० फुट की ऊँचाई तक पायी जाती है । इसकी भी कई

जातियाँ मिलती हैं और भिन्न-भिन्न स्थानों की जातियों के रंग-रूप में थोड़ा-बहुत भेद भी रहता है।

**विवरण** : ललसिरी गंगरा को पहाड़ी पक्षी ही कहना ठीक होगा, क्योंकि यह तराई के हिस्सों में आकर भी मैदानों में नहीं उतरती। इसे अकेला रहना बहुत पसन्द है, लेकिन जोड़ा बाँधने का समय आने पर यह छोटे-छोटे गिरोहों में भी देखी जा सकती है। कभी-कभी इसे दूसरे पक्षियों के गिरोहों में भी देखा जा सकता है।

ललसिरी गंगरा बहुत ही चंचल पक्षी है, जिसे जमीन पर उतरना पसंद नहीं। इसलिए हम इसे दिन भर एक डाली से दूसरी डाली पर फुदकते देखते हैं। चंचलता के साथ-साथ यह शोर भी मचाती है और इसकी कर्कश बोली से कभी-कभी जी ऊब जाता है। यह हमारे यहाँ की बारहमासी चिड़िया है जो हमारे देश को छोड़ कर बाहर कहीं नहीं जाती।

ललसिरी गंगरा का मुख्य भोजन तो कीड़े-मकोड़े हैं, लेकिन यह फल-फूल और बीज आदि भी बड़े मजे से खाती है।

**घोंसला** : ललसिरी गंगरा के घोंसला बनाने और अंडा देने का समय मार्च से अप्रैल तक होता है। समय आने पर इसका घास-फूस और जड़ों का छोटा-सा गोल घोंसला बन जाता है जो पर और रुई आदि से मुलायम बना दिया जाता है। मादा इसमें बैठ कर चार से आठ तक अंडे देती है, जो हलके गुलाबी या संदली रंग के होते हैं और जिनके पेंदे के पास ललछौंह चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

इन अंडों की नाप लगभग ०.५६ × ०.४५ इंच होती है।

## १४ ललपेटी कठफोरिया (Chestnut-bellied Nuthatch : Sitta castanea)

**पर्याय** : ललखैरी कठफोरिया, पीत रक्तोदर शिलीन्ध्री, सिरी, चोर पड़की।

**पहचान** : इस लम्बी और नुकीली चोंच वाली चिड़िया का ऊपरी हिस्सा निलछौंह और निचला कत्थई रहता है। यह पेड़ों पर से कभी जमीन पर नहीं उतरती और दिन भर उसी तने पर ऊपर से नीचे तक दौड़ लगाया करती है।

**रंग-रूप** : इस कठफोरिया को खैरी कठफोरिया भी कहते हैं, क्योंकि इसका ऊपरी हिस्सा सिलेटी मायल नीला और नीचे का हिस्सा खैरा रहता है, इसकी चोंच से लेकर नीचे का हिस्सा खैरा रहता है। इसकी चोंच से दोनों ओर एक-एक काली पट्टी आँख पर होते हुए कंधे तक चली जाती है। आँख के नीचे से लेकर गले का निचला हिस्सा सफेद रहता है। दुम के बीच के पर राखीपन लिये रहते हैं, बाद के सब पर सफेद और डैने के नीचे का हिस्सा काला होता है, जिसमें एक सफेद चित्ता रहता है।

मादा में नर से थोड़ा ही फर्क रहता है। उसके नीचे का रंग कत्थई न होकर बादामी रहता है और गाल के पास की सफेदी नर की तरह स्पष्ट नहीं होती।

इस कठफोरिया की लम्बाई ५ इंच, दुम १.५ इंच, डैने ३ इंच, टाँगें ०.७ इंच और चोंच ०.५५ इंच होती है।

इसकी आँख की पुतली गाढ़ी भूरी और काली और पैर हरापन लिये सिलेटी रंग के होते हैं।

**निवास** : यह छोटी-सी कठफोरिया सारे भारत में फैली हुई है और अलग-अलग स्थानों पर रहने से इसके रंग-रूप में पड़ने वाले फर्क के कारण इसकी कई जातियाँ मान ली गयी हैं। मुख्य जाति हिमालय की तराई से नीलगिरि तक और अम्बाला से राजमहल की पहाड़ियों के बीच पायी जाती है। यह हमारे यहाँ की बारहमासी चिड़िया है जो हमारे देश से बाहर नहीं जाती।

**विवरण** : यह कठफोरिया हमारी बहुत परिचित चिड़िया है, जिसे हम कभी-कभी अपने बाग-बगीचों में पेड़ की डालियों पर गिलहरी की तरह ऊपर-नीचे आते-जाते देखते हैं। पेड़ के तनों पर यह इस आसानी से इसलिए घूमती है कि इसके पंजे का पिछला अँगूठा काफी बड़ा होता है जो इसके शरीर का संतुलन बनाए रखने में मदद देता है। यह दिन-भर पेड़ पर बेकार ही चक्कर नहीं लगाती, बल्कि इसकी यह दौड़-धूप कीड़ों की तलाश के लिए होती है, जो पेड़ के तनों की पपड़ियों में घुसे रहते हैं। अपनी नुकीली चोंच से यह पेड़ के तनों में से कीड़ों को पपड़ियों से बाहर निकाल कर अपना पेट भरती है। यह कठफोरिया जमीन पर नहीं उतरती और अपना सारा समय पेड़ों पर ही बिताती है। पेड़ों पर भी यह अक्सर चोटी की ही ओर रहती है, लेकिन जब यह अपनी चोंच से कठफोर की तरह लकड़ी को ठोंक-ठोंक कर कीड़ों को पपड़ियों से बाहर निकालती है तो इसकी मौजूदगी का पता लग ही जाता है।

इस कठफोरिया का भी मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े हैं, जो इसे पेड़ की पपड़ियों में काफी संख्या में मिल जाते हैं और जिन्हें यह कठफोर की तरह ठोंक-ठोंक कर बाहर निकाल लेती है।

**घोंसला** : इस कठफोरिया के जोड़ा बाँधने और घोंसला बनाने का समय मई से जून तक है, लेकिन इसकी जो जाति दक्षिण भारत की ओर है वह दो-तीन महीने पहले ही अपना घोंसला बना लेती है। यह भी दूसरी कठफोरिया की तरह पेड़ के किसी खोखले के बजाय कठफोर या किसी अन्य पक्षी का पुराना घोंसला तलाश करके उसी में अपना घोंसला बना लेती है। खोखले को भीतर से पर, काई और रुई आदि से मुलायम कर लिया जाता है। मादा इसी में अंडे देती है जो अंडाकार होते हैं।

इन अंडों का रंग सफेद होता है, जिन पर पेंदे की ओर ललछौंह बैंगनी चित्ते पड़े रहते हैं। ये अंडे लगभग ०.६५ × ०.५० इंच के होते हैं।

## १५ निलछतो कठफोरिया (Velvet-fronted Nuthatch : Sitta Frontalis)

**पर्याय** : नील शिलीन्ध्री, नीली कठफोरिया।

**पहचान** : इस कठफोरिया का ऊपरी रंग नीला और निचला हिस्सा सिलेटी बैंगनी रहता है। माथे पर एक चौड़ी काली मखमली आड़ी पट्टी रहती है। चोंच मूंगे के रंग की, लम्बी और नुकीली रहती है।

**रंग-रूप** : यह ५ इंच लम्बी कठफोरिया नीली कठफोरिया के नाम से प्रसिद्ध है; क्योंकि इसका ऊपरी हिस्सा तो नीला रहता ही है, निचला हिस्सा भी सिलेटी मायल बैंगनी रहता है। इसकी दुम १.५, डैने २.९ टाँगें ०.७ और चोंच ०.७५ इंच की होती है।

नर की पीठ नीली और डैने नीले तथा काले रहते हैं। दुम के बीच के पर नीले और बाकी सब कलछौंह रहते हैं, जिनके सिरे नीले रहते हैं। ठोड़ी और गला सफेद-मायल रहता है। इसकी चोंच की जड़ के पास से माथे तक एक आड़ी चौड़ी काली मखमली पट्टी रहती है। आँख के ऊपर भी एक पतली काली पट्टी रहती है। मादा बहुत कुछ नर से मिलती-जुलती होती है। उसकी आँख के ऊपर काली पतली पट्टी नहीं रहती।

इसकी आँख की पुतली पीली, चोंच मूंगे के रंग की और पैर भूरे रहते हैं। पैरों में नारंगी झलक रहती है।

**निवास** : इसकी दो जातियाँ हमारे यहाँ पायी जाती हैं। एक, जो कद में बड़ी रहती है, हमारे देश के दक्षिणी भागों में फैली हुई है। यह मध्य भारत से दक्षिण की ओर काफी संख्या में दिखाई पड़ती है और पूर्वी और पश्चिमी घाट के जंगलों और नीलगिरि के पहाड़ों पर काफी संख्या में पायी जाती है।

दूसरी, छोटी जाति हिमालय के पूर्वी हिस्सों में फैली हुई है। इसे हम तराइयों से लेकर २५०० फुट तक देख सकते हैं।

**विवरण** : इस कठफोरिया की आदतें बहुत कुछ ललपेटी कठफोरिया से मिलती-जुलती होती हैं। यह भी उसी की तरह बहुत चंचल चिड़िया है जो थोड़ी देर भी एक स्थान पर स्थिर नहीं रहती और दिन भर अपनी खूराक के लिए पेड़ के तनों का चक्कर लगाती रहती है। यह कभी तो अकेली ही रहती है लेकिन कभी-कभी हम एक साथ कई कठफोरियोंको एक ही पेड़ पर देखते हैं। इसको ज्यादा घने जंगल पसंद नहीं हैं, बल्कि यह ज्यादातर तितरे-बितरे जंगलों में ही दिखाई देती है। यह अक्सर सूखे पेड़ों को ज्यादा पसंद करती है, जिनकी सूखी पपड़ियों में कीड़े-मकोड़े काफी रहते हैं।

इस कठफोरिया का भी मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े हैं जो इसे पेड़ की पपड़ियों में से मिलते हैं, यह उन्हें कठफोर की तरह ठोंक-ठोंक कर बाहर निकालती रहती है।

**घोंसला** : इस कठफोरिया के जोड़ा बाँधने और घोंसला बनाने का समय मई से जून तक है। लेकिन इसकी जो जाति दक्षिण भारत की ओर रहती है वह दो-तीन महीने पहले ही अपना घोंसला बना लेती है। यह भी दूसरी कठफोरियों की तरह पेड़ के किसी खोये में अपना घोंसला बनाती है, लेकिन कभी-कभी किसी दूसरी कठफोरिया के घोंसले पर भी अपना अधिकार जमा बैठती है। खोये को भीतर से पर, काई और रुई आदि लगा कर यह मुलायम बना लेती है। मादा इसी में तीन से पाँच तक अंडे देती है जो अंडाकार होते हैं।

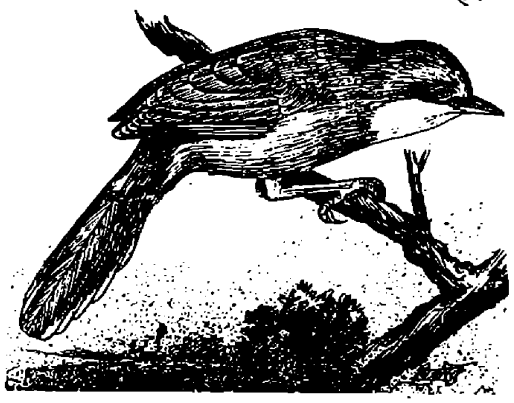
इन अंडों का रंग सफेद होता है जिन पर पेंदे की ओर ललछौंह बैंगनी चित्ते पड़े रहते हैं।

ये अंडे लगभग ०.६५ × ०.५० इंच के होते हैं।

## १६ सितकंठी चिलचिल (White-throated Laughing Thrush : Garrulose alboqularis)

**पर्याय** : श्वेतकंठ वाक्कार ।

**पहचान** : यों तो प्रायः सभी चिलचिलें शोर मचाने वाली होती हैं और घने जंगलों में गिरोह बाँध कर रहती हैं, पर इस सिलेटी-भूरी चिलचिल को इसकी ठोड़ी और गले पर के सफेद हिस्सों से बड़ी आसानी से पहचाना जा सकता है।



सितकंठी चिलचिल

**रंग-रूप** : यह चिलचिल लगभग १२ इंच की होती है और नर-मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। दुम ५.७, डैने ५.३, टाँगें १.७ और चोंच १.३ इंच की होती है। इसका ऊपरी हिस्सा राखी-भूरा होता है और आँख के नीचे काली पट्टी होती है। गला और सीना सफेद रहता है और उसके नीचे का हिस्सा ललछौंह रहता है। दुम गोलाई लिये रहती है जिसका पीछे का किनारा सफेद रहता है।

आँख की पुतली निलछौंह सिलेटी, चोंच काली और पैर गाढ़े सिलेटी रहते हैं।

**निवास** : यह चिलचिल हमारे देश में कश्मीर से सिक्किम

तक ९,००० फुट तक की ऊँचाई पर पायी जाती है। इसकी एक और भी जाति है जो मसूरी, शिमला और नैनीताल तक फैली हुई है। यह हमारे देश की बारहमासी चिड़िया है, जो देश छोड़ कर बाहर नहीं जाती। इसकी एक जाति दक्षिणी भारत की ओर भी है, जिसका निवास-स्थान उत्तरी कन्नड़ प्रदेश से केरल तक है।

**विवरण**: इस चिलचिल का कद सब चिलचिलों से बड़ा होता है। इसे घने और सुनसान जंगल ज्यादा पसंद हैं, जहाँ यह बड़े-बड़े गिरोह बना कर रहती है। इसे अपना स्थान इतना पसंद होता है कि यह थोड़ा-सा भी स्थान परिवर्तन नहीं करती। घने जंगलों में हम इसे जमीन पर देख सकते हैं, जहाँ यह सूखी पत्तियों पर से कीड़े-मकोड़े खाती रहती है। वैसे यह अपना काफी समय पेड़ों पर बिताती है जिनके तने और डालियों पर जमी हुई काई को खोद कर यह कीड़े पकड़ती है। वैसे भी यह बहुत शोर मचाने वाली चिड़िया है, पर जब यह भोजन की तलाश में रहती है तो इसका शोर और बढ़ जाता है। शायद इसी कारण इसको चिलचिल कहा जाता है।

इसका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े हैं, जिनको यह जंगल में पपड़ियों के नीचे तथा इधर-उधर से प्राप्त करती है।

**घोंसला**: इस चिलचिल का अंडे देने का समय अप्रैल से जून तक रहता है, जब कि मादा घास-फूस से एक बड़ा कटोरेनुमा घोंसला बना कर उसमें २ से ४ तक अंडे देती है। घोंसला पत्तियों और जड़ों से मुलायम बना लिया जाता है। ये घोंसले किसी झाड़ी या नीचे पेड़ पर प्रायः ३ से १० फुट की ऊँचाई पर बने होते हैं।

चिलचिल के अंडे काफी नुकीले और अंडाकार रहते हैं और उन पर चमक भी काफी रहती है। ये गाढ़े नीले रंग के होते हैं जिनमें कभी-कभी हरेपन की झलक आ जाती है। इनका रंग बाकी चिलचिलों के अंडों से गहरा होता है और उसपर किसी प्रकार की चित्तियाँ और धारियाँ नहीं होतीं।

अंडों की लम्बाई १.२४ × ०.८३ इंच के लगभग होती है।

## १७ ललसिरी चिलचिल (Red-headed laughing Thrush : Trochalopteron erythrocephalum)

**पर्याय**: रक्तशीर्ष वाक्कार।

**पहचान**: यह चिलचिल अपने कत्थई सिर और गुद्दी के कारण और चिलचिलों से अलग ही रहती है। इसके गले पर बिन्दियाँ पड़ी रहती हैं, जिससे इसको पहचानने में कठिनाई नहीं होती। अन्य चिलचिलों की भाँति यह गिरोह तो बाँधती है लेकिन शोर नहीं मचाती।

**रंग-रूप**: यह चिलचिल सितकण्ठी चिलचिल से कद में कुछ छोटी होती है। इसकी लम्बाई ११ इंच, दुम ४.८, टाँगें १.५ और चोंच १.१ इंच की होती है। इसके नर और मादा एक-जैसे होते हैं। इसके सिर का ऊपरी हिस्सा कत्थई और बगल का काला होता है। गला भी काला ही होता है, जिसमें नीचे और आँख के पीछे का सारा हिस्सा कत्थई रहता है। ऊपरी हिस्सा भूरा रहता है जिसमें कंधे पर कुछ काले से निशान रहते हैं। दुमगज़ा सिलेटी होता है। दुम राखी-रंग की, जिसके पिछले किनारे मैले पीले रंग के होते हैं। डैने पर एक चटक कत्थई आड़ी लकीर पड़ी रहती है और उसके पीछे एक लाल चित्ता रहता है। इसकी दुम काफी लम्बी होती है।

आँख की पुतली हलकी भूरी, चोंच काली और पैर हलके भूरे रंग के होते हैं।

**निवास**: यह सुन्दर पक्षी हमारे देश में चम्बा से नैनीताल में ७,००० फुट की ऊँचाई तक मिलता है, जहाँ स्थानीय रूप से इसकी कई जातियाँ पायी जाती हैं। जाड़े में यह चार हजार फुट तक उतर आता है।

**विवरण**: यह चिलचिल हमारी उन परिचित चिड़ियों में से है, जिसे घने जंगल पसंद हैं। यह बहुत शरमीली चिड़िया है, इसलिए जल्द नजर नहीं आती, लेकिन पपीहे-जैसी सुरीली बोली से इसका पता बड़ी आसानी से लग जाता है। जोड़ा बाँधने के समय इसकी बोली खूब सुनाई पड़ती है, लेकिन जाड़ा आने पर यह बोलना बंद कर देती है। उस समय यह चरखियों की तरह की कर्कश और बहुत भद्दी बोली बोलने लगती है। यह चिड़िया मैदानों में बहुत कम आती है, इसका ज्यादा समय घने जंगलों में इधर-उधर कीड़े-मकोड़ों की खोज में ही बीतता है।

अन्य चिलचिलों की भाँति इसका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े है।

**घोंसला**: इसके अंडा देने का समय मई से जुलाई तक होता है। तब यह किसी नीची डाल या झाड़ी में सूखी पत्तियों पर बड़ा अच्छा घोंसला बनाती है जिसे यह घास और जड़ों से लपेट कर काफी मज़बूत बना लेती है। भीतरी हिस्से को मुलायम घास और जड़ों से नरम बना लिया जाता है। मादा इस घोंसले में दो से चार तक अंडे देती है, जो बहुत कम चमक वाले और काफी नुकीले होते हैं; साथ ही अंडाकार भी होते हैं। इनका रंग हरापन लिये हलका नीला रहता है। इनपर नीचे की ओर कत्थई रंग की चित्तियाँ और लकीरें पड़ी रहती हैं। अंडे लगभग १.२ × ०.८२ इंच के होते हैं।

## १८ सतरंगी चिलचिल (Variegated Laughing Thrush : Trochalopteron Variegatum)

**पर्याय**: चित्रतनु वाक्कार।

**रंग-रूप**: लम्बाई ११ इंच। नर-मादा एक-जैसे। माथे का रंग ललछौंह भूरा। ऊपरी भाग जैतूनी भूरा। चेहरे के दोनों

भाग काले, आँख के पीछे कुछ सफेदी, ठुड्डी और गले का रंग नारंगी-भूरा जो नीचे की ओर काला। निचला भाग ऊपरी जैसा लेकिन उससे हलका। डैनों पर काले, सफेद, खाकी और सुनहरे पीले और लाल चित्ते।

दुम लम्बी और भूरी। दुम के परों के बीच के चार जोड़ों का चौथाई हिस्सा काला, अन्य परों का भीतरी भाग और बाहरी ललछौंह और पीला।

आँख की पुतली हलकी हरी, चोंच काली, पैर हलके भूरे और पंजे धुमैले।

**पहचान**: यह हिमालय के जंगली क्षेत्रों में पायी जाती है और इसको इसके चेहरे के काले और सफेद चिह्नों के कारण पहचानना कठिन नहीं होता। यह शर्मीला और चालाक पक्षी है जो बहुत शोर करता है। यह झुंडों में रहता है।

**निवास**: सतरंगी चिलचिल हिमालय में चित्राल और गिलगिट से नेपाल तक पायी जाती है। इसकी दो जातियाँ होती हैं। इन दोनों जातियों का मिलन-स्थान चम्बा और धरमशाला के पास है। पूर्व में एक और जाति होती है जो शिमला में आम-तौर से पायी जाती है। इसके डैनों का बाहरी भाग और दुम के पर बहुरंगी होते हैं। इन रंगों में चटक सुनहरे पीले और लाल रंग का मेल रहता है। सतरंगी चिलचिल जंगलों में रहना अधिक पसन्द करती है, यह अपना जोड़ा ६,००० और ११,००० फुट की ऊँचाई वाले क्षेत्रों में बाँधती है। यह प्रवास-गमन नहीं करती, किन्तु जाड़े में ऊँचाई से थोड़ा नीचे आ जाती है और उस समय इसे ४,००० फुट के क्षेत्रों में देखा जा सकता है।

**विवरण**: ढलुवा पहाड़ी स्थानों में जहाँ घनी झाड़ियाँ होती हैं, इस चिलचिल को रहना बहुत अच्छा लगता है। घने स्थान इसे और भी पसंद हैं। ऐसे स्थानों पर सतरंगी चिलचिल छोटे-छोटे समूहों में और कभी-कभी बीस-बीस के झुंडों में पायी जाती है। इसके शोर से इसे पहचाना जा सकता है।

वैसे तो यह हिम्मती चिड़िया होती है, किन्तु जैसे ही इसे किसी की उपस्थिति का आभास हो जाता है, यह बहुत शर्मीली हो जाती है और फुरती से किसी घनी झाड़ी में छिप जाती है। कभी-कभी यह चुपचाप किसी पेड़ की चोटी पर अपने को छिपा लेती है। यह जमीन पर झाड़ियों के पास उतरती है, पर कभी-कभी। इसका मुख्य भोजन फल, बेर और कीड़े हैं।

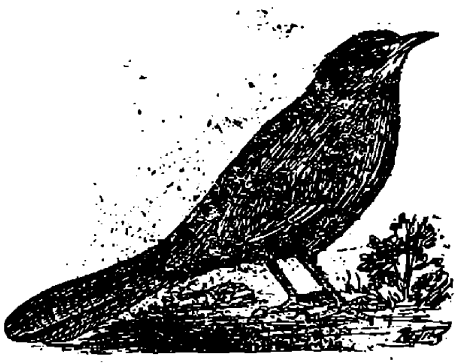
**घोंसला**: इसके जोड़ा बाँधने का समय अप्रैल से जुलाई तक होता है और यह प्रायः मई व जून में अंडे देती है। इसका घोंसला बड़ा और गहरे प्याले की तरह होता है जो मोटी घास, सूखे रेशों और सूखी पत्तियों से बना होता है। इसके भीतरी भाग में नरम घास, जड़े और चीड़ की सुइयाँ लगी होती हैं। यह किसी झाड़ी या फर आदि के पेड़ के ऊपर रखा रहता है जो जमीन से काफी ऊँचा होता है। नर-मादा दोनों ही अंडों को सेते हैं।

इनके अंडों की संख्या दो-तीन होती है जो अण्डाकार लम्बे और चमकदार होते हैं। ये पिलछौंह-नीले होते हैं जिन पर गाढ़े लाल, भूरे और बैंजनी रंग के धब्बे और चित्तियाँ पड़ी होती हैं। अंडों की लम्बाई-चौड़ाई १.११ × ०.७८ इंच होती है।

## १९ चितली चिलचिल (Streaked Laughing Thrush : Trochalopteron Lineatum)

**पर्याय**: डोरिया चिलचिल, रेखी वाक्कार।

**पहचान**: यह चिलचिल हमारे गाँवों और बगीचों में अक्सर दिखाई पड़ती है और अपने धारीदार कत्थई रंग से आसानी से पहचानी जाती है। इसके सिर का रंग हलका राखी होता है, जिस पर कलछौंह धारियाँ पड़ी रहती हैं। यह एक जगह पर स्थिर नहीं रहती और अपनी भद्दी पूँछ हिलाती हुई झाड़ियों में इधर-उधर घूमती फिरती है।



चितली चिलचिल

**रंग-रूप**: इस छोटी-सी चिड़िया की लम्बाई ८ इंच होती है। इसकी दुम ३ इंच, डैने ३.१ इंच, टाँगें १.६ इंच और चोंच ०.९ इंच की होती है। यह चिलचिल भी पहाड़ों पर रहने वाली चिड़िया है जो हमारे देश में जहाँ-तहाँ फैली हुई है। यह भी चरखियों की तरह हमारी बहुत परिचित चिड़िया है। इसके नर-मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। इसके बदन का रंग कत्थई होता है जिस पर गाढ़ी कत्थई लकीरें पड़ी होती हैं। डैने, दुम और कान के ढकने कत्थई रंग के होते हैं। दुम पर भी कत्थई चित्तियाँ पड़ी रहती हैं और किनारे का हिस्सा सफेद होता है।

इसकी आँख की पुतली भूरी, चोंच कलछौंह और पैर हलके भूरे होते हैं।

**निवास**: यह हिमालय में कश्मीर से नेपाल तक बहुतायत से फैली हुई है। यों तो भौगोलिक दृष्टि से इसकी ५ जातियाँ कर दी गयी हैं, लेकिन उनमें कोई खास भेद नहीं होता। यहाँ जिस पक्षी का वर्णन किया जा रहा है, वह हमारा बहुत परिचित पक्षी है और इसे हम नैनीताल और अल्मोड़े में भी देख सकते हैं। यह हमारे देश की बारहमासी चिड़िया है जो जाड़ों में एक

हजार फुट नीचे तक उतर आती है और गर्मियों में फिर ऊपर चली जाती है।

**विवरण**: इस चिलचिल को पहाड़ों पर देख पाना बहुत आसान है, जहाँ यह झाड़ियों और रास्तों पर अकेली या चार-पाँच के गिरोहों में अक्सर दिखाई पड़ती है। यह अपना ज्यादा समय जमीन पर ही बिताती है और रहने के लिए ऐसा स्थान ढूंढ़ती है जहाँ खूब घनी झाड़ी हो। इसे ऊँचे पेड़ों पर बैठना ज्यादा पसंद नहीं है, यहाँ तक कि यदि इसे एक पेड़ पर से दूसरे पेड़ पर जाना भी होता है, तो यह उसपर उड़ कर जाने के बजाय जमीन पर उतर आती है और फुदक-फुदक कर उसकी जड़ तक पहुँच जाती है। चरखियों की तरह यह भी ढीठ होती है और बहुत निकट जाने पर ही अपनी जगह पर से हटती है। इसे हम अक्सर बाग-बगीचों और मकान के हातों में देख सकते हैं। इसका सारा समय भोजन की तलाश में घनी झाड़ियों और पेड़ों की निचली डालों पर चक्कर लगाने में बीतता है। इसकी बोली बहुत कर्कश होती है; लेकिन जोड़ा बाँधने के समय यह एक प्रकार की सुरीली बोली बोलती है जिसे पहाड़ के रहने वाले अच्छी तरह पहचानते हैं।

अन्य चिड़ियों की भाँति इसका मुख्य भोजन भी कीड़े-मकोड़े है, साथ ही यह फल भी खा लेती है।

**घोंसला**: इसका घोंसला बनाने का समय वैसे तो मार्च से सितम्बर तक है, लेकिन ज्यादातर घोंसले मई और जून के बीच ही पाये जाते हैं। इसका कारण यह है कि यह साल में दो बार अंडे देती है। यह अपने घोंसले ज्यादा ऊँचाई पर नहीं बनाती और उनकी बनावट ऐसी भद्दी होती है कि उनको तलाशने में दिक्कत नहीं पड़ती। यह घोंसले सूखी घास और पत्तियों से बनाती है जिनको पतली जड़ से लपेट कर मजबूत बना लेती है। ये गोल और कटोरेनुमा होते हैं, इनका भीतरी हिस्सा नरम घास आदि लगा कर मुलायम बना लिया जाता है। घोंसले जमीन से ४-५ फुट ऊपर किसी झाड़ी या ऐसे पेड़ पर बनाये जाते हैं जो चारों तरफ से झाड़ियों से घिरा हो। कोयल और पपीहे अक्सर इसी चिल-चिल के घोंसले में अपने अंडे दे आते हैं। यह चिलचिल प्रायः तीन अंडे देती है, जिनमें थोड़ी चमक भी रहती है। इनका रंग हरापन लिये नीला रहता है और नाप में ये लगभग १.०० × ०.७३ इंच होते हैं।

## २० पहाड़ी चिलचिल (Nilgiri Laughing Thrush : Trochalopteron Cachinnans)

**पर्याय** : नीलगिरि वाक्कार।

**पहचान** : केवल नीलगिरि में पायी जाने वाली और बहुत शोर मचाने वाली चिलचिल जो गिरोहों में ही देखी जाती है। इसका ऊपरी भाग जैतूनी भूरा और निचला भाग ललछौंह भूरा रहता है।

**रंग-रूप** : यह चिलचिल ९ इंच की होती है, जिसके नर-मादा एक ही जैसे रहते हैं। इसकी आँखों पर होती हुई एक सफेद पट्टी चली जाती है जिसके ऊपर नीचे एक-एक काली रेखा रहती है। इसका ऊपरी भाग, डैने और दुम जैतूनी-भूरी रहती है। चोटी पर काले मेहर जैसे चिह्न और सिर के पीछे का भाग राखी रहता है। नीचे का सारा हिस्सा ललछौंह भूरा होता है। आँख की पुतली लाल, चोंच और पैर काले रहते हैं।

**निवास**: नीलगिरि की यह बारहमासी चिड़िया है, जो स्थायी रूप से वहीं रहती है और पहाड़ों पर साढ़े चार हजार फुट से ऊपर दिखाई पड़ती है।

**विवरण** : यह चिलचिल नीलगिरि के ऊँचे भागों की निवासिनी है, जिसकी आदत अन्य चिलचिलों की ही जैसी होती है। यह बहुत शरमीली चिड़िया है, जो मनुष्यों की आहट पाते ही झाड़ियों में घुस जाती है।

यह ज्यादातर झाड़ियों के आसपास ही रहती है और दिन भर कीड़े-मकोड़े और फल-फूल से अपना पेट भरती रहती है जो इसका मुख्य भोजन हैं। इसकी बोली दूर से ऐसी लगती है जैसे कोई मनुष्य हँस रहा हो।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय फरवरी से जून तक रहता है। इसके घोंसले कटोरेनुमा होते हैं, जो पतली डालियों, सूखी पत्तियों तथा घास-फूस से बनाये जाते हैं। घोंसले का भीतरी भाग पेड़ पर की काई और ऊन आदि से मुलायम कर दिया जाता है। घोंसले पेड़ की दुफंकी डाल पर दस-बारह फुट की ऊँचाई पर रखे रहते हैं।

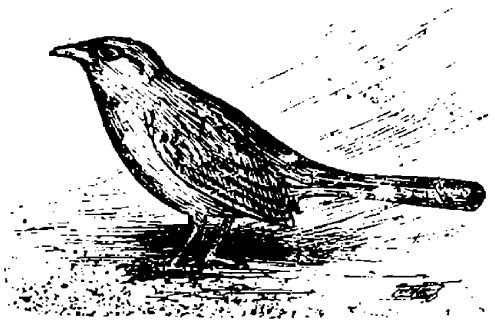
मादा समय आने पर दो-तीन अंडे देती है जो चौड़े और बैजाबी होते हैं। ये हलके नीले रंग के होते हैं जिन पर कत्थई नीली और कभी-कभी काली बिन्दियाँ और चित्ते पड़े रहते हैं। अंडों पर थोड़ी चमक भी रहती है।

ये अंडे लगभग १.० × ०.७५ इंच के होते हैं।

## २१ सतबहनी चरखी (Jungle Babbler : Turdoides Somervillei)

**पर्याय** : सात भाई, पेंवा मैना, गौगाई, कचबचिया, हहोलिका, जंगली खैर।

**पहचान** : इस चरखी को पहचानना जरा भी मुश्किल नहीं है, क्योंकि यह जहाँ भी रहती है इतना शोर करती है कि बरबस सबका ध्यान इसकी ओर खिंच जाता है। इसके सारे बदन का रंग भूरा होता है, पर, आँखों और चोंच का रंग पीला रहता है।



सतबहनी चरखी

**रंग-रूप** : सतबहनी चरखी १० इंच लम्बी चिड़िया है। इसके नर-मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। इसके बदन का ऊपरी हिस्सा मिट्टी के रंग का होता है और नीचे इस भूरे रंग में गहरापन आ जाता है। इसकी दुम चौड़ी और ढीली-ढीली सी रहती है और ऐसा जान पड़ता है कि जैसे अभी गिर पड़ेगी। आँख की पुतली पीलापन लिये सफेद, चोंच पीली और पैर पीलापन लिये सफेद होते हैं।

**निवास** : सतबहनी चरखी यहाँ की बारहमासी चिड़िया है जो देश भर में पहाड़ों की तलहटियों में रहती है। स्थान-स्थान के पक्षियों में थोड़ा-बहुत भेद होने के कारण इनको पाँच जातियों में बाँट दिया गया है, लेकिन इन सबकी आदतें एक-जैसी ही होती हैं।

**विवरण** : यह चरखी हमारी बहुत परिचित चिड़िया है जिसे रोज हम अपने बाग-बगीचों, जंगलों और मैदान में देखते हैं। यह इतनी ढीट होती है कि बस्तियों में इसके गिरोह अक्सर दिखाई देते हैं। यह अक्सर ५–७ का गिरोह बना कर रहती है, इसीलिए इसे सतबहनी कहा जाता है। प्रायः देखा गया है कि एक बार का बना हुआ गिरोह कई-कई साल तक कायम रहता है। यह बहुत ही शोर मचाने वाली चिड़िया है, जिसे न तो बहुत घने जंगल ही पसंद हैं और न एकदम खुले मैदान ही। इसे ऐसी जगह पसंद आती है जहाँ बहुत घनी झाड़ियाँ हों और जिनमें यह आसानी से छिप सके। इसके शोर मचाने से हम भले ही परेशान हो जायँ लेकिन इनको इसमें आपस में इकट्ठा रहने में बहुत मदद मिलती है; क्योंकि जमीन पर कीड़े-मकोड़ों को चुन-चुन कर खाते समय गिरोह के हर पक्षी को चौकन्ना रहना पड़ता है, साथ ही शोर मचा कर एक दूसरे को सतर्क करना पड़ता है। जब ये एक दूसरे को सतर्क करने के लिए शोर मचाती हैं, तब तो इनकी आवाज कर्कश होती ही है लेकिन जब यह अकेले किसी डाल पर बैठ कर बोलती है तो वह भी सुरीली नहीं होती। दूर से इसकी बोली सुनकर ऐसा लगता है, जैसे गन्ना पेरने की चरखी चल रही हो। शायद इसीलिए इसका नाम चरखी रखा गया है।

इन चरखियों को भी चिलचिल की तरह से ऊँचे पेड़ पसन्द नहीं हैं और यह अपना ज्यादा समय जमीन पर ही बिताती हैं, जहाँ वृक्षों के नीचे पत्तियों और घास-फूस में से कीड़े-मकोड़े बीन-बीन कर खाती रहती हैं। जब इन्हें एक जगह से दूसरी जगह जाना होता है तो यह एक-एक करके वहाँ तक फुदक-फुदक कर जाती हैं, क्योंकि हवा में बेकार उड़ना इन्हें पसंद नहीं है। चरखियाँ देखने में बहुत भोली-भाली लगती हैं, लेकिन दुश्मन के आक्रमण करने पर उसका ये बड़ी तेजी से मुकाबला करती हैं। पूरा का पूरा गिरोह शोर मचाकर दुश्मन को घेर लेता है और उसे अपनी जान बचाना मुश्किल कर देता है।

इसका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े है।

**घोंसला** : इस चरखी के जोड़ा बाँधने और घोंसला बनाने का समय मार्च से जुलाई तक है, लेकिन दक्षिण भारत की ओर इसके घोंसले नवम्बर तक मिलते हैं। यह घोंसले घास-फूस और जड़ों से बनाये जाते हैं और भीतरी हिस्सा पतली जड़ों और बालों से मुलायम कर दिया जाता है। चरखी अपने घोंसले ८–१० फुट से ज्यादा ऊँचाई पर नहीं बनाती। यह अपने घोंसलों को किसी काँटेदार झाड़ी में बहुत छिपा कर रखती है, लेकिन चातक और पपीहे इनका पता लगा ही लेते हैं और मौका पाकर उनकी मादा वहाँ अपने अंडे दे आती हैं। मादा चरखी एक बार में तीन से चार तक अंडे देती है, जो अंडाकार और नाप में लगभग १.०१ × ०.७८ इंच के होते हैं। इन अंडों का रंग हलका नीला रहता है, जिसमें कुछ हरापन भी मिला रहता है।

## २२ सितसिरी चरखी (White-headed Babbler : Turdoides Striatus)

**पर्याय** : सितसिरी खैर, श्वेत शीर्ष हहोलिका।

**पहचान** : यह सतबहनी चरखी के बराबर की चिड़िया है, लेकिन अपने सफेद सिर के कारण अन्य चरखियों से आसानी से पहचानी जा सकती है। इसका गला और सीना गाढ़े भूरे रंग के होते हैं।

**रंग-रूप** : यह चरखी सतबहनी चरखी से कद में छोटी होती है। इसकी लम्बाई ९ इंच, दुम ४ इंच, टाँगें १.७ इंच और चोंच ०.९ इंच की होती है। इसके नर और मादा एक ही रंगरूप के होते हैं। इसके सिर का ऊपरी हिस्सा और गरदन के दोनों तरफ के हिस्से सफेद मायल राखी रंग के होते हैं। बदन का ऊपरी हिस्सा राखपन लिये हुए भूरा होता है, जिस पर पीठ के पास भूरी और सफेद धारियाँ होती हैं। डैने, दुम का निचला हिस्सा, ठोड़ी, गला और सीना भी गाढ़े भूरे होते हैं। नीचे का हिस्सा भूरे रंग का रहता है, जिसमें पेट के पास कुछ ललाई रहती है। आँख की पुतली सिलेटी, चोंच और पैर पीलापन लिये सफेद रहते हैं।

**निवास** : इस चरखी का निवास दक्षिण भारत है, जहाँ यह हैदराबाद से दक्षिण की ओर लंका तक फैली हुई है। यह

हमारे यहाँ की बारहमासी चिड़िया है जो अपना सारा समय हमारे देश में ही बिताती है ।

**विवरण** : यह चरखी मैदानी चिड़िया है जो पहाड़ों पर २,००० फुट से ऊपर अपना निवास नहीं बनाती । इसकी आदतें बहुत कुछ सतबहनी चरखी से मिलती-जुलती हैं और यह उसी की तरह घर बना कर बाग-बगीचों में फुदकती फिरती है । अन्य चरखियों की तरह यह भी काफी शोर मचाती है और चौकन्ना होने पर पेड़ों की डालियों पर जा बैठती है । फिर वहाँ से गिरोह के सभी पक्षी एक-एक करके किसी दूसरे पेड़ के नीचे पहुँच जाते हैं और फिर उसी प्रकार निडर होकर शोर मचाने लगते हैं । अन्य चरखियों की भाँति यह भी हवा में ज्यादा दूर तक नहीं उड़ती और एक पेड़ पर से दूसरे पेड़ पर जाने के लिए दो-एक बार पंख चला कर हवा में तैरती सी चली जाती है । इसकी बोली कर्कश होती है।

इस चरखी का मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े हैं ।

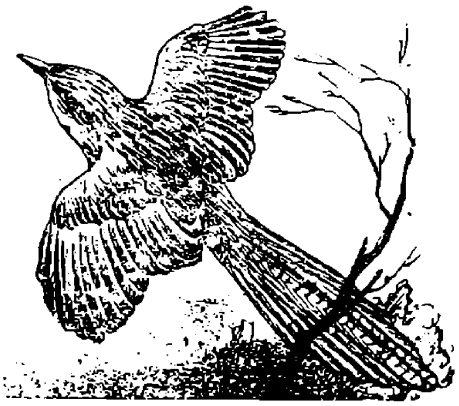
**घोंसला** : सितसिरी चरखी के अंडा देने का समय साल भर चलता है । इसके घोंसले ज्यादातर मार्च से जुलाई तक दिखाई पड़ते हैं । इसका घोंसला भी घास-फूस और जड़ों का होता है, जिसकी शक्ल गहरे कटोरे जैसी होती है । यह किसी काँदेदार झाड़ी में थोड़ी ऊँचाई पर रखा होता है और चरखी इसे छिपाने की बड़ी कोशिश करती है, फिर भी मादा कोयल अंडा दे ही आती है । समय आने पर मादा तीन-चार अंडे देती है जो अंडाकार और बहुत चमकीले होते हैं । इनका रंग कालापन लिये नीला रहता है, जिस पर किसी किस्म की चित्तियाँ नहीं होतीं । इन अंडों की नाप ०.९९ × ०.७५ इंच होती है ।

## २३ चरखी (Common Babbler : Argya Caudata)

**पर्याय** : गलगलिया, छोटा पेंघा, खीहा, डिम्बी, बेहनिन, दर्जिन, ग्राम हहोलिका ।

**पहचान** : यह छोटे कद की भूरे रंग की चरखी है, जिसकी पीठ पर कत्थई धारियाँ होती हैं और नीचे का हिस्सा हलका बादामी रहता है। यह झाड़ियों और घास के मैदानों में ५-७ का गिरोह बना कर रहती है ।

**रंग-रूप** : ये चरखियाँ हमारी बहुत परिचित होती हैं । इनकी लम्बाई ९ इंच, दुम ४.७ इंच, डैने ३.२ इंच, टाँगें १.५ इंच और चोंच १ इंच की होती है । इनके नर-मादा एक ही शक्ल-सूरत के होते हैं । इनका ऊपरी हिस्सा हलका भूरा होता है, जिस पर कत्थई रंग की धारियाँ पड़ी रहती हैं । डैने और दुम



चरखी

भूरे रंग के होते हैं। ठोड़ी और गला पिलछौंह सफेद होता है। नीचे का हिस्सा हलके बादामी रंग का होता है, जिस पर सीने के पास कुछ हलकी लकीरें रहती हैं । आँख की पुतली पिलछौंह भूरी और पैर गंदे हरे रंग के होते हैं ।

**निवास** : यह चरखी हिमालय की तराई से लेकर दूर दक्षिण तक और बंगाल से लेकर सिंध तक के मैदानों में फैली हुई है । इसको मैदान की चिड़िया कहना ही उचित होगा, क्योंकि यह पहाड़ पर तीन-चार हजार फुट से ऊपर नहीं जाती । इसे घने जंगल ज्यादा पसंद नहीं आते। यह ऐसे मैदानों में रहना पसंद करती है, जिसमें झाड़ियाँ या कुछ ऊँची घास हो। हम अपने बाग-बगीचों में भी इसको बराबर देखते हैं, जहाँ यह अन्य चरखियों की तरह दिन भर शोर मचाती रहती है।

**विवरण** : इसकी बोली बहुत कर्कश होती है और यह खतरे को देखकर तो इतना शोर मचाती है कि जी ऊब जाता है। यह भी एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए दूसरी चरखियों की तरह से एक-एक करके किसी तरह हवा में तैरती हुई सी जाती है। यह जमीन पर रहने वाली चिड़िया है जो घनी झाड़ियों में या पेड़ के नीचे डालियों पर अपना समय बिताती है।

इसका भोजन कीड़े-मकोड़े है।

**घोंसला** : इस चरखी के घोंसला बनाने तथा अंडा देने का समय करीब करीब साल भर रहता है, लेकिन ज्यादा घोंसले मार्च से मई तक और जुलाई से सितम्बर तक मिलते हैं । क्योंकि यह चिड़िया साल में दो बार अंडे देती है। इसका घोंसला सुन्दर कटोरेनुमा होता है, जिसे यह घास-फूस और जड़ों से बनाती है। घोंसले का भीतरी हिस्सा मुलायम जड़ों और बालों वगैरह से नरम बना दिया जाता है और उसका बाहरी हिस्सा काँटेदार पतली टहनियों से घेर दिया जाता है, जिससे दुश्मन वहाँ किसी तरह न पहुँच सके। लेकिन इतनी हिफाजत करने के बाद भी अक्सर चातक इसके घोंसले में अपने अंडे दे आता है। यह अपना घोंसला किसी घनी झाड़ी में तीन-चार फुट की ऊँचाई पर बनाती है जिसमें बैठ कर मादा दो-तीन अंडे देती है। यह अंडे नुकीले

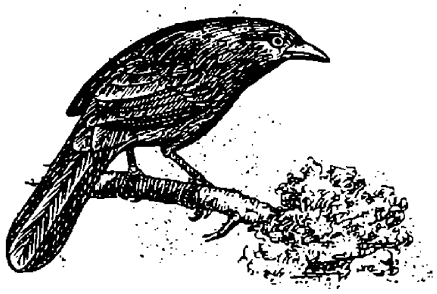
और अंडाकार होते हैं और इन पर काफी चमक रहती है। इनका रंग हलका नीला होता है, जिस पर किसी किस्म की चित्तियाँ नहीं होतीं।

इन अंडों की नाप ०.८५ × ०.६३ इंच होती है।

## २४ गौगाई (Large Grey Babbler : Argya Malcolmi)

**पर्याय** : बृहत् हहोलिका, नेपी चरखी।

**पहचान** : यह चरखी गिरोह बन कर खुले मैदानों में रहती है। इसका ऊपरी हिस्सा गंदा भूरा और नीचे का रंग फिलछौंह राखी रहता है। पीठ पर गाढ़ी चित्तियाँ रहती हैं। यह और चरखियों से बड़ी होती है और अपनी दुम के सफेद किनारों के कारण अन्य चरखियों से आसानी से पहचानी जा सकती है।



**गौगाई**

**रंग-रूप** : गौगाई की लम्बाई ११ इंच होती है और इसके नर-मादा एक ही रंग के होते हैं। इसकी दुम ५.५, डैने ४.६, टाँगें १.२ और चोंच ०.१ इंच की होती है। इसका ऊपरी हिस्सा गंदा भूरा रहता है। लेकिन पीठ के पास के पर बीच में गहरे रंग के होते हैं। माथा कंजई, डैने गहरे भूरे और नीचे का हिस्सा पीलापन लिये राखी रंग का होता है। दुम हलकी भूरी होती है, जिसमें बीच में से दो-दो परों पर आड़ी सफेद लकीरें पड़ी रहती हैं। इसकी आँख की पुतली चटक पीली, चोंच गाढ़ी-भूरी और पैर पीले रंग के होते हैं।

**निवास** : यह चरखी देश भर में मैदानी क्षेत्रों में फैली हुई है, लेकिन दक्षिण की ओर मैसूर के आगे और पश्चिम की ओर पंजाब के बाद बहुत कम दिखाई पड़ती है।

**विवरण** : गौगाई यहाँ की बारहमासी चिड़िया है, जो हमारा देश छोड़ कर कभी बाहर नहीं जाती। अन्य चरखियों की भाँति यह भी बहुत शोर मचाने वाली चिड़िया है और इसकी आदतें दूसरी चरखियों से बहुत कुछ मिलती-जुलती होती हैं। इसे खुले मैदान पसंद हैं, जहाँ बीच-बीच में बाग-बगीचे हों, क्योंकि यह अपना आधे से अधिक समय जमीन पर घूम-घूम कर बिता देती है। यह अकेली न रह कर ८–१० का गोल बना कर रहती है और किसी दुश्मन के आक्रमण करने पर गोल की सब चिड़ियाँ शोर मचा कर उस पर हमला कर देती हैं। इनकी बोली भी कर्कश होती है और दिन भर इतना शोर मचाती हैं कि तबियत ऊब जाती है।

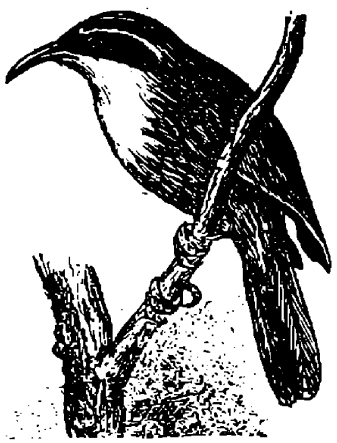
अन्य चरखियों की भाँति इनका भी मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े है।

**घोंसला** : गौगाई के घोंसला बनाने का समय बारहों महीने रहता है, लेकिन ज्यादातर घोंसले मार्च से अगस्त तक दिखाई पड़ते हैं। यह साल में दो बार अंडे देती है। इसका घोंसला जमीन से चार फुट की ऊँचाई पर रहता है, जिसे यह किसी काँटेदार पेड़ पर बनाती है। यह घोंसला घास-फूस का कटोरा-नुमा होता है, जिसके भीतरी हिस्से को पतली-पतली जड़ों, ऊन और बालों से मुलायम कर दिया जाता है। बाहर के हिस्से पर गौगाई काँटेदार टहनियाँ बाँध देती है, लेकिन चातक की मादा इतने पर भी इसे धोखा देकर इसके घोंसले में अपने अंडे दे आती है। ये अंडे नाप में ०.९९ × ०.७७ इंच के होते हैं और इनका रंग हलका नीला होता है।

## २५ दक्षिणी खोहा (Deccan Scimitar Babbler : Pomatorhinus Horsfieldii)

**पर्याय** : दक्षिण-गिरि प्रियंवद।

**पहचान** : यह पक्षी केवल दक्षिण भारत में पाया जाता है, जिसकी भौंहों पर एक सफेद धारी पड़ी रहती है। किनारे के परों पर काली लकीरें होती हैं। तलवार-जैसी टेढ़ी चोंच के कारण इसे पहचानने में बड़ी आसानी होती है।



**दक्षिणी खोहा**

**रंग-रूप** : इसकी लम्बाई १० इंच होती है और नर-मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। ऊपरी पर धूमिल भूरे और माथा काला

होता है। आँख के ऊपर एक सफेद पट्टी सी होती है, जिसके ऊपर काली किनारी होती है। माथे के दोनों भाग एवं गरदन का ऊपरी भाग गहरे भूरे होते हैं। छाती और पेट पर एक पतली काली भूरी लकीर होती है। ठोड़ी, गला तथा पेट सफेद होते हैं। पार्श्व का मांसल भाग एवं पूंछ के नीचे का भाग सिलेटी भूरा होता है। आँख की पुतली भूरी या गहरे लाल रंग की होती है। चोंच पीली और पैर गंदे हरछौंह होते हैं। चोंच लंबी टेढ़ी और दबी हुई होती है और शकल में छोटी टेढ़ी तलवार की तरह होती है। डैने छोटे और मुड़े हुए होते हैं। पूंछ लंबी, सुडौल तथा फीतेनुमा होती है। शक्ल भद्दी होती है।

**निवास** : ये सामान्यतः लंका और भारतीय प्रायद्वीप में पायी जाती हैं। इनकी चोंच की लम्बाई, चौड़ाई तथा रंग के अनुसार इनकी जातियों के विभिन्न भेद किये जा सकते हैं। भूरे रंग की दक्षिणी खीहा आबू की पहाड़ियों, मध्यप्रदेश और खानदेश के आसपास में पायी जाती है। इसकी और जातियाँ गोआ, मैसूर, उड़ीसा और ऊपरी पूर्वी घाट में पायी जाती हैं। इसकी और भी जातियाँ पूर्वी घाट के निचले प्रदेशों में कृष्णा घाटी के दक्षिण की ओर पायी जाती हैं।

**विवरण** : यह पक्षी सदाबहार जंगलों, बाँस की घनी कंटीली झाड़ियों वाली पहाड़ियों में पाये जाते हैं। यह गिरोह बाँध कर रहने वाले पक्षी हैं, परन्तु इनका गिरोह प्रायः ६ से १० तक ही देखा गया है; कभी-कभी ये अन्य पक्षियों के गिरोहों में भी देखे गये हैं। लोग इन्हें मधुर सीटी बजा कर अपने सम्पर्क में रखते हैं। पर जब ये उत्तेजित हो जाते हैं तो बड़े कर्कश स्वर से सीटी बजाने लगते हैं। इसकी बोली वैसे तो कर्कश ही मानी जानी चाहिए परन्तु यह कभी-कभी मधुर सीटी भी बजाता है। यह शर्मीली चिड़िया है, जो उड़ने के पहले एक से दूसरी शाखाओं पर फुदकने के बाद ही उड़ पाती है। जब ये जोड़े में होते हैं, तो इनका नर आगे-आगे क्रो-क्रो-क्रो क-ट की आवाज करता चलता है और मादा पीछे-पीछे एक झाड़ी से दूसरी झाड़ी में फुदकती रहती है।

इसका भोजन कीड़े-मकोड़े तथा फूलों का रस है। यह अपने भोजन की तलाश में जंगल में भूमि पर गिरी हुई पत्तियों को अपनी चोंच से कुरेदती हुई घूमती-फिरती आसानी से देखी जा सकती है। यह अपनी लम्बी तलवारनुमा चोंच से फूलों का रस भी पीती है। इसे कपास के पौधों पर कीड़े-मकोड़े पकड़ते भी देखा जा सकता है।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय दिसम्बर से मई तक होता है। इसका घोंसला घास, पत्तियों तथा जड़ों से बहुत सुन्दर बना हुआ होता है, पर बनावट में इतना कमजोर होता है कि एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में ही टूट जाता है। ये घोंसले जंगलों में झाड़ियों में पाये जाते हैं, जिनमें मादा समय आने पर तीन से पाँच तक अंडे देती है, जो बनावट में कमजोर, चिकने और मंदली रंग के होते हैं। ये छोटे सिरे की ओर कुछ चपटे होते हैं। आकार में अंडे १.०८ × ०.७७ इंच के होते हैं।

## २६ ललमुखी खीहा (Rusty checked Scimitar Babbler : Pomatorhinus Erythrogenys)

**पर्याय** : रक्त कपोल प्रियंवद।

**पहचान** : यह हिमालय का पक्षी है, जिसकी चोंच टेढ़ी होती है। इसका ऊपरी भाग काही भूरा और निचला भाग अखरोटी और सफेद होता है। इसकी बोली मधुर और आदत शर्मीली होती है।

**रंग-रूप** : यह ११ इंच की चिड़िया है जिसके नर और मादा एक समान होते हैं। इसके ऊपरी पर, पूंछ और डैने का घिरा हुआ भाग काही भूरा होता है; निचले परों का मध्य भाग सफेद होता है। ठोड़ी और गले पर धूमिल भूरे रंग की धारियाँ होती हैं। माथे के दोनों भाग, गरदन और निचले परों के दोनों हिस्से अखरोटी रंग के होते हैं। पार्श्व के दोनों भाग और छाती का भाग भूरा होता है। आँख की पुतली पीलापन लिये हुए सफेद होती है। चोंच हल्के सींग के रंग की होती है और पैर भूरे तथा मांसल होते हैं। चोंच लम्बी मुड़कर अन्दर को दबी हुई और छोटी सी टेढ़ी तलवार की तरह होती है। पूंछ लम्बी और सुडौल तथा डैने छोटे और गोलाकार होते हैं; वैसे बदन की बनावट भद्दी होती है।

**निवास** : यह पक्षी हिमालय में गढ़वाल से सिक्किम तक प्रायः २,००० से ७,००० फुट की ऊँचाई तक, पर कभी-कभी १०,००० फुट तक भी पाया जाता है। हिमालय में इसकी कई जातियाँ पायी जाती हैं। इसकी सिलेटी रंग के माथे वाली जाति निचली पहाड़ियों पर काँगड़ा से आसाम तक पायी जाती है। इस जाति के पक्षियों का ऊपरी भाग काही भूरा, सिर गहरा सिलेटी, आँख के ऊपर सफेद लकीर, दोनों तरफ के भाग काफी भूरे लाल और अखरोटी रंग के होते हैं, जिस पर सफेद लकीरें होती हैं।

**विवरण** : यह पक्षी झाड़ियों में निवास करता है और पहाड़ियों पर ही अपने जीवन का अधिकांश भाग बिताता है। यह अपना आहार भूमि और सूखी पत्तियों से प्राप्त करता है। यह छोटे समूहों में पाया जाता है। नर पक्षी की बोली दुहरी होती है। दूसरी बोली पहली के तुरन्त बाद ध्वनित होती है। अगर मादा उसके करीब होती है तो वह इसका प्रति-उत्तर शीघ्र ही नर की दूसरी ध्वनि के बाद अपनी मधुर ध्वनि से देती है। यह दो पक्षियों के मिलकर बोलने की बोली दूर तक सुनाई देती है। ये पक्षी दूसरे पक्षियों की बोलियों का भी जवाब देते हैं। उड़ने पर अपनी लम्बी पूंछ के कारण ये भद्दी शकल के मालूम

पड़ते हैं। इनकी नाचने की भी आदत है। गुबरीला, केंचुआ, कीड़े एवं उसी तरह के पदार्थ, जो भूमि पर पाये जाते हैं, इनके भोज्य पदार्थ हैं। इन्हें बेर भी पसंद हैं।

**घोंसला**: इनके जोड़ा बाँधने का समय अप्रैल से जून तक होता है। ये अपना घोंसला गुम्बजदार बनाते हैं, जो एक तरफ काफी खुला हुआ होता है और घास की सुन्दर महीन पत्तियों और जड़ों से बना होता है। ये घोंसले साधारणतः जंगल में झाड़ियों तथा कुंजों के किनारे पाये जाते हैं। मादा दो से चार तक अंडे देती है। अंडे लम्बे, पतले, अंडाकार, चमकीले और बिल्कुल सफेद होते हैं। आकार में ये अंडे औसतन १.११ × ०.८ इंच के होते हैं।

**घोंसला**: इनके जोड़ा बाँधने का समय जून से अगस्त तक रहता है। अधिकतर अंडे जुलाई में पाये जाते हैं। ये अपना घोंसला किसी घनी झाड़ी, बाँस की कोठ या घनी घास के बीच बनाते हैं जो जमीन के पास ही रहता है। घोंसला ढीला-ढाला-सा बाँस की पत्तियों और घास-फूस का बना होता है। कभी-कभी इसके भीतर ऊन, बाल और पतली जड़ों का अस्तर भी लगाया जाता है।

मादा प्रायः ३ से ४ तक अंडे देती है जो चौड़े और अंडाकार होते हैं। अंडों पर एक प्रकार की चमक भी रहती है। इनका रंग धुर सफेद होता है जिन पर लाल, कत्थई तथा बैंगनी बिन्दियाँ पड़ी रहती हैं।

नाप में ये अंडे लगभग ०.७० × ०.५३ इंच के होते हैं।

## २७ चुरचुरा (Rufous-bellied Babbler: Dumetia Hyperythra)

**पर्याय**: रक्तोदर गुपिल।

**पहचान**: छोटे कद का जैतूनी भूरा पक्षी, जिसका निचला भाग चटक नारंगी भूरा, गले पर सफेद चित्ता। ये पक्षी छोटे-छोटे गिरोहों में घनी झाड़ियों के करीब देखे जा सकते हैं।

**रंग-रूप**: चुरचुरा ५ इंच का पक्षी है जिसके नर-मादा एक-जैसे होते हैं। इसके माथे का अगला हिस्सा लालछौंह भूरा रहता है और ऊपरी भाग, डैने और दुम जैतूनी भूरे रंग के होते हैं। चेहरे के दोनों बगली हिस्से और नीचे का सम्पूर्ण भाग चटक नारंगी भूरे रंग का रहता है।

आँख की पुतली हलकी भूरी, चोंच सिलेटी और टाँगें हलके गुलाबी रंग की होती हैं।

**निवास**: चुरचुरा हमारे देश का ऐसा पक्षी है जो यहीं स्थायी रूप से रहना पसन्द करता है। इसकी कई जातियाँ इस देश में पायी जाती हैं।

हमारे देश में यह कुमायूँ, झाँसी, मऊ और हैदराबाद के पूर्वी भागों में मिदनापुर तक पाया जाता है। पश्चिम की ओर यह आबू पर्वत से दक्षिण भारत के छोर तक दिखाई पड़ता है।

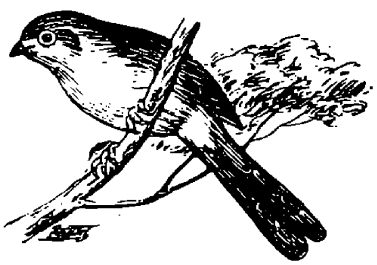
**विवरण**: चुरचुरा घनी झाड़ियों वाले स्थानों पर रहना अधिक पसंद करता है, वैसे यह तितरे-बितरे जंगलों में भी दिखाई पड़ता है। यह प्रायः चार से आठ तक के छोटे-छोटे गिरोहों में रहता है और एक प्रकार की चुर-चुर की आवाज करता रहता है। शायद इसी से इसका चुरचुरा नाम पड़ा है। कभी-कभी यह तेज बोली भी बोलता है जो कड़ी और भद्दी होती है।

यह बहुत सतर्क पक्षी है जो मनुष्यों से दूर रहने की कोशिश करता है। जरा सी भी आहट मिलने पर झुंड के सब पक्षी एक-एक करके घनी झाड़ियों में गायब हो जाते हैं और कुछ दूर जाकर फिर आपस में मिल जाते हैं।

## २८ गुलाब चश्म (Yellow Eyed Babbler: Chrysomma Sinensis)

**पर्याय**: बुलबुल चश्म, गुलचश्म, सुवर्णाक्ष गुपिल, बड़ा पोदेना।

**पहचान**: यह छोटी चरखी लालछौंह रंग की होती है। इसका निचला हिस्सा सफेद रहता है। यह ५–७ का गिरोह बाँध कर रहती है और अपना ज्यादा समय मैदानों और जमीन पर बिताती है।



गुलाब चश्म

**रंग-रूप**: इस छोटी-सी चरखी के वैसे तो बहुत नाम हैं, लेकिन हमारे यहाँ यह बड़ा पोदेना नाम से मशहूर है। यह ७ इंच लम्बी चिड़िया है, जो अपनी नारंगी आँखों के कारण, और चरखियों से अधिक सुन्दर लगती है। इसकी दुम ३.४, डैने २.४, टाँगें ०.१ इंच की होती हैं। इसके नर-मादा एक-जैसे होते हैं। इसके बदन का ऊपरी हिस्सा लालछौंह भूरा रहता है, जो डैने के बाहरी हिस्से तक पहुँचते-पहुँचते और गाढ़ा हो जाता है। नीचे का हिस्सा सफेद रहता है, जिसमें पेट और दुम के पास कुछ पीलेपन की झलक रहती है। इसके आगे एक चित्ता पड़ा रहता है। आँख की पुतली पीली होती है, जिसके चारों ओर का घेरा गाढ़े नारंगी रंग का होता है। चोंच काली और पैर हलके नारंगी रंग के होते हैं।

**निवास** : यह पक्षी हमारे देश में प्रायः सभी प्रान्तों में पाया जाता है। हिमालय में यह ४,००० फुट से ऊपर नहीं दिखाई पड़ता। भौगोलिक दृष्टि से स्थान-स्थान के पक्षियों के रंग में कुछ अन्तर रहता है, जिसके हिसाब से इसको कई जातियों में बाँट दिया गया है, लेकिन इन सबका स्वभाव और अन्य बातें एक ही जैसी होती हैं।

**विवरण** : गुलाब चश्म हमारे यहाँ का बारहमासी पक्षी है, जिसको सुन्दर आँखों के कारण गुलचश्म भी कहा जाता है। यह हमारे यहाँ का बहुत परिचित पक्षी है जो दूसरी चरखी की तरह ७–८ के गिरोह में रहता है। कभी-कभी इसे हम जोड़े में भी देख सकते हैं। इसे घना जंगल पसंद नहीं है। इसी से इसे हम बाग-बगीचों और घास के मैदानों में तथा झाड़ियों के आस-पास बड़ी आसानी से देख सकते हैं। अन्य चरखियों की भाँति यह भी शोर मचाता है, लेकिन इसकी बोली उतनी कर्कश न होकर अपेक्षाकृत मीठी ही कही जायेगी। इसे ऊँचे पेड़ों पर बैठना नहीं भाता, लेकिन यह चरखियों की तरह जमीन पर उतरना भी पसंद नहीं करता। इसे हम दिन भर पेड़ की निचली डालियों और झाड़ियों में एक शाख से दूसरी शाख पर फुदकते देख सकते हैं, जहाँ यह कीड़ों-मकोड़ों को पकड़ कर अपना पेट भरता है। थोड़ी देर तक इस तरह शिकार करने के बाद जब यह थक जाता है, तब नर-मादा बारी-बारी से पेड़ के ऊपर जाकर सुस्ता लेते हैं।

इस पक्षी का भी मुख्य भोजन अन्य चरखियों की तरह कीड़े-मकोड़े हैं।

**घोंसला** : इस सुन्दर चिड़िया का घोंसला भी बहुत सुन्दर होता है जिसे यह घास की चौड़ी पत्तियों और पेड़ की पतली छाल से बनाती है। घोंसले का बाहरी हिस्सा मकड़ी के जाले से इस तरह लपेटा जाता है कि सूखने पर बहुत मजबूत और सुडौल दिखाई पड़ता है। घोंसले के किनारे को पतली घास और जड़ों से बाँध कर मजबूत बना दिया जाता है। यह घोंसला तीन-चार फुट की ऊँचाई पर या तो किसी दोफंकी डाल पर रखा रहता है, या किसी मजबूत मोटे तने से लटका दिया जाता है। मादा एक बार में चार-पाँच अंडे देती है, जिसका समय मई से सितम्बर तक है। ये अंडे चौड़े और अंडाकार होते हैं और इन पर थोड़ी चमक भी रहती है। इनका रंग गुलाबीपन लिये सफेद रहता है, जिस पर लाल चित्तियाँ पड़ी रहती हैं। नाप में ये लगभग ०.७३ × ०.५९ इंच के होते हैं।

## २९ खैर (Spotted Babbler : Pellorneum Ruticeps)

**पर्याय** : तेलिया चरखी, पृषद् गुपिल।

**पहचान** : छोटे कद की यह चरखी अपनी खैरी और सफेद धारीदार पीठ के कारण बड़ी आसानी से पहचानी जा सकती है। यह बहुत शर्मीली चिड़िया है और ज्यादातर झाड़ियों में ही घुसी रहती है, लेकिन तेज बोली से इसकी मौजूदगी का पता फौरन ही लग जाता है।

**रंग-रूप** : इस छोटी सी चरखी की लम्बाई ६ इंच से ज्यादा नहीं होती। इसकी दुम २.८, डैने २.९, टाँगें १.५ और चोंच ०.९ इंच की होती है। इसकी पीठ और डैनों का रंग खैरा होता है। सिर का ऊपरी भाग लालछौंह और आँख के ऊपर एक सफेद लकीर रहती है। दुम के परों के सिरे सफेद और दोनों कनपटी लालछौंह भूरे रंग की होती हैं। नीचे का हिस्सा हलका पीलापन लिये सफेद रहता है। सीने पर खड़ी काली धारियाँ पड़ी रहती हैं। आँख की पुतली लालछौंह भूरी, चोंच गाढ़ी भूरी और पैर प्याजी रंग के होते हैं।

**निवास** : खैर हमारे देश की बारहमासी चिड़िया है, जो सारे देश में फैली हुई है। अलग-अलग स्थानों की चिड़ियों के रंग में थोड़ा फर्क होने के कारण इनको चार उपजातियों में बाँट दिया गया है। इसे पहाड़ी चिड़िया कहना ठीक ही होगा, क्योंकि इसे हम ४ हजार से १५ हजार फुट की ऊँचाई पर ही देख सकते हैं।

**विवरण** : खैर को इसकी शर्मीली आदत के कारण आसानी से नहीं देखा जा सकता। यह हमेशा घनी झाड़ियों में घुसी रहती है और कभी पेड़ पर नहीं चढ़ती। वैसे घास के मैदानों में भी इसके गिरोह दिन भर कीड़े-मकोड़ों की तलाश में चक्कर लगाया करते हैं। उस समय भी इनकी तेज बोली से ही हम इनकी मौजूदगी का पता लगा सकते हैं। जोड़ा बाँधने के समय जरूर हम छोटे-छोटे गिरोहों में इन्हें उड़ते देख सकते हैं और तभी हम इनकी मीठी बोली भी सुनते हैं।

इसका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े हैं।

**घोंसला** : इनके अंडे देने का समय वैसे तो मार्च से मई तक है, लेकिन इनके घोंसले हमें जुलाई से अगस्त तक भी दिखाई पड़ते हैं। यह पक्षी अपना घोंसला किसी घनी झाड़ी या घास की घनी कुंज में जमीन पर ही रखते हैं। घोंसला घास-फूस और पत्तियों से गोल शक्ल का बना रहता है, जिसके किनारे पतली जड़ों से खूब मजबूत बना दिये जाते हैं। समय आने पर मादा तीन-चार अंडे देती है, जिन पर थोड़ी चमक रहती है। यह अंडे अंडाकार होते हैं और इनका रंग हलका पीलापन लिये सफेद होता है, जिस पर कत्थई या सिलेटी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं। अंडे लगभग ०.८८ × ०.६० इंच के होते हैं।

## ३० कलसिरी चरखी (Black-headed Babbler : Rhopocichla Atriceps)

**पर्याय** : काल शीर्ष गुपिल।

**रंग-रूप** : लम्बाई पाँच इंच। नर-मादा एक जैसे। सिर

के दोनों रुख और ऊपरी हिस्सा काला । पूरा ऊपरी भाग गेहुँआ भूरा, डैने गहरे भूरे तथा खुले अंगों का रंग गेहुँआ भूरा । दुम भूरी । निचला हिस्सा गंदा सफेद, बाजुओं के ऊपर और दुम के नीचे का रंग भी इसी तरह ।

पुतली पीली, चोंच गंदी सिलेटी, जिसका ऊपरी भाग काला और पैर गुलाबी मायल भूरे होते हैं ।

**पहचान** : यह चरखी दक्षिण पश्चिम भारत की पहाड़ियों में पायी जाती है। इसका कद छोटा, ऊपर भूरा, नीचे सफेदी मायल और सिर काला रहता है । यह चिड़िया घने जंगलों की झाड़ियों में झुंडों में दिखाई पड़ती है ।

**निवास** : यह काले सिर वाली चिड़िया है जो कि पश्चिमी घाट के साथ-साथ बेलगाम से लेकर नीलगिरि तक पायी जाती है । कोचीन में इसकी दूसरी जाति पायी जाती है जिसका सिर काला न होकर कलछौंह भूरा होता है । इसकी आँख पर एक चौड़ी काली पट्टी होती है जो माथे को मिलाती है । ये दोनों जातियाँ समुद्र-तल से ६,००० फुट तक पायी जाती हैं । ये चिड़िया प्रवास नहीं करतीं और हमारे देश में ही रहती हैं।

**विवरण** : इस अनूठी छोटी चिड़िया की जानकारी उन सभी को है जिन्होंने अपना कुछ समय कुर्ग, नीलगिरि और ट्रावनकोर के जंगलों में बिताया है । यह आम तौर पर घने दलदल वाले जंगलों या झरनों के किनारे घने हरे झुरमुटों, बेंत की क्यारियों, बाँस के जंगलों या सदाबहार वनों में पायी जाती है । प्रायः यह पेड़ों पर नहीं चढ़ती और झाड़ियों में ही रहती है । कोई भी झुरमुट इसके लिए सघन नहीं, हालाँकि यह सड़क, रास्तों और खेती के लिए साफ की गयी जमीन के किनारे भी बैठना पसंद करती है । ऐसी जगह कलसिरी चरखी पाँच से दस या २४-२५ के समूह में इधर-उधर घूमती रहती है । इनके झुंड पूरे साल दिखाई पड़ते हैं तथा इनके साथी बहुत सुस्त होते हैं । ये चलने के साथ बराबर धीमी चहचहाहट करती रहती हैं। इनकी एक खास आदत यह होती है कि यह खतरे की जरा-सी आहट पाते ही ऊपर से ही ढेले की तरह झुरमुटों में गिर पड़ती हैं । ये कीड़ों-मकोड़ों और उनकी इल्लियों को बड़े चाव से खाती हैं ।

**घोंसला** : घोंसले ढीले-ढाले और रवच्छता से बने होते हैं । इनमें ये बाँस की मोटी पत्तियाँ लगा लेती हैं तथा दरवाजा बगल में रखती हैं । इनके अन्दर और कुछ नहीं लगातीं ।

यह घोंसला बहुत छोटा होता है जो बड़ी मजबूती और सफाई से बुना होता है । ये उसके अन्दर काली छोटी-छोटी जड़ें और नरम घास बिछाती हैं और उसे बहुत सावधानी से नरकुलों और घास के झंखाड़ों या मोटी बेलों और झाड़ियों में छिपा देती हैं । ये साल के हर महीनों में देखी जा सकती हैं, लेकिन नीलगिरि में जोड़ा बाँधने का समय मई से जुलाई तक और ट्रावनकोर में कुछ पहले होता है ।

मादा प्रायः दो अंडे देती है । ये अंडे आम तौर पर चौड़े और बैजावी होते हैं । अंडे हलकी चमक वाले होते हैं । इनका रंग सफेद या फीका खाकी सफेद होता है जिस पर भूरे और बैंगनी लाल रंग की बहुत सी बिन्दियाँ होती हैं । ये बिन्दियाँ पेंदे की ओर अधिक होती हैं ।

अंडे की लम्बाई-चौड़ाई ०.७५ ०.५५ इंच होती है ।

## ३१ सिलेटी चरखी (Quaker Babbler : Alcippe Poioicephala)

**पर्याय** : मलिन गुपिल ।

**पहचान** : छोटी सी जैतूनी भूरे रंग की चिड़िया, जिसका निचला भाग हलके रंग का और सिर सिलेटी रंग का रहता है । यह प्रायः छोटे-छोटे गिरोहों में पायी जाती है और पहाड़ी प्रदेशों में घनी झाड़ियों वाले हिस्से में रहती है ।

**रंग-रूप** : यह चरखी लगभग ६ इंच की होती है जिसके शरीर का ऊपरी भाग जैतूनी भूरा होता है जिसमें डैने और दुम पर मोरचे के रंग की झलक रहती है । नीचे का भाग नारंगीपन लिये गंदा पीला रहता है। सिर का ऊपरी भाग सिलेटी, दोनों बगल के हिस्से और गरदन राखीपन लिये भूरी रहती है ।

आँख की पुतली सिलेटी, चोंच सिलेटी भूरी, टाँगें कंजई प्याजी रंग की रहती हैं ।

**निवास** : यह चरखी दक्षिण भारत की पश्चिमी पर्वतमाला से लेकर ट्रावनकोर तक ही पायी जाती है । इसे पहाड़ी पर २ हजार से ६ हजार फुट की ऊँचाई तक देखा जा सकता है।

**विवरण** : यह चरखी भी बहुत शर्मीली चिड़िया है जो वैसे तो चार-पाँच के गिरोह में रहती है, लेकिन कभी-कभी इसके २०-२५ तक के झुंड दिखाई पड़ जाते हैं।

सिलेटी चरखियाँ वैसे तो जंगलों में ही रहना ज्यादा पसंद करती हैं, लेकिन इन्हें झाड़ियों से भरे मैदानों और बाग-बगीचों में भी कभी-कभी देखा जा सकता है । ये पेड़ पर ही रहना पसंद करती हैं, लेकिन बहुत ऊँची डाली पर न बैठ कर नीचे ही बैठी रहती हैं । ये अपने गिरोह की चिड़ियों से अपनी सुरीली बोली द्वारा संपर्क स्थापित रखती हैं । इनका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े और उनकी इल्लियाँ हैं ।

**घोंसला** : इनके घोंसले प्रायः हर महीने में देखे जा सकते हैं । इससे यह अनुमान किया जाता है कि ये साल में दो बार अंडे देती हैं ।

जोड़ा बाँधने का पहला समय जनवरी से अप्रैल तक रहता है और दूसरा जुलाई से सितम्बर तक ।

ये अपना घोंसला घने जंगलों के बीच बनाती हैं जो किसी झाड़ी या पेड़ के ऊपर ५-७ फुट की ऊँचाई पर रखा रहता है ।

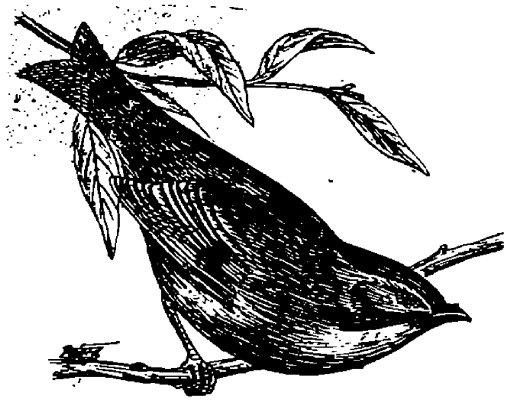
ये घोंसले गहरे प्यालेनुमा होते हैं जो प्रायः काई, सेवार और सूखी पत्तियों से बनाये जाते हैं। इनका भीतरी भाग नरम काई और पतली जड़ों से मुलायम कर दिया जाता है। घोंसले किसी दुफंकी डाल पर रखे रहते हैं जिन्हें छिपाने का ये यत्न बहुत कम करती हैं।

अंडे लगभग ०.८० × ०.६० इंच के होते हैं।

## ३२ सिबिया (Black-headed Sibia : Leioptila capistrata)

**पर्याय** : गप्पू, कृष्णशीर्ष श्रीवद।

**पहचान** : यह ललछौंह रंग का पक्षी है जिसका सिर काले रंग का होता है। दुम के बीच में एक चौड़ी काली पट्टी पड़ी रहती है। यह ज्यादातर पेड़ों पर ही रहती है और चरखियों की तरह बहुत शोर मचाती है।



**सिबिया**

**रंग-रूप** : सिबिया ९ इंच की लंबी चिड़िया है, जिसके नर और मादा एक-जैसे होते हैं। इसकी दुम और डैने ३.७, टाँगें १.१ और चोंच ०.१ इंच की होती है। इसका सारा शरीर चटक ललछौंह रंग का होता है, जिसमें पीठ का हिस्सा सिलेटी भूरा रहता है। डैने भी सिलेटी रंग के होते हैं जिनका कुछ हिस्सा काला और सफेद तथा निलछौंह रहता है। बगल का हिस्सा काला रहता है और लंबी दुम पर नीचे की ओर एक काली चौड़ी पट्टी रहती है। आँख की पुतली कत्थई, चोंच काली और पैर प्याजी भूरे रंग के होते हैं।

**निवास** : सिबिया हमारे सारे पहाड़ी प्रदेशों में पायी जाती है, जहाँ यह तीन उपमागों में बाँटी गयी है। पहाड़ों पर भी यह चार हजार से नौ हजार फुट तक पायी जाती है।

**विवरण** : सिबिया को पहाड़ी पक्षी ही कहना उचित होगा। यह हमारे यहाँ की बारहमासी चिड़िया है जो हमारे पहाड़ों को छोड़कर किसी दूसरे स्थान पर नहीं जाती। यह अपनी सुन्दर पोशाक के कारण हमारा ध्यान अपनी ओर खींच लेती है और पहाड़ पर जाने पर हम जल्दी ही इससे परिचित हो जाते हैं। यह पेड़ों पर रहने वाली चिड़िया है, जो जमीन पर बहुत कम उतरती है। यह बहुत ही फुर्तीली चिड़िया है, जिसे हम दिन-भर एक डाली से दूसरी डाली और एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर आते-जाते देखा करते हैं। यह दिन-भर पेड़ की एक डाल से दूसरी डाल पर यों ही नहीं भटकती रहती, बल्कि ऐसे समय यह पत्तियों और फूलों के कीड़ों-मकोड़ों को चुन कर अपना पेट भरती रहती है। इसके अलावा यह अबाबील और पतरंगे की तरह हवा में उड़ते-उड़ते भी कीड़े-पतंगों को पकड़ सकती है। जोड़ा बाँधने के समय को छोड़ कर यह ज्यादातर गिरोह बना लेती है और इसे हम चरखियों की तरह शोर मचाते देख सकते हैं।

इसका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े और जुराइयाँ हैं जिनको यह बड़े स्वाद से खाती है।

**घोंसला** : इसके अंडा देने और घोंसला बनाने का समय मई से अगस्त तक है, जब मादा घास-फूस का सुन्दर कटोरानुमा घोंसला बनाकर अंडे देती है। यह घोंसले देवदार जैसे ऊँचे पेड़ों पर प्रायः १० से ५० फुट की ऊँचाई पर घनी पत्तियों के बीच छिपा कर रखे जाते हैं, जिनमें मादा प्रायः दो-तीन अंडे देती है। यह अंडे अंडाकार होते हैं, जिन पर बहुत थोड़ी चमक रहती है। इनका रंग कुछ सफेदी तथा नीलापन लिये हलका काला होता है। अंडों पर कत्थई और बैंगनी चित्तियाँ और धारियाँ पड़ी रहती हैं। इन अंडों की नाप लगभग ०.९८ × ०.६८ इंच रहती है।

## ३३ नान-चुरा (Red-billed Leiothrise : Leiothrise Lutea)

**पर्याय** : सुनहरा, हिमालय रोचिष्ण।

**पहचान** : यह एक छोटी-सी, गंदे हरे रंग की चिड़िया है, जो अपने केसरिया रंग के गले और सीने के कारण बड़ी आसानी से पहचानी जा सकती है। यह अक्सर गिरोह बाँध कर रहती है।

**रंग-रूप** : नान-चुरा ६ इंच की छोटी-सी चिड़िया है, जिसके नर तो चटक रंग के हैं लेकिन मादा धुमैली होती है। नर का ऊपरी हिस्सा गंदे हरे रंग का होता है। गला और सीना चटक केसरिया रंग का और नीचे का हिस्सा धानी होता है। डैनों में चटक पीला, नारंगी, लाल और काला रंग रहता है और दुम भी गंदे हरे रंग की रहती है। इसका सिर काला होता है, मादा का रंग हलका होता है और इसके पंख पर लाल रंग का अभाव होता है। आँख की पुतली ललछौंह भूरी, चोंच केसरिया रंग की और पैर भूरे रंग के होते हैं। इसकी दुम मामूली दोफंकी होती है जिसके सिरे ऊपर की ओर उठे रहते हैं।

**निवास** : नान-चुरा को पहाड़ी चिड़िया ही कहना उचित

होगा, क्योंकि यह पहाड़ों को छोड़ कर मैदानों में कभी नहीं आती। यह हमारे यहाँ की बारहमासी चिड़िया है। यह सारे हिमालय में ५,००० से ८,००० फुट तक की ऊँचाई पर देखी जा सकती है। यह ज्यादातर गिरोह बनाकर रहती है। भौगोलिक विभाजन के अनुसार इसको दो विभागों में बाँटा जा सकता है।

**विवरण** : नान-चुरा हमारे यहाँ की उन परिचित चिड़ियों में से है, जो अपनी रंगीन पोशाक के कारण बड़ी आसानी से पहचान ली जाती हैं। पहाड़ी स्थानों पर, बस्ती और बाग-बगीचों में इसके गिरोह अक्सर पेड़ों पर दिखाई पड़ते हैं। यह अपना ज्यादा समय पेड़ों पर ही बिताती है और जमीन पर बहुत कम उतरती है। चीड़ के जंगलों में इसको देखना कोई मुश्किल बात नहीं है। वहाँ इसको हम कीड़े-मकोड़ों की तलाश में इधर-उधर आते-जाते देख सकते हैं। जोड़ा बाँधने का समय आने पर इनका गिरोह टूट जाता है और तब हम नर को किसी डाल पर बैठ कर सुरीली आवाज में गाते हुए सुनते हैं।

नान-चुरा का मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े हैं।

**घोंसला** : इस पक्षी का घोंसला बनाने और अंडा देने का समय अप्रैल से अगस्त तक रहता है, लेकिन मई और जून में ही इसके घोंसले ज्यादा दिखाई पड़ते हैं। ऐसा जान पड़ता है कि यह साल में दो बार अंडे देती है। घोसलों को ऊँचे-ऊँचे पेड़ों पर १५-२० फुट की ऊँचाई पर बनाया जाता है, जिनको यह किसी दुफंकी डाल पर हिफाजत से रख देती है। कभी-कभी घोंसले डालियों पर लपेट कर कस-बाँध भी दिये जाते हैं, जिससे उनके गिरने का डर भी नहीं रहता। यह घोंसले सुन्दर, कटोरे-नुमा होते हैं, जिनको यह घास-फूस के रेशों और सूखी पत्तियों से बनाती है। मादा एक बार में प्रायः ३ अंडे देती है, जिन पर थोड़ी चमक रहती है। ये अंडे बहुत हलके हरे या नीले रंग के होते हैं जिन पर कत्थई और बैंगनी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं। अंडे प्रायः ०.८६ × ०.६३ इंच के होते हैं।

## ३४ सौबिगा (Common lora : Aegithina Tiphia)

**पर्याय** : फटिक जाल, तौफीक, बड़ा बबुना, भारत शुकिका।

**पहचान** : यह छोटी-सी, घानी और काले रंग की चित-कबरी-सी चिड़िया है, जिसका ऊपरी हिस्सा काला और नीचे का हिस्सा घानी और पीला रहता है। इसे हम अक्सर अपने बागों के आस-पास देख सकते हैं।

**रंग-रूप** : सौबिगा की लम्बाई ५.३, दुम २ इंच, डैने २.४, टाँगें ०.७५ और चोंच ०.७ इंच की होती है। इसके नर का ऊपरी हिस्सा काला और पीठ के नीचे का हिस्सा घानी रहता है। डैने के ऊपर दो खड़ी लकीरें होती हैं, जो सफेद होती हैं और पंख के किनारे पीले होते हैं। नीचे का हिस्सा पीले रंग का होता है, जिसमें सीने के नीचे के हिस्से में कुछ हरापन भी दिखाई देता है। जाड़ों में ऊपरी काला हिस्सा गायब हो जाता है और नीचे का रंग भी हलका हो जाता है। मादा गरमी और जाड़ों में एक ही जैसी रहती है और उसके रंग में कोई तबदीली नहीं



सौबिगा

होती। इसके सारे शरीर का रंग घानी होता है। इसके नीचे के हिस्सों में पीलेपन की झलक और ऊपरी हिस्से में हरापन ज्यादा रहता है। डैने हरापन लिये भूरे रंग के होते हैं और कंधे पर एक सफेद पट्टी पड़ी होती है। इसकी आँख की पुतली हलकी पीली, चोंच सिलेटी-पीले रंग की और पैर भी सिलेटी रंग के होते हैं।

**निवास** : सौबिगा हमारे सारे देश में पायी जाती है। स्थान-स्थान के पक्षियों के रंग में थोड़ा-बहुत भेद होने के कारण, इनको कई उप-जातियों में बाँट दिया जाता है। यह मैदान में रहने वाली चिड़िया है जो पहाड़ों में तीन-चार हजार फुट की ऊँचाई पर ही पायी जाती है।

**विवरण** : सौबिगा हमारे बागों के बहुत परिचित पक्षियों में से है, जिसे हम अपने बाग-बगीचों में रोज ही देखते हैं। वैसे तो यह जोड़ों में दिखाई पड़ती है, लेकिन कभी-कभी पेड़ों पर कीड़े-मकोड़ों की तलाश में चार-पाँच के झुंड में दिखाई पड़ जाती है। इसकी बोली बहुत सुरीली होती है और जोड़ा बाँधने के समय नर मादा को रिझाने के लिए भी सुरीली बोली बोलता है। इतना ही नहीं, उसको खुश करने के लिए यह हवा में ऊपर उड़ जाता है और वहाँ से चक्कर खाता हुआ फिर अपनी डाल पर लौट आता है। गिरहबाजी करते समय इसकी बोली बन्द होती है और डाली पर पहुँच कर यह अपने पर मोर की तरह फैला लेता है।

इसका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े हैं।

**घोंसला** : सौबिगा के अंडा देने और घोंसला बनाने का समय अप्रैल से जुलाई तक है, जब यह पतले रेशों और घास-फूस का छोटा-सा सुन्दर कटोरेनुमा घोंसला बनाता है। उसके बाहरी हिस्से पर यह मकड़ी के जाले से पलस्तर-सा कर देता है। घोंसले किसी दो-फंकी डाल पर कभी नीचे और कभी ऊँचाई पर

मिलते हैं, जिनमें मादा तीन-चार अंडे देती है। इन अंडों पर किसी किस्म की चमक नहीं होती और उनका रंग संदली या राखी होता है। इन पर अक्सर ऊदी लकीरें पड़ी होती हैं। नाप में ये अंडे ०.७० × ०.५४ इंच के होते हैं।

## ३५ हरेवा (Jerdon's Chloropsio : Chloropsio Jerdoni)

**पर्याय**: हरी बुलबुल, घास कुटा, देशी हरेवा, दक्षिण पत्रगुप्त।

**पहचान**: यह छोटी-सी हरे रंग की चंचल चिड़िया है। इसका सारा शरीर चटक हरा रहता है और गला गाढ़े नीले रंग का होता है।



हरेवा

**रंग-रूप**: हरेवा ७ इंच की छोटी-सी चिड़िया है, जिसको उसके हरे रंग के कारण हरी बुलबुल भी कहते हैं।

नर के सारे शरीर का रंग चटक हरा होता है, लेकिन इसके सीने का हिस्सा बैंगनीपन लिये गाढ़ा नीला रहता है। यह नीला रंग चोंच के पिछले भाग के पास आँख पर फैल जाता है और उसके चारों ओर का घेरा पिलछौंह रहता है। मादा भी चटक हरे रंग की होती है, लेकिन उसके गले का रंग गाढ़ा नीला न होकर निलछौंह होता है। आँख की पुतली नीली, चोंच काली और पैर हलके नीले होते हैं।

**निवास** : हरेवा उत्तर में सीतापुर, बस्ती और फैजाबाद यानी गंगा के मैदान से भारत के धुर दक्षिण, बल्कि श्रीलंका तक फैला हुआ है। पूर्व में राजमहल की पहाड़ियों से पश्चिम की ओर बड़ोदा और पंचमहाल तक यह काफी संख्या में पाया जाता है। हरेवा यहाँ का बारहमासी पक्षी है, जो अपनी मीठी बोली के कारण मनुष्यों की कैद में रहना स्वीकार करता है, पर हमारे देश को छोड़कर कहीं नहीं जाता।

**विवरण** : यह हमारे यहाँ के मैदानों का बहुत प्रसिद्ध पक्षी है, जिसे प्रकृति ने सुन्दर पोशाक के साथ-साथ सुरीली आवाज भी दी है। हर साल हमारे यहाँ इसकी काफी संख्या पकड़ी जाती है और उन्हें खरीद कर लोग पालते हैं। सिखाये जाने पर यह सुरीली बोली बोलता है, लेकिन इसको पालना और सिखाना उतना आसान नहीं है। यह पेड़ पर रहने वाला पक्षी है, जो जमीन पर बहुत कम उतरता है। इसे घने जंगल भी उतने ही पसंद हैं, जितने तितरे-बितरे जंगल और घास के मैदान। वैसे तो यह जोड़े में रहता है, लेकिन कीड़े-मकोड़ों की तलाश में इन्हें हम अक्सर गिरोह बाँधे भी देख सकते हैं। चंचलता के साथ-साथ इनमें बहादुरी की भी कमी नहीं है। इसे प्रायः अमलतास के पेड़ों पर से दूसरी चिड़ियों को दूर-दूर तक खदेड़ते देखा जा सकता है, क्योंकि अमलतास इसे बहुत पसन्द है।

इसका मुख्य भोजन फल-फूल, कीड़े-मकोड़े और फूलों का रस है।

**घोंसला** : इसके अंडा देने का समय अप्रैल से अगस्त तक है, जब यह अपना छोटा-सा छिछले कटोरे जैसा घोंसला बनाता है। यह घोंसला घास-फूस और पतली जड़ों से बनाया जाता है जिसका बाहरी हिस्सा मुलायम रेशों से मज़बूत बना दिया जाता है। हरेवा अपने घोंसले को जमीन से २०–२५ फुट की ऊँचाई पर किसी दोफंकी डाल के सिरे पर रख देते हैं, जिसमें मादा २–३ अंडे देती है। यह अंडे अंडाकार होते हैं और इन पर थोड़ी चमक रहती है। इनका रंग सफेद या हलका संदली रहता है, जिन पर पेंदे की ओर गाढ़ी भूरी, बैंगनी और कत्थई चित्तियाँ पड़ी रहती हैं। ये अंडे नाप में ०.८५ × ०.६० इंच के होते हैं।

## ३६ नेपाली हरेवा (Colden-fronted chloropsis : Chloropsis aurifrons)

**पर्याय** : सुवर्णभाल पत्रगुप्त।

**पहचान** : नेपाली हरेवा ठीक हरेवा जैसा-ही होता है, लेकिन इसका गला बैंगनी होता है, जिसके चारों ओर एक गाढ़ी हरी पट्टी रहती है। मादा चटक केसरिया रंग की होती है।



नेपाली हरेवा

**रंग-रूप**: नेपाली हरेवा की लम्बाई ७ इंच की होती है।

इसके सारे शरीर का रंग हरा होता है और गला चटक बैंगनी रंग का होता है। इस बैंगनी हिस्से के चारों ओर एक गहरी नीली पट्टी होती है जो चोंच की जड़ के पास से ही शुरू होती है और आँख के ऊपरी हिस्से की ओर से सीने तक चली जाती है। इसकी चाँद चटक केसरिया रंग की होती है। आँख की पुतली भूरी, चोंच काली और पैर हलके नीले रंग के होते हैं।

**निवास** : यह हरेवा सारे भारत में फैला हुआ है। हिमालय की ओर हम इसे कुछ दूर तक पाते हैं और शायद इसी कारण इसको लोग नेपाली हरेवा कहते हैं। इसके अलावा एक और हरेवा हमारे यहाँ पाया जाता है जो पहाड़ी हरेवा (Orange-bellied Chloropsis) कहलाता है और वह पहाड़ को छोड़ कर मैदानों में नहीं आता। इसका ऊपरी हिस्सा हरा और नीचे का रंग केसरिया होता है।

**विवरण** : इस नेपाली हरेवा की आदत देशी हरेवा की आदत से एकदम मिलती-जुलती होती है, लेकिन यह भी पेड़ पर रहने वाली चिड़िया है। इसको दूसरे घने जंगलों से ज्यादा तितरे-बितरे जंगल और घास-फूस तथा झाड़ियों से भरे मैदान पसंद हैं और यह भी अपनी मीठी बोली के कारण पिंजड़े में कैद कर ली जाती है।

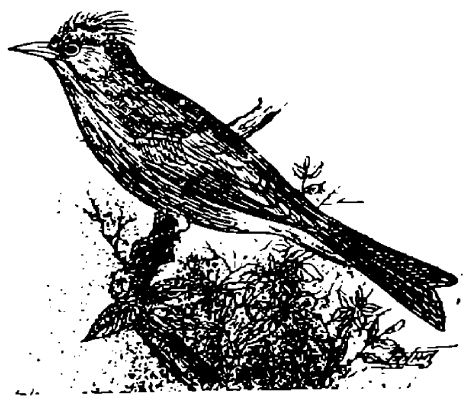
इसका भी मुख्य भोजन फल-फूल, कीड़े-मकोड़े और फूलों का रस है।

**घोंसला** : इसके घोंसला बनाने का ढंग भी देशी हरेवा की भाँति है। अंडा देने का समय अप्रैल से अगस्त तक है, जब इसकी मादा देशी हरेवा की तरह ही घोंसला बनाती है और उसी में दो-तीन अंडे देती है। अंडे रंग और नाप में करीब-करीब देशी हरेवा की तरह के होते हैं।

## ३७ बनबकरा (Black Bulbul : Microscelis Psaroides)

**पर्याय** : हिमाद्रि मणितुंड गोवत्स, काली बुलबुल।

**पहचान** : यह कलछौंह सिलेटी रंग की पतली-सी चिड़िया है, जिसकी दुम लम्बी और चौड़ी दुफंकी भी होती है। इसका बदन पतंग-सा होता है और अपनी चोटी और चटक मूंगे के रंग की चोंच के कारण यह बहुत आसानी से पहचान ली जाती है।



बनबकरा (काली बुलबुल)

**रंग-रूप** : इस काली बुलबुल की लम्बाई १० इंच की होती है। इसके नर और मादा दोनों एक ही रंग-रूप के होते हैं और दोनों के सिर पर चोंटीनुमा काले पंख उठे हुए-से होते हैं, जो ऊपर के हिस्से में गहरे और नीचे की ओर हलके हो जाते हैं। चोंच की जड़ से गाल तक एक काली पतली-सी रेखा कुछ गोलाई लिये चली जाती है। इसकी आँख की पुतली गाढ़ी भूरी, चोंच तथा पैर चटक गाढ़े मूंगे के रंग के होते हैं।

**निवास** : बनबकरा हिमालय का पक्षी है जो जम्मू कश्मीर से आसाम तक ९,००० फुट की ऊँचाई पर पाया जाता है। इसकी एक और जाति दक्षिण भारत में भी पायी जाती है, जो ४,००० फुट से अधिक ऊँचाई पर दिखाई पड़ती है।

**विवरण** : इस काली बुलबुल को बनबकरा क्यों कहा जाता है, इसका कुछ पता नहीं चलता। यह पक्षी ऊँचे पहाड़ों पर के घने जंगलों का निवासी है जहाँ पर यह गिरोह बना कर रहता है। अंडा देने का समय निकट आने पर यह अपना गिरोह तोड़ देता है और तब हम इसे जोड़े में इधर-उधर आते-जाते देख सकते हैं।

यह अपना सारा समय पेड़ पर ही बिताता है और जमीन पर कभी नहीं उतरता। जमीन पर उतरने की भी कौन कहे, यह पेड़ की निचली डालियों पर भी उतरना पसंद नहीं करता। इसलिए इसे हम अक्सर पेड़ की फुनगी पर ही बैठे देखते हैं।

यह बहुत शोर मचाने वाला और ढीठ पक्षी है, जो एक जगह स्थिर होकर नहीं बैठ सकता। यह उड़ने में भी काफी उस्ताद होता है और अक्सर लोग इसे 'भुजंगा' समझ कर धोखे में पड़ जाते हैं, लेकिन भुजंगा की दुम इससे अधिक दुफंकी होती है और इसकी उड़ान भी उससे तेज होती है।

इसकी बोली मीठी तो नहीं होती, लेकिन कभी-कभी यह एक प्रकार की सीटी जैसी आवाज करता है, जिसमें जरूर काफी मिठास रहती है।

इसका मुख्य भोजन फल-फूल हैं, लेकिन यह कीड़े-मकोड़े भी खूब मजे में खाता है। बेर और शहतूत पर इसका हमला बड़े जोर का होता है और शाम को इसे हम पतेना की तरह हवा में उड़ कर कीड़े पकड़ने में व्यस्त देखते हैं। यह फूलों पर बैठ कर उनका रस पीने से भी नहीं चूकता।

**घोंसला** : इस बुलबुल के अंडा देने का और घोंसला बनाने का समय अप्रैल से जून तक होता है, जब यह सुन्दर कटोरेनुमा घोंसला बनाता है। यह घोंसला घास-फूस और सूखी पत्तियों का होता है, जिसका भीतरी हिस्सा मुलायम घास और जड़ों से नरम बना दिया जाता है। बाहर का हिस्सा मकड़ी के जाले

से लपेट कर मज़बूत बना लिया जाता है और उसको यह किसी ऊँची दुफंकी डाल में रख देता है।

मादा समय आने पर तीन-चार अंडे देती है, जो लालछौंह-से होते हैं। इन अंडों का रंग गुलाबीपन लिये सफेद होता है जिस पर पेंदे की ओर लाल कत्थई बैंगनी बिन्दियाँ और चित्तियाँ रहती हैं। नाप में ये अंडे लगभग १.०५ × ०.७५ इंच के होते हैं।

## ३८ गुलदुम बुलबुल ( Red-vented Bulbul )

**पर्याय**: रक्तासन, गोवत्सक टोंकी बुलबुल।

**पहचान**: यह यहाँ का बहुत परिचित पक्षी है, जिसका सारा भूरा शरीर काले सेहरों से भरा हुआ होता है। सिर पर काली चोंटी और दुम का सिरा सफेद होता है। यह अपनी दुम की जड़ के पास से चटक लाल हिस्से के कारण बड़ी आसानी से पहचान लिया जाता है।

**रंग-रूप**: गुलदुम बुलबुल को इसकी दुम के नीचे के लाल चित्ते के कारण ही यह सुन्दर नाम मिला है। यह हमारे यहाँ का बहुत ही परिचित पक्षी है जिसकी लम्बाई लगभग ८ इंच की होती है।

इस बुलबुल के नर और मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। इनका ऊपरी शरीर गाढ़े भूरे रंग का होता है, जिस पर काले सेहरे पड़े रहते हैं। इनका सारा सिर और गला धुर काला रहता है। नीचे पेट का हिस्सा सफेदी मायल और ऊपरी दुम का ढकना भी सफेद रहता है। दुम भूरी होती है, जिसके सिरे पर के कोने सफेद रंग के रहते हैं। सिर के कुछ पर चोटीनुमा रहते हैं।

इसकी आँख की पुतली गाढ़ी भूरी तथा चोंच और पैर काले होते हैं।

**निवास**: इस बुलबुल का निवास बहुत विस्तृत है। हमारे देश में तो यह प्रायः सभी स्थानों में पायी जाती है; इसके अलावा यह चीन तक भी फैली हुई है। इसी कारण इसकी कई जातियाँ पायी जाती हैं, जो भौगोलिक कारणों से इसके रंग-रूप में थोड़ा-बहुत भेद कर देती हैं। उत्तरी भारत में हिमालय की तराई के प्रान्तों में इसकी पूर्वी और पश्चिमी दो जातियाँ पायी जाती हैं, जिनके विभाजन की रेखा कुमायूँ के पास मानी जाती है। इस रेखा से पश्चिम के पक्षी कश्मीर तक ४,००० से ५,००० फुट तक की ऊँचाई पर पाये जाते हैं।

पूर्वी पक्षी, इस रेखा से पूर्व की ओर पाये जाते हैं और जो पहाड़ों पर चार-पाँच हजार फुट तक देखे जाते हैं। मैदानों में ये सारे उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल और आसाम तक फैले हुए हैं। दक्षिण की ओर भी इनकी कई जातियाँ पायी जाती हैं, जिनमें आपस में अधिक विभिन्नता दिखाई पड़ती है।

**विवरण**: गुलदुम बुलबुल हमारे बागों का बहुत प्रसिद्ध पक्षी है। यह पक्षी वह बुलबुल नहीं है, जो अपनी मीठी बोली के लिए इतना प्रसिद्ध है; वह बुलबुल तो हमारे देश का पक्षी ही नहीं है, वह हमारे यहाँ कभी-कभी आता है। उसको "बुलबुल हजार दास्तां" ( Nightingale ) कहते हैं। वह फारस का निवासी है। हमारे देश के बुलबुल अपनी बोली के लिए नहीं बल्कि लड़ने के लिए पाले जाते हैं। इनमें भी यह गुलदुम बुलबुल ही शौकीनों द्वारा पकड़ा जाकर महीनों तक उनकी कैद में रहता है। हमारे यहाँ यह घने जंगलों से ज्यादा खुले झाड़ीदार मैदानों में पाया जाता है। ये पेड़ पर रहने वाले पक्षी हैं, जिन्हें हम जमीन पर बहुत कम देखते हैं। अपने पतले और छरहरे शरीर के कारण यह उड़ने में उस्ताद होते हैं। लेकिन इनकी उड़ान थोड़ी ही दूर की होती है।

ये बुलबुल प्रायः जोड़ों में ही दिखाई देते हैं। शौकीन लोग इन्हें कार्तिक में पकड़ते हैं। इनके पेट में पतली रस्सी बाँध कर लोहे के अड्डे या चक्कस पर रखते हैं। ये उसी चक्कस पर कई महीने बिता देते हैं और प्रायः मकर की संक्रान्ति पर जाकर इनकी रिहाई होती है। कभी-कभी हम इन बुलबुलों का गिरोह भी देखते हैं। किसी स्थान पर यदि भोजन की बहुतायत हुई तो आस-पास के बुलबुल वहाँ जमा हो जाते हैं। लेकिन यह गिरोह थोड़े समय तक ही रहता है और फिर इनके जोड़े इधर-उधर हो जाते हैं।

यह बुलबुल यहाँ का बारहमासी पक्षी है, जो बहुत झगड़ालू और शोर मचाने वाला पक्षी है। शायद इसीलिए लोग इसे लड़ाने के लिए पालते हैं।

इसकी खुराक वैसे तो कीड़े-मकोड़े हैं, लेकिन यह फल-फूल भी बड़े स्वाद से खाता है। अमरूद आदि नरम फलों पर बुलबुलों का बड़े जोर का हमला होता है।

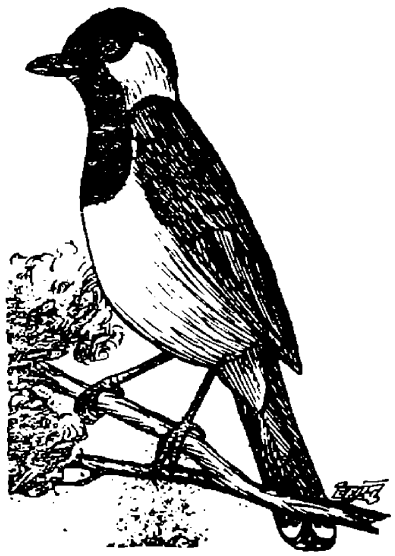
**घोंसला**: इसके अंडा देने और घोंसला बनाने का समय फरवरी से अगस्त तक रहता है, क्योंकि मादा बुलबुल साल में प्रायः दो बार अंडे देती है। अंडों की संख्या दो या तीन होती है। बुलबुलों का घोंसला सुन्दर कटोरेनुमा होता है, जिसे यह घास-फूस, पतली जड़ों और टहनियों से बनाते हैं। इसका भीतरी हिस्सा नरम घास, जड़ों और बाल वगैरह से मुलायम बना लिया जाता है। ये घोंसले किसी झाड़ी, झाऊ या सरपत के बूटे में ५–१० फुट की ऊँचाई पर रखे रहते हैं।

बुलबुल के अंडे लालछौंह होते हैं, जिन पर बहुत कम चमक होती है। इनका रंग गुलाबीपन लिये सफेद होता है और उन पर लाल, कत्थई और बैंगनी बिन्दियाँ और चित्तियाँ रहती हैं। अंडों की नाप प्रायः ०.९० × ०.६५ इंच होती है।

## ३९ काँगड़ा बुलबुल (White-cheeked Bulbul : Molpastes Leucogenys)

**पर्याय** : पैनजू, श्वेतकर्ण गोवत्सक।

**पहचान** : यह गंदे भूरे रंग की छोटी-सी चिड़िया अपने काले सिर और गरदन तथा गाल पर के सफेद चित्तों के कारण अन्य बुलबुलों से आसानी से पहचान ली जाती है। इसकी दुम के नीचे लाल के स्थान पर गंधकी पीला रंग रहता है और माथे पर टेढ़ी चोटी रहती है।



काँगड़ा बुलबुल

**रंग-रूप** : इस बुलबुल को काँगड़ा कहते हैं। इसकी लम्बाई ८ इंच होती है। इसके नर और मादा एक ही जैसे होते हैं। इसका सारा शरीर ललाई लिये हुए भूरे रंग का होता है और जो ऊपर गाढ़ा और नीचे हलका हो जाता है। पेट के पास का रंग सफेदी मायल रहता है और दुम के नीचे का हिस्सा गंधकी पीले रंग का रहता है। इसकी गरदन और सिर का रंग काला होता है और दोनों गालों पर एक-एक सफेद छोटी-सी पट्टी रहती है। सिर पर एक टेढ़ी पट्टी होती है जो आगे की ओर झुकी रहती है। इसकी दुम भूरी होती है जो आगे की ओर ललछौंह हो जाती है और जिसका सिरा सफेद होता है।

इसकी आँख की पुतली भूरी और चोंच तथा पैर काले होते हैं।

**निवास** : काँगड़ा बुलबुल हिमालय का निवासी है, जो कश्मीर से आसाम तक ३,००० फुट से ८,००० फुट तक के पहाड़ी प्रदेशों में रहता है। नीचे की ओर यह उत्तर भारत में मध्य प्रदेश तक पाया जाता है। इसकी कई जातियाँ हमारे यहाँ पायी जाती हैं, जो भौगोलिक विभाजन पर निर्भर रहती हैं। कुछ की चोटी बड़ी होती है तो कुछ की छोटी, लेकिन आदतें सबकी एक-जैसी ही रहती हैं।

**विवरण** : 'काँगड़ा' पहाड़ी पक्षी है, लेकिन हमारे यहाँ के घने जंगलों मे ज्यादा इसे खुले मैदान पसन्द हैं। यह हमारा परिचित पहाड़ी पक्षी है, जिसके यहाँ पर दर्शन होते ही रहते हैं। अन्य बुलबुलों की तरह यह भी काफी शोर मचाता है और उन्हीं की तरह यह भी फुर्तीला होता है। वैसे तो यह हमारे यहाँ का बारहमासी पक्षी है, लेकिन यह जाड़ों में थोड़ा स्थान परिवर्तन कर लेता है। इसे हम अक्सर बाग-बगीचों तथा सड़क के किनारे के पेड़ों पर देख सकते हैं।

वैसे तो यह जोड़ा बाँध कर रहता है, लेकिन खाने की सहूलियत देख कर यह एक गिरोह-सा भी बना लेता है।

यह बहुत ही चंचल और प्रसन्न रहने वाला पक्षी है, जो अन्य बुलबुलों की तरह अपना अधिक समय पेड़ों पर ही व्यतीत करता है।

इसका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े तथा फल-फूल हैं।

**घोंसला** : काँगड़ा के अंडा देने और घोंसला बनाने का समय मार्च-अप्रैल से अगस्त तक रहता है, क्योंकि साल में ये शायद दो बार अंडे देते हैं। इनका घोंसला सुन्दर कटोरेनुमा रहता है, जो पतली घास और रेशों से बनाया जाता है। इसका भीतरी हिस्सा नरम घास और पतली जड़ों से मुलायम कर दिया जाता है, जिसमें बैठकर मादा दो-तीन अंडे देती है। ये अंडे ललछौंह होते हैं और उनका रंग हलका गुलाबीपन लिये सफेद रहता है। इन अंडों पर लाल, कत्थई तथा बैंगनी बिन्दियाँ और चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

अंडों की नाप ०.८८×०.६५ इंच होती है।

## ४० सिपाही बुलबुल (Red-whis Kered Bulbul : Otocompsa Jocosa)

**पर्याय** : कमेरा, कैंड़री, अवंतसक गोवत्सक।

**पहचान** : यह भूरा बुलबुल अपनी नुकीली चोंच और गाल पर के लाल गलमुच्छों के कारण बहुत आसानी से पहचान लिया जाता है। इसकी दुम के नीचे का हिस्सा भी लाल रहता है।

**रंग-रूप** : सिपाही बुलबुल आठ इंच का सुन्दर बुलबुल है जिसके नर और मादा एक रंग-रूप के होते हैं। इसके शरीर का ऊपरी हिस्सा बादामी-भूरा होता है, जो दुम और डैनों पर भूरा हो जाता है। नीचे का हिस्सा सफेद रहता है, जिसमें दोनों बगल हलके भूरेपन की झलक रहती है। दुम के नीचे का हिस्सा गुलदुम बुलबुल की तरह लाल होता है। सिर और गुद्दी का हिस्सा कलछौंह भूरा रहता है, जो इसकी सफेद गरदन के नीचे कंठेनुमा फैल जाता है। इसकी आँख के नीचे पतली सफेद धारी-सी

होती है, और दोनों गालों के पर गलमुच्छे की तरह उभरे हुए होते हैं। बाल चटक लाल रंग के होते हैं। इसकी चोटी सीधी और नुकीली होती है।

आँख की पुतली भूरी और चोंच तथा पैर काले रहते हैं।



सिपाही बुलबुल

**निवास** : सिपाही बुलबुल भी हमारे देश से बाहर चीन तक फैला हुआ है। इसे तराई का पक्षी ही कहना ठीक होगा। इसकी कई जातियाँ हमारे यहाँ पायी जाती हैं जो स्थानभेद के कारण स्वभाव में एक-जैसी होकर भी रंग में कुछ अलग होती हैं। उत्तर के पक्षी तराई और मैदानों में रहना पसन्द करते हैं, लेकिन दक्षिण के पक्षियों को पहाड़ ज्यादा पसन्द हैं। यह हमारे यहाँ का बारहमासी पक्षी है, जो हिमालय की तराई, उत्तर बिहार और बंगाल में काफी संख्या में पाया जाता है। इसकी अन्य जातियाँ हमारे सारे देश में फैली हुई हैं।

**विवरण** : सिपाही बुलबुल को यह नाम उसके लाल गलमुच्छों के कारण मिला है। इसे कँड़री भी कहते हैं और कमेरा भी, लेकिन यह अधिकतर अपने इसी नाम से पुकारा जाता है। यह हमारे बाग-बगीचों का बहुत परिचित पक्षी है, जिसे हम अक्सर जोड़े में इधर-उधर उड़ते देखते हैं। इसकी आदतें बहुत कुछ गुलदुम बुलबुल से मिलती-जुलती हैं, लेकिन यह उसकी तरह लड़ाने के लिए नहीं पाला जाता। इसे भी घने जंगलों की जगह, सरपत और झाड़ियों से भरे हुए मैदान, बाग-बगीचों और बस्तियों के आस-पास के खेत और खुले मैदान पसन्द हैं। यह बहुत ही खुश रहने वाली चिड़िया है जो मीठी बोली बोलती है। वैसे तो यह जोड़े में रहती है, लेकिन जिस स्थान को यह पसंद कर लेती है वहाँ इसकी काफी संख्या देखी जा सकती है। यह उड़ने और गिरहबाजी में काफी उस्ताद होती है।

इनका मुख्य भोजन फल-फूल हैं। कीड़े-मकोड़े भी काफी पसंद हैं; लेकिन अन्य बुलबुलों की तरह, नरम फल ही इनको अधिक पसन्द हैं और बाग-बगीचों पर इनका जबरदस्त हमला मीठे फलों के लिए होता है।

**घोंसला** : इस बुलबुल के अंडा देने और घोंसला बनाने का समय फरवरी से जून तक रहता है, तब यह घास-फूस, पतली जड़ों तथा रेशों का सुन्दर कटोरेनुमा घोंसला बनाती है, जिसका भीतरी हिस्सा नरम घास वगैरह से मुलायम कर दिया जाता है। घोंसले किसी झाड़ी में ४–५ फुट की ऊँचाई पर रहते हैं। समय आने पर मादा इसमें ३–४ अंडे देती है, जो गुलाबीपन लिये सफेद होते हैं और जिन पर लाल कत्थई, बैंगनी और गाढ़ी भूरी घनी चित्तियाँ रहती और बिन्दियाँ पड़ी रहती हैं।

नाप में ये अंडे ०.८५ × ०.६५ इंच के होते हैं।

## ४१ पीली बुलबुल (Yellow-browed Eulbul : Iole Icterica)

**पर्याय** : जर्द बुलबुल, पहाड़ी काँगड़ा, हारिद्र गोवत्सक।

**पहचान** : यह पीले रंग की बुलबुल अपनी पीली पोशाक के कारण अन्य बुलबुलों से आसानी से पहचान ली जाती है। इसका ऊपरी हिस्सा पीलापन लिये हरा और नीचे का पीला रहता है। इसकी आँख के ऊपर एक पीली पट्टी चली जाती है।



पीली बुलबुल

**रंग-रूप** : अन्य बुलबुलों की तरह यह बुलबुल भी लगभग ८ इंच की होती है और इसके भी लगभग नर-मादा एक ही रंग के होते हैं। इसके शरीर का ऊपरी हिस्सा पीलापन लिये हरा या जैतूनी रंग का होता है और नीचे का सारा हिस्सा चटक पीला। डैने गाढ़े भूरे और पीले होते हैं और चोंच की जड़ से आँख के ऊपर तक एक पतली पट्टी चली जाती है। आँख की पुतली खूनी लाल, चोंच काही और पैर सिलेटी-नीले होते हैं।

**निवास** : पीली बुलबुल दक्षिण की निवासी है जो पश्चिमी घाट और नीलगिरि में पायी जाती है। वैसे तो ये ६,००० या ७,००० फुट तक भी पायी जाती हैं, लेकिन इनकी अधिक संख्या ३–४ हजार फुट की ऊँचाई तक ही दिखाई पड़ती है।

**विवरण** : पीली बुलबुल पश्चिमी घाट का बहुत परिचित पक्षी है, जो प्रायः गिरोह में दिखाई पड़ता है। यह पहाड़ी जंगलों में तो रहता ही है, लेकिन मौका पाने पर आबादी के निकट के बाग-बगीचों में भी पहुँच जाता है। यह बहुत शोर मचाने वाला पक्षी है, जो कभी-कभी बहुत सुरीली बोली में बोलता है। अन्य बुलबुलों की तरह, यह भी काफी चंचल होता है और दिन भर अपनी खुराक की तलाश में इधर-उधर फुदकता रहता है। इसकी और सब आदतें दूसरी बुलबुलों से मिलती-जुलती हैं।

इसका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े हैं, लेकिन यह कीड़े-मकोड़ों से ज्यादा फल ही पसन्द करता है।

**घोंसला** : इसके अंडा देने और घोंसला बनाने का समय फरवरी से जून तक रहता है। यह घास-फूस का छिछला कटोरे-नुमा घोंसला बनाता है और इसे किसी झाड़ी में ५–६ फुट की ऊँचाई पर रखता है।

समय आने पर मादा प्रायः दो-चार अंडे देती है, जिनका रंग सफेद या गुलाबीपन लिये सफेद रहता है।

इन अंडों की नाप लगभग ०.९ × ०.६५ इंच होती है।

## ४२ मछरिया बुलबुल (White-browed Bulbul : Pycnonotus Luteolus)

**पर्याय** : सितभू गोवत्सक।

**पहचान** : इस बुलबुल का ऊपरी हिस्सा हरा या जैतूनी होता है और नीचे का हिस्सा हलका और सफेदी मायल। यह अपनी आँख के ऊपर की टेढ़ी भौंह जैसी सफेद पट्टी के कारण बड़ी आसानी से पहचाना जा सकता है।

**रंग-रूप** : यह बुलबुल और बुलबुलों से कद में कुछ छोटा होता है। इसकी लंबाई ७ इंच होती है। इसके शरीर का ऊपरी हिस्सा गंदा हरा या जैतूनी रंग का होता है, जो नीचे हलका और पिलछौंह सफेद हो जाता है। दुम के नीचे का हिस्सा पिलछौंह रहता है और सिर के हिस्से में कुछ राखीपन मिला रहता है। आँख के ऊपर से एक सफेद टेढ़ी पट्टी चली जाती है, जो दूर से भौंह जैसी दिखाई पड़ती है। आँख के नीचे भी कुछ गोलाई लिये सफेदी रहती है। गरदन पिलछौंह होती है और सिर पर किसी किस्म की चोटी नहीं होती। इसकी आँख की पुतली गाढ़ी भूरी, चोंच काली और पैर प्याजी रंग के होते हैं।

**निवास** : यह बुलबुल दक्षिणी भारत का निवासी है और पश्चिम में लगभग बड़ोदा से पूर्व में राजमहल के दक्षिण तक पाया जाता है। यह बंगाल, उड़ीसा और पूर्वी तथा पश्चिमी घाट में अधिक और मध्य भारत में कम दिखाई पड़ता है।

**विवरण** : इस बुलबुल को मछरिया बुलबुल इसलिए कहा जाता है कि इसकी आँख के ऊपर मछली-जैसी सफेद पट्टी होती है। यह हमारे यहाँ का बारहमासी पक्षी है, जो हमारे देश को छोड़कर और कहीं नहीं जाता। इसे घने जंगल कतई पसंद नहीं हैं और यह ज्यादातर झाड़ी या सरपत से भरे हुए मैदानों को ही पसंद करता है। यह बस्तियों के निकट भी पहुँच जाता है, जहाँ नागफनी और सेंहुड़ आदि के काँटेदार झुरमुटों में इसको देखना कुछ कठिन नहीं है। महाराष्ट्र और मद्रास के बाग-बगीचों का यह बहुत परिचित पक्षी है। यह बहुत शोर मचाता है, जो लड़ने के समय कर्कश स्वर करने के साथ-साथ मीठी बोली भी बोल लेता है। इसे मैदानों का पक्षी कहना ही ठीक होगा, क्योंकि यह पहाड़ी स्थानों पर ज्यादा दूर न चढ़ कर तराई में ही अपना समय काट देना अधिक पसन्द करता है।

इसका मुख्य भोजन फल-फूल है, लेकिन यह कीड़े-मकोड़े भी खूब मजे में खा लेता है।

**घोंसला** : इस मछरिया बुलबुल के अंडा देने और घोंसला बनाने का समय सितम्बर तक रहता है। मादा घोंसले में बैठ कर दो-तीन अंडे देती है। इसका घोंसला ढीला और कटोरेनुमा होता है। इसकी बनावट में भी ज्यादा सफाई नहीं रहती। ये घोंसले घास-फूस और जड़ों आदि से बनाये जाते हैं, जो जमीन से तीन-चार फुट की ऊँचाई पर रहते हैं। इनके अंडों की संख्या भी दो-तीन ही रहती है, जिनका रंग गुलाबीपन लिये सफेद होता है। उन पर लाल, कत्थई, जैतूनी तथा गाढ़ी भूरी चित्तियाँ और बिन्दियाँ पड़ी रहती हैं।

अंडों की नाप लगभग ०.९ × ०.६ इंच होती है।

## ४३ पहाड़ी रेंगनी (Himalayan Tree Creeper : Certhia Himalayana)

**पर्याय** : चुवा सौराई, हिमगिरि वृक्षसर्पी।

**पहचान** : यह टेढ़ी चोंच वाली छोटी सी चिड़िया है जिसे हम पेड़ के तनों पर कटफोरिया की तरह चिपक कर चढ़ते-उतरते देख सकते हैं। इसका ऊपर का रंग चित्तीदार भूरा और नीचे का सफेदी-मायल रहता है। दुम पर काली-काली आड़ी लकीरें पड़ी रहती हैं।

**रंग-रूप** : यह रेंगनी कद में लगभग ६ इंच की होती है। इसके नर-मादा एक रंग-रूप के होते हैं। शरीर का ऊपरी हिस्सा

कलछौंह भूरे रंग का होता है, जिस पर चित्तियाँ पड़ी रहती हैं। गले और गरदन का निचला हिस्सा सफेद रहता है और उसके बाद का कुल निचला हिस्सा हलका भूरा होता है। इसकी आँख के ऊपर एक स्पष्ट आड़ी रेखा चोंच की जड़ के पास से शुरू होकर आँख के ऊपर होकर भौंह की तरह चली जाती है। दुम की जड़ के पास का रंग कत्थई रहता है।



पहाड़ी रेंगनी

आँख की पुतली गाढ़े भूरे रंग की, लम्बी और टेढ़ी, चोंच काले रंग की और पैर प्याज़ी रंग के होते हैं।

**निवास**: यह रेंगनी पहाड़ की चिड़िया है जो हिमालय के सारे पश्चिमोत्तर प्रान्त में अल्मोड़ा से हज़ारा तक काफी संख्या में पायी जाती है। कश्मीर में भी यह बहुतायत से पायी जाती है। पहाड़ों पर यह लगभग बारह हजार फुट तक पायी जाती है, लेकिन जाड़ों में नीचे मैदानों तक आ जाती है।

**विवरण** : यह रेंगनी पेड़ के तनों पर भी बड़ी आसानी से चढ़ती-उतरती है और पेड़ की पपड़ियों के नीचे से कीड़े-मकोड़ों को निकाल-निकाल कर अपना पेट भरती है। यह जंगलों में इतनी काफी संख्या में दिखाई पड़ती है कि वहाँ इसको तलाशने में ज्यादा तकलीफ नहीं उठानी पड़ती। इसके पेड़ पर चिपक कर चढ़ने का ढंग निराला है, क्योंकि न तो चढ़ते समय यह कठफोर की तरह जरूरत पड़ने पर नीचे खिसकती ही है, न ही कठफोरिया की तरह इधर-उधर का चक्कर ही लगाती है। यह तो पेड़ के तने पर सीधे चढ़ती जाती है और जब वहाँ पहुँच जाती है जहाँ से डालियाँ फूटती हैं, तो हवा में तैरती सी नीचे आ जाती है और दूसरे पेड़ के तने की जड़ के पास से फिर चढ़ने का काम शुरू कर देती है। दिन भर इसका यही कार्यक्रम रहता है। कभी-कभी यह किसी मोटी डाल की ओर भी झुक जाती है और निचले हिस्से की ओर से जमीन की ओर पीठ करके सिरे तक पहुँच जाती है और वहीं से उड़ कर दूसरे पेड़ की जड़ के पास से फिर ऊपर की ओर चढ़ने लगती है। इसका पूरा दिन इसी प्रकार बीतता है।

इसकी बोली तेज़ जरूर होती है, लेकिन उसमें कुछ मिठास नहीं रहती।

**घोंसला** : इसके अंडा देने का समय मार्च से मई तक रहता है, जब यह पतली घास, सूखी पत्तियों और तमाम चीजों से टुकड़े इकट्ठे करके अपना घोंसला बनाती है। यह घोंसला भीतर की ओर परों और बालों से मुलायम बना लिया जाता है, जिसमें बैठ कर मादा ५–६ अंडे देती है। ये घोंसले किसी सूराख या पेड़ के खोखले में रखे जाते हैं। इनके अंडों का रंग सफेद रहता है, जिन पर लाल और भूरी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं। ये चित्तियाँ ज्यादातर अंडे के पेंदे की ओर रहती हैं।

इन अंडों की नाप लगभग ०.६८ × ०.५० इंच होती है।

## ४४ मुसचिरी (Wallcreeper : Tichodroma Muraria)

**पर्याय** : दिवाल गैयुक, भीत चढ़नी, भित्ति-सर्पी।

**पहचान** : यह छोटी-सी सिलेटी रंग की चिड़िया है, जो अपनी लम्बी और पतली चोंच तथा लाल डैनों और सफेद चित्तों के कारण बड़ी आसानी से पहचानी जा सकती है।



मुसचिरी

**रंग-रूप** : इस पक्षी की लम्बाई ७ इंच होती है। इसके नर-मादा एक रंग-रूप के होते हैं। ग्रीष्मकाल में इनका सारा शरीर राखी रंग का रहता है, जिसमें गला और ठोड़ी काली होती है। डैनों पर दोनों ओर एक-एक लाल चित्ता रहता है और काले डैनों के कुछ परों पर सफेद चित्तियाँ भी पड़ी रहती हैं। दुम काली होती है, जो सिरे तक पहुँचते-पहुँचते सिलेटी हो जाती है। बाहरी परों में सफेदी रहती है।

शीतकाल में ठोड़ी का काला रंग सफेदी में बदल जाता है और सिर पर का हिस्सा भूरा हो जाता है।

इसकी आँख की पुतली गाढ़ी भूरी और चोंच तथा पैर काले होते हैं।

**निवास** : भीत चढ़नी का निवास-क्षेत्र वैसे तो बहुत विस्तृत है, लेकिन हमारे देश में हिमालय को इसका निवास स्थान कहा जा सकता है। यहाँ यह भूटान से कश्मीर तक लगभग १५,००० फुट तक की ऊँचाई पर पायी जाती है। यह जाड़ों में नीचे उतर आती है तब इसे तराई के आस-पास के मैदानों में भी देखा जा सकता है।

**विवरण** : भीत चढ़नी को हम पहाड़ी पक्षी ही कहेंगे, क्योंकि इसका अधिक समय पहाड़ों पर ही बीतता है। यह अपना सारा समय नदी के खड़े कगारों, पहाड़ की चट्टानों, भीटे की दीवारों और इसी प्रकार के स्थानों पर बिताती है, जहाँ इसको दीवार या भीटों में कीड़े पकड़ कर खाने में आसानी रहे। जिस प्रकार रेंगनी पेड़ पर चढ़ कर कीड़े-मकोड़े पकड़ती है, उसी प्रकार इसे पहाड़ की चट्टानों पर और कगारों में से अपनी खुराक तलाश करनी पड़ती है। यह अपने पंख फैला कर दीवार से इस प्रकार चिपक जाती है कि दूर से तितली-सी जान पड़ती है और जैसे ही कोई पंखदार कीड़ा किसी दरार से निकल कर उड़ता है, यह फौरन पतेने की तरह उसके पीछे उड़ कर उसे पकड़ लेती है। उड़ने और गिरहबाजी में यह इतनी उस्ताद होती है कि इससे बच कर कोई पतिंगा जाने नहीं पाता।

इसका मुख्य भोजन कीड़े-पतिंगे हैं, जिन्हें यह अपनी टेढ़ी और लम्बी चोंच को दरारों में डाल कर बड़ी आसानी से पकड़ लेती है।

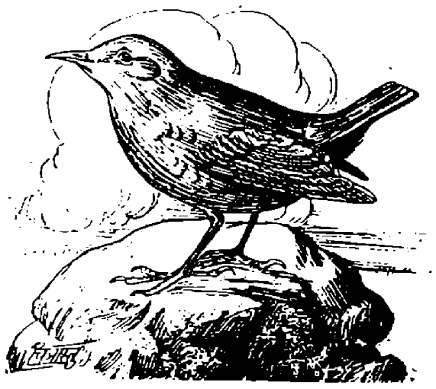
**घोंसला** : इसके अंडा देने और घोंसला बनाने का समय मई से जून तक रहता है जब यह किसी पेड़ के खोखले पर दरार में पर, ऊन, बाल और इसी प्रकार के पदार्थों को रख कर अपना घोंसला बनाती है, जिसमें मादा चार-पाँच अंडे देती है। ये अंडे सफेद होते हैं, जिन पर पेंदे की ओर कत्थई चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

इन अंडों की नाप लगभग ०.८५ × ०.५५ इंच होती है।

## ४५ चुबिया (Brown Dipper : Cinclus Pallasii)

**पर्याय** : बभ्रु स्रोत-मज्जी, नक्का, मज्जी।

**पहचान** : यह धुँधले गहरे भूरे रंग की चिड़िया है जिसके बच्चे पीले और भूरे होते हैं। यह आकार में झुकी-सी रहती है, पूँछ छोटी और चोंच नुकीली होती है। यह पोखरों और प्रपातों पर पानी की सतह पर उड़ती फिरती है, यह उड़ान जल के बिलकुल करीब ही होती है। यह बड़ी शीघ्रता से, तीव्र ध्वनि करती हुई उड़ती है और अपने बिलकुल सफेद गले और छाती के कारण आसानी से पहचान ली जाती है।



चुबिया

**रंग-रूप** : यह पक्षी आठ इंच लम्बा होता है। इसके नर और मादा समान होते हैं। सब पंख हल्के चाकलेटी भूरे रंग के होते हैं, पलकें सफेद परों से ढकी रहती हैं और पुतलियाँ गहरे भूरे रंग की होती हैं। चोंच काली और टाँगें हल्के भूरे रंग की होती हैं।

**निवास** : यह पक्षी उत्तरी एशिया, साइबेरिया और मंचूरिया से हिमालय तक सर्वत्र पाया जाता है। इसकी कई किस्में हैं जो अफगानिस्तान, तुर्किस्तान, हिमालय, पूर्वी आसाम तथा ब्रह्मपुत्र के उत्तरी भागों में करीब ६,००० से १२,००० फुट तक पायी जाती हैं।

**विवरण** : यह पूर्णतया जलीय पक्षी है, जो सामान्यतया हिमालय की बारहमासी नदियों पर उड़ता हुआ पाया जाता है। यह पानी में ही अपना आहार भी खोज लेता है। विशेष रूप से यह जल के कीड़े ही खाता है, जिनको यह तैर कर, डुबकी लगा कर और पानी के ऊपर-ऊपर चल कर पकड़ लेता है। इसका आकार इन सभी प्रयत्नों में सहायक होता है। यह छोटा, गोल-मटोल और बलवान् होता है। इसके पंख बहुत घने होते हैं, जिनमें पानी अन्दर नहीं जा सकता। यहाँ तक कि आँखें भी पंखों से घिरी रहती हैं। सिर आगे की ओर संकुचित होता है और सिर के आगे के बाल बहुत महीन तथा बड़े-बड़े होते हैं।

यह बहुत ही चुस्त चिड़िया है जो कभी भी शान्त नहीं रहती, हमेशा उद्योग में लगी रहती है। इसकी आवाज़ कठोर होती है जो तेज़ पानी की गरज को भी पार कर जाती है। इसके शरीर को देखते हुए इसके पर देखने में छोटे होते हैं।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय दिसम्बर से मई तक होता है। इसका घोंसला बड़ा और गोल होता है, जो सेवार, घास और तिनकों से बना होता है और जिसमें घुसने का दरवाज़ा बड़ा होता है। अंडा रखने का स्थान जड़ों और पत्तियों से बँधा और ढका होता है। घोंसला बनाने का स्थान बहुत ही संकीर्ण, सुरक्षित और पानी के निकट रहता है।

मादा चार-पांच अंडे देती है। अंडे बैंजाबी, सफेद, कोमल और चिकने होते हैं परन्तु उनमें चमक नहीं होती। इसके अंडों का आकार १.०० ०.७२ इंच होता है।

## ४६ पिद्दा (Indian Blue-chat : Luscinia Brunnea)

**पर्याय :** नील अश्वक।

**पहचान :** गरमियों में यह चिड़िया हिमालय के घने वृक्षों के नीचे पायी जाती है और जाड़ों में यह दक्षिणी भारत तक फैल जाती है। नर ऊपर की ओर गहरा नीला और नीचे की तरफ अखरोटी रंग का होता है। आँखों पर बड़ी स्पष्ट सफेद धारी होती है। नीचे का भाग सफेद रंग का होता है। इसका गाना भी अनोखा होता है। मादा नर से धुमैली होती है।

**रंग-रूप :** पिद्दा की लम्बाई ५ इंच की होती है। नर के ऊपरी पंख और पूंछ हलके नीले रंग के होते हैं। पंखों के भीतरी हिस्से भूरे और हलके काले होते हैं। आँखों पर बिलकुल स्पष्ट सफेद धारी होती है। चेहरे के इधर-उधर के हिस्से भूरे और हलके काले होते हैं तथा गरदन काले रंग की होती है। गला, छाती और शरीर के दोनों हिस्से चमकदार अखरोटी रंग के होते हैं। ठोड़ी के पास का रंग पीला होता है। जाँघ सिलेटी और नीचे का बाकी भाग सफेदी मायल होता है।

मादा के ऊपरी पंख और पूंछ जैतूनी भूरे रंग के होते हैं। पंखों के सिरे और पूंछ के ऊपरी भाग भी भूरे होते हैं। चेहरे के दोनों हिस्से भूरे और पिलछौंह होते हैं। ठोड़ी, गला, पेट और पूंछ के नीचे का रंग सफेद होता है, नीचे का बाकी हिस्सा जैतूनी-भूरा होता है। पुतलियाँ गहरी भूरी होती हैं, नर की चोंच काली और मादा की गहरी भूरी होती है। टाँगें कलछौंह भूरी होती हैं।

**निवास :** पिद्दा पक्षी कश्मीर से भूटान तक ६,५०० से ११,००० फुट तक दिखाई पड़ता है। वैसे जाड़ों में यह दक्षिणी भारत में ट्रावनकोर तक निवास करता है। अगस्त से अक्तूबर और मार्च से मई के मध्य तक यह दक्षिणी पठारों में इधर-उधर उड़ता फिरता है।

**विवरण :** यह चिड़िया अपने जोड़ा बाँधने की ऋतु में साधारणतया पश्चिमी हिमालय की पर्वत-श्रेणियों में देखी जाती है। कश्मीर, शिमला, गढ़वाल में तो यह बहुतायत से मिलती है, फिर भी लोगों द्वारा प्रायः नहीं देखी जाती। इसकी मीठी बोली तीन-चार प्रकार की होती है, परन्तु स्वर सभी का एक-सा होता है। "जेरी-जेरी" "फी-फी" "ट्री-ट्री" की बोली यह चढ़ाव के साथ बोलती है। इसकी मुख्य विशेषता पूंछ हिलाने की है जिसे यह झटके से ऊपर नीचे करती रहती है। जाड़ों में यह चिड़िया सायेदार स्थानों में पायी जाती है। पथरीली जगहों और नदी की घाटियों के किनारे भी यह चिड़िया फुदकती देखी जा सकती है।

**घोंसला :** इसका जोड़ा बाँधने का समय मई से जुलाई के अन्त तक होता है। घोंसला सूखी पत्तियों, ऊन, बाल और पंखों से बना होता है। यह जमीन पर ढालू स्थान पर रखा रहता है जो सरो आदि से घिरा होता है।

मादा प्रायः चार अंडे देती है जो आकार में गोल, देखने में सुन्दर और चिकने परन्तु बिना चमक के होते हैं। अंडे पीले व नीले रंग के होते हैं। इन पर कोई चित्तियाँ और निशान नहीं होते।

नाप में ये अंडे ०.८० × ०.६० इंच के होते हैं।

## ४७ काला पिद्दा (Pied Bush-chat : Saxicola Caprata)

**पर्याय :** अश्म अश्वक, पिद्दा।

**पहचान :** यह मैदानी और छोटी-छोटी पहाड़ियों में सर्वत्र पायी जाने वाली चिड़िया है। इसका नर काला और सफेद होता है, परन्तु मादा गहरे भूरे रंग की होती है जिसकी पूंछ जड़ पर मुर्चीला रंग लिये होती है। इसके बैठने का अड्डा लम्बी-लम्बी घासों तथा झाड़ियों पर होता है। थोड़ी-थोड़ी देर बाद यह अपने स्थान पर से कीड़े-मकोड़े पकड़ने के लिए जमीन पर उतरती रहती है।

**रंग-रूप :** यह पांच इंच लम्बी चिड़िया है, जिसके नर का रंग ऊपर की तरफ बिलकुल काला होता है। पूंछ की जड़, पेट के निचले हिस्से और डैने के कुछ पर सफेद होते हैं। पंखों के किनारे पर भूरे रंग की धारी रहती है। इसकी मादा के ऊपरी पंख कुछ भूरे होते हैं। पूंछ की जड़ के पास भूरे रंग का धब्बा होता है। पंख और पूंछ गहरे भूरे रंग के होते हैं। पंखों के किनारे पीले होते हैं। निचले पंख गहरे भूरे होते हैं, जो छाती की तरफ से और भी गहरे होते जाते हैं। जाड़ों में पंखों के किनारे पर चौड़ी, हलकी, भूरे रंग की धारी पड़ जाती है जिससे कि यह देखने में पीली लगती है।

**निवास :** काले पिद्दे भारत में सर्वत्र पाये जाते हैं और यहाँ इनकी तीन किस्में मिलती हैं, यद्यपि इनका विस्तृत वर्गीकरण नहीं हो सका है। इसके अतिरिक्त यह पक्षी फिलीपाइन, बर्मा और अफगानिस्तान में भी मिलता है।

**विवरण :** यह भारतीय मैदानों की जानी पहचानी चिड़िया है। नर के पंख और उसकी आदतें स्वतः लोगों को आकर्षित कर लेती हैं। यह घने जंगलों में रहना पसन्द नहीं करती, बल्कि


राम चकोर
छोटी सिलही
कोकलास
चिलमे
नकटा
लुंगी
सुरख़ाब

अधिकतर खेतों, घास के मैदानों तथा झाड़ियों से भरे हुए मैदानों में ही स्वाभाविक रूप से उड़ती पायी जाती है। उत्तरी भारत में नदी के पास के स्थान, जहाँ झाऊ वगैरह अधिक होते हैं, इसके रहने के प्रिय स्थान हैं।

यह अपना सारा भोजन पृथ्वी से ग्रहण करती है। यह अपने स्थान से उड़ कर तथा जमीन से अपना आहार लेकर संतोष के साथ पूँछ फुदकाती हुई अपने स्थान पर वापस चली जाती है। कभी-कभी यह उड़ते हुए कीड़ों को भी पकड़ लेती है। इसके मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े हैं।

**घोंसला** : जोड़ा बाँधने के समय नर अपने परों को कँपा-कँपा कर मादा को प्रसन्न करता है। वह अपने कंधों को ऊपर उठा कर इस प्रकार मटकाता है जिसे देख कर ऐसा लगता है कि वह मादा को अपने सफेद धब्बे दिखा कर रिझा रहा हो। इसकी उड़ान भी अत्यन्त सुन्दर होती है। झाड़ी की चोटी पर यह अपनी पूँछ फैला कर धीमी-धीमी आवाज पैदा करता और गाता हुआ उड़ता फिरता है। इस उड़ान में पंख के सफेद धब्बों का भी सुन्दर प्रदर्शन हो जाता है। इसका गाना छोटा परन्तु मीठा होता है। वैसे इसकी सामान्य बोली कठोर होती है, जो दो पत्थरों के टकराने-जैसी होती है।

इसके जोड़ा बाँधने का समय मार्च से अगस्त तक है, पर घोंसले विशेष रूप से अप्रैल और जून में ही मिलते हैं। घोंसले छोटी घास की जड़ों, बाल, ऊन तथा वृक्षों के महीन रेशों से बने होते हैं। घोंसले जमीन के गड्ढों में पाये जाते हैं, जो घास से ढके होते हैं। ये प्रायः इमारतों के सूराखों में भी घोंसले बना लेते हैं, पर वैसे तो जमीन में घोंसला बनाने की ही इनकी विशेष आदत है।

मादा तीन से पाँच तक अंडे देती है। अंडे छोटे, सुडौल तथा कुछ चमकीले होते हैं। इनका रंग आसमानी पथरीला या गुलाबीपन लिये सफेद होता है। अंडों पर पीले और प्याजी रंग के छिट्टे होते हैं, जो चौड़े सिरे की ओर घने होते हैं। इन अंडों का आकार ०.६७ × ०.५५ इंच होता है।

## ४८ कलचिरी (Stone chat : Saxicola Torquata)

**पर्याय** : गिनवा, क्षुप अश्वक।

**पहचान** : यह चिड़िया खुले हुए मैदानों और पहाड़ियों पर सर्वत्र देखी जा सकती है। नर काला होता है जो अपने सफेद सिर, ललछौंह गरदन तथा छाती और कन्धों पर की सफेद पटरियों के कारण आसानी से पहचाना जा सकता है। मादा कुछ सुस्त और कम चटकीली होती है।



कलचिरी

**रंग-रूप** : इसकी लंबाई ५ इंच की होती है। नर की पूँछ व ऊपरी भाग गहरे भूरे रंग का होता है। पंखों और पूँछ की जड़ पर सफेद धब्बा होता है। सिर के दोनों तरफ ठोड़ी और गले का रंग काला होता है। छाती का रंग मटमैला नारंगी होता है, जो नीचे के मटमैले पीले रंग में मिल जाता है। कभी-कभी शरद के आरम्भ में इसका रंग भी बदल जाता है। मादा के ऊपरी पंख भूरे होते हैं, पंखों पर हलके-हलके सफेद छींटे होते हैं और पूँछ की जड़ का रंग भूरा होता है। आँख के ऊपर एक लकीर होती है। ठोड़ी और गला पीला या मटमैला पीला होता है। बाकी सब निचले पंख मटमैले-पीले और नारंगी होते हैं। पुतलियाँ गहरे भूरे रंग की होती हैं। चोंच और पंजे काले होते हैं।

**निवास** : यूँ तो कलचिरी की अनेक जातियाँ यूरोप, अफ्रीका और एशिया के विभिन्न भागों में पायी जाती हैं, परन्तु हमारा संबन्ध तो हिमालय पर पायी जाने वाली किस्म से है। जाड़ों में यह मैदानों की तरफ उतर आती है, परन्तु दक्षिण की ओर अधिक नहीं जाती है।

**विवरण** : इन्हें जंगल पसन्द नहीं हैं। गरमियों में भी जब ये हिमालय पर रहती हैं तो ये खुले स्थानों पर ही उड़ती हैं, जैसे सीढ़ीनुमा खेत, चरागाहों या छोटी-छोटी चट्टानों से ढकी ढलानें। जाड़ों में ये गन्ने, कपास इत्यादि के खेतों में पायी जाती हैं। सभी स्थानों पर इनकी आदत एक-सी होती है। ये झाड़ियों की चोटियों और बड़े-बड़े पत्थरों पर से उड़-उड़ कर जमीन पर के कीड़ों को मार कर खाती हैं। ये बहुत चंचल पर शर्मीली चिड़िया हैं जो हमेशा अपने पंखों और पूँछ को झटका देती रहती हैं। इनकी उड़ान तेज होती है। इनकी बोली दो पत्थरों के टकराने की सी आवाज करती है। ये शक्की और उपद्रवी प्रकृति की चिड़ियाँ हैं। इनका गाना सुनने में मीठा, लहराता-सा और बहुत छोटा होता है, जो काफी पास से ही सुना जा सकता है।

**घोंसला** : इनके जोड़ा बाँधने का समय मार्च से जुलाई तक रहता है, लेकिन अधिकतर इनके अंडे अप्रैल और मई में ही देखने को मिलते हैं। कभी-कभी एक ही मौसम में यह दो बार अंडे देती हैं। इनका घोंसला सूखी पत्तियों का बना होता है जिसमें घास, बाल, पंख तथा ऊन की मिलावट रहती है। ये घोंसले दीवारों के छेदों, चट्टानों के नीचे तथा नदियों के किनारे बनाये जाते हैं। ये अंडे बिना चमक के होते हैं। इनका रंग हलका नारंगी या सफेदीपन लिये हरा होता है। अंडों पर पीले और ललछौंह भूरे धब्बे होते हैं।

आकार में ये अंडे ०.७० × ०.५३ इंच के होते हैं।

## ४९ धुमैलापिद्दा (Dark-grey Bush-chat : Rhodophila Ferrea)

**पर्याय** : धूसर क्षुप अश्वक।

**पहचान** : साधारण तौर पर यह हिमालय की चिड़िया है जो विशेष रूप से पहाड़ियों के पेड़ों और झाड़ियों में ही पायी जाती है।

**रंग-रूप** : यह ६ इंच की गहरे सिलेटी भूरे रंग की चिड़िया है। इसका ऊपरी रंग गहरा भूरा होता है, जिसमें काले रंग की मिलावट रहती है। डैने काले होते हैं, जिनके किनारे भूरे होते हैं तथा जिनके अन्दरूनी का भाग सफेद होता है। पूँछ काली होती है। परों के किनारे सफेद होते हैं। आँखों पर सफेद चौड़ी पट्टी होती है। सिर के दोनों सिरे काले तथा निचले सभी पंख सफेद होते हैं, जो अगल-बगल सिलेटी मायल रहते हैं।

**निवास** : धुमैला पिद्दा अफगानिस्तान से पूर्वी आसाम तक ४,००० से १०,००० फुट तक की ऊँचाई पर मिलता है। जाड़ों में यह निचले मैदानों की ओर उड़ जाता है। इन दिनों यह पूर्वी बंगाल और आसाम की जल-धाराओं के आस-पास रहता है, लेकिन पश्चिमी मैदानों में भी यह छिट-पुट रूप से देखा जाता है।

**विवरण** : यह हिमालय के स्वास्थ्यवर्धक पहाड़ी स्थानों की प्रसिद्ध और ढीठ चिड़िया है जो बाग-गीचों में रहना अधिक पसंद करती है और मनुष्यों से दूर नहीं भागती। झाड़ियों की फुनगियों पर रहना इसकी अपनी खास आदत है। ऐसे ही स्थानों से नर पिद्दा अपना सुन्दर संगीत सुनाता है जिसके आरोही स्वर तार सप्तक तक पहुँच कर अचानक मौन हो जाते हैं।

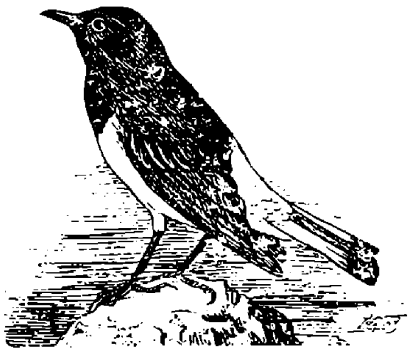
यह पक्षी प्रायः जमीन पर के कीड़े-मकोड़े ही खाता है। परन्तु कभी-कभी उड़ते हुए पतिंगों को भी लपक लेता है। अपनी पूँछ को कँपा-कँपा कर घड़ी में चाभी भरने जैसे जीं-जीं स्वरों में शोर मचाना इसकी एक खास आदत है।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय अप्रैल से जुलाई के अन्त तक रहता है। मादा कभी-कभी एक ही मौसम में, और प्रायः उसी घोंसले में दो बार अंडे देती है। जब यह घोंसला बनाये रखती है तो उन दिनों यह काफी सतर्क रहती है। इसका घोंसला कलचिरी के घोंसले-जैसा ही होता है। यह घोंसला सूखी घास तथा घास के मुलायम तिनकों, जड़ों, ऊन, घोड़े के बालों आदि का बना होता है। घोंसला किसी चट्टान के नीचे घास पर या किसी छेद में रखा रहता है। मादा चार पाँच की संख्या में अंडे देती है। अंडे बड़े सुन्दर और हलकी-सी चमक लिये होते हैं। इनका रंग हलका नीला होता है, जिन पर हलके लाल धब्बे होते हैं। इन धब्बों के कारण अंडे भूरे दिखाई पड़ते हैं। नाप में ये अंडे ०.७२ × ०.५७ इंच के होते हैं।

## ५० पिदारा (Pied wheatear : Oenanthe Picata)

**पर्याय** : शबल अश्वक, अबलखा पिद्दा।

**पहचान** : यह सूखे प्रदेशों में दीवारों, चट्टानों इत्यादि पर बैठी दीखती है और नीची तथा तेज उड़ान भरती है।



पिदारा

**रंग-रूप** : पिदारा की लम्बाई ७ इंच की होती है। नर का सारा शरीर काला होता है, केवल पूँछ के ऊपरी भाग और पिछले भाग पर सफेद धब्बा होता है। छाती से नीचे की ओर तक के पंख बिलकुल सफेद होते हैं। पूँछ भी सफेद होती है। लेकिन छोर पर और बीच के हिस्से से ऊपर तक के हिस्से में काली रहती है।

इसकी मादा के ऊपरी पंख भूरे होते हैं। पिछले हिस्से और पूँछ का कुछ भाग सफेद रहता है, लेकिन नर की पूँछ का काले रंग के स्थान पर भूरा रंग होता है। डैने गहरे भूरे होते हैं और ठोड़ी, गला और छाती भूरी होती है। पुतलियाँ गहरी भूरी तथा पंजे और चोंच काले होते हैं।

**निवास** : वैसे तो यह चिड़िया बिलोचिस्तान, अफगानिस्तान इत्यादि देशों में पायी जाती है, परन्तु जाड़े के दिनों में यह राजस्थान, उत्तर प्रदेश और पंजाब के कुछ भागों तथा अन्य भारतीय प्रदेशों की तरफ चली आती है। इसकी कुछ अन्य किस्में भी हैं जो उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में पायी जाती हैं।

**विवरण** : यह सुन्दर पक्षी शीतकाल बिताने के लिए अन्य पक्षियों से काफी पहले भारत आ जाता है। सिंधु के इलाके में यह अगस्त के मध्य में ही दिखाई देने लगता है और फरवरी-मार्च तक वापस चला जाता है। यह जंगलों और नम स्थानों में रहना नहीं पसंद करता, बल्कि खुले रेगिस्तानों, छोटी-छोटी झाड़ियों वाले स्थानों में रहना अधिक पसंद करता है। यह अक्सर झोपड़ियों और पशुओं के बाड़ों के पास रहता है ताकि कीड़े इत्यादि खाने में सुविधा हो। यह पेड़ों की डालों पर बहुत कम बैठता है और अधिकतर मिट्टी की छोटी, कम ऊँची दीवारों, कुओं की मुड़ेरों आदि को ही अपने बैठने के लिए चुनता है, जहाँ पर से कीड़े आसानी से पकड़े जा सकें। इसकी उड़ान हमेशा तेज और नीची होती है, साथ ही चाहे यह फुदकता हो या बैठा हो, अपना शरीर सीधा और तना हुआ रखता है। यह मनुष्यों से दूर ही रहने का प्रयास करता है। दोपहर को यह किसी छायादार स्थान पर विश्राम करता है और रात में मकानों की छतों पर बसेरा लेता है। नर की बोली धीमी कूजने वाली होती है, जो प्रायः जाड़े में ही सुनाई पड़ती है।

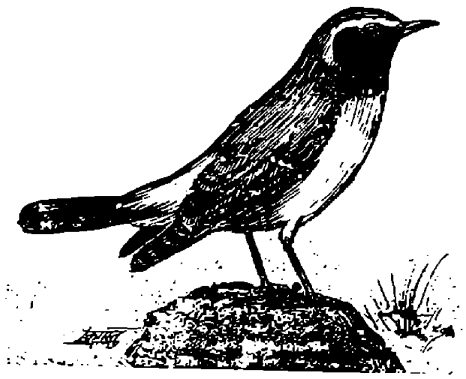
**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय अप्रैल से जून तक होता है। इसका घोंसला काफी बड़ा होता है, जो जड़ों के रेशों तथा पंखों इत्यादि से बना होता है। घोंसले में बाल और ऊन का अस्तर रहता है। ये घोंसले दीवारों, चट्टानों और कगारों के गहरे मोड़ों में बनाये जाते हैं। मादा ४ से ६ तक अंडे देती है। अंडे गोलाकार तथा देखने में सुन्दर और चमकदार होते हैं जिनका रंग संदलीपन लिये कुछ-कुछ नीला होता है, जिस पर छोटे-छोटे ललछौंह भूरे रंग के धब्बे होते हैं जो चौड़े किनारे की ओर विशेष रूप से रहते हैं। अंडों की नाप ०.८ × ०.६ इंच होती है।

## ५१ ढोलना (Desert Wheatear : Oenan The Deserti)

**पर्याय** : मरु अश्वक, ऊसरी पिदारा।

**पहचान** : ढोलना खुले मैदानों तथा झाड़ियों में फुदकती हुई देखी जा सकती है। इसकी उड़ान नीची और तेज होती है।

**रंग-रूप** : यह ६ इंच की लम्बी चिड़िया है। नर के ऊपरी पंख चमकीले पीले होते हैं। पूँछ की जड़ के पास का रंग सफेद होता है। डैने काले, पंखों के किनारे सफेद या पीले और पूँछ काली होती है। आँखों पर पीली धारी तथा सिर, गरदन और



ढोलना

ठोड़ी काली होती है। नीचे के सारे पंख पीले होते हैं जो छाती पर चमकीले होते हैं।

मादा नर के समान होती है, लेकिन धुमैली होती है तथा उसके पंख काले के स्थान पर भूरे रंग के होते हैं। पुतलियाँ भूरी तथा चोंच और पंजे काले होते हैं।

**निवास** : यों तो यह कई किस्म की होती है, परन्तु हमारा सम्बन्ध विशेष रूप से पश्चिम तथा मध्य एशिया और पूर्वी अफगानिस्तान की ओर पायी जाने वाली जाति से है जो जाड़ों में उत्तर-पश्चिमी मैदानों की ओर आ जाती है। पंजाब, दक्षिणी महाराष्ट्र, पूर्वी नागपुर आदि स्थानों में ये बहुतायत से मिलती हैं।

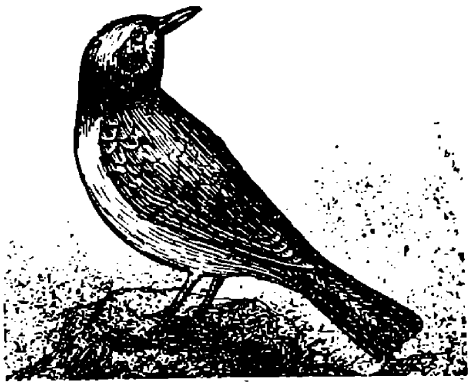
**विवरण** : यथार्थ में यह रेगिस्तानी चिड़िया है। यही कारण है कि यह उत्तर-पश्चिमी मैदानों एवं अत्यन्त सूखे और बलुए स्थानों में रहना अधिक पसंद करती है। यह दरारों वाली जमीन अधिक पसंद करती है, चाहे वह बलुई हो या चट्टानी। यह प्रायः पथरीले स्थानों की झाड़ियों में ज्यादा खुश नजर आती है। यह भारत में अक्तूबर के मध्य में ही दिखाई पड़ती है और फरवरी और मार्च में यहाँ से चली जाती है। इसकी उड़ान नीची होती है तथा ऊँचे पेड़ों को यह अपने रहने के लिए नहीं चुनती।

**घोंसला** : यह अपना भद्दा-सा घोंसला घास-फूस तथा बालों के गुच्छों आदि से बना लेती है, जिसका सुन्दर आकार नहीं होता, परन्तु उसे बाल आदि से मुलायम बना लेती है, जहाँ मादा चार-पाँच अंडे देती है। उनके रंग में पीले, नीले तथा हरे रंग की झलक होती है तथा उन पर भूरे लाल रंग के धब्बे होते हैं। इन अंडों का आकार ०.८० × ०.५६ इंच होता है।

## ५२ देसी सावाँ (Brown Rock-chat : Cercomela Fusca)

**पर्याय** : श्याम अश्वक, पत्थर चट्टा ।

**पहचान** : यह शुद्ध भारतीय चिड़िया है, जो खंड़हरों, बाहरी बस्तियों, पुराने भट्ठों और एकान्त चट्टानों, पहाड़ियों आदि में रहती है ।



देसी सावाँ

**रंग-रूप** : यह ६ इंच की लम्बी चिड़िया है जिसके नर-मादा एक ही जैसे होते हैं । कुल पंख हलके भूरे होते हैं, सिर और निचला हिस्सा लाल होता है तथा पूंछ गहरे भूरे रंग की होती है ।

पुतलियाँ गहरी भूरी तथा चोंच और पंजे काले होते हैं ।

**निवास** : यह उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पंजाब के दक्षिण और पूर्वी स्थानों में और मध्य प्रदेश के उत्तरी-पूर्वी भागों में विशेष रूप से पायी जाती है ।

**विवरण** : यह चिड़िया शुष्क, पथरीले स्थानों, गहरे भरकों और घाटियों तथा गाँवों और नगरों के आस-पास भी पायी जाती है । यह मकानों में बिना हिचके घूमा करती है, कमरों तक में उस समय भी घुस जाती है, जब लोग वहाँ बातचीत या काम में लगे हों । यह कीड़े, झींगुर इत्यादि मार कर खाती है । यह छत से नीचे, नीचे से ऊपर, इस खिड़की से उस खिड़की तक सीधी सपाट उड़ान भरा करती है ।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय मई से जून तक होता है, जब यह अपना छोटा सा घास-फूस का ढीला-ढाला घोंसला बनाती है जो किसी पत्थर आदि के सहारे ठहरा रहता है । घोंसले को बाल तथा पेड़ों के रेशों से मुलायम बना दिया जाता है, जिसमें मादा समय आने पर तीन-चार अंडे देती है । अंडे गोलाकार, सिरे की ओर नुकीले, बनावट में सुन्दर और काफी चमकदार होते हैं । रंग हलका पीला और नीला होता है। अंडों पर लाल भूरे रंग के छींटे भी होते हैं, जो चौड़े किनारे की ओर घने होते जाते हैं। अंडों का आकार ०.८२ × ०.६२ इंच का होता है ।

## ५३ पुली (Spotted Forktail : Enicurus Maculatus)

**पर्याय** : पृषद् द्विपुच्छ, धोबी ।

**पहचान** : हिमालय की यह चिड़िया पहाड़ों पर, जंगलों में और खेतों इत्यादि के आस-पास पायी जाती है । इसकी बोली तेज होती है । यह अपनी पूंछ लगातार ऊपर-नीचे हिलाती रहती है ।



पुली

**रंग-रूप** : इसकी लम्बाई ११ इंच होती है जिसमें इसकी दो भागों में बँटी हुई ६ इंच की पूंछ भी शामिल है । नर और मादा एक-से होते हैं । माथे पर एक सफेद धब्बा होता है तथा पिछले हिस्से में भी एक बड़ा सा धब्बा होता है, बाकी सब पंख काले होते हैं । गरदन के पिछले हिस्से पर गोल-गोल सफेद-सफेद धब्बे होते हैं और पीठ पर अर्धचन्द्राकार सफेद छींटे होते हैं । छाती के नीचे के पंखों पर सफेद धब्बे होते हैं तथा परों पर सफेद धारियाँ पड़ी होती हैं । उड़ने वाले पंखों पर सफेद निशान होते हैं और उनके किनारे भी सफेद होते हैं । पुतलियाँ गहरी भूरी तथा चोंच काली और पैर सफेद होते हैं ।

**निवास** : यह पूरे हिमालय में और पूर्व की ओर आसाम से भी आगे स्याम तथा चीन तक पायी जाती है । इसकी कुछ

और भी जातियाँ हैं। हिमालय पर ही इसकी दो किस्में पायी जाती हैं।

**विवरण** : यह पानी पसंद करने वाली चिड़िया है जो अक्सर पहाड़ी झरनों और जलधाराओं के आस-पास की घनी झाड़ियों में पायी जाती है। यह कीड़े-मकोड़े खाकर ही जीवित रहती है, जिन्हें यह पानी में से ही पकड़ती है। पानी के किनारे के पत्थरों पर यह भोलेपन से घूमती रहती है और अचानक चोंच मार कर कीड़े पकड़ लेती है और फिर इधर-उधर स्वच्छन्दता से उड़ती फिरती है। पुली चाहे चलायमान हो या स्थिर, इसकी पूँछ ऊपर-नीचे हिलती रहती है। उड़ते और बैठते समय यह तेज और सादी बोली बोलती है।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय अप्रैल से जून तक होता है। यह अपना घोंसला घना और झाड़ी बनाती है। घोंसला हरी घास के तिनकों, कोमल जड़ों, मिट्टी तथा पत्तियों का बना होता है। यह पानी के नजदीक किसी चट्टान के खोखले में या पेड़ों की जड़ों में अपना घोंसला रखती है। यह अक्सर तो तीन ही अंडे देती है, परन्तु कभी-कभी चार अंडे भी पाये जाते हैं। अंडे कुछ फैले और नुकीले तथा बनावट में सुन्दर और हलकी चमक लिये होते हैं। इन पर पीले या ललछौंह भूरे धब्बे होते हैं, जो बहुत घने होते हैं। इन अंडों का रंग पीलापन लिये हरा होता है, जिस पर पीली-पथरीली झलक होती है। नाप में ये अंडे ०.६८ × ०.७५ इंच के होते हैं।

## ५४ थिरथिरा (Black Redstart : Phoenicurus Ochrurus)

**पर्याय** : कृष्ण कंपेच्छुक, थरथर कंपनी, थरथर कंपा, लाल गिरदी, फैरोरा।



थिरथिरा

**पहचान** : ये पक्षी जाड़े में बहुतायत से मैदानों में दिखाई देते हैं। ये अपनी ललछौंह पूँछ को थोड़ी-थोड़ी देर बाद कँपकँपाते रहने के कारण, अन्य पक्षियों के बीच शीघ्रता से पहचाने जा सकते हैं।

**रंग-रूप** : यह छः इंच लम्बा पक्षी है। नर के पर काले होते हैं। जाड़े में इसके पर कुछ भूरे हो जाते हैं, परन्तु जाड़ा समाप्त होने पर यह पुनः अपने रंग का हो जाता है। पेट और पिछले हिस्से का रंग नारंगी-अखरोटी होता है। पूँछ के बीच के पंखों का रंग भूरा होता है। उड़ने वाले पंखों का रंग भी भूरा होता है, जिसके किनारे ललछौंह भूरे होते हैं। इसकी मादा भी भूरी होती है, उसके नीचे का रंग पीला होता है, आँख के चारों ओर पीला छल्ला होता है। पूँछ और पिछला हिस्सा अखरोटी होता है। पंखों के बीच का रंग भूरा होता है। पुतलियाँ गहरे भूरे रंग की तथा चोंच और पैर काले रंग के होते हैं।

**निवास** : यह पक्षी यूरोप, एशिया तथा अफ्रीका के कुछ भागों में भी पाया जाता है। इतने विस्तृत निवास के कारण इसकी कई जातियाँ हैं। भारत में ही इसकी दो किस्में मिलती हैं, पहली तो वह जो सितम्बर से अप्रैल तक उत्तर-पश्चिमी मैदानों में उत्तरी गुजरात तक दिखाई देती है, और दूसरी वह जो पश्चिमी भागों में जाड़ों में ही देखी जाती है। गरमियों में यह कश्मीर के ऊँचे स्थानों पर प्रायः देखी जा सकती हैं।

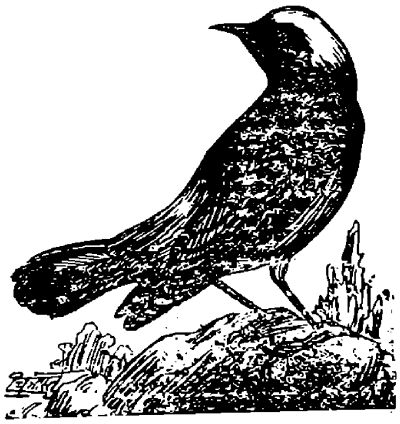
**विवरण** : यह चिड़िया दीवारों, पत्थरों इत्यादि पर अपनी सुन्दर बोली बोलती फिरती है। यह अपने घोंसलों के पास सतर्क रूप से धीमी आवाज में बोलती रहती है, परन्तु हर समय यह अपनी पूँछ भी कँपाती रहती है। यह बहुत शर्मीली और चौकन्नी चिड़िया होती है। परन्तु जाड़े में जब मैदानों में उतर आती है तब इसके लक्षण कुछ भिन्न हो जाते हैं। यह बाग-बगीचों, खेतों और मैदानों की साधारण चिड़िया हो जाती है। यह धूप-छाँह वाले स्थानों पर पेड़ों की शाखाओं में उड़ती फिरती है। इसका सामान्य भोजन कीड़े-मकोड़े हैं।

**घोंसला** : यह अपना घोंसला ऊँचे स्थानों पर बनाती है। इसके जोड़ा बाँधने का समय जून में होता है। इसका घोंसला बड़ा सुन्दर और तिनकों, जड़ों, सेवार इत्यादि का बना होता है, जिसमें पंखों, बालों इत्यादि का अस्तर लगा होता है। घोंसले दीवारों के खोखलों में और पत्थरों के नीचे बनाये जाते हैं। इसके अंडे दो प्रकार के होते हैं, कुछ तो पीले और कुछ सफेद। मादा ५ से ६ तक अंडे देती है। अंडों का आकार ०.८० × ०.६० इंच होता है।

## ५५ सितसिरा थिरथिरा (White Capped Redstart : Chaimarrhornis Leucocephala)

**पर्याय** : सितशीर्ष कंपेच्छुक, गिरचौंदिया, काली फोलिया, चुलियामती।

**पहचान** : हिमालय की नदियों और जलधाराओं के आस-पास पायी जाने वाली यह चिड़िया अपनी सफेद टोपी और काले तथा अखरोटी रंग के कारण अलग ही पहचानी जाती है।



सितसिरा थिरथिरा

**रंग-रूप** : इसकी लम्बाई सात इंच होती है। नर और मादा एक से होते हैं। सिर का ऊपरी भाग चमकते सफेद रंग का होता है, बाकी सिर, गरदन, पीठ, छाती और डैने काले होते हैं। पिछला हिस्सा और छाती के नीचे के पर चमकदार अखरोटी रंग के होते हैं। पूंछ भी अखरोटी रंग की होती है, जिसका किनारा काला होता है।

**निवास** : यह चिड़िया अफगानिस्तान की सीमा से लेकर हिमालय की ऊंची चोटियों के साथ-साथ पश्चिमी चीन तक पायी जाती है। यह प्रायः ६,००० से १६,००० फुट तक ऊँचे पहाड़ों पर मिलती है, हालाँकि कुछ पक्षी १६,००० फुट से भी अधिक ऊंचाई पर देखे गये हैं, पर घोंसले प्रायः ८,००० से १३,००० फुट तक ही मिलते हैं। सर्दियों में यह और भी नीचे उतर आती है और तराइयों तक में नदियों के किनारे-किनारे देखी जा सकती है।

**विवरण** : यह मनोहर पक्षी विशेष रूप से ऊंचे प्रदेशों में ही पाया जाता है और पानी के किनारे निवास करता है। इन पक्षियों के सुन्दर पर और प्रसन्न मुद्राएं शीघ्र ही लोगों का ध्यान आकर्षित कर लेती हैं। उछलते कूदते झरनों के बीच के शिला-खंडों पर यह अक्सर उछलती फिरती देखी जा सकती है। इसकी तेज और उदासी भरी चीख पानी के शोर में भी सुनाई पड़ती है। इसकी पूंछ हमेशा ऊपर-नीचे हिलती रहती है। इसके साथ ही यह अपनी गरदन भी थोड़ी-थोड़ी झुकाती रहती है। इसकी उड़ान तेज होती है, जब यह उड़ने को होती है तो अपनी पूंछ को पंखे की तरह फैला लेती है।

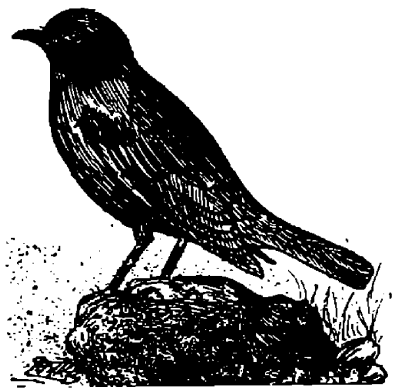
**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय मई से अगस्त तक है, लेकिन इसके घोंसले बहुतायत से जुलाई मास में पाये जाते हैं। घोंसला गहरा और बड़ा होता है जो सेवार, पत्तियों और घास-फूस का बना होता है। घोंसले में ऊन और बालों का अस्तर लगा होता है। घोंसले नदी के किनारे किसी भी खोखले या छेद में बनाये जा सकते हैं, चाहे वह छेद दीवार में हो या कगार में, या पेड़ के तने में।

यह प्रायः चार ही अंडे देती है। ये अंडे आकार में अंडाकार और हलकी सी चमक लिये होते हैं। इनका रंग निलछौंह पीला होता है जिस पर लाल भूरे धब्बे होते हैं। आकार में ये अंडे ०.९६ × ०.६५ इंच के होते हैं।

## ५६ सिलेटी थिरथिरा (Plumbeous Redstart : Rhyacornis Fuliginosa)

**पर्याय** : धूमल कंपेच्छुक।

**पहचान** : यह भी हिमालय की ही चिड़िया है जो कभी भी जल-धाराओं से दूर नहीं देखी जा सकती। बहते पानी के बीच के पत्थरों पर ही यह प्रायः उड़ती फिरती है।



सिलेटी थिरथिरा

**रंग-रूप** : इसकी लम्बाई ५ इंच होती है। नर पक्षी के सम्पूर्ण पर हलके सिलेटी होते हैं, केवल पूंछ चमकदार अखरोटी रंग की होती है। मादा के ऊपरी पर हलके भूरे-नीले होते हैं। पूंछ सफेद होती है, जिसके अंतिम सिरे पर भूरे रंग का एक त्रिकोण सा बना होता है। डैने भूरे होते हैं, जिनके किनारे पीले-भूरे रंग के होते हैं। निचले पर हलके-भूरे होते हैं, जिनमें सिलेटी रंग की झलक होती है।

पुतलियाँ गहरी भूरी, चोंच काली और पंजे गहरे भूरे और आकर्षक होते हैं।

**निवास** : यह चिड़िया हिमालय में ४,००० से ९,००० फुट तक की ऊँचाई पर पायी जाती है, १०,००० फुट से ऊपर तो यह बहुत कम ही देखी जाती है, पर कभी-कभी २३,००० फुट तक

भी दिखाई पड़ जाती है। जाड़ों में यह नीचे उतर आती है। तब यह ६,००० फुट से लेकर तराई के मैदानों तक में देखी जाती है।

**विवरण**: यह विशेष रूप से पानी की ही चिड़िया है, पर चौड़ी धारा की अपेक्षा ऐसी कलकल करती तेज धाराओं को, जिनके बीच-बीच में शिलाएं भी हों, यह अधिक पसन्द करती है। यह सुन्दर चिड़िया बड़ी आसानी से लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। कोई भी ऐसी पहाड़ी धारा न होगी, जहाँ इसका एकाध जोड़ा न दिखाई पड़े। वहाँ यह धारा के बीच के पत्थरों पर बैठ कर ही अधिकांश समय बिता देती है, पर कभी-कभी यह किनारों के पेड़ों पर तथा कुंजों में सैर-सपाटे के लिए चली जाती है। यह लगातार कीड़ों के पीछे उड़ा करती है। जैसे ही यह किसी पत्थर पर बैठती है, अपनी सुन्दर पूंछ थोड़ी-सी फैला कर ऊपर नीचे करने लगती है। यह जितनी ही चंचल है उतनी ही झगड़ालू भी; नर किसी को भी अपनी सीमा में नहीं ठहरने देता, बल्कि ललकार कर खदेड़ता हुआ सीमा से बाहर धकेल कर ही चैन लेता है। इसकी बोली विशेषतया जाड़े के दिनों में ही सुनाई पड़ती है।

**घोंसला**. इनके जोड़ा बाँधने का समय अप्रैल से जुलाई तक होता है। घोंसला बड़ी सफाई के साथ सेवार, घास, ऊन, पत्तियों, बालों तथा रेशों से बनाया जाता है जो किसी जलधारा के पास के ही किसी तने, चट्टान या दीवार के खोखले में रखा होता है। यह तीन से चार तक अंडे देती है। अंडे बड़े गोल तथा एक ओर से नुकीले होते हैं। इनकी बनावट भी सुन्दर होती है और इन पर हलकी-सी चमक भी होती है। इनका रंग पिलछौंह सफेद होता है जिसमें हरे रंग की झलक होती है। कभी-कभी इसके अंडे पत्थरी रंग के होते हैं। इन पर मटियाले पीले या ललछौंहे बादामी धब्बे होते हैं। इनका आकार ०.७६ × ०.६० इंच होता है

## ५७ नीलकंठी (Blue throat: Cyanosylvia Svecica)

**पर्याय**: श्यामकंठ, खुड़लना, डम्बक, हुसेनी पिद्दा, गुनपिदारा।

**पहचान**: बादामी से रंग की यह चिड़िया तर स्थानों में झाड़ियों में पायी जाती है। अचानक यह चिड़िया आपके निकट तक आ जायेगी, फिर दूसरे ही क्षण न जाने कहाँ छिप जायेगी।

**रंग-रूप**: लम्बाई में यह चिड़िया ६ इंच की होती है। नर के ऊपरी पंख और डैने और पूंछ का रंग बादामी होता है। आँखों पर भूरी रेखा होती है। ठोड़ी और गले पर चमकदार नीला रंग होता है, जिसके बीच में अखरोटी रंग का धब्बा होता है। गले के नीले रंग के नीचे एक काले रंग की धारी होती है। बाकी सब निचले पंख मक्खनी रंग के होते हैं। गले का नीला और अखरोटी धब्बा ऋतु, जाति और आयु के अनुसार अलग-अलग रंग का होता है। कभी-कभी अखरोटी रंग के धब्बे के स्थान पर सफेद रंग का धब्बा भी पाया जाता है। मादा का



नीलकंठी

निचला हिस्सा संदली सफेद रहता है और सीने पर भूरे चित्ते पड़े रहते हैं, पुतलियाँ भूरी, चोंच काली, जो जड़ के पास लाल और पंजे पीले-भूरे होते हैं।

**निवास**: यह पक्षी दूर-दूर तक पाया जाता है और इसकी कई जातियाँ हैं। भारत में इसकी जो किस्म मिलती है वह पश्चिमी तुर्किस्तान से लेकर दक्षिणी यूराल के क्षेत्रों में अंडे देती है और जाड़ों में भारत आती है।

**विवरण**: सितम्बर से मई तक यह भारत में काफी संख्या में देखी जाती है। यहाँ यह छायादार और तर स्थानों में रहना बहुत पसंद करती है। जलाशयों के किनारे के नरकुल के जंगलों और खड़ी खेती में इसको काफी संख्या में देखा जा सकता है। यह अपना अधिक समय जमीन पर बिताती है जहाँ यह अपना आहार खोजती है। शर्मीली होने के कारण यह बार-बार झाड़ियों में से निकलती है और छिप जाती है, थोड़ी-थोड़ी देर पर अपनी पूंछ उठा लेती है और रुक-रुक कर दौड़ती फिरती है। उड़ते समय यह अपनी दुम के पंखों को फैला लेती है, जिससे दुम के बीच के गाढ़े रंग के पंख साफ नजर आने लगते हैं और फिर इसको पहचानने में किसी प्रकार का धोखा नहीं हो सकता। इसकी बोली वैसे तो कर्कश होती है लेकिन कभी-कभी इसे एक प्रकार की मीठी बोली बोलते भी सुना जा सकता है।

**घोंसला**: इसके जोड़ा बाँधने का समय जून से जुलाई तक रहता है। तब यह किसी कँटीली झाड़ी में सूखी घास और पत्तियों का छोटा सा सुन्दर घोंसला बनाती है। जमीन से पास रहने पर भी इसके घोंसले झाड़ियों में ऐसे छिपे रहते हैं कि सहसा उन पर निगाह नहीं पड़ती। समय आने पर मादा पक्षी तीन-चार अंडे देती है जो इसका कद देखते हुए काफी बड़े होते हैं। इन अंडों का रंग गंदा हरा रहता है, जिनमें से कुछ पर पीले और ललछौंह चित्ते पड़े रहते हैं और कुछ एकदम सादे रहते हैं। अंडों का आकार ०.७५ × ०.५५ इंच होता है।

## ५८ दामा (Indian Robin : Saxicoloides Fulicata)

**पर्याय** : कृष्ण चटक, कलचिरी, पोदी।

**पहचान** : यह खास तौर से मैदानों की घरेलू चिड़िया है जो अपनी पूंछ सीधी खड़ी किये रहती है। ऐसा लगता है कि जैसे यह अपनी पूंछ के नीचे का अखरोटी रंग दिखाने के लिए ही पूंछ ऊपर उठाये हो।



दामा

**रंग-रूप** : दामा की लम्बाई ७ इंच की होती है। इसका नर चमकदार काला होता है, जिस पर नीली झलक होती है। कंधों पर सफेद पट्टी होती है और उड़ने वाले पर भूरे होते हैं। पेट के बीच का हिस्सा तथा पूंछ के नीचे का हिस्सा अखरोटी रंग का होता है। इसकी मादा के ऊपरी पंख गहरे भूरे होते हैं। मुँह के सामने और बगल का हिस्सा पीला होता है। पूंछ प्रायः काले रंग की होती है। पेट के मध्य और पूंछ का निचला भाग अखरोटी होता है। पुतलियाँ गहरी भूरी रहती हैं तथा चोंच और पंजे काले होते हैं।

**निवास** : दामा हिमालय से लेकर दक्षिण में लंका तक पायी जाती है। इसकी चार किस्में देखने को मिलती हैं। इसकी एक खास किस्म लंका में पायी जाती है जिसकी मादा काली होती है।

**विवरण** : यह घरेलू चिड़िया है जो गाँवों में मनुष्यों के निवास-स्थानों के आस-पास पायी जाती है। कभी-कभी पथरीले स्थानों पर तथा घाटियों में भी देखने को मिलती है। नम स्थानों में यह बहुत कम मिलती है।

यह साहसी और सनकी होती है। जब तक इससे छेड़छाड़ नहीं की जाती, यह स्वाभाविक रूप से लोगों के आसपास भी उड़ती रहती है। यदि इसे अपने घोंसले के बारे में संदेह हो जाये कि लोग जान गये हैं, तो यह उसे तुरन्त छोड़ कर दूसरे स्थान पर घोंसला बना लेती है। व्यवहार में यह खुशमिजाज होती है। यह अपना सिर ऊँचा उठाये पूंछ की ओर उछालती फिरती है। यह दीवारों, छतों तथा पेड़ के तनों पर अक्सर बैठी रहती है। इसका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े हैं, परन्तु यह अनाज भी खाती है।

**घोंसला** : इसका जोड़ा बाँधने का समय मार्च से अगस्त तक होता है। यह प्रायः दो या तीन अंडे देती है। घोंसले पेड़ों के खोखले तथा दीवारों और मकानों के छेदों में बनाये जाते हैं। घास, जड़, रेशे, ऊन, बाल आदि के द्वारा घोंसले सफाई से तथा मुलायम और सुन्दर बनाये जाते हैं। घोंसले के काफी बड़े भाग में साँप की केंचुल बिछी होती है। अंडे फैले हुए और अंडाकार होते हैं जो सिरे की ओर थोड़े नुकीले होते हैं। बनावट में ये सुन्दर और हलकी-सी चमक वाले होते हैं। इनका रंग सफेद होता है, जिस पर हलके हरे-भूरे और गुलाबी रंग की झलक होती है। इन पर ललछौंह पीले-भूरे और बैंगनी छींटे होते हैं, जो चौड़े किनारे की तरफ घने होते जाते हैं। अंडे आकार में ०.७९ × ०.५९ इंच के होते हैं।

## ५९ दँहगल (Magpie Robin: Copsychus Saularis)

**पर्याय** : दध्यक, दयाल, महरि, ग्वालिन, दँहियल

**पहचान** : यह चिड़िया प्रायः मैदानों में पायी जाती है और बाग-बगीचों में अक्सर इसका सुन्दर संगीत सुनाई पड़ता है। नर और मादा दोनों हमेशा अपनी पूंछ ऊपर की ओर उठाये रहते हैं। इसकी सीटीनुमा मीठी बोली के कारण इसे पहचानने में तनिक भी दिक्कत नहीं पड़ती।

**रंग-रूप** : दँहगल ८ इंच लम्बा पक्षी है, जिसका नर चमकदार काले रंग का होता है। नीचे के पर सफेद और डैने काले होते हैं जिन पर सफेद धब्बे पड़े होते हैं। पूंछ लम्बी होती है, जो पीठ की ओर उठी या पीछे की ओर फैली रहती है। पूंछ के बीच के दो पर काले होते हैं, बाकी सब सफेद होते हैं।

इसकी मादा के ऊपरी पंख गहरे बादामी रंग के होते हैं, जिसमें नीली झलक होती है। डैने और पूंछ गहरी बादामी होती है जिसके बीच में सफेद रंग होता है। ठोड़ी, गला, पुतलियाँ भूरी, चोंच काली और पंजे पत्थरी रंग के होते हैं।

**निवास** : यह चिड़िया भारत, लंका और चीन में बहुतायत से पायी जाती है। इसकी कई जातियाँ पहाड़ियों में रहती हैं, परन्तु अंडे देने के समय और ऊँची पहाड़ी घाटियों में चली जाती हैं। भारत में पश्चिम की ओर पायी जाने वाली चिड़िया लंका में पायी जाने वाली किस्म की होती है। बाकी और सभी स्थानों में पायी जाने वाली सभी चिड़ियाँ आपनी कुछ स्थानीय विशेषताएँ रखती हैं। यह ४,००० फुट से ६,००० फुट तक की पहाड़ियों और मैदानों में भी खूब मिलती है, लेकिन सिन्ध, कच्छ,

पंजाब तथा राजस्थान में बहुत कम पायी जाती है, हालाँकि कभी-कभी जाड़ों में आबू की पहाड़ियों में भी देखी गयी है।

**विवरण** : इसे न तो एकदम खुले मैदान पसन्द हैं, न घने जंगलों में इसका मन लगता है, यह कँटीली झाड़ियों से भरे घने जंगलों को अधिक पसन्द करती है, जहाँ इसे छोटे-छोटे पेड़ों और झाड़ियों पर से जमीन पर उतरने तथा फिर फुदक कर उसी स्थान पर जाने में विशेष आनन्द आता है। घने छायादार स्थान इसे बिलकुल पसन्द नहीं, यह तो धूप-छाँह वाले स्थानों को ही अधिक पसन्द करती है। यह कीड़े-मकोड़ों की तलाश में झाड़ियों में फिरा करती है। स्वभावतः यह बगीचों की घरेलू चिड़िया है, जहाँ प्रातः और सायंकाल किसी झाड़ी की सबसे ऊँची डाल पर बैठ कर यह अपना मधुर संगीत सुनाती है।

यह अपनी पूँछ को पंखेनुमा ऊपर उठाती है, फिर झटके के साथ नीचे गिरा देती है, इसका यही क्रम बराबर जारी रहता है। धरती पर अपना आहार खोजते हुए आसानी से देखी जा सकती है, जिसमें कीड़े-मकोड़े, चींटियाँ, जीव-जन्तु बीरबहूटियाँ, तिलचट्टे और अन्य कीड़े शामिल होते हैं।

**घोंसला** : मई से जुलाई के अन्त तक इसके जोड़ा बाँधने का समय होता है। इसी बीच इसके अंडे पाये जाते हैं। इसके घोंसले पेड़ों के खोखलों, घरों की छतों और इमारतों की कार-निसों में पाये जाते हैं। इसका सुन्दर-सा घोंसला जड़ों, घास के तिनकों तथा रेशों आदि का बना होता है जो परों आदि से मुलायम कर दिया जाता है। इसमें समय आने पर मादा चार से पाँच अंडे देती है। अंडा बड़ा, अंडाकार, बनावट में सुन्दर तथा काफी चमकदार होता है। इसका रंग हरी झलक लिये होता है, जिस पर भूरे तथा ललछौंह छींटे पड़े रहते हैं। ये छींटे एक सिरे की ओर घने होते जाते हैं। अंडे आकार में ०.८७ × ०.६६ इंच के होते हैं।

## ६० श्यामा (Shama : Kittacincla Malabarica)

**पर्याय** : श्यामा, श्यामा सोराई।

**पहचान** : यह घने जंगलों में पायी जाने वाली चिड़िया है जो अपने सुन्दर गाने के लिए प्रसिद्ध है। नर चमकदार काला होता है और उसका पेट अखरोटी रंग का होता है। मादा भूरे रंग की होती है।

**रंग-रूप** : श्यामा ११ इंच लम्बी चिड़िया है। इसकी लम्बाई में सबसे ६ इंच लंबी पूँछ भी शामिल है। इसके नर की पूँछ की सतह के ऊपर सफ़ेद पट्टी होती है, बाकी सब ऊपरी पर, डैने और छाती के निचले पर चमकदार काले रंग के होते हैं। नीचे के सब पर चमकीले अखरोटी रंग के होते हैं। जाँघें सफ़ेद तथा पूँछ काली होती है, लेकिन बीच के दो परों के किनारे सफ़ेद होते हैं।

इसकी मादा नर के समान ही होती है परन्तु उसका रंग काले के स्थान पर सिलेटी भूरा होता है, अखरोटी रंग के स्थान पर भूरा रंग होता है और डैनों के किनारे के पंख भूरे होते हैं। पुतलियाँ गहरी भूरी, चोंच काली और पंजे पीले होते हैं।

**निवास** : यह भारत, लंका, बर्मा, स्याम, मलाया तथा चीन तक में विस्तृत रूप से पायी जाती है। इतने विस्तृत निवास के कारण, इनकी विभिन्न जातियाँ हैं। इसकी एक खास जाति भारत के पश्चिमी भागों में बम्बई से केरल तथा पूर्वी भागों में उड़ीसा की पहाड़ियों तक पायी जाती है। यही जाति उत्तर प्रदेश के कुछ भागों में भी पायी जाती है। बर्मा में पायी जाने वाली जाति की चिड़िया आसाम में भी दिखाई पड़ती है, जिसकी पूँछ छोटी होती है।

**विवरण** : यों तो किस्से-कहानियों तक में यह चिड़िया प्रसिद्ध है, क्योंकि इसका गाना बड़ा आकर्षक और मीठा माना गया है परन्तु शर्मीली आदत के कारण यह बहुत कम नजर आती है। यह जंगलों में ऐसी ऊबड़-खाबड़ तथा नीची पहाड़ियों, घाटियों और दर्रों में रहती है जहाँ पानी की सुविधा हो। बाँसों के झुरमुट भी इसके प्रिय निवास हैं। यह कीड़ों-मकोड़ों, गिरे हुए फलों आदि की तलाश में रहती है, पर छेड़े जाने पर पेड़ों पर उड़ जाती है। इसका गाना तेज और मीठा होता है जिसमें विभिन्न स्वर होते हैं। यह प्रायः सबेरे और शाम को झुरमुट में गाती सुनाई पड़ती है।

**घोंसला** : नर में, जोड़ा बाँधने के समय मादा को रिझाने के लिए, उड़ते समय अपने डैनों को शरीर के साथ बजाने की खास आदत होती है। इसका जोड़ा बाँधने का समय अप्रैल से जून तक होता है। बाँसों के झुरमुटों में कूड़े-करकट के बीच काई तथा पत्तियों का प्याले की शक्ल का सुन्दर और छोटा-सा घोंसला बनाया जाता है, जिसमें मादा समय आने पर चार-पाँच अंडे देती है। इसके शरीर को देखते हुए, इसके अंडे काफी बड़े अंडाकार तथा सिरे की ओर नुकीले होते हैं, जो सुन्दर चमकदार होते हैं। अंडों का रंग पत्थरी होता है, जिन पर बैंगनी रंग के छींटे होते हैं। आकार में ये अंडे ०.८५ × ०.६५ इंच के होते हैं।

## ६१ कंडू (Nilgiri Black bird : Turdus Simillimus)

**पर्याय** : नीलगिरि कस्तूरक।

**पहचान** : यह कस्तूरा नीलगिरि और पालनी पर्वतमालाओं

में काफी संख्या में दिखाई पड़ते हैं। ये सिलेटी रंग के पक्षी हैं जिनके नर के सिर का ऊपरी भाग काला रहता है।



कंडू

**रंग-रूप** : कंडू १० इंच लम्बा पक्षी है। नर के सिर का ऊपरी हिस्सा काला, शरीर का ऊपरी भाग गाढ़ा सिलेटी, डैने और दुम राखीपन लिये काले और नीचे का भाग गाढ़ा राखी भूरा रहता है।

मादा का सारा ऊपरी भाग गाढ़ा राखी भूरा और निचला भाग भूरापन लिये कंजई रहता है। इसकी ठुड्ढी और गले पर गाढ़ी भूरी धारियाँ पड़ी होती हैं। आँख की पुतली भूरी, आँख के छल्ले पीले, चोंच ललछौंह नारंगी और टाँगें नारंगी पीली रहती हैं।

**निवास** : कंडू आबू पर्वत तथा दक्षिण भारत में खानदेश, पंचगढ़ी तथा संबलपुर के दक्षिण की ओर पाये जाते हैं। इनकी कई जातियाँ हमारे यहाँ मिलती हैं; लेकिन इन सब में कंडू ही सबसे प्रसिद्ध है। यह यहाँ का बारहमासी पक्षी है जो इसी देश में बराबर रहता है।

**विवरण** : कंडू, कस्तूरे जाति का पक्षी है जिसका स्वभाव अन्य कस्तूरों जैसा ही होता है। यह दक्षिण भारत के उटकमांड में काफी संख्या में दिखाई पड़ता है। वैसे तो इसे पहाड़ी स्थान अधिक पसन्द हैं, पर यह अन्य स्थानों में भी रह लेता है।

कंडू बहुत शर्मीला पक्षी है जो जरा-सी आहट पाते ही उड़ कर पेड़ों पर चला जाता है और एक पेड़ से उड़ कर दूसरे पेड़ पर तब तक चक्कर लगाता रहता है जब तक वह अपने को निरापद नहीं समझ लेता।

इसका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े और फल हैं जिन्हें यह गिरी हुई पत्तियों में खोजा करता है। यह कभी-कभी पेड़ों पर के फलों पर भी हाथ साफ करता है।

**घोंसला** : कंडू के जोड़ा बाँधने का समय मार्च से अगस्त तक रहता है। लेकिन इनके घोंसले अप्रैल और मई में अधिक संख्या में दिखाई पड़ते हैं। इस समय नर पक्षी की सुरीली बोली अक्सर शाम को सुनाई पड़ती है जिसे यह किसी ऊँची डाल पर बैठ कर गाता है। इसका घोंसला बड़े कटोरेनुमा होता है जिसे यह काई, जड़ों, पत्तियों और घास-फूस से बनाता है। घोंसले का बाहरी हिस्सा मिट्टी लगाकर चिकना और मजबूत बना दिया जाता है। भीतर की ओर यह नरम घास और जड़ों से मुलायम कर दिया जाता है।

समय आने पर मादा दो से चार तक अंडे देती है जो चौड़े बैजावी और सिरे की ओर नुकीले रहते हैं, इन पर थोड़ी चमक भी रहती है। अंडे हलके नीले रंग के होते हैं जिन पर ललछौंह भूरी और बैंगनी बिन्दियाँ, चित्तियाँ और धब्बे पड़े रहते हैं। अंडे लगभग १.१७ × ०.८६ इंच के होते हैं।

## ६२ कस्तूरा (Grey winged Black bird : Turdus Boulboul)

**पर्याय** : भस्मपक्ष कस्तूरक।

**पहचान** : यह हिमालय की चिड़िया है। इसके सुन्दर गाने तथा चमकदार काले रंग के कारण इसे पहचानने में दिक्कत नहीं पड़ती। डैनों के ऊपर की तरफ के राखी-भूरे धब्बे से भी इसे पहचानने में आसानी होती है।

**रंग-रूप** : कस्तूरा चमकदार काले रंग का ११ इंच का पक्षी है। नीचे की ओर इनका रंग हलका होता है। डैने के ऊपरी भाग में राखी-भूरा धब्बा होता है। इसकी मादा जैतूनी-भूरे रंग की होती है। इसके डैनों पर का धब्बा हलका पीला होता है। पुतलियाँ भूरी, आँख के किनारे नारंगी तथा पंजे भूरे रंग के होते हैं। चोंच मूँगे—जैसे गहरे सिन्दूरी रंग की होती है, जो आगे की ओर साँवली होती है।

**निवास** : यह पश्चिम में कश्मीर से पूर्व में आसाम और मणिपुर तक ७,००० से ८,००० फुट तक की ऊँचाई पर साधारणतया देखी जा सकती है। जाड़ों में यह पहाड़ों के नीचे उतर आती है और मैदानों में भी आसानी से देखी जा सकती है।

**विवरण** : यह हिमालय की सबसे सुन्दर गाने वाली चिड़िया है। इसके इसी गुण के कारण अक्सर इसे शौकीन लोग बहेलियों से खरीद लेते हैं। वैसे, यह सामान्यतः जंगली चिड़िया है, जो सूखी पत्तियों के बीच अपनी चोंच द्वारा मिट्टी खोदते देखी जाती है। ज़मीन में से कीड़े-मकोड़े तथा पेड़ों से बीज और सूखे फल अपने आहार के लिए प्राप्त करने के लिए यह इधर-उधर फिरती रहती है। यह पेड़ों से रसदार फल भी खाती है। अपने मौसम में यह पेड़ों की चोटियों पर से अक्सर सबेरे-शाम गाया करती है। यह बहुत शान्त और शर्मीली चिड़िया है जो अपने घोंसले के आस-पास बड़ी सावधानी से रहती है।

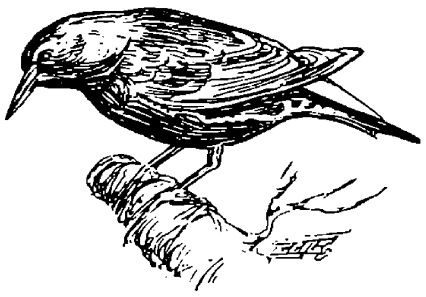
**घोसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय मई से जुलाई तक होता है। इसका घोंसला बहुत सुन्दर और बड़े प्याले के आकार

का होता है जो जड़ों, तिनकों, सेवार तथा सूखी घास से बना होता है। यह अपना घोंसला पेड़ की किसी दो-फंकी डाल पर १० से २० फुट की ऊँचाई पर बनाती है। कभी-कभी यह चट्टानों के उभड़े भाग तथा गीले कगारों को भी घोंसले के लिए चुन लेती है। यह दो से चार तक अंडे देती है जो हलके और धुँधले हरे होते हैं और जिन पर भूरे लाल धब्बे और धारियाँ होती हैं। कहीं-कहीं ये धब्बे इतने घने हो जाते हैं कि अंडों के वास्तविक रंग का पता लगाना कठिन हो जाता है। अंडे का आकार १.२० × ०.८५ इंच का होता है।

## ६३ कस्तूरी (Tickells Thrush : Turus unicolor)

**पर्याय**: धूसर कस्तूरिका।

**पहचान**: यह एक शान्त प्रकृति का धूमिल रंग का पक्षी है जो अपना भोजन तो भूमि पर से ही प्राप्त करता है, पर उद्वेलित होने पर यह पेड़ों पर उड़ जाता है।



कस्तूरी

**रंग-रूप**: कस्तूरी की लम्बाई ९ इंच की होती है। इसकी पूँछ तथा ऊपरी हिस्से समेत सभी परों का रंग राखी-भूरा होता है। निचले पर सिलेटी, ठोड़ी पर का रंग हलका और पूँछ की तरफ सफेद होता जाता है। डैनों के नीचे भूरा रंग होता है।

इसकी मादा के ऊपरी पर जैतूनी-भूरे होते हैं। डैने और पूँछ अधिक काले रंग के, ठोड़ी और गला सफेद एवं उसके दोनों ओर काली लकीरें होती हैं। छाती का हिस्सा हलका भूरा होता है और ऊपरी हिस्से पर काले धब्बे होते हैं। पेट से पूँछ तक का निचला भाग सफेदमायल और डैनों का निचला भाग हलका भूरा होता है।

**निवास**: कस्तूरी केवल भारत में ही पायी जाती है। यह हिमालय की पहाड़ियों में कश्मीर से पूर्वी नैपाल तक पायी जाती है। यह प्रवासी पक्षी है। इसलिए यह भारत के सभी भागों में आसानी से देखा जा सकता है। जाड़े के दिनों में यह भारत के मैदानों तक में उतर आती है। वैसे, यह रायपुर, विशाखापतनम् से सिक्किम, कछार और मणिपुर तक भ्रमण करती है। इनकी एक बड़ी जाति, जिसका गला काला होता है, जाड़ों में हिमालय और उत्तर भारत तक पायी जाती है।

**विवरण**: यह सुपरिचित पक्षी घने जंगलों की अपेक्षा बस्तियों के करीब बहुतायत से पाया जाता है। यह सुबह-शाम और बादल के दिनों में अक्सर गाता नज़र आता है। यह पक्षी अपने भोजन, कीड़े-मकोड़े तथा घोंघों की तलाश में मैदानों और बाग-बगीचों तथा जलाशयों के निकट इधर-उधर फुदकता दिखाई पड़ता है।

**घोंसला**: इसकी प्रजनन-ऋतु मई से जून तक है। इसका घोंसला लम्बा-चौड़ा, प्यालेनुमा, गहरा, सुन्दर और मजबूत होता है। यह अपना घोंसला काई, सेवार, जड़ों और सूखी घास आदि से बनाता है। घोंसला ज़मीन से ६ से २० फुट तक की ऊँचाई पर कँटीली झाड़ियों में या वृक्षों के तने के निकट की दो-फंकी शाखाओं में होता है। अंडों की संख्या ३ से ५ तक होती है। इनकी शक्लों में विभिन्नता रहती है जो कभी गोल, लम्बाकार या अंडाकार होते हैं। इनकी सतह पर चमक बहुत कम होती है। सतह का रंग हरा या ललाई लिये हुए सफेद होता है। कुछ अंडों पर हलके लाल रंग के चिह्न और धारियाँ होती हैं जो सभी अंडों के चौड़े सिरे पर घनी होती हैं। आकार में अंडे औसतन १.०६ × ०.७८ इंच के होते हैं।

## ६४ ललसिरी कस्तूरी (Orange Headed-Ground Thrush: Geokichla Citrina)

**पर्याय**: नारंगी भू कस्तूरिका।

**पहचान**: यह पक्षी चमकीले अखरोटी रंग का होता है जिसके नर पक्षी के पंख निलछौंह भूरे रंग के होते हैं। दक्षिणी जाति के पक्षियों के मुँह के दोनों ओर भूरे तथा सफेद चित्ते होते हैं और गला सफेद होता है। इसकी एक जंगली जाति साधारणतया अपना भोजन नम तथा सायेदार स्थानों से प्राप्त करती है।

**रंग-रूप**: लम्बाई में यह ९ इंच का पक्षी है जिसका सम्पूर्ण माथा, गरदन और निचला भाग अखरोटी-नारंगी रंग का होता हैं। गरदन का पिछला भाग तथा चोटी अधिक काली होती है। शेष ऊपरी भाग निलछौंह भूरे रंग का होता है। पंख तथा पूँछ निलछौंह भूरे रंग की होती है। डैनों पर सफेद धब्बे होते हैं तथा उसका निचला भाग काँटेदार स्याही की भाँति होता है। चोंच का छिद्र तथा पूँछ सफेद होती है। मादा नर की ही तरह होती है लेकिन अखरोटी रंग कुछ धूमिल होता है और ऊपरी भाग भूरा होता है। डैने तथा पूँछ भूरापन लिये हुए पत्ती के रंग का होता है। आँख की पुतली गाढ़ी हलकी भूरी रंग की होती है तथा निचले जबड़े का आधार ललछौंह रंग का होता है। पैर गुलाबी होते हैं। पूंछ नर से कुछ छोटी होती है।

**निवास** : ये पक्षी भारत, बर्मा, अन्दमान, निकोबार द्वीप-समूह, मलाया और स्याम में विस्तृत रूप से अधिकता में पाये जाते हैं। इसकी दो जातियाँ भारत में पायी जाती हैं। पहली जाति हिमालय की कम ऊँची चोटियों पर पायी जाती है जो हिमाचल से आसाम तक फैली है। यह जाति बंगाल के निचले भागों में मिलती है। गर्मियों में यह हिमालय के पश्चिमी भागों तथा नैपाल में और पूर्वी हिमालय तथा आसाम में काफी संख्या में पायी जाती है और जाड़े में दून-घाटी से छोटा नागपुर, कलकत्ता, रत्नागिरि और लंका तक मिलती है। इसकी दूसरी जाति की आँख के चारों ओर अँगूठीनुमा गोलाई होती है, मुँह के दोनों ओर ठोड़ी तथा गला सफेद होता है। चेहरे के दोनों ओर की सफेदी दो भागों में तिरछी और अधिक भूरी लकीर-सी विभाजित हो जाती है और यह लकीर आँख के निचले किनारे तक चली जाती है। यह जाति खानदेश के दक्षिण भाग में और पंचमढ़ी से सिर-गुजा तक ४,००० फुट की ऊँचाई पर पायी जाती है।

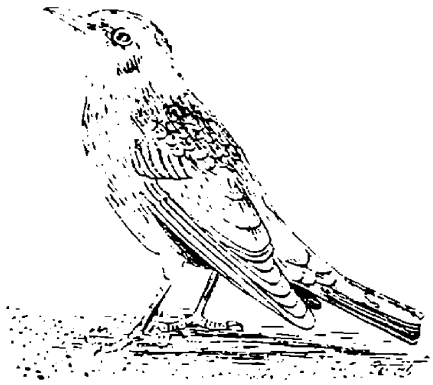
**विवरण**: यह जंगली पक्षी है जिसे घने जंगल ज्यादा पसन्द हैं। यह साधारणतया तर एवं छायादार झाड़ियों या घने बाँस के कुंजों या जलाशयों के निकट पाया जाता है जहाँ इसे घोंघे, कछुए, झींगा और कीड़े-मकोड़े आसानी से खाने के लिए प्राप्त होते हैं। भोजन की तलाश हमेशा कीचड़ में करने के कारण, इसकी चोंच कीचड़ से सनी रहती है। यों तो यह यदा-कदा खुले मैदानों में भी देखा जा सकता है, पर इसे घने जंगल बहुत पसन्द हैं।

**घोंसला** : इसकी प्रजनन-ऋतु हिमालय की पर्वत-श्रेणियों में तो अप्रैल के अन्त से जून के अन्त तक होती है, अन्य भारतीय क्षेत्रों में जून से अगस्त तक और कभी-कभी सितम्बर तक भी होती है। इसका घोंसला ठोस प्यालेनुमा होता है जो काई, घास इत्यादि पदार्थों से बना होता है और सुन्दर जड़ों, काई और महीन पत्तियों, पौधों की रेशेनुमा जड़ों से बँधा होता है। इसके निर्माण में कीचड़ तथा मिट्टी का काफी अधिक प्रयोग होता है। ये मध्यम ऊँचाई के वृक्षों के कँटीले कुंजों में पाये जाते हैं। इनके अंडों के एक समूह में ३ या ४ अंडे होते हैं, पर कभी-कभी पाँच भी मिलते हैं। अंडा चौड़ा और अंडाकार होता है और छोटे सिरे की तरफ नुकीला होता है। इसका छिलका चमकीला और सुन्दर होता है, इसका स्तरीय वर्ण निलछौंह पीला, हरछौंह सफेद होता है और उसके ऊपर भूरे या हलके गुलाबी धब्बे होते हैं। कुछ अंडों पर सुन्दर धारियाँ भी होती हैं जो पूरी आकृति पर फैली होती हैं। कुछ अंडों के चौड़े भाग में गहरे तथा कलछौंह रंग के छोटे-छोटे धब्बे होते हैं। आकार में इनके अंडे औसतन १.०० × ०.७५ इंच के होते हैं।

## ६५ कृष्णपट्टी (Blue Headed Rock-Thrush : Monticola Cindorhyncha)

**पर्याय** : नीलशीर्ष गिरि-कस्तूरिका।

**पहचान** : यह पक्षी गर्मियों में हिमालय की तलहटी के खुले जंगलों में पेड़ों पर बैठ कर सुन्दर गाना गाया करता है। नर पक्षी आसानी से पहचाना जा सकता है। इसका माथा और गला नीला होता है। निचले पर एवं पुट्ठे अखरोटी रंग के होते हैं। डैनों पर सफेद चकते होते हैं। मादा भूरे रंग की होती है। चेहरा चमकीला एवं चोंच काली होती है।



कृष्णपट्टी

**रंग-रूप** : कृष्णपट्टी ७ इंच की चिड़िया है। नर पक्षी का सम्पूर्ण माथा चमकीला निलछौंह रंग का होता है जो एक चौड़ी काली लकीर द्वारा चोंच से पीठ एवं कन्धे तक दो भागों में बँटा होता है। पूँछ तथा पर का निचला भाग अखरोटी रंग का होता है। डैने काले रंग के होते हैं जो नीले रंग में डूबे-से होते हैं। बड़े पर के निचले भागों पर चकते होते हैं। पूँछ काली तथा सफेदी से घुली हुई होती है। इसकी मादा के ऊपरी पर, डैने और पूँछ घानी-भूरे होते हैं और उस पर हलके पीले रंग की झलक भी होती है। ठोड़ी, गला तथा निचले पर सफेद होते हैं, छाती का रंग पीला एवं किनारे पर गाढ़ा भूरा होता है। आँख की पुतली गाढ़ी भूरी होती है। चोंच काली, मुँह पीला एवं पैर गाढ़े भूरे होते हैं।

**निवास** : इनका निवास-स्थान हिमालय में पश्चिम से पूर्व तक, दक्षिण आसाम, चीन तथा कोचिन की पहाड़ियाँ हैं। ये ३,५०० फुट से लेकर ६,००० फुट तक और कभी-कभी ९,००० फुट तक भी पायी जाती हैं। यह घूमने-फिरने वाली चिड़िया है जो अक्टूबर से अप्रैल तक भारत के मैदानों में और बर्मा तक घूमती रहती है, पर पंजाब के मैदानी हिस्सों में प्रायः नहीं देखी जाती। ये साधारणतया पश्चिमी घाट में पहाड़ियों पर खण्डाला से दक्षिणी त्रावनकोर तक पायी जाती हैं।

**विवरण**: ये जोड़ा बाँधने के समय खुले पहाड़ी जंगलों में पायी जाती हैं, विशेषतया हिमालय के निचले भाग में, जो चीड़ के वृक्षों से ढके हैं। यहाँ नर पक्षी का गाना बहुत ही सुपरिचित एवं सुहावना होता है। टि-टिडी-टि-टिडी की आवाज़ में यह प्रायः बोला करता है। यह आवाज़ प्रत्येक बार ऊँची

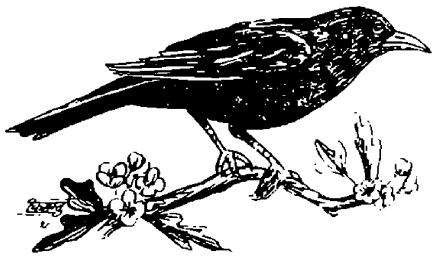
होती जाती है। इसके भोज्य पदार्थ कीड़े तथा बेर हैं। कीड़ों की तलाश में ये कभी-कभी डैनों को फैलाये हुए पेड़ों पर उड़कर चले जाते हैं और उन्हें पा लेने पर फिर अपने स्थान पर चले आते हैं। जाड़े के दिनों में यह अकेला रहने वाला पक्षी है।

**घोंसला** : यों तो, इनके जोड़ा बाँधने का समय अप्रैल से जून तक होता है, पर कभी-कभी ये अगस्त तक जोड़े में मिलते हैं। इनका घोंसला साफ, छिछला, प्यालेनुमा होता है, जिसका निर्माण काई, घास एवं सूखी पत्तियों से होता है। यह सुन्दर जड़ों और रेशों से बँधा होता है और वृक्षों की जड़ों तथा कगारों के खोखों में बनाया जाता है। इसके अंडों की संख्या ४ तक होती है। अंडा लम्बा और अंडाकार होता है और छोटे सिरे पर भोंथरा होता है। इसकी सतह खुरदरी और हलकी चमक लिये हुए गुलाबी-सफेद होती है जिस पर हर तरफ छीटे होते हैं जो चौड़े सिरे पर घने होते हैं। अंडे आकार में ०.९२ × ०.७२ इंच के होते हैं।

## ६६ पंडू (Blue Rock-Thrush : Monticola Solitaria)

**पर्याय** : नीलगिरि कस्तूरिका।

**पहचान** : यह गहरे रंग का पक्षी है जिसके नर का रंग गहरा नीला होता है। मादा का रंग नीला-धूमिल होता है। ये साधारणतया ईंटों की भट्टियों और ऊँचे मकानों पर पाये जाते हैं और निकट जाने पर ये शर्मा जाते हैं।



पंडू

**रंग-रूप** : पंडू लम्बाई में ९ इंच का पक्षी है। नर पक्षी के सम्पूर्ण पंख गहरे नीले होते हैं। आँख के पास रंग चमकीला होता है। माथे के दोनों तरफ के पर, गले के पर और ऊपरी हिस्से के पर, भूरे-नीले रंग के होते हैं, जो झालर की तरह होते हैं। निचले पंख कलछौंह सफेद होते हैं। डैने तथा पूंछ गहरे भूरे होते हैं जो गहरे नीले रंग में डूबे-से रहते हैं। डैने के अधिकांश पंख संदली होते हैं। गरमी के दिनों में पंखों की झालर झड़ जाने के बाद पूरे पर चमकीले हो जाते हैं जबकि डैने अलग काले मालूम पड़ते हैं। मादा के सम्पूर्ण ऊपरी पर, डैने और पूंछ नर पक्षी की तरह ही होते हैं। ठोड़ी, गले और छाती का ऊपरी भाग काही होता है। पंखों के किनारे चमकीले काले होते हैं। निचले पर का शेष भाग काही और संदली रंग की झलक लिये होता है। आँख की पुतली हलके भूरे रंग की होती है। चोंच कलछौंह सींग के रंग की होती है। मुख पीला, पैर काले और पंजे गहरे सींग के रंग के होते हैं।

**निवास** : ये पक्षी दक्षिणी यूरोप, अफ्रीका और एशिया के अधिकांश भागों में मिलते हैं और कई जातियों में विभाजित हैं। इसकी एक जाति हिमालय में कश्मीर से सिक्किम तक ४,५०० से लेकर १५,००० फुट की ऊँचाई तक मिलती है। सितम्बर और अक्टूबर के प्रारम्भ से अप्रैल तक ये भारत के अधिकांश भागों तथा बर्मा और लंका तक छितरे हुए पाये जाते हैं। इसकी दूसरी जाति भारत की उत्तरी सीमा से उत्तरी बिलोचिस्तान और जाड़े में अफ्रीका तक पायी जाती है। ये जाड़े की ऋतु में स्याम, मलाया और सुमात्रा तक भी पहुँच जाते हैं।

**विवरण** : यह जाड़ों में भी पहाड़ पर ही रहना चाहता है और जब पहाड़ियाँ नहीं मिलती हैं तो पत्थर निकालने की खानों, खण्डहरों, खाली मकानों और समुद्र के किनारे की चट्टानों पर रहते हैं। जब ऐसे स्थान भी नहीं मिलते तो यह ईंटों के भट्टों और पत्थरों की ढेरियों में ही शरण लेता है। इन सभी स्थानों में इस पक्षी की आदत और व्यवहार एक ही प्रकार का होता है। यह पानी से धुले पत्थरों एवं मकानों के छज्जों पर सीधा तथा अकेला बैठा रहता है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे वह कोई निरीक्षक हो। इसका नर पक्षी सुन्दर एवं मधुर गीत गाता रहता है। इसकी आवाज़ सीटी की भाँति होती है जिसे प्रायः यह उड़ते समय और बैठते समय सुनाता रहता है। यह सर्वभक्षी पक्षी है, पर प्रायः घोंघे कीड़े-मकोड़ों से अपना पेट भरता है।

**घोंसला** : इसका घोंसला पहाड़ों की कंदराओं में होता है जो सूखी घास तथा पत्तियों से बना होता है तथा उस पर एक पर्दा-सा लगा रहता है जिसके कारण वहाँ पर किसी का पहुँचना असम्भव-सा होता है। घोंसला छिछला प्यालेनुमा होता है। मादा पक्षी अप्रैल से जुलाई के बीच, जब इनका जोड़ा बाँधने का समय होता है, ४ से ५ तक अंडे देती है, जो चिकने, सुन्दर तथा चमकीले होते हैं और जिनका रंग कुछ हरछौंह नीला होता है। इन पर कभी तो कोई निशान नहीं होते, पर कभी-कभी चौड़े सिरे की तरफ ऊदे रंग के छीटे होते हैं। आकार में ये अंडे १.१० × ०.७४ इंच के होते हैं।

## ६७ कालजीत (Whistling Thrush : Myophonus Caeruleus)

**पर्याय** : श्रीवाक् कस्तूरिका।

**पहचान** : यह नीला कलछौंह चटक नीले रंग का पक्षी है। इसी कलछौंह चमकीले नीले रंग की पोशाक के कारण इसे

पहचानने में आसानी होती है। चोंच पीले रंग की होती है, जिसे दूर से ही देखकर पहचान सकते हैं।

**रंग-रूप** : यह लम्बाई में १२ इंच का पक्षी है जिसके नर और मादा एक ही तरह के होते हैं। सम्पूर्ण पर गहरे कलछौंह नीले होते हैं। डैने और पूंछ अधिक नीली चमकीली होती है। पेट कुछ अधिक धूमिल और भूरा-नीला होता है। आँख के सामने गँदले-से रंग का काला धब्बा होता है। सम्पूर्ण शरीर के पंख गहरे चमकीले नीले होते हैं। डैनों का कुछ भाग सफेद होता है। आँख की पुतली गहरी भूरी होती है। चोंच पीली जिसके सिरे कलछौंह तथा पैर काले होते हैं।

**निवास** : कालजीत वैसे तो तुर्किस्तान, चीन और उसके दक्षिणी भाग में पाया जाता है, लेकिन भारत में उसकी एक जाति हिमालय की पहाड़ियों में अफगान सीमा से पूर्वी आसाम तक मिलती है। इसकी दूसरी जाति पूर्वी बर्मा से चीन तक पायी जाती है। ये प्रायः १२,००० फुट की ऊँचाई पर पाये जाते है।

**विवरण** :यह हिमालय की पहाड़ियों पर पाया जाने वाला पक्षी है। इसे प्रायः नदियों, सोतों तथा जलाशयों के किनारे ही देखा जाता है। इसीलिए इसे जल-पक्षी भी कहा जाता है। इसके रहने के स्थान बहते हुए सोतों के पास देवदार के वृक्ष हैं। इसकी बोली अधिक तीखी एवं सीटी-जैसी होती है यह सीटी बहुत अधिक तेज होती है जो दूर ही से सुनी जा सकती है। इसमें कर्कशता होती है जो कानों को अप्रिय लगती है। इसी कारण इसकी बोली सुन्दर तो नहीं कही जा सकती, पर पानी की कल-कल तथा इसकी बोली एक साथ सुनने में अवश्य सुन्दर लगती है। जब यह पक्षी पानी से घिरे हुए पत्थरों से उड़ कर पेड़ों की शाखाओं पर जाता है तो इसकी सुन्दर लंबी पूँछ देखने में बड़ी ही सुन्दर और मनोहर दिखाई पड़ती है। इसकी लंबी पूंछ इसके लंबे पैरों के ऊपर क्रमशः उठी हुई होती है।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने काय सम अप्रैल से जून के अन्त तक होता है। लेकिन इनके घोंसले अगस्त तक भी पाये जाते हैं। काई, जड़ों और मिट्टी से बना इसका सुन्दर और प्याले-नुमा घोंसला होता है जिसके अन्दर का भाग प्रायः घास और नरम रेशों द्वारा मुलायम किया जाता है। ये घोंसले पानी से घिरे हुए सुरक्षित स्थानों व दर्रों में पाये जाते हैं। यह पक्षी अपने घोंसले की सुरक्षा पर अधिक ध्यान देता है। घोंसले कभी-कभी वृक्षों पर भी मिलते हैं। मादा समय आने पर ३ से ५ तक अंडे देती है। इनके अंडे लंबे, नुकीले, और शीघ्र टूटने वाले होते हैं। इनकी बनावट खुरदुरी होती है। इनकी जमीन हरछौंह भूरी या हलकी हरछौंह होती है जिन पर हलके गुलाबी या भूरापन लिये हुए ललछौंह रंग की धारियाँ और छीटे होते हैं। आकार में ये अंडे १.४० × १.०० इंच के होते हैं।

## ६८ मलाबार कालजीत (Malabar Whistling Thrush : Myophonus horsfieldii)

**पर्याय** : केरल श्रीवद कस्तूरिका।

**पहचान** : मालाबार कालजीत, कालजीत की एक जाति है। इसका माथा चटक नीला और इसके डैनों पर नीले रंग का चमकदार धब्बा रहता है।

**रंग-रूप** : मालाबार कालजीत १२ इंच की चिड़िया है जिसके नर और मादा एक ही जैसे होते हैं।

कालजीत की तरह इसका भी सारा शरीर गाढ़े निलछौंह काले रंग का रहता है जो निचले भाग में हलका हो जाता है। माथा चटक नीला रहता है और डैने पर नीले रंग का एक चित्ता पड़ा रहता है। डैने के कुछ परों के सिरे सफेद रहते हैं।

आँख की पुतली गाढ़ी भूरी, चोंच पीली जिसका सिरा कलछौंह और टाँगें काली होती हैं।

**निवास** : यह दक्षिण भारत में पायी जाने वाली चिड़िया है जिसे नीलगिरि पर्वतमाला में आसानी से देखा जा सकता है। यह नदियों और पहाड़ी झरनों की चिड़िया है जिसे पहाड़ों पर देवदारु के पेड़ों के बीच उड़ते और खुली पहाड़ी पर चुगते हुए देखा जा सकता है। इसके रहने का मुख्य स्थान ऐसी घाटियाँ हैं जो झरनों से भरी हैं। इसकी चहचहाहट से भी इसे पहचानना कठिन नहीं होता। इसका स्वर तेज़ मीठी सीटी की तरह होता है जो पानी की गड़गड़ाहट में भी नहीं दबता।

मालाबार कालजीत जब किसी चट्टान या किसी डाल पर फुदकती हुई अपनी दुम को ऊपर-नीचे हिलाती है तो ऐसा लगता है कि मानो पहाड़ की सम्पूर्ण फुर्ती और चुस्ती इसमें साकार हो गयी है।

**घोंसला** : यह अप्रैल के अंत से जून तक अंडे देती है और इसके घोंसले अगस्त तक पाये जाते हैं। इसका घोंसला बड़ा और प्याले के आकार का होता है जिसे यह जड़ों, रेशों और मिट्टी से बनाती है। इसके अन्दर नरम घास और सेवार आदि का अस्तर दिया जाता है।

ये घोंसले किसी चट्टान की दराज़ या घनी झाड़ी के भीतर रहते हैं जिन पर जल्द निगाह नहीं पड़ती। कभी-कभी ये घोंसले किसी घने और छोटे पेड़ पर भी देखे जा सकते हैं।

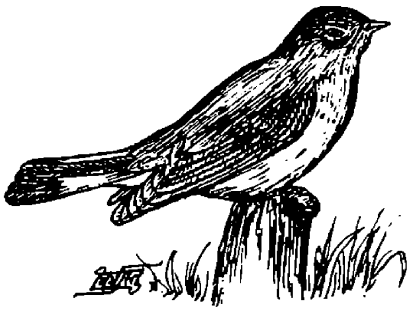
मादा समय आने पर तीन से पाँच तक अंडे देती है जो लम्बे और नुकीले होते हैं। अंडों का रंग राखीपन लिये सफेद या अंगूरी रहता है जिन पर गुलाबी, बादामी और बैंगनी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

ये अंडे करीब १.४० × १.०० इंच के होते हैं।

## ६९ सिफिया (Red Breasted Flycatcher : Sipiha Parva)

**पर्याय** : नारंग वक्ष शलभाश, टुर्रा, चुटकी।

**पहचान** : यह एक छोटा भूरा पक्षी है, जिसका निचला भाग सफेद होता है। कभी-कभी गले और छाती का रंग लाल भी होता है। पेड़ों पर मक्खी पकड़ने की आदतों के कारण इसे हम आसानी से पहचान सकते हैं। यह आमतौर से थोड़े-थोड़े समय पर अपनी पूँछ को ऊपर उठाती रहती है, जिससे उसके निचले भाग के सफेद धब्बे दिखते रहते हैं। व्यवहार में यह शान्त प्रकृति की होती है।



सिफिया

**रंग-रूप** : सिफिया की लम्बाई ५ इंच होती है। नर के ऊपरी भाग का रंग भूरा होता है, माथे का रंग राखी होता है। माथे के दोनों भाग नीले राखी रंग के होते हैं, आँख के चारों ओर सफेद छल्ले होते हैं। डैने काले भूरे तथा पूँछ भी काली-भूरी होती है। पंख के दो-तिहाई भाग सफेद होते हैं, ठोड़ी, गला और छाती ललछौंह और निचले पर के शेष भाग सफेद होते हैं। मादा और युवा नर के सम्पूर्ण ऊपरी पर भूरे तथा डैने और पूँछ कुछ अधिक भूरे होते हैं। पूँछ की जड़ के पंख मध्य भाग को छोड़कर, सफेद रहते हैं। आँख के चारों ओर सफेदी लिये हुए चक्र होते हैं। सम्पूर्ण निचला हिस्सा धूमिल होता है। आँख की पुतली काली भूरी तथा पैर भी काला भूरा होता है।

**निवास** : आमतौर से यह पक्षी सम्पूर्ण यूरोप, साइबेरिया और उत्तरी मध्य-एशिया में पाया जाता है। इनकी दो जातियाँ होती हैं जो जाड़ों में दक्षिण की तरफ चली आती हैं। इनके रंगों में विभिन्नता होती है। इसकी एक विशेष जाति के जोड़ा बाँधने के स्थान यूरोप और पश्चिमी साइबेरिया हैं। ये जाड़े के दिनों में अक्टूबर से मई तक अधिक संख्या में भारत में चले आते हैं और उत्तरी-पश्चिमी कोने से मालाबार तक, दक्षिण में नीलगिरि तक, पूर्व में बिहार और बंगाल में आसनसोल तक चले आते हैं। इसकी दूसरी जाति उत्तरी-पूर्वी एशिया में और खास तौर से उत्तरी-पूर्वी भारत, बर्मा और चीन में और कभी-कभी पश्चिम में बेल-गाँव और ट्रावनकोर तक भी जोड़ा बाँधने के समय दिखती है। इसकी एक जाति कश्मीर में भी पायी जाती है जिसका रंग तो वही होता है पर छाती का रंग अखरोटी होता है, जिसके किनारे-किनारे काली लकीरें होती हैं। इनके अंडे देने का स्थान कश्मीर है। ये ६,००० से ८,००० फुट की ऊँचाई पर अंडे देती है।

**विवरण** : यह चिड़िया साधारणतया वृक्षों के ऊपर आड़ में बसेरा करती है। यह जंगलों में खुले खेतों-मैदानों में और गाँवों के पड़ोस में कम मिलती है। यह कीड़ों को पकड़ने के लिए भूमि पर भी उतर आती है। इस पक्षी का सम्बन्ध वृक्षों से अधिक होता है। इसकी आदत मक्खियाँ पकड़ने की होती है। यह शर्मीली प्रकृति की, अपने को छिपाने वाली किन्तु चंचल होती है। अपनी पूँछ को पीठ पर सर्वदा फड़फड़ाती रहती है। यह थोड़े-थोड़े समय पर फुरे-पुर-फुरे की आवाज़ करती है जो स्पष्ट और कर्कश होती है। यह प्रजनन ऋतु में सुन्दर एवं मधुर गान भी करती है, लेकिन यह गान भारत में नहीं सुना जाता।

**घोंसला** : यह भारत में कश्मीर के अलावा और कहीं अंडे नहीं देती। इसकी एक जाति की प्रजनन ऋतु मई से जून तक होती है। इनका घोंसला वृक्षों के कोटरों में होता है, जिसकी ऊँचाई भूमि से ६ से लेकर ४० फुट तक होती है। घोंसले छोटे प्यालेनुमा और साफ-सुथरे रहते हैं। इनका निर्माण काई, सूखी पत्तियों, घास, लकड़ी के टुकड़ों एवं बालों से होता है। इनके अंडों के एक समूह में ४ से ५ अंडे होते हैं जो साधारणतया चौड़े आकार के होते हैं। इनका रंग पीला निलछौंह हरा या गुलाबी पत्थरी होता है जिस पर गंदे भूरे रंग के धब्बे होते हैं। अंडों का आकार ०.६५ × ०.५० इंच होता है।

## ७० श्यामचिरी (Tickells Blue Fly Catcher : Muscicapula Tickelliae)

**पर्याय** : नील शलभाश।

**पहचान** : इसका रंग गहरा नीला होता है। गले और छाती का रंग ललछौंह और शेष निचला भाग सफेद होता है। आँख पर सफेद रेखा नहीं होती और ये छायेदार जंगलों तथा वृक्षों के समूह में तथा पेड़ों और झाड़ियों में थोड़ी दूर तक उड़ते हैं तथा प्रसन्नता से लगातार गाते रहते हैं।

**रंग-रूप** : श्यामचिरी की लम्बाई ६ इंच की होती है। नर पक्षी के ऊपरी भाग के पंख गहरे नीले होते हैं, चेहरे के दोनों तरफ का हिस्सा काला होता है और नथुने से लेकर आँख तक एक सिधाई में चमक होती है। पंख तथा पूँछ का रंग काला तथा उनके ऊपर नीला रंग फिरा होता है। गला, छाती और पेट चमकीला ललाई लिये भूरे रंग का होता है और निचले परों का शेष भाग सफेद होता है। मादा नर की अपेक्षा धुमैली होती है। आँख की पुतली भूरी, चोंच काली और पैर सिलेटी भूरे होते हैं। चोंच चौड़ी और सिरे पर चपटी होती है जिसपर लम्बे बालों की झालर-सी होती है।

**निवास :** यह भारतवर्ष का बारहमासी पक्षी है जो यहीं थोड़ा स्थान-परिवर्तन करके बाहर नहीं जाता है। देश के उत्तर-पश्चिम में मसूरी, माउंट आबू और काठियावाड़ तथा आसाम को छोड़कर यह पक्षी वस्तुतः भारत के सभी ऊँचे स्थानों पर पाया जाता है। इसकी एक दूसरी जाति भी पायी जाती है जिसका ऊपरी भाग अधिक काला होता है।

**विवरण :** यह जंगलप्रिय पक्षी है जो घनी झाड़ी वाले छायादार स्थानों और सोतों के किनारे की झाड़ियों में पाया जाता है। ऐसे स्थानों में यह शाखाओं पर बड़ी तेजी से उड़ता है और कीड़ों को अपना शिकार बनाता है। यह बहुत चौकन्ना पक्षी है जिसे आसानी से नहीं देखा जा सकता। जब कोई जंगल में घूमता रहता है तो यह पक्षी धीरे-धीरे बोलता हुआ उसके समीप तक पहुँच जाता है, लेकिन जरा-सी ही आहट पाने पर यह गायब हो जाता है और फिर आसानी से निकट नहीं आता। इसकी बोली बहुत ही मीठी और सुरीली होती है।

**घोंसला :** इसके जोड़ा बाँधने का मौसम मार्च से अगस्त तक रहता है। लेकिन इसके घोंसले प्रायः जून और जुलाई में पाये जाते हैं। घोंसला छोटा प्यालेनुमा होता है जिसका निर्माण काई और सूखी पत्तियों से होता है और जिसमें नरम जड़ों और बालों का अस्तर दिया रहता है। ये घोंसले अक्सर नदी के किनारों, चट्टानों तथा घरों की कार्निसों पर मिलते हैं। वैसे इनका अनुकूल स्थान जंगली अंजीर के वृक्ष, केला और अन्य छोटे वृक्ष हैं। इनके अंडों की संख्या तीन से चार तक रहती है जो चौड़े अंडाकार होते हैं।

अंडे हलके अंगूरी या गुलाबीपन लिये पत्थरी रंग के होते हैं जिन पर घनी कत्थई चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

अंडों की नाप लगभग ०.७५ × ०.५६ इंच रहती है।

## ७१ नीलकटकटिया (Verditer Flycatcher : Eumyias Thalassina)

**पर्याय :** मयूरग्रीव शलभाश।

**पहचान :** यह पक्षी गर्मियों में हिमालय की बस्तियों और बाग-बगीचों में पाया जाता है। इसका रंग चमकदार हलका नीला होता है। इसके बैठने के स्थान खुले होते हैं तथा यह तेजी से दौड़ कर कीड़ों को पकड़ता है

**रंग-रूप :** इसकी लम्बाई ६ इंच की होती है। नर पक्षी की आँख के सामने एक काला धब्बा होता है। इसका सम्पूर्ण शरीर चमकीला-नीला होता है, इसके डैने का छिपा भाग और पूंछ कलछौंह भूरे होते हैं। पूँछ का निचला भाग सफेद होता है। इसकी मादा नर की तरह ही होती है लेकिन रंग में कुछ धुमैली होती है। ठोड़ी और गले के दोनों ओर सफेद धब्बे बने रहते हैं। आँख की पुतली भूरी होती है। चोंच और पैर काले होते हैं। चोंच चपटी होती है और ऊपर से निकोनी दिखाई देती है, वह बालों से ढकी होती है।

**निवास :** नीलकटकटिया हिमालय की चोटियों पर ४,००० से १०,००० फुट की ऊँचाई पर पायी जाती है। जाड़े के दिनों में ये हिमालय की पहाड़ियों से उतर कर ट्रावनकोर से सिंध तक फैल जाती हैं तथा कुछ और मैदानी भागों में भी आ जाती हैं।

**विवरण :** यह चिड़िया गर्मियों में हिमालय की छोटी पहाड़ियों पर पायी जाती है। यह सभी व्यक्तियों के ध्यान को आकर्षित कर लेती है। यह एक साहसी और निडर चिड़िया है जो बहुधा जंगलों और बगीचों में मिलती है। इसके बैठने के स्थान खुले होते हैं जहाँ इसके चमकीले रंग पर सूर्य की रोशनी पड़ती है, जो इसे और भी विचित्र बना देती है। यह अन्य पक्षियों की भाँति, अपने बैठने के स्थान से कीड़ों का शिकार करने के लिए एकाएक नीचे कूद पड़ती है। इसकी उड़ान बड़ी तेज होती है। जाड़े के दिनों में ये किसी भी ऐसे क्षेत्र में देखी जा सकती हैं, जहाँ लम्बे ऊँचे वृक्ष हों। यह आमतौर से वृक्षों की सबसे ऊँची डाली तथा टेलीग्राफ के तारों पर भी बैठी दिखाई पड़ती है।

**घोंसला :** इसका घोंसला प्यालेनुमा, हरी काई से बना और काफी सुन्दर होता है। अधिकांश घोंसले कगारों पर लटकते होते हैं जहाँ पर पानी और वृक्ष की जड़ों के मेल की वजह से खोखला-सा बना हो। इन घोंसलों का जान लेना कठिन होता है। यह सड़क और रास्तों के किनारे भी मिलते हैं। यह चिड़िया घोंसलों में बहुत सतर्क रहती है। अगर कोई व्यक्ति इनके घोंसले के निकट आ जाता है तो ये बहुत तेजी से निकल कर भागती हैं। इनके अंडों की संख्या ४ रहती है, पर कभी-कभी ये ३ से ५ तक पाये जाते हैं। अंडे शक्ल में चौड़े गोलाकार होते हैं और सिरों पर दबे होते हैं, जिसका छिलका शीघ्र टूटने वाला और हलका चमकीला होता है। इनका रंग हलका गुलाबी होता है और कुछ अंडों पर तो बिल्कुल कोई चिह्न नहीं होता। कभी-कभी अंडों के रंगों में विभिन्नता पायी जाती है। इनके जोड़े बाँधने का समय मई से जून तक होता है। अंडों का आकार औसतन ०.७८ × ०.५४ इंच होता है।

## ७२ नीली मक्षमरनी (Nilgiri Blue Flycatcher Eumyias Albicaudata)

**पर्याय :** नीलगिरि शलभाश।

**पहचान :** यह गहरे नीले रंग की चिड़िया है जो माथे पर चमक और पूँछ की जड़ के पास सफेद चकत्ते के कारण आसानी

से पहचानी जा सकती है। अपनी सुन्दर पोशाक तथा मधुर गाने के कारण यह हमारी चिरपरिचित चिड़िया हो गयी है।

**रंग-रूप** : यह मछमरनी गहरे नीले रंग की चिड़िया है जो ६ इंच लम्बी होती है। इसके नर की आँख के ऊपर तथा माथे पर धूमिल नीली झलक होती है। आँख के सामने काला धब्बा होता है। डैने और पूँछ काले होते हैं तथा पूरी पूँछ के किनारे नीले रंग के होते हैं। पूँछ की जड़, मध्य को छोड़कर, एकदम सफेद होती है।

मादा की पूँछ की जड़ पर नीले धब्बे होते हैं। डैने काले भूरे होते हैं तथा सम्पूर्ण पंखों के किनारे जैसे गाढ़ी नीली स्याही से रंगे होते हैं।

आँख की पुतली काली-भूरी होती है। चोंच सींग के रंग की काली होती है। पैर काले भूरे तथा चोंच जड़ के पास कुछ चपटी एवं बालों से भरी होती है।

**निवास**: नीली मछमरनी स्थान-परिवर्तन नहीं करती। यह पहाड़ी सोतों, झाड़ियों, इलायची के वृक्षों पर, पगडंडियों के किनारे व जलाशयों के निकट अपने भोजन की तलाश करती रहती है। कभी-कभी ये बाग बगीचों में भी भ्रमण करने चली जाती हैं। यह पेड़ों की ऊँची डालियों पर बैठकर अपना मधुर संगीत सुनाया करती है और इसके मंद-मंद गीत से सारा जंगल गूँज उठता है। पेड़ों पर बैठ कर यह अपनी पूँछ ऊपर-नीचे करती रहती है। इसका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े हैं, पर पेट भरने के लिए फल-फूल भी खूब खाती है।

**घोंसला**: इसके जोड़ा बाँधने का समय मार्च से जून तक होता है लेकिन अधिकांश अंडे अप्रैल में ही पाये जाते हैं। इनके घोंसले पहाड़ों के कगारों की झिरियों में बने होते हैं। पुलों, घरों की ओरियों, भीटों व पेड़ के खोथों में भी इनके घोंसले पाये जाते हैं। इसका घोंसला काई और टहनियों का सुन्दर-सा बना होता है जिसमें परों का बिछौना बिछा होता है। मादा समय आने पर दो या तीन अंडे देती है जो अंडाकार और संदली रंग के होते हैं। किसी-किसी अंडे पर चमक होती है और किसी-किसी पर नहीं भी होती। इन अंडों पर हलकी गुलाबी रंग की बिन्दियाँ व चित्तियाँ पड़ी होती हैं जो चौड़े सिरे की तरफ अधिक और नुकीले सिरे की ओर कम होती जाती हैं। आकार में ये अंडे ०.८ × ०.६ इंच के होते हैं।

## ७३ खैरी मछमरनी (Black and Orange Fly-catcher : Ochromela Nigrorufa)

**पर्याय**: कृष्ण नारंग शलभाश, चुटचुटिया।

**पहचान**: यह एक नारंगी रंग की चिड़िया है जिसकी पूँछ का रंग नारंगी होने के कारण इसे पहचानने में कठिनाई नहीं होती। इसको प्रकृति ने सुन्दर पोशाक भी दी है और साथ ही मधुर स्वर भी।

**रंग-रूप** : यह ५ इंच का पक्षी है, जिसके सिर और गरदन का पिछला भाग काला होता है। इसका सारा शरीर नारंगी रंग का होता है तथा उस पर अखरोटी रंग की झलक होती है। यह रंग गले और पेट पर कुछ धूमिल हो जाता है। आँख के ऊपर कुछ भूरे धब्बे होते हैं। आँख की पुतलियाँ भूरी, चोंच काली-भूरी तथा पैर हरछौंह भूरे रंग के होते हैं। खुरदुरी एवं चौड़ी चोंच पर बाल भी होते हैं। इसके नर-मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं।

**निवास**: खैरी मछमरनी भारत में हिमालय की दक्षिणी-पश्चिमी पहाड़ियों पर २,५०० से ७,००० फुट तक की ऊँचाई पर पायी जाती हैं। यह दक्षिण में नीलगिरि तथा ट्रावनकोर की पहाड़ियों पर भी काफी संख्या में पायी जाती है। यह स्थान-परिवर्तन नहीं करती।

**विवरण**: यह मछमरनी घने जंगलों एवं घनी झाड़ियों वाली पहाड़ियों पर रहना अधिक पसन्द करती है। जोड़ा बाँधने के समय यह सदाबहार, छायादार एवं दलदली स्थानों में रहना पसन्द करती है। ऐसे समय में यह जोड़े में ही दिखाई पड़ती है। कभी-कभी यह सूखी डालियों या गिरे हुये पेड़ों की शाखाओं पर चुपचाप बैठी पायी जाती है। यह भूमि पर उतरना पसन्द नहीं करती, यहाँ तक कि कीड़े-मकोड़े पकड़ने के लिए भी यदि जमीन पर आती है तो उसे पकड़ कर फौरन पेड़ों की शाखा पर जा बैठती है। कीड़े-मकोड़ों को देखते ही यह एकाएक उन पर टूट पड़ती है। वैसे यह जमीन से दो या तीन फुट की ऊँचाई पर भले ही बैठी रहे, परन्तु जमीन पर नहीं आती। यह जंगलों के एकान्त स्थानों को पसन्द तो करती है, पर शर्मीली चिड़िया नहीं है। इसकी आवाज़ सुनकर ऐसा जान पड़ता है कि कोई कीड़ा बोल रहा है।

**घोंसला**: इनका जोड़ा बाँधने का समय मार्च से मई तक रहता है। इनका घोंसला पेड़ की सूखी डालियों के खोखों एवं झाड़ियों में ३ या ४ फुट की ऊँचाई पर होता है, जो घास, सूखी पत्तियों तथा टहनियों से बना होता है। ये घोंसले डालियों पर अन्य पक्षियों के घोंसलों की भाँति बँधे नहीं होते। घोंसले में जाने के लिए एक सूराख होता है। मादा २ अंडे देती है जो अंडाकार, सुन्दर, कोमल एवं चमकीले होते हैं। यह हरछौंह सफेदी-मायल होते हैं तथा उन पर हलके गुलाबी रंग के धब्बे पड़े होते हैं। कभी-कभी ये धब्बे चौड़े सिरे की ओर अधिक रहते हैं। आकार में ये अंडे ०.७० × ०.५२ इंच के होते हैं।

## ७४ पिलपेटी मछमरनी (Grey-Headed Fly-catcher: Culicicapa Ceylonensis)

**पर्याय**: भस्मशीर्ष शलभाश।

**पहचान**: पिलपेटी मछमरनी को इसकी पीली पोशाक के कारण पहचानने में बहुत आसानी होती है। इसका माथा और गरदन राखी रंग का होता है। यह चौकन्नी और फुर्तीली चिड़िया है, जिसे छायादार वृक्षों में शोर मचाते और इधर-उधर फुदकते हुए आसानी से देखा जा सकता है।

**रंग-रूप**: इसकी लम्बाई ५ इंच होती है। नर तथा मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। गरदन तथा माथा राखी रंग के होते हैं। मुकुट पर काला रंग होता है। परों का शेष भाग हरछौंह पीला परन्तु कुछ धूमिल होता है तथा निचला भाग अधिक चमकीला तथा पीला होता है। डैनों का छिपा भाग और पूँछ गहरी-भूरी होती है। आँख की पुतली काली-भूरी, चोंच भूरी और पैर पीले-भूरे होते हैं। चोंच ऊपर से त्रिभुजाकार दिखाई देती है, जिस पर घने और लम्बे बालों की माला-सी होती है।

**निवास**: यह मछमरनी भारत, लंका और बर्मा में सामान्य रूप से और पूर्व में थाइलैण्ड और हिन्दचीन के पूर्वी भाग, जावा और बोर्नियो तक पायी जाती है। ये विभिन्न जातियों में बँटी रहती हैं जिनमें से हम लोगों का सम्बन्ध केवल दो जातियों से है। एक जाति का जोड़ा बाँधने का स्थान ३,००० से ८,००० फुट तक ऊँची हिमालय की और दूसरी पहाड़ियों में है। प्रजनन ऋतु के बाद ये मैदानों में भी भ्रमण करती हैं। दूसरी जाति के जोड़ा बाँधने का स्थान हिमालय में कश्मीर से भूटान तक है और जाड़े के दिनों में ये भी पंजाब, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और गुजरात के उत्तरी भागों तक पायी जाती हैं। नीलगिरि और ट्रावनकोर की पहाड़ियों तथा लंका में इसकी एक और जाति मिलती है। इस जाति की चिड़िया छोटी और भूरे रंग की होती है जिसकी छाती पर सफेद धब्बे होते हैं। यह उत्तरी पंजाब और राजस्थान के अतिरिक्त सम्पूर्ण भारत में पायी जाती है।

**विवरण**: इस मछमरनी के जोड़ा बाँधने के स्थान घने जंगल, कंदराओं तथा चट्टानों और छायादार वृक्षों के कोटर होते हैं। ये वृक्षों की एक शाखा से दूसरी शाखा पर सूर्य की प्रभा में निरन्तर उड़ा करती है। यह चंचल एवं प्रसन्नचित्त पक्षी है। इसकी आवाज़ जंगलों के खुले क्षेत्रों में अधिक कर्कश तथा ऊँची सुनाई देती है। अंडे देने के बाद मादा पक्षी प्रायः अकेली पायी जाती है।

**घोंसला**: इसकी प्रजनन ऋतु अप्रैल से जून तक रहती है। इसके घोंसले बहुत ही आकर्षक होते हैं। इनका निर्माण एक विशेष प्रकार की हरी चमकीली काई तथा मकड़ी के जालों द्वारा किया जाता है। आकार में ये घोंसले कटोरे जैसे होते हैं। इनका निर्माण लम्बे वृक्षों के तनों एवं चट्टानों पर होता है। घोंसले बिना बँधे होते हैं और उन्हें बँधा रखने के लिए कभी-कभी काई और जड़ों का भी प्रयोग किया जाता है। इसके घोंसले में ३ से ४ तक अंडे मिलते हैं। अंडे चौड़े, अंडाकार, शक्ल में मद्दे एवं चमकीले होते हैं। इनका रंग सफेद गंदला पिलछौंह होता है और उन पर भूरे एवं पीले धब्बे तथा छींटे होते हैं जो बड़े सिरे की तरफ अधिक पाये जाते हैं। नाप में इनके अंडे औसतन ०.६० × ०.४८ इंच के होते हैं।

## ७५ जक्की (Brown Flycatcher : Alseonax Latirostris)

**पर्याय**: अभूषित शलभाश।

**पहचान**: यह छोटी मछमरनी भूरे और सफेद रंग की होती है जिसे उड़ते हुए कीड़े-मकोड़ों को पकड़ते देख कर पहचानने में भूल नहीं हो सकती।



जक्की

**रंग-रूप**: जक्की भूरे रंग की ५ इंच की प्रसिद्ध मछमरनी है जिसका ऊपरी भाग भूरा और निचला भाग सफेद रहता है। इसके सीने पर भूरे चित्ते पड़े रहते हैं। आँख की पुतली तथा चोंच भूरी और टाँगें पिलछौंह भूरी रहती हैं। अन्य मछमरनियों की भाँति इसकी भी चोंच तिकोनी रहती है जिसके किनारों पर लम्बे बाल रहते हैं।

**निवास**: जक्की राजपूताना तथा पंजाब के हरे-भरे मैदानों के अलावा हमारे देश में सभी स्थानों पर देखी जा सकती है। यह ऊँचे पहाड़ों पर नहीं जाती। इसी कारण इसे हिमालय, विन्ध्यपर्वत तथा अन्य पहाड़ी स्थानों के निचले हिस्से में ही देखा जा सकता है।

**विवरण**: जक्की बहुत प्रसन्न रहने वाली छोटी-सी चिड़िया है जो इधर-उधर उड़ते हुए कीड़े-पतिंगों का शिकार करती रहती है। यह एक प्रकार की बोली बोलती है जो ची-टुट अथवा टी-जिट जैसी लगती है। यह वैसे तो गरोह में रहती है लेकिन जोड़ा बाँध लेने पर नर पक्षी प्रायः अकेले ही दिखाई पड़ते हैं। इनका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े और पतिंगे हैं।

**घोंसला** : जक्की के जोड़ा बाँधने का समय अप्रैल से जून तक रहता है जिसके बीच यह अपना सुन्दर लम्बोतरा घोंसला बनाती है जो पेड़ों के तनों से लगे रहते हैं। ये घोंसले सेवार, काई और जड़ों से बनाये जाते हैं जिन्हें यह मकड़ी के जालों से अच्छी तरह जकड़ देती है। ये काफी ऊँचाई पर रहते हैं। समय आने पर मादा तीन-चार अंडे देती है जो चौड़े अंडाकार होते हैं। इनका रंग सफेद या पिलछौंह सफेद रहता है। जिन पर सिलेटी बिन्दियाँ और चित्तियाँ पड़ी रहती हैं। नाप में ये अंडे करीब ०.६० × ०.४८ इंच के होते हैं।

## ७६ दूधराज (Paradise Flycatcher : Tchitrea Paradisi)

**पर्याय** : शाह बुलबुल, रज्जुवाल शलभाश, हुसैनी बुलबुल, सुलताना बुलबुल, ताकला।

**पहचान** : बड़े होने पर दूधराज की लम्बी दुम के बीच के दो लम्बे पर, फीते की तरह १० इंच लम्बे हो जाते हैं, जो इनके उड़ते समय देखने में बहुत सुन्दर लगते हैं। बड़े हो जाने के बाद नर पक्षी सफेद हो जाते हैं, लेकिन मादा और पट्ठे कत्थई रंग के रहते हैं।

**रंग-रूप** : दूधराज की लम्बाई, लम्बी पूँछ को छोड़कर, ९ इंच की होती है। बड़े नर पक्षियों की दुम के नीचे दो पर १० इंच लम्बे होते हैं। नर सफेद रंग का होता है, जिसका सिर, गरदन और चोटी चमकीले काले होते हैं। ऊपरी भाग पर काली धारियाँ होती हैं और डैने तथा पूँछ पर भी तितरी-बितरी लकीरें रहती हैं। मादा और नर पट्ठों का सिर, गरदन और चोटी चमकीले काले रंग के होते हैं। उनकी ठोड़ी, गला और छाती का ऊपरी हिस्सा राखीपन लिये काला रहता है। ऊपरी हिस्सा, डैने तथा पूँछ चटक खैरे रंग के होते हैं। आँख की पुतली काली-भूरी होती है, चोंच और आँख के किनारे चटक नीले होते हैं, पैर सिलेटी नीले होते हैं और चोंच फैली और उठी हुई होती है।

**निवास** : ये पक्षी तुर्किस्तान से दूर पूर्व तक पाये जाते हैं। ये कई जातियों में विभक्त होते हैं। हमारा सम्बन्ध केवल तीन जातियों से है। एक जाति तो पश्चिमी उत्तर प्रदेश से ब्रह्मपुत्र तक के मैदानों में तथा दक्षिण में कन्याकुमारी तक मिलती है। दूसरी जाति अफगानिस्तान, बिलोचिस्तान, कश्मीर और हिमालय के पूर्व नैपाल तक कम ऊँचे पहाड़ों पर पायी जाती है। तीसरी जाति, जिसका सिर, गरदन और छाती राखी रंग की होती हैं और छोटी-सी कलंगी काली होती है, आसाम में पायी जाती है। यह जाड़े के दिनों में अन्दमान-निकोबार द्वीपों तक चली जाती है। इसकी एक जाति लंका में भी पायी जाती है जो सफेद रंग के स्थान में अखरोटी रंग की होती है। इसके सम्बन्ध में बहुत कम जानकारी है। यह भ्रमण करने वाला पक्षी है, जो गर्मियों में उत्तरी-पश्चिमी हिमालय और बिलोचिस्तान की पहाड़ियों पर चला जाता है। वहाँ पर ये मार्च से अप्रैल तक रहते हैं और सितम्बर में वापस लौट आते हैं। पंजाब के अधिकांश भाग में ये पक्षी उन्हीं महीनों में पाये जाते हैं।

**विवरण** : इसके लम्बे हिलते हुए पूँछ के पर आभूषणों की याद दिलाते हैं। ये पक्षी शक्ल में सुन्दर तथा रंग की विशेषता में अद्वितीय हैं और प्राकृतिक वातावरण में इसकी सुन्दरता और भी बढ़ जाती है। ये पक्षी गुफाओं और छायादार स्थानों पर जलाशयों के किनारे पाये जाते हैं। यह पक्षी कभी फुनगियों पर बैठता है तो कभी गहरी छाया में चला जाता है। इस पक्षी की उड़ान बहुत सुहावनी होती है। इसका सम्पूर्ण भोजन उड़ते कीड़ों पर निर्भर रहता है। यह वृक्षों पर रहने वाला पक्षी है। भूमि पर चलने के लिए इसके पैर बहुत छोटे एवं कमजोर होते हैं। यह चंचल और प्रसन्न-चित्त पक्षी है जो सर्वदा भ्रमण करता रहता है। नर पक्षी अपनी पूँछ को फड़फड़ाता रहता है। इसकी बोली कर्कश और रूखी होती है जो कानों को अप्रिय लगती है।

**घोंसला** : इसकी प्रजनन-ऋतु स्थान के अनुसार बदलती रहती है। उत्तरी भारत में प्रजनन-ऋतु अप्रैल से जून तक और दक्षिणी भागों में कुछ पहले अर्थात् फरवरी से ही प्रारम्भ हो जाती है। इसके घोंसले का स्थान सुरक्षा पर निर्भर रहता है जो विचित्र स्थानों पर होने के कारण, आसानी से नहीं देखे जा सकते। इनका निर्माण सूखी घास, पत्तियों, काई तथा मकड़ी के जालों से होता है जो एक विशेष प्रकार की घास से बँधा होता है। इसके अन्दर मकड़ी के जाले से पलस्तर-सा किया होता है। घोंसले की बनावट बहुत ही सुन्दर होती है। घोंसले ऐसी टहनियों या तनों पर पाये जाते हैं जिनकी ऊँचाई ५ से ४० फुट तक होती है। मादा पक्षी समय आने पर २ से ४ अंडे देती है जो सुन्दर तथा अंडाकार होते हैं। इनका रंग पीलापन लिये गुलाबी या गंदा-गुलाबी होता है जिन पर भूरे लाल-रंग के धब्बे होते हैं। चौड़े सिरे पर कुछ छोटे राखी रंग के धब्बे भी होते हैं। ये अंडे लगभग ०.८० × ०.६० इंच के होते हैं।

## ७७ मछरेटा (Black-Naped Flycatcher : Hypothymis Azurea)

**पर्याय** : कृष्ण घाट शलभाश।

**पहचान** : मछरेटा दुबला-पतला पक्षी है। नर पक्षी का रंग नीला होता है। सिर नीला तथा गरदन चमकीली होती है। खोपड़ी मखमली होती है। गले पर अर्द्ध चंद्राकार काला रंग होता है। मादा पक्षी का सिर और गरदन हलके नीले रंग के दिखाई देते हैं। यह वृक्षों की मक्खियों को पकड़ते रहते हैं।

**रंग-रूप** : यह लम्बाई में ६ इंच की चिड़िया है जिसका सिर, गरदन और छाती नीले चमकीले रंग के होते हैं। चोंच

की जड़ के पास हल्के धब्बे रहते हैं। सिर के पिछले भाग पर एक लम्बा चकता और गले पर गहरे मखमली काले रंग की अर्द्ध चंद्राकार लकीर होती है। शेष ऊपरी भाग काला नीला होता है। डैने और पूंछ गहरे होते हैं और काले-नीले रंग से घुले रहते हैं तथा शेष निचला भाग सफेद होता है। इसकी मादा के सिर, गरदन और छाती घूमिल राखी रंग की होती है। शेष ऊपरी भाग डैने और पूंछ गहरे राखी रंग की होती है और निचला भाग सफेद होता है। आँख की पुतली काली और चोंच गहरी नीली होती है। इसके किनारे या सिरे काले होते हैं। पैर सिलेटी और पंजे सींग के रंग के होते हैं। चोंच चौड़ी और जड़ पर चपटी होती है। इस पर लम्बे-लम्बे बाल होते हैं। इसके पैर कमजोर होते हैं।

**निवास**: यह पक्षी भारतवर्ष के अधिकांश भाग तथा लंका, असम, बर्मा, यूनान, स्याम और चीन से फिलिपाइन तक पाये जाते हैं। इनकी कई जातियाँ होती हैं। ये पहाड़ों पर रहते हैं जो कि ४,००० फुट से कम ऊँचे हों।

**विवरण**: यह सुन्दर पक्षी देश के घने जंगली क्षेत्रों में पाये जाते हैं। ये बाँस के जंगलों को बहुत अधिक पसन्द करते हैं और कभी-कभी देश के खुले भागों के वृक्षों के कुंजों में या गाँव के निकट वृक्षों पर पाये जाते हैं। इसका भोजन विभिन्न प्रकार के कीड़े-मकोड़े हैं। यह शिकार के लिए झुंड में जाते हैं।

**घोंसला** : इनके जोड़ा बाँधने का समय अप्रैल से अगस्त तक रहता है। इसके घोंसले जून से जुलाई के प्रारम्भ में पाये जाते हैं। इनका घोंसला गहरा छोटा प्यालेनुमा होता है। इसका निर्माण सुन्दर घासों एवं डंठलों से और सूखी घास और रेशों से सुन्दर-सा बना होता है। यह बनावट में सुन्दर होता है। इनका घोंसला वृक्षों की कटीली शाखाओं से लटकती हुई बाँस की टहनियों पर, जो भूमि से थोड़ी ऊँचाई पर होती हैं, पाया जाता है।

इनके अंडे लगभग ०.६९ × ०.५३ इंच के होते हैं।

## ७८ छतरदुमा (White browed Fantail Flycatcher: Leucocirca Aureola)

**पर्याय**: श्यामचिरि, छितनियाँ, सित-भ्रूलट्व शलभाश।

**पहचान**: छोटी काली और सफेद चिड़िया जो पेड़ों की सायेदार डालियों पर बैठ कर अपनी पंखी जैसी दुम कभी-कभी फैलाती रहती है, इसे सारे देश के मैदानी हिस्सों में देखा जा सकता है।

**रंग-रूप** : छतरदुमा मछमरनी की एक जाति है जो लगभग ७ इंच लम्बी होती है। इसके नर और मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। लेकिन मादा का रंग नर से कुछ घूमिल रहता है। इसका माथा सफेद रहता है जहाँ से एक सफेद पट्टी आँखों के ऊपर होती हुई गुद्दी तक चली जाती है। सिर का शेष भाग काला और गाल, ठुड्डी तथा गले के परों के किनारे सफेद रहते हैं। शरीर का ऊपरी भाग, डैने और दुम भूरी होती है। डैनों पर के परों के सिरे सफेद होते हैं। दुम के बिचले परों को छोड़कर सबके सिरे भी सफेद रहते हैं। इसके सीने के दोनों बगली हिस्से काले होते हैं और नीचे का सारा हिस्सा सफेद रहता है।

आँख की पुतली भूरी और चोंच और टाँगें काली होती हैं। इसकी चोंच काफी लम्बी और चपटी होती है जिसके किनारे पर बाल रहते हैं। दुम गोलाकार होती है जिसे यह अपने इच्छानुसार पंखी की तरह फैला लेती है।

**निवास**: छतरदुमा हमारे देश में कश्मीर को छोड़कर प्रायः सभी स्थानों में पायी जाती है। हिमालय की ओर यह ४,००० फुट तक दिखाई पड़ती है। यह यहाँ की बारहमासी चिड़िया है जो मौसम के बदलाव के साथ थोड़ा स्थान-परिवर्तन कर लेती है, पर हमारा देश छोड़ कर बाहर नहीं जाती।

**विवरण** : छतरदुमा खुले मैदान की चिड़िया है जो बाग-बगीचों, खेतों और सड़क के पास के वृक्षों पर अक्सर दिखाई पड़ती है। यह अपना समय पेड़ों पर ही बिताती है और जमीन पर बहुत कम उतरती है। यह बहुत सुन्दर और चंचल चिड़िया है जो एक क्षण भी स्थिर नहीं रहती। किसी डाली पर बैठते ही यह झटका देकर इधर-उधर हिलने लगती है जैसे नाच रही हो। थोड़ी-थोड़ी देर बाद यह अपनी दुम को पंखी जैसी फैला कर उसे ऊपर-नीचे उठाती-गिराती रहती है और अपने सर को झटका देकर ऊपर की ओर उठाती है। कुछ समय बाद यह हवा में उड़ कर छोटे-छोटे कीड़े-पतिंगों को पकड़ कर फिर अपनी डाली पर आ बैठती है और नाचने और गाने लगती है।

यह बहुत ढीठ चिड़िया है जो मनुष्यों की उपस्थिति की परवाह किए बिना कीड़े-पतिंगे पकड़ती रहती है। इसका मुख्य भोजन छोटे-छोटे कीड़े-पतिंगे हैं।

**घोंसला**: छतरदुमा के जोड़ा बाँधने का समय मार्च से अगस्त तक रहता है जिसके बीच यह दो बार अंडे देती है। इसका घोंसला बहुत सुन्दर होता है। यह छोटा और कटोरानुमा होता है जो किसी दुफंकी डाल के ऊपर रखा रहता है। यह महीन रेशों और घास-फूस से बनाया जाता है जिसे यह मकड़ी के जाले से अच्छी तरह लपेट देती है। भीतर के हिस्से में बहुत मुलायम घास का अस्तर रहता है। ये घोंसले करीब ५ फुट से ४० फुट तक की ऊँचाई पर बनाये जाते हैं।

इनके अंडों की संख्या २ से ४ तक रहती है जो चौड़े और बैजाबी होते हैं। इन अंडों पर पेंदे की ओर सिलेटी भूरी और बैंगनी बिन्दियाँ और चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

अंडे लगभग ०.६६ × ०.५१ इंच के होते हैं। इसकी एक

और जाति चाकदिल (White Throated Fantail Fly-catcher : Lencocirca albicollis ) हमारे देश में काफी संख्या में पायी जाती है। इसका ऊपरी भाग भूरा और नीचे का कलछौंह भूरा रहता है। यह हिमालय में ७,००० फुट की ऊँचाई तक पायी जाती है।

## ७९ दूधिया लहटोरा (Great Grey Shrike : Lanius excubitor )

**पर्याय** : सफेद लहटोरा-कसाई चिड़िया. सित-भस्म लटूषक।

**पहचान** : सुन्दर सफेद चिड़िया जिसका सिर बड़ा होता है। आँखों पर से होकर एक काली पट्टी पड़ी रहती है और डैने और दुम पर भी काले धब्बे रहते हैं। ये प्राय: अकेले या जोड़े में खुले मैदानों में किसी पेड़ या झाड़ी पर बैठे दिखाई देते हैं।

**रंग-रूप** : यह लगभग १० इंच का पक्षी है। इसके नर-मादा एक-जैसे होते हैं। एक चौड़ी काली पट्टी इसकी चोंच से चलकर आँखों के ऊपर से चली जाती है। डैने काले जिस पर सिलेटी और भूरी धारियाँ पड़ी रहती हैं, ऊपर का हिस्सा निलछौंह और नीचे का भाग सफेद रहता है।

आँख की पुतली गाढ़ी भूरी और चोंच तथा टाँगें काली होती हैं। इसके चोंच का ऊपरी भाग शिकारी पक्षियों की तरह आगे की ओर झुका रहता है।

**निवास** : लहटोरा हमारे देश में सारे उत्तर भारत में पाया जाता है। दक्षिण की ओर यह बेलगाँव और चाँदा के आगे नहीं मिलता। यह मैदान में रहने वाला पक्षी है जो पहाड़ी की ओर जाना पसन्द नहीं करता है।

**विवरण** : यह लहटोरा खुले हुए प्रदेशों का निवासी है, जिसे मैदान, खेत और ऊसरी भागों में आसानी से देखा जा सकता है। इसे जंगल और पहाड़ नहीं भाते और यह खुले मैदानों में ही रहता है। यह प्राय: अकेला या जोड़े में दिखाई पड़ता है और अक्सर किसी छोटी झाड़ी या पेड़ के ऊपर बैठा रहता है। वहाँ से उड़कर यह कीड़े-मकोड़ों को पकड़ने के लिए जमीन पर उतरता है और कभी-कभी जमीन की सतह पर से भी कीड़े-पतिंगों को पकड़ कर पेड़ पर जा बैठता है। इसकी बोली कर्कश होती है लेकिन कभी-कभी यह सुरीली बोली भी बोलता है। यह बहुत बहादुर और निडर पक्षी है जिसका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े और छिपकलियाँ आदि छोटे जीव हैं। यह प्राय: अपने बचे हुए भोजन को किसी कँटीली डाल में फँसा देता है।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय जनवरी से अक्टूबर तक रहता है जिसके बीच मादा प्राय: दो बार अंडे देती है। इसका घोंसला बड़े कटोरेनुमा होता है जिसको ये बहुत सुन्दर ढंग से बनाते हैं। यह काँटेदार टहनी, मोटी घास और जड़ों आदि से बनाया जाता है जिसका भीतरी भाग ऊन, रूई और नरम घास से मुलायम कर दिया जाता है। ये घोंसले किसी घनी झाड़ी या छोटे पेड़ पर पाँच से दस फुट की ऊँचाई तक पाये जाते हैं।

समय आने पर मादा ३ से ६ तक अंडे देती है। ये अंडे चौड़े बैजाबी होते हैं जिनका सिरा नुकीला होता है। इनका रंग हलका हरापन लिये सफेद होता है जिन पर भूरी और बैंगनी बिन्दियाँ और चित्ते पड़े रहते हैं।

नाप में ये अंडे करीब १.०५ × ०.८० इंच के रहते हैं।

## ८० पचानक (Bay Backed Shrike : Lanius Vittatus)

**पर्याय** : पंच-वर्णक लटूषक

**पहचान** : यह लहटोरा दूधिया लहटोरा से कुछ छोटा होता है जो अपनी लम्बी दुम और सिलेटी सफेद सिर के कारण आसानी से पहचाना जा सकता है। इसकी कत्थई पीठ और चितकबरी दुम इसको पहचानने में मदद करती है।



पचानक

**रंग-रूप** : पचानक ७ इंच लम्बा लहटोरा है जिसके नर व मादा एक-जैसे होते हैं। इसके भी आँखों के ऊपर से एक चौड़ी काली पट्टी गुद्दी तक चली जाती है। चोटी और गर्दन का ऊपरी भाग सिलेटी मायल सफेद रहता है और पीठ और कंधे गाढ़े कत्थई रहते हैं। दुम की जड़ के पास का हिस्सा सफेद और डैने काले रहते हैं जिन पर बाहर की ओर निचले हिस्से में एक सफेद चित्ता पड़ा रहता है। दुम काली होती है जिसके बाहरी किनारे सफेद होते हैं। निचला हिस्सा सफेद रहता है जो सीने तक आते-आते प्याजी हो जाता है।

आँख की पुतली भूरी और दुम और टाँगें काली होती हैं। ऊपरी चोंच का अगला भाग शिकारी पक्षियों की तरह नीचे की ओर झुका रहता है।

**निवास** : यह लहटोरा हमारे देश में प्राय: सभी स्थानों में

पाया जाता है। हिमालय में भी ये ६,००० फुट की ऊँचाई तक देखे जाते हैं। यह हमारे यहाँ का बारहमासी पक्षी है लेकिन ऋतु-परिवर्तन के साथ-साथ थोड़ा बहुत स्थान-परिवर्तन भी कर लेता है।

**विवरण** : एकान्तक खुले मैदानों का पक्षी है जो खेतों, झाड़ी वाले मैदानों और बाग-बगीचों में रहना अधिक पसन्द करता है। इसको घने जंगल और रेगिस्तानी प्रदेश नहीं भाते। ये अक्सर टेलीग्राफ के तार, छोटे पेड़ और ऊँची झाड़ियों के ऊपर बैठे दिखाई पड़ते हैं जहाँ से नीचे उतर कर ये कीड़े-मकोड़ों को पकड़ कर फिर अपने स्थान पर लौट आते हैं। यह बहुत दिलेर पक्षी है और इसकी उड़ान बहुत तेज होती है। इसकी बोली वैसे तो बहुत कर्कश होती है लेकिन कभी-कभी यह मीठी बोली भी बोलता है। इसके मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े और उनकी जोराइयाँ हैं।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय मार्च से सितम्बर तक रहता है। इस बीच मादा कभी-कभी दो बार अंडे देती है। इसका घोंसला बहुत सुन्दर कटोरानुमा होता है जो महीन घास, रेशों और पतली टहनियों से बनाया जाता है। बाहरी हिस्सा मकड़ी के जालों से चिकना कर दिया जाता है और भीतरी हिस्सा नरम घास से मुलायम बना दिया जाता है। ये घोंसले किसी छोटे पेड़ की दुफंकी डाल पर ६ से १० फुट की ऊँचाई पर रखे रहते हैं।

अंडों की संख्या प्रायः ४ रहती है लेकिन कभी-कभी मादा ६ अंडे तक देती है। ये अंडे चौड़े और बैजाबी होते हैं जिन पर थोड़ी चमक रहती है। अंडे का रंग धुमैला सफेद रहता है जिसमें हलके हरेपन की झलक रहती है। इन अंडों पर बादामी और बैंगनी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

नाप में ये अंडे लगभग ०.८३ × ०.६६ इंच के होते हैं।

## ८१ माटिया लहटोरा (Brown Shrike : Lanius Cristatus)

**पर्याय**: वभ्रु लटूषक।

**पहचान**: यह छोटा लहटोरा है जिसकी पीठ ललछौंह भूरी, आँख पर होती हुई कलछौंह चौड़ी पट्टी और नीचे का सारा भाग सफेदी मायल गंदा पीला रहता है। इसे छोटे-छोटे पेड़ों और झाड़ियों के ऊपर बैठा देखा जा सकता है।

**रंग-रूप** : माटिया लहटोरा ७ इंच का छोटा लहटोरा है जिसके नर-मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। इसके शरीर का ऊपरी भाग ललछौंह भूरा रहता है जो गुद्दी और चोटी पर अधिक चटक हो जाता है। एक हलकी सफेद लकीर आँखों के ऊपर और एक कलछौंह चौड़ी पट्टी आँखों पर से होती हुई कान तक चली जती है। डैने गाढ़े भूरे, दुम ललछौंह भूरी और नीचे का हिस्सा सफेदी मायल गंदा पीला रहता है जिस पर सीने और परों पर महीन काली धारियाँ पड़ी रहती हैं।



माटिया लहटोरा

आँख की पुतली भूरी, चोंच सिलेटी भूरी और टाँगें निलछौंह सिलेटी रहती हैं। अन्य लहटोरों की भाँति इसकी ऊपरी चोंच का अगला सिरा नीचे की ओर मुड़ा रहता है।

**निवास**: यह लहटोरा यहाँ का मौसमी पक्षी है जो हमारे देश के पूर्वी भागों में जाड़ों में फैल जाता है। उस समय इसे उत्तर प्रदेश के दक्षिणी-पूर्वी भागों से लेकर दक्षिण भारत तक आसानी से देखा जा सकता है। पश्चिम भारत की ओर इसकी एक दूसरी जाति दिखाई पड़ती है।

**विवरण** : इस लहटोरे को जाड़ों में खेतों, मैदानों, घने जंगलों आदि सभी स्थानों में देखा जा सकता है। यह किसी छोटे पेड़, ऊँची झाड़ी या टेलीग्राफ के तारों पर अपने शिकार के लिए ताक लगाए बैठा रहता है और जैसे ही कोई कीड़ा-पतिंगा दिखाई पड़ा नहीं कि उसे पकड़ कर फिर अपने स्थान पर लौट आता है। यह जमीन पर और हवा में उड़ते हुए कीड़े पतिंगों को बड़ी सफाई से पकड़ लेता है। इसकी उड़ान बहुत तेज होती है।

अन्य लहटोरों की तरह ढीट न होकर, यह शरमीला होता है। इससे इस पर हमारी निगाह जल्द नहीं पड़ती। यह वैसे तो बहुत चंचल पक्षी है, लेकिन दिन की तेज धूप में यह किसी घने पेड़ पर बैठ कर आराम करता है। इसकी बोली भी कर्कश होती है।

हमारे देश में यह लहटोरा जाड़े के प्रारम्भ में ही आ जाता है और जाड़ा खतम होने से कुछ पहले ही वापस चला जाता है। कुछ पक्षी जो जोड़ा नहीं बाँधते गरमियों तक यहाँ रह जाते हैं।

**घोंसला**: इसका घोंसला अन्य लहटोरों की भाँति सुन्दर और कटोरेनुमा होता है जिसे ये घास-फूस, रेशों और जड़ों से बनाते हैं। भीतरी हिस्सा बाल और ऊन आदि से मुलायम कर दिया जाता है। ये घोंसले छोटे पेड़ तथा झाड़ियों में पाये जाते हैं।

इनके अंडों की संख्या ४ से ६ तक होती है जो हलके

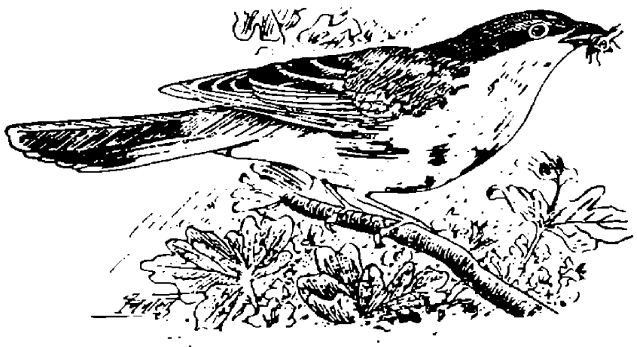
संदली, प्याजी या हरछौंह रहते हैं। ये लम्बे और बैजाबी होते हैं और इन पर गाढ़ी बादामी कत्थई, भूरी और जैतूनी बिन्दियाँ और चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

अंडों की नाप लगभग ०.७५ × ०.६५ इंच होती है।

## ८२ काजला लहटोरा (Rufous backed Shrike : Lanius Schach)

**पर्याय** : ललपिठा-लहटोरा, मालतिया लहटोरा, आरक्त पृष्ठ लटूषक।

**पहचान** : इस लहटोरा का सिर औरों से कुछ बड़ा और शरीर पतला होता है। पीठ सिलेटी, जिसके किनारे ललछौंह भूरे और निचला भाग हलका ललछौंह झलक लिये हुए सफेद रहता है। चोंच की जड़ से एक काली पट्टी आँखों पर होती हुई कान तक चली जाती है जिससे इसे पहचानने में भूल नहीं हो सकती।



काजला लहटोरा

**रंग-रूप** : यह लहटोरा करीब १० इंच का होता है, जिसे उसकी ललछौंह पीठ के कारण ललपिठा लहटोरा भी कहते हैं। इसकी चोंच की जड़ से आँखों पर होती हुई एक चौड़ी काली पट्टी कानों तक चली जाती है जिसने इसका काजला लहटोरा नाम सार्थक कर दिया है। इसका ऊपरी भाग हलका सिलेटी रहता है जिसके किनारे ललछौंह भूरे होते हैं। डैने काले होते हैं जिनके निचले हिस्से पर एक-एक सफेद चित्ता पड़ा रहता है। दुम काली और भूरी होती है, जिसके परों के सिरे कत्थई रहते हैं। नीचे का भाग सफेद रहता है लेकिन बगल और पीछे का भाग हलके ललछौंह भूरे रंग का रहता है।

आँख की पुतली गाढ़ी भूरी और चोंच तथा टाँगें काली होती हैं। ऊपरी चोंच का अगला सिरा अन्य लहटोरों की तरह नीचे की ओर मुड़ा रहता है।

**निवास** : यह लहटोरा हमारे देश के सभी स्थानों में फैला हुआ है जहाँ इसकी कई जातियाँ पायी जाती हैं। यह यहाँ का मौसमी पक्षी है जो हमारा देश छोड़ कर बाहर नहीं जाता, लेकिन इसकी कुछ जातियाँ स्थान-परिवर्तन भी करती हैं।

**विवरण** : काजला लहटोरा को न तो घने जंगल ही पसन्द हैं और न रेतीले मैदान ही। इन्हें खुले मैदान, खेत आदि ज्यादा भाते हैं जहाँ ये किसी छोटे पेड़ या ऊँची झाड़ी के ऊपर बैठकर अपने शिकार पर निगाह दौड़ाते रहते हैं।

जैसे ही इसे कोई कीड़ा-पतिंगा, चूहा, छिपकली, टिड्डा या तितली दिखाई पड़ी ये फौरन तेजी से नीचे उतर कर उसको पकड़ लेते हैं। पेट भर जाने पर भी इसका शिकार बन्द नहीं होता और यह अपने बचे हुए शिकार को किसी पेड़ की कँटीली डार पर रख देते हैं जैसा और लहटोरे करते हैं।

यह बहुत दिलेर और शिकारी चिड़िया है जो वैसे तो कर्कश बोली बोलती है लेकिन कभी-कभी इसका मीठा स्वर भी सुनाई पड़ता है। अन्य लहटोरों की भाँति यह भी दूसरी चिड़ियों की बोली की नक़ल करने में उस्ताद होती है।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय फरवरी से अगस्त तक रहता है और कभी-कभी इसकी मादा इस बीच में दो बार अंडे देती है। अंडों की संख्या ३ से ६ तक होती है।

इनके घोंसले बड़े और कटोरेनुमा होते हैं जो बहुत अच्छे ढंग से बनाये जाते हैं। ये घोंसले पतली डालियों, जड़ों और घास-फूस से बनाये जाते हैं जिसका भीतरी भाग ऊन, बाल और नरम घास द्वारा मुलायम कर दिया जाता है। घोंसला किसी पेड़ या ऊँची कटीली झाड़ी पर पाँच से बीस फुट की ऊँचाई पर रखे रहते हैं।

इनके अंडे चौड़े और बैजाबी होते हैं, जिनका रंग हरछौंह सफेद या संदली रहता है। अंडों पर छोटे-बड़े भूरे, कत्थई और सिलेटी चित्ते और बिन्दियाँ पड़ी रहती हैं।

नाप में ये अंडे करीब ०.९२ × ०.७० इंच के होते हैं।

## ८३ लहटोरिया (Pied Shrike : Hemipus picatus)

**पर्याय** : छोटा लहटोरा, शबल लटूषक।

**पहचान** : यह छोटी-सी काली, सफेद और भूरी चिड़िया छोटे-बड़े झुण्डों में पहाड़ी जंगलों में दिखाई पड़ती है और हवा में उड़ते हुए कीड़े-पतिंगों को मछमरनी की तरह पकड़ती रहती है।

**रंग-रूप** : लहटोरिया ५ इंच लम्बी छोटी-सी चितकबरी चिड़िया है जिसके नर की पीठ और सर का ऊपरी तथा बगली भाग काला रहता है। डैने भी काले होते हैं जिन पर बीच में एक सफेद रेखा पड़ी रहती है। दुम भी वैसे तो काली ही होती है लेकिन उसके बीच के दोनों परों के सिरे और बगल के परों के बाहरी किनारे सफेद रहते हैं। दोनों गाल और गरदन के दोनों

रुख सफेद रहते हैं। नीचे का हिस्सा हलका सिलेटी रहता है जो ठुड्डी और दुम के नीचे पहुँचते-पहुँचते सफेदी मायल हो जाता है।

मादा वैसे तो नर के ही रंग-रूप की होती है लेकिन उसके शरीर पर काले का स्थान धुमैला सिलेटी रंग ले लेता है।

आँख की पुतली पिलछौंह भूरी, चोंच काली और टाँगें कलछौंह भूरी रहती हैं। इसकी चोंच मछमरनियों की तरह चौड़ी और चपटी होती है।

**निवास**: यह चिड़िया मध्य प्रदेश के सागर से सारे दक्षिण भारत के पर्वतों में फैली हुई है। पूर्व की ओर इसे बंगाल के दक्षिणी भागों में भी देखा जा सकता है। पहाड़ों पर यह ५०० से ६,००० फुट की ऊँचाई तक पायी जाती है।

इसकी एक दूसरी जाति हिमालय और शिमला में ५,००० फुट तक पायी जाती है।

लहटोरिया यहाँ की बारहमासी चिड़िया है जो हमारे देश में ही स्थायी रूप से रहती है।

**विवरण**: लहटोरिया पेड़ों पर रहने वाली चिड़िया है जो सब प्रकार के जंगली और झाड़ियों से भरे हुए मैदानों में ८–१० छोटे-छोटे झुंडों में दिखाई पड़ती है। कभी-कभी शिकार करते समय कई पक्षी झुंड में मिलकर बड़ा गिरोह भी बना लेते हैं। लेकिन जोड़ा बाँधने के समय में ये जोड़े में ही दिखाई पड़ते हैं।

इनका स्वभाव लहटोरा और मछमरनियों से मिलता-जुलता होता है। कीड़े-पतिंगे के पकड़ने के लिए जहाँ लहटोरों की तरह ये जमीन पर उतर आती हैं वहीं मछमरनियों की तरह ये उनको हवा में उड़ते देख कर उनका पीछा करती हैं और उन्हें बड़ी फुरती से ऊपर ही पकड़ लेती है। इनका मुख्य भोजन कीड़े-पतिंगें हैं। इनकी बोली को न तो कर्कश ही कहा जा सकता है और न सुरीला ही। ये फी री री, फी री री, फी री री जैसी बोली बोलती हैं।

**घोंसला**: इनके जोड़ा बाँधने का समय मार्च से मई तक रहता है जब ये बहुत सुन्दर छोटे और छिछले कटोरानुमा घोंसले घास-फूस और पतली-पतली जड़ों से बनाती हैं। घोंसले के बाहरी हिस्से को ये पेड़ों पर की काई और मकड़ी के जाले से मजबूत कर देती हैं और किसी पेड़ की दुफंकी डाल पर रख देती हैं।

मादा समय आने पर दो-तीन अंडे देती है जो लम्बे बैजाबी होते हैं। इनका रंग हलका हरा या कंजई सफेद रहता है, जिन पर घनी बादामी और बैंगनी बिन्दियाँ और चिह्न पड़े रहते हैं।

ये अंडे करीब ०.६५ × ०.५ इंच के होते हैं।

## ८४ खरकटा लहटोरा (Common Wood Shrike: Tephrodornis pondicerianus)

**पर्याय**: तरती तुइया, भारत वन लटूषक।

**पहचान**: यह भूरे रंग की चिड़िया है जिसकी आँखों पर होकर एक सफेद पट्टी चली जाती है। दुम के बाहरी पंख कुछ सफेद रहते हैं। यह झुंड में रहती है और अक्सर पेड़ों पर ही दिखाई पड़ती है।



खरकटा लहटोरा

**रंग-रूप**: यह लहटोरा ६ इंच का होता है इसके नर मादा एक ही जैसे होते हैं। इसका ऊपरी हिस्सा सिलेटी भूरा रहता है और डैने के किनारे के पंख हलके रंग के होते हैं। दुम गाढ़ी भूरी जिसमें बीच के पंख राखी और दोनों किनारों के पंख सफेद होते हैं। इसकी आँख के ऊपर एक सफेद पट्टी चोंच की जड़ से गर्दन तक चली जाती है। नीचे का भाग राखी रहता है जो दुम की ओर जाते-जाते और हलका हो जाता है।

आँख की पुतली बादामी, चोंच गाढ़ी सिलेटी और टाँगें भी सिलेटी भूरी रहती हैं।

**निवास**: यह लहटोरा हमारे देश में सर्वत्र पाया जाता है। ये हिमालय की तराई से दूर दक्षिण तक फैले रहते हैं और हमारा देश छोड़कर कहीं बाहर नहीं जाते।

**विवरण**: इस लहटोरे को घास-फूस और खर के बूटों में ज्यादा समय बिताने के कारण "खरकटा लहटोरा" कहा जाता है। यह बड़ा शान्त पक्षी है जो अपना ज्यादा समय पेड़ों पर ही बिताता है। यह एक डाली से दूसरी डाली पर कूदता हुआ कीड़े-मकोड़ों का शिकार करता रहता है, लेकिन कभी-कभी अपने शिकार की तलाश में यह जमीन पर भी उतर आता है। इसे घना जंगल पसन्द नहीं है और यह खुले मैदान और खेतों के पेड़ों और बाग-बगीचों में ही रहना ज्यादा पसन्द करता है। यह वैसे तो जाड़ों में दिखाई पड़ता है लेकिन जाड़ों में इनके छोटे-छोटे झुंड कीड़े-

फतिंगों को पकड़ते हुए देखे जा सकते हैं, जो इनका मुख्य भोजन है। यह पक्षी मीठी बोली बोलता है जो फी, फी, फी, फी, फी, जैसी लगती है।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय फरवरी से जून तक रहता है लेकिन इसके अंडे ज्यादातर मार्च से अप्रैल तक पाये जाते हैं।

इसका घोंसला बहुत सुन्दर और छोटा होता है जिसकी बनावट छिछले प्याले जैसी होती है। ये घासफूस और महीन रेशों से बनाये जाते हैं जिसे ये मकड़ी के जालों से जकड़कर मजबूत और सुन्दर बना देते हैं। घोंसले के भीतरी भाग को ये ऊन और बालों से मुलायम कर देते हैं। ये घोंसले पाँच से पचीस फुट की ऊँचाई पर किसी घनी डाल के ऊपर इस तरह छिपा कर रखे रहते हैं कि उन पर जल्द निगाह नहीं पड़ती।

अंडों की संख्या २-३ से अधिक नहीं होती। ये अंडे चौड़े अंडाकार और थोड़े चमकीले होते हैं। अंडों का रंग संदली या हल्का हरापन लिये सफेद रहता है जिन पर बादामी और कत्थई चिह्न पड़े रहते हैं।

नाप में ये अंडे ०.७५ × ०.६१ इंच के होते हैं।

## ८५ सहेली (Scarlet Minivet : Pericrocotus Speciosus)

**पर्याय** : भारत विष्फुलिंग, सातसखी, सहेलरी।

**पहचान** : यह चटक लाल और काले रंग की चिड़िया है जिसकी मादा पीली और सिलेटी होती है। ये हमारे यहाँ पहाड़ों पर ही अधिक दिखाई पड़ती हैं। ये पेड़ पर से नीचे नहीं उतरतीं और प्रायः छोटे-छोटे झुंडों में रहती हैं।

**रंग-रूप** : सहेली ९ इंच लम्बी चिड़िया है। इसके नर के शरीर का ऊपरी हिस्सा चटक लाल और काला रहता है। पीठ के बीच के काले भाग को छोड़कर बाकी सारा हिस्सा चटक लाल रंग का होता है। टुड्डी और गला भी चमकीला काला होता है, डैने काले होते हैं जिन पर एक चौड़ी लाल पट्टी पड़ी रहती है। दुम भी चटक लाल रंग की होती है जिसके बीच दो पर काले होते हैं।

मादा का ऊपरी हिस्सा गाढ़ा सिलेटी रहता है और दुम के पास का कुछ हिस्सा जैतूनी पीले रंग में बदल जाता है। नीचे का हिस्सा भी इसी तरह जैतूनी पीला होता है। डैने कलछौंह भूरे जिन पर एक चौड़ी पीली पट्टी पड़ी रहती है। दुम पीली, जिसके बीच के पंख पीले और काले, परों के किनारे काले होते हैं। माथा भी पीला होता है जो ऊपर जाते-जाते हलके रंग का हो जाता है। आँख की पुतली भूरी और चोंच तथा टाँगें काली होती हैं। नर-मादा दोनों की दुम काफी लम्बी होती है।

**निवास** : सहेली हमारे यहाँ की बारहमासी चिड़िया है जो हिमालय तथा दक्षिण भारत के पहाड़ों पर पायी जाती है। हिमालय में ये ६,००० फुट से ऊपर नहीं जातीं। इसकी एक दूसरी जाति बंगाल, उड़ीसा तथा मध्य प्रदेश में फैली हुई है।

**विवरण** : सहेली को घने जंगल ज्यादा पसन्द हैं जहाँ इनका झुंड कीड़े-मकोड़ों को पकड़ता रहता है। उड़ते समय ये एक प्रकार की सुरीली बोली बोलती हैं जिससे इनकी ओर सहसा ध्यान चला जाता है। ये पेड़ों से कभी नीचे नहीं उतरतीं और जोड़ा बाँधने के समय ही अकेली या जोड़े में दिखाई देती हैं। झुंड में रहने के कारण ही शायद इनका नाम सातसखी पड़ा।

**घोंसला** : सहेली के जोड़ा बाँधने का समय अप्रैल से जून तक रहता है जब मादा दो-तीन अंडे देती है। इनका घोंसला छिछले प्याले जैसा रहता है जो घास के नरम डंठलों से बनाया जाता है। इसके बाहरी हिस्से को ये मकड़ी के जाले से, पेड़ की काई और छाल से लपेट देती हैं। ये घोंसले किसी पेड़ की घनी और ऊँची डाल पर बहुत छिपा कर रखे जाते हैं जिससे उन पर जल्द किसी की निगाह नहीं पड़ती है।

इनके अंडे चौड़े और बैजाबी होते हैं जिन पर चमक नहीं होती है। इनका रंग हलका हरा होता है जिन पर भूरी और पीली बिन्दियाँ और चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

अंडे प्रायः ०.९० × ०.६७ इंच के होते हैं।

## ८६ छोटी सहेली (Short billed Minivet : Pericrocotus Brevirostris)

**पर्याय** : लघु तुंड विष्फुलिंग, सात सहेली।

**पहचान** : सहेली की तरह यह भी चटक लाल और काले रंग की चिड़िया है जिसकी मादा पीली और धुमैली होती है। ये भी झुंडों में रहती हैं और पेड़ से नीचे नहीं उतरतीं। यह सहेली से कुछ छोटी होती है और पेड़ों पर ही रहती है।



छोटी सहेली

**रंग-रूप :** छोटी सहेली ७ इंच की सुन्दर चिड़िया है जिसके नर की ठुड्डी, गला, सर और पीठ का आधा भाग चमकीला काला रहता है। शेष सारा शरीर चटकीले लाल रंग का होता है। डैने काले होते हैं जिन पर एक चौड़ी चटकीली लाल पट्टी पड़ी रहती है। दुम लाल होती है जिसके बीच के पर काले और बाकी परों के सिरे काले रहते हैं।

मादा का माथा धानी पीला रहता है जो चोटी तक जाते-जाते हलका हो जाता है। ऊपरी हिस्सा राखी रहता है जिसमें जैतूनी झलक रहती है। दुम की जड़ के पास का हिस्सा जैतूनी पीला, नीचे का भाग पीला और डैने कलछौंह भूरे रहते हैं। दुम के बीच के दोनों पर काले और शेष पीले रहते हैं जिनका सिरा काला रहता है।

आँख की पुतली गाढ़ी भूरी, चोंच और टाँगें काली रहती हैं। नर-मादा दोनों की दुम लम्बी होती है।

**निवास :** छोटी सहेली हमारे देश में उत्तरी भारत में पायी जाती है। ये गर्मियों में तो हिमालय आदि पर्वतों पर ३,००० से ९,००० फुट की ऊँचाई तक चली जाती हैं लेकिन जाड़े में ये पंजाब, राजपूताना, मध्य प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश के मैदानों में फैल जाती हैं।

**विवरण :** छोटी सहेली हमारे देश की बारहमासी चिड़िया है जो मौसम के बदलाव के अनुसार यहीं थोड़ा बहुत स्थान परिवर्तन कर लेती है, लेकिन हमारा देश छोड़ कर बाहर नहीं जाती। जोड़ा बाँधने के समय यह भले ही अकेली या जोड़ों में दिखाई पड़े, लेकिन वैसे इसे ३०–४० के झुंडों में ही देखा जा सकता है। यह पेड़ पर रहने वाली चिड़िया है जो जमीन पर नहीं उतरती। यह पेड़ की फुनगियों पर से उड़-उड़ कर कीड़े-फतिंगों को पकड़ती रहती है और थोड़ी-थोड़ी देर पर फिर पेड़ों पर लौट जाती है। इनका मुख्य भोजन कीड़े-फतिंगे और उनकी जोराइयाँ हैं। यह एक प्रकार की टिट, टिट, टिट, टाटिट जैसी बोली बोलती है जो कर्कश न होकर मीठी ही कही जायेगी।

**घोंसला :** इस सहेली के जोड़ा बाँधने का समय अप्रैल से जुलाई तक रहता है जिसके बीच में इसकी मादा २ से ४ तक अंडे देती है।

इनका घोंसला छिछला, छोटा और कटोरेनुमा होता है जिसे ये पतली डालियों और जड़ों से बनाती हैं और फिर मकड़ी के जालों से जकड़ देती हैं। यह किसी पेड़ की ऊँची और घनी डाल पर रखा रहता है।

अंडे चौड़े और अंडाकार सफेद होते हैं। जिन पर हलकी संदली या अंगूरी झलक रहती है। इन पर कत्थई और सिलेटी बिन्दियाँ और चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

अंडों की नाप करीब ०.७५ × ०.६० इंच रहती है।

## ८७ राजलाल (Little Minivet: Pericrocotus Peregrinus)

**पर्याय :** बुलाल चश्म, गुलाब चश्म, क्षुद्र विष्फुलिंग।

**पहचान :** राजलाल खुले मैदानों की छोटी-सी सुन्दर चिड़िया है जो पेड़ों के आस-पास अपने झुंड के साथ उड़ती दिखाई पड़ती है। इसके नर का ऊपरी भाग राखी, दुम के पास लाल चित्ता, डैने पर लाल छोटी-सी पट्टी और सीने का ऊपरी भाग भी लाल रहता है।



राजलाल

**रंग-रूप :** राजलाल सहेली की जाति की ६ इंच की छोटी-सी चिड़िया है जिसके नर का सारा ऊपरी भाग राखी या सिलेटी रहता है। दुम की जड़ के पास का थोड़ा हिस्सा लाल रहता है और कलछौंह भूरे डैनों पर भी एक छोटी चौड़ी लाल पट्टी पड़ी रहती है। ठुड्डी, गला और सिर के दोनों बगल के हिस्से कलछौंह सिलेटी रहते हैं। सीना लाल रंग का रहता है जो दुम के नीचे पहुँचते-पहुँचते सफेद हो जाता है। दुम लंबी और कलछौंह भूरी होती है जिसके बीच के दोनों परों के अलावा सभी परों का सिरा लाल रहता है।

मादा नर से हलके रंग की होती है और उसके नीचे का हिस्सा सफेदी मायल पीला रहता है।

आँख की पुतली भूरी, दुम और टाँगें काली होती हैं।

**निवास :** राजलाल हमारे देश के सभी मैदानी भागों में पाये जाते हैं। इसकी कई जातियाँ यहाँ फैली हुई हैं, लेकिन राजलाल से अधिक प्रसिद्ध कोई दूसरी नहीं हैं।

**विवरण :** राजलाल मैदानों में रहने वाली छोटी और सुन्दर चिड़िया है जो अपना सारा समय पेड़ों पर ही बिताती है। यह घने जंगलों की अपेक्षा खेत, मैदानों और सड़क के किनारे वाले पेड़ों के निकट ही रहना पसन्द करती है। जोड़ा बाँधने के समय को छोड़कर यह हमेशा छोटे-बड़े झुंडों में ही दिखाई पड़ती है। यह पेड़ों की डालियों के चारों ओर उड़ कर कीड़े-फतिंगों का शिकार करती रहती हैं जो इसके मुख्य भोजन हैं।

उड़ते समय यह अन्य सहेलियों की भाँति एक प्रकार की टिट्, टिट्, टी जैसी बोली बोलती है जिसे कर्कश न कह कर मीठी ही कहा जायेगा ।

**घोंसला** : राजलाल के जोड़ा बाँधने का समय मार्च से सितम्बर तक रहता है । इनका घोंसला बहुत सुन्दर होता है जिसकी बनावट छोटे छिछले प्याले जैसी होती है । यह पेड़ की किसी ऊँची और घनी डाल पर इस प्रकार छिपा कर रखा जाता है कि जल्द उस पर किसी की निगाह नहीं पड़ती । यह बहुत पतली टहनियों और घास के नरम और पतले डंठलों से बनाया जाता है जिसे यह मकड़ी के जालों, पर और पेड़ की छाल से लपेट कर बहुत मजबूत बना देती हैं ।

इनके अंडों की संख्या प्रायः ३ रहती है। अंडे चौड़े और बैंजाबी होते हैं जिन पर थोड़ी भी चमक नहीं होती । इनका रंग हलका अंगूरी सफेद या संदली रहता है जिन पर कत्थई बिन्दियाँ और चित्तियाँ पड़ी रहती हैं ।

अंडे लगभग ०.६७ × ०.५३ इंच के होते हैं ।

## ८८ कलसिरी कसया (Black headed Cuckoo Shrike : Lalage Sykesi)

**पर्याय** : कृष्ण–शीर्ष कृष्णिका ।

**पहचान** : नर का ऊपरी भाग सिलेटी, निचला सफेद, सिर, गर्दन, दुम, और डैने का अधिक भाग काला रहता है ।

मादा राखीपन लिये सिलेटी रहती है जिसका निचला भाग काली और सफेद लकीरों से भरा हुआ रहता है।

यह पेड़ों पर रहने वाली चिड़िया है जो छोटे-छोटे गिरोहों में रहती है और जोड़ा बाँधने के समय एक प्रकार की सीटी-जैसी आवाज करती रहती है ।

**रंग-रूप** : कसया ७ इंच लम्बा पक्षी है जिसके नर का पूरा सिर, गर्दन और सीने का ऊपरी भाग काला रहता है । शरीर का ऊपरी हिस्सा गाढ़ा सिलेटी, और डैने काले होते हैं जिनमें के कुछ पर सिलेटी और सफेद किनारे वाले रहते हैं । दुम काली होती है जिनके बाहर के परों के सिरे सफेद और बीच के दोनों पर राखी या सिलेटी रहते हैं । सीने का निचला हिस्सा राखी होता है जो दुम तक जाते-जाते सफेदी में बदल जाता है।

मादा का ऊपरी भाग राखी सिलेटी, डैने कलछौंह भूरे और दुम नर-जैसी रहती है। नीचे का हिस्सा सफेद रहता है जिस पर काली धारियाँ पड़ी रहती हैं।

आँख की पुतली भूरापन लिये लाल, चोंच और टाँगे काली रहती हैं।

**निवास**: कलसिरी कसया पश्चिम के कुछ भागों को छोड़-कर सारे भारत में पायी जाती है । पहाड़ों पर भी यह ६–७ हजार फुट की ऊँचाई तक पहुँच जाती है।

**विवरण** : यह कसया घने जंगलों में रहना पसन्द नहीं करती। यह अपने लिए ऐसे खुले मैदान चुनती है जहाँ पास-पड़ोस में काफी पेड़, झाड़ियाँ या बाग-बगीचे हों। पेड़ों से घिरे हुए गाँवों के आसपास भी इनको आसानी से देखा जा सकता है। जोड़ा बाँधने के समय को छोड़ कर इन्हें छोटे-छोटे झुंडों में ही देखा जा सकता है । ये पेड़ों और झाड़ियों के ऊपर उड़-उड़ कर कीड़े-फतिंगों और उनकी जौराइयों से अपना पेट भरती रहती हैं जो इनका मुख्य भोजन है ।

ये वैसे तो शान्त पक्षी है लेकिन जोड़ा बाँधने के समय अक्सर नर की सीटीनुमा बोली सुनी जा सकती है जिसे ये थोड़ी-थोड़ी देर पर बोलते हैं।

**घोंसला**: कलसिरी कसया के जोड़ा बाँधने का समय उत्तर भारत की ओर जून से अगस्त तक और दक्षिण भारत की ओर अप्रैल से मई तक रहता है । मादा इसी बीच २ से ३ तक अंडे देती है।

इनका घोंसला बहुत छिछले कटोरे-जैसा होता है जो पतली टहनियों और जड़ों से बनाया जाता है। इसका बाहरी भाग मकड़ी के जाले आदि से लपेट दिया जाता है। यह घोंसला १०–२० फुट की ऊँचाई पर किसी दुफंकी डाल पर या तने से सटी हुई डाली पर रखा रहता है।

अंडे चौड़े और बैंजाबी होते हैं जिनके दोनों सिरे नुकीले न होकर चपटे होते हैं। इनका रंग हलका अंगूरी सफेद रहता है जिन पर घनी बादामी बिन्दियाँ और चिह्न पड़े रहते हैं।

अंडों की नाप लगभग ०.८५ × ०.६५ इंच रहती है।

## ८९ कसया (Large Cuckoo Shrike : Graucalus javensis)

**पर्याय**: जेष्ठ कृष्णिका ।

**पहचान** : इस पक्षी का ऊपरी हिस्सा सिलेटी और निचला सफेद होता है जिससे इसे पहचानने में कठिनाई नहीं होती है। ये पेड़ पर रहने वाले पक्षी हैं।

**रंग-रूप** : कसया १०–१२ इंच लम्बा पक्षी है जिसका सारा ऊपरी शरीर सिलेटी रंग का होता है । नीचे का हिस्सा सफेद रहता है जिसमें सिलेटी रंग की धारियाँ पड़ी रहती हैं। डैने और दुम भी राखी सिलेटी रहते हैं। नर और मादा पक्षी करीब-करीब एक-जैसे होते हैं। मादा का रंग नर से कुछ हलका रहता है । आँख की पुतली भूरापन लिये लाल, चोंच और टाँगें काली रहती हैं।

**निवास** : कसया मैदान में रहने वाली चिड़िया है जो पहाड़ों की ओर थोड़े ऊँचाई पर जाती है। हमारे देश में ये पंजाब और राजपूताना के रेगिस्तानी भागों को छोड़कर प्रायः सभी जगह पायी जाती हैं।

**विवरण** : कलसिरी कसया की तरह कसया भी पेड़ों पर रहना पसन्द करती है और अपने छोटे झुंड के साथ पेड़ों और ऊँची झाड़ियों के ऊपर उड़ कर कीड़े-फतिंगे पकड़ती रहती है जो इसका मुख्य भोजन है। इसे घने जंगल नहीं भाते और यह मैदानों के बीच और सड़क के किनारे लगे हुए पेड़ों के निकट रहना ज्यादा पसन्द करती है। इसे बाग-बगीचों और झाड़ी से भरे हुए मैदानों में भी देखा जा सकता है।

पेड़ों पर उड़ते समय यह एक प्रकार की बोली बोलती है जो तोतों की बोली से मिलती-जुलती रहती है। इसकी उड़ान तेज और लहराती हुई रहती है।

**घोंसला** : इनका जोड़ा बाँधने का समय जून से अगस्त तक रहता है लेकिन दक्षिण की ओर ये इससे पहले भी जोड़ा बाँध लेती हैं। इसका घोंसला बहुत छिछला, बड़ा और गोल होता है जिसे ये पतली-पतली टहनियाँ और जड़ों आदि से बनाती हैं। ये घोंसले किसी पेड़ की दुफंकी डाल पर १५–२० फुट की ऊँचाई पर रखे रहते हैं।

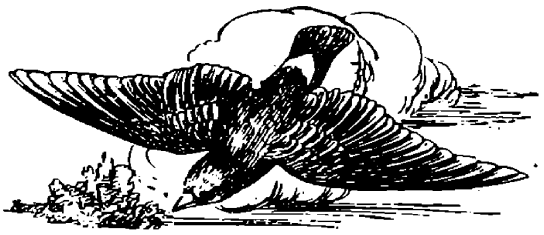
मादा समय आने पर २-३ अंडे देती है जो चौड़े बैंजाबी और दोनों सिरों पर चपटे रहते हैं। इनका रंग हरापन लिये सफेद होता है जिन पर हलकी भूरी घनी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

नाप में ये अंडे ०.९५ × ०.७५ इंच के होते हैं।

## ९० कठगोल (Ashy Swallow Shrike : Artamus fuscus

**पर्याय** : ताड़ी अबाबील, घूसर ताल-कृष्णिका ।

**पहचान** : यह घुमैला सिलेटी पक्षी जो देखने में बड़ी अबाबील जैसे लगता है, झुंडो में हवा में चक्कर लगाता रहता है और एक प्रकार की कर्कश बोली बोलता रहता है जिससे इसको पहचानने में कठिनाई नहीं होती ।



कठगोल

**रंग-रूप** : कठगोल ७ इंच का पक्षी है जिसके नर-मादा एक-जैसे होते हैं। इसका सारा शरीर गंदे राखी रंग का होता है जो सीने से नीचे की ओर जाते-जाते हलका हो जाता है । सिर गहरे रंग का होता है और चोंच की जड़ से आँख तक एक काली रेखा पड़ी रहती है। ऊपर के दुम ढकने सफेद और नीचे के सफेदी मायल रहते हैं जिन पर राखी धारियाँ पड़ी रहती हैं ।

आँख की पुतली काली भूरी,चोंच हलकी नीली और सिरे पर भूरी रहती है । टाँगें सिलेटी रंग की होती हैं । चोंच नुकीली, तिकोनी और झुकी हुई होती है । दुम चौड़ी और चौकोर होती है ।

**निवास** : कठगोल को हम अपने देश के सभी स्थानों पर देख सकते हैं । ये वैसे तो मैदान की चिड़िया हैं और पहाड़ों पर डेढ़-दो हजार फुट की ऊँचाई तक देखी जा सकती हैं लेकिन गर्मियों में ये हिमालय पर ५,००० फुट तक चली जाती हैं । ये हमारे यहाँ की बारहमासी चिड़िया हैं ।

**विवरण** : कठगोल बड़ी अबाबील-जैसा पक्षी है और इसी की तरह कीड़े-फतिंगे पकड़ने के लिए तमाम दिन चक्कर लगाते हैं। ये अबाबील की तरह उतना तेज नहीं उड़ पाते लेकिन उड़ते समय उसी तरह हवा में चक्कर लगाता है । ये एक दो मिनट रुक कर किसी ऊँचे बाँस या खुली डाली पर बैठ जाता है और थोड़ा सुस्ता कर फिर चक्कर लगाने लगते हैं। उड़ते समय ये एक प्रकार की कर्कश बोली बोलते हैं । गर्मी के दिनों में ये प्रायः सबेरे ही कीड़े-पतिंगे पकड़ने के लिए उड़ते हैं जो इनका मुख्य भोजन है । ये पेड़ पर रहने वाले पक्षी हैं जो कभी नीचे नहीं उतरते।

**घोंसला** : कठगोल अप्रैल से जून के बीच जोड़ा बाँधते हैं । इनका घोंसला छिछला ढीला-ढीला प्यालेनुमा होता है जो पतली घास, जड़ों, रेशों और परों से बनाया जाता है, घोंसला किसी पेड़ के ठूँठ या टूटी हुई डाली पर रखा रहता है । जहाँ ताड़ के पेड़ होते हैं वहाँ कठगोल और स्थानों की अपेक्षा ताड़ पर ही अपना घोंसला बनाते हैं इसीलिए कठगोल को कहीं-कहीं ताड़ी अबाबील भी कहते हैं । इनके घोंसले ३०-४० फुट की ऊँचाई पर होते हैं, जिसकी रखवाली नर पक्षी भुजंगे की तरह करता है और घोंसले से बगल जाते हुए कौवे और शिकारी पक्षियों पर भी बड़ी बहादुरी से हमला करता है ।

अंडों की संख्या २ से ४ तक होती है जो पतले और अंडाकार होते हैं । अंडों का रंग सफेद और कभी-कभी संदली भी रहता है । इन पर कत्थई, बैंगनी भूरी और बैंगनी सिलेटी बिन्दियाँ और धब्बे पड़े रहते हैं ।

अंडे करीब ०.९५ × ०.६५ इंच के होते हैं ।

## ९१ भुजंगा (King Crow : Dicrurus macrocercus)

**पर्याय** : भुजैठा, कोतवाल, बहँगवा, करचोरिया, ठाकुर जी, झांपी, फिंगा, कालकौलाची, भारत अंगारक, कालचील, कलकालीची ।

**पहचान** : यहाँ का बहुत परिचित चमकीले काले रंग का पक्षी जिसके चोंच की जड़ के पास कभी-कभी थोड़ी सफेदी, शरीर पतला और दुम लम्बी और दुफंकी होती है। ये पेड़ों, टेलीग्राफ के तारों पर अक्सर बैठे दिखाई पड़ते हैं ।

**रंग-रूप** : भुजंगा वैसे तो १३ इंच लम्बा पक्षी है लेकिन इसी में इसकी ७ इंच लम्बी दुफंकी दुम भी शामिल है । इसका शरीर काले रंग का होता है जिसमें एक प्रकार की नीली चमक रहती है । कभी-कभी इसकी जड़ के पास एक छोटा सफेद चित्ता पड़ा रहता है । इसके नर और मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं ।

आँख की पुतली लाल, चोंच और टाँगें काली होती हैं ।

**निवास** : भुजंगा हमारे देश के सभी स्थानों में फैला हुआ है । इसकी कई जातियाँ हमारे यहाँ पायी जाती हैं, लेकिन इन सबमें यही सबसे अधिक प्रसिद्ध है । यह यहाँ का बारहमासी पक्षी है जो मौसम के बदलाव के अनुसार थोड़ा स्थान परिवर्तन जरूर कर लेता है, लेकिन हमारे देश के बाहर नहीं जाता । यह वैसे तो मैदान का पक्षी है लेकिन इसे पहाड़ों पर भी ५,००० फुट की ऊँचाई तक देखा जा सकता है ।

**विवरण** : भुजंगा हमारे देश का बहुत प्रसिद्ध पक्षी है जो अपने सुडौल शरीर, पराक्रम तथा भारी संख्या के कारण सभी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेता है । यह बहुत ही बहादुर, फुर्तीला और तेज उड़ने वाला पक्षी है जो अपने अंडों-बच्चों पर हमला होने की संभावना देख कर कौए, चील ही नहीं, बल्कि शिकरा और बाज, बहरी जैसे शिकारी चिड़ियों पर भी हमला कर बैठता है । हम लोगों ने अक्सर इसके जोड़े को चील-कौओं को खदेड़ते देखा होगा । यह कभी किसी बेगुनाह चिड़िया पर हमला नहीं करता, बल्कि जिस पेड़ पर इसका घोंसला रहता है उस पर पीलक, पड़की और दूसरी चिड़ियाँ अपना घोंसला बनाती हैं क्योंकि इसकी उपस्थिति के कारण चील-कौए जैसे दुष्ट पक्षियों की हिम्मत वहाँ आने की नहीं पड़ती । गुस्सा होने पर यह बहुत तेज और कर्कश बोली बोलता है, वैसे इसकी बोली काफी मीठी होती है । बहुत सबेरे यह "ठाकुर जी" जैसी सुरीली बोली बोलते हैं जिससे देहातों में इनको लोग "ठाकुर जी" कहते हैं ।

भुजंगा वैसे तो सभी स्थानों पर पाया जाता है, लेकिन इसे ऐसे खुले मैदान और खेत ज्यादा पसन्द आते हैं जिसके आस-पास पेड़ हों, क्योंकि अपनी लम्बी दुम के कारण इसको किसी पेड़ की डाली पर ही बैठने में ज्यादा सुभीता होता है । इसे हम अक्सर टेलीग्राफ के तारों पर या गाय-भैंस की पीठ पर बैठे देख सकते हैं। तारों पर तो इनकी कतार की कतार दिखाई पड़ती हैं। जहाँ से उड़कर ये कीड़े-फतिंगों को पकड़ कर फिर अपने स्थान पर लौट आते हैं और थोड़ी देर बाद ये फिर शिकार में लग जाते हैं। इनका मुख्य भोजन कीड़े-फतिंगे, टिड्डे और उनकी जौराइयाँ हैं। ये मवेशियों की पीठ पर इसलिए बैठ कर चलते हैं कि उनके घास पर चलने से जो कीड़े-फतिंगें हवा में उड़ते हैं वे इनके पेट में चले जाते हैं ।

**घोंसला** : भुजंगे के जोड़ा बाँधने का समय अप्रैल से अगस्त तक रहता है जब मादा ३ से ५ तक अंडे देती है ।

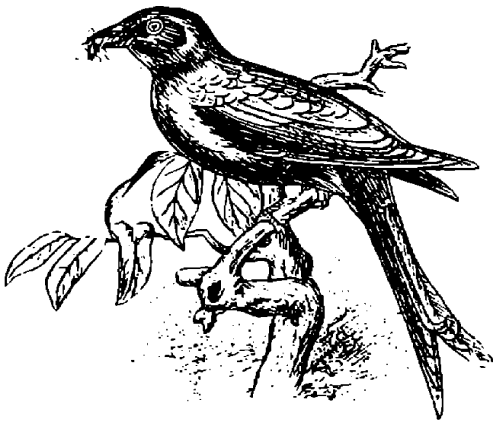
इनका घोंसला चौड़ा और छिछले प्याले जैसा होता है जिसे ये पतली टहनियों, घास के डंठलों तथा जड़ों से बड़ी मजबूती से बनाते हैं । घोंसले के बाहरी भाग पर ये मकड़ी के जाले को खूब लपेटकर उसे बहुत सुदृढ़ कर देते हैं । यह पहले तो भद्दा रहता है लेकिन नर-मादा उसमें पारी-पारी से बैठ कर उसे गोल बना देते हैं । कुछ घोंसलों में नरम घास, जड़ों और बालों का अस्तर भी देखा जा सकता है । घोंसला किसी ऊँची दुफंकी शाख पर रखा रहता है ।

इनके अंडे लम्बे और बैजाबी होते हैं जिनका सिरा नुकीला रहता है । इनके अंडे कई रंगों के मिलते हैं। वैसे तो ये धुर सफेद होते हैं, लेकिन कभी-कभी उन पर छोटी-छोटी काली चित्तियाँ पड़ी रहती हैं । इसके अलावा इनके हलके प्याजी रंग के भी अंडे पाये जाते हैं जिन पर छोटी ललछौंह भूरी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं । इनके अंडों पर की चित्तियाँ न तो बड़ी ही होती हैं और न घनी ही ।

अंडे करीब १.०५ × ०.७५ इंच के होते हैं ।

## ९२ साहिम (Indian Grey Drongo : Dicrurus Longicaudatus)

**पर्याय** : निलफिंगा, श्याम अंगारक ।



साहिम

**पहचान** : साहिम रंग-रूप में भुजंगे से इतना मिलता-जुलता पक्षी है कि उसे जल्द पहचानने में कठिनाई पड़ती है। इसे केवल इसके पतले शरीर और नीचे के सिलेटी रंग से ही भुजंगे से अलग किया जा सकता है।

**रंग-रूप**: साहिम १२ इंच का पक्षी है जिसमें इसकी ६ इंच की दुफंकी दुम भी शामिल है। इसके नर-मादा एक-जैसे होते हैं। इसका ऊपरी सारा हिस्सा गाढ़ा नीला, चमकीला और नीचे का सारा हिस्सा गाढ़ा सिलेटी रहता है। आँख के सामने एक कलछौंह चित्ता पड़ा रहता है।

आँख की पुतली लाल और चोंच तथा टाँगें काली रहती हैं। दुम लम्बी और दुफंकी रहती है।

**निवास**: साहिम हमारे देश के पहाड़ी प्रदेशों का बारह-मासी पक्षी है जो हमारा देश छोड़ कर बाहर नहीं जाता। सारे देश के पहाड़ी स्थानों पर यह ४,००० से १०,००० फुट की ऊँचाई तक काफी संख्या में देखा जा सकता है।

**विवरण**: साहिम पहाड़ के घने जंगलों का निवासी है, लेकिन यह ऐसे जंगलों को अधिक पसन्द करता है जिसके निकट खुले हुए मैदान भी हों। इनकी आदतें भुजंगे से बहुत मिलती-जुलती होती हैं और यह भी किसी ऊँचे स्थान पर बैठ कर कीड़े-फतिंगों पर ध्यान लगाये रहता है और उन्हें देख कर फौरन उन्हें पकड़ कर अपने स्थान पर लौट आता है।

यह उड़ने में बहुत उस्ताद होता है और भुजंगे से अधिक ऊँचाई पर उड़ कर शिकार करता है। यह पेड़ पर रहने वाला पक्षी है जो जमीन पर नहीं उतरता। इसका मुख्य भोजन कीड़े-फतिंगे और मधुमक्खियाँ हैं। यह यहाँ का बारहमासी पक्षी है लेकिन जाड़ों में पहाड़ के नीचे की ओर उतर आता है और गर्मियों में फिर अधिक ऊँचाई पर चला जाता है।

साहिम को वैसे अकेले या जोड़े में देखा जाता है, लेकिन एक ही स्थान पर बहुत से साहिम एक साथ भी देखे जा सकते हैं। भुजंगे की तरह साहिम भी बहादुर पक्षी है जो अपने दुश्मनों पर, भले ही वे उनसे कद में बड़े क्यों न हों, बिना हिचक के हमला कर बैठता है। इसकी बोली वैसे तो मीठी और सुरीली होती है, लेकिन गुस्सा होने पर यह कर्कश बोली बोलता है।

**घोंसला**: साहिम के जोड़ा बाँधने का समय मई से जून तक रहता है जिसके बीच मादा ३ से ५ तक अंडे देती है।

इसके घोंसले मजबूत और छिछले कटोरेनुमा होते हैं जो महीन जड़ों, पतली टहनियों तथा पतले घास के डंठलों के द्वारा बनाये जाते हैं और उनको मकड़ी के जाले और पेड़ की काई द्वारा लपेट दिया जाता है। ये घोंसले १०–१२ फुट की ऊँचाई पर किसी दुफंकी डाल पर रखे रहते हैं।

अंडों की बनावट चौड़ी और बैजावी होती है। इनका रंग हलका गुलाबी रहता है जिन पर गहरी ललछौंह गुलाबी और बादामी चित्तियाँ और धब्बे पड़े रहते हैं।

ये अंडे **लगभग** ०.९५ × ०.७४ इंच के होते हैं।

## ९३ केशराज (White bellied Drongo : Dicrurus carrulescens)

**पर्याय** : पहाड़ी भुजंगा, धापड़ी, सितोदर, अंगारक।

**पहचान**: भुजंगे और साहिम-जैसा काला या गाढ़ा नीला यह पक्षी अपने नीचे के सफेद भाग के कारण आसानी से पहचान लिया जाता है।

**रंग-रूप**: केशराज साहिम की तरह १२ इंच का पक्षी है जिसमें इसकी ६ इंच की लम्बी दुम भी शामिल है।

इसका ऊपरी भाग काले और गाढ़े नीले रंग का रहता है जिसमें एक प्रकार की चमक रहती है। इसका गला और सीना भूरापन लिये सिलेटी रहता है, लेकिन इसके आगे का सारा निचला हिस्सा सफेद होता है।

आँख की पुतली लाल, चोंच और टाँगें काली रहती हैं।

**निवास** : केशराज हमारे देश में पंजाब और राजपूताना के अलावा प्रायः सभी स्थानों पर थोड़ी-बड़ी संख्या में पाया जाता है। यह यहाँ का बारहमासी पक्षी है जो बराबर यहीं रहता है।

**विवरण** : केशराज हमारे देश का प्रसिद्ध पक्षी है जिसकी आदत, स्वभाव तथा अन्य बातें साहिम से मिलती-जुलती होती हैं। यह जोड़े या छोटे-छोटे झुंडों में दिखाई पड़ता है और किसी ऊँची डाल या टेलीग्राफ के तारों पर इनको बैठे देखना मुश्किल नहीं। यह वहीं से उड़ कर हवा में उड़ने वाले कीड़े-फतिंगों को पकड़ कर फिर अपने स्थान पर लौट जाता है। यह भी बहादुर पक्षी है जो अपने अंडे-बच्चे पर आक्रमण करने वाले दुष्ट पक्षियों पर बिना हिचक के हमला कर देता है। यह पेड़ पर रहने वाला पक्षी है जो जमीन पर नहीं उतरता। इसका मुख्य भोजन कीड़े-फतिंगे हैं।

केशराज सबेरे बड़ी मीठी बोली बोलता है, लेकिन अन्य भुजंगों की भाँति क्रुद्ध होने पर यह भी बड़ी कर्कश आवाज करता है।

**घोंसला** : केशराज के जोड़ा बाँधने का समय मई से जून तक रहता है। मादा इन्हीं महीनों में ३-४ अंडे देती है।

इसका घोंसला छिछले प्याले-जैसा होता है जिसको ये पतली टहनियों, जड़ों और घास के डंठलों से बनाते हैं और उसको मजबूत बनाने के लिए ये उसके बाहरी हिस्से पर काई और मकड़ी के जाले का पलस्तर कर देते हैं। ये घोंसले १०-१२ फुट की ऊँचाई पर किसी पेड़ की दुफंकी डाल पर रखे रहते हैं।

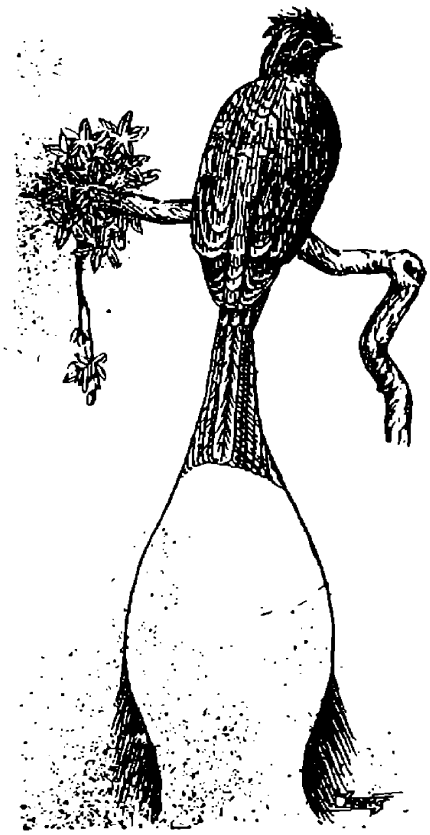
इनके अंडे चौड़े और बैजाबी होते हैं और उन पर किसी प्रकार की चमक नहीं होती। अंडे सफेदी मायल, हल्के गुलाबी रंग के होते हैं जिन पर ललछौंह गाढ़ी गुलाबी और हलकी कत्थई चित्तियाँ और धब्बे पड़े रहते हैं।

नाप में ये अंडे करीब ०.९५ × ०.७४ इंच के होते हैं।

## ९४ भृंगराज (Large Racket Tailed Drongo : Dissemurus Padadiseus)

**पर्याय** : भीमराज, भृंगराय, कालजीत, कामरूप, भृंगराज।

**पहचान** : लम्बी दुम सहित १४ इंच का चोटीदार काला पक्षी, जिसकी दुम के दोनों बाहरी पंख इसके शरीर के ही बराबर बढ़ कर गोलाकार हो जाते हैं। ये वैसे तो तार जैसे होते हैं, लेकिन इनके सिरों पर छोटे पंखों का गुच्छा रहता है। इस अनोखी दुम के कारण इसको पहचानने में भूल नहीं हो सकती।



भृंगराज

**रंग-रूप** : भृंगराज चमकीले काले रंग का १४ इंच का पक्षी है जिसमें इसकी ७ इंच की लम्बी दुम भी शामिल है। इसकी दुम के दोनों बाहरी पंख लगभग १३ इंच बढ़ कर भीतर की ओर गोलाकार घूम जाते हैं। ये वैसे तो तार जैसे रहते हैं लेकिन इनके सिरों पर थोड़ी दूर तक बाहर की ओर छोटे पर रहते हैं। इसके माथे पर परों का गुच्छा रहता है। ये पर पीछे की ओर कलंगी की तरह झुके रहते हैं। पीठ पर के काले रंग में एक प्रकार की निलछौंह झलक रहती है और डैनों के नीचे कुछ सफेद चित्ते भी रहते हैं। इसके नर-मादा एक ही जैसे होते हैं।

आँख की पुतली गाढ़ी लाल, चोंच और टाँगें काली होती हैं।

**निवास** : भृंगराज हमारे देश के काफी स्थानों में पाया जाता है, लेकिन ये ज्यादातर हिमालय की तराइयों में देखे जा सकते हैं। वहाँ ये ३,०००-४,००० फुट की ऊँचाई तक फैले हुये हैं। ये पश्चिम भारत की ओर नहीं जाते। ये यहाँ के बारहमासी पक्षी हैं जो हमारे देश में ही रहना पसन्द करते हैं। इनकी कई जातियाँ यहाँ पायी जाती हैं जो सारे देश में थोड़ी या अधिक संख्या में पायी जाती हैं, लेकिन भृंगराज इन सब में प्रसिद्ध है।

**विवरण** : भृंगराज घने और नम जंगलों में रहने वाला पक्षी है इसीलिए इसे हिमालय की तराई ज्यादा पसन्द है। यह देश के अन्य प्रदेशों में भी घने जंगलों में रहता है। इसे बाँस के जंगल बहुत पसन्द हैं और कभी-कभी बाग-बगीचों में भी चला आता है। यह पेड़ पर रहने वाला पक्षी है जो कभी जमीन पर नहीं उतरता।

अन्य भुजंगों की तरह भृंगराज भी अकेला, जोड़े में या दो-चार के गिरोह में दिखाई पड़ता है और किसी ऊँची डाल पर शिकार की घात लगाये बैठा रहता है। जैसे ही कोई कीड़ा-फतिंगा इसे उड़ता दिखाई पड़ता है यह बड़ी तेजी से उड़ता है और उसे पकड़ कर फिर अपने उसी स्थान पर लौट आता है। यह पेड़ की डालियों पर चलने वाले कीड़े और उनकी जौराइयों को भी चट कर जाता है। इसका मुख्य भोजन कीड़े-फतिंगे, गुबरीले, तितलियाँ, टिड्डे, मधुमक्खी, बर्र और जोराइयाँ हैं।

भृंगराज भी भुजंगों की तरह निडर और बहादुर पक्षी है जो शत्रु पक्षियों पर आक्रमण करने में जरा भी नहीं डरता। इसकी बोली सुरीली और मीठी होती है, लेकिन गुस्सा होने पर यह एक प्रकार की कर्कश बोली बोलता है। यह अन्य पक्षियों की बोली की नकल भी बड़ी खूबी से कर लेता है।

**घोंसला** : भृंगराज के जोड़ा बाँधने का समय मार्च से मई तक रहता है। इसका घोंसला अन्य भुजंगों की तरह छिछला और कटोरेनुमा होता है जिसको ये पक्षी पतली टहनियों, जड़ों और घास के डंठलों से बनाते हैं। घोंसले का बाहरी भाग काई और मकड़ी के जाले से लपेट दिया जाता है। यह किसी पेड़ की ऊँची दुफंकी डाल पर १०-१५ फुट की ऊँचाई पर रखा रहता है।

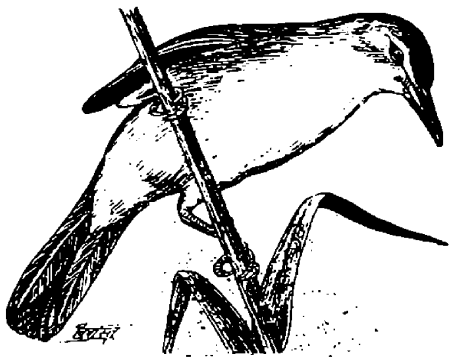
इनके अंडों की संख्या ३ से ४ तक रहती है जो लम्बे, नुकीले और थोड़े चमकीले होते हैं। अंडों का रंग सफेद या संदली रहता है जिन पर बादामी, कत्थई और बैंगनी चित्तियाँ और धब्बे पड़े रहते है।

अंडे करीब १.१५ × ०.२२ इंच के होते हैं।

## १५ पोदेना ( Indian Great Reed Warbler Acrocephalus Stentoreus)

**पर्याय** : भारत वृहत् शर-कूजनी।

**पहचान** : यह गन्दे जैतूनी भूरे रंग की बड़ी फुदकी है जिसके पेट का निचला हिस्सा नारंगीपन लिये भूरा और गला सफेद रहता है। यह बहुत शोर मचाने वाली चिड़िया है जो घने नरकुलों में रहती है।



पोदेना

**रंग-रूप** : यह ७ इंच की बड़ी सी फुदकी है जिसके नर और मादा एक-जैसे होते हैं। इसके शरीर का ऊपरी भाग जैतूनी भूरा और नीचे का हिस्सा नारंगीपन लिये भूरा रहता है जो दुम के नीचे जाते-जाते हलका हो जाता है। आँख के ऊपर एक हलकी भूरी रेखा पड़ी रहती है। चोटी और गला गन्दा सफेद रहता है। डैने और दुम गाढ़े भूरे रंग की होती है।

आँख की पुतली बादामी, चोंच कलछौंह भूरी और टाँगें गाढ़ी सिलेटी रहती हैं।

**निवास** : पोदेना हमारे देश में जाड़े के मौसम में प्रायः सभी स्थानों पर पाया जाता है। यह मौसमी पक्षी है जो जाड़ों में पश्चिम की ओर से आकर हिमालय की तराई से दक्षिण भारत तक के सारे मैदानों में फैल जाता है। गर्मियों में ये हमारा देश छोड़ कर चले जाते हैं, लेकिन कुछ पक्षी मैदानों में रह भी जाते हैं।

**विवरण** : पोदेना घने नरकुलों में रहने वाला पक्षी है जो पानी के आस-पास की झाड़ियों और पेड़ों पर भी रह लेता है। यह बहुत बोलने वाला पक्षी है जो घने स्थानों पर छिपा रहने पर भी निरन्तर बोली के कारण अपनी उपस्थिति का पता दे देता है। ये वैसे तो झाड़ी में घुसा रहता है लेकिन थोड़ी-थोड़ी देर पर नरकुल के सिरे पर या पानी के निकट के पेड़ों पर जा बैठता है और वहाँ भी बोलता ही रहता है। इसकी बोली न तो मीठी ही कही जा सकती है और न तो कर्कश ही।

इसका मुख्य भोजन पानी के कीड़े-मकोड़े, छोटे घोंघे और पानी में उगने वाले पेड़ों के बीज हैं।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय जून से अगस्त तक रहता है जब यह अपना गहरा कटोरेनुमा घोंसला बनाता है। ये घोंसले पानी की खुरदुरी घास, नरकुल, की पत्तियाँ और उनकी छाल से बनाये जाते हैं जिनको ये पानी में उगने वाले पौधों की जड़ों से भीतर की ओर मुलायम कर देते हैं।

मादा इसमें ३-४ अंडे देती है जो हलके अंगूरी या पत्थरी रंग के होते हैं। अंडों पर मिलेटी, काली, बैंगनी और कत्थई चितियाँ और धब्बे पड़े रहते हैं।

अंडे लम्बे और बैजाबी होते हैं, जिनकी नाप करीब ०.९० × ०.६० इंच की होती है।

## १६ छोटा पोदेना (Blyths Reed Warbler : Acrocephalus Dumetorum)

**पर्याय** : नेपाल शर-कूजनी।

**पहचान** : यह बड़े पोदेने के ही जैसा, लेकिन उससे छोटा पक्षी है जो हर तरह की झाड़ियों में रहना पसन्द करता है और घने जंगलों में नहीं जाता।



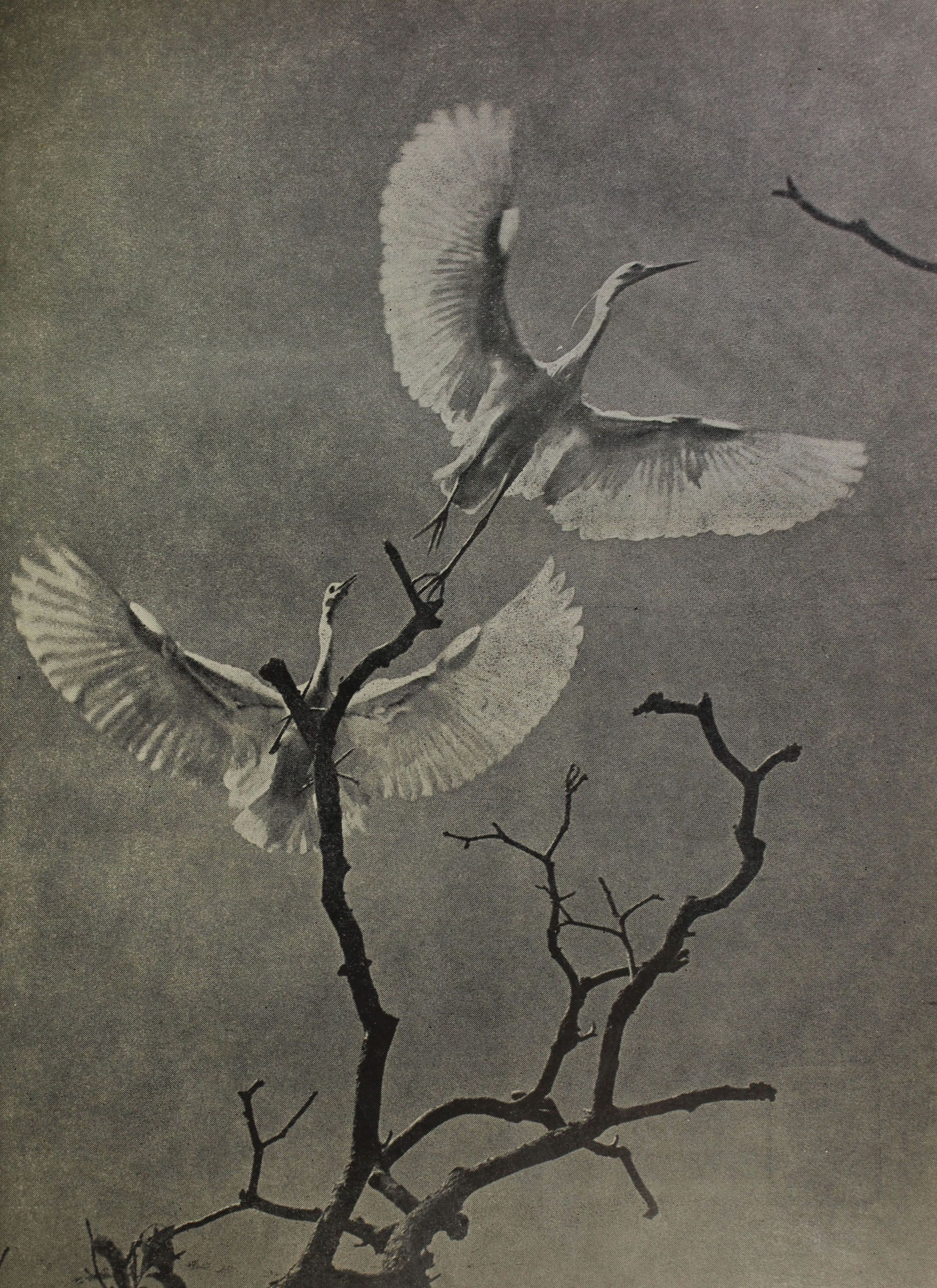
छोटा पोदेना

**रंग-रूप** : छोटा पोदेना ५ इंच का छोटा-सा पक्षी है जिसके नर और मादा एक-जैसे होते हैं। इसका ऊपरी भाग और चेहरे के दोनों रुख तथा गर्दन जैतूनीपन लिये भूरे रंग की रहती है। नीचे का सारा हिस्सा हलका बादामी रहता है जो पेट की ओर और भी हलका हो जाता है। डैने और दुम भूरे रहते हैं और आँख के ऊपर एक हलकी भूरी रेखा रहती है।

आँख की पुतली हलकी भूरी, ऊपरी चोंच भूरी और निचली काली, टाँगें भूरी जिनके तलुए पीले रहते हैं।

**निवास** : छोटा पोदेना हमारे देश में बाहर से आने वाला पक्षी है जो हमारे यहाँ उत्तर की ओर से हिमालय को लांघ कर जाड़े में सारे देश में फैल जाता है।

**विवरण** : पोदेना का छोटा भाई होकर भी इसे पोदेना की तरह केवल पानी के निकट रहना ही पसन्द नहीं है; यह घने जंगलों को छोड़ कर सब तरह की झाड़ियों वाले मैदानों में रह





हिन्दी समिति

भारतीय पक्षी

लेता है चाहे वह पानी के निकट हो या मैदान और खेत के आस-पास। यह झाड़ियों में इधर-उधर फुदक कर कीड़े-फतिंगों को पकड़ता रहता है जो इसका मुख्य भोजन है। वैसे यह चर्-चर् जैसी कर्कश बोली बोलता है लेकिन कभी-कभी इसकी मीठी बोली भी सुनाई पड़ती है।

**घोंसला** : छोटा पोडेना के जोड़ा बाँधने का समय जून से प्रारंभ होता है जब यह हमारे देश से लौट गया होता है। इसलिए यह हमारे यहाँ न तो घोंसला ही बनाता है और न तो अंडे ही देता है, लेकिन उत्तरी देशों में यह किसी दलदली या सूखी जगह की झाड़ियों के भीतर अपना घोंसला बनाता है जो थोड़ी ऊँचाई पर रहता है। ये घोंसले गहरे प्यालेनुमा होते हैं जिन्हें ये नरम घास और उनके डंठलों से बनाते हैं। इनके भीतर परों और बालों का अस्तर भी दिया रहता है।

मादा प्रायः ४ से ५ तक अंडे देती है। अंडों का रंग नीलापन या हरापन लिये सफेद रहता है, जिन पर सिलेटी और गाढ़ी भूरी बिन्दियाँ पड़ी रहती हैं।

अंडे करीब ०.७ × ०.५ इंच के होते हैं।

## १७ दरजिन फुदकी (Tailor Bird : Orthotomus Sutorius)

**पर्याय** : पतिया, भारत सूचिक, सुइया, पटेना।

**पहचान** : यह बहुत प्रसिद्ध छोटी-सी चिड़िया है जिसकी पीठ हरी, पेट सफेद और माथा ललछौंह भूरा रहता है। यह अपनी दुम ऊपर की ओर उठाये रहती है जिससे इसे पहचानने में कठिनाई नहीं होती।

**रंग-रूप** : दरजिन फुदकी यहाँ की बहुत प्रसिद्ध छोटी-सी चिड़िया है जो लगभग ५ इंच की होती है। इसका माथा ललछौंह भूरा, सिर के पीछे और दोनों बगल का भाग राखी भूरा रहता है। ऊपर का बाकी सारा हिस्सा और डैने का ऊपरी भाग पिलछौंह हरा और नीचे का सारा भाग सफेद रहता है। डैने का निचला हिस्सा और दुम भूरी रहती है। इसके नर-मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं।

आँख की पुतली ललछौंह पीली, ऊपर की चोंच गहरी सिलेटी और नीचे की गहरी प्याजी रहती है। टाँगें गुलाबी रंग की होती हैं। इसकी चोंच लम्बी और नुकीली होती है और दुम के दोनों बीच के पंख लंबे और बढ़े हुए रहते हैं।

**निवास** : दरजिन हमारे यहाँ की प्रसिद्ध बारहमासी चिड़िया है जो हमारा देश छोड़ कर बाहर नहीं जाती। यह सारे देश में फैली हुई है और केवल रेगिस्तानी भागों को छोड़कर देश के सभी स्थानों पर दिखाई पड़ती है। यह वैसे तो बाग-बगीचों और मैदानों की चिड़िया है लेकिन पहाड़ों पर भी इसे चार-पाँच हजार फुट की ऊँचाई तक देखा जा सकता है।

**विवरण** : दरजिन फुदकी को यह नाम इसलिए मिला है कि यह दो पत्तियों को बड़ी सफाई से आपस में सीकर उनके बीच में अपना थैलीनुमा घोंसला बनाती है।

इतनी प्रसिद्ध और काफी संख्या में होते हुए भी इसके छोटे कद और हरे रंग के कारण इस पर जल्द हमारी निगाह नहीं पड़ती। यह बहुत ढीठ चिड़िया है जो दुम उठा कर फुदकती हुई हमारे बहुत पास तक आ जाती है और हमारे मकान की लताओं तक में अपना घोंसला बिना हिचक के बना लेती है। इसे घने जंगल और ऊसरी मैदान पसन्द नहीं आते और यह अपना अधिक समय बाग-बगीचों, खेतों और बस्ती के आस-पास की झाड़ियों में ही बिताती है। इसकी उड़ान छोटी होती है जो दो-तीन गज जाते-जाते खतम हो जाती है। उड़ते समय भी यह अपनी दुम उठाये रहती है और एक प्रकार की तेज बोली बोलती रहती है। यह झाड़ियों में कीड़े-फतिंगे पकड़ने के लिए चक्कर लगाती रहती है जो इसके मुख्य भोजन हैं।

**घोंसला** : दरजिन का सुन्दर घोंसला बया पक्षी के बाद सबसे सुन्दर और कलापूर्ण होता है। उसे देखकर इसकी कारीगरी की तारीफ किये बिना नहीं रहा जाता।

इसका घोंसला लम्बा और गहरे प्याले-जैसा होता है जिसे यह नरम रूई और मुलायम परों से बनाती है। कभी-कभी यह इसमें बालों का अस्तर भी दे देती है। इस नरम घोंसले को यह किसी झाड़ी, लता या वृक्ष की दो या तीन पत्तियों को आपस में सीकर उसी के बीच में रख देती है, जिससे पत्तियों के हिलने पर वह झूले की तरह हवा में डोलता रहे। पत्तियों के सीने में ही इसकी कारीगरी देखने को मिलती है।

दरजिन फुदकी पहले सेमल आदि की रूई या रेशम आदि के कीड़ों के कोयों से तागा बनाती है फिर उसे मकड़ी के जाले में सानकर मजबूत कर लेती है। उसके बाद वह किसी डाल की दो या तीन-चार बड़ी पत्तियों को आपस में जोड़कर और उनके किनारों को मिला कर नीचे की ओर से दोनों में अपनी नुकीली चोंच से थोड़ी-थोड़ी दूर पर छेद बना देती है। इन सूराखों में दरजिन फुदकी किसी चतुर दर्जी की तरह इस धागे को पिरोती चली जाती है। इतना ही नहीं, वह सिरे पर एक गाँठ लगाना भी नहीं भूलती जिससे उसका धागा सरक कर बाहर न निकल जाये।

दरजिन अपना सुन्दर घोंसला किसी फल की डाली या लता या झाड़ी में बनाती है जिसकी पत्तियाँ बड़ी होती हैं। ये घोंसले जमीन से ५-६ फुट की ऊँचाई पर रहते हैं।

दरजिन के जोड़ा बाँधने का समय मई से जून-जुलाई तक रहता है जिसके बीच मादा ३ से ५ तक अंडे देती है। इनके अंडे लम्बे और नुकीले होते हैं जिन पर थोड़ी चमक रहती है।

इन अंडों का रंग या तो ललाई लिये हुए सफेद रहता है या हल्का नीलापन लिये अंगूरी रंग का। इन पर लाल, कत्थई, भूरी, बैंगनी और काली चित्तियाँ और धब्बे पड़े रहते हैं।

ये अंडे लगभग ०.६४ × ०.४६ इंच के होते हैं।

## १८ टुनटुनी फुदकी (Fantail Warbler : Cisticola juncidis)

**पर्याय** : खरघुसा, बीजनबुच्छ कूजनी, पंखादुम फुदकी, टुनटुनिया।

**पहचान** : छोटी-सी भूरे रंग की चिड़िया जिसकी पीठ पर टूटी-फूटी गाढ़ी कत्थई धारियाँ और नीचे का भाग सफेदी मायल भूरा। यह अक्सर झाड़ियों में दिखाई पड़ती है।

**रंग-रूप** : टुनटुनी ४ इंच की छोटी-सी फुदकी है जिसके नर और मादा एक ही जैसे होते हैं। जाड़ों में इनका सारा ऊपरी भाग और डैने गाढ़े कत्थई रहते हैं। इस स्थान के परों के किनारे और सिरे हल्के भूरे होने के कारण सारा ऊपरी भाग धारीदार लगता है। नीचे का हिस्सा भूरापन लिये सफेद रहता है और आँख के ऊपर एक सफेद टेढ़ी रेखा पड़ी रहती है। दुम गाढ़ी भूरी जिसके बीच के दोनों परों के किनारे हल्के भूरे और शेष परों के किनारे सफेद रहते हैं।

गर्मियों में नर के सिर का ऊपरी भाग और गर्दन भूरी हो जाती है। आँख की पुतली बादामी, चोंच प्याजी, टाँगें हल्की गुलाबी होती हैं।

**निवास** : टुनटुनी फुदकी देश में सभी स्थानों पर पायी जाती है। यह वैसे तो मैदान की चिड़िया है जो खेत और मैदानों में ही दिखाई पड़ती है, लेकिन इसे पहाड़ों पर भी चार-पाँच हजार फुट की ऊँचाई तक देखना संभव होता है। यह यहाँ की बारहमासी चिड़िया है जो हमारा देश न छोड़ने पर भी मौसम के बदलाव के साथ यहीं थोड़ा स्थान-परिवर्तन कर लेती है।

**विवरण** : टुनटुनी या टुनटुनिया को कहीं-कहीं खरघुसा भी कहते हैं, क्योंकि इसको घास के मैदान सबसे अधिक पसन्द हैं। यह सरपत, ऊँची घास, धान के खेतों और झाड़ियों के बीच कीड़े-फतिंगों की तलाश में उड़ती रहती है जो इसका मुख्य भोजन है। उड़ते समय यह अपनी पंखी-जैसी दुम फैला लेती है और हवा में चक्कर काट कर थोड़ी ही दूर पर उतर पड़ती है।

जोड़ा बाँधने के बाद नर पक्षी अक्सर काफी ऊँचाई तक झटके के साथ उड़ता है फिर इसी प्रकार वह नीचे की ओर उतरता है, लेकिन जमीन पर पहुँचने के पहले ही फिर झटका देकर ऊपर उड़ जाता है। इसकी उड़ान घोंसले के इर्द-गिर्द ही रहती है। इस समय यह एक प्रकार की तीखी बोली बोलता है। इसकी बोली हमें वैसे भी सुनाई पड़ती है लेकिन वह इस उड़ान की बोली से भिन्न रहती है।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय जून से सितम्बर तक रहता है जिसके बीच घोंसला बन जाने पर मादा उसमें ३ से ५ तक अंडे देती है।

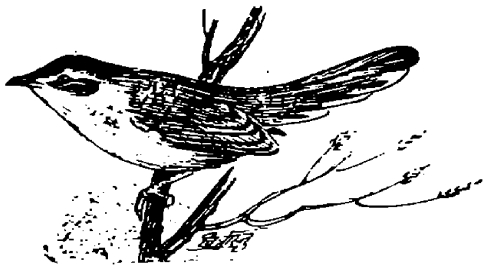
इसका घोंसला छोटा, गहरा और अंडाकार होता है जिसे यह घास की पत्तियों और नरम डंठलों से बनाती है। इसका भीतरी भाग नरम पत्तियों से मुलायम और बाहरी भाग मकड़ी के जाले से मजबूत कर दिया जाता है। ये घोंसले किसी ऊँची घास या नरकुल के तने से बँधे रहते हैं और जमीन से थोड़ी ही ऊँचाई पर रहते हैं। अंडे लंबोतरे और चमकीले होते हैं जिनका रंग निलछौंह या हल्का नीलापन लिये सफेद रहता है। इन पर कत्थई या बैंगनी छोटी-छोटी बिन्दियाँ पड़ी रहती हैं।

ये अंडे लगभग ०.५९ × ०.४६ इंच के होते हैं।

## १९ पिटपिटी फुदकी (Rufous Fronted Wren Warbler : Franklinia Buchanani)

**पर्याय** : ची हो, आरक्तभाल, चिकुर कूजनी, पिटपिटिया।

**पहचान** : छोटी-सी लम्बी दुम वाली फुदकी जिसका ऊपरी भाग ललाई लिये भूरा और नीचे का हिस्सा सफेद रहता है। सिर का ऊपरी हिस्सा पीठ के रंग से कुछ गाढ़ा रहता है। यह पिट-पिट जैसी बोली बोलती है।



पिटपिटी फुदकी

**रंग-रूप** : यह ५ इंच की छोटी-सी चिड़िया है जिसके नर और मादा एक रंग-रूप के होते हैं। इसका, डैनों को लेकर, सारा ऊपरी भाग ललछौंह भूरा रहता है जो सर पर जाते-जाते गाढ़ा हो जाता है। आँख के ऊपर एक टेढ़ी सफेद धारी पड़ी रहती हैं। नीचे का सारा हिस्सा भी सफेद रहता है लेकिन गले और निचले भाग में हल्की भूरी झलक रहती है। दुम लंबी और भूरी होती है।

आँख की पुतली ललछौंह पीली, चोंच पीली और टाँगें गुलाबीपन लिये भूरी रहती हैं।

**निवास** : यह फुदकी हमारे सारे देश के मैदानों में फैली हुई है और ऊँचे पहाड़ी प्रदेशों में इसको देखना संभव नहीं होता।

**विवरण** : पिटपिटी फुदकी को यह नाम शायद इसकी पिट्-पिट् जैसी बोली के कारण ही मिला है। खतरे के समय यह अपनी चोंच को लड़ा कर पिट्-पिट् की आवाज करती है जिसके कारण इसको पहचानने में धोखा नहीं हो सकता। यह खुले मैदानों, खेतों और झाड़ियों से भरे हुए स्थानों पर काफी संख्या में देखी जा सकती है। इसे नम स्थान और घने जंगल नहीं भाते और यह कटीली झाड़ियों वाले रूखे और रेतीले मैदानों को उनसे ज्यादा पसन्द करती हैं। ऐसे स्थानों पर इनके छोटे-बड़े झुंड दिखाई पड़ते हैं जो झाड़ियों के बीच जमीन पर चूहों की तरह चक्कर लगाते रहते हैं। इनका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े और उनकी जौराइयाँ हैं। जोड़ा बाँधने के समय इनका सुरीला स्वर भी अक्सर सुनाई पड़ता है।

**घोंसला** : पिटपिटी के जोड़ा बाँधने का समय मार्च अप्रैल से सितम्बर तक रहता है, जिसके बीच मादा कभी-कभी दो बार अंडे देती है। अंडों की संख्या ३ से ५ तक रहती है।

इनका घोंसला बैजाबी गुम्बदनुमा होता है जिसमें घुसने के लिए ऊपर की ओर एक छेद रहता है। ये घोंसले घास के पतले डंठलों और नरम रेशों द्वारा बनाये जाते हैं जिन्हें ये नरम कोपलों का अस्तर देकर मुलायम बना देती हैं। ये घोंसले किसी झाड़ी में दो–तीन फुट की ऊँचाई पर रहते हैं।

अंडे चौड़े और लम्बोतरे होते हैं जिन पर एक प्रकार की चमक रहती है। ये राखीपन या हलका हरापन लिये सफेद होते हैं जिन पर छोटी-छोटी घनी और कत्थई बिन्दियाँ पड़ी रहती हैं।

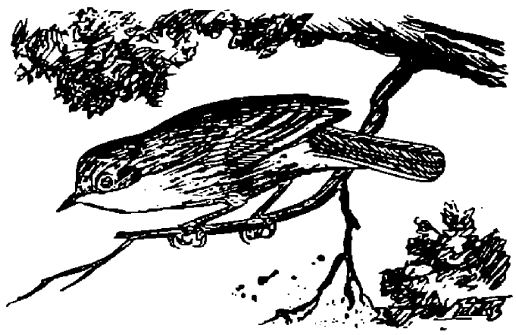
अंडे करीब ०.६२ X ०.४८ इंच के होते हैं।

## १०० टिकटिकी फुदकी (Lesser White Throat: Sylvia Curruca)

**पर्याय** : टिकरा, लघु श्वेतकंठ कूजनी, टिकटिक।

**पहचान** : टिकटिक को उसके शरीर के ऊपरी भूरे रंग और नीचे की सफेदी के कारण पहचानने में दिक्कत नहीं होती। इसके सर का ऊपरी हिस्सा सिलेटी भूरा और दुम के दोनों किनारे सफेद रहते हैं।

**रंग-रूप** : ६ इंच की इस फुदकी के नर और मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। इसके शरीर का ऊपरी भाग भूरा, सर का ऊपरी हिस्सा सिलेटी भूरा और डैने गाढ़े भूरे होते हैं जिनके किनारे हलके भूरे रहते हैं। दुम गाढ़ी भूरी होती है जिसके दोनों किनारे सफेद रहते हैं। नीचे का सारा हिस्सा राखीपन लिये सफेद रहता है। चोंच की जड़ से एक चौड़ी गाढ़ी भूरी पट्टी गले तक चली जाती है। आँख की पुतली बादामी, चोंच कलछौंह और टाँगें सिलेटी होती हैं।



टिकटिकी फुदकी

**निवास** : यह पक्षी हमारे देश का निवासी नहीं है और यह यहाँ उत्तर और पश्चिम की ओर से सितम्बर में आकर अप्रैल तक फिर हमारे देश से लौट जाता है। यह हमारे सारे देश में जाड़ों में दिखाई पड़ता है। इसकी दो और जातियाँ भी इसी समय यहाँ आती हैं जिसके कारण इसके रहने के स्थान का ठीक-ठीक पता लगाना कठिन हो गया है।

**विवरण** : टिकटिकी फुदकी ऐसे झाड़ी वाले मैदानों और जंगलों में रहना अधिक पसन्द करती है जहाँ इसे कीड़े-फतिंगे पकड़ने की सहूलियत रहती है। यह घने जंगलों की ओर बहुत कम जाती है और प्रायः तितरे-बितरे जंगलों या झाड़ियों और पेड़ों के पास ही दिखाई पड़ती है। यह वैसे तो बहुत शांत पक्षी है लेकिन कभी-कभी इसकी तेज बोली सुनाई पड़ती है।

**घोंसला** : जोड़ा बाँधने के समय से पहले ही यह हमारा देश छोड़ देती है, इससे इसके घोंसले यहाँ नहीं दिखाई पड़ते। लेकिन उत्तरी-पश्चिमी देशों में जहाँ की यह निवासिनी है, मई जून में इसके कमजोर प्यालेनुमा घोंसले दिखाई पड़ते हैं। ये घोंसले नरम घास और पतली जड़ों से बनाये जाते हैं और किसी झाड़ी में दो-चार फुट की ऊँचाई पर रखे रहते हैं। मादा इसमें ४ से ६ तक अंडे देती है।

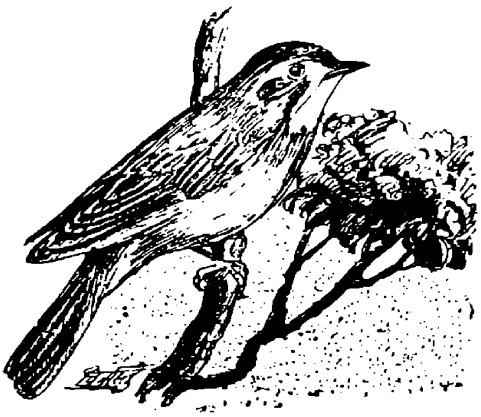
अंडे चौड़े और बैजाबी होते हैं जिनका रंग संदली सफेद रहता है। इन पर गाढ़ी भूरी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

नाप में ये अंडे करीब ०.६६ × ०.५ इंच के होते हैं।

## १०१ चुटचुटिया फुदकी (Chiff Chaff : Phylloscopus Collybita)

**पर्याय** : हरिवर्ष तरु-कूजनी।

**पहचान** : एक छोटी-सी चिड़िया जिसका ऊपरी भाग भूरा और नीचे का हल्का बादामी रहता है। आँख के ऊपर एक गंदी पीली टेढ़ी रेखा रहती है। पानी के निकट के पेड़ों और झाड़ियों में इनका झुंड मीठी बोली बोलता दिखाई पड़ता है।



चुटचुटिया फुदकी

**रंग-रूप** : चुटचुटिया ५ इंच की छोटी-सी फुदकी है जिसके नर-मादा एक ही जैसे होते हैं। इनके शरीर का ऊपरी भाग हरापन लिये भूरे रंग का होता है और आँख के ऊपर एक गंदी पीली टेढ़ी रेखा रहती है। डैने और दुम गाढ़ी भूरी, जिनके किनारे जैतूनी पीले रहते हैं। नीचे का हिस्सा गंदा पीला रहता है जो सीने पर गाढ़ा हो जाता है।

आँख की पुतली गाढ़ी भूरी, चोंच धुमैली भूरी और टाँग भूरापन लिए काली रहती है।

**निवास** : चुटचुटिया फुदकी हमारे देश में बाहर से आने वाली मौसमी चिड़िया है जो जाड़ों में उत्तर-पश्चिम की ओर से आकर सारे देश में फैल जाती है। दक्षिण की ओर ये मध्य प्रदेश के आगे नहीं जातीं। हमारे देश में यह सितम्बर में आ जाती है और अप्रैल खतम होते-होते फिर उत्तर-पश्चिम की ओर वापस चली जाती है। इसकी कई जातियाँ हमारे देश में बाहर से आती हैं जो एक दूसरे से बहुत मिलती-जुलती होती हैं। इन सब में चुटचुटिया ही प्रसिद्ध है।

**विवरण** : चुटचुटिया खुले मैदान और खेतों में रहने वाली चिड़िया है। इन्हें घने जंगल और पहाड़ नहीं पसन्द आते। ये ऐसे खेतों और मैदानों को चुनती हैं जिसमें छोटे पेड़ और झाड़ियाँ या फसल खड़ी रहती हैं। अरहर और कपास के खेत इन्हें बहुत भाते हैं। कभी-कभी ये पानी के पास नरकुल और ऊँची घास पर उड़ कर अपना शिकार करती रहती हैं। इनका मुख्य भोजन कीड़े-फतिंगे हैं।

चुटचुटिया छोटे-छोटे झुण्डों में रहती है और एक प्रकार की मीठी बोली बोलती है जो ट्वीट-ट्वीट, ट्वीट या चिफ़्-चैफ़्-चैफ़ से मिलती-जुलती होती है।

**घोंसला** : चुटचुटिया जोड़ा बाँधने के समय हमारे देश से वापस चली जाती है। अपने देश में ही यह मई-जून के भीतर अपना बड़ा-सा गुम्बदनुमा घोंसला बनाती है जिसमें घुसने के लिए ऊपर की ओर एक सूराख रहता है। घोंसला सूखी घास और पत्तियों से बनाया जाता है, जिसका भीतरी हिस्सा मुलायम परों से मुलायम कर दिया जाता है। यह किसी कँटीली झाड़ी या कुंज के भीतर जमीन से थोड़ी ही ऊँचाई पर रहता है। इस सुन्दर घोंसले में मादा प्रायः ४ अंडे देती है जो चौड़े बैजाबी और थोड़ी चमक वाले होते हैं। अंडे सफेद होते हैं, जिन पर कत्थई चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

अंडों की नाप करीब ०.६५ × ०.४८ इंच रहती है।

## १०२ हरी फुदकी (Yellow browed Warbler : Phylloscopus Inornatus)

**पर्याय** : पीत भ्रू, तरु-कूजनी।

**पहचान** : जैतूनी हरे रंग की छोटी-सी चिड़िया जिसका निचला भाग मटमैला सफेद और डैने पर दो भूरी पट्टियाँ। झाड़ियों के आस-पास यह अपनी टिस्-सिप्-जैसी बोली के कारण आसानी से पहचान ली जाती है।



हरी फुदकी

**रंग-रूप** : यह हरी फुदकी ४ इंच की छोटी-सी चिड़िया है जिसके नर और मादा एक ही जैसे होते हैं। इसका ऊपरी भाग जैतूनी भूरा और डैने तथा दुम गाढ़ी भूरी रहती है। एक पिलछौंह सफेद पट्टी आँख पर होकर चली जाती है और इसी रंग की कुछ बिन्दियाँ चेहरे के दोनों ओर पड़ी रहती हैं। दुम के किनारे हरछौंह रहते हैं और डैने पर दुहरी बादामी सफेद पट्टियाँ पड़ी रहती हैं। नीचे का सारा भाग गंदा सफेद रहता है। आँख की पुतली और चोंच गाढ़ी भूरी, निचली चोंच की जड़ पीली और टाँगें सिलेटी भूरी रहती हैं।

**निवास :** यह फुदकी भी यहाँ की मौसमी चिड़िया है जो जाड़ों में उत्तर की ओर से हमारे देश में दक्षिण भारत तक फैल जाती है। अप्रैल समाप्त होते-होते यह फिर यहाँ से लौट जाती है लेकिन कुछ पक्षी हिमालय के पश्चिमी भाग में सात से बारह हजार फुट तक रह जाते हैं और यहीं जोड़ा बाँध कर अंडे देते हैं।

**विवरण :** हमारे देश में यह चिड़िया प्रायः अकेली ही इधर-उधर झाड़ियों और पेड़ों के झुरमुटों के बीच कीड़े-फतिंगे पकड़ती दिखाई पड़ती है जो इसका मुख्य भोजन है। यह उड़ते-उड़ते एक प्रकार की टी, वी, टुट् या टिस् से मिलती-जुलती सुरीली बोली बोलती रहती है। उड़ते-उड़ते यह अक्सर अपने पंखों को झटका देकर हिलाती रहती है।

**घोंसला :** यहाँ रह जाने वाले पक्षी मई-जून में जोड़ा बाँध कर अपना घोंसला बनाते हैं जो पहाड़ी की ढलान पर की झाड़ी के भीतर या खुले में ही जमीन पर ही रखे रहते हैं। ये घोंसले बड़े और गुम्बदनुमा गोल होते हैं जिसमें एक ओर भीतर जाने वाला मार्ग रहता है। ये घोंसले खुरदुरी घास से बनाये जाते हैं और उनका भीतरी भाग नरम घास, बाल तथा जड़ों से मुलायम कर दिया जाता है।

मादा ३ से ५ तक अंडे देती है, लेकिन अक्सर ४ अंडे घोसले में दिखाई पड़ते हैं जिन पर कत्थई और बैंगनी निशान पड़े रहते हैं।

अंडों की नाप ०.५६ ०.४४ इंच रहती है।

## १०३ धानी फुदकी (Greenish Willow Wren : Phylloscopus Trochiloides)

**पर्याय :** आहरित तरुकूजनी।

**पहचान :** इस चिड़िया का ऊपरी भाग जैतूनी भूरा और नीचे का पिलछौंह सफेद रहता है। डैने पर और आँख के ऊपर हलकी पीली पट्टी और रेखा रहती है। ये प्रायः झाड़ियों में रहती है।

**रंग-रूप :** यह फुदकी ५ इंच की लम्बी होती है जिसके नर और मादा एक ही जैसे होते हैं। इनका सारा ऊपरी भाग और डैने जैतूनी हरा और नीचे का हिस्सा पीलापन लिए सफेद रहता है। दुम गाढ़ी भूरी रहती है और डैनों पर एक पीली पट्टी पड़ी रहती है। चोंच की जड़ से आँख के ऊपर होती हुई एक चौड़ी धारी गर्दन तक चली जाती है और इसके ऊपर एक पतली टेढ़ी रेखा भी इसी रंग की पड़ी रहती है।

आँख की पुतली गाढ़ी भूरी, चोंच भूरी और टाँगें सिलेटी भूरी होती हैं।

**निवास :** यह हमारे देश में बाहर से आने वाला पक्षी है जो बाहर से जाड़ों में उत्तर की ओर से आकर सारे उत्तरी भारत में फैल जाता है और जाड़ा समाप्त होते-होते फिर उसी ओर लौट जाता है। कुछ पक्षी हिमालय के पश्चिमी भाग और कश्मीर में रुक भी जाते हैं और वहीं अपना घोंसला बनाते हैं।

**विवरण :** धानी फुदकी जाड़ों में यहाँ आकर अपने रहने के लिए ऐसे स्थान चुनती है जो झाड़ियों और छोटे-छोटे पेड़ों से भरे हों। इसी में सारे दिन कीड़े-फतिंगों के पीछे हम इसे चक्कर लगाते देख सकते हैं जो इनकी मुख्य खुराक है। यह कभी अकेली कभी जोड़े में और कभी-कभी छोटे-छोटे झुंडों में दिखाई देती है। यह एक प्रकार की ची, ची, जैसी बोली बोलती है जो सुनने में अच्छी लगती है।

**घोसला :** हमारे देश में रह जाने वाले पक्षी मई से जुलाई तक जोड़ा बाँधकर अपना घोंसला बनाते हैं जो घास-फूस और जड़ों का होता है। यह बड़ा और भद्दा गुम्बदनमा होता है जिसके भीतर ऊन और बाल का अस्तर रहता है। यह किसी ढालू जगह पर जमीन से थोड़ी दूर ऊपर झाड़ी में रखा रहता है।

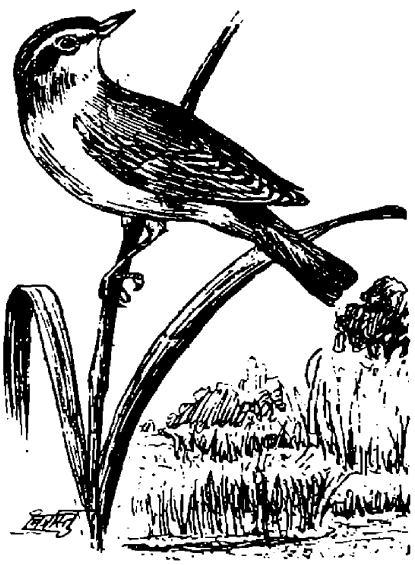
मादा इसमें ३-४ सफेद अंडे देती है जो चौड़े और बैंजाबी होते हैं।

ये अंडे लगभग ०.६ × ०.४५ इंच के होते हैं।

## १०४ अबलखी फुदकी (Large Crowned Willow Wren : Phylloscopus Occipitalis)

**पर्याय :** शबल तरु कूजनी।

**पहचान :** इस छोटी फुदकी का ऊपरी हिस्सा हरा और नीचे का सफेद रहता है। आँख के ऊपर एक पिलछौंह पट्टी और उसके ऊपर भी एक पतली रेखा रहती है।



**रंग-रूप** : इस ५ इंच की फुदकी का सारा ऊपरी भाग जैतूनी हरा रहता है जो सिर पर पहुँचते-पहुँचते गाढ़ा हो जाता है। निचला भाग हलका पीलापन लिये सफेद रहता है। आँख के ऊपर एक स्पष्ट पिलछौंह पट्टी रहती है जो चोंच की जड़ से कनपटी तक चली जाती है। इस पट्टी के ऊपर एक और रेखा इसी रंग की पड़ी रहती है। डैने के छिपे हुए भाग और दुम गाढ़ी भूरी रहती है।

आँख की पुतली गाढ़ी भूरी, ऊपरी चोंच भूरी, नीचे की पीली और टाँगें सिलेटी भूरी रहती हैं।

**निवास** : यह फुदकी भी हमारे देश में जाड़ों में उत्तर-पश्चिम की ओर से आकर सारे भारत में फैल जाती है और अप्रैल के अन्त तक यहाँ से वापस चली जाती है। कुछ पक्षी हिमालय के पश्चिमी भाग में रह जाते हैं, जिन्हें गर्मियों में ६ हजार से ९ हजार फुट की ऊँचाई तक देखा जा सकता है।

**विवरण** : यह फुदकी मैदानी भागों में तो पेड़ों के आस-पास परन्तु पहाड़ों में झाड़ियों के निकट छोटे-छोटे झुंडों में दिखाई पड़ती है। ये दिन भर कीड़े-मकोड़े पकड़ती रहती है जो इनका मुख्य भोजन है। ये उड़ते-उड़ते चिप्, चिप्, चिप्चिप् जैसी बोली बोलती रहती हैं। जोड़ा बाँधने के समय में इनकी बोली तेज सीटीनुमा और कर्कश हो जाती है। इस समय नर झगड़ालू हो जाते हैं।

**घोंसला** : हिमालय में ये पक्षी मई से जुलाई के बीच जोड़ा बाँध कर अपने घास और काई के घोंसले बनाते हैं जिनको ये नरम घास, पतली जड़ों और बाल से मुलायम बना देते हैं।

ये घोंसले किसी पेड़ या दीवार के सूराख में रखे रहते हैं। ये कभी गुम्बदनुमा रहते हैं तो कभी मामूली तितरे-बितरे, जिनमें मादा ४ से ६ तक अंडे देती है। ये अंडे लम्बोतरे होते हैं जिनका ऊपरी सिरा नोकीला रहता है। अंडे धुर सफेद और थोड़ी चमक वाले होते हैं।

अंडों की नाप लगभग ०.६५ × ०.५० इंच रहती है।

## १०५ मछमरनी फुदकी (Grey-headed Flycatcher Warbler : Seicercus Xanthoschistos)

**पर्याय** : भस्म, शीर्ष शलभाश कूजनी।

**पहचान** : छोटी-सी पहाड़ की फुदकी, जिसका ऊपरी भाग सिलेटी और हरा तथा नीचे का हिस्सा चटक तीला रहता है। दुम के किनारे सफेद होते हैं। यह बहुत शोर मचाने वाली चिड़िया है।

**रंग रूप** : यह ४ इंच की छोटी-सी चिड़िया है जिसके नर और मादा एक जैसे होते हैं। ऊपर का अगला हिस्सा, सिर और गर्दन सिलेटी भूरा और पीछे का हिस्सा घानी रहता है। एक पिलछौंह रेखा आँख के ऊपर होकर जाती है और दूसरी इसके ऊपर रहती है। डैने का भीतरी भाग और दुम भूरी रहती है। दुम के बाहरी पर सफेद रहते हैं। नीचे का सारा भाग चमकीला पीला होता है।

आँख की पुतली और ऊपरी चोंच गाढ़ी भूरी और निचली चोंच पीली रहती है, टाँगें जैतूनी भूरी और तलुए पीले रहते हैं।

**निवास** : मछमरनी फुदकी हिमालय की चिड़िया है जो कश्मीर से आसाम तक फैली हुई है। ये वैसे तो ३ हजार से ६ हजार फुट तक की ऊँचाई तक रहती है लेकिन जाड़ों में पंजाब, बिहार और उत्तर प्रदेश के मैदानों में फैल जाती है।

**विवरण** : यह छोटी सुन्दर चिड़िया हिमालय के पर्वतीय प्रदेशों में आसानी से देखी जा सकती है। यह वैसे तो पहाड़ और जंगलों में रहती है लेकिन जाड़ों में इसे खेत, मैदान और बाग-बगीचों में अकेली या छोटे-छोटे झुंडों में देखना कठिन नहीं होता। यह पेड़ों पर रहने वाली चिड़िया है जो जमीन पर बहुत कम उतरती है। इसे हम दिन भर पेड़ों और झाड़ियों के आस-पास कीड़े-फतिंगे पकड़ते देख सकते हैं, जो इसका मुख्य भोजन है। ये एक प्रकार की चिट्, चिट्, या टी, टी-जैसी बोली बोलती हैं। जो सुरीली न होकर भी कर्कश नहीं कही जा सकती।

**घोंसला** : मछमरनी फुदकी मई से अगस्त तक जोड़ा बाँध कर अपना घोंसला बनाती है। इसका घोंसला बड़ा और गोल गुम्बद जैसा होता है, जिसके ऊपर की ओर भीतर जाने का रास्ता रहता है। यह घोंसला सूखी पत्तियों, घास तथा पेड़ की काई से बनाया जाता है जिसका भीतरी हिस्सा ऊन और बाल से मुलायम कर दिया जाता है। यह घोंसला किसी घनी झाड़ी के भीतर जड़ के पास ही रखा रहता है।

समय आने पर मादा ३-४ अंडे देती है जो धुर सफेद रहते हैं। ये अंडे चौड़े बेजावी और काफी चमकीले होते हैं।

अंडों की नाप करीब ०.६० × ०.५ इंच होती है।

## १०६ पहाड़ी फुदकी (Brown Hill Warbler : Suya Crinigera)

**पर्याय** : वभ्रु-पर्वत-कूजनी, सुइया।

**पहचान** : इस पहाड़ी फुदकी का ऊपरी हिस्सा भूरा रहता है जिस पर खड़ी काली धारियाँ पड़ी रहती हैं। नीचे का हिस्सा हलका भूरा रहता है। दुम लम्बी और सीढ़ीनुमा होती है।

**रंग-रूप** : यह ७ इंच की लम्बी चिड़िया है जिसके नर मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। इसका ऊपरी हिस्सा भूरा रहता है जिस पर काली खड़ी लकीरें पड़ी रहती हैं। डैने भूरे, जिसके किनारे ललछौंह भूरे रहते हैं। लम्बी और सीढ़ीनुमा दुम भी

भूरी रहती है, जिसके बाहरी पंखों के सिरे बादामी और कत्थई रहते हैं। नीचे का भाग हलका भूरा रहता है, जिसमें गले और सीने पर कुछ स्याही और पेट के बीच में कुछ सफेदी रहती है। गर्मियों में ऊपर का सारा हिस्सा गाढ़े भूरे रंग का हो जाता है और उस पर धारियां नहीं रहतीं।



पहाड़ी फुदकी

आँख की पुतली पिलछौंह भूरी, चोंच का ऊपरी भाग गर्मियों में काला और जाड़ों में भूरा और निचली चोंच हलकी गुलाबी होती है। टाँगें भी गुलाबी रहती हैं।

**निवास**: पहाड़ी फुदकी सारे हिमालय प्रदेश में फैली हुई है जहाँ ये ढाई हजार से साढ़े सात हजार फुट तक दिखाई पड़ती हैं। यह हमारे यहाँ की बारहमासी चिड़िया है जो हमारा देश छोड़ कर बाहर नहीं जाती।

**विवरण** : इस फुदकी को घने जंगल पसन्द नहीं आते। हम इसे ज्यादातर घास या झाड़ी से भरे हुए मैदानों तथा खेतों के आस-पास ही देखते हैं। कभी-कभी इन्हें बिल्कुल खुले स्थानों पर पत्थरों के बीच भी घूमते फिरते देख सकते हैं। घास और झाड़ियों के बीच भी यह चूहे की तरह कीडे-मकोड़ों का शिकार करती रहती है जो इसका मुख्य भोजन है। थोड़ी-थोड़ी देर बाद यह किसी ऊँचे स्थान पर जा बैठती है और अपनी मामूली-सी बोली बोलने लगती है। अपनी लम्बी दुम के कारण यह बहुत तेज नहीं उड़ सकती और थोड़ी-सी दूर जाकर किसी पेड़, झाड़ी या टेलीग्राफ के तार पर बैठ जाती है।

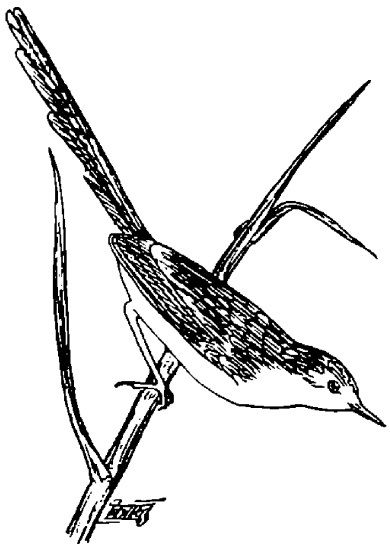
**घोंसला**: इसके जोड़ा बाँधने का समय मई से जुलाई तक रहता है जब यह अपना बैजाबी गुम्बदनुमा घोंसला बनाती है। इसमें भीतर जाने के लिए ऊपर की ओर एक छेद रहता है। यह घोंसला घास की चौड़ी पत्तियों द्वारा बनाया जाता है जिसमें महीन घास के डंठलों का अस्तर दे दिया जाता है। घोंसला किसी कटीली झाड़ी, घने पेड़ या ऊँची घास में चार-पाँच फुट की ऊँचाई पर रहता है। इसके अंडों की संख्या प्रायः ४ रहती है, जो लम्बे, बैंजावी और चमकीले होते हैं। अंडों का रंग सफेद या हलका गुलाबी होता है जिन पर कत्थई बिन्दियाँ धब्बे और चित्ते पड़े रहते हैं।

अंडे लगभग ०.७० × ०.५० इंच के होते हैं।

## १०७ डोरिया फुदकी (Streaked Wren Warbler Prinia Gracilis)

**पर्याय** : रेखित चिकुर कूजनी।

**पहचान**: एक छोटी फुदकी जिसकी पीठ भूरी और धारीदार तथा नीचे का भाग हलका भूरा रहता है। दुम लम्बी सीढ़ीनुमा रहती है। यह अपनी धारीदार पीठ के कारण आसानी से पहचानी जा सकती है।



डोरिया फुदकी

**रंग-रूप**: यह ५ इंच लम्बी छोटी-सी फुदकी है जिसकी दुम करीब ढाई इंच लम्बी होती है। इसके नर-मादा एक जैसे होते हैं। इसका ऊपरी भाग हलका भूरा रहता है जिस पर गाढ़ी भूरी खड़ी लकीरें पड़ी रहती हैं। चेहरे के दोनों रुख भी भूरे रहते हैं जिन पर सफेद चित्तियाँ पड़ी रहती हैं। डैने भूरे, जिनके किनारे हलके भूरे और लम्बी और सीढ़ीनुमा दुम भूरी होती है जिनके बाहरी परों के सिरे सफेद और गाढ़े भूरे रहते हैं। नीचे का सारा हिस्सा बहुत हलका भूरा रहता है।

आँख की पुतली पीली, चोंच गरमियों में काली, जाड़ों में भूरी और निचली चोंच पिलछौंह सिलेटी रंग की रहती है।

टाँगें हलका गुलाबीपन लिये सफेद रहती हैं लेकिन तलुए भूरे रहते हैं।

**निवास**: डोरिया फुदकी हमारे देश में स्थायी रूप से रहने वाली चिड़िया है जो अफगानिस्तान से लेकर सारे उत्तर भारत में देखी जा सकती है।

**विवरण**: यह फुदकी पानी के आसपास रहने वाली चिड़िया है जो नदी, नाले तथा झील और तालाबों के निकट के सरपत तथा झाड़ियों में आसानी से देखी जा सकती है। यह झाड़ियों के इर्द-गिर्द दो-तीन फुट की ऊँचाई पर उड़ती रहती है और कीड़े-फतिंगों का शिकार करती रहती है जो इनका मुख्य भोजन है। उड़ते समय यह एक प्रकार की बोली बोलती रहती है जिसे सुरीली ही कहा जावेगा।

जोड़ा बाँधने के समय नर पक्षी किसी ऊँची घास की फुनगी पर बैठ कर अपनी बोली सुनाता रहता है।

**घोंसला**: इसके जोड़ा बाँधने का समय मार्च से अगस्त तक रहता है और ऐसा अनुमान है कि इस बीच में मादा दो बार अंडे देती है। अंडों की संख्या ३ से ४ तक रहती है।

इसका घोंसला छोटा-सा बैजाबी गुम्बद-जैसा होता है जिसे यह पतली घास की पत्तियों से बनाती है। उसके ऊपरी भाग में भीतर जाने के लिए एक छेद रहता है। घोंसला किसी सरपत के घने बूटे के बीच डेढ़-दो फुट की ऊँचाई पर रखा रहता है।

इसके अंडे चौड़े बैजाबी और सिरे की ओर नुकीले रहते हैं। इनका रंग राखी, अंगूरी या गुलाबी मायल सफेद रहता है जिन पर कत्थई या बैंगनी सिलेटी बिन्दियाँ और चिह्न पड़े रहते हैं।

अंडे करीब ०.५३ × ०.४४ इंच के होते हैं।

## १०८ सिलेटी फुदकी (Ashy Wren Warbler : Prinia Socialis)

**पर्याय**: भस्म चिकुर कूजनी।

**पहचान**: छोटी-सी लम्बी दुम वाली फुदकी, जिसका ऊपरी हिस्सा गाढ़ा राखी और नीचे का हलका भूरा रहता है। यह झाड़ियों के आस-पास अकेली या जोड़े में तेज बोली बोलती हुई दिखाई पड़ती है।

**रंग-रूप**: यह ५ इंच की छोटी-सी फुदकी है जिसकी करीब ढाई इंच लम्बी दुम होती है। इसके नर और मादा एक ही जैसे होते हैं। यह यहाँ की प्रसिद्ध फुदकी है जिसका ऊपरी भाग गर्मियों में गाढ़ा राखी रहता है और कभी-कभी इसकी आँख के ऊपर एक सफेद धारी पड़ी रहती है। नीचे का सारा भाग और चेहरे के दोनों रुख हलके भूरे तथा डैने ललछौंह भूरे रहते हैं। दुम लम्बी सीढ़ीनुमा और ललछौंह भूरी रहती है जिसके बाहरी पंखों के सिरे ललछौंह गाढ़े भूरे रहते हैं। जाड़ों में इसका ऊपरी भाग, डैने और दुम ललछौंह भूरी हो जाती है और सिर ललाई लिए राखी रंग का रहता है। आँख के ऊपर एक सफेद स्पष्ट रेखा दिखाई पड़ने लगती है और नीचे के हिस्से में ठुड्डी, गला और पेट का बिचला भाग सफेद तथा शेष सारा भाग हलका भूरा हो जाता है।

आँख की पुतली पिलछौंह भूरी, चोंच काली और टाँगें प्याजी रहती हैं।

**निवास**: सिलेटी फुदकी हमारे यहाँ की प्रसिद्ध चिड़िया है जो कश्मीर के अलावा सारे देश में फैली हुई है। यह यहाँ की बारहमासी चिड़िया है जो हमारा देश छोड़कर बाहर जाना नहीं पसन्द करती। इसकी कई जातियाँ हमारे यहाँ पायी जाती हैं जिनमें सबसे प्रसिद्ध यही है।

**विवरण**: सिलेटी फुदकी को हम मैदान की चिड़िया कह सकते हैं, लेकिन यह पहाड़ों पर भी ३–४ हजार फुट तक दिखाई पड़ती है। इसे पहाड़ों की अपेक्षा खुले मैदान, बाग-बगीचे, घास और झाड़ियाँ तथा गन्ने के खेत ज्यादा पसन्द हैं। यह बहुत ढीठ चिड़िया है जो बस्ती के आस-पास भी निडर होकर चली आती है। यह दिनभर कीड़े-फतिंगों का शिकार करती देखी जा सकती है जो इसकी मुख्य खुराक है। इसकी बोली बहुत तेज होती है।

**घोंसला**: सिलेटी फुदकी के जोड़ा बाँधने का समय मार्च से सितम्बर तक रहता है जिसके बीच मादा कभी-कभी दो बार अंडे देती है। इसके घोंसले गोल गुम्बदनुमा होते हैं जिन्हें यह घास के नरम डंठलों से बनाती है। ये घनी झाड़ियों के बीच रखे रहते हैं। कभी-कभी यह दरजिन फुदकी की तरह दो या तीन-चार पत्तियों को आपस में सीकर अपना घास-फूस और पतली जड़ों का घोंसला उसके बीच में रख देती है। पत्तियों के बाहरी हिस्से पर यह काई आदि से एक प्रकार का पलस्तर कर देती है जिससे ये बहुत मजबूत हो जाते हैं।

समय आने पर मादा ३-४ अंडे देती है जो बहुत सुन्दर होते हैं। ये एकदम बैजाबी होते हैं और उन पर काफी चमक रहती है। ये अंडे हलके या गाढ़े लाल रंग के रहते हैं।

इनकी नाप प्रायः ०.६४ × ०.४७ इंच होती है।

## १०९ जंगली फुदकी (Jungle Wren Warbler : Prinia Sylvatica)

**पर्याय**: तुतरंगी, वन्य चिकुर-कूजनी।

**पहचान**: इस फुदकी का ऊपरी भाग सिलेटी भूरा और

नीचे का सफेदी मायल भूरा रहता है। दुम लम्बी और सीढ़ी-नुमा रहती है।



जंगली फुदकी

**रंग-रूप** : जंगली फुदकी ६ इंच लम्बी चिड़िया है जिसके नर और मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। मादा नर से कुछ छोटी होती है।

गर्मियों में इसका सारा ऊपरी भाग सिलेटी भूरा और नीचे का हलका और सफेदी मायल भूरा रहता है। आँख के ऊपर एक हलके भूरे रंग की रेखा पड़ी रहती है। डैने गाढ़े भूरे, जिनके किनारे हलके भूरे और बीच के पंख सिलेटी भूरे रहते हैं। दुम के किनारे के दोनों पंख धुर सफेद होते हैं।

जाड़ों में इन फुदकियों का ऊपरी भाग ललछौंह भूरा हो जाता है।

आँख की पुतली नारंगी, चोंच गर्मियों में काली और जाड़ों में सिलेटी भूरी हो जाती है। निचली चोंच प्याजी और टाँगें हलकी भूरी रहती हैं।

**निवास**: जंगली फुदकी हमारे देश में स्थायीरूप से रहने वाली चिड़िया है जिसे हम हिमालय से धुर दक्षिण तक आसानी से देख सकते हैं। इसकी कई जातियाँ हमारे देश में पायी जाती हैं लेकिन उन सबमें यही फुदकी सबसे अधिक प्रसिद्ध है।

**विवरण**: जंगली फुदकी मैदान की चिड़िया है जिसे खुले मैदान, खेत, बाग-बगीचे तथा घास और झाड़ी से भरे हुए स्थान अधिक पसन्द हैं। पहाड़ों पर भी यह ऐसी खुली जगह को ज्यादा चुनती है जो नागफनी आदि के पौधों तथा अन्य झाड़ियों से भरे हों। इसे घने जंगल ज्यादा पसन्द नहीं हैं।

यह वैसे तो पेड़ के झुंड तथा झाड़ियों के आस-पास कीड़े-फतिंगे पकड़ती दिखाई पड़ती है, लेकिन हम इसे थोड़ी-थोड़ी देर पर किसी छोटे पेड़ या ऊँची झाड़ी पर बैठी देख सकते हैं। वहाँ बैठ कर यह पिट्-पिट्, पिट् जैसी तेज बोली बोलती है और फिर नीचे झटके के साथ उड़ कर कीड़े-फतिंगे पकड़ने लगती है जो इसका मुख्य भोजन है।

**घोंसला**: इसके जोड़ा बाँधने का समय जून से अगस्त तक रहता है जिसके बीच मादा ३ से ४ तक अंडे देती है।

इसका घोंसला बड़ा और गोल गुम्बदनुमा होता है जिसे यह घास-फूस से बनाती है। इसमें जाने के लिए ऊपर की ओर एक सूराख रहता है और बाहरी हिस्सा रेशों और मकड़ी के जालों से भली-भाँति लपेट दिया जाता है।

इसके अंडे लम्बोतरे और चमकीले होते हैं जिनका रंग अंगूरी या राखीपन लिये हुए पत्थरी रहता है। अंडों पर हलके कत्थई या भूरे रंग की तितरी-बितरी बिन्दियाँ पड़ी रहती हैं।

अंडे करीब ०.७५ × ०.५० इंच के होते हैं।

## ११० धुरिया फुदकी (Indian Wren Warbler: Prinia Inornata)

**पर्याय** : भारत चिकुर कूजनी।

**पहचान**: मैदान में रहने वाली बहुत परिचित फुदकी, जिसका ऊपरी भाग गाढ़ा भूरा, नीचे का हलका भूरा और दुम लम्बी रहती है।

**रंग-रूप** : धुरिया फुदकी ५ इंच की फुदकी है जिसमें इसकी २ इंच लम्बी दुम भी शामिल है। इसके नर और मादा एक ही जैसे होते हैं। गर्मियों में इसका ऊपरी भाग, डैने और दुम गाढ़ी भूरी और नीचे का सारा हिस्सा हलके भूरे रंग का रहता है। डैने और दुम के किनारे के पर भी हलके भूरे रहते हैं। दुम लम्बी और सीढ़ीनुमा होती है जिनके बाहरी परों के सिरे गाढ़े रंग के रहते हैं। आँख का छल्ला सफेद होता है और एक गंदी सफेद धारी आँख के ऊपर पड़ी रहती है।

जाड़ों में इनका सारा ऊपरी भाग, डैने और दुम ललछौंह भूरे रंग की हो जाती है और दुम भी कुछ बढ़ जाती है।

आँख की पुतली पिलछौंह भूरी, ऊपरी चोंच गर्मियों में काली तथा जाड़ों में भूरी और निचली चोंच प्याजी रहती है। टाँगों का रंग हलका गुलाबी रहता है।

**निवास**: यह फुदकी यहाँ की बहुत प्रसिद्ध बारहमासी चिड़िया है जो हिमालय से धुर दक्षिण भारत तक फैली हुई है। हिमालय तथा अन्य पर्वतों पर यह तीन-चार हजार फुट से ऊपर नहीं जाती। इसकी कई जातियाँ यहाँ फैली हुई है, जिनका रंग-रूप और आदतें इसी की तरह होती हैं।

**विवरण** : यह मैदान की परिचित चिड़िया है जो घने जंगलों की अपेक्षा खड़ी फसलों वाले खेतों में अपना अधिक समय बिताती है। गन्ना, अरहर, गेहूँ और ज्वार-बाजरे के खेतों तथा घास से भरे हुए स्थान इसे काफी पसन्द हैं। पेड़ों के झुरमुटों तथा झाड़ियों के आस-पास भी यह दिखाई पड़ती है, लेकिन बहुत कम।

अपनी लम्बी और मजबूत टाँगों के सहारे यह पेड़ के तनों पर फुदकती रहती है और कीड़े-फतिंगों का शिकार करती रहती है जो इसके मुख्य भोजन हैं। यह थोड़ी-थोड़ी देर पर उड़ती है लेकिन दो-तीन गज पर जाकर फिर किसी पेड़ के तने पर उतर जाती है। यह बहुत ढीठ चिड़िया है जो बहुत निकट जाने पर ही उड़ती है। इसकी बोली तेज और खनखनाती हुई होती है।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय मार्च से सितम्बर तक रहता है, जिसके बीच मादा कभी-कभी दो बार अंडे देती है। अंडों की संख्या ३ से ५ तक रहती है।

इसका घोंसला लम्बोतरा या गोल गुम्बदनुमा रहता है जिसको यह घास के तनों के रेशे निकाल कर बहुत कारीगरी से बुन कर बनाती है। ये घोंसले किसी कटीली झाड़ी या सरपत के बीच चार-पाँच फुट की ऊँचाई पर रखे रहते हैं।

इसके अंडे बहुत सुन्दर, लम्बे और बैंजाबी होते हैं जिन पर काफी चमक रहती हैं। ये हलके अंगूरी, नीले या गुलाबीपन लिये सफेद रहते हैं जिन पर कत्थई रंग के चित्ते, धब्बे और महीन धारियाँ पड़ी रहती हैं।

अंडे प्रायः ०.६१ × ०.४५ इंच के होते हैं।

## १११ नीलमी (Fairy Blue Bird : Irena Puelloe)

**पर्याय** : सुन्दर नीलच्छवि।

**पहचान** : इस जाति के नर का ऊपरी भाग चमकदार नीले रंग का होता है, मादा का पूरा शरीर आसमानी होता है। ये ऊँचे-ऊँचे वृक्षों पर अपने गिरोह बाँध कर रहते हैं। इनकी बोली विशेष प्रकार की चिट्-चिट् की उतरती-चढ़ती सीटी-जैसी होती है।

**रंग-रूप** : यह १० इंच की मखमली काले रंग की चिड़िया है। इसके नीले मखमली रंग के कारण इसे पहचानने में आसानी रहती है। ऊपरी परों तथा डैनों पर हलकी धारियाँ होती हैं और पूँछ के नीचे चमकदार नीला रंग रहता है। मादा का रंग हलका आसमानी होता है। परों पर गहरी धारियाँ होती हैं और पूँछ तथा डैने दोनों काले-भूरे होते हैं, जिन पर आसमानी झलक होती है। पुतलियाँ गहरा लाल रंग लिये होती हैं, आँखों के किनारे गुलाबी होते हैं तथा पंजे और टाँगें काली होती हैं।

**निवास** : यह चिड़िया लंका, भारत, बर्मा, अन्दमान-निकोबार, मलाया में पायी जाती है। भारत में इसकी दो जातियाँ हैं— प्रमुख जाति भारत के पश्चिमी भागों में केरल से बेलगाँव तक तथा पूर्वी घाटों में चितेरी पहाड़ियों पर पायी जाती है। इन पहाड़ियों पर ये ५,००० फुट की ऊँचाई तक देखी जाती हैं। इसकी दूसरी जाति इससे बड़ी होती है, जो हिमालय की तराई में और खासिया पहाड़ियों, कछार तथा मणिपुर में मिलती है।

**विवरण** : यह सदा हरे घने जंगलों में निवास करती है। जोड़ा बाँधने के समय के अतिरिक्त यह गिरोह में रहने वाली चिड़िया है जिसका गिरोह प्रायः ५ से ६ तक, किन्तु कभी-कभी ३० से ४० तक का भी हो जाता है। ये ऊँचे पहाड़ों पर सहज रूप से उड़ती और कभी-कभी नीचे भी उतर आती हैं। दोपहर के समय पानी पीने तथा नहाने के लिए पानी के किनारे उतर आना इसकी आदत है। यह बड़ी ही फुर्तीली चिड़िया है जो डाली-डाली पर फुदकती और गाती रहती है। यह चिट-चिट की-सी बड़ी मीठी लय में सीटी-सी बजाती रहती है तथा कुछ-कुछ देर बाद झटके दे-देकर आवाज में उतार-चढ़ाव पैदा करती रहती है।

यह सुन्दर चिड़िया जब सूर्य की रोशनी में आती है, तभी अपने मखमली रंगों से पहचानी जाती है, अन्यथा पेड़ों की छाया में तो इसे चिलचिल भी समझा जा सकता है। यह स्वभाव से कुछ पालतू किस्म की होती है। विशेषतः फल आदि खाते समय तो यह बहुत ही निश्चिन्त रहती है। यह दूसरी बात है कि यह कुछ शर्मीली होती है।

यह जंगली फल ही खाती है। इसे अंजीर के वृक्षों पर फल खाने वाली दूसरी चिड़ियों के साथ फलों को चूसते हुए देखा जा सकता है।

**घोंसला** : इसका जोड़ा बाँधने का समय वैसे तो जनवरी से मई तक होता है, पर अधिकतर इसके अंडे मार्च से अप्रैल में ही देखे जाते हैं।

ये अपने घोंसले छोटे-छोटे नये पेड़ों पर १० से २० फुट तक की ऊँचाई पर की किसी दोफंकी डाल पर बनाती है जो जड़ों आदि से बनी छिछली थाली-जैसा होता है। ये इसके लिए पेड़ चुनती है, जो घने जंगल में हो और जहाँ धूप कम पहुँचे। इसी घोंसले में मादा समय आने पर २ अंडे देती है। अंडे अंडाकार गोल और हलकी चमकवाले होते हैं। अंडों का रंग संदली होता है, और उन पर निलछौंह भूरे धब्बे पड़े रहते हैं। धब्बों में कुछ पीली झलक भी होती है।

आकार में ये अंडे १.१० × ०.७५ इंच के होते हैं।

## ११२ पीलक (Golden Oriole : Oriolus Oriolus)

**पर्याय** : पियल्ला, पियरोला, भारत कांचन, पासेह, पशनूल, आमाँ चिड़िया ।

**पहचान** : यह शर्मीली चिड़िया पेड़ों पर रहना अधिक पसन्द करती है और पत्तियों में अपने को छिपाये रखती है । इसके होने का अनुमान इसकी सीटीनुमा बोली द्वारा ही होता है । नर सुनहरे रंग का होता है पर उसकी पूँछ तथा डैने काले रंग के होते हैं । मादा पिलछौंह हरे रंग की होती है ।

**रंग-रूप** : यह ९ इंच की लम्बी चिड़िया सुनहरे रंग की होती है । इसके नर की आँखों पर एक चौड़ी धारी होती है । डैने तथा पूँछ का मध्य भाग काला होता है, परन्तु मादा का ऊपरी भाग पिलछौंह रंग का होता है । डैने भूरे तथा परों के किनारे हरा रंग लिये होते हैं । पूँछ भूरी काली होती है और उसका किनारा पीला होता है । निचला भाग सफेद होता है जिस पर पीली झलक तथा गहरे भूरे रंग की धारियाँ होती हैं । पुतलियाँ हरे-लाल रंग की, चोंच गुलाबी तथा टाँगें गहरे सिलेटी रंग की होती हैं ।

**निवास** : यह चिड़िया यूरोप, एशिया और अफ्रीका तक में विस्तृत रूप से पायी जाती है । भारत में पायी जाने वाली इसकी प्रमुख जाति की आँखों की काली कोर पीछे तक चली जाती है । यह जाति भारत में कश्मीर, पश्चिमी तथा मध्य हिमालय, राजस्थान से पश्चिमी बंगाल तक के मैदानों और दक्षिण मैसूर तक पायी जाती है । सर्दियों में यह कन्याकुमारी तक देखी जा सकती है । उत्तर के पहाड़ी क्षेत्रों तथा मैदानों में यह चिड़िया गर्मियों में आ जाती है और अगस्त-सितम्बर में दक्षिण की तरफ चली जाती है । हिमालय पर यह १०,००० फुट की ऊँचाई तक देखी जाती है ।

**विवरण** : उत्तरी भारत में यह आम पकने के दिनों में प्रायः दिखाई पड़ती है, इस कारण कुछ लोग इसे "आमाँ चिड़िया" जैसे स्थानीय नामों से भी पुकारते हैं । यह पेड़ों पर ही अधिकतर निवास करती है और जमीन पर बहुत कम उतरती है । स्वभाव से ही शर्मीली तथा अपने को छिपाये रखने वाली यह चिड़िया घने वृक्षों में छिपी रहती है और वहीं से तेज सीटी की-सी आवाज लगाती है । इसकी बोली अन्य भारतीय पक्षियों से अधिक कर्णप्रिय होती है । यह बाग-बगीचों तथा वनों में भी सबेरे-शाम चहकती दिखाई पड़ती है । इसका हलके मधुर स्वर में छेड़ा गया संगीत धीमा तो जरूर होता है परन्तु किसी का ध्यान एक बार उसकी ओर चला जाये तो फिर सुनते रहने को तबीयत करती है ।

वैसे तो यह शाकाहारी पक्षी है, परन्तु कभी-कभी इसे कीड़े-मकोड़े आदि पकड़ते भी देखा जा सकता है ।

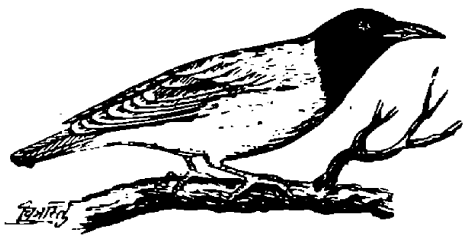
**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय मई से अगस्त तक है । इसका घोंसला जमीन से २० फुट से अधिक ऊँचाई पर, किसी दोफंकी डाल पर रखा होता है, जहाँ दुश्मनों की आसानी से पहुँच न हो । घोंसला मुलायम घास, ऊन, बाल, रेशों, चीथड़ों आदि से बना सुन्दर कटोरे-जैसा होता है, पर यह गहरा अधिक होता है ताकि तेज हवा में भी अंडे बाहर न गिर सकें । ये घोंसले नीचे से घास की बड़ी-सी गेंद-जैसे मालूम पड़ते हैं । इनमें मादा समय आने पर २ से ४ तक अंडे देती है । अंडे काफी छोटे-बड़े परन्तु चमकदार और सुन्दर होते हैं । उनका रंग संदली होता है, जिस पर काले तथा भूरे छींटे होते हैं जो सिरे की ओर विशेष घने होते हैं । अंडों में हलकी गुलाबी झलक भी रहती है ।

अंडों का आकार औसतन १.१० × ०.८० इंच होता है ।

## ११३ हरदुआ (Black-Headed Oriole : Oriolus Xanthornus)

**पर्याय** : टोपीदार पीलक, सुग्रीव कांचन, जर्दक, पिरोला ।

**पहचान** : यह मैदानी चिड़िया है जो मैदानों के वृक्षों पर पायी जाती है । इस चमकदार सुनहले रंग की चिड़िया का सिर डैने, पूँछ इत्यादि काले होते हैं । यह बहुत ही फुर्तीली तथा शोर मचाने वाली चिड़िया है ।



हरदुआ

**रंग-रूप** : इसकी लम्बाई ९ इंच होती है । इसके नर-मादा दोनों एक रंग-रूप के होते हैं । इसका सम्पूर्ण शरीर चमकदार पीले रंग का होता है, केवल सिर, ठोड़ी, गला, डैनों का अधिकांश भाग काला रहता है । आँख की पुतली चटक लाल, चोंच गहरी गुलाबी और टाँगें गाढ़ी सिलेटी होती हैं ।

**निवास** : काले सिर वाला यह पक्षी भारत, श्रीलंका, बर्मा और पूर्व की ओर कंबोडिया और स्याम तक विस्तृत रूप से फैला हुआ है । हमें इसकी केवल तीन जातियों पर ही दृष्टि डालनी है, जो अपने डैनों पर के पीले किनारे के तथा सर पर के परों के आधार पर विभाजित हैं । इसकी प्रमुख जाति हिमालय की निचली पर्वत-श्रेणियों में काँगड़ा से आसाम के ऊपरी हिस्से तक तथा गंगा के मैदानों में पायी जाती है । इसकी दूसरी जाति गंगा के मैदान में दक्षिण की तरफ आबू पर्वत तथा काठियावाड़ तक पायी जाती है । हिमालय में कुल्लू से पूर्व की ओर एक और जाति

मिलती है, जिसे उसके रंग के आधार पर फाल्सई हरदुआ कह सकते हैं ।

**विवरण** : यह खुले मैदानी, लेकिन सघन वृक्षों वाले क्षेत्रों में सामान्यरूप से पायी जाती है । इसे वृक्षों पर रहना अधिक पसन्द है, यद्यपि कीड़े इत्यादि पकड़ने के लिए यह जमीन पर भी उतरती रहती है । कीड़े ही इसके मुख्य आहार हैं । यह दूसरी बात है कि अवसर पड़ने पर यह फल भी खा लेती है । यह प्रायः अकेली या जोड़े में, पर कभी-कभी गिरोहों में भी देखी जा सकती है ।

यह बहुत ही चुस्त पक्षी है, जिसका जीवन प्रसन्नता से भरा-पूरा होता है । ये हवा में उड़ती-फिरती रहती है और पेड़ों-पेड़ों एक-दूसरे का पीछा करना इसका अपना खेल है, तब इनके पीले पर सूरज की रोशनी में चमक उठते हैं । जब ये मधुर स्वर में एक-दूसरे को आवाज देती हैं और उत्तर पाती हैं तो बहुत अच्छा लगता है, पर कभी-कभी नर-मादा दोनों एक साथ भी गाते हैं ।

**घोंसला** : इनके जोड़ा बाँधने का समय अप्रैल से अगस्त तक होता है । घोंसला गहरे प्याले के आकार का होता है, जो डालों के बीच लटकता रहता है। यह रेशों, छाल के टुकड़ों तथा घास इत्यादि से बना होता है। घोंसला प्रायः जमीन से २० से ३५ फुट की ऊँचाई पर रहता है । साधारणतः मादा हरदुआ ३ अंडे देती है, लेकिन कभी-कभी इनकी संख्या ४ तक हो जाती है । अंडे कुछ लम्बाई लिये हुए अंडाकार होते हैं, जो बनावट में सुन्दर और चमकदार होते हैं । अंडों की जमीन मखमनी या गुलाबीपन लिए हुए सफेद होती है, जिस पर गहरे भूरे रंग के छींटे पड़े होते हैं। ये छींटे चौड़े सिरे की ओर ज्यादा होते हैं ।

अंडों का आकार प्रायः १.१४ × ०.८२ इंच का होता है ।

## ११४ पहाड़ी मैना (Indian Grackle : Gracula Religiosa)

**पर्याय**: भारत मदन सारिका, मदना, मीना, जुवारी ।

**पहचान** : इस काले रंग की मैना की चोंच और टाँगें पीली रहती हैं । दोनों ओर आँख के पीछे से गुद्दी से पीछे तक बढ़े हुए पतले पीले मांस के लोथड़े रहते हैं जिससे इनको पहचानना कठिन नहीं होता ।

**रंग-रूप** : यह १० इंच लम्बी-सी पहाड़ी मैना है जिसके नर और मादा एक ही जैसे होते हैं । इसका सारा शरीर चमकीला काला रहता है जिसमें एक प्रकार की हरी और बैंगनी झलक रहती है । डैने की जड़ पर एक सफेद पट्टी पड़ी रहती है और चेहरे के दोनों ओर आँख के पीछे से गुद्दी के आगे तक मांस के पतले और चटक पीले रंग के लोथड़े बढ़े रहते हैं । ये लोथड़े अलग-अलग जाति के पक्षियों में अलग-अलग शक्ल के होते हैं ।

आँख की पुतली भूरी, चोंच नारंगी लाल जिसका सिरा पीला, चेहरे के दोनों ओर थोड़ी-सी खुली खाल और मांस के बढ़े हुए लोथड़े चटक पीले, टाँगें नारंगी पीली और पंजे कत्थई भूरे होते हैं ।

**निवास** : तोते की भाँति मैना भी हमारे देश का बहुत ही प्रसिद्ध और बारहमासी पक्षी है जो हमारे देश से बाहर न जाकर भी मौसम के बदलाव के साथ ही साथ यहीं थोड़ा स्थान-परिवर्तन कर लेता है । यह पहाड़ी पक्षी है जो हिमालय की पर्वत-श्रेणी में जाड़ों में एक हजार से दो हजार फुट की ऊँचाई तक देखा जा सकता है । गर्मियों में यह पहाड़ पर और ऊँचे स्थानों पर चढ़ जाता है।

इस मैना की कई जातियाँ हमारे देश में पायी जाती हैं, जिनमें एक दक्षिण भारत के पर्वतों में पाँच हजार फुट की ऊँचाई तक दिखाई पड़ती हैं, लेकिन यहाँ जिस हिमालय की पहाड़ी मैना का वर्णन दिया जा रहा है वही सबसे अधिक प्रसिद्ध है । वैसे सब की आदतें एक-जैसी होती हैं ।

**विवरण** : मैना घने पेड़ों पर रहने वाला पक्षी है जो जमीन पर बहुत कम उतरता है । जमीन पर उतरने पर यह अन्य देशी मैनों की तरह आसानी से नहीं चलता बल्कि गौरैया की तरह फुदक-फुदक कर चलता है । इसे सब तरह के जंगल पसन्द हैं और कभी-कभी इसे खेतों के निकटवर्ती घने वृक्षों पर भी देखा जा सकता है । वैसे यह छोटे-छोटे झुंडों में रहता है, लेकिन जोड़ा बाँधने के मौसम में इसे अकेला या जोड़े में ही देखना संभव होता है । इनके झुंड पेड़ की फुनगियों पर बैठे रहते हैं जो कभी-कभी फलों तथा कीड़े-फतिंगों की तलाश में निचली डालियों पर उतर आते हैं । इसका मुख्य भोजन फल-फूल और कीड़े-फतिंगे हैं ।

मैना अपनी बोली के कारण बहुत प्रसिद्ध है और इसी कारण इनकी बहुत बड़ी संख्या को पिंजड़ों में कैद होना पड़ता है । ये बहुत शोर मचाने वाले पक्षी हैं जो कभी सुरीली और कभी कर्कश बोली बोलते हैं । ये दूसरे पक्षियों की बोली की नकल बहुत खूबी से कर लेते हैं । और पाले जाने पर सिखाई हुई बोली की बहुत सुन्दर ढंग से नकल कर लेते हैं । तोते की तरह इनको भी पक्षियों के प्रेमियों के यहाँ आसानी से देखा जा सकता है।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय फरवरी से मई तक रहता है जब ये अपना घास-फूस, पर और अन्य कबाड़ से अपना मामूली-सा घोंसला किसी पेड़ के खोथे में बनाते हैं। ये अक्सर किसी सूखे पेड़ के बड़े सूराख को इसके लिए चुनते हैं जहाँ मादा २-३ अंडे देती है।

अंडों का रंग हलका अंगूरी या हरछौंह हलका नीला होता है जिन पर हलकी बैंगनी या भूरी चित्तियाँ काफी संख्या में पड़ी रहती हैं। अंडे सुन्दर और लम्बोतरे बैजावी रहते हैं।

अंडे प्रायः १.३० × ०.९० इंच के होते हैं।

## ११५ टेसुआरी (Rosy Pastar : Pastor Roseus)

**पर्याय** : गुलाबी मैना, पाटल सारिक, कसनई ।

**पहचान** : यह सुन्दर और चोटीदार चिड़िया गुलाबी तथा काले रंग की होती है । यह झुंडों में जमीन पर अपना आहार ढूँढ़ते हुए बड़ी आसानी से देखी जा सकती है ।



टेसुआरी

**रंग-रूप** : यह ९ इंच की चिड़िया है जिसके नर-मादा एक ही जैसे होते हैं । दोनों में फर्क इतना ही होता है कि मादा का रंग कम चमकीला होता है और उसकी झखरीली चोटी भी छोटी होती है । इसकी चोटी, गला, डैने, छाती का ऊपरी हिस्सा तथा पूँछ चमकदार काले रंग के होते हैं । परों पर हलके बादामी छींटे भी होते हैं। जांघों तथा पूँछ के नीचे का भाग काला होता है जिसका किनारा सफेद होता है। इसके बाकी सब पंख गुलाबी होते हैं ।

पुतलियाँ भूरी और चोंच गुलाबी होती है । निचली चोंच का आधा भाग जड़ पर काला होता है । पैर भी गुलाबी होते हैं ।

**निवास** : टेसुआरी दक्षिणी-पूर्वी यूरोप से बाहर, एशिया और तुर्किस्तान तक दिखाई पड़ती है । जाड़ों में ये भारत की ओर चली आती हैं और उत्तर-पश्चिमी प्रदेशों में ही प्रायः मिलती हैं, लेकिन ये बिहार में मानभूम तक देखी जा सकती हैं । ये जुलाई के आरम्भ में ही यहाँ आ जाती हैं और मई के शुरू में यहाँ से लौट जाती हैं । वैसे, इसकी एक जाति हिमालय की तराई में भी पायी जाती है, जिसके परों पर भी छींटे होते हैं ।

**विवरण** : यह मैदानों में रहने वाली चिड़िया है, लेकिन खेत इसे अधिक पसन्द हैं । जब खेतों में पानी दिया जाता है तब पानी में बहते कीड़े-फतिंगों को पकड़ने के लिए आपस में लड़ते-झगड़ते इनके दल काले-गुलाबी बादलों से लगते हैं । कीड़ों में भी टिड्डी इसे बहुत पसन्द हैं । इस दृष्टि से ये बहुत लाभकारी पक्षी है । जब इसके झुंड दूसरी मैनाओं के साथ मिल जाते हैं, जैसा कि प्रायः होता है, तब इन्हें अलग पहचानना मुश्किल हो जाता है ।

होली के आस-पास जब इनका झुंड पलाश के फूले हुए वृक्षों पर बैठ जाता है तो पलाश के फूल (टेसू) के रंग में इनका गुलाबी और काला शरीर इस प्रकार मिल जाता है कि जल्द इन पर निगाह नहीं पड़ती । इसी कारण इनको "टेसुआरी" जैसा सुन्दर नाम मिला है ।

भारत में आने के समय बहुत से पक्षियों के नये पर बादामी रंग के ही होते हैं । बाद में भी झुंड में कुछ ऐसे पक्षी मिल जाते हैं । फरवरी में जोड़ा बाँधने का समय पास आने पर ये पक्षी कुछ मोटे और आलसी हो जाते हैं, तब ये अपना अधिकांश समय पेड़ों पर ही गाते गुनगुनाते हुए गुजारते हैं । तब इनकी आवाज भी कुछ खरखरी होने लगती है, हालाँकि मैना जाति के पक्षियों के स्वर में स्वाभाविक मिठास रहती है ।

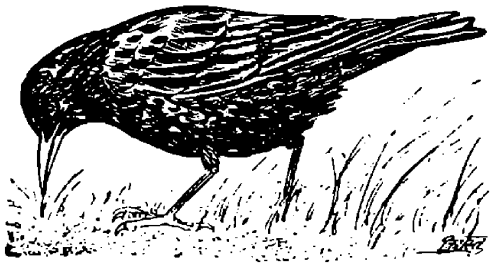
**घोंसला** : इनके जोड़ा बाँधने का समय भारत में और बाहर भी, मई-जून तक है। यह खंडहरों और चट्टानों में अपना सुन्दर-सा घास-फूस का घोंसला बना लेती है और उसे बालों तथा जड़ों से मुलायम कर लेती है। मादा समय आने पर ५-६ अंडे देती है । इसके निलछौंह सफेद अंडों पर किसी प्रकार के धब्बे नहीं होते, पर वे सामान्य मैनाओं के अंडों से अधिक हलके रंग के, चमकदार तथा नुकीले होते हैं।

आकार में ये अंडे १.१० × ०.८० इंच के होते हैं ।

## ११६ तिलोरा (Starling : Sturnus Vulgaris)

**पर्याय** : तेलिया, हरबोला, हरित पृष्ठ सारिक ।

**पहचान** : तिलोरा झुंड में रहने वाली चिड़िया है जो जोड़ों में अपने समूह के साथ खेतों में चुगती रहती है और पेड़ों पर अड्डे बनाती है । ये चमकदार काली चिड़िया है जिसके शरीर पर थोड़े बहुत छींटे पड़े रहते हैं ।



तिलोरा

**रंग-रूप** : तिलोरा की लम्बाई ९ इंच होती है और इसके नर-मादा एक से होते हैं । उनमें केवल इतना भेद होता है कि

मादा कुछ हलके रंग की होती है और उस पर चित्तियाँ कुछ अधिक होती हैं। जाड़ों में इनके परों का रंग काला हो जाता है। परों के सिरे हलके पीले तथा दुम और डैने भूरे होते हैं तथा उनके किनारे मखमली काले होते हैं। परों पर लाल, बैंगनी, हरे तथा नीले रंग की चमक होती है। सर-गरदन तथा सीने के परों के गच्छे-से बन जाते हैं। गर्मी में सिर का हलका पीलापन मिट जाता है और सारे पर पूरी तरह से काले हो जाते हैं।

नर की आँख की पुतली गहरी भूरी तथा मादा की हलकी पीली होती है। चोंच भूरी और उसकी जड़ इस्पाती या पिलछौंह सींगिया होती है। टाँगें ललछौंह भूरी और पंजे काले होते हैं।

**निवास** : यह अफ्रीका, एशिया और यूरोप में काफी संख्या पायी जाती है। यह विलायत की प्रसिद्ध चिड़िया है जो हमारे यहाँ जाड़ों में आकर जाड़ा समाप्त होते-होते यहाँ से वापस चली जाती है। कुछ पक्षी कश्मीर में रह कर अपना घोंसला भी बनाते हैं।

**विवरण** : भारतीय मैदानों में यह चिड़िया अक्टूबर से मार्च तक दिखाई पड़ती है। यह प्रायः झुंडों में ही रहती है। यह खुले मैदानों, खेतों और जमीन की दराजों में चोंच डाल कर कीड़े-मकोड़ों को खाती तथा बहुत शोर मचाते हुए शीघ्रता के साथ आगे बढ़ती है। यह फल तथा अनाज के दाने भी खाती है। छेड़े जाने पर यह फौरन पेड़ों की चोटी पर जा बैठती है और यदि खतरा न हुआ तो तुरंत चहचहाना और चोंच से अपने पंखों को संवारना शुरू कर देती है। इसकी उड़ान तेज और सधी हुई होती है।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय कश्मीर में अप्रैल और मई में होता है। इस समय नर किसी छत या पेड़ की चोटी पर बैठ कर मादा को रिझाने के लिए अपने पंखों को फड़फड़ाता है और एक विचित्र कर्कश आवाज में चहचहाता है। ये नदी के किनारे तथा घरों के सूराखों और पेड़ों की खोथों में घोंसला बनाते हैं और उसके भीतर घास-फूस तथा पर लगा लेते हैं। समय आने पर मादा ५ या ६ अंडे देती है। अंडों का रंग हलका हरछौंह नीला होता है।

अंडे करीब १.१३ × ०.८३ इंच के होते हैं।

## ११७ गलार (Grey-Headed Mynah : Sturnia Malabarica)

**पर्याय**: गलगल मैना, श्वेत सारिका।

**पहचान**: इस रुपहली चिड़िया के सिर तथा गरदन के पर बहुत सुन्दर ढंग से सँवारे होते हैं। इसका निचला भाग बादामी डैने और दुम कलछौंह कत्थई रंग की होती है। यह पेड़ों की चोटियों पर झुंडों में कोलाहल करती दिखाई पड़ती है।

**रंग-रूप**: इसकी लम्बाई ८ इंच होती है। और नर-मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। ऊपरी हिस्से का रंग गहरा सिलेटी होता है। सिर और गर्दन के पर लम्बे तथा नुकीले सफेद डंडीदार होते हैं जिससे इसकी शक्ल सफेद मालूम होती है। पंख कलछौंह होते हैं परन्तु उड़ने वाले परों के सिरों का रंग ऐसा ही होता है और इनके किनारे रुपहले होते हैं। नीचे का भाग बादामी होता है। ठोढ़ी और गले का रंग हलका पीला होता है तथा उसके ऊपर सफेद खाकी रंग की धारियाँ होती हैं और यही रंग दुम की ओर गहरा होता है।

**निवास**: यह भारतीय मैदानों की चिड़िया है। ये पूर्व की ओर स्याम, बंगाल की खाड़ी के द्वीपसमूहों तथा मलाया प्राय-द्वीप तक मिलती है। इसकी अनेक जातियाँ हैं। यहाँ पर केवल दो जातियाँ ली गयी हैं। माउंट आबू से देहरादून तथा नीचे हिमालय की ५,००० फुट की ऊँचाई तक यदि एक रेखा खींची जाय तो इस रेखा के पूर्व की ओर इस पक्षी की एक विशेष जाति पायी जाती है। इसकी दूसरी जाति भारत के पश्चिमी घाट में बेलगाँव तक पायी जाती है।

**विवरण**: यह अपनी जाति की अन्य चिड़ियों की अपेक्षा पेड़ पर रहने वाली और शर्मीली होती है। इस कारण इसका पता लगाना कठिन होता है। यह प्रायः अपने दलों या छोटे-छोटे झुंडों में पायी जाती है जो पेड़ों की चोटियों पर कोलाहल करती दिखलाई पड़ती है। यह विभिन्न प्रकार के फल-फूलों तथा कीड़े-मकोड़ों को खाना पसन्द करती है। कभी-कभी इनके झुंड जमीन पर भी उतर कर चुगते हैं। इनकी आवाज एक प्रकार की चहचहाहट जैसी होती है।

**घोंसला**: इनके जोड़ा बाँधने का समय अप्रैल से जून तक होता है। घोंसला पेड़ के खोथों में बनाया जाता है। इसकी ऊँचाई २० से २५ फुट की होती है। अक्सर ये किसी खुले स्थान के वृक्षों पर अपना घोंसला बनाती हैं। प्राकृतिक कोटरों और खोहा आदि के घोंसलों में ये अपना घोंसला बना लेती है और यदि छेद छोटा हुआ तो उसकी लकड़ी काटकर ये उसे बड़ा कर लेती है। घोंसला हरी पत्तियों तथा घास का बना होता है। जिसमें मादा समय आने पर ३ से ५ अंडे देती हैं। अंडे लम्बे और अंडाकार होते हैं जो सिरे की ओर नोकदार रहते हैं। अंडे चमकदार होते हैं और उनका रंग हलका समुद्री हरा और बिना चित्तियों के होता है।

अंडों की औसत नाप ०.९५ × ०.७० इंच होती है।

## ११८ पवई (Brahminy Mynah : Temenuchus Pagodarum)

**पर्याय**: पावी, ब्रह्मनी मैना, कृष्णशीर्ष सारिका, पवैया, पाबिया पावी, पोपोया मैना।

**पहचान** : पवई मैदानों की चिड़िया है। आकार में छोटी तथा स्वभाव से खुशदिल होने के कारण इसे पहचानने में आसानी होती है। यह चिड़िया ऊपर भूरी, नीचे पीली तथा सिर पर काली होती है। उड़ते समय इसकी गोल पूँछ पर सफेद किनारी-सी बन जाती है।



पवई

**रंग-रूप** : इसकी लम्बाई ८ इंच होती है। नर-मादा एक प्रकार के होते हैं। सर और झखरीली चोटी काली होती है। सर के अगल-बगल के, गरदन के तथा निचले पर पीले होते हैं, केवल जाँघों तथा पूँछ के नीचे का भाग सफेद होता है। गरदन तथा छाती पर के पर बढ़े हुए से लगते हैं। ऊपर के सब किन्तु सिलेटी भूरे होते हैं, केवल उड़ने वाले पर काले होते हैं। पूँछ मुड़ी हुई और काले रंग की होती है, बीच के दो परों पर चौड़ी सफेद किनारी होती है। पुतलियाँ हरछौंह, चोंच जड़ पर नीली-हरी तथा बीच में और किनारे पर पीली होती है। टाँगें पीली तथा चमकदार होती हैं।

**निवास** : पवई भारत की बहुत परिचित चिड़िया है जो पश्चिम में सिन्धु घाटी से लेकर कलकत्ता तक पायी जाती है, पर पंजाब और राजस्थान के सूखे भागों तथा बंगाल के बहुत गीले नम भागों की तरफ यह कम दिखलाई पड़ती है। हिमालय में यह ४,५०० फुट की ऊँचाई तक गर्मियों में फेरा करती है परन्तु कभी-कभी गिलगित और चित्राल जैसे ऊँचे-ऊँचे क्षेत्रों में भी ये देखी जा सकती हैं।

**विवरण** : पवई खुले हुए मैदानों और खेतों में पेड़ों पर चहकती फिरती है। यह हमारे यहाँ की प्रसिद्ध पालतू पक्षी है। यह न तो मनुष्यों के पास ही आना चाहती है और न उनसे दूर ही रहना पसन्द करती है। यह अपना कीड़े-फतिंगों का आहार जमीन पर ही खोज लेती है। अक्सर यह दूसरी जाति की मैनाओं में मिल जाती है। यह अकेली, जोड़े में तथा झुंड के साथ भी मिलती है। इसकी बोली बहुत मीठी और आकर्षक होती है। दूसरे पक्षियों के स्वरों का अनुकरण करने में भी यह बड़ी प्रवीण होती है। पक्षियों के शौकीन लोग इसे प्रायः पालते हैं।

**घोंसला** : इसका जोड़ा बाँधने का समय मई से अगस्त तक होता है लेकिन उत्तरी भारत में इसके अंडे जून में ही अधिक पाये जाते हैं। घोंसले पेड़ों के कोटरों में जमीन से १५ से ३० फुट की ऊँचाई पर होते हैं। दक्षिणी भारत में मकानों की छतों के सूराखों में भी ये अपने अंडे रख आती हैं। ये घोंसलों को सूखी घास, सूखी पत्तियों, परों तथा अन्य इसी प्रकार के पदार्थों से सजाती हैं।

मादा ३ से ५ तक अंडे देती हैं। अंडा बैजाबी लम्बा और चमकदार होता है और उसका रंग हरछौंह हल्का नीला रहता है जिस पर कोई दाग व धब्बे नहीं होते।

अंडे लगभग ०.९७ × ०.७५ इंच के होते हैं।

## १९९ किलहँटा (Common Mynah : Acridotheres Tristis)

**पर्याय** : सामान्य सारिका, देशी मैना, गुटार, गुरसल, सालिक, सालू, सालोंका, हालिक, सोराई।

**पहचान** : यह बहुत सामान्य पक्षी है जो सर्वत्र मैदानों में अपने जोड़े के साथ पाया जाता है। उड़ते समय इसकी पूँछ पर का सफेद किनारा तथा डैनों पर के सफेद चित्ते स्पष्ट नजर आते हैं। इसका रंग कत्थई भूरा होता है तथा चेहरे पर पीली खाल साफ दिखाई पड़ती है।

**रंग-रूप** : किलहँटा लम्बाई में ८ इंच का पक्षी है जिसके नर-मादा एक-से होते हैं। इसका सर, गरदन तथा छाती का ऊपरी भाग काला होता है। बाकी पर गहरे कत्थई भूरे होते हैं जो ऊपर की ओर और भी अधिक गहरा रंग लिये होते हैं। पेट का रंग मक्खनी होता है। डैनों के बाहरी पर गहरे भूरे होते हैं, जिनकी जड़ पर सफेदी होती है। पूँछ काली होती है जिसके बीच के दो परों के सिरे सफेद होते हैं। पुतलियाँ ललछौंह भूरी तथा चोंच पीली होती है। चोंच के नीचे कुछ खाल उभरी हुई रहती है। आँख के नीचे और पीछे की खाल का रंग चटक चमकदार पीला होता है। टाँगें पीली तथा नाखून सिलेटी होते हैं।

**निवास** : यह उत्तर में कश्मीर को छोड़कर भारत में सर्वत्र पायी जाती है। इसकी एक गहरे रंग की जाति श्री लंका में पायी जाती है। ये हिमालय पर ८,००० फुट तक ही दिखाई पड़ती है।

**विवरण** : घरेलू कौओं की तरह किलहँटा भी भारत की प्रसिद्ध चिड़िया है जो अक्सर शहरों और गाँवों में पायी जाती है। यह बहुत ढीठ होती है और अपने प्रतिद्वन्द्वी से झगड़ा करने को सदा तत्पर रहती है। जब ये किसी साँप, नेवले या शिकारी चिड़िया को देखती है तो चिल्ला कर अपने सभी साथियों को इकट्ठा कर खूब शोर मचाना शुरू करती है जिससे आम लोग भी उनकी उपस्थिति से चौकन्ने हो जाते हैं। यह प्रायः अपने जोड़े

के साथ रहती है। दोनों में स्पष्ट रूप से बड़ा स्नेह होता है। यह जमीन पर ही अपना आहार खोजती है। कभी-कभी ये अपने गन्तव्य स्थान तक लम्बे-लम्बे डग भरती हुई चलती है और कभी रुक कर एक-दूसरे से पर सँवारती है, या आत्मसंतोष के भाव प्रकट करती है। इनकी बोली विचित्र होती है, जो कठोरता लिये गड़ारी की तरह ध्वनि उत्पन्न करती है। छेड़े जाने पर इनका झगड़ालू स्वर सुनाई पड़ता है। जब ये अपने झुंड के साथ किसी वृक्ष पर बसेरा लेती हैं तो बसेरा लेने के पूर्व अपने स्थान के लिए बड़ा शोर मचाती हैं। रात के अन्धकार में कभी-कभी इनका कोलाहल सुनाई पड़ता है।

यह सर्वभक्षी चिड़िया है जो खेती और जानवरों के लिए लाभदायक होती है। यह गर्म जलवायु पसन्द करती है जहाँ यह अपनी चोंच खोले इधर-उधर घूमा करती है और जमीन पर कीड़े-मकोड़ों तथा गल्ला, बीज, फल आदि चुना करती है।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय जून से अगस्त तक होता है। यह काँटेदार बिखरी हुई डाली पर अपना घोंसला बनाती है। कभी-कभी इसके घोंसले मकानों की छतों और कुओं की दराजों तक में देखे गये हैं और ऐसा भी देखा गया है कि गिलहरियों तथा कौओं के पुराने घोंसलों को भी यह फिर प्रयोग में ले लेती है। इनका घोंसला विभिन्न प्रकार के घास-फूस, परों, चिथड़ों, धागों तथा साँप की केचुली आदि पदार्थों से बना होता है। वैसे ये ३ से ६ तक अंडे देती हैं परन्तु अक्सर इनके ४ अंडे देखे गये हैं। अंडे लम्बे, गोलाकार और नासपाती की शक्ल के होते हैं।

इनके अंडों का रंग हलका नीला या हरापन लिये नीला रहता है जिन पर किसी प्रकार के चिह्न नहीं रहते।

नाप में ये अंडे लगभग १.२० × ०.८६ इंच के रहते हैं।

## १२० चही (Bank Mynah : Acridotheres Ginginianus)

**पर्याय** : गंगा सारिका, दरिया मैना, गंगई, गंग सालिक, राम सालिक, गंगा मैना, लाली।

**पहचान** : चही मध्य भारत तथा उत्तरी भारत के मैदानों में पायी जाने वाली सिलेटी रंग की सुन्दर-सी चिड़िया है जो किलहँटे से मिलती-जुलती होती है।

**रंग-रूप** : चही ९ इंच लम्बी चिड़िया है। इसके नर-मादा एक ही प्रकार के होते हैं। सर तथा उसके अगल-बगल और पेट के अतिरिक्त शरीर के सब पंख सिलेटी होते हैं। पेट का कुछ भाग गुलाबी भूरा होता है। डैने काले तथा उनकी जड़ों के पास के कुछ पर गुलाबी होते हैं। पूँछ काली तथा उसके किनारे बादामी रंग के होते हैं। पुतलियाँ गहरे भूरे रंग की होती हैं, आँख के नीचे और पीछे ईंट के रंग की नंगी खाल होती है। टाँगें और चोंच पीली रहती हैं।

**निवास** : यह प्रसिद्ध भारतीय चिड़िया है, जो उत्तर भारत में पायी जाती है। हिमालय से महाराष्ट्र तथा उड़ीसा तक और उत्तर में पंजाब से लेकर पूर्वी बंगाल तक मिलती है। यह मैदानी चिड़िया है, फिर भी हिमालय की पहाड़ियों पर चढ़ जाती है। यह अपने भोजन की तलाश में बस्तियों में भी देखी जा सकती है।

**विवरण** : यह आमतौर से झुंडों में देखी जाती है। यह खुले हुए स्थानों, बस्तियों, खेतों, जलाशयों और नदियों के पास-पड़ोस में आसानी से देखी जाती है। जोड़ा बाँधने के समय यह गिरोह से अलग हो जाती है।

**घोंसला** : इसका घोंसला बनाने तथा जोड़ा बाँधने का समय अप्रैल से जुलाई तक रहता है। यह अपना घोंसला दराजों, खोयों तथा सूराखों में बनाती है जो प्रायः जलाशयों के निकट ही होते हैं। ये घोंसले जड़ों, परों तथा मुलायम घास से बनाये जाते हैं जिसमें मादा ४ से ५ तक अंडे देती है। अंडे गोलाकार होते हैं और इन पर किसी प्रकार के धब्बे नहीं होते। अंडों का रंग हलका नीला या हरछौंह नीला होता है।

नाप में ये अंडे लगभग १.०५ × ०.८२ इंच के रहते हैं।

## १२१ गलगल (Jungle Mynah : Aethiopsar fuscus)

**पर्याय** : वन सारिका, जंगली मैना, जंगली सालिक, झोंटी मैना।

**पहचान** : यह जंगली शर्मीली मैना पहाड़ियों पर पायी जाती है। सपाट चेहरे, गहरे रंग के परों तथा नाक पर के सीधे बालों के कारण इसके पहचानने में कोई दिक्कत नहीं होती।

**रंग-रूप** : गलगल ९ इंच की चिड़िया है, जिसके नर और मादा एक-से होते हैं। सिर का ऊपरी भाग तथा दोनों बगल का हिस्सा काला होता है, बाकी शरीर का सब ऊपरी भाग कत्थई भूरा रहता है। डैने काले होते हैं जिनकी जड़ पर सफेद धब्बा होता है। पूँछ के परों के किनारे सफेद होते हैं। नीचे का सारा हिस्सा राखीपन लिए भूरा रहता है। पूँछ के नीचे थोड़ी सफेदी रहती है। आँख की पुतलियाँ पीली या नीली, चोंच नारंगी पीली जिसकी जड़ निलछौंह काली और टाँगें नारंगी पीली होती हैं। नाक के छेद पर कड़े तथा खड़े पर रहते हैं।

**निवास** : यह चिड़िया हिमालय पर ७,००० हजार फुट की ऊँचाई तक काफी संख्या में पायी जाती हैं। इसके अलावा

यह बंगाल के निचले हिस्से में, छोटा नागपुर की तरफ और बुन्देलखण्ड में रायपुर तक दिखाई पड़ती हैं ।

इसकी एक दूसरी जाति जो भूरे परों वाली होती है, अहमदाबाद से कन्याकुमारी तक दिखाई पड़ती हैं । यह बस्तियों के आस-पास भी प्रायः देखी जाती हैं ।

**विवरण** : जैसा कि ऊपर बताया गया है, यह हमारी बहुत ही परिचित चिड़िया है । वैसे यह जंगली किस्म की मैना है जिसे अक्सर अपने साथियों के साथ जमीन पर दाना चुगते देखा जा सकता है । छेड़ी जाने पर यह तुरन्त पेड़ों पर उड़ जाती है ।

**घोंसला** : इसका जोड़ा बाँधने का समय मार्च से जुलाई तक रहता है, लेकिन इसके अधिकांश अंडे अप्रैल में ही देखे जाते हैं । ये प्रायः अपने घोंसले पेड़ों के कोटरों में बनाती हैं । परन्तु कभी-कभी ये दीवालों, खंडहरों और मकानों के छप्परों में भी पाये जाते हैं । घोंसला सूखी घास, परों, सेवार, ऊन तथा टहनियों का कटोरानुमा बना होता है जो काफी ऊँचाई पर रखा होता है । समय आने पर मादा ३ से ४ तक अंडे देती है ।

अंडे लंबे और सिरे की ओर कुछ नुकीले होते हैं । इनका रंग हलका नीला या हरछौंह नीला रहता है जिन पर किसी प्रकार के चिह्न नहीं पड़े रहते ।

नाप में ये अंडे करीब १.२० × ०.८५ इंच के रहते हैं ।

## १२२ अबलखा मैना (Piecl Mynah : Sturno-pastor Contra)

**पर्याय** : शबल सारिका ।

**पहचान** : यह चितकबरी मैना मैदान की प्रसिद्ध चिड़िया है जो जमीन पर अपना आहार खोजती रहती है और छेड़ी जाने पर पेड़ पर उड़ जाती है ।

**रंग-रूप** : इस मैना की लम्बाई ८ इंच होती है और इसके नर-मादा एक-जैसे होते हैं । इसका सर और गरदन काले रंग के होते हैं । चोंच की जड़ से आँख के पीछे तक एक चौड़ा सफेद धब्बा होता है । ऊपरी पर, डैने और पूँछ काले या कलछौंह भूरे होते हैं । नीचे का पिछला भाग सफेद होता है तथा बाजू पर भी सफेद चौड़ी धारी होती है । बाकी सब निचले पर हलके सिलेटी भूरे होते हैं ।

आँख की पुतलियाँ पिलछौंह सफेद होती हैं और आँखों के आगे एक नारंगी दाग होता है । चोंच जड़ से आधी नारंगी और आगे की ओर सफेद रहती है । टाँगें पिलछौंह सफेद और पंजे सींग के रंग के होते हैं ।

**निवास** : अबलखा मैना हमारे देश की प्रसिद्ध बारहमासी चिड़िया है जो हमारा देश छोड़ कर बाहर नहीं जाती । यह हमारे देश में फैली हुई है लेकिन यह पहाड़ों पर ज्यादा ऊँचाई पर नहीं दिखाई पड़ती । इसकी पीले रंग की एक और जाति लुधियाना, हिसार और पाकिस्तान में हैदराबाद-सिन्ध तक पायी जाती है और पूर्व की ओर पश्चिमी बंगाल, बिहार और उड़ीसा में भी देखने को मिलती है।

**विवरण** : यह मैदानों में रहने वाली चिड़िया है जो बाग-बगीचों में भी काफी संख्या में पायी जाती है । यह जहाँ कहीं भी मिलती है, झुंड में ही मिलती है । यह हरी घास पर अपना आहार खोजती रहती है और कभी-कभी जानवरों के आस-पास भी उड़ती दिखाई पड़ती है । इसका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े, झींगुर, झींगा इत्यादि हैं जिन्हें वह घास तथा उसकी जड़ों से प्राप्त करती है । इसके अलावा यह रसदार फलों को भी खाती है । यह कुछ हद तक फसलों को नुकसान पहुँचाती है और बसेरा लेते समय यह भी किलहँटे की तरह काफी शोर मचाती है ।

**घोंसला** : इसका जोड़ा बाँधने का समय मई से अगस्त तक रहता है, परन्तु जून और जुलाई में इनके अंडे प्रायः देखे जाते हैं । यह अपना घोंसला मैदानी वृक्षों पर जमीन से १० फुट से ३० फुट की ऊँचाई पर बनाती हैं । घोंसले भद्दे और बेढंगे से होते हैं, जिनको बनाते समय ये छिपाव का उतना ध्यान नहीं रखती, जितना बचाव का । ये घोंसले तिनकों, घास, डालियों, जड़ों तथा चिथड़ों आदि से बनाये जाते हैं जिसमें मादा ४ से ६ तक अंडे देती है । अंडे बड़े और गोलाकार होते हैं, जो सिरे की ओर नुकीले होते हैं ।

अंडे सफेदी मायल हलके अंगूरी या हलके नीले रंग के होते हैं जिन पर किसी प्रकार के चिह्न नहीं रहते ।

अंडों की नाप करीब १.१० × ०.८२ इंच की रहती है ।

## १२३ बया (Baya or Weaver Bird : Ploceus Philippinus)

**पर्याय** : वाय, चिन्दोरा, बावी ।

**पहचान** : यह मैदान की चिड़िया है जो प्राय. झुंडों में ही पायी जाती है । इसका रंग अधिकतर पीला-भूरा होता है और ऊपरी भाग पर गहरी काली धारियाँ होती हैं, परन्तु जोड़ा बाँधने के समय में नर गहरे भूरे रंग के कारण स्पष्ट रूप से पहचाना जा सकता है । इनके घास के घोंसले देखने से, इनकी बुनाई-कला का आकर्षक नमूना मिलता है ।

**रंग-रूप** : बया की लम्बाई ६ इंच होती है । नर की ठोड़ी और गर्दन गहरे भूरे रंग की होती है, सर के अगल-बगल यह रंग घूँघट-जैसा लगता है । सर का शेष भाग और छाती चमकीले पीले रंग की होती है । ऊपर के पर भूरे काले होते हैं जिनके किनारे

चमकीले पीले रहते हैं पिछला भाग और निचले पर पीले-भूरे होते हैं, डैने तथा पूँछ गहरे भूरे रंग की होती हैं और उनके किनारे पीले भूरे होते हैं। नर के समस्त ऊपर के पर भूरे होते हैं तथा उन पर काली भूरी धारियाँ रहती हैं। ये धारियाँ पीछे की ओर मिटती जाती हैं। डैने और पूँछ गहरे भूरे होते हैं तथा उनके किनारे पीले भूरे होते हैं। आँखों पर स्पष्ट पीली भूरी धारी होती है। आँख की पुतलियाँ भूरी और चोंच पीलिया लिये सींग के रंग की होती है। जोड़ा बाँधने के दिनों में नर की चोंच गहरी भूरी हो जाती है, जो जड़ पर पीला रंग लिये होती है। चोंच कुछ भारी तथा नुकीली होती है। टाँगें हल्के गुलाबी रंग की होती हैं।

**निवास :** बया भारत, श्रीलंका तथा बर्मा में पायी जाती है और पूर्व की ओर हिन्दचीन, जावा और सुमात्रा तक मिलती है। भारत में यह उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों से लेकर, सतलज के किनारे तक फैली हुई है। हिमालय के पूर्वी क्षेत्रों में तथा बंगाल में भी इसी तरह की इसकी एक जाति मिलती है।

**विवरण :** यह पक्षी घने जंगलों में रहना पसन्द नहीं करता। इसे खुले मैदानों में रहना ही विशेष प्रिय है। बबूल और बेर के पेड़ों तथा कटीली झाड़ियों वाले मैदानों को यह अपने रहने के लिए चुनता है। पानीदार स्थानों के पास रहना इसे बहुत भाता है। यह तरह-तरह के बीजों को खाता है और खेती को काफी नुकसान पहुँचाता है। वैसे यह झींगुरों और कीड़ों-मकोड़ों को खाकर पेड़ों की सहायता भी करता है। बया अपने घोंसलों की बस्ती-सी बसा लेते हैं। इनके घोंसले लम्बे, सुन्दर तथा तोंबी के आकार के होते हैं जो घास से बुने जाते हैं। घोंसले का मुँह नीचे की ओर होता है। प्रायः एक ही पेड़ पर १०-१२ या १२-१५ तक घोंसले देखे जाते हैं। यही नहीं, यह भी देखा गया है कि जिस पेड़ पर यह एक बार घोंसला बना लेते हैं वह पूरा पेड़ इन्हीं के घोंसलों से ढक जाता है और दूर से पर्ण-कुटी के समान मालूम पड़ता है। घोंसले प्रायः सरपत, पयाल, पत्तियों, नारियल के रेशों तथा ज्वार के पत्तों के बने होते हैं। यह अपने घोंसले के निर्माण में बड़ी सावधानी बरतती है, पत्तियों को दाँतीदार बनाकर एक या दो फुट लम्बे टुकड़ों में काट लेती है। पत्तियाँ जब हरी होती हैं, तभी काट ली जाती हैं। पुराने और नये घोंसलों की पहचान इसी से हो जाती है। यही अन्तर पुराने घोंसलों में नयी पत्तियों को लगा देखकर जाना जा सकता है। मादा के अंडे सेने के लिए इसमें अलग से स्थान बना होता है और दूसरे छेद से अन्दर आने-जाने का रास्ता रहता है। इन घोंसलों के अलावा ये ऐसे घोंसले भी बनाते हैं जो इनके लिए झूला का काम देता है।

**घोंसला :** इनके जोड़ा बाँधने का समय अप्रैल से नवम्बर तक होता है, परन्तु अधिकतर घोंसले बरसात में पाये जाते हैं। आमतौर से मादा २ अंडे देती है, परन्तु कभी-कभी ३ और ४ अंडे भी देखने को मिले हैं। अंडे कुछ लम्बे गोलाकार तथा सिरे की ओर नुकीले होते हैं। अंडों को बनावट सुन्दर तथा रंग गंदा सफेद होता है और उन पर कोई भी दाग धब्बा नहीं होता।

नाप में ये अंडे ०.८२ × ०.५० इंच के होते हैं।

## १२४ तेलिया बया (Striated Weaver Bird : Ploceus Manyar)

**पर्याय :** रेखित सुगृह, बमानी बया।

**पहचान.** यह भूरी धारीदार चिड़िया है, जो आँखों पर की पीली धारी और कानों के पीछे की धारी के कारण, आसानी से पहचानी जा सकती है। जोड़ा बाँधने के समय नर की चोंटी सुनहली हो जाती है। यह अपने समूह में प्रायः नरकुलों की झाड़ियों में पायी जाती है।

**रंग-रूप :** यह ६ इंच लम्बी चिड़िया है जिसके नर-मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। जाड़ों में इनके ऊपरी पर काले भूरे होते हैं। पर के किनारे पीले भूरे, आँखों पर पीली धारी तथा गरदन के दोनों ओर भी पीली धारियाँ होती हैं। पूँछ तथा डैने काले भूरे और उनके किनारे पीले-भूरे होते हैं। बड़े परों पर हरा रंग भी रहता है। ठोड़ी और गला पीलापन लिये सफेद होता है। बाकी सब पर पीले-भूरे तथा सफेद होते हैं और छाती पर काली-भूरी धारियाँ पड़ी रहती हैं।

गर्मियों में इनके परों के किनारे के भूरे रंग मिट जाते हैं, लेकिन ऊपरी पर तथा सिर के दोनों तरफ के गहरे भाग भूरे हो जाते हैं। ठोड़ी और गला भूरा तथा छाती और उसके किनारे राखी धारियाँ पड़ जाती हैं। गरदन के अगल-बगल वाली पीली धारियाँ मिट जाती हैं। नर की चोंटी चमकदार हो जाती है, पुतलियों और चोंच का रंग भी भूरा हो जाता है, जो ठेठ गर्मियों में काली नजर आती है। पैर पीले-गंदुमी रंग के होते हैं। चोंच कुछ भारी और नुकीली होती है।

**निवास :** तेलिया बया भारत में हिमालय के सम्पूर्ण दक्षिण भाग में पायी जाती है, परन्तु नम, पानीदार स्थानों तथा नरकुलों को पसन्द करने के कारण यह सर्वत्र सुलभ नहीं है। वैसे, उत्तरी भारत में यह सब जगह पायी जाती है।

**विवरण :** यह हमारे यहाँ की मैदानी चिड़िया है जिसके बारे में अधिक नहीं कहना है। यह पानीदार स्थानों को अधिक पसन्द करती है। जहाँ पानी थम जाता है, वहाँ नरकुलों की झाड़ियों में यह अपने घोंसले बनाती है और गिरोहों में घास के बीजों तथा कीड़ों को खाती है। इनके आधे दर्जन के करीब घोंसले एक स्थान पर पाये जाते हैं।

**घोंसला** : इनका जोड़ा बाँधने का समय जुलाई से अगस्त तक होता है। इनका घोंसला पेड़ों की टहनियों में मजबूती से बँधा हुआ होता है। घोंसला ऊपर की ही ओर भारी होता है। घुसने की गली सँकरी होती है। ये २ अंडे देती हैं, परन्तु ४-५ अंडे तक भी देखे जाते हैं। अंडा बड़ा, गोलाकार, एक ओर नुकीला तथा गंदे सफेद रंग का होता है।

नाप में ये ०.८० × ०.५८ इंच के होते हैं।

## १२५ चिड़ुक्का (White-Throated Munia : Uroloncha Malabarica)

**पर्याय** : श्वेतकंठ पुत्री, चिरकुआ, देसी चिड़ुक्कू, चरचरा, सार मुनियाँ।

**पहचान** : यह छोटी तथा कुछ चौड़ी भूरे रंग की चिड़िया है जिसके नीचे का भाग तथा पूँछ की सतह सफेद रंग की होती है। यह अपने गिरोह के साथ कटीली झाड़ियों में या जमीन पर चुगती हुई पायी जाती है।

**रंग-रूप** : यह लम्बाई में ५ इंच की होती है, जिसके नर मादा एक रंग-रूप के होते हैं। ऊपरी भाग और डैने हलके मटमैले और भूरे होते हैं। उड़ने वाले परों का बाहरी भाग काला होता है। पूँछ का ऊपरी भाग सफेद होता है बाकी पूँछ काली भूरी होती है और उसका किनारा खैरा होता है। शेष सब पर पीले-सफेद होते हैं। किनारे पर हलकी खैरी धारियाँ होती हैं। पुतलियाँ गहरी-भूरी, चोंच सींग के रंग की, तथा पैर सूच्याकार होते हैं। पूँछ कुछ लम्बी और नुकीली होती है। टाँगों का रंग गुलाबी रहता है।

**निवास** : यह चिड़िया अफगानिस्तान, बिलोचिस्तान तथा सम्पूर्ण भारत एवं श्रीलंका में पायी जाती है। हिमालय पर ४,००० से ५,००० फुट की ऊँचाई तक ये देखी जाती है।

**विवरण** : चिड़ुक्का बारहमासी भारतीय चिड़ियों में से एक है, जो न तो स्थान-परिवर्तन करती है और न इसके परों में ही रंग का परिवर्तन होता है। यह खुले स्थानों में पायी जाने वाली चिड़िया है, जो सूखे तथा झँखाड़ीले स्थानों में रहना अधिक पसन्द करती है। ये छोटे-छोटे गिरोह के साथ रहती हैं और छेड़ी जाने पर ही उड़ती है। ये 'चिट-चिट' या 'टी-टी' का स्वर बोलती हैं। ये छोटे-छोटे बीजों को बड़े स्वाद से खाती हैं, जिन्हें वह जमीन पर खोज लेती हैं।

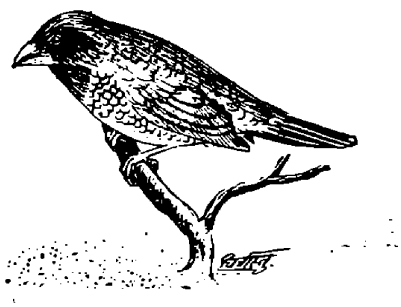
**घोंसला** : इनका घोंसला बड़े गुम्मद के आकार का होता है। घोंसला विभिन्न प्रकार की घासों से बनाया जाता है। विशेष तौर पर ये घास के फूले हुए ऊपरी भाग का ही प्रयोग करती है। घोंसले के भीतर अंडा सेने का एक अलग कमरा-सा होता है जो एक मार्ग द्वारा घोंसले के मुख्य भाग से जुड़ा होता है। मार्ग का प्रवेश-द्वार गोल तथा ढका हुआ होता है। इस कारण मुख्य द्वार का पता लगाना कठिन हो जाता है। घोंसले जमीन से ५ से १० तक फुट की ऊँचाई पर कटीली झाड़ियों में पाये जाते हैं। अक्सर मकानों की दीवारों के आस-पास भी इनके घोंसले देखे जाते हैं। घोंसले पर प्रभुत्व किसी एक जोड़े का नहीं, वरन् कई का होता है। ऐसी कल्पना घोंसले में पाये गये २२ से २५ तक अंडों को देख कर की गयी। इनका जोड़ा बाँधने का समय बरसात से वर्ष के अन्त तक होता है, परन्तु घोंसले प्रत्येक मास में पाये जाते हैं। यह जोड़ा बाँधने के सम्बन्ध में बहुत अनियमित है। अंडे सफेद, बड़े और गोलाकार होते हैं। अंडों में विभिन्नता भी होती है।

अंडों की औसत नाप ०.६० × ०.४७ इंच होती है।

## १२६ तेलिया मुनियाँ (Spotted Munia : Urolonacha Punctulata)

**पर्याय** : भारत वृषत् पुत्री, लाल के डाक्टर, सिगबाज, सब्ज मुनियाँ।

**पहचान** : यह छोटी-सी चिड़िया अपने निचले सफेद परों, ऊपर के चाकलेटी रंग तथा अखरोटी रंग के गले के कारण शीघ्र पहचानी जा सकती है। यह झाड़ियों में अपने झुंड तथा जोड़ों के साथ पायी जाती है।



तेलिया मुनियाँ

**रंग-रूप** : यह लम्बाई में ५ इंच की होती है जिसके नर-मादा एक से होते हैं। डैने तथा ऊपरी पर हलके चाकलेटी, पिछले भाग पर पीली तथा भूरी धारियाँ, पूँछ के ऊपरी पर चमकदार पीले, पूँछ पीली भूरी तथा सर के अगल-बगल, ठोड़ी तथा गला गहरे अखरोटी रंग का होता है। निचले पर सफेद होते हैं। पेट के अतिरिक्त सभी परों पर पीली-भूरी धारियाँ होती हैं। पुतलियाँ गहरी लाल भूरी और चोंच नीली-काली तथा नीचे की ओर पीली होती है। पैर सींग के रंग के होते हैं। चोंच भारी तथा सूच्याकार होती है।

**निवास** : यह भारत, श्रीलंका, बर्मा के अधिकांश भागों में तथा पूर्व की ओर चीन तक में देखी जाती है। यह हिमालय

पर ६,००० फुट की ऊँचाई तक पायी जाती है। नीलगिरि की चोटियों पर भी यह मिल जाती है।

**विवरण**: यह घने जंगलों में रहना नहीं पसन्द करती, खुले स्थान इसे प्रिय हैं। ऐसे स्थानों में यह अपने गिरोहों के साथ पायी जाती है। यह झाड़ियों में बनस्पति के पदार्थों को खा कर रह लेती है और बहुत नजदीक से ही छेड़ी जाने पर 'किटी-किटी' करती हुई उड़ जाती है। यह पालतू किस्म की है, जो बाग-बगीचों में अक्सर देखी जाती है।

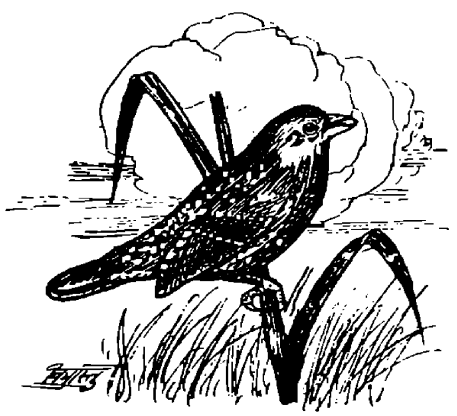
**घोंसला**: इनके जोड़ा बाँधने का समय जुलाई और अगस्त है, परन्तु नीलगिरि में फरवरी से सितम्बर तक है। इनका घोंसला बड़ा, परन्तु भद्दा होता है जो इन चिड़ियों को देखते हुए बहुत बड़ा होता है। घोंसले का आकार तरबूज की शक्ल का होता है। घोंसले में घुसने का मार्ग एक ओर होता है, जो गुप्त रीति से ढका होता है। यह डालों की जोड़ पर या झाड़ी पर जमीन से ५ से ७ फुट तक की ऊँचाई पर रखा होता है। घोंसले का भीतरी भाग खुरदुरा होता है, जो घास के तिनकों, पयाल, जोंधरी और बाजरे की पत्तियों से बना होता है। अंडा जड़ों के रेशों तथा सुन्दर नरम घास पर रखा होता है। घोंसला कटीली झाड़ियों तथा पेड़ों पर बना होता है। मादा इसमें ४ से १० तक अंडे देती है। अंडे सफेद, गोलाकार, सुन्दर बनावट के और बिना चमक के होते हैं।

नाप में अंडा ०.६५ × ०.४६ इंच का होता है।

## १२७ लाल मुनियाँ (Red Avadavat : Amandava Amandava)

**पर्याय**: रक्तपुत्री, रायमुनी, लाल, सादी, सदिया

**पहचान**: यह नन्हीं-सी चिड़िया अपने दल सहित नम स्थानों में, जहाँ नरकुल इत्यादि हों, पायी जाती है। नर लालछौंह



लाल मुनियाँ

तथा मादा भूरी और पीली होती है। दोनों के बदन पर सफेद छींटे होते हैं। यह पालतू की जाने वाली प्रसिद्ध चिड़िया है, जो पालने की गरज से पकड़ी जाती है। पिंजड़ों तथा चिड़िया-घरों में यह खूब देखी जाती है।

**रंग-रूप**: यह लम्बाई में ४ इंच की होती है। इसका पूरा शरीर गहरा लाल होता है, केवल परों की जड़ों पर सिलेटी धब्बे होते हैं। पेट से पूँछ के नीचे तक वाला धब्बा होता है। पूँछ की जड़ के ऊपर, गरदन के अगल-बगल तथा छाती पर सफेद छींटे होते हैं। डैने भूरे होते हैं, पूँछ काली होती है और उसके किनारे सफेद होते हैं। जाड़ों में नर भी मादा की तरह नजर आता है, परन्तु उसके गले और छाती का ऊपरी भाग अधिक भूरा होता है।

इसकी मादा के ऊपरी पर भूरे, पूँछ के ऊपरी पखने हल्के लाल तथा उन पर बहुत मामूली सफेद छींटे होते हैं। पूँछ और डैने नर के समान होते हैं, आँखों के आगे काला चिह्न होता है, ठोड़ी और गला सफेद होता है, सिर तथा गरदन के अगल-बगल तथा सीना सिलेटी होता है और शेष निचले पर हल्के नारंगी होते हैं। उनके किनारों पर सिलेटी रंग की झलक होती है। पुतलियाँ नारंगी लालछौंह और चोंच लाल होती है। नाक के छेद के पास धुमैला रंग होता है। पैर भूरे रंग के होते हैं। चोंच छोटी और सूच्याकार होती है।

**निवास**: यह भारत, बर्मा, हिन्दचीन, मलयेशिया और जावा तक पायी जाती है। इनकी दो जातियाँ होती हैं, परन्तु इसकी खास किस्म भारत में ही पायी जाती है। भारत में यह हिमालय की तराई से कन्याकुमारी तक सर्वत्र पायी जाती है। हिमालय में यह २,००० फुट की ऊँचाई तक पायी जाती है, लेकिन उत्तर और पश्चिम के सूखे मैदानों में यह नहीं दिखाई पड़ती। नीलगिरि की पहाड़ियों पर यह ६,००० फुट तक की ऊँचाई पर भी पायी जाती है।

**विवरण**: पानीदार तथा घने जंगलों में और झील के किनारे पायी जाने वाली लम्बी घास तथा नरकुलों के जंगलों में इन्हें रहना अधिक पसन्द है। घास के ऊपर इनके झुंड के झुंड दिखाई पड़ते हैं। छेड़ी जाने पर ये एक आवाज करके उड़ जाती है। यह बहुत चुस्त और जीवट की होती है। यह अपनी पालतू प्रकृति के कारण आसानी से पकड़ ली जाती है और चिड़ीमारों के पिंजड़ों में ये दर्जनों की संख्या में मिलती हैं। ये विदेशों को भी भेजी जाती हैं।

**घोंसला**: इनका जोड़ा बाँधने का कोई निश्चित समय न होने के कारण, प्रायः प्रत्येक महीने में इनका घोंसला मिलता है, लेकिन बरसात या जाड़े के प्रारम्भ में इनके घोंसले खूब मिलते हैं। घोंसला तरबूज के आकार का होता है, जिसमें घुसने का मार्ग एक ओर होता है और वह तरह-तरह की घासों का बना होता है। मादा जब अंडे देती है, तब नर घोंसले के निर्माण में जुटा रहता है। अंडा रखने का पोला स्थान नरम घास तथा परों द्वारा सँवारा जाता है। घोंसला नरकुल इत्यादि की झाड़ियों में,

जमीन से ३ फुट की ऊँचाई पर बना होता है। इनके ४ या ५ अंडे होते हैं परन्तु १४ अंडे तक भी देखे गये हैं। ऐसा मालूम होता है कि कभी-कभी दो मादाएँ एक ही घोंसले में अंडे दे देती हैं। अंडों की बनावट बहुत सुन्दर होती है। यह कोमल और चमक-रहित, गोलाकार तथा एक ओर कुछ नुकीला होता है।

अंडों का रंग सफेद और औसत नाप ०.५५ × ०.४३ इंच होती है।

## १२८ नकशी (Black and Yellow Grosbeak : Perissospiza Icteroides)

**पर्याय** : कृष्णपीत स्थूल चंचु, गुलदुमा।

**पहचान** : यह पश्चिमी हिमालय की चिड़िया है। इसका नर चमकीला पीला होता है। उसका सिर काला, डैने तथा पूँछ भी काली होती है। मादा हल्के सिलेटी रंग की होती है और उसका निचला भाग भूरा होता है। यह चिड़िया जमीन पर जब चुगती हो तो इसे देखा भी जा सकता है, अन्यथा पेड़ों में इसे देख पाना कठिन है। यह अपनी स्पष्ट बोली के कारण पहचान ली जाती है।

**रंग-रूप** : नकशी की लम्बाई ९ इंच की होती है। सिर, ठोड़ी, गला, डैने, पूँछ तथा जाँघें हलके काले रंग की होती हैं, शेष सब पर चमकदार पीले होते हैं। गरदन के पीछे हलका नारंगी रंग होता है। इसकी मादा का सिर, गरदन तथा ऊपरी भाग हलका राखी होता है। पूँछ के ऊपर का रंग पीला-भूरा होता है, डैने तथा पूँछ के बड़े पर काले होते हैं, बड़े परों का भीतरी भाग तथा पूँछ के बीच के पर हलके राखी होते हैं और छाती राखीपन लिये हुए भूरी होती है, शेष निचले पर चमकदार बादामी होते हैं। चोंच भारी तथा सूच्याकार होती है। नर की पुतलियाँ भूरी और चोंच जैतूनी हरे रंग की होती है। मादा की चोंच गंदा-हरा रंग लिये होती है। पैर गुलाबी और नाखून मटमैले होते हैं।

**निवास** : यह पश्चिमी हिमालय में नैनीताल से कश्मीर तक ७,५०० से ९,००० फुट तक की ऊँचाई पर पायी जाती है। और जाड़ों में ४,००० फुट तक उतर आती है।

**विवरण**: यह चिड़िया हिमालय के सभी प्रकार के जंगलों में पायी जाती है, परन्तु देवदारु और सफेदे के जंगलों में विशेष रूप से दिखाई पड़ती है। यह जमीन पर ही अपना आहार खोज लेती है और झाड़ियों के फलों, बीजों और छोटे-छोटे पौधों को खाती है। इसकी बोली हिमालय के जंगलों की परिचित बोली है। नर बड़ी सुन्दर सीटी-सी बजाता है। ये जोड़ा बाँधने के मौसम के अतिरिक्त समूह में ही रहती हैं।

**घोंसला**: इनका जोड़ा बाँधने का मौसम अप्रैल से जुलाई तक होता है, लेकिन कभी-कभी सितम्बर तक भी घोंसला पाया जाता है। फिर भी इनके बहुत-से अंडे जून में ही मिलते हैं। इनके घोंसले जमीन से १६ से ६० फुट तक की ऊँचाई पर सफेदे या देवदारु के वृक्षों पर सीधी डाल पर बनाये होते हैं। घोंसला चौड़े प्याले की तरह होता है, जो सेवार व सफेदे की पत्तियों तथा काई इत्यादि के द्वारा निर्मित होता है। घोंसले में सूखी घास तथा जड़ों के रेशों का बिछावन होता है। अंडे दो या तीन होते हैं तथा चौड़े और एक ओर नुकीले होते हैं। उसका रंग पीला-हरछौंह भूरा होता है। उस पर कलछौंह रंग की कुछ गहरी और कुछ हलकी धारियाँ होती हैं जो आपस में गुथी होती हैं। कभी-कभी कलछौंह भूरे धब्बे भी अंडों पर देखे गये हैं।
औसत नाप १.०० × ०.०८ इंच होती है।

## १२९ नकलोल (Black-Headed Munia : Munia malacca)

**पर्याय** : मखमली, काल-शीर्ष पुत्री, नकरनोर।

**पहचान**: छोटी-सी चिड़िया जिसका ऊपरी हिस्सा गाढ़ा कत्थई और निचला भाग सफेद रहता है, यह प्रायः जोड़ों में छोटे-छोटे गिरोहों में झाड़ियों के आस-पास रहती है।

**रंग-रूप** : नकलोल ५ इंच की छोटी-सी चिड़िया है जिसके नर और मादा एक ही जैसे रहते हैं। उनका ऊपरी हिस्सा और डैने गाढ़े कत्थई रंग के होते हैं और इनके दुम के ऊपरी हिस्से पर भूरी धारियाँ पड़ी रहती हैं। दुम हलके भूरे रंग की होती है और सिर के दोनों रुख, गला और टुड्डी गाढ़ी कत्थई रहती हैं। नीचे का हिस्सा सफेद रहता है।

आँख की पुतली ललछौंह गाढ़ी भूरी, चोंच निलछौंह काली तथा टाँगें गाढ़ी सिलेटी रहती हैं।

**निवास** : नकलोल हमारे देश में घुर दक्षिण से मध्य भारत तक फैली हुई है। यह यहाँ की बारहमासी चिड़िया है जो अपना सारा समय इसी देश में बिताती है।

**विवरण**: नकलोल को न तो घने जंगल ही पसन्द हैं और न एकदम खुले ऊसरी मैदान ही। यह ऐसे स्थानों को ज्यादा पसन्द करती है जो झाड़ियों से भरे हों, या जिन पर फसल खड़ी हो। इन्हें छोटे-बड़े गिरोहों में भी देखा जा सकता है जहाँ ये जमीन पर चुगती रहती हैं और जरा भी खतरा देख कर इनका झुंड उड़ कर पास की झाड़ियों और पेड़ों पर जा बैठता है। उड़ते समय ये एक प्रकार की किटी, किटी जैसी बोली बोलती हैं।

इनका मुख्य भोजन गल्ला, बीज और छोटे कीड़े-मकोड़े हैं।

**घोंसला**: नकलोल के जोड़ा बाँधने का समय जुलाई से अगस्त तक रहता है। जब ये अपना बड़ा-सा लम्बोतरा घोंसला बनाती हैं, जो देखने में भद्दा-सा लगता है; यह घास-फूस तथा पत्तियों से बनाया जाता है और इसमें जाने के लिए बगल से एक छेद रहता है।

मादा समय आने पर ४ से ८-१० तक अंडे देती है जो लम्बोतरे और धुर सफेद रहते हैं।

अंडों की नाप लगभग ०.६५ × ०.४६ इंच रहती है।

## १३० गुलाबी तूती (Common Rose Finch : Carpodacus Erythrinus)

**पर्याय**: पाटल चटक, लाल तूती।

**पहचान**: गुलाबी तूती खेतों तथा पेड़ों पर गिरोहों में पायी जाती हैं। यह हलकी भूरी चिड़िया है जो गहरी भूरी धारियाँ होने के कारण आसानी से पहचानी जा सकती है।



**गुलाबी तूती**

**रंग-रूप**: यह ६ इंच लम्बी चिड़िया है जिसके शरीर के सब पर हलके भूरे होते हैं। पीठ तथा अगल-बगल के परों में भूरे पर भी होते हैं। पिछला भाग चमकीला होता है। टोड़ी, गले तथा सीने पर भी चमक होती है और निचला भाग पीला होता है। पूँछ के पास सफेदी होती है। भूरे डैनों तथा पूँछ के किनारे ललछौंह होते हैं। जोड़ा बाँधने के मौसम में ये चमकदार लाल रंग की नज़र आती है।

इसकी मादा के सब पर जैतूनी भूरे होते हैं जबकि नर के शरीर पर भूरी धारियाँ होती हैं। डैने और पूँछ के किनारे कटे हुए होते हैं तथा डैनों पर दोहरी सफेद धारी होती है। पुतलियाँ गहरी हरी, चोंच ललछौंह और पैर गंदे-भूरे होते हैं। चोंच कुछ भारी और सूच्याकार होती है।

**निवास**: पूर्वी यूरोप तथा एशिया में यह विस्तृत रूप से पायी जाती है। इसके लाल रंग की कम या अधिक चमक के आधार पर इसको कई जातियों में बाँटा गया है। यह हिमालय पर सर्वत्र पायी जाती है। यह स्थान-परिवर्तन भी करती है। जोड़ा बाँधने के बाद प्रायः भारत तथा उत्तरी बर्मा में सब जगह फैल जाती है। सितम्बर में ये उत्तरी मैदानों में तथा नवम्बर के अन्त तक दक्षिणी भारत में अधिक पायी जाती हैं और मार्च से मई के दिनों में पुनः उत्तर की ओर चल देती है।

**विवरण**: जाड़ों में प्रवास के समय भारत में इसके झुंड के झुंड दिखाई पड़ते हैं। यह शान्त और स्वच्छन्द रीति से जुवार या दूसरी फसलों के बीच जमीन पर चुगती पायी जाती है। इसे घने जंगलों में रहना पसन्द नहीं। खुले मैदानों, बाग-बगीचों तथा गाँवों के आस-पास के स्थान इनके प्रिय अड्डे हैं। ये जमीन पर अपना आहार खोजती हैं और जंगली-चेरी, बीजों तथा अन्य फसलों को भी खाती हैं। कभी-कभी कलियाँ तथा कोपलें भी खाती हैं। पानी के पुष्पों का पराग भी इसे बहुत प्रिय है। सामान्यतः यह शान्त नज़र आती है, परन्तु वसन्त ऋतु में मादा को रिझाने के लिए नर तेज़ आवाज़ में सुन्दर गाना गाता है।

**घोंसला**: इनका जोड़ा बाँधने का समय जून से अगस्त तक होता है। प्याले के आकार का इसका घोंसला घास-फूस, जड़ों तथा बालों का बना होता है। यह अपना घोंसला छोड़ने के बजाय, पकड़ा जाना अधिक उचित समझती है। इनके ३ या ४ अंडे होते हैं, जो बड़े, गोलाकार, एक ओर चिकने, नुकीले तथा सुन्दर बनावट के होते हैं। ये रंग में गहरे नीले होते हैं और उन पर चाकलेटी छींटे होते हैं। कहीं-कहीं पीले और काले धब्बे भी होते हैं।

अंडों की नाप ०.८० × ०.६० इंच होती है।

## १३१ हरी तूती (Himalayan Green Finch: Hypacanthis Spinoides)

**पर्याय**: हिमालय हरित चटक।

**पहचान**: यह हिमालय की पहाड़ी चिड़िया है जो अक्सर झुंडों में देखी जाती है और अपनी हरी पीठ तथा पीले पेट के कारण आसानी से पहचानी जा सकती है। इसे हवा में ऊँचे उड़ना प्रिय है।



**हरी तूती**

**रंग-रूप** : हरी तूती लम्बाई में ५ इंच की होती है। नर की आँखों के ऊपर चौड़ी धारी, चेहरे के अगल-बगल कुछ छीटे और गरदन के चारों ओर स्पष्ट पटरी-सी होती है। पिछला भाग तथा निचले पर चमकदार पीले, ऊपर के शेष पर हरछौंह भूरे और सिर पर काले तथा गहरे रंग के पर होते हैं। डैने गहरे भूरे होते हैं जो काले-पीले तथा सफेद छीटों के कारण रंग-विरंगे नज़र आते हैं। पूँछ गहरी भूरी होती है परन्तु नीचे के दो पर पीले होते हैं। मादा नर की तरह, परन्तु नर से हलके रंग की होती है और उसके डैनों पर हलका पीलापन होता है। पुतलियाँ भूरी, चोंच सींग के रंग की और उसका किनारा धुमैला होता है। पैर भूरापन लिए होते हैं। चोंच सूच्याकार, तेज़ तथा नुकीली होती है।

**निवास** : यह हिमालय में ५,००० से ९,००० फुट तक की ऊँचाई पर सर्वत्र तथा कभी-कभी ११,००० फुट तक की ऊँचाई पर भी देखी जाती है, पर जाड़ों में यह तराई के प्रदेशों तथा मैदानों में उतर आती है। यह पूर्व में मणिपुर तक पायी जाती है। यह हमारी बहुत परिचित चिड़िया है।

**विवरण** : हरी तूती घने जंगलों में रहना पसन्द नहीं करती। जोड़ा बाँधने के मौसम में इसे देवदार के खुले जंगलों में और खेतों के आस-पास रहना अधिक पसन्द है। वैसे तो यह गिरोह बाँध कर रहने वाली चिड़िया है, परन्तु जोड़ा बाँधने के समय यह गिरोह छोड़कर, जोड़े के साथ रहना ही पसन्द करती है। खेतों, मैदानों तथा वृक्षों के कुंजों में, इनके झुंड जमीन पर चुगते हुए आसानी से देखे जा सकते हैं। सूरजमुखी के वृक्ष इन्हें अधिक पसन्द हैं, इसी कारण जिन बगीचों में ये पौधे होते हैं, वहाँ इनकी अधिकता होती है।

अन्य तूतियों की भाँति हरी तूती भी मीठी बोली बोलने वाली चिड़िया है जो गल्ले और बीज आदि से अपना पेट भर कर किसी पेड़ की ऊँची डाल पर बैठ जाती है, ट्विट टिट् टिट्-जैसी मीठी बोली बोलती है।

जोड़ा बाँधने के समय इसकी बोली में और अधिक मिठास आ जाती है, उस समय यह मादा को रिझाने के लिए काफी ऊँचाई पर उड़ कर हवा में चक्कर लगाती हुई ट्री टैरट्राह, ट्री टैरट्राह से मिलती हुई मीठी बोली बोलती है।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय जुलाई से अक्टूबर तक रहता है जब यह देवदारु आदि के किसी ऊँचे पेड़ पर अपना घास-फूस तथा महीन जड़ों का सुन्दर कटोरेनुमा घोंसला बनाती है, जिसमें मादा समय आने पर ३ से ४ तक अंडे देती है।

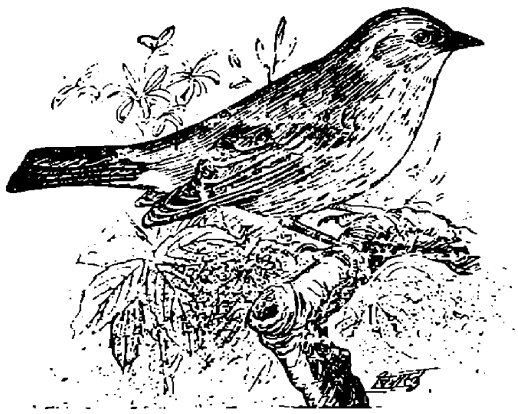
इसके अंडों का रंग हलका अंगूरी रहता है जिस पर पेंदे की ओर काली चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

अंडों की नाप करीब ०.७० × ०.५२ इंच रहती है।

## १३२ राजी (Yellow-Throated Sparrow : Gymnorhis Xanthocollis)

**पर्याय** : पीतगल कुल्लिग, भड़क्के, मोहरैया, पहलवान, रिज्झी ।

**पहचान** : यह मैदानों तथा कम ऊँची पहाड़ियों पर पायी जाती है। यह दुबली-पतली, हलके रंग की चिड़िया है, जिसके डैनों पर अखरोटी तथा गले पर पीला घब्बा होता है। गरमियों में पेड़ों के बीच इनके झुण्ड शोरगुल मचाते दिखाई पड़ते हैं। जाड़ों में ये जमीन पर गिरोह के साथ चुगती नजर आती है और छेड़ीजाने पर पेड़ों पर उड़ जाती है।



राजी

**रंग-रूप** : राजी लम्बाई में ६ इंच की होती है। नर के समस्त ऊपरी भाग राखी, डैने भूरे और बड़े पर गहरा रंग लिये होते हैं। डैनों पर दो धारियाँ होती हैं, जिसमें ऊपरी धारी सफेद तथा निचली पीली होती है और ऊपरी धारी के ऊपर अखरोटी धब्बा होता है। पूँछ भारी तथा उसका सिरा पीला, ठोड़ी हलकी सफेद और गले पर स्पष्ट पीला घब्बा होता है। शेष पर राखीपन लिये होते हैं। पेट पर सफेदी होती है। मादा के गले पर हलका-पीलापन और डैनों पर पीला भूरा घब्बा होता है। पुतलियाँ गहरी भूरी, चोंच काली या भूरी और नुकीली होती है। टाँगें गाढ़ी सिलेटी होती हैं।

**निवास** : यह ईराक, ईरान तथा अफगानिस्तान से लेकर पूरे भारत में पायी जाती है। इसकी कुछ और भी जातियाँ हैं, जिनमें से ईरानी और अफगान जाति पीले रंग के कारण अलग की जा सकती है। यही जाति पश्चिमी-दक्षिणी पंजाब तक फैली हुई है। पंजाब के शेष भाग में इसकी एक और जाति मिलती है। इसकी दूसरी जाति भारत के शेष भागों में ट्रावनकोर तक और पूर्व में बंगाल की तरफ मिदनापुर तक दिखाई पड़ती है। हिमालय तथा अन्य पहाड़ियों पर ये ४,५०० फुट की ऊँचाई तक मिलती है। कभी-कभी ये स्थान-परिवर्तन भी करती हैं।

**विवरण** : राजी आमतौर पर खुले मैदानों, खेतों और सूखे इलाकों में पायी जाती हैं। घने जंगलों में रहना इसे पसन्द नहीं।

यह घरेलू चिड़िया भी नहीं है, यद्यपि बाग-बगीचों में प्रायः घोंसले बना लेती है। दूसरे के घोंसलों में भी यह बिना किसी झिझक के रहने लगती है। यह अपना अधिक समय पेड़ों की डालों पर एक-से ही स्वर में कूजने में लगाती है। जोड़ा बाँधने के मौसम के अतिरिक्त, ये अपने झुंड में पेड़ों के नीचे गिरे बीजों तथा घास के बीजों को चुनती फिरती है। फूल इसे विशेष प्रिय हैं। इसका माथा अक्सर फूलों के पराग से सना रहता है।

**घोंसला** : इनके जोड़ा बाँधने का समय अप्रैल से जुलाई तक होता है। इनका घोंसला सूखी और घनी घास का बना होता है और उसमें परों का अस्तर रहता है। ये घोंसले जमीन से १५ या २० फुट की ऊँचाई पर पेड़ों के कोटरों में रखे होते हैं। कभी-कभी यह तोतों के घोंसलों पर भी अपना कब्जा जमा लेती हैं। ये तीन या चार अंडे देती हैं जो लम्बे और गोलाकार होते हैं। उनका रंग हरछौंह होता है, जिस पर घनी गाढ़ी-भूरी और चाकलेटी धारियाँ तथा छींटे होते हैं।

अंडों की औसत नाप ०.७४ × ०.५५ इंच होती है।

## १३३ गौरैया (House Sparrow : Passer Domesticus)

**पर्याय** : गृह कुलिंग, चटक।

**पहचान** : गौरैया के परिचय देने की विशेष आवश्यकता नहीं है। कौए की तरह हम सब इससे बहुत परिचित हैं और रोज ही इसको अपने घरों में इधर-उधर फुदकते हुए देखते रहते हैं।

**रंग-रूप** : गौरैया लम्बाई में ६ इंच की होती है। नर के सिर का ऊपरी भाग सिलेटी होता है और उसके किनारे-किनारे आँखों के ऊपर तक अखरोटी रंग रहता है। पीठ, गरदन का पिछला भाग तथा बाजू अखरोटी होता है और उसके ऊपर काली धारियाँ होती हैं। पिछला भाग सिलेटी होता है। डैने अखरोटी तथा राखी-भूरे होते हैं और उन पर दो स्पष्ट पीली धारियाँ होती हैं। पूँछ गहरी भूरी होती है और उसका किनारा हलका पीला होता है। चोंच से आँख तक तथा ठोड़ी से छाती के ऊपरी भाग तक काला धब्बा होता है। गाल तथा निचले पर सफेद होते हैं और इनके किनारे हलकी राखिहा झलक लिये होते हैं। शरद ऋतु में परों का रंग कुछ राखिहा हो जाता है, फिर धीरे-धीरे मिट जाता है। इसकी मादा की आँखों पर पीली-भूरी सफेद धारी, ऊपरी पर मटमैले और पीठ पर काली तथा भूरी धारियाँ होती हैं। डैने गहरे भूरे होते हैं और उन पर दो सफेद धारियाँ होती हैं। पूँछ गहरी भूरी होती है और उसके किनारे पीले होते हैं। निचले पर राखिहा सफेद होते हैं। पुतलियाँ, चोंच तथा टाँगों का रंग भूरा होता है। नर की चोंच गरमियों में काली हो जाती है। चोंच छोटी और स्थूल होती है।

**निवास** : यह घरेलू चिड़िया है जो यूरोप, उत्तरी अफ्रीका तथा एशिया के अधिकांश भागों में पायी जाती है। अमेरिका और आस्ट्रेलिया की तरफ भी ये मिलती हैं। इसकी बहुत-सी उप-जातियाँ हैं। इसकी एक जाति हिमालय तथा तिब्बत में ५,००० से १५,००० फुट तक देखने को मिलती है। यह स्थान-परिवर्तन भी करती है और जाड़ों में उत्तर-पश्चिमी मैदानों की तरफ आ जाती है। यह बड़ी तथा चमकीली होती है। इसकी दूसरी जाति छोटी तथा गंदी होती है, जो भारत, श्रीलंका और बर्मा तक पायी जाती है।

**विवरण** : यह सबसे परिचित चिड़िया है, जो घने जंगलों में रहना बिल्कुल पसन्द नहीं करती। वैसे तो ये सब स्थानों में पायी जाती है, परन्तु जहाँ इन्हें अपने आहार की सुविधा होती है, वहाँ ये अधिक मिलती हैं। इनका आहार मनुष्यों के आहार से ही सम्बन्धित है। इसलिए यह प्रायः घरों को ही अपने रहने के लिए चुनती हैं। ये अपने घोंसले दीवालों पर कूड़ा-करकट जमा करके बनाती हैं। ये पकी फसलों तथा फलों को बहुत नुकसान पहुँचाती हैं, परन्तु कीड़े खाकर फायदा भी पहुँचाती हैं।

**घोंसला** : यों तो भारत में इनके घोंसले सभी महीनों में मिलते हैं, लेकिन इनका जोड़ा बाँधने का मुख्य समय अप्रैल से जून तक रहता है। घोंसला बड़ा और आकार रहित होता है लेकिन गोल आकार का लगता अवश्य है। घोंसले में एक ओर से घुसने का मार्ग होता है। घोंसला किसी पोले स्थान, छेद या मकान की छतों में रखा जाता है। यों, पेड़ों पर घोंसला बनाना इसको पसन्द नहीं है। समय आने पर मादा ४ या ५ अंडे देती है, जो लम्बाई लिये हुए गोलाकार, बनावट में सुन्दर तथा हलकी चमक लिये होते हैं। अंडों का रंग विभिन्नता लिये होता है, कोई हलके सिलेटी रंग का तो कोई अंगूरी रंग का होता है। अंडे पर गहरे तथा हलके राखिहा भूरे छींटे पड़े होते हैं।

अंडों की औसत नाप ०.८० × ०.५० इंच होती है।

## १३४ पहाड़ी गौरैया (Cinnamon Sparrow : Passer Rutilans)

**पर्याय** : अरुण तरु कुलिंग।

**पहचान** : पहाड़ी गौरैया पहाड़ की चिड़िया है जैसा इसके नाम से ही स्पष्ट है। नर का ऊपरी हिस्सा ललछौंह बादामी और नीचे का पीला रहता है। मादा की आँख के ऊपर होती हुई एक हलकी पट्टी चली जाती है। यह हमारी गौरैया से कुछ छोटी होती है।

**रंग-रूप** : लम्बाई में यह पाँच इंच की चिड़िया है। नर के ऊपरी पर और डैने बादामी होते हैं। पीठ के परों पर काली धारियाँ होती हैं। डैने काले होते हैं और उनके किनारे भूरे होते हैं। डैनों पर सफेद धारी होती है। पूँछ भूरी होती है तथा



पहाड़ी गौरैया

उसके किनारे हलके हरे रंग के होते हैं। चोंच से आँख तक एक छोटा काला धब्बा होता है और आँखों के पीछे पीला धब्बा होता है। ठोड़ी तथा गला काला होता है। गरदन के पीछे चमकदार पीला धब्बा तथा निचले पर हरछौंह पीले होते हैं, जो पूँछ की ओर गाढ़े पीले होते जाते हैं।

इसकी मादा के ऊपरी पर गंदे भूरे तथा पीठ पर काली और मटमैली धारियाँ होती हैं। पिछले भाग पर ललछौंह धारी होती है। पूँछ गहरी भूरी होती है और गहरे भूरे डैनों के ऊपर के पंख सफेद धारीदार होते हैं। आँखों पर चौड़ी राखिहा धारी होती है तथा आँखों से मिली हुई एक चौड़ी मटमैली धारी होती है। निचले पर हलके मिलेटी भूरे, पुतलियाँ ललछौंह भूरी और चोंच भूरी होती है। नर की चोंच गरमियों में काली हो जाती है। पैर गहरे ललछौंह भूरे होते हैं।

**निवास** : यह गौरैया हिमालय से लेकर चीन, जापान तथा फारमोसा तक पायी जाती है। इसकी कुछ जातियाँ और भी हैं—एक तो हिमालय में कश्मीर से कुमायूँ तक और दूसरी पूर्वी हिमालय में पायी जाती है। हिमालय पर ये ४,००० तथा ८,००० फुट तक की ऊँचाई पर पायी जाती हैं, लेकिन जाड़ों में ये तराई में भी उतर आती हैं।

**विवरण** : यह प्यारी-सी चिड़िया वास्तव में जंगली है और जंगलों में ही पायी जाती है। यह अधिकतर ओक के जंगलों में, पहाड़ी बंगलों और फल के बगीचों के पास रहती है। जाड़ों में इनके झुंड पहाड़ी खेतों में जमीन पर से तिनके तथा चावलों के दाने चुगते हुए देखे जाते हैं और छेड़े जाने पर समीप के पेड़ों पर उड़ जाते हैं।

**घोंसला** : इनके जोड़ा बाँधने का समय अप्रैल से अगस्त तक होता है। घोंसला बड़ा, ढीली बनावट का और सूखी घास से बना होता है, जिसमें पंखों का बिछावन होता है। घोंसला वृक्षों के कोटरों में जमीन से थोड़ी ऊँचाई पर बना होता है। कुछ घोंसले मकानों की ओरियों के नीचे तथा औसारों में भी बने होते हैं। इनके ४ अंडे होते हैं, परन्तु कभी-कभी ५ और ६ भी देखे जाते हैं। अंडा कुछ लम्बाई लिये हुए गोलाकार, बनावट में सुन्दर तथा हलकी चमक लिये होता है। अंडे का रंग सफेद तथा उस पर भूरे या हरे हलके छींटे और धारियाँ तथा धब्बे होते हैं। ये छींटे किसी अंडे पर तो एक ओर इकट्ठे दिखाई देते हैं और किसी पर पूरी तरह और इतने घने होते हैं कि अंडे की जमीन का रंग ही छिप जाता है।

अंडों की औसत नाप ०.७५ × ०.५५ इंच होती है।

## १३५ पथर चिरटा (White-Capped Bunting : Emberiza Stewarti)

**पर्याय** : सितोष्णीष भारीट।

**पहचान** : छोटी-सी गिरोह में रहने वाली पहाड़ी चिड़िया, जिसके नर का सिर राखीपन लिये सिलेटी और ऊपरी भाग अखरोटी भूरा रहता है। सीने पर इसी रंग की एक पट्टी भी रहती है। मादा का ऊपरी हिस्सा राखिहा भूरा रहता है जिस पर कलछौंह धारियाँ पड़ी रहती हैं।



पथर चिरटा

**रंग-रूप** : यह लम्बाई में ६ इंच की होती है। नर के सिर का ऊपरी भाग और कानों के ढकने का रंग हलका भूरा होता है। आँखों पर चौड़ी काली धारी होती है। ठोड़ी और ऊपरी गला काला, गरदन का निचला तथा सामने का हिस्सा सफेद और सर के अगल-बगल मटमैली धारियाँ होती हैं। ऊपरी पर अखरोटी, डैनों का ऊपरी भाग गहरा भूरा तथा पूँछ भूरी होती है और उसका किनारा मटमैला होता है। पूँछ के बाहरी दो पर सफेद होते हैं। छाती पर चौड़ी अखरोटी धारी होती है। शेष निचले पर काही रंग के होते हैं। इसकी मादा

के ऊपरी पर राखिहा भूरे, चेहरे के अतिरिक्त समस्त शरीर पर काली धारियाँ, पूँछ के ऊपर अखरोटी धब्बा तथा परों पर काली पतली धारियाँ होती हैं। डैने भूरे तथा उसके किनारे मटमैले होते हैं। पुतलियाँ तथा चोंच भूरी होती है और उसके नीचे का भाग पीला होता है। पैर हलके गुलाबी और चोंच सूच्याकार नुकीली होती है।

**निवास** : यह तुर्किस्तान, अफगानिस्तान, बिलोचिस्तान, कश्मीर, पश्चिमी हिमालय और पश्चिमी नैपाल तक ४,००० से १०,००० फुट तक की ऊँचाई पर विस्तृत रूप से पायी जाती है। सितम्बर से अप्रैल तक ये मैदानों की तरफ पंजाब, पश्चिमी उत्तर प्रदेश राजस्थान तथा मध्य प्रदेश में मिलती हैं।

**विवरण** : ये हमारे देश में काफ़ी संख्या में मिलती हैं। ये घने जंगलों तथा सूखे स्थानों में रहना नहीं पसन्द करतीं, पर झँखरीले जंगलों और खेतिहर स्थानों के आस-पास रहना इन्हें पसन्द है। जोड़ा बाँधने के दिनों के अतिरिक्त ये छोटे-छोटे झुंडों में पायी जाती हैं। ये अपना आहार खोजने के लिए ही जमीन पर उतरती हैं, अन्यथा झाड़ियों में ही शोर मचाती रहती हैं।

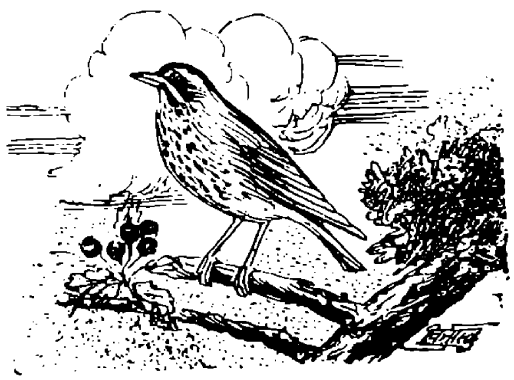
**घोंसला** : इनका जोड़ा बाँधने का समय मई से जुलाई तक होता है। इनका जड़ों, सूखी घास, रेशों आदि का सुन्दर-सा घोंसला चट्टानों तथा नदी के किनारे बना होता है। समय आने पर मादा ३ से ५ तक अंडे देती है।

अंडे की औसत नाप ०.७८ × ०.५९ इंच होती है।

## १३६ पहाड़ी चिरटा (Meadow Bunting : Emberizacia)

**पर्याय** : शार्दूल भारीट।

**पहचान** : पहाड़ी चिरटा उत्तर-पश्चिम भारत में पाया जाता है। इसका रंग लाल-भूरा, सर पीला और पीठ पर काले रंग की रेखाएँ होती हैं। यह अपना भरण-पोषण जमीन पर



पहाड़ी चिरटा

करता है। सभी पहाड़ी खुले स्थानों और पश्चिमी हिमालय के सभी पहाड़ी स्टेशनों पर यह पाया जाता है।

**रंग-रूप** : लम्बाई ७ इंच। नर-मादा एक-जैसे। सिर, गला और ऊपरी सीना पीला निलछौंह-सिलेटी भूरा होता है, दो चौड़ी काली रेखाएँ कलँगी के साथ होती हैं। एक काली रेखा आँखों के बीच से और दूसरी कान के नीचे से चोंच के पीछे घेरा बनाती कलँगी तक जाती है। शरीर का शेष भाग लाल-भूरा, जो पीठ पर गहरा और ऊपर से काली धारियों वाला होता है. डैने कलछौंह-भूरे, बीच के परों के किनारे बादामी और लाल-भूरे होते हैं, दुम कलछौंह-भूरी, बीच के पर लाल-भूरे किनारेदार और तीन जोड़े बाहरी पर सफेद बिंदीदार होते हैं।

आँख की पुतली गहरी भूरी, चोंच सिलेटी रंग की होती है जो ऊपर अधिक गहरे रंग की होती है। पैर गुलाबी पीले होते हैं।

**निवास** : पहाड़ी चिरटा, दक्षिणी यूरोप, उत्तर-पश्चिमी अफ्रीका, हिमालय, उत्तरी चीन और पूर्वी साइबेरिया में रहता है। इसी कारण भौगोलिक आधार पर इसके अनेक भेद किये जाते हैं। इसका प्रजनन पश्चिमी हिमालय में ८,००० फुट से लेकर ११,००० फुट की ऊँचाई पर गिलगित से लेकर कुमायूँ तक होता है। यह स्थायी निवास करने वाली चिड़िया है, किन्तु मौसम के अनुसार ऊँचाई में परिवर्तन कर लेती है। पंजाब के उत्तरी-पश्चिमी भाग में यह जाड़े की ऋतु में आती है, लेकिन इनका रंग पांडुर होता है।

**विवरण** : यह पश्चिमी हिमालय क्षेत्र की बहुत जानी-पहचानी चिड़िया है। इसे जंगलों में रहना पसन्द नहीं है। अतः यह खुली पहाड़ियों, खेतों और घासदार जमीन और झाड़ियों में अपने भोजन के लिए कीड़े, बीजों आदि को ढूँढ़ती हुई सड़कों और मार्गों पर दिखलाई पड़ती है।

यह अपना भरण-पोषण जमीन से ही करती है, लेकिन छेड़े जाने पर पेड़ों पर उड़ जाती है। इसकी आवाज़ धीमी मंद और चरचराहटदार होती है। इसके संगीत में मधुरता नहीं होती। यह जमीन या पेड़ पर बैठ कर गाती है।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय काफी लम्बा—अप्रैल से सितम्बर तक होता है। इसका घोंसला काफी बड़ा और सूखी घास इत्यादि से बना प्याले के आकार का होता है। ये इसके अन्दर सुन्दर जड़ें और बाल इत्यादि लगा देती हैं। घोंसला प्रायः किसी बड़े पत्थर के नीचे जमीन पर, किसी झाड़ी या टीले के किनारे या किसी पुश्ते के ऊबड़-खाबड़ पत्थरों के बीच रहते हैं। कभी-कभी ये जमीन से २ या ३ फुट ऊपर वृक्ष के खोथे में भी घोंसला बना लेती हैं।

इनके अंडों की संख्या ३ से ५ तक रहती है, लेकिन इनके घोंसलों में प्रायः ३ अंडे ही मिलते हैं। ये अंडे कुछ लम्बोतरे और बैंजाबी होते हैं जिन पर थोड़ी चमक भी रहती है। अंडों का रंग हलका हरापन लिये सफेद, राखी अथवा पत्थरी रहता

है जिन पर कलछौंह–भूरी अथवा बैंगनी चित्तियाँ और धारियाँ पड़ी रहती हैं। ये चिह्न पेंदे की ओर घने हो जाते हैं।

अंडों की औसत नाप ०.८३ × ०.६३ इंच रहती है।

## १३७ गंदम (Black-Headed Bunting : Emberiza Melanocephala)

**पर्याय** : कालशीर्ष भारीट, जमजोहारा, बूरी।

**पहचान** : जाड़े की ऋतु में गंदम के झुंड मैदानों में आ जाते हैं और इनकी संख्या बहुत अधिक होती है। मादा के ऊपर भूरी धारियाँ होती हैं। नर का ऊपरी रंग लाल-भूरा, नीचे पीला और सर का रंग काला होता है। ये प्रायः फसलों में पायी जाती हैं और छेड़े जाने पर पेड़ों पर उड़ कर बैठ जाती हैं।



गंदम

**रंग-रूप** : लम्बाई ७ इंच। नर का सर और दोनों बाजू काले होते हैं। गरदन के पिछले हिस्से पर एक पिलछौंह पट्टी होती है जो कि पूरे निचले परों से गहरे पीले रंग से जुड़ी होती है। ऊपरी शेष भाग और डैने अवच्छद गहरे नारंगी लाल-भूरे होते हैं, डैनों और दुम का रंग गहरा भूरा और किनारे का राखिया गेहुँआ होता है।

मादा का ऊपरी भाग गेहुँआ-भूरा और उस पर गहरी भूरी धारियाँ पड़ी होती हैं, डैनों और दुम का रंग गहरा भूरा तथा किनारे गेहुँए, सम्पूर्ण निचला हिस्सा हलका गेहुँआ और सीने पर गेरुआ रंग होता है, जो पूँछ की ओर पीला होता है।

आँख की पुतली गहरी भूरी, चोंच पीली हरछौंह–सींगिया ऊपर की ओर भूरी और पैर गुलाबी भूरे रंग के होते हैं। चोंच नुकीली होती है।

**निवास** : यह चिड़िया दक्षिणी-पूर्वी यूरोप, एशिया माइनर, पैलेस्टाइन, सीरिया, मेसोपोटामियाँ और परशिया में पायी जाती है। लेकिन जाड़े के दिनों में यह सिन्ध की पश्चिमी सीमा से होती हुई अगस्त-सितम्बर में भारत आती है और मार्च-अप्रैल में यहाँ से लौट जाती है। जाड़ों में यहाँ यह मैदानों में पूर्वी दिल्ली, नागपुर, चाँदा और बेलगाम तक फैल जाती है।

यह जाड़े के दिनों में भारत के अधिकांश भागों में फैल जाती है।

**विवरण** : जैसा कि हम भारत में इसे जानते हैं कि यह बहुत बड़े झुंडों में कभी-कभी अपनी अन्य जातियों के साथ दिखलाई पड़ती है, यह खेती और घास-पात के जंगल को नुकसान पहुँचाती है और अनाज और बीजों को मुख्य रूप से खाती है।

बसन्त गुजर जाने पर इन चिड़ियों को पकी फसल के ऊपर देखा जा सकता है। उड़ाये जाने पर ये पास के पेड़ पर उड़ कर बैठ जाती हैं और पीले रंग के ढेर जैसी मालूम होती हैं और यह बात याद रखने लायक है कि ऐसे झुंड में केवल नर पक्षी ही होते हैं। नर पक्षी बहुत ढीठ होते हैं और जिस खेत में खाने का निश्चय कर लेते हैं, उससे बड़ी कठिनाई से निकलते हैं। ये फसल को काफी नुकसान पहुँचाते हैं। प्रारम्भ में कुछ हानि ज्वार को भी पहुँचाते हैं। लेकिन वापस होते समय इनसे हानि की संभावना नहीं होती।

**घोंसला** : पश्चिमी एशिया और दक्षिणी-पूर्वी यूरोप में इनके जोड़ा बाँधने का समय मई के लगभग होता है। इनका घोंसला प्याले की तरह और जड़ों तथा घास से बना होता है। इसके भीतर बाल और जड़ें होती हैं। ये अपना घोंसला प्रायः अंगूर की लता, झाड़ी या छोटे पेड़ पर बनाती हैं। मादा चार से छः अंडे देती है। इनका रंग पीला हरछौंह नीला होता है जिन पर राखिया-भूरी और घूसर चित्तियाँ पड़ी होती हैं, लेकिन यह अधिकतर चौड़े सिरे की ओर होती हैं।

अंडों की लम्बाई-चौड़ाई ०.८७ × ०.६२ इंच होती है।

## १३८ ललसिरा चिरटा (Red-Headed Bunting : Emberiza bruniceps)

**पर्याय** : रक्त-शीर्ष भारीट।

**पहचान** : इसका ऊपरी भाग कत्थई लिये भूरा रहता है तथा नीचे का हिस्सा पीला पिलछौंह और सर कत्थई रहता है। मादा की पीठ धारीदार होती है।



ललसिरा चिरटा

**रंग-रूप** : ललसिरा चिरटा गंदम का बहुत निकट सम्बन्धी है, जिसके नर का ऊपरी हिस्सा कत्थई मायल भूरा और नीचे का पीला रहता है। सिर कत्थई और गले में एक पीला कंठा रहता है। दुम और डैने गाढ़े भूरे रहते हैं। यह ७ इंच लम्बा पक्षी है।

मादा का ऊपरी भाग हल्का भूरा रहता है जिस पर आड़ी गाढ़ी भूरी लकीरें पड़ी रहती हैं और नीचे का अगला हिस्सा हल्का भूरा और पिछला पीला होता है।

आँख की पुतली गाढ़ी भूरी, चोंच हरछौंह सिलेटी और टाँगें गुलाबी मायल भूरी रहती हैं।

**निवास** : यह चिरटा भी यहाँ का मौसमी पक्षी है जो अगस्त के अन्त तक पश्चिमी देशों से आकर सारे उत्तर भारत के मैदानों में फैल जाता है। जाड़ा समाप्त होते ही यह मार्च में यहाँ से उसी ओर लौट जाता है।

**विवरण** : इस चिरटे की सब आदतें गंदम से मिलती-जुलती रहती हैं और यह शक्ल-सूरत में भी उससे कुछ अधिक पीला होकर भी उसी जैसा होता है। यह भी झुंड में रहने वाला पक्षी है जो कभी-कभी गंदम के झुंडों के साथ देखा जा सकता है। यह अपने लिए खुले मैदान, खेत तथा झाड़ी और घास से भरे स्थानों को पसन्द करता है, जहाँ घूम-फिर कर झुंड के सारे पक्षी दाना, गल्ला और बीज चुना करते हैं जो इनका मुख्य भोजन है।

ललसिरा चिरटा भी अपने भाई-बन्धुओं की तरह बहुत ढीट पक्षी है और मनुष्यों के उड़ाये जाने पर ही इनका गिरोह खेत छोड़कर जाता है। यह फसल को नुकसान पहुँचाने वाला पक्षी है।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय मई-जून है, जब यह हमारे देश से वापस चला जाता है।

पश्चिमी देशों में यह अपना घास-फूस का कटोरानुमा घोंसला बनाता है जिसे भीतर से ऊन, बाल और नरम जड़ों से मुलायम बना दिया जाता है। ये घोंसले किसी झाड़ी, लता या छोटे पेड़ पर रहते हैं।

मादा ४ से ६ तक अंडे देती है जो हल्के हरछौंह नीले रंग के होते हैं। इन पर भूरी या सिलेटी बिन्दियाँ पड़ी रहती हैं।

ये अंडे करीब ०.८७ × ०.६२ इंच के होते हैं।

## १३९ चोटीदार पथर चिरटा (Crested Bunting : Melophus Lathami)

**पर्याय** : दीर्घ काल-चूड़।

**पहचान** : प्रायः अकेली रहने वाली चिड़िया जो पहाड़ों पर की झाड़ियों में अक्सर दिखाई पड़ती है और अपनी उठी हुई चोटी के कारण आसानी से पहचानी जा सकती है। नर का शरीर काला और डैने तथा पूँछ कत्थई रहते हैं। मादा का रंग हल्का और डैने तथा पूँछ भूरी रहती है।

**रंग-रूप** : यह पथर चिरटा ६ इंच लम्बा होता है। इसके नर का सारा शरीर और उठी हुई चोटी काले रंग की होती है। डैने, पूँछ तथा जाँघों का रंग खैरा रहता है। मादा का ऊपरी भाग गाढ़ा भूरा और नीचे का हिस्सा गाढ़ा बादामी रहता है, जिस पर गाढ़ी भूरी चित्तियाँ और धारियाँ पड़ी रहती हैं। आँख की पुतली गाढ़ी भूरी, चोंच कलछौंह और टाँगें भूरी होती हैं।

**निवास** : चोटीदार पथर चिरटे हिमालय के ५,००० फुट से ६,००० फुट की ऊँचाई पर हजारा से भूटान तक देखे जा सकते हैं। जाड़ों में ये नीचे उतर आते हैं और उत्तर भारत में सभी जगह फैल जाते हैं।

**विवरण**: यह चिरटा अकेले रहना वाला पक्षी है जो कभी-कभी चार-पाँच के गिरोह में भी दिखाई पड़ता है। इसे न तो घने जंगल ही पसन्द हैं और न तो एकदम खुले स्थान ही। यह पहाड़ी स्थानों पर, जो झाड़ियों से भरे होते हैं, काफी संख्या में दिखाई पड़ते हैं।

इनका मुख्य भोजन दाने और बीज आदि हैं, जिन्हें ये जमीन पर उतर कर चुनते रहते हैं और जरा भी आहट पाने पर तुरन्त उड़ कर पेड़ और झाड़ियों पर जा बैठते हैं।

चोटीदार पथर चिरटा बहुत मस्त और ढीट पक्षी है जो जमीन पर दाना आदि चुनते समय अपनी चोटी और दुम को फैला कर बहुत सुन्दर लगता है। इसकी बोली मधुर नहीं होती, लेकिन उसे कर्कश भी नहीं कहा जा सकता।

**घोंसला** : इनके घोंसले छिछले कटोरेनुमा होते हैं जिन्हें ये घास-फूस और पतली जड़ों से बनाते हैं। कुछ घोंसले सादे ही रहते हैं और कुछ में नरम घास, बाल, ऊन तथा मुलायम जड़ों का अस्तर दिया जाता है। इन्हें ये किसी ऊँचे कगार के सूराख, चट्टानों की दराज या किसी घनी झाड़ी में रखते हैं।

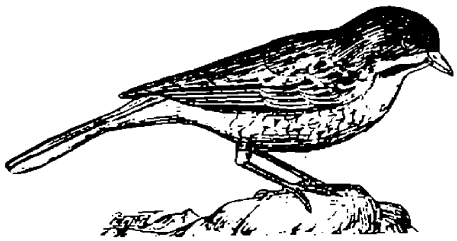
मादा समय आने पर उसमें ३-४ अंडे देती है। ये अंडे चौड़े बैंजावी और बिना चमक के होते हैं। इनका रंग हल्का हरापन लिये सफेद या हल्का पत्थरी रहता है जिन पर पेंदे की ओर लाल, बैंगनी तथा भूरी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

अंडों की नाप लगभग ०.७९ × ०.६३ इंच होती है।

## १४० छोटा चिरटा ( Grey-Headed Bunting : Emberiza Striolata )

**पर्याय** : जनजोहारा, भम्मशीर्ष भारीट ।

**पहचान** : पथर चिरटा से कुछ छोटा और करीब-करीब उसी रंग-रूप का पक्षी, जिसका सर सिलेटी होता है और जिस पर काली रेखाएँ पड़ी रहती हैं ।



छोटा चिरटा

**रंग-रूप** : यह ५ इंच का छोटा-सा पक्षी है जिसके नर का सर सिलेटी होता है और उस पर काली लकीरें पड़ी रहती हैं । गुद्दी और गले का ऊपरी भाग काला रहता है और एक काली रेखा आँख के ऊपर होकर चली जाती है । गले का निचला हिस्सा सफेद और चेहरे के दोनों रुख भूरी लकीरों से भरे रहते हैं । ऊपर का सारा भाग डैने और दुम भूरी रहती हैं और नीचे का सारा हिस्सा हलका भूरा रहता है । मादा का ऊपरी हिस्सा राखी भूरा और कालछौंह लकीरों से भरा रहता है । नीचे का भाग नर की तरह हलका भूरा होता है । आँख की पुतली और चोंच भूरी, जिसका निचला हिस्सा हलका भूरा और टाँगें प्याजी रंग की रहती हैं ।

**निवास** : छोटा चिरटा हमारे देश का मौसमी पक्षी है जो जाड़ों के प्रारम्भ में यहाँ आकर जाड़ा समाप्त होते-होते यहाँ से पश्चिम की ओर वापस चला जाता है ।

यहाँ आकर यह हिमालय की तराई से लेकर पंजाब, उत्तर प्रदेश, राजपूताना तथा मध्य प्रदेश के कुछ उत्तरी भागों तक फैल जाता है । पहाड़ों पर भी हम इसे चार-पाँच हजार फुट तक देख सकते हैं ।

**विवरण** : छोटा चिरटा झुंड में रहने वाला पक्षी है जिसे घने जंगल या एकदम ऊसरी मैदान नहीं पसन्द आते । यह खुले मैदानों, खेतों तथा सरपत और झाड़ी से भरे हुए स्थानों को अधिक पसन्द करता है । इसे हम तितरे-बितरे जंगलों में भी देख सकते हैं ।

यह बहुत ढीठ पक्षी है । यह जमीन पर उतर कर दाना और बीज चुनता रहता है, जो इसका मुख्य भोजन है । बहुत निकट जाने पर इसका झुंड उड़ कर किसी निकट के पेड़ पर बैठ जाता है और थोड़ी देर बाद पुनः अपने भोजन में जुट जाते हैं ।

**घोंसला** : यहाँ से लौटने पर यह पश्चिमी देशों में मई से जुलाई तक जोड़ा बाँध कर अपना कटोरेनुमा घोंसला बनाते हैं, जो सूखी घास, रेशों और जड़ों का होता है । यह घोंसले किसी पहाड़ी के सुराख तथा पत्थरों के बीच में रखे रहते हैं और कभी-कभी हम इसे किसी झाड़ी या घास के बीच में भी देख सकते हैं ।

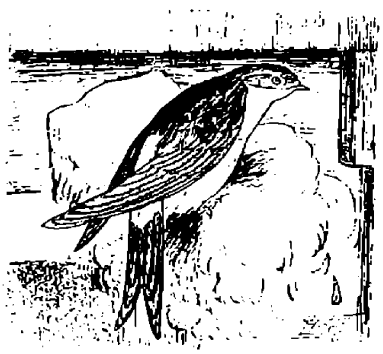
मादा ३ से ५ तक अंडे देती है जो लंबे और बैंजाबी और थोड़े चमकीले होते हैं । ये धुर सफेद होते हैं जिन पर बैंगनी सिलेटी और गाढ़ी भूरी चित्तियाँ और बिन्दियाँ पड़ी रहती हैं ।

अंडे लगभग ०.७८ × ०.५९ इंच के होते हैं ।

## १४१ अबाली ( Indian Sand Martin : Riparia Paludicola)

**पर्याय** : भारत सैकत चटी ।

**पहचान** : छोटी-सी अबाबील जो पानी के किनारे रेतीले कगारों के आस-पास झुंडों में उड़ती रहती है । इसका ऊपरी भाग सिलेटी भूरा और नीचे का सफेदी मायल हलका सिलेटी रहता है ।



अबाली

**रंग-रूप** : अबाली ४ इंच की छोटी-सी चिड़िया है जिसके नर-मादा एक रंग-रूप के होते हैं । इसके ऊपर का भाग सिलेटी भूरा रहता है और डैने तथा दुम का रंग ऊपर के हिस्से से कुछ गाढ़ा होता है । नीचे का भाग हलका सिलेटी रहता है, जो पीछे की ओर जाते-जाते सफेदी मायल हो जाता है ।

आँख की पुतली भूरी, चोंच काली और टाँगें गहरी भूरी रहती हैं । चोंच चपटी और डैने लम्बे और नुकीले होते हैं । दुम थोड़ी दुफंकी रहती है ।

**निवास** : अबाली हमारे देश की बारहमासी चिड़िया है जो हिमालय की तराई से दक्षिण भारत तक दिखाई पड़ती है । इसकी दो-तीन जातियाँ हमारे देश में पायी जाती हैं जिनमें अबाली ही सबसे अधिक प्रसिद्ध है ।

**विवरण** : अबाली हमारे देश की बहुत प्रसिद्ध चिड़िया है

जो हमारे देश में थोड़ा-बहुत स्थान-परिवर्तन करके भी हमारे देश से बाहर नहीं जाती ।

यह झुंड में रहने वाली चिड़िया है जो पानी के निकट रेतीले स्थानों में रहना अधिक पसन्द करती है । यह दिन भर जलाशयों के ऊपर कीड़े-फतिंगों को हवा में उड़ते-उड़ते पकड़ती रहती है, जो इसका मुख्य भोजन है । कीड़े-फतिंगों के लिए यह गाँव और बस्तियों की गड़हियों के ऊपर भी निडर होकर चक्कर लगाती रहती है और बहुत सबेरे से शाम तक इनका शिकार का क्रम चलता रहता है ।

अबाली झुंड में रहने वाली चिड़िया है जिसे हम छोटे-बड़े झुंडों में पानी के किनारे उड़ते हुए देख सकते हैं । यह बहुत ढीठ चिड़िया है जो अपने शिकार के लिए बस्तियों में भी पानी के स्थानों पर उड़ती रहती है । अन्य अबाबीलों की भाँति यह भी उड़ते-उड़ते एक प्रकार की बोली बोलती है जो उन सब-जैसी मीठी न होकर भी कर्कश नहीं कही जा सकती ।

**घोंसला** : अबाली के जोड़ा बाँधने का समय नवम्बर से फरवरी तक रहता है, जब इनके झुंड किसी भीटे में सूराख बनाकर अपने अंडे देते हैं। ये घोंसले मई तक पाये गये हैं और ऐसा अनुमान है कि ये दो बार अंडे देती हैं । ये अपना घोंसला किसी भीटे में सूराख करके बनाती हैं जो एक या दो फुट लम्बे होते हैं । इन सूराखों को ये नरम घास और परों से मुलायम बना देती हैं । इनके घोंसले सैकड़ों की संख्या में एक ही जगह रहते हैं ।

मादा समय आने पर ३ से ५ तक अंडे देती है जो लंबोतरे और सिरे की ओर नुकीले रहते हैं । अंडे धुर सफेद होते हैं और उन पर न तो किसी प्रकार की चित्तियाँ, बिन्दियाँ या चिह्न रहते हैं और न थोड़ी भी चमक ही रहती है ।

अंडों की नाप लगभग ०.६८ × ०.४८ इंच रहती है ।

## १४२ खैरी अबाली (Dusky Crag Martin : Riparia Concolor)

**पर्याय** : घूसर शैल चटी ।

**पहचान** : अबाली की जाति की छोटी-सी चिड़िया जो दो-चार के छोटे-छोटे झुंडों में बस्ती और घरों के आस-पास उड़ती रहती हैं । इनका ऊपर का हिस्सा कलछौंह भूरा और नीचे का उससे हलका रहता है ।

**रंग-रूप** : खैरी अबाली ५ इंच की छोटी-सी चिड़िया है जिसके नर और मादा एक ही जैसे होते हैं । ऊपर का सारा हिस्सा, डैने और दुम कलछौंह गाढ़ भूरी रहती है और नीचे का भाग ऊपर से कुछ हलका रहता है । दुम के बीच के दो पंखों के अलावा सभी परों पर भीतर की ओर एक सफेद चित्ता पड़ा रहता है। दोनों गाल, ठोढ़ी, गला और गरदन का अगला हिस्सा ललछौंह रहता है, जिस पर भूरी धारियाँ पड़ी रहती हैं । आँख की पुतली गाढ़ भूरी, चोंच और टाँगें भूरी रहती हैं । चोंच चपटी, डैने लम्बे और नुकीले रहते हैं । दुम थोड़ी दुफंकी रहती है ।

**निवास** : खैरी अबाली हमारे देश की बहुत प्रसिद्ध चिड़िया है जो हिमालय की तराई से दक्षिण भारत की ओर नीलगिरि पर्वतमाला तक देखी जा सकती है । पूर्व की ओर यह बिहार तक और पश्चिम की ओर पंजाब तक मिलती है ।

**विवरण** : खैरी अबाली हमारे देश की बारहमासी चिड़िया जो हमारा देश छोड़कर बाहर नहीं जाती ।

इसकी एक और जाति बड़ी अबाली Crag Martin (Riparia rupestris) भी प्रायः इन्हीं स्थानों पर दिखाई पड़ती है । बड़ी अबाली कद में कुछ बड़ी होती है, लेकिन देखने में दोनों एक ही जैसी होती हैं, इससे दोनों में धोखा हो जाना स्वाभाविक ही है । यद्यपि यह चिड़िया आमतौर पर सभी जगह होती है और बस्तियों में जोड़ा बाँधती हुई दिखलाई पड़ती है, फिर भी, यह अन्य चिड़ियों की भाँति झुंडों में नहीं रहती । कुछ चिड़ियों को दराजों, पुराने किले के खंडहरों या मस्जिदों में जहाँ छाया और सुरक्षा हो, इधर से उधर उड़ते हुए देखा जा सकता है । ये दो या तीन के समूह में होती हैं और चिट्-चिट् जैसी आवाज जल्दी-जल्दी करती हैं । ये पुराने कस्बों में अपने घोंसले बना लेती हैं और सड़क के ऊपर उड़ती रहती हैं । हालाँकि इन्हें निर्जन जगह ही अधिक पसन्द होती है ।

**घोंसला** : खैरी अबाली के जोड़ा बाँधने का समय जनवरी से अक्टूबर तक रहता है जब ये दो बार अंडे देती हैं । इनका घोंसला प्याले जैसा होता है जो कीचड़ के छोटे-छोटे टुकड़ों से बनाया जाता है । यह नीचे की ओर नुकीला होता है । यह किसी दीवार, चट्टान की दराज या घरों की कारनिसों से लगा रहता है । घोंसले के अन्दर ये नरम घास-फूस के टुकड़ों के साथ नरम पर भी लगाती हैं । ये घोंसले समूहों में नहीं बनातीं, हालाँकि कभी-कभी दो या तीन जोड़े घोंसले किसी उपयुक्त स्थान पर मिल सकते हैं ।

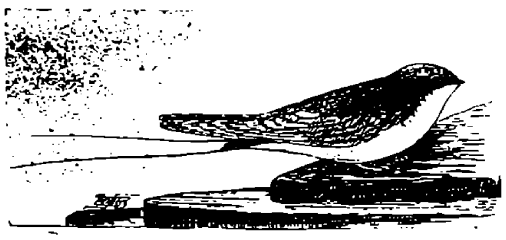
इनके अंडे लंबोतरे और सिरे की ओर नुकीले होते हैं । ये सफेद होते हैं और इनके ऊपर पिलछौंह और ललछौंह भूरे रंग की बिन्दियाँ, चित्तियाँ और धब्बे पड़े होते हैं । ये निशान चौड़े सिरे की ओर अधिक रहते हैं ।

अंडों की नाप लगभग ०.७२ × ०.५२ इंच होती है ।

## १४३ लीशरा (Wire Tailed Swallow : Hirundo Smithi)

**पर्याय** : रज्जु पुच्छ माण्डीक, लासड़ा ।

**पहचान** : मैदान और तराइयों में पानी के निकट रहने वाली छोटी-सी अबाबील जिसका सर कत्थई, ऊपरी भाग कलछौंह नीला और नीचे का सफेद रहता है। दुम के नीचे बड़े दो तार जैसे पंखों के कारण इसको पहचानने में कठिनाई नहीं होती ।



लीसरा

**रंग-रूप** : लीशरा ५ इंच लंबी अबाबील है, जिसके अलावा इसकी ७ इंच लम्बी दुम भी रहती है। इसके नर और मादा एक ही जैसे होते हैं, परन्तु मादा की दुम नर से कम लम्बी होती है ।

इसका सर चटकीला कत्थई रहता है और सर के दोनों बगली हिस्से, गरदन और सारा ऊपरी भाग कलछौंह नीले रंग का रहता है, जिसमें एक प्रकार की चमक रहती है। दुम गाढ़ी भूरी और बीच के दोनों पंखों को छोड़ कर सब पंखों के भीतरी भाग में एक सफेद धब्बा रहता है। नीचे का सारा हिस्सा सफेद रहता है ।

आँख की पुतली गाढ़ी भूरी, चोंच और टाँगें काली रहती हैं। डैने लम्बे और नुकीले होते हैं और दुम के नीचे दो तार जैसे लम्बे पंख निकले रहते हैं ।

**निवास** : लीशरा हमारे देश की बारहमासी चिड़िया है जो हिमालय में ५,००० फुट की ऊँचाई से दक्षिण भारत में मैसूर तक दिखाई पड़ती है। यह यहीं थोड़ा स्थान-परिवर्तन करके भी हमारे देश से बाहर नहीं जाती।

**विवरण** : लीशरा पानी के निकट रहने वाली अबाबील है जिसे हम उत्तर प्रदेश की नहरों, झीलों और अन्य जलाशयों के निकट देख सकते हैं। यह पानी की सतह के ऊपर बहुत सावधानी से उड़ती है और सूर्य की किरणों से इसका कलछौंह नीला रंग एक प्रकार की चमक पैदा करता है ।

जहाँ नहरें नहीं होती वहाँ यह अन्य जलाशयों के आस-पास दिखाई पड़ती है, लेकिन इसे घने जंगल, ऊसर, रेगिस्तान और खुले हुए खेतों के चक पसन्द नहीं आते ।

अन्य अबाबीलों की तरह लीशरा भी एक प्रकार की मीठी बोली बोलती है। अपनी लम्बी दुम के कारण यह जमीन पर केवल उसी समय उतरती है जब इसे अपने घोंसले के लिए जमीन पर से मिट्टी उठानी होती है। वैसे इसे हम हवा में उड़ते हुए या टेलीग्राफ के तारों पर अथवा किसी ऊँची जगह पर बैठी देख सकते हैं ।

इसके बच्चे उड़ने में जब तक काफी समर्थ नहीं हो जाते तब तक उन्हें यह उड़ते-उड़ते ही खिलाती हैं। नर और मादा पक्षी हवा में चक्कर काटते रहते हैं और अपने बच्चों के मुँह में उड़ते-उड़ते ही कीड़े-पतिंगे डालते रहते हैं जो इसका मुख्य भोजन है ।

**घोंसला** : लीशरा के जोड़ा बाँधने का समय काफी लम्बा होता है। इस बीच यह दो बार अंडे देती है। इसके अंडे दिसम्बर को छोड़ कर शेष सभी महीनों में पाये गये हैं। सबसे अधिक अंडे मार्च से अगस्त तक मिलते हैं।

लीशरा का घोंसला छिछले प्याले की तरह होता है जिसे यह मिट्टी को अपने थूक से सान कर बनाती है। ये घोंसले किसी डीवार या पहाड़ की खड़ी या ढलुवी चट्टानों पर चिपका कर लटका दिये जाते हैं और उनका भीतरी भाग परों आदि से मुलायम कर दिया जाता है ।

इनके अंडों की संख्या ३ से ४ तक रहती है जो आकार में लम्बोतरे बैंजाबी होते हैं और उनका सिरा नुकीला रहता है। यह सफेद और थोड़े चमकीले होते हैं जिन पर कत्थई बिन्दियाँ, चित्तियाँ और चिह्न पड़े रहते हैं जो चौड़े सिरे की ओर घने होते हैं ।

अंडों की नाप लगभग ०.७२ × ०.५३ इंच रहती है ।

## १४४ अबाबील (Common Swallow : Hirundo Rustica)

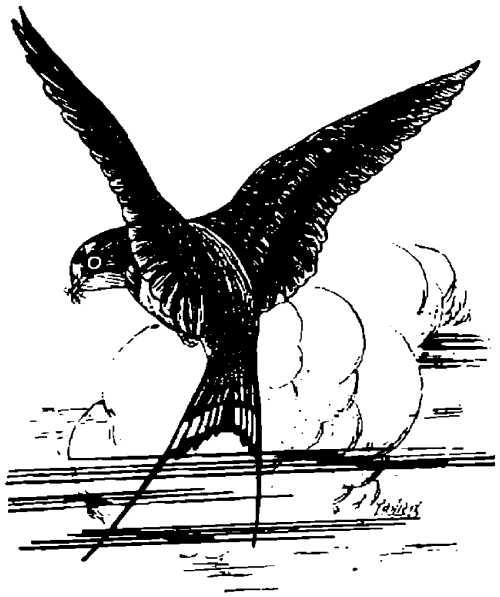
**पर्याय** : सामान्य माण्डीक ।

**पहचान** : पानी के निकट रहने वाली अबाबील, जिसका ऊपरी हिस्सा कलछौंह नीला और नीचे का भाग सफेद रहता है। दुम दुफंकी होती है।

**रंग-रूप** : अबाबील ५ इंच की छोटी-सी चिड़िया है जिसकी ७ इंच लंबी दुफंकी दुम रहती है। नर और मादा एक ही जैसे होते हैं। इसका ऊपरी भाग कलछौंह नीला और नीचे का हिस्सा सफेद रहता है। नीचे के सफेद भाग में हलकी संदली झलक रहती है। गले पर एक लाल चित्ता रहता है। आँख की पुतली गहरी भूरी, चोंच और टाँगें काली होती हैं ।

**निवास** : अबाबील कश्मीर और हिमालय की तराइयों में रहने वाली चिड़िया है जो जाड़ों में हमारे सारे देश में फैल जाती

है। यह यहाँ की बारहमासी चिड़िया है, जो हमारे देश में ही रहना पसन्द करती है।



अबाबील

**विवरण** : अबाबील पानी के आस-पास रहना अधिक पसन्द करती है। इसकी आदतें लीगरा तथा अन्य अबाबील ही जैसी होती हैं। यह घने जंगलों में रहना पसन्द करती है और नहरों, नदियों तथा अन्य जलाशयों के आस-पास कीड़े-फतिंगे पकड़ती दिखाई पड़ती है।

अन्य अबाबीलों के समान यह भी एक प्रकार की मीठी बोली बोलती है और अपने शिकार की घात में टेलीग्राफ के तारों तथा किसी ऊँची जगह पर बैठी दिखाई पड़ती है। जमीन पर यह तभी उतरती है जब इसे अपने घोंसले के लिए मिट्टी लेना होता है।

**घोंसला** : अबाबील के जोड़ा बाँधने और अंडा देने का समय करीब-करीब साल भर रहता है जिसके बीच यह दो बार अंडे देती है।

इसके घोंसले छिछले प्यालेनुमा होते हैं जिन्हें यह मिट्टी से बनाती हैं। ये किसी दीवाल या पहाड़ के खड़े किनारों पर लगे रहते हैं। मादा समय आने पर इसमें ३-४ अंडे देती है जो लम्बोतरे होते हैं।

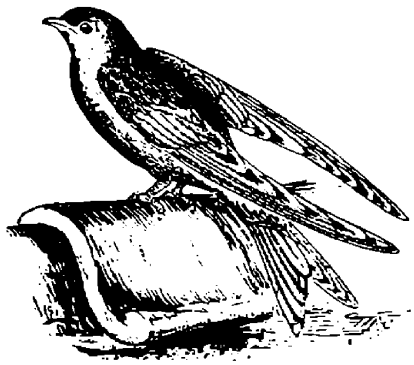
ये अंडे सफेद होते हैं जिन पर कत्थई बिन्दियाँ और चित्तियाँ पड़ी रहती हैं। ये चिह्न चौड़े सिरे की ओर अधिक रहते हैं।

अंडे लगभग ०.७२ × ०.५३ इंच के होते हैं।

## १४५ बैंगन कुटी (Indian Cliff Swallow : Hirundo Fluvicola)

**पर्याय** : भारत पर्वत माण्डीक।

**पहचान** : यह यहाँ की प्रसिद्ध अबाबील है जो मैदानों में पानी के किनारे झुंडों में अपने मिट्टी के घोंसले बना कर रहती है। इसका ऊपरी भाग कलछौंह गाढ़ा नीला और नीचे का सफेद रहता है।



बैंगनकुटी

**रंग-रूप** : ५ इंच की छोटी-सी चिड़िया, जिसके नर और मादा एक रंग-रूप के होते हैं, सिर का ऊपरी हिस्सा गंदा बादामी रहता है जिस पर काली धारियाँ पड़ी रहती हैं। एक चौड़ी गंदी भूरी पट्टी आँखों पर होकर चली जाती है। पीठ और कंधे चमकीले कलछौंह गाढ़े नीले रहते हैं। नीचे का सारा हिस्सा मंदली मायल सफेद रहता है, जिस पर पेट के अलावा सब जगह भूरी लकीरें पड़ी रहती हैं।

आँख की पुतली भूरी, चोंच काली और टाँगें गाढ़ी भूरी रहती हैं। दुम थोड़ी दुफंकी रहती है और डैने लम्बे और नुकीले होते हैं।

**निवास** : बैंगन कुटी हमारे देश की बारहमासी चिड़िया है जो हिमालय की तराई से लेकर दक्षिण भारत में कोयम्बटूर तक फैली हुई है। हिमालय पर यह २,५०० फुट से ऊपर नहीं दिखाई पड़ती। यह यहीं थोड़ा-बहुत स्थान परिवर्तन कर लेती है लेकिन हमारा देश छोड़ कर कहीं बाहर नहीं जाती।

**विवरण** : अन्य अबाबीलों की भाँति बैंगन कुटी भी यहाँ की बहुत परिचित चिड़िया है जो झुंडों में रहना अधिक पसन्द करती है। यह अपने झुंड से अलग होकर कभी अकेली नहीं दिखाई पड़ती और इसे हम छोटे-बड़े समूहों में ही पानी के आस-पास उड़ते देख सकते हैं।

इसे जलाशय के निकट ऐसे स्थान पसन्द हैं जहाँ ऊँचे कगार या चट्टान हों, क्योंकि ये ऊँचे चट्टानों पर ही सामूहिक रूप से अपने घोंसले बनाती हैं। यह एक बार जो स्थान चुन लेती है उसे आसानी से नहीं छोड़ती है।

पानी के ऊपर हम इनके झुंड को उड़ते देख सकते हैं। उड़ते समय यह एक प्रकार की मीठी बोली बोलती है जो अन्य अबाबीलों से मिलती-जुलती होती है।

अन्य अबाबीलों की भाँति यह भी उड़ते ही उड़ते अपने उन




१. पिपल्ला २. खेरमुतिया ३. भरत ४. सहेली ५. कबूतर ६. ठठेरा ७. परेना

८. हारिल ९. नीलकण्ठ १०. कटफोर ११. बुलबुल १२. हुदहुद १३. किलहैटा १४. तिलोर

बच्चों को, जो उड़ने लगते हैं, कीड़े-फतिंगे खिलाती है और अपनी चोंच में पानी भर कर उनके मुँह में डाल देती है।

**घोंसला** : बैंगन कुटी के जोड़ा बाँधने का समय फरवरी से अप्रैल तक और फिर जुलाई से अगस्त तक रहता है। इसी बीच बैंगन कुटी अपना मिट्टी के छोटे टुकड़ों से घोंसला बनाती है जो गोले रहते हैं और जिनमें प्रवेश करने के लिए एक पतली नली रहती है। ये घोंसले आपस में इस प्रकार जुटे रहते हैं कि देखने में शहद की मक्खी के छत्ते से लगते हैं। इनकी संख्या २० से ६०० तक पायी गयी है। घोंसले के भीतरी हिस्से को बैंगन कुटी नरम सूखी घास और परों से मुलायम बना देती है।

अपने घोंसलों के लिए ये किसी पुरानी इमारत, पुल या पहाड़ की चट्टानों को चुनती है जहाँ इनका सारा झुंड एक साथ घोंसलों का समूह बनाता है। लेकिन यह स्थान पानी से निकट ही रहता है।

इनके अंडों की संख्या प्रायः ३ रहती है, लेकिन कभी-कभी इनके घोंसलों में ४ अंडे भी मिले हैं।

ये अंडे लम्बोतरे और सिरे की ओर नुकीले होते हैं और उन पर थोड़ी चमक भी रहती है। अंडे सफेद होते हैं, लेकिन कभी-कभी उन पर बादामी और हलकी कत्थई चित्तियाँ भी पड़ी रहती हैं।

अंडों की नाप लगभग ०.७६ × ०.५३ इंच रहती है।

## १२६ ललपिठी अबाबील (Red-Rumped Swallow : Hirundo Daurica)

**पर्याय** : कन्हैया, देव दिलाई, सामान्य रेखित भाण्डीक, मसजिद अबाबील।

**पहचान** : हमारे यहाँ की बहुत प्रसिद्ध अबाबील, जिसका ऊपरी हिस्सा कलछौंह नीला और नीचे का हलका ललछौंह भूरा रहता है। दुम के ऊपरी हिस्से का रंग ललछौंह बादामी रहता है।

**रंग-रूप** : ललपिठी अबाबील हमारे देश की बहुत ही परिचित चिड़िया है जिसके नर और मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। इसका ऊपरी सारा भाग कलछौंह गाढ़ा नीला रहता है जिसमें दुम के ऊपरी हिस्से का रंग ललाई लिये बादामी रहता है। इसी कारण इसको ललपिठी अबाबील कहा जाता है। इनकी दुम और पंख का भीतरी भाग गाढ़ा भूरा रहता है। सर के दोनों बगली हिस्से ललछौंह भूरे रहते हैं और गले के चारों ओर एक बादामी पट्टी रहती है। नीचे का सारा हिस्सा हलका ललछौंह भूरा रहता है, जिस पर छोटी-छोटी खड़ी लकीरें पड़ी रहती हैं। आँख की पुतली भूरी, चोंच और टाँगें काली रहती हैं।

**निवास** : ललपिठी अबाबील हमारे देश में हिमालय की तराई से लेकर दक्षिण भारत में नीलगिरि पर्वत तक पायी जाती है। पूर्व की ओर यह बंगाल तक और पश्चिम की ओर पंजाब तक फैली हुई है। इसकी कई जातियाँ यहाँ पायी जाती हैं जो कुछ छोटी-बड़ी होकर भी स्वभाव में एक-जैसी ही होती हैं। इन सबमें यही सबसे अधिक प्रसिद्ध चिड़िया है।

**विवरण** : ललपिठी अबाबील यहाँ की बारहमासी चिड़िया है जो यहीं थोड़ा-बहुत स्थान-परिवर्तन करके हमारा देश छोड़ कर बाहर नहीं जाती। ये झुंड में रहने वाले पक्षी हैं जो जोड़ा बाँधने के समय ही जोड़े में दिखाई पड़ते हैं। इनके झुंड प्रायः दो-तीन सौ के होते हैं। जो हवा में उड़ कर कीड़े-फतिंगों का शिकार करते रहते हैं। उड़ते-उड़ते ये एक प्रकार की मीठी बोली बोलती रहती हैं जो अबाबीलों की विशेषता है।

कीड़े-फतिंगों को पकड़ कर ये टेलीग्राफ के तारों पर या किसी ऊँचे पेड़ या ऊँची इमारत के कारनिसों पर बैठ जाती हैं और फिर उड़ कर अपना शिकार करने लगती हैं। ये अपने लम्बे डैनों के कारण जमीन पर नहीं उतरतीं और इन्हें हम जमीन के निकट उसी समय देख सकते हैं जब इन्हें अपने घोंसलों के लिए मिट्टी लेनी होती है।

ये उड़ते-उड़ते थोड़ी-सी मिट्टी अपनी चोंच में भर लेती हैं और अपने घोंसले के निर्माण में लग जाती हैं। इन्हें इस प्रकार अपना घोंसला बनाने में कई सप्ताह लग जाते हैं।

**घोंसला** : ललपिठी अबाबील के घोंसला बनाने का समय अप्रैल से अगस्त तक रहता है, लेकिन जुलाई में इनके अंडे काफी संख्या में मिलते हैं।

घोंसला मिट्टी का होता है, जिसे ये मिट्टी को अपने थूक में सान कर बनाती हैं। ये घोंसले किसी पहाड़ी चट्टान, पुरानी इमारत या पुल अथवा घर की छतों से चिपके रहते हैं। ये घोंसले लम्बोतरे होते हैं और उसमें भीतर जाने के लिए एक पतली नली-जैसी राह रहती है। घोंसले का भीतरी भाग सूखी घास और परों से मुलायम बना दिया जाता है।

यह अबाबील अपने घोंसले के लिए हर साल वही स्थान चुनती है, लेकिन पुराने घोंसलों को फिर काम में नहीं लाती, क्योंकि ये गर्मी और बारिश के कारण खराब हो जाते हैं।

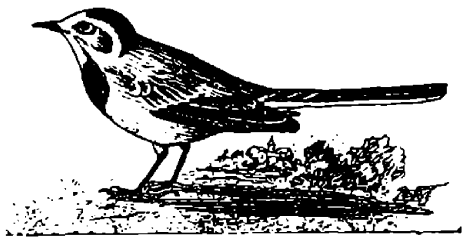
मादा समय आने पर ३-४ अंडे देती है जो लम्बोतरे होते हैं। ये धुर सफेद होते हैं और इन पर थोड़ी चमक रहती है।

अंडों की नाप लगभग ०.७८ × ०.५५ इंच होती है।

## १४७ खंजन (White Wagtail : Motacilla Alba)

**पर्याय** : खंडरिच, श्वेत खंजन, खंजरीट, सफेद खंजन।

**पहचान** : खंजन छोटा-सा चंचल और चितकबरा पक्षी है जिसे हम आसानी से पानी के किनारे अपनी दुम उठाते और गिराते देख सकते हैं।



खंजन

**रंग-रूप** : खंजन ८ इंच लम्बा पक्षी है। जाड़ों में इसके नर के सर के पीछे एक काला चकत्ता रहता है जो गले से चारों ओर फैल जाता है। सर का ऊपरी भाग और शरीर का निचला हिस्सा सफेद रहता है जिसमें थोड़ी कंजई झलक रहती है। ऊपर का हिस्सा हलका सिलेटी और डैने काले रहते हैं। डैने के परों के किनारे सिलेटी और सफेद रहते हैं। दुम काली होती है जिसके दोनों बाहरी पंख सफेद रहते हैं।

गर्मियों में ठुड्डी से सीने तक का रंग काला हो जाता है। मादा नर से घुमैली रहती है और उसके शरीर पर के चिह्न चटक नहीं होते। आँख की पुतली गाढ़ी भूरी, चोंच और टाँगें काली रहती हैं।

**निवास** : खंजन हमारे यहाँ का बहुत प्रसिद्ध पक्षी है जो जाड़ों में उत्तर भारत की ओर से आकर सारे देश में फैल जाता है। इसकी चार जातियाँ यहाँ आती हैं जिनके रंग-रूप और स्वभाव में बहुत थोड़ा ही भेद रहता है। इन चारों में यहाँ जिस खंजन का वर्णन दिया जा रहा है वही सबसे अधिक प्रसिद्ध है।

यह खंजन जाड़ों में सारे देश में पानी के किनारे दिखाई देता है और यहाँ से लौटने पर कश्मीर तथा हिमालय की तराई में अपने घोंसले बना कर अंडे देता है।

**विवरण** : सफेद खंजन पानी के किनारे रहने वाली चिड़िया है जो छोटे-छोटे झुंडों में पानी के किनारों पर कीड़े-फतिंगों का शिकार करती दिखाई पड़ती है। यह गौरैया आदि की तरह फुदक-फुदक कर नहीं चलती, बल्कि जमीन पर दौड़ती रहती है। किसी खतरे का आभास पाकर ये उड़ कर थोड़ी दूर पर फिर जमीन पर उतर पड़ती हैं। इनकी उड़ान लहराती हुई होती है और उड़ते समय ये एक प्रकार की चिट्-चिट् जैसी बोली बोलती रहती हैं।

खंजन वैसे तो जमीन पर ही रहने वाले पक्षी हैं लेकिन कभी-कभी ये पेड़ों पर और पानी के निकट के मकानों पर भी बैठे दिखाई पड़ते हैं। ये वैसे तो दो-चार ही पानी के किनारे पर दिखाई पड़ते हैं लेकिन यहाँ से वापस होने के समय इनका बड़ा समूह बन जाता है और ये अन्य खंजनों के साथ यहाँ से लौटते हैं। खंजन को न तो घने जंगल ही पसन्द हैं और न सूखे स्थान ही। ये नम और पानी से निकट ही रहना अधिक पसन्द करते हैं, जहाँ ये छिछले पानी या पानी के किनारे घूमते फिरते दिखाई पड़ते हैं। थोड़ी-थोड़ी देर बाद ये अपनी दुम को ऊपर-नीचे उठाते और गिराते रहते हैं जो सब खंजनों की विशेषता है।

**घोंसला** : ये खंजन हमारे यहाँ कश्मीर में मई से जुलाई तक जोड़ा बाँध कर अपना घोंसला बनाती हैं। इनके घोंसले गोल प्यालेनुमा होते हैं जिनको ये सूखी घास, जड़ों तथा काई आदि से बनाती हैं। घोंसले भीतर की ओर परों से मुलायम बना दिये जाते हैं और ये जमीन पर से थोड़ी ही ऊँचाई पर किसी पत्थर की दराज अथवा झाड़ी में रखे रहते हैं।

मादा समय आने पर ४ से ५ तक अंडे देती है जो चौड़े बैंजाबी और सिरे की ओर नोकीले रहते हैं। अंडों का रंग कंजई सफेद रहता है जिन पर महीन हलकी भूरी और सिलेटी बिंदियाँ पड़ी रहती हैं।

अंडों की नाप लगभग ०.७८ × ०.६२ इंच रहती है।

## १४८ ममोला (Large Pied Wagtail : Motacilla Maderaspatensis)

**पर्याय** : कालकंट, बृहत् शबल खंजन।

**पहचान** : यहाँ का प्रसिद्ध खंजन, जो पानी के किनारे अकेले या छोटे-छोटे झुंड में चलता-फिरता दिखाई पड़ता है। अन्य खंजनों की भाँति यह भी चितकबरा और चंचल पक्षी है।

**रंग-रूप** : ममोला ९ इंच का पक्षी है जो सफेद खंजन से कद में कुछ बड़ा और उससे अधिक चितकबरा होता है।

नर का सर, ऊपरी सीना और शरीर का सारा ऊपरी हिस्सा काला रहता है। आँख के ऊपर एक चौड़ी सफेद पट्टी रहती है जो नथुने से लेकर कान तक चली जाती है। डैने काले होते हैं, जिनके परों के किनारे सफेद रहते हैं। डैने के सिरे पर का कुछ भाग भी सफेद रहता है। दुम काली होती है जिसके बाहर के दोनों पंखों का अधिक भाग सफेद रहता है। शरीर के नीचे का सारा हिस्सा सफेद रहता है, जिसमें बाजू के पास राखी झलक रहती है।

मादा करीब-करीब नर-जैसी ही होती है, लेकिन उसके शरीर का काला भाग चटक न होकर रखीले भूरेपन की मिलावट वाला रहता है। आँख की पुतली गाढ़ी भूरी, चोंच और टाँगें काली होती हैं।

**निवास** : ममोला यहाँ का प्रसिद्ध खंजन है जो हमारे देश के प्रायः सभी स्थानों पर देखा जा सकता है। हिमालय में भी यह ५ हजार फुट की ऊँचाई तक दिखाई पड़ता है और वहाँ से घुर दक्षिण भारत तक इसे देखना कठिन नहीं होता। पूर्व की ओर यह बंगाल तक और पश्चिम की ओर पंजाब तक पाया जाता है।

**विवरण** : ममोला यहाँ का बहुत परिचित बारहमासी पक्षी है, जो हमारा देश छोड़ कर बाहर नहीं जाता। यह अकेले या झुंड में नदियों, झीलों और तालाबों के किनारे कीड़े-फतिंगों की तलाश में घूमता-फिरता दिखाई पड़ता है। अन्य खंजनों की भाँति यह भी गौरैया आदि की तरह फुदक-फुदक कर नहीं चलता, बल्कि जमीन पर तेजी से भागता रहता है और थोड़ी-थोड़ी देर पर अपनी दुम उठाता-गिराता रहता है। कीड़े-फतिंगे पकड़ते समय यह कभी-कभी ऊँचे टीले, चट्टान या इमारतों पर बैठ जाता है। लेकिन पेड़ पर शायद ही कभी बैठता हो। इसे हम अक्सर घाट पर चलने वाली नावों पर भी बिना किसी डर के बैठे देख सकते हैं और कभी-कभी तो यह नावों के भीतर ही अपने घोंसले बना लेता है। इसकी उड़ान लहराती हुई होती है और उड़ते समय यह अक्सर जिट्-जिट्-जैसी मीठी बोली बोलता रहता है। इसकी और सब आदतें दूसरे खंजनों-जैसी होती हैं।

**घोंसला** : ममोला के जोड़ा बाँधने का समय मार्च से मई तक रहता है, लेकिन इनके घोंसले दिसम्बर और जनवरी में भी मिलते हैं। इससे ऐसा अनुमान होता है कि यह दो बार अंडे देती हैं।

घोंसला बनाने में यह भी बहुत लापरवाह होते हैं और पानी के निकट के किसी भीटे या चट्टान के सूराख में थोड़ी घास-फूस या परों को रख कर मादा ४-५ अंडे देती है। अंडे लम्बोतरे या चौड़े बैजाबी होते हैं, जो सिरे की ओर नोकीले रहते हैं। इनका रंग हलका भूरा या हरछौंह सफेद होता है, जिन पर हलकी या गहरी भूरी चित्तियाँ, धब्बे और चिह्न पड़े रहते हैं।

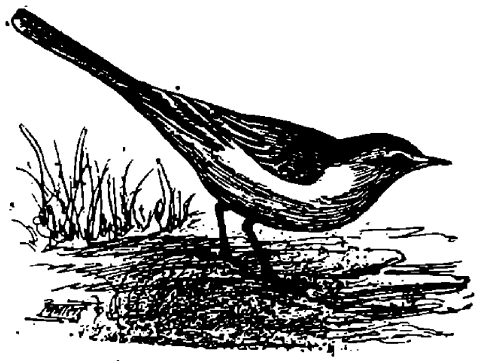
अंडों की नाप लगभग ०.९ × ०.६५ इंच रहती है।

## १४९ खैरैया (Grey Wagtail : Motacilla Cinerea)

**पर्याय** : भूरा खंजन, श्याम खंजन।

**पहचान** : पानी के किनारे अकेले रहने वाला खंजन जो अपनी लम्बी दुम, निलछौंह सिलेटी पीठ तथा पीले पेट के कारण आसानी से पहचाना जा सकता है।

**रंग-रूप** : खैरैया को भूरा खंजन भी कहते हैं। यह ८ इंच का खंजन है, जाड़ों में जिसके नर और मादा का ऊपरी भाग निलछौंह सिलेटी रहता है और उसमें हरछौंह झलक भी रहती है। दुम की जड़ के पास एक पिलछौंह हरा चित्ता रहता है और एक गंदी सफेद रेखा आँख के ऊपर से चली जाती है। डैने गाढ़े भूरे होते हैं जिनके किनारे पिलछौंह सफेद रहते हैं। दुम काली जिनके किनारे हरछौंह और बाहरी तीन जोड़े पंख एकदम



खैरैया

सफेद रहते हैं। ठुड्डी, गला और गरदन का अगला भाग सफेद रहता है। नीचे का सारा हिस्सा पीला रहता है जो दुम की ओर जाते-जाते अधिक चटक हो जाता है। गर्मियों में नर की ठुड्डी, गला और गरदन का अगला भाग काला हो जाता है। आँख की पुतली भूरी, चोंच हरछौंह सिलेटी और टाँगे भूरी होती हैं।

**निवास** : खैरैया पहाड़ी झरनों के निकट रहने वाला पक्षी है जो जाड़ों में हमारे देश में उत्तर और पश्चिम की ओर से आता है। इसकी कई जातियाँ यहाँ आती हैं जिनमें खैरैया ही सबसे अधिक प्रसिद्ध है। जाड़ों में यह हमारे देश में हिमालय से घुर दक्षिण तक फैल जाता है।

**विवरण** : खैरैया यहाँ की मौसमी चिड़िया है जो अगस्त में यहाँ उत्तर-पश्चिम के देशों से आकर सारे देश में फैल जाती है और अप्रैल के अन्त तक फिर यहाँ से वापस चली जाती है।

यह वैसे तो पहाड़ी झरनों के पास रहने वाली चिड़िया है लेकिन हम अपने यहाँ इसे सभी प्रकार के जलाशयों के निकट देख सकते हैं। कभी-कभी तो यह सूखे प्रदेशों में और सड़कों पर घूमती दिखाई पड़ती है। इसका मुख्य भोजन कीड़े-फतिंगे हैं जिनके लिए यह जमीन पर तेजी से चलती और हवा में उड़ती फिरती है। उड़ते समय अन्य खंजनों की भाँति यह भी एक प्रकार की मीठी बोली बोलती है और जमीन पर रहने पर अपनी दुम ऊपर-नीचे उठाती-गिराती रहती है। यह गिरोह बाँध कर नहीं रहती और इसे हम प्रायः अकेले ही देखते हैं।

**घोंसला** : खैरैया के जोड़ा बाँधने का समय मई से जून तक रहता है। वैसे तो यह यहाँ से अपने देश को लौट जाती है, लेकिन कुछ पक्षी हिमालय में रह कर अपने घोंसले बनाते हैं। इनके घोंसले गोल प्यालेनुमा होते हैं जिन्हें ये घास, फूस, जड़ों और रेशों से बनाती हैं। घोंसले के भीतरी भाग को परों से मुलायम कर दिया जाता है।

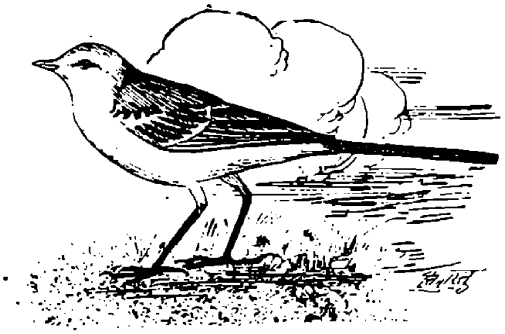
समय आने पर मादा ४ से ५ तक अंडे देती है, जो चौड़े बैजावी और सिरे की ओर नोकीले होते हैं। अंडे पिलछौंह या भूरापन लिये सफेद होते हैं, जिन पर हल्की कत्थई या बादामी बिन्दियाँ और चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

अंडों की नाप लगभग ०.७० × ०.५४ इंच होती है।

## १५० पिलकिया (Yellow Wagtail : Motacilla Flava)

**पर्याय** : पीलकी, पीला खंजन, भस्म शीर्ष खंजन ।

**पहचान** : छोटे कद का खंजन जो जलाशयों के निकट घास-फूस के बीच कीड़े-फतिंगे पकड़ते देखा जा सकता है। इसके शरीर का ऊपरी भाग हरछौंह और नीचे का पीला रहता है ।



पिलकिया

**रंग-रूप** : पिलकिया या पीला खंजन ७ इंच का छोटा पक्षी है, जाड़ों में जिसके नर के सर का ऊपरी हिस्सा निलछौंह सिलेटी और पीठ का सारा भाग घुमैला जैतूनी भूरा रहता है। डैने गाढ़े भूरे रहते हैं जिनके किनारे हलके भूरे होते हैं। दुम काली होती है जिसके किनारे जैतूनी और बाहर के दो जोड़े पर सफेद रहते हैं। सर के दोनों ओर एक चौड़ी कलछौंह पट्टी रहती है। शरीर के नीचे का सारा हिस्सा पीला रहता है।

गरमियों में नर के सर के ऊपर का हिस्सा सिलेटी और पीठ का सारा भाग पिलछौंह हरा हो जाता है। सर के दोनों बगल की कलछौंह सिलेटी पट्टी काली हो जाती है और नीचे का पीला रंग और चटक हो जाता है।

मादा वैसे तो नर के ही रंग-रूप की होती है, लेकिन उसका सर हरा और पीठ का रंग गाढ़ा जैतूनी भूरा रहता है। शरीर के नीचे का पीला रंग हलका रहता है और सर के दोनों बगल की पट्टी घुमैली भूरापन लिये रहती है। आँख की पुतली भूरी और टाँगें गाढ़ी जैतूनी होती हैं।

**निवास** : पीला खंजन या पिलकिया हमारे देश का मौसमी पक्षी है जो जाड़ों में यहाँ उत्तर तथा पश्चिम की ओर से आकर जाड़ा समाप्त होते-होते फिर उसी ओर वापस लौट जाता है।

इसकी तीन जातियाँ हमारे देश में बाहर से आती हैं, जिनका रंग-रूप और स्वभाव इतना मिलता-जुलता है कि उसमें भेद करना आसान काम नहीं है। ये सब जाड़ों में सारे देश में जलाशयों के निकट देखी जा सकती हैं, जहाँ वे कीड़े-फतिंगों को जमीन पर या हवा में उड़ कर पकड़ती रहती हैं।

**विवरण** : पिलकिया छोटे कद का सुन्दर खंजन है, जिसे हम जाड़ों में पानी के आस-पास अपना शिकार करते हुए देख सकते हैं। अन्य खंजनों की भाँति यह भी फुदकता नहीं है बल्कि जमीन पर बहुत तेजी से चलता रहता है। इसकी उड़ान लहराती हुई होती है और उड़ते समय यह एक प्रकार की मीठी बोली बोलता है। इसका मुख्य भोजन कीड़े-फतिंगे हैं।

यह अकेले रहने वाला पक्षी है जो झुंडों में नहीं रहता। यहाँ हम इसे अगस्त से अप्रैल तक देख सकते हैं जब यह पानी के किनारे और कभी-कभी सूखे स्थानों और सड़कों पर भी दिखाई पड़ता है। उड़ते समय इसके नीचे के पीले भाग को देख कर इसे पहचानना कठिन नहीं होता। अन्य खंजनों की भाँति यह भी अपनी दुम को ऊपर-नीचे उठाता-गिराता रहता है।

संध्या के समय बहुत से पीले खंजन इकट्ठे होकर नरकुल आदि पर अपना बसेरा लेते हैं।

**घोंसला** : पिलकिया के जोड़ा बाँधने का समय जून के आस-पास रहता है जब ये हमारा देश छोड़ कर वापस चली जाती हैं। कुछ पक्षी हिमालय में रह भी जाते हैं और यहीं घास-फूस का कटोरानुमा घोंसला बनाते हैं जिनका भीतरी भाग परों से मुलायम बना दिया जाता है। ये घोंसले पानी के निकट घास या नरकुल आदि के बीच जमीन पर ही रखे रहते हैं।

मादा समय आने पर ४ से ७ तक अंडे देती है, जो चौड़े बैजाबी और सिरे की ओर नोकीले रहते हैं। ये हलके सिलेटी या हलके भूरे रहते हैं जिन पर घनी भूरी बिन्दियाँ, चित्तियाँ और चिह्न पड़े रहते हैं।

अंडे करीब ०.७५ × ०.५५ इंच के होते हैं।

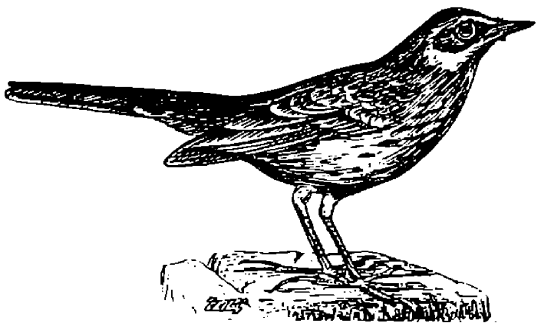
## १५१ मुसचिरी (Indian Tree Pipit : Antlus Hodgsoni)

**पर्याय** : भारत वृक्ष तुलिका ।

**पहचान** : छोटी-सी भूरे रंग की चिड़िया जिसका निचला भाग सफेदी मायल भूरा रहता है। पीठ और सीने पर काली लकीरें पड़ी रहती हैं। यह झुंडों में जमीन पर ही चुगती रहती है और जरा-सी आहट पाने पर उड़ कर पेड़ों पर जा बैठती है।

**रंग-रूप** : मुसचिरी ६ इंच की छोटी-सी चिड़िया है,

जिसके नर और मादा एक ही जैसे होते हैं। इसका ऊपरी हिस्सा भूरा रहता है, जिसमें हरछौंह झलक रहती है। दुम की जड़ तक सारी पीठ पर काली खड़ी लकीरें पड़ी रहती हैं। डैने गाढ़े



मुसचिरी

भूरे होते हैं, जिनके किनारे का रंग हलका भूरा रहता है। दुम गाढ़ी भूरी होती है जिसके किनारे दोनों पंखों के सिरे सफेद रहते हैं। शरीर के नीचे का सारा भाग सफेदी मायल हलका भूरा रहता है, जिस पर सीने पर पीठ की तरह खड़ी काली लकीरें पड़ी रहती हैं। आँख के ऊपर एक हलकी भूरी चौड़ी पट्टी चली जाती है। गरमियों में पीठ पर की हरछौंह झलक गायब हो जाती है और आँख के ऊपर की हलकी भूरी पट्टी सफेद हो जाती है। आँख की पुतली और चोंच गाढ़ी भूरी और टाँगें हलकी गुलाबी रहती हैं।

**निवास** : मुसचिरी वैसे तो साइबेरिया, चीन तथा जापान तक फैली हुई है लेकिन हमारे देश में यह हिमालय में ७ हजार से १२ हजार फुट की ऊँचाई तक पायी जाती है। जाड़ों में यह नीचे उतर कर मैदानों में फैल जाती है। पश्चिम की ओर इसे गुजरात तक, पूर्व की ओर बिहार तक और दक्षिण की ओर हैदराबाद तक देखा जा सकता है।

**विवरण** : मुसचिरी यहाँ की बारमासी चिड़िया है जो हिमालय में १२ हजार फुट की ऊँचाई तक देखी जा सकती है। जाड़ों में इसके झुंड नीचे उतर कर मैदानों में फैल जाते हैं, जहाँ ये सायेदार स्थानों में जमीन पर उतर कर कीड़े-फतिंगे पकड़ती रहती हैं। यह बहुत चौकन्नी चिड़िया है जो जरा-सा भी आहट पाने पर उड़ कर पेड़ों पर जा बैठती हैं। कीड़े-फतिंगे के अलावा ये बीज और गल्ला भी चुनती हैं और इनको बाग-बगीचों तथा तितरे-बितरे जंगलों में देखना कठिन नहीं होता।

ये जमीन से उड़ कर पेड़ पर जाते समय एक प्रकार की मीठी बोली बोलती हैं और खतरा दूर हो जाने पर फिर जमीन पर उतर कर चुनने लगती हैं। पेड़ों के तनों और मोटी डालों पर ये चुहिया की तरह चढ़ती-उतरती हैं। इसी कारण इनका नाम मुसचिरी पड़ा है। ये खंजन की तरह कभी-कभी अपनी दुम को भी उठाती-गिराती रहती हैं।

जोड़ा बाँधने के समय मादा को रिझाने के लिए नर अपने पंख फैला कर हवा में उड़कर अपना प्रदर्शन करता है और बहुत मीठी बोली बोलता है।

**घोंसला** : मुसचिरी के जोड़ा बाँधने का समय हिमालय में मई से जुलाई तक रहता है। इसका घोंसला छिछले प्याले-जैसा होता है जिसे ये घास-फूस से बनाती हैं और जिसका भीतरी भाग मुलायम घास तथा परों से मुलायम बना दिया जाता है।

ये घोंसले किसी झाड़ी या पहाड़ की चट्टान के सूराख में रखे रहते हैं। मादा इनमें ४ अंडे देती है, जो थोड़े लम्बोतरे और बैजावी रहते हैं। सिरे की ओर ये नोकीले रहते हैं और इन पर थोड़ी चमक भी रहती है। अंडे महीन बैंगनी भूरी और घनी बिन्दियों से भरे रहते हैं।

इनकी नाप लगभग ०.९० × ०.६५ इंच रहती है।

## १५२ चिचरी (Indian Pipit : Anthus Rufulus)

**पर्याय** : भारत तुलिका, चरचरी।

**पहचान** : छोटी-सी भूरी चिड़िया, जिसका निचला भाग हलका भूरा रहता है, सीने पर काले चिह्न पड़े रहते हैं। पीठ पर भी ऐसे ही चिह्नों के कारण यह चितकबरी लगती है। यह जमीन पर चुगती हुई देखी जा सकती है।



चिचरी

**रंग-रूप** : चिचरी ६ इंच की छोटी-सी चिड़िया है जिसके नर और मादा एक-जैसे होते हैं। ऊपर का भाग भूरा जो परों पर कलछौंह भूरे चिह्नों के कारण चितकबरा दिखाई पड़ता है। आँख के ऊपर होकर एक हलकी भूरी पट्टी गुद्दी तक चली जाती है। डैने गाढ़े भूरे, जिनके किनारे हलके भूरे, दुम भी गाढ़ी भूरी जिसके किनारे के पंख एकदम सफेद रहते हैं। नीचे का सारा हिस्सा हलका भूरा रहता है, लेकिन सीने पर काले चिह्न पड़े रहते हैं। आँख की पुतली और चोंच भूरी और टाँगें हलकी गुलाबी रहती हैं।

**निवास** : चिचरी हमारे यहाँ प्रायः सभी स्थानों पर पायी जाती है । हिमालय पर भी इसे ५,००० फुट की ऊँचाई तक देखना कठिन नहीं होता । इसकी दो-एक और जातियाँ हमारे यहाँ पायी जाती हैं जिनमें चिल्लू और रूगेल प्रसिद्ध हैं । उनका वर्णन अलग दिया जा रहा है ।

**विवरण** : चिचरी मैदान की चिड़िया है । इसे खुले मैदानों, खेतों और घास के मैदानों में देखा जा सकता है । यही नहीं, यह सूखे प्रदेशों और जलाशयों के किनारे भी काफी संख्या में दिखाई पड़ती है ।

यह अक्सर जोड़े में जमीन पर कीड़े-फतिंगे और बीज आदि चुनती रहती है, लेकिन जरा-सा खतरा निकट देख कर यह एक प्रकार की मीठी बोली बोल कर किसी पास की झाड़ी या ऊँची घास पर जा बैठती है । पेड़ पर इन्हें बैठना पसन्द नहीं है ।

**घोंसला** : चिचरी के जोड़ा बाँधने का समय मार्च से जुलाई तक रहता है, जिसके बीच मादा दो बार ४ से ५ तक अंडे देती है । जोड़ा बाँधने का समय निकट आने पर नर पक्षी मादा को रिझाने के लिए हवा में उड़कर अपना प्रदर्शन करता है । वह अपने पंख फैला कर हवा में उड़ता है और फिर गिरह खाता हुआ जमीन पर उतर आता है । उड़ते वक्त यह एक प्रकार की मीठी बोली बोलता रहता है ।

चिचरी के घोंसले प्यालेनुमा या गोल गुम्बद जैसे होते हैं जिन्हें ये सूखी घास, खर-कतवार और जड़ों से बनाती हैं । भीतरी हिस्से को नरम घास और परों से मुलायम बना दिया जाता है । ये घोंसले किसी झाड़ी या घनी घास के बीच जमीन पर ही रखे रहते हैं ।

अंडे चौड़े बैजाबी होते हैं, जिन पर थोड़ी चमक रहती है । इनका रंग भूरा या हरछौंह पत्थरी रहता है जिन पर घनी कत्थई भूरी या सिलेटी बिन्दियाँ और चित्तियाँ पड़ी रहती हैं ।

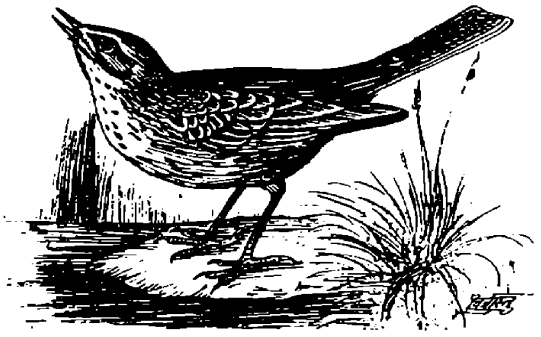
अंडे लगभग ०.८ × ०.६ इंच के होते हैं ।

## १५३ चिल्लू (Tawny Pipit : Anthus Similis)

**पर्याय** : पिंग तुलिका, चिलुआ ।

**पहचान** : ऊपरी हिस्सा राखी और परों के बीच का हिस्सा कत्थई, नीचे का हिस्सा हलका भूरा, सीना सादा और बिना चिह्नों के रहता है ।

**रंग-रूप** : चिल्लू ७ इंच लम्बा पक्षी है, जिसका ऊपरी भाग राखी रहता है । परों के बीच का कुछ हिस्सा कत्थई होता है जिससे ऊपर से यह चितकबरी लगती है । आँख के ऊपर एक टेढ़ी हलकी भूरी रेखा रहती है और नीचे का सारा हिस्सा भी हलका भूरा रहता है । डैने गाढ़े भूरे जिनके किनारे हलके भूरे, दुम गाढ़ी भूरी जिनके किनारे के दोनों पर सफेद रहते हैं । आँख



चिल्लू

की पुतली और चोंच भूरी, निचली चोंच की जड़ पीली और टाँगें प्याजी रहती हैं । पिछला पंजा काफी लम्बा और पतला रहता है ।

**निवास** : यह हमारे यहाँ का मौसमी पक्षी है जो जाड़ों में पश्चिम की ओर से यहाँ आकर सारे उत्तर-पश्चिमी मैदानी प्रदेशों में फैल जाता है । पूरब की ओर यह मोगलसराय या मानभूम तक दिखाई पड़ता है और दक्षिण की ओर इसे अहमद नगर से आगे पाना संभव नहीं होता । जाड़ा समाप्त होते-होते यह फिर पश्चिम की ओर लौट जाता है ।

**विवरण** : चिल्लू की प्रायः सभी आदतें चिचरी और रूगेल से मिलती-जुलती होती हैं जिसका यह निकट सम्बन्धी है । इसे भी खुले मैदान, खेत और सरपत, घास तथा झाड़ियों से भरे स्थान पसन्द हैं, जहाँ यह कभी झाड़ियों पर बैठा कीड़े-फतिंगे पकड़ता रहता है और कभी-कभी जमीन पर उतर कर दाने और बीज चुनता रहता है, जो इसका मुख्य भोजन है । यह प्रायः जोड़े में या अकेला ही दिखाई पड़ता है ।

**घोंसला** : चिल्लू जोड़ा बाँधने के समय हमारे देश से वापस चला जाता है, लेकिन अपने देश में यह अप्रैल से जुलाई के बीच घोंसला बनाता है जो चौड़े कटोरे की शकल का रहता है । यह घोंसला सूखी और खुरदुरी घास और पतली जड़ों से बनाया जाता है जिसका भीतरी हिस्सा ऊन, बाल और महीन घास तथा जड़ों के टुकड़ों से मुलायम कर दिया जाता है ।

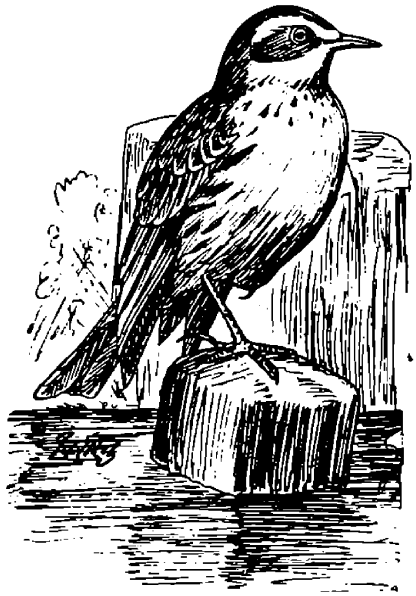
मादा ३-४ अंडे देती है जो चौड़े और बैजाबी होते हैं । ये अंडे भूरापन या हरापन लिए पत्थरी रंग के होते हैं और उन पर कत्थई और सिलेटी घनी बिन्दियाँ और धब्बे पड़े रहते हैं ।

अंडों की नाप करीब ०.८ × ०.६ इंच होती है ।

## १५४ रूगेल (Brown Rock Pipit : Anthus Similis)

**पर्याय** : बभ्रु शैल तुलिका ।

**पहचान** : भूरे रंग की छोटी-सी चिड़िया जिसकी पीठ चितकबरी और पेट हल्का भूरा रहता है। सीने पर कलछौंह चिह्न पड़े रहते हैं।



पहाड़ी चचरी

**रंग-रूप** : रूगेल चिचरी की जाति का पक्षी है जो कद में लगभग ८ इंच का होता है। इसके नर-मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। इसका ऊपरी भाग भूरा रहता है जिस पर कलछौंह भूरी या कत्थई चिह्न पड़े रहते हैं, जिससे यह चितकबरा-सा जान पड़ता है। आँख के ऊपर एक हलकी भूरी पट्टी चली जाती है। डैने गाढ़े भूरे रहते हैं, जिनके किनारे हलके भूरे रहते हैं। दुम भी गाढ़ी भूरी होती है जिसके दोनों किनारे के पंख सफेद रहते हैं।

नीचे का सारा भाग हलका भूरा रहता है लेकिन सीने पर कलछौंह भूरे चिह्न पड़े रहते हैं। आँख की पुतली भूरी, चोंच भी भूरी और टाँगे हलकी गुलाबी रहती हैं।

**विवरण** : रूगेल हमारे देश का बारहमासी पक्षी है जो हमारे सारे देश में फैला हुआ है। पहाड़ों पर भी यह ४-५ हजार फुट की ऊँचाई तक दिखाई पड़ता है। इसकी कई जातियाँ यहाँ पायी जाती हैं जिनमें चिचरी और चिल्लू मुख्य हैं। रूगेल कम ऊँचाई वाली फसल के खेतों और घास के मैदानों में रहती हैं। झीलों के किनारे और बड़ी नदियों, के रेतीले दलदल में रहना इसे खासतौर पर पसन्द है। यहाँ यह जमीन पर चुगती और दौड़ती रहती है। बाघा पड़ने पर यह फीकी आवाज करती हुई उड़ जाती है। इसकी आवाज को मीठी ही कहा जावेगा। यह प्रायः जाड़ों में रहती है। इन्हें यह पसन्द नहीं है कि अन्य जाति के पक्षी इनकी सीमा में आ जाये इसलिए ये दूसरी जाति के पक्षियों को अपनी सीमा से बाहर निकाल देती हैं।

यह झाड़ियों और घास के ऊपर फुदकती रहती है और पेड़ों पर नहीं रहती। जोड़ा बाँधने के समय नर हवा में गोते खाता और लहराता हुआ एक तरह की मीठी आवाज करता ऊपर की ओर उठता है और फिर गिरह खाता हुआ जमीन पर उतर आता है। उड़ते समय इसके पंख फैले रहते हैं।

**घोंसला** : इनके जोड़ा बाँधने का समय मार्च से जुलाई तक होता है। ये अपने घोंसले को जमीन पर ही किसी झाड़ी या घनी घास के बीच रखती हैं। घोंसले का आकार प्याले-जैसा होता है। कुछ घोंसले गुम्बदाकार भी होते हैं। ये सूखी और मोटी घास की पत्तियों या पतली जड़ों से बनाये जाते हैं। इनके अन्दर जड़ों के पतले टुकड़े, नरम घास और पर लगा देती हैं। मादा समय आने पर ३ या ४ अंडे देती है। जो चौड़े बैंजाबी और थोड़ी चमक वाले होते हैं। अंडे हलके भूरे रंग के होते हैं जिन पर कत्थई, बैंगनी और गाढ़ी भूरी बिन्दियाँ और चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

इनकी लंबाई चौड़ाई ०.८ × ०.६ इंच होती है।

## १५५ भरत (Little Sky Lark : Alauda Gulgula)

**पर्याय** : लघु भारत भारद्वाज, भरदूल, भरुही।

**पहचान** : भूरी धारियों वाली छोटी-सी चिड़िया जिसके नीचे का रंग फीका पिलछौंह सफेद होता है। यह खुले मैदानों में जमीन के ऊपर चुगती रहती है और जब ऊपर उड़ती है तो मीठी बोली बोलती है। जब कीई इसके पास पहुँच जाता है तो यह भाग जाने के बजाय वहीं दुबक कर बैठ जाती है।

**रंग-रूप** : लम्बाई ६ इंच। नर मादा एक जैसे। छोटी दबी हुई कलँगी सहित ऊपरी सारे पर भूरे होते हैं और परों के ऊपर काले चिह्न और रेखाएँ पड़ी रहती हैं। आँख के ऊपर भूरे रंग की एक धारी रहती है। पंख गहरे भूरे और उनके परों की कोरें बादामी होती हैं। बादामी कोर वाली दुम का रंग गहरा भूरा रहता है और परों के दोनों बाहरी पर हलके भूरे और फीके पीले होते हैं। निचला हिस्सा भूरा और फीका पीला होता है और इसके दोनों ओर तथा छाती पर गेहुँआँ रंग फिरा होता है। गले पर चित्तियाँ और सीने पर भूरी धारियाँ होती हैं। आँख की पुतली का रंग गहरा भूरा, चोंच और पैर का रंग पिलछौंह भूरा होता है।

**निवास** : भरत सारे दक्षिण एशिया में पाया जाने वाला पक्षी है जो हमारे देश में भी हिमालय से घुर दक्षिण तक देखा जा सकता है। इसकी कई जातियाँ हमारे देश में पायी जाती हैं जिनका रंग-रूप एक जैसा ही हो कर, कद में कुछ भेद रहता है।

सबसे बड़े कद वाले को "बरबरा" कहते हैं और बीच मझोले कद वाला "मरत" "भरही" या "भरदूल" के नाम से प्रसिद्ध है। सबसे छोटे को "कुस्तारा" के नाम से पुकारा जाता है। इन सब का स्वभाव एक-जैसा होता है इसलिए तीनों का अलग-अलग वर्णन देने में कोई विशेष लाभ नहीं है।

इनकी कुछ जाति के पक्षी पहाड़ों पर ५ हजार से १२ हजार की फुट की ऊँचाई पर रहते हैं। लेकिन जाड़ों में वे सब नीचे उतर कर सारे देश के मैदानों में फैल जाते हैं

**विवरण** : मरत खुले हुए स्थानों में रहने वाली चिड़िया है जो खेतों, मैदानों या इनके पास के चारागहों में रहती है। ऐसी ही जगहों पर ये भूमि के ऊपर पड़े बीजों, अनाज के दानों और कीड़े-फतिंगों को चुगती रहती है। अपने चितकबरे और भूरे रंग के कारण जब यह जमीन पर दुबक कर बैठ जाती है तो इस पर जल्द निगाह नहीं पड़ती। ये कुछ देर तक जमीन पर दुबकी रहती है और फिर एकाएक चहचहाती हुई हवा में उड़ जाती है और फड़फड़ाती और लहराती हुई, जमीन के ऊपर-नीचे उड़ान भरती है। जब इसे दूर जाना होता है तो ऊँची उड़ान भरती है।

बसन्त ऋतु में नर मादा को रिझाने के लिए निरन्तर गाता रहता है। इस गाने में अनेक चिड़ियों की ध्वनियों की नकल रहती हैं। मरत जब गाता हुआ हवा में ऊपर की ओर सीधे जाता है तो ऊपर ही की ओर अपना सिर उठाये रहता है और तेजी से पंख चलाता रहता है। अपनी इच्छित ऊँचाई पर पहुँच जाने पर यह वहीं काफी देर तक ठहरा रहता है। फिर यह उसी ढंग से नीचे उतरता है जैसे ऊपर चढ़ता है और जब जमीन की दूरी २५ फुट के लगभग रह जाती है तो अपना गाना बन्द कर देता है और अपने पंखों को फैला कर तेजी से जमीनपर गिर पड़ता है। कभी यह जमीन के ऊपर ही गाता रहता है।

**घोंसला** : मरत के जोड़ा बाँधने का समय मार्च से जुलाई तक रहता है जिसके बीच मादा दो बार अंडे देती है। दक्षिण की ओर पायी जाने वाली इसकी दूसरी जाति के अंडे नवम्बर तक मिलते हैं।

इनका घोंसला छोटे प्यालेनुमा होता है, जिसे ये घास-फूस से बनाती हैं। ये किसी झाड़ी या घनी घास के भीतर जमीन पर के गढ़े में रखे रहते हैं, जिनको ये अपने पंजों से खोद-खोद कर बनाती हैं। घोंसले के चारों ओर ये मिट्टी के टुकड़े रख देती हैं जिससे उस पर किसी की निगाह न पड़े।

समय आने पर मादा इसमें ३ से ५ तक अंडे देती है। अंडे चौड़े, बैजाबी और सिरे की ओर नोकीले रहते हैं और उन पर थोड़ी चमक भी रहती है।

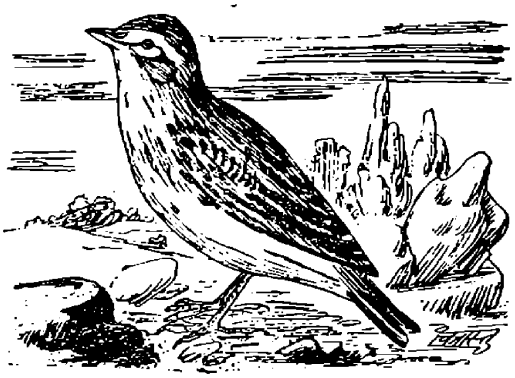
अंडे राखीपन या पीलापन लिये सफेद रहते हैं, जिन पर भूरी बैंगनी और नीली बिन्दियाँ और चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

अंडे लगभग ०.८३ × ०.६२ इंच के होते हैं।

## १५६ बगेरी (Short Toed Lark : Calandrella Brachydactyla)

**पर्याय** : बघेरी, बरगेलो, ह्रस्वागुलि व्याघ्राट।

**पहचान** : जाड़ों में हमारे देश में बड़े झुंडों में आने वाली चिड़िया जो मैदानों में फैल जाती है। इन छोटी हलकी सिलेटी रंग की छोटी चिड़ियों को पहचानना कठिन नहीं होता। इनके सीने पर धारियों के स्थान पर एक चित्ता रहता है।



बगेरी

**रंग-रूप** : बगेरी ६ इंच की छोटी-सी चिड़िया है, जिनके नर और मादा एक-जैसे रहते हैं। ऊपरी भाग का रंग भूरापन लिये हलका सिलेटी रहता है। और सारे शरीर पर कलछौंह भूरी लकीरें पड़ी रहती हैं। डैने गाढ़े भूरे रहते हैं जिनके किनारे हलके रंग के होते हैं। दुम भी गाढ़ी भूरी रहती है जो किनारे पर हलकी भूरी हो जाती है। दुम के किनारे के दोनों पर और भी हलके रंग के रहते हैं। आँख के ऊपर एक हलकी भूरी रेखा रहती है। नीचे का रंग सफेदी मायल रहता है जो सीने पर हलके भूरे रंग में बदल जाता है। कभी-कभी सीने पर धारियाँ भी पड़ी रहती हैं। सीने के दोनों ओर एक कलछौंह चित्ता रहता है। आँख की पुतली भूरी, चोंच सिलेटी भूरी और टाँगें भूरापन लिए गुलाबी रंग की होती है।

**निवास** : बगेरी यूरोप, अफ्रीका तथा एशिया में काफी संख्या में फैली हुई हैं जिसमें से दो जातियाँ जाड़ों में हमारे देश के मैदानों में आकर फैल जाती हैं। इन दोनों के रंग-रूप में थोड़ा ही भेद रहता है।

**विवरण** : बगेरी हमारे यहाँ की मौसमी चिड़िया है जो हमारे देश में सितम्बर में आकर यहाँ से अप्रैल के अन्त तक वापस चली जाती है। ये गिरोहों में दिखाई पड़ती है और अपना अधिक समय खुले मैदानों, खेतों और ऊसरी स्थानों में बिताती है। इसका मुख्य भोजन बीज, गल्ला और छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े हैं।

बगेरी पेड़ों पर नहीं बैठती और अपना सारा समय जमीन

पर ही बिताती है । इनके भूरे रंग और छोटे कद के कारण इन पर जल्द निगाह नहीं पड़ती और बहुत निकट पहुँच जाने पर ही ये उड़ती हैं । इनकी बोली कर्कश होती है।

**घोंसला** : बगेरी के जोड़ा बाँधने का समय मार्च से जुलाई तक रहता है जब ये सूखी घास का कटोरानुमा घोंसला बनाती हैं जिसका भीतरी हिस्सा बाल और ऊन आदि से मुलायम बना दिया जाता है ।

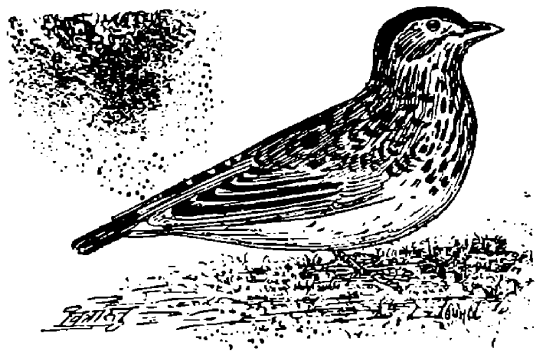
मादा समय आने पर ३ से ५ तक अंडे देती है जो पिलछौंह सफेद रहते हैं और जिन पर भूरी और सिलेटी बिन्दियाँ पड़ी रहती हैं ।

अंडे नाप में ०.७५ × ०.५५ इंच के होते हैं ।

## १५७ रेतल (Sand Lark : Calandrella Raytal)

**पर्याय** : सैकत कुकराट ।

**पहचान** : रेतल कद में बगेरी से छोटी होती है और अपना सारा समय बड़ी नदियों के किनारों के आस-पास बिताती है, इससे इसको पहचानने में ज्यादा कठिनाई नहीं होती ।



रेतल

**रंग-रूप** : रेतल ५ इंच की छोटी-सी चिड़िया है जिसके नर और मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं । शरीर का ऊपरी हिस्सा भूरापन लिये सिलेटी रहता है जिस पर कलछौंह भूरी धारियाँ पड़ी रहती है । डैने और दुम गाढ़ी भूरी रहती है । नीचे का हिस्सा सफेदी मायल रहता है जो सीने पर हलका भूरे रंग में बदल जाता है । आँख की पुतली भूरी, चोंच सिलेटी भूरी और टाँगे भूरापन लिये प्याजी रंग की होती है ।

**निवास** : रेतल यहाँ की बारहमासी चिड़िया है जो हमारा देश छोड़ कर बाहर नहीं जाती । यह अपना सारा समय बड़ी नदियों के किनारे बिताती है ।

**विवरण** : रेतल का स्वभाव तथा अन्य बातें बगेरी से मिलती-जुलती होती हैं । बड़ी नदियों के रेतीले किनारों पर इसे गिरोहों में बीज, गल्ला तथा कीड़े-मकोड़े से अपना पेट भरते देखा जा सकता है । रेतीले किनारों के निकट रहने के कारण ही इनको रेतल कहा जाता है । इनकी बोली कर्कश ही कही जायेगी ।

**घोंसला** : रेतल के जोड़ा बाँधने का समय मार्च से जुलाई तक रहता है जब ये सूखी घास का कटोरानुमा घोंसला बनाती हैं और उसे ऊन और बाल का अस्तर लगाकर मुलायम बना देती हैं ।

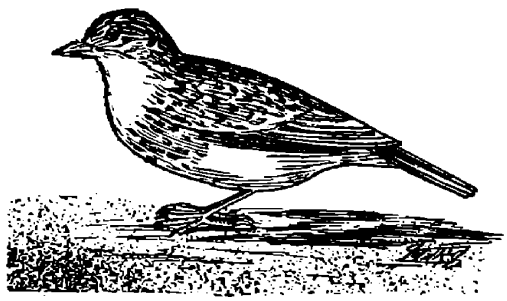
समय आने पर मादा ४-५ अंडे देती है जो पिलछौंह सफेद रहते हैं और उन पर भूरी और सिलेटी बिन्दियाँ पड़ी रहती हैं ।

अंडे लगभग ०.७० × ०.५० इंच के होते हैं ।

## १५८ अगिन (Bengal Bush Lark : Mirafra Assamica)

**पर्याय** : चिरचिरा, बंग क्षुप कुकराट, भिरीरी ।

**पहचान** : अगिन मैदान की चिड़िया है जो खुले मैदानों और खेतों में चुगती हुई और झाड़ी के ऊपर बैठी हुई देखी जा सकती है । इसके ऊपर का रंग गहरा राखी-भूरा और नीचे का ललछौंह भूरा होता है । इसकी पहचान इसके शरीर की भारी बनावट और ऊपरी अंगों के गहरे राखी रंग से हो जाती है ।



अगिन

**रंग-रूप** : लम्बाई ६ इंच । नर-मादा एक-जैसे । दुम के ऊपरी भाग को छोड़ कर ऊपरी हिस्से का सारा रंग गहरा राखी भूरा रहता जिस पर कलछौंह धारियाँ पड़ी रहती हैं । पंखों का रंग गहरा भूरा, दुम भूरी और उसका किनारा हलका बादामी, रहता है सिर के दोनों हिस्से गेहुँआ भुरे रहते हैं । ठोड़ी और गले का रंग गेहुँआ सफेद और निचले हिस्से का शेष भाग भूरा रहता है । सीने पर भूरी धारियाँ और भूरे रंग के त्रिकोण बने रहते हैं । आँख की पुतली पिलछौंह भूरी, चोंच गुलाबी और टाँगे गुलाबीपन लिये सफेद रहती हैं ।

**निवास** : अगिन भारत के उत्तरी पूर्वी भागों में अम्बाला से लेकर कटक और बंगाल तक पायी जाती है । यह भारत में स्थायी रूप से रहने वाली चिड़िया है जो हमारा देश छोड़ कर बाहर नहीं जाती ।

**विवरण** : अगिन पानी के निकट के स्थानों पर रहना अधिक पसन्द करती है । इसे खुले मैदानों खेतों तथा जंगलों के

किनारे भी देखना कठिन नहीं होता। यह प्रायः जमीन पर ही गल्ला, बीज और छोटे कीड़े-मकोड़े से अपना पेट भरती है और थोड़ी-थोड़ी देर पर उड़ कर पास की झाड़ियों और छोटे पेड़ों पर जा बैठती है। उड़ते समय यह एक प्रकार की हलकी-सी बोली बोलती है।

**घोंसला** : अगिन के जोड़ा बाँधने का समय मई से जून तक रहता है। इसके घोंसले घास-फूस और जड़ों के होते हैं, जो बहुत ढीले-ढाले से रहते हैं। ये घोंसले किसी झाड़ी में जमीन पर ही रखे रहते हैं और उनके भीतर जाने के लिए बगल से या ऊपर से एक सूराख रहता है।

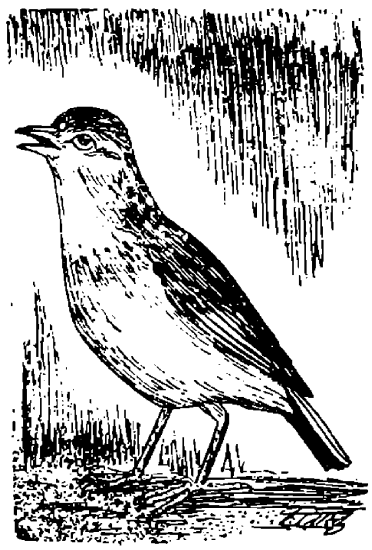
मादा समय आने पर २ से ५ तक अंडे देती है जो चौड़े और बैजावी होते हैं। अंडों पर थोड़ी चमक भी रहती है। अंडे हलके राखीपन लिये सफेद होते हैं, जिन पर भूरी या बादामी हलकी बिन्दियाँ और चिह्न रहते हैं।

अंडों की नाप लगभग ०.८३ × ०.६१ इंच होती है।

## १५९ मालती (Singing Bush Lark : Mirafra Javanica)

**पर्याय** : मधुर क्षुप ककराट, मालवी।

**पहचान** : इस छोटी चिड़िया का ऊपरी भाग राखी भूरा और नीचे का हिस्सा हलका बादामी रहता है। दुम के बाहरी पंख सफेद रहते हैं।



मालती

**रंग-रूप** : मालती अगिन, अगिया आदि का निकट सम्बन्धी पक्षी है, जिसका रंग-रूप उन्हीं जैसा होता है। इसके नर और मादा एक ही जैसे होते हैं जिनका ऊपरी हिस्सा राखी भूरा और नीचे का भाग हलका बादामी होता है। ऊपरी हिस्से पर कलछौंह भूरी रेखाएँ पड़ी रहती हैं। डैने गाढ़े भूरे, दुम भूरी और सर के दोनों रुख बादामी रहते हैं। गला और ठुड्डी हलका बादामी सफेद रहती है। सीने पर भी धारियाँ और तिकोने भूरे चिह्न पड़े रहते हैं। इस जाति के अन्य पक्षियों से इसको इसकी दुम के बाहरी सफेद पंखों से पहचानना कठिन नहीं होता। आँख की पुतली पिलछौंह भूरी, चोंच सिलेटी और टाँग गुलाबी मायल सफेद रहती हैं।

**निवास** : मालती हमारे देश में पंजाब, राजपूताना और दक्षिण भारत के कुछ पश्चिमी स्थानों को छोड़ कर सारे देश में पायी जाती है। यह यहाँ की बारहमासी चिड़िया है जो हमारा देश छोड़ कर बाहर नहीं जाती।

**विवरण** : मालती पानी के आस-पास के खुले मैदानों, खेतों और जंगलों में रहना पसन्द करती है। यह जमीन पर बीज, दाने और कीड़े-मकोड़ों से अपना पेट भरती है लेकिन खतरा निकट देखकर पास ही झाड़ी या पेड़ों पर उड़ कर बैठ जाती है। उड़ते समय यह एक प्रकार की धीमी और सुरीली बोली बोलती है।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय मई से जून तक रहता है जब मादा २ से ५ तक अंडे देती है। इसका घोंसला घास और पतली जड़ों का होता है जो ढीला-ढाला और मद्दा-सा रहता है। ये घोंसले किसी झाड़ी के भीतर जमीन पर ही रखे रहते हैं जिनमें भीतर जाने के लिए ऊपर एक सूराख रहता है।

इसके अंडे चौड़े बैजावी होते हैं जिन पर थोड़ी चमक रहती है। अंडे हलके भूरे या पत्थरी रंग के होते हैं जिन पर पिलछौंह भूरी या सिलेटी बिन्दियाँ और चिह्न पड़े रहते हैं।

नाप में ये लगभग ०.८३ × ०.६० इंच के होते हैं।

## १६० अगिया (Ring-Winged Bush Lark : Mirafra Erythroptera)

**पर्याय** : रक्त पक्ष, क्षुप ककराट।

**पहचान** : यह भूरे रंग की छोटी-सी चिड़िया है जिसके पंख कत्थई रंग के होते हैं। यह रेतीले मैदानों में छोटे और बड़े झुंडों में दिखाई पड़ती है। अगिन, मालती, चंडूल तथा रेतल की जाति की इस पक्षी को पहचानना कठिन नहीं होता।

**रंग-रूप** : अगिया ६ इंच की छोटी-सी चिड़िया है जिसके नर और मादा एक ही जैसे होते हैं। इनका ऊपरी हिस्सा बादामीपन लिये भूरा रहता है जिस पर कलछौंह भूरी धारियाँ पड़ी रहती हैं। डैने भूरे रहते हैं जिनके किनारे हलके बादामी हो जाते हैं। दुम कलछौंह भूरी रहती है जिसके नीचे की ओर किनारे के दोनों पंख हलके बादामी होते हैं। आँख के ऊपर एक बादामी रेखा पड़ी रहती है। गला और ठुड्डी सफेदी मायल रहते हैं।

नीचे का सारा हिस्सा हलका बादामी रहता है जिस पर सीने के पास कलछौंह भूरे तिकोने चिह्न पड़े रहते हैं। आँख की पुतली भूरी, चोंच सिलेटी भूरी और टाँगे गंदी गुलाबी रंग की होती है।

**निवास** : अगिया हमारे देश की बारहमासी चिड़िया है जो हिमालय की तराई से लेकर दक्षिण भारत तक देखी जा सकती है।

**विवरण** : अगिया झुंड में रहने वाली चिड़िया है जो खुले मैदानों, खेतों, झाड़ियों तथा घास से भरे हुए स्थानों पर आसानी से दिखाई पड़ती है। यह वैसे जमीन पर दाना, बीज और छोटे कीड़े-मकोड़ों को पकड़ कर अपना पेट भरती है, लेकिन खतरा निकट देख कर इनके झुंड जमीन से उड़ कर छोटे पेड़ों, झाड़ियों या टेलीग्राफ के तारों पर जा बैठते हैं। उड़ते समय ये एक प्रकार की बीमी सुरीली बोली बोलती है। जोड़ा बाँधने के समय इनकी बोली अक्सर सुनाई पड़ती है।

**घोंसला** : अगिया के जोड़ा बाँधने का समय मार्च से अक्टूबर तक रहता है। इनके घोंसले घास-फूस और महीन जड़ों से बने होते हैं जो छिछले कटोरेनुमा होते हैं। ये अपने घोंसलों को किसी घनी झाड़ी में जमीन पर ही रख देती हैं जो आसानी से देखे नहीं जा सकते।

मादा इसमें ३ से ५ तक अंडे देती है जो बैंजाबी और थोड़ी चमक वाले होते हैं। अंडे सफेद होते हैं लेकिन उन पर हलकी अंगूरी या बादमी झलक रहती है। अंडों पर घनी ललछौंह भूरी और सिलेटी बिन्दियाँ पड़ी रहती हैं।

नाप में अंडे लगभग ०.७६ × ०.५९ च के होते हैं।

## १६१ चंडूल (Crested Lark : Galerida Cristata)

**पर्याय** : तिलक, कंटक।

**पहचान** : यह अगिन, अगिया और बगेरी जाति का प्रसिद्ध पक्षी है जो अपनी नोकीली चोटी के कारण आसानी से पहचाना जाता है। इसका ऊपरी हिस्सा राखी भूरा और नीचे का हलका भूरा रहता है। ऊपरी भाग पर गाढ़ी कत्थई धारियाँ पड़ी रहती हैं।

**रंग-रूप** : चंडूल ७ इंच का पक्षी है जिसका ऊपरी भाग राखीपन लिये भूरा रहता है और उस पर कलछौंह भूरी धारियाँ पड़ी रहती हैं। सर पर एक नोकीली चोटी रहती है जिससे इसको पहचानने में भूल नहीं हो सकती। डैने भूरे रहते हैं जो किनारे पर हलके रंग के हो जाते हैं। दुम भी भूरी रहती है जिसके किनारे के पंख राखी हो जाते हैं। दुम के किनारे के पंख कुछ ललछौंह भूरे रहते हैं। आँख के ऊपर एक बादामी रेखी पड़ी रहती है और नीचे का सारा हिस्सा हलके बादामी रंग का होता है जिस पर सीने पर भूरी धारियाँ पड़ी रहती हैं। आँख की पुतली हलकी भूरी और चोंच तथा टाँगें गाढ़ी सिलेटी रहती हैं।

**निवास** : चंडूल की वैसे तो बीसियों जातियाँ हैं जो यूरोप, रूस के दक्षिणी तथा अफ्रीका के उत्तरी भाग में फैली हुई हैं, लेकिन हमारे देश में इसकी दो जातियाँ ही दिखाई पड़ती हैं। इन दोनों में एक जाति तो भारत के उत्तरी भाग में हिमालय की तराई से मध्य भारत तक दिखाई पड़ती है और दूसरी हमारे देश में जाड़ों में पश्चिमी भाग में आकर जाड़ा समाप्त होते-होते फिर यहाँ से लौट जाती है। हम यहाँ उसी चंडूल का वर्णन दे रहे हैं जो यहाँ का बारहमासी पक्षी है और जो हमारा देश छोड़ कर बाहर नहीं जाता।

**विवरण** : चंडूल का यह नाम इसकी नोकीली चोटी के कारण मिला है। यह यहाँ का बहुत प्रसिद्ध पक्षी है जिसे लोग इसकी मीठी बोली के कारण पालते हैं। यह खुले और रेतीले मैदानों में रहना पसन्द करता है और इसे छोटे और बड़े गिरोहों में देखा जा सकता है। यह बहुत निडर पक्षी है जो बहुत पास जाने पर ही उड़ता है। इसे प्रायः जमीन पर बीज, दाना और छोटे कीड़े-मकोड़े चुगते देखा जा सकता है। यह खतरा निकट आने पर उड़ कर पास के छोटे पेड़ों तथा झाड़ियों पर जा बैठता है। इसे टेलीग्राफ के तारों पर भी बैठे देखा जा सकता है।

चंडूल उड़ते या जमीन पर चुगते समय एक प्रकार की मीठी बोली बोलता है जो टीटुर्-टी टुर् से मिलती-जुलती होती है।

**घोंसला** : चंडूल के जोड़ा बाँधने का समय मार्च से जून तक रहता है जिसके बीच मादा ३ से ५ तक अंडे देती है। इसके घोंसले घास-फूस के होते हैं जिनका भीतरी हिस्सा महीन घास और परों से मुलायम बना दिया जाता है। घोंसले किसी झाड़ी के भीतर जमीन पर ही रखे रहते हैं और उनकी बनावट कटोरे-नुमा होती है। अंडे चौड़े और बैंजाबी होते हैं जिन पर थोड़ी चमक भी रहती है। ये हलके अंगूरी या पिलछौंह सफेद होते हैं जिन पर भूरी और बैंगनी चित्ते और बिन्दियाँ पड़ी रहती हैं।

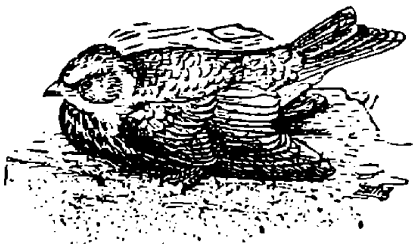
अंडों की नाप लगभग ०.८७ × ०.६५ इंच रहती है।

## १६२ भरदूल (Rufous-Tailed Lark : Ammomanes Phoenicura)

**पर्याय** : रक्तपुच्छ कृकराट, भरुही।

**पहचान** : भरदूल भरत, बगेरी तथा अगिन आदि का निकट

सम्बन्धी है, जिसका ऊपरी भाग भूरा और नीचे का ललछौंह भूरा रहता है। इसकी चटक ललछौंह दुम के कारण इसे पहचानने में कठिनाई नहीं होती ।



माइल

**रंगरूप** : भरद्वल ६ इंच की छोटी-सी चिड़िया है, जिसके नर-मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। इसके शरीर का ऊपरी भाग गाढ़ा भूरा और नीचे का ललछौंह भूरा रहता है। डैने भूरे रहते हैं और उनके किनारे सिलेटी भूरे। दुम ललछौंह भूरी रहती है, जिसके शरीर पर एक काली पट्टी पड़ी रहती है। सर के दोनों रुख ललछौंह भूरे रहते हैं और आँख के ऊपर एक हलकी ललछौंह भूरी रेखा रहती है। गला, ठुड्डी और सीने पर भूरी रेखाएँ पड़ी रहती हैं। आँख की पुतली भूरी, चोंच सिलेटी भूरी और टाँगें गंदे गुलाबी रंग की रहती हैं। चोंच मोटी और कुछ झुकी हुई रहती है ।

**निवास** : भरद्वल हिमालय की तराई से दक्षिण भारत तक देखा जा सकता है। यह यहाँ का बारहमासी पक्षी है जो हमारा देश छोड़ कर बाहर नहीं जाता।

इसकी कई जातियाँ यहाँ पायी जाती हैं जिनके रंग-रूप में थोड़ा भेद भले ही हो, लेकिन सब की आदतें और स्वभाव एक-जैसे ही होते हैं।

**विवरण**: भरद्वल खुले मैदानों और खेतों में अक्सर छोटे और बड़े गिरोहों में दिखाई पड़ते हैं। ये अपना अधिक समय जमीन पर ही बिताते हैं, लेकिन इन्हें अक्सर झाड़ियों, छोटे पेड़ों और टेलीग्राफ के तारों पर भी बैठे देखा जा सकता है। ये एक प्रकार की धीमी किन्तु सुरीली बोली बोलते हैं जिससे इन्हें पहचानने में कठिनाई नहीं होती ।

**घोंसला** : भरद्वल के जोड़ा बाँधने का समय फरवरी से अप्रैल तक रहता है। ये अपना घास-फूस का घोंसला जमीन पर ही किसी गड्ढे में रखते हैं जिसके चारों ओर ये छोटे पत्थरों की दीवाल-सी बना देते हैं।

मादा समय आने पर ३-४ अंडे देती है जो लम्बोतरे बैंजाबी होते हैं और जिन पर थोड़ी चमक भी रहती है। अंडे संदली या पिलछौंह सफेद होते हैं जिन पर ललछौंह भूरी या बैंगनी चित्तियाँ और बिन्दियाँ पड़ी रहती हैं।

अंडे लगभग ०.८५ × ०.६२ इंच के होते हैं।

## १६३ उसर बगेरी (Ashy Crowned Finch Lark : Eremopteryx Crisea)

**पर्याय** : दिउली, दूरी, जुठौली, देवरा, उसर बघेरी, घूसर कुब्ज कृकराट, दबक चिरई।

**पहचान** : अगिन और मरत जाति की छोटी-सी चिड़िया, जिसका ऊपरी भाग सिलेटी भूरा और नीचे का हलका बादामी भूरा रहता है। नर के निचले हिस्से का रंग अधिक गाढ़ा होता है। ये झुंडों में रहती हैं।



उसर बगेरी

**रंग-रूप** : उसर बगेरी ५ इंच की छोटी-सी चिड़िया है जिसके नर का ऊपरी हिस्सा सिलेटी भूरा और नीचे का कत्थई भूरा रहता है। दुम गाढ़ी भूरी रहती है जिसके बीच के दोनों पंख हलके भूरे और बाहरी दोनों पंख सफेदी मायल रहते हैं। सीने के दोनों ओर कान के ऊपर सफेद चित्ते रहते हैं।

मादा का ऊपरी भाग, डैने, दुम गाढ़ी भूरी होती है जिसमें सिलेटी और ललछौंह झलक रहती है। नीचे का हिस्सा हलका ललछौंह भूरा रहता है। आँख की पुतली भूरी, चोंच निलछौंह गुलाबी, टाँगें गुलाबी मायल भूरी रहती हैं। चोंच छोटी और कुछ झुकी हुई रहती है।

**निवास** : उसर बघेरी हिमालय की तराई से घुर दक्षिण भारत तक फैली हुई है। यह हमारे देश की बारहमासी चिड़िया है जो हमारा देश छोड़ कर बाहर नहीं जाती।

**विवरण** : उसर बगेरी, जैसा इसके नाम से स्पष्ट है, खुले मैदानों और ऊसरी क्षेत्र में रहने वाली चिड़िया है जिसे जंगल और घने पहाड़ पसन्द नहीं हैं। जोड़ा बाँधने के समय यह प्रायः जोड़े में दिखाई पड़ती है, लेकिन वैसे इन्हें छोटे-बड़े झुंडों में ही देखा जा सकता है। कटे हुए खेत, मैदान तथा ऊसरी क्षेत्र में इनका झुंड जमीन पर बीज, गल्ला और कीड़े-मकोड़े चुगता रहता है और जरा-सी भी आहट होने पर ये उड़ कर पास की झाड़ियों और पेड़ों पर बैठ जाती हैं।

अपने रेतीले भूरे रंग के कारण ये जमीन में ऐसी छिप जाती हैं कि बहुत निकट जाने पर ही इनकी उपस्थिति का पता चलता है ।

**घोंसला** : उसर बगेरी के जोड़ा बाँधने का समय जनवरी से सितम्बर तक रहता है जिसके बीच ये दो बार अंडे देती हैं ।

नर जोड़ा बाँधने के समय हवा में उड़ कर अपने सौंदर्य का प्रदर्शन करता है और एक प्रकार की ट्री, ट्री, ट्री, जैसी मीठी बोली बोल कर पंख फैलाये हुए नीचे उतरता है। इस प्रकार मादा को रिझा कर यह उससे जोड़ा बाँधने के बाद अपने घोंसले के निर्माण में जुट जाता है ।

इसका घोंसला महीन घास और जड़ों का होता है जिसके भीतर मुलायम परों का अस्तर रहता है । घोंसला जमीन पर किसी छिछले गढ़े में रखा रहता है जिसे ये मिट्टी या पत्थरों के टुकड़ों से घेर देते हैं ।

मादा समय आने पर २ या ३ अंडे देती है जो लम्बोतरे और थोड़ी चमक वाले होते हैं । अंडे पिलछौंह, हरछौंह या सिलेटी मायल सफेद रहते हैं जिन पर भूरी अथवा सिलेटी घनी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं ।

अंडे लगभग ०.७० × ०.५० इंच के होते हैं ।

## १६४ बाबुना (White Eye : Zosterops Palpebrosa)

**पर्याय** : सित नयनी, बबूना ।

**पहचान** : बाबुना मैदानी और पहाड़ी क्षेत्रों में काफी संख्या में पायी जाती है । इसका आकार छोटा, रंग ,चमकीला पीला और सीने तथा पेट का रंग भूरापन लिये सफेद होता है । छोटी टेढ़ी चोंच और आँख के ऊपर के छल्ले को देख कर इसे आसानी से पहचान लिया जाता है । इसकी आवाज भी एक अलग किस्म की होती है ।

**रंग-रूप** : बाबुना ४ इंच की छोटी-सी चिड़िया है जिसके नर-मादा एक-जैसे होते हैं । इसका ऊपरी भाग हरछौंह सुनहरा पीला और पंखों के छिपे भागों और दुम का रंग गहरा भूरा होता है । आँख के ऊपर एक छल्ला होता है जिसका रंग सामने और नीचे गहरा काला होता है । ठोड़ी और गला चमकीला पीला, निचला हिस्सा हरछौंह सफेद और दुम के पंखों का रंग पीला होता है । आँख की पुतली भूरी, चोंच काली और टाँगों का रंग गाढ़ा सिलेटी होता है । चोंच टेढ़ी और नोकीली होती है ।

**निवास** : बाबुना की कई जातियाँ हैं जो अफ्रीका, दक्षिणी एशिया और आस्ट्रेलिया तक फैली हैं । इसकी अनेक जातियाँ एशिया के काफी हिस्से में फैली हैं । हमारे यहाँ केवल चार जातियाँ पायी जाती हैं जिसमें थोड़ा ही भेद रहता है । यहाँ जिस जाति का वर्णन दिया जा रहा है वही सबसे प्रसिद्ध पक्षी है । हमारे देश में यह प्रायः सभी स्थानों पर पायी जाती है । यह यहाँ की बारहमासी चिड़िया है जो थोड़ा बहुत स्थान परिवर्तन करके भी हमारा देश छोड़कर बाहर नहीं जाती ।

**विवरण** : बाबुना पेड़ पर रहने वाली चिड़िया है जो कभी पेड़ से नीचे नहीं उतरती । इसे ऐसे ही स्थान पर देखा जा सकता है जहाँ पेड़ हों । इसके सबसे अधिक प्रिय स्थान बाग और खेतों के पास के पहाड़ी जंगल तथा अनेक प्रकार के वृक्ष और फूल वाली झाड़ियाँ हैं । यहाँ ये कीड़े-मकोड़े, झींगुर, चींटियाँ और उनके अंडे, छोटी कलियाँ, बीज और जंगली फल इत्यादि से अपना पेट भरती रहती हैं ।

इनको जोड़ा बाँधने के समय तो जाड़े में देखा जा सकता है, लेकिन वैसे तो ये छोटे-छोटे झुंडों में रहती हैं । ये अन्य चिड़ियों के साथ नहीं मिलतीं और अपने भोजन की तलाश में ही लगी रहती हैं । थोड़ी-थोड़ी देर पर ये एक प्रकार की बोली बोलती रहती हैं । यह बहुत ही चंचल चिड़िया है जो आहट पाते ही पेड़ों पर बैठने के लिए उड़ान भर लेती है ।

जोड़ा बाँधने के समय नर मादा को रिझाने के लिए गाता है । इसका गाना मीठा और सुरीला होता है । यह अपने गाने का प्रारम्भ इतने धीरे से करता है कि सुनाई भी नहीं पड़ता लेकिन धीरे-धीरे वह तेजी पकड़ता है और बाद में कर्कश लगने लगता है और फिर बिना किसी परिवर्तन के यह उसको दुहराता रहता है।

**घोंसला** : बाबुना के जोड़ा बाँधने का समय स्थान के अनुसार जनवरी से सितम्बर तक रहता है। इसका घोंसला सुन्दर, छोटे प्याले की तरह होता है जो दो टहनियों के बीच लटकता रहता है । यह नरम घास के तनों और जड़ों से बनाया जाता है । ये घोंसले ऐसी झाड़ियों में रखे जाते हैं जिनकी ऊँचाई ६ से ८ फुट तक होती है । बहुत से घोंसले बड़े पेड़ों पर भी बनाये जाते हैं ।

समय आने पर मादा २ से ४ अंडे देती है। अंडों का आकार कुछ लम्बा और सिरे की ओर नोकीला होता है जिन पर चमक नहीं होती । अंडे निलछौंह या हरछौंह सफेद होते हैं जिन पर किसी प्रकार के चिह्न और बिन्दियाँ नहीं रहतीं ।

नाप में ये अंडे ०.६२ × ०.४५ इंच के होते हैं ।

## १६५ पिलपिठा शकरखोरा (Yellow-Backed Sunbird : Aethopyga Siparaja)

**पर्याय** : पीतकटि शींजिरिका ।

**पहचान** : नर का ऊपरी भाग लाल सिंदूरी, दुम के पास का हिस्सा पीला और नीचे का हिस्सा जैतूनी सिलेटी रहता है ।

मादा का ऊपरी हिस्सा गाढ़ा सिलेटी जैतूनी रहता है और नीचे का कुछ हलका होता है। नर की दुम लम्बी और मादा की छोटी होती है।

**रंग-रूप** : पिलपिठा शकरखोरा ६ इंच की छोटी-सी चिड़िया है जिसके नर की चोटी हरी, गुद्दी भूरी हरी, सर के दोनों रुख, गरदन और सारा ऊपरी भाग सिंदूरी लाल रंग का होता है। दुम का ऊपरी हिस्सा चटक पीला, डैने के बड़े पंख गाढ़े भूरे और दुम बैंगनीपन लिये काली रहती है। दुम के बीच के दोनों पर और अन्य परों के किनारे हरे रहते हैं। गला, ठुड्डी और सीना चटक लाल और नीचे का शेष भाग गंदा जैतूनी सिलेटी रहता है। डैने के नीचे एक पिलछौंह सफेद चित्ता पड़ा रहता है। चोंच लम्बी पतली और नीचे की ओर झुकी रहती है और दुम के बीच के दो पंख काफी लम्बे होते हैं।

मादा का ऊपरी हिस्सा, गरदन और सिर के दोनों रुख धुमैले जैतूनी सिलेटी रहते हैं। डैने और दुम गहरी भूरी रहती है और दुम के परों के किनारे सुनहरे जैतूनी और सिरे सफेद होते हैं। नीचे का सारा हिस्सा गंदा जैतूनी पीला रहता है और डैने के नीचे एक हलका पीला चित्ता पड़ा रहता है। आँख की पुतली गाढ़ी भूरी, चोंच कलछौंह भूरी और टाँगें कत्थई भूरी रहती हैं।

**निवास**: पिलपिठा शकरखोरा सारे भारतवर्ष में फैला हुआ है। यहाँ यह हिमालय में ६-७ हजार फुट तक देखा जा सकता है। इसकी कई जातियाँ हैं जिनके रंग-रूप में थोड़ा भेद रहता है, लेकिन सब के स्वभाव और रहन-सहन में भेद नहीं होता। यहाँ जिस पिलपिठे शकरखोरा का वर्णन दिया जा रहा है वही हमारे देश का प्रसिद्ध पक्षी है।

**विवरण**: इस शकरखोरे को ऐसे घने जंगल पसन्द हैं जो पानी के निकट हों। नम स्थानों की अपेक्षा यह रूखे-सूखे स्थानों को नहीं पसन्द करता। यह बहुत शर्मीली चिड़िया है जिसकी बोली तेज़ और सुरीली होती है। इसका मुख्य भोजन फूल का रस और फूलों के भीतर रहने वाले छोटे कीड़े हैं।

**घोंसला**: इस शकरखोरा के जोड़ा बाँधने का समय अप्रैल से जुलाई तक रहता है। लेकिन दक्षिण भारत में रहने वाले शकरखोरे अपना घोंसला मई से अक्तूबर तक बनाते हैं। अन्य शकरखोरों की तरह इनके घोंसले भी नाशपाती की शक्ल के होते हैं जिनमें एक ओर से भीतर जाने के लिए छेद रहता है। घोंसले घास-फूस तथा पतली जड़ों से बनाये जाते हैं जिनका भीतरी हिस्सा परों और मुलायम घास से नरम बना दिया जाता है।

घोंसले किसी झाड़ी या छोटे पेड़ पर लटके रहते हैं जिनमें मादा समय आने पर २-३ अंडे देती है। अंडे बैंजावी होते हैं जिन पर चमक नहीं रहती।

अंडों का रंग मक्खनी या संदली सफेद रहता है जिन पर ललछौंह भूरी और कत्थई चित्तियाँ और बिन्दियाँ पड़ी रहती हैं।

अंडे लगभग ०.६ × ०.४५ इंच के होते हैं।

## १६६ शकरखोरा (Purple Sunbird : Cinnyris Asiaticus)

**पर्याय**: जुगजुगी, सामान्य निलाम्बर, शीजिरिका।

**पहचान**: बाग-बगीचों के फूलों के आस-पास रहने वाली इस छोटी-सी काली चिड़िया को आसानी से पहचाना जा सकता है। मादा का ऊपरी भाग भूरा और नीचे का पीला रहता है और नर-मादा दोनों की चोंच लम्बी और टेढ़ी होती है।

**रंग-रूप** : यह ४ इंच की छोटी चिड़िया हमारे यहाँ के प्रसिद्ध पक्षियों में से एक है। इसके नर का सर, गर्दन, सीना और ऊपर का सारा भाग काला होता है जिसमें एक प्रकार की हरछौंह बैंगनी झलक रहती है। डैने भूरापन लिये काले और दुम निलछौंह काली होती है। सीने पर कभी-कभी एक भूरी पतली आड़ी पट्टी पड़ी रहती है। नीचे का शेष भाग भी बैंगनीपन लिये काला होता है और डैनों के नीचे छोटे परों के लाल और पीले गुच्छे रहते हैं।

मादा का ऊपरी भाग, डैने, गरदन और चेहरे के दोनों बगली हिस्से हरछौंह भूरे रहते हैं और नीचे का सारा हिस्सा चटक पीला रहता है। दुम गाढ़ी भूरी रहती है जिसके बाहरी पंखों के सिरे सफेद होते हैं। जाड़ों में नर भी करीब-करीब मादा के रंग का हो जाता है लेकिन उसकी ठुड्डी से पेट तक एक गाढ़ी बैंगनी पट्टी पड़ी रहती है। आँख की पुतली भूरी, लम्बी, नोकीली और नीचे की ओर झुकी हुई चोंच काली रहती है। टाँगें भी काली होती हैं।

**निवास**: यह शकरखोरा हमारे देश में फैला हुआ है। हिमालय में यह ५ हजार फुट तक और दक्षिण के पर्वतों पर यह इससे भी अधिक ऊँचाई तक देखा जा सकता है। यह यहाँ का बारहमासी पक्षी है जिसकी कई जातियाँ यहाँ पायी जाती हैं, लेकिन इन सब में यही सबसे अधिक प्रसिद्ध पक्षी है।

**विवरण**: छोटे से काले रंग के शकरखोरे को फूलों के आस-पास देखना कठिन नहीं होता। यह फूलों का रस चूसने के लिए या तो किसी पतली डाली पर बैठा रहता है या फूलों के पास अपने पंख तेजी से चला कर हवा में उड़ते-उड़ते फूलों का रस पीता दिखाई पड़ता है। इसकी जुबान काफी लम्बी गोल मुग्दर-जैसी होती है जिसे लम्बे फूलों के भीतर डाल कर यह

उसका रस सोख लेता है। वैसे तो फूल का रस ही इसकी मुख्य खुराक है, लेकिन यह फूल के भीतर के कीड़े-मकोड़ों को भी खाने में परहेज नहीं करता। यही नहीं, यह छोटी जोराइयाँ, मनिखयाँ और मकड़ियों से भी अपना पेट भरता है। यह बहुत ढीठ पक्षी है जिसे हम अपने घर के बरामदों की लताओं में डालियों पर फुदकते देख सकते हैं। इसे ऊसरी और बंजर मैदान पसन्द नहीं हैं और इसे हम फूल वाली लताओं, झाड़ियों तथा छोटे वृक्षों के आस-पास ही देख सकते हैं।

शकरखोरा को पुष्पों के संवर्धन का काम भी जैसे प्रकृति की ओर से मिला है। जब यह किसी बड़े फूल में अपना सर घुसेड़ कर रस पीता है तो उसका पराग इसके सर पर लग जाता है। फिर जब यह उसी जाति के दूसरे वृक्ष में जाकर किसी फूल में अपना सर डालता है तो यह पराग उसमें लगकर उसे गर्भित कर देता है। उड़ते समय यह एक प्रकार की तेज बोली बोलता है लेकिन कभी-कभी नर पक्षी किसी पेड़ की फुनगी पर बैठ कर बहुत सुरीली बोली भी बोलता है।

**घोंसला** : शकरखोरा के जोड़ा बाँधने का समय जनवरी से अगस्त तक रहता है जिसके बीच मादा दो बार अंडे देती है जो २-३ से अधिक नहीं होते। इसका घोंसला नाशपाती की शकल का या अंडाकार रहता है जिसको ये महीन घास, ऊन, बाल, सूखी पत्तियों तथा इसी प्रकार के अन्य पदार्थों से बनाते हैं। घोंसले का बाहरी भाग महीन रेशों तथा मकड़ी के जाले से चिकना और मजबूत बना दिया जाता है और भीतरी हिस्सा भी मुलायम कर दिया जाता है। ये घोंसले किसी झाड़ी, लता या छोटे वृक्ष की किसी डाली में तीन-चार फुट की ऊँचाई पर लटका दिये जाते हैं। इसके अंडे चौड़े, बैंजाबी और सिरे की ओर नोकीले रहते हैं जिनका रंग गंदा सफेद, हलका बादामी या हलका अंगूरी होता है। अंडों पर छोटी-छोटी भूरी, सिलेटी या बैंगनी बिन्दियाँ पड़ी रहती हैं।

नाप में ये अंडे करीब ०.६४ × ०.४६ इंच के होते हैं।

## १६७ जुगजुगी (Purple Rumped Sunbird : Cinnyris Zeylonicus)

**पर्याय** . नीलारुण कटि, शीजिरिका ।

**पहचान** : यह छोटी-सी चिड़िया, जिसके नर का ऊपरी भाग लाल, डैने भूरे, दुम काली और नीचे का हिस्सा चटक पीला रहता है। मादा का रंग नर से हलका रहता है और गला सफेद होता है ।

**रंग-रूप** : जुगजुगी ४ इंच की छोटी-सी चिड़िया है जिसके नर के सर और दुम का ऊपरी हिस्सा हरछौंह बैंगनी रंग का होता है । शरीर का बाकी हिस्सा घुमैला लाल रहता है । डैने भूरे होते हैं, जिनके किनारे ललछौंह रहते हैं । दुम काली होती है जिनके बाहरी परों के सिरे हलके हो जाते हैं । सर के दोनों रुख भूरे, गला और ठुड्डी हलकी बैंगनी और गले से सीने तक का हिस्सा लाल रहता है । उसके आगे नीचे का सारा हिस्सा चटक पीला रहता है और डैनों के नीचे का कुछ भाग सफेद होता है ।

मादा का ऊपरी हिस्सा राखीपन लिये भूरा रहता है । डैने भूरे और दुम नर की तरह काली होती है । आँख के ऊपर एक हलकी सफेद रेखा रहती है जिसके नीचे एक गाढ़ी रेखा चली जाती है । गला, दाढ़ी और गाल हलका राखीपन लिये सफेद रहते हैं । नीचे का सारा भाग पीला और डैने के नीचे का हिस्सा सफेद रहता है । आँख की पुतली लाल तथा चोंच और टाँगे काली रहती है । चोंच लम्बी, पतली तथा टेढ़ी रहती है ।

**निवास** : जुगजुगी हमारे देश में प्रायः सभी स्थानों पर पायी जाती है । उत्तर भारत की अपेक्षा यह दक्षिण भारत में अधिक संख्या में दिखाई पड़ती है । जहाँ इसे नीलगिरि पर्वत पर ढाई हजार फुट की ऊँचाई तक देखना कठिन नहीं होता। यहाँ यहाँ की बारहमासी चिड़िया है जो बराबर यही रहती है ।

**विवरण** : इस सुन्दर और छोटी-सी चिड़िया से हम सभी बहुत परिचित हैं । इसे पानी के निकट के नम स्थान और जंगल और बाग-बगीचे बहुत पसन्द हैं। यह अकेले या जोड़े में दिखाई पड़ती है और बड़ी फुरती से इधर-उधर चक्कर लगाती रहती है । यह छोटे कीड़े-मकोड़ों तथा फूल के रस के लिए एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर फुदकती रहती है और कभी जमीन पर नहीं उतरती। उड़ते समय यह एक प्रकार की धीमी बोली बोलती है जिसे मीठी न कह कर कर्कश ही कहा जायेगा। इनकी और बातें अन्य शकरखोरों से मिलती-जुलती होती हैं ।

**घोंसला** : जुगजुगी के जोड़ा बाँधने का समय प्रायः साल भर तक चलता रहता है लेकिन इसके अधिक घोंसले फरवरी से अगस्त तक दिखाई पड़ते हैं । साल में मादा दो बार अंडे देती है । जुगजुगी के घोंसले बहुत सुन्दर और अन्य शकरखोरों की तरह नाशपाती की शक्ल के होते हैं जिन्हें ये मुलायम घास, पतली जड़ों और पत्तियों से बनाती हैं । भीतर जाने के लिए ऊपर या बगल में एक छेद रहता है । भीतर का हिस्सा परों आदि से मुलायम कर दिया जाता है । ये घोंसले किसी झाड़ी या छोटे पेड़ों पर तीन-चार फुट की ऊँचाई पर लटकते रहते हैं । मादा समय आने पर इसमें २ अंडे देती है ।

अंडे चौड़े और बैंजाबी होते हैं। ये अंगूरी या हलके बादामी-

पन लिये सफेद रहते हैं जिन पर सिलेटी भूरी चित्तियाँ और चिह्न पड़े रहते हैं। ये चिह्न पेंदे की ओर अधिक रहते हैं।

अंडे लगभग ०.६५ × ०.४७ इंच के होते हैं।

## १६८ फुलचुही (Tickells Flower Pecker : Dicaeum Erythrorhynchos)

**पर्याय** : फुलसरा, बंग पुष्प प्रिय।

**पहचान** : फुलचुही बहुत छोटी जैतूनी रंग की चिड़िया है जिसका निचला हिस्सा पिलछौंह रहता है। चोंच टेढ़ी और पतली होती है। यह वृक्षों पर रहने वाली चिड़िया है जो जमीन पर नहीं उतरती।

**रंग-रूप** : लम्बाई ३ इंच। नर-मादा एक-जैसे। ऊपरी हिस्से का रंग राखिया जैतूनी। चोटी के परों का रंग गाढ़ा और पंखों के छिपे भाग का रंग भूरा रहता है। नीचे का भाग धूमिल पीला होता है। आँख की पुतली भूरी, चोच गुलाबीपन लिये कलछौंह और टाँगे निलछौंह सिलेटी रहती हैं। चोंच टेढ़ी नोकीली और पतली होती है।

**निवास** : फुलचुही भारतवर्ष के अतिरिक्त, लंका और बर्मा के दक्षिणी-पश्चिमी भागों में भी पायी जाती है। यह भारतवर्ष में स्थायी रूप से रहने वाली चिड़िया है।

**विवरण** : फुलचुही आकार में चाहे छोटी क्यों नहो पर इसकी महत्ता काफी है। बाँदा (लोरेंथस) जाति के परोपजीवी लताएँ जहाँ होती हैं यह वहीं मुख्यतया रहती है। इस जाति के परोपजीवी पौधों का विस्तार इन्हीं के कारण होता है। भारत के पश्चिमी भागों में बाँदा जाति के परोपजीवी पौधे आम और महुए आदि के वृक्षों पर बहुत होते हैं। इसके फूल पूरे साल भर रहते हैं। इन फूलों पर यह दिन भर फुदकती रहती है। यह बहुत ही चंचल होती है अतः एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर, फुलों के एक गुच्छे से दूसरे गुच्छे पर चिक्-चिक् करती हुई दिन भर फुदकती फिरती है। यह अवाज बदलती रहती है। यह उनके पके फलों को समूचा निगल जाती है। तीन-चार फल निगल चुकने पर यह दूर के किसी सूखे पेड़ की डाल पर अपने पंख फैला कर बैठ जाती है और एक-एक करके खाये हुए फलों के बीज निकालती है। बीजों को निकालते समय यह इधर-उधर बैठे ही बैठे हिलने-डुलने लगती है। बीज उगलने के साथ-साथ काफी लिसलिसा पदार्थ धागे की तरह इसके मुँह से निकलता है जिसमें खाये फलों के बीज चिपके रहते हैं। ये बीज डालियों पर लग जाते हैं और नया पेड़ उगने लगता है। इसकी पाचन क्रिया काफी तेज होती है। तीन-चार मिनट के बाद यह बीज खाना और उगलना शुरू कर देती है और फिर उसी प्रकार से चुहलभरी आवाज करती हुई फूलों के गुच्छों पर जा बैठती है। इस प्रकार परोपजीवी पौधों के विस्तार में इसका काफी हाथ होता है।

**घोंसला** : फुलचुही के जोड़ा बाँधने का समय फरवरी से मार्च तक रहता है। इसका घोंसला जुगजुगी की तरह होता है जो आकार में नाशपाती-जैसा होता है। यह अपने घोंसले को पेड़ की किसी टहनी पर लटका देती है जिसमें भीतर जाने का रास्ता ऊपर की ओर होता है। भूमि से इसकी ऊँचाई १० से २० फुट तक रहती है। यह अपना घोंसला नरम घास, रेशों, सूखी पत्तियों तथा ऊन, बाल और कागज के टुकड़ों से बनाती है जिसे मकड़ी के जाले से लपेट कर मजबूत बना दिया जाता है। भीतरी हिस्सा परों और नरम रेशों से मुलायम कर दिया जाता है। समय आने पर मादा १ से ३ तक अंडे देती है जो लम्बोतरे, सफेद और बिना चमक के रहते हैं।

अंडे नाप में लगभग ०.५८ × ०.४१ इंच के होते हैं।

## १६९ फुलसुँघी (Thick Billed Flower Pecker : Piprisoma Agite)

**पर्याय** : स्थूल चंचु पुष्प प्रिय।

**पहचान** : फुलसुँघी छोटी-सी चिड़िया है जिसके ऊपर का रंग राखी भूरा और नीचे का फीका भूरा होता है। सीने के ऊपर हलकी धारियाँ होती हैं। इसकी आवाज तीखी होती है। यह मुख्यतया वृक्षों पर रहती है और वृक्षों के परोपजीवी पौधों पर बैठती है। इसकी चोंच की उभार को देख कर इसे अन्य चिड़ियों से पहचानना जा सकता है।

**रंग-रूप** : लम्बाई ५ इंच। नर-मादा एक-जैसे। इसके ऊपरी भाग का रंग राखी भूरा और दुम के ऊपर जैतूनी हरे रंग की झलक होती है। पंखों का रंग गहरा भूरा रहता है जिनके किनारे जैतूनी हरे रंग की होते हैं। परों के ऊपर सफेद हलकी चित्तियाँ होती हैं और अन्तिम परों पर ये चित्तियाँ कुछ अधिक चौड़ी हो जाती हैं। सर और गरदन के दोनों रुख का रंग राखी भूरा, ठोढ़ी और गले का रंग सफेद और नीचे का सारा भाग सिलेटी रहता है। सीने और दोनों बगल पर राखी भूरी धारियाँ पड़ी रहती हैं। आँख की पुतली नारंगी भूरी और चोंच तथा टाँगे निलछौंह सिलेटी रहती है। चोंच छोटी, भद्दी और सूजी-सूजी-सी रहती है।

**निवास** : फुलसुँघी सारे भारतवर्ष में हिमालय की तराई से घुर दक्षिण तक पायी जाती है। पहाड़ों पर भी यह ५ हजार फुट तक दिखाई पड़ती है।

**विवरण** : फुलसुँघी की आदतें बहुत कुछ फुलचुही की तरह होती हैं। यह घने और नम जंगलों में रहती है और अकेले ही एक

झुरमुट से दूसरे झुरमुट में उड़ती रहती है। इसकी आवाज अपनी जाति की अन्य चिड़ियों की तरह होती है लेकिन इसकी आवाज में थोड़ा तीखापन अधिक रहता है। जब यह झुरमुटों में दाना चुगती है तो अपनी छोटी दुम एक ओर से दूसरी ओर हिलाती रहती है। यह फुलचुही की तरह गुठली के सहित फल को नहीं निगलती बल्कि गुठली निकाल कर उसे खा लेती है।

आम, महुआ आदि वृक्षों पर बांदा (लोरेंथस) जाति के परोपजीवी पौधों के निकट इसे देखा जा सकता है जिसके फलों के गूदे को खाकर यह उनके बीज को डालियों पर छोड़ देती है जहाँ से नये परोपजीवी पौधे उगने लगते हैं।

**घोंसला** : फुलसुँघी के जोड़ा बाँधने का समय फरवरी से जून तक रहता है जब यह मुलायम घास-फूस, रेशों, जड़ों तथा इसी तरह की चीजों से अपना थैलेनुमा छोटा घोंसला बनाती है जो पेंदे की ओर चौड़ा रहता है। इसमें भीतर जाने के लिए ऊपर की ओर एक छेद रहता है। घोंसले को ये किसी डाल से लटका देती है जो जमीन से २०-२५ फुट तक की ऊँचाई तक देखे जा सकते हैं। इनके घोंसले आम और महुआ आदि वृक्षों पर जहाँ बांदा आदि परोपजीवी पौधों की बहुतायत रहती है, अधिक दिखाई पड़ते हैं।

समय आने पर मादा २ से ४ तक अंडे देती है। ये बैंजाबी और बिना चमक के होते हैं। अंडों का रंग हलका गुलाबी या प्याजी रहता है जिन पर हलकी कत्थई बिन्दियाँ तथा धब्बे पड़े रहते हैं। ये चिह्न पेंदे की ओर ज्यादा रहते हैं

अंडे लगभग ०.६५ × ०.४५ इंच के होते हैं।

## १७० सतरंगा (Indian Pitta : Pitta Brachyura)

**पर्याय** : भारत पदम पुष्प, नौरंग, नौरतन, मलागीर।

**पहचान** : सतरंगा, जैसा इसके नाम से स्पष्ट है, कई रंगों वाला पक्षी है जिसकी बनावट भद्दी, दुम छोटी और टाँगे मजबूत होती हैं। ऊपरी हिस्से में नीले, हरे, काले, सफेद, गेहुँए तथा लाल रंग का मेल रहता है और नीचे का हिस्सा हलका बादामी होता है। दुम के नीचे एक लाल चित्ता पड़ा रहता है।



सतरंगा

**रंग-रूप** : सतरंगा ७ इंच का पक्षी है जिसके नर और मादा एक ही जैसे होते हैं। इसके सर का ऊपरी भाग गेहुँआ रहता है जिसके बीच में एक चौड़ी काली पट्टी पड़ी रहती है। एक काली चौड़ी पट्टी आँख के ऊपर हो कर जाती है और गुद्दी पर जाकर सर के बीच की काली पट्टी में मिल जाती है। आँख के ऊपर एक पतली सफेद धारी रहती है। पीठ और कंधे हरे, दुमगजा चटकीला नीला, दुम काली और डैने तथा बड़े पंख हरे और नीले रहते हैं। गला और ठोड़ी सफेद तथा नीचे का शेष भाग हलका बादामी रहता है, जिस पर दुम के नीचे एक चटक लाल चित्ता पड़ा रहता है। आँख की पुतली गाढ़ी भूरी, चोंच काली और टाँगे हलकी बैंगनी रहती हैं।

**निवास** : सतरंगा हमारे देश में हिमालय की तराई से दक्षिण भारत तक फैला हुआ है। यह यहाँ का स्थायी रूप से रहने वाला पक्षी है जो थोड़ा स्थान परिवर्तन करके भी हमारा देश छोड़ कर बाहर नहीं जाता।

**विवरण** : सतरंगा छोटा रंगीन पक्षी है जो अपना अधिक समय जमीन पर ही बिताता है। इसकी दुम छोटी, डैने गोल तथा टाँगे लम्बी और मजबूत होती हैं जिसके कारण यह जमीन पर बहुत तेजी से इधर-उधर दौड़ता फिरता रहता है। इसे खुले मैदान, खेत बाग-बगीचे तथा झाड़ियों और घास-फूस से भरे मैदान बहुत पसन्द हैं जहाँ यह कीड़े-मकोड़ों से अपना पेट भरता रहता है। यह शरमीला पक्षी नहीं है और निकट जाने पर ही उड़ता है पेड़ों पर यह बहुत कम बैठता है। यह एक प्रकार की पी टु वी अथवा वीट पीयू जैसी मीठी और तेज बोली बोलता है और बोलते समय मुर्गी की तरह सर पीछे की ओर करके सीना आगे की ओर बढ़ा देता है।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय जून से अगस्त तक रहता है जब नर और मादा एक गोल गुम्मदनुमा घोंसला मिलकर बनाते हैं जिसमें भीतर जाने के लिए बगल में एक सूराख रहता है। घोंसले घास-फूस, पत्तियों तथा महीन जड़ों से बनाये जाते हैं जिनका भीतरी भाग नरम जड़ों और रेशों से मुलायम कर दिया जाता है। ये घोंसले या तो जमीन पर किसी झाड़ी के भीतर रखे रहते हैं या इनको ये किसी दुफंकी डाल पर लटका देते है। समय आने पर मादा इनमें ४–५ अंडे देती है जो काफी चौड़े और बैंजाबी होते हैं। इन पर काफी चमक भी रहती है। अंडे वैसे तो सफेद रहते हैं लेकिन उन पर गाढ़ी कत्थई और बैंगनी बिन्दियाँ, चिह्न तथा धारियाँ-सी पड़ी रहती हैं।

नाप में अंडे करीब १.०० × ०.८६ इंच के रहते हैं।

## १७१ टकटोला (Scaly Bellied Green Wood Pecker : Picus Squamatus)

**पर्याय** : शल्कोदर, हरित काष्ठ कूट ।

**पहचान** : हरछौंह रंग की चिड़िया जिसकी कलँगी लाल और नीचे का हिस्सा काले चिह्नों से भरा रहता है। यह पेड़ों के ऊपर झटके देकर चढ़ती है तथा लहराती हुई एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उड़ती है ।



टकटोला

**रंग-रूप** : लम्बाई १४ इंच । नर के सर का ऊपरी भाग और कलँगी का रंग सिंदूरी, ऊपरी भाग हरा और दुम की जड़ों के पास का हिस्सा चटक पीला होता है । पंख भुरछौंह काले होते हैं। उन पर हरे रंग की झलक होती है। सभी परों के ऊपर चित्तियाँ तथा पिलछौंह सफेद और सफेद रंग की पट्टियाँ होती हैं । दुम का रंग भूरा रहता है जिस पर सफेद खड़ी धारियाँ पड़ी रहती हैं। और उसकी निचली सतह पिलछौंह रहती है। आँख के ऊपर एक सफेद पिलछौंह रेखा होती है तथा इसके ऊपर और नीचे कलछौंह रेखाएँ होती हैं। गले और सीने का रंग पिलछौंह भूरा होता है नीचे का शेष भाग सफेद होता है जिस पर काले रंग के चिह्न पड़े रहते हैं। मादा के सर के ऊपर सिंदूरी की जगह काला रंग होता है और हरछौंह खाकी रंग के चिह्न बने होते हैं। आँख की पुतली गहरी गुलाबी लाल होती है। चोंच पीली जो नथुनों के पास सींगिया रंग की होती है। टाँगे हरछौंह सिलेटी रहती हैं ।

इसकी चोंच लम्बी सुदृढ़ और काटने की मशीन की तरह होती है । ऊपर का जबड़ा खड़ा और छेनी के आकार का होता है । इसकी जीभ बहुत ज्यादा लम्बी और गोल होती है जिसे यह बाहर निकाल सकती है । जीभ में काफी लिसलिसापन होता है और इसका सिरा नोकीला होता है । इसके पंजों में दो जोड़े होते हैं । दूसरी, तीसरी, उँगली आगे को और पहली और चौथी पीछे की ओर होती है । दुम के पर कड़े, नोकीले और सीढ़ी-नुमा होते हैं ।

**निवास** : टकटोला बिलोचिस्तान, अफगानिस्तान और हिमालय के पश्चिमी भागों में पाया जाता है । इसकी दो जातियाँ होती हैं । एक हिमालय के पश्चिमी भागों में और दूसरी सम्पूर्ण भारत में पायी जाती है । पहाड़ों पर इसे पाँच से दस हजार फुट तक देखा जा सकता है ।

यह यहाँ की बारहमासी चिड़िया है जो थोड़ा स्थान-परिवर्तन करके भी हमारे देश से बाहर नहीं जाती ।

**विवरण** : टकटोला सभी प्रकार के जंगलों में रहता है । यह कभी-कभी मैदानों के पेड़ों के ऊपर भी घूमता रहता है । इसे अधिक झिझक नहीं लगती । इसलिए यह पेड़ों के तनों पर अपना काम करते हुए देखा जा सकता है । यह कीड़े से भरी हुई पेड़ की छाल को अपनी छेनी जैसी चोंच से काट कर उसे अपना पेट भरता है और कभी कभी भूमि पर चींटियाँ और दीमकों को खाने के लिए भी घूमता रहता है । जब यह चुगने का काम नहीं करता तो पेड़ की किसी डाल पर बैठ कर आराम करता है । ऐसी स्थित में बैठकर यह अपने सिर, गर्दन और शरीर के ऊपरी हिस्सों को हिलाता-डुलाता रहता है । यह कभी-कभी अपनी चोंच से लकड़ी के ऊपर ठोकर मारने लगता है जिसकी आवाज काफी दूर तक सुनाई पड़ती है । चुगते समय यह लगातार बोलता रहता है । इसकी उड़ान तेज और लहरदार होती है और उड़ते समय इसके पंखों के कड़े और खुरखुरे परों से एक प्रकार की अवाज निकलती रहती है ।

**घोंसला** : टकटोला के जोड़ा बाँधने का समय मार्च से मई तक रहता है । लेकिन इसके सबसे ज्यादा अंडे अप्रैल में मिलते हैं । यह अपना घोंसला पेड़ की डाल को छेदकर बनाता है । जिसकी लम्बाई १० इंच से २० इंच तक होती है । यह छेद यह प्राकृतिक ढंग से बने खोखले वाली डालों में बनाती है । मादा इसमें ५ से ६ तक अंडे देती है ।

इसके अंडे चौड़े और बेज़ावी होते हैं जो सिरे की ओर दबे रहते हैं । अंडों का रंग शुद्ध चीनी मिट्टी जैसा सफेद होता है और उन पर तेज चमक रहती है ।

अंडो की लम्बाई-चौड़ाई १.२८ × ०.९३ इंच होती है ।

## १७२ तुरकान (Brown-Fronted Pied Wood Pecker : Dryobates Auriceps)

**पर्याय** : बभ्रु-भाल कर्बुर काष्ठकूट।

**पहचान** : तुरकान की कई जातियाँ होती हैं। हिमालय के पश्चिमी भाग में पाये जाने वाले तुरकान का ऊपरी रंग काला

होता है जिन पर सफेद धारियाँ पड़ी होती हैं। नीचे सफेद रंग के साथ काली धारियाँ होती हैं।

**रंग-रूप** : लम्बाई ८ इंच। नर के माथे पर चोटी का रंग लालछौंह भूरा, कलँगी सामने से सुनहरी पीली और पीछे से गहरे लाल रंग की होती है। सर के दोनों रुख, गर्दन और ठोड़ी सफेद होती है जिसमें हल्का काला रंग मिला होता है। शरीर के ऊपरी हिस्से का रंग काला होता है लेकिन पीठ और कंधे के ऊपरी भाग पर सफेद रंग की आड़ी रेखाएँ पड़ी रहती हैं। पंख काले होते हैं और उनके ऊपर सफेद चित्तियाँ होती हैं। दुम काली होती है जिनके बाहरी परों पर बूमिल सफेद धारियाँ होती हैं। निचले हिस्से का रंग गेहुँआ सफेद रहता है जिस पर पीले रंग की झलक होती है और इसके ऊपर छोटी-छोटी काली धारियाँ पड़ी होती हैं। गालों के दोनों रुखों पर भूरे रंग की चौड़ी पट्टी होती है जो गर्दन के दोनों ओर चित्तियों के रूप में बदल जाती है। दुम के नीचे एक सिंदूरी चित्ता रहता है।

मादा की कलँगी में सुनहरा, गहरा लाल रंग नहीं होता और उसके मस्तक और कलँगी का रंग लाल की अपेक्षा कुछ अधिक पीला होता है। आँख की पुतली गहरी लाल, चोंच गाढ़ी सिलेटी और टाँगे गंदी सिलेटी मायल हरी रहती हैं।

**निवास**: तुरकान हिमालय के पश्चिमी भागों में २,००० हजार से लेकर ७,५०० फुट की ऊँचाई पर रहता है। यह यहाँ की स्थायी रूप से रहने वाली चिड़िया है, जो हमारे देश को छोड़ कर बाहर नहीं जाती।

**विवरण** : तुरकान हिमालय के पश्चिमी भागों में पाया जाता है। यह मुख्य रूप से ओक, चीड़ और देवदार के जंगलों में रहता है किन्तु खेतों और बागों में भी दिखाई पड़ता है। इसको मनुष्य की उपस्थिति से डर नहीं लगता। तुरकान की आवाज तेज होती है। यह कुछ रुक-रुक कर बोलता रहता है।

**घोंसला**: इसके जोड़ा बाँधने का समय अप्रैल से मई तक है जब यह अपना घोंसला किसी डाल में सुरंग के आकार का छेद बनाकर तैयार करती है और उस छेद के सिरे पर रखे हुए लकड़ी के छोटे टुकड़ों पर मादा ३ से ५ तक अंडे देती है। एक-आध मौकों पर ये अपना घोंसल पेड़ के पुराने खोखलों में भी बना लेते हैं। घोंसले की ऊँचाई जमीन से ५ फुट से लेकर ४० फुट तक रहती है। इनके अंडे लम्बे और नोकीले होते हैं। ये सुन्दर, चमकदार और चिह्न रहित सफेद होते हैं।

अंडे की लम्बाई चौड़ाई ०.९२ × ०.६८ इंच होती है।

## १७३ चीतल कठफोर (Mahratta Wood Pecker : Dryobates Mahrattensis)

**पर्याय**: ललपेटा कठफोर, दक्षिण कर्बुर, काष्ठ कूट।

**पहचान**: चीतल कठफोर मैदानों में काफी संख्या में दिखाई पड़ता है। कद में छोटे और रंग में इस मटमैले कठफोर के ऊपर कालछौंह भूरी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं। ऊपर का सारा भाग सर तक भुरछौंह पीला होता है। नर की चोटी सिन्दूरी रंग की रहती है।

**रंग-रूप** : लम्बाई ७ इंच। नर का माथा और कलँगी भुरछौंह पीली, चोटी सिन्दूरी, और गरदन का पिछला भाग धुँआ-जैसा काला रहता है। कंधे के ऊपर भुरछौंह काला और सफेद रंग रहता है जो इकसार नहीं होता। पंखों का रंग कलछौंह भूरा रहता है। जिसके ऊपर सफेद रंग की काफी बिन्दियाँ होती है। दुम का रंग सफेद, बिन्दीदार, कलछौंह भूरा होता है जो नीचे से गेहुँआ सफेद लगता है। ठोड़ी, गला और गर्दन के दोनों रुख सफेद होते हैं। गर्दन की बगलों में एक भूरे रंग की पट्टी होती है जो सीने की बगलों में आकर धारियों में बदल जाती हैं। निचला भाग भूरे रंग की धारियों वाला होता है और पेट के निचले हिस्से के मध्य भाग में सिन्दूरी रंग रहता है।

मादा की चोटी में सिन्दूरी रंग नहीं होता। आँख की पुतली गहरी भूरी, आँख के ऊपर का धब्बा सिलेटी, चोंच और टाँगों का रंग गाढ़ा चमकीला सिलेटी होता है।

**निवास**: चीतल कठफोर भारतवर्ष के अलावा लंका के उत्तरी भागों में तथा बर्मा में भी पाया जाता है। यह हिमालय की तराई से लेकर दक्षिण भारत तक पाया जाता है। हिमालय में यह २,५०० फुट तक दिखाई पड़ता है। यह यहाँ का स्थायी पक्षी है जो हमारा देश छोड़ कर बाहर नहीं जाता।

**विवरण**: यह कठफोर हमारे देश में काफी फैला हुआ है। इसे न तो बहुत घने जंगल ही पसन्द हैं और न एकदम खुले मैदान ही। यह बाग-बगीचों और ऐसे स्थानों में रहना पसन्द करता है जो खेतों से भरे रहते हैं। यह बहुत ढीठ पक्षी है जो सड़क के किनारे पेड़ों पर कीड़े-मकोड़ों से अपना पेट भरता रहता है। इसकी बोली हलकी-सी पीक्-पीक् जैसी होती है। यह प्रायः अकेला ही दिखाई पड़ता है लेकिन जोड़ा बाँधने के बाद इसे हम जोड़ों में ही देखते हैं। यह अपनी तेज चोंच से पेड़ के तनों में लम्बा सूराख बनाता है जिसमें समय आने पर मादा अंडे देती है।

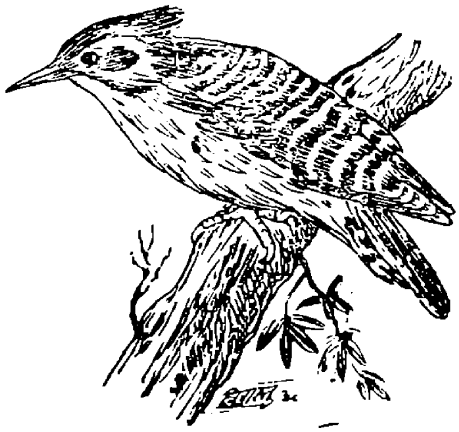
**घोंसला**: चीतल कठफोर के जोड़ा बाँधने का समय फरवरी से अप्रैल तक रहता है जब ये किसी पेड़ के तने में एक सुरंगनुमा लम्बा छेद अपनी तेज और नोकीली चोंच से बनाते हैं। ये छेद एक फुट से डेढ़ फुट तक लम्बे होते हैं जिसके भीतरी सिरे पर ये लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़े रख देते हैं। मादा समय आने पर इसमें २–३ अंडे देती है जो लम्बोतरे और चमकदार होते हैं।

अंडे धुर सफेद होते हैं और लगभग ०.८७ × ०.६८ इंच के होते हैं।

## १७४ छोटा कठफोर (Jn. Pigmy Wood Pecker : Dryobates Hardwickii)

**पर्याय** : उत्तर वामन, काष्ठ कूट।

**पहचान** : छोटा-सा कठफोर जिसका ऊपरी हिस्सा कलछौंह भूरा और नीचे का भाग भूरा रहता है। पीठ पर गहरी धारियाँ पड़ी रहती हैं।



छोटा कठफोर

**रंग-रूप** : छोटा कठफोर ५ इंच का पक्षी है जिसके नर और मादा एक-जैसे रहते हैं। इसका ऊपरी भाग कलछौंह भूरा रहता है जिस पर गाढ़ी धारियाँ और चित्ते पड़े रहते हैं। नीचे का हिस्सा भूरा रहता है जिस पर तितरी-बितरी गाढ़ी बिन्दियाँ पड़ी होती हैं। डैने भूरे, जिन पर सफेद चित्तियाँ और दुम कलछौंह भूरी रहती है। आँख की पुतली लाल, चोंच सिलेटी और टाँगे गाढ़ी चमकदार सिलेटी रंग की रहती हैं।

**निवास** : छोटा कठफोर हमारे देश में हिमालय की तराई से घुर दक्षिण तक पाया जाता है। पश्चिम की ओर यह राजस्थान और पंजाब में नहीं दिखाई पड़ता। यह यहाँ का बारहमासी पक्षी है जो यहाँ स्थायी रूप से रहता है।

**विवरण** : छोटा कठफोर यहाँ का बहुत परिचित पक्षी है। जिसे बाग-बगीचों, सड़क के किनारे के वृक्षों तथा घास और झाड़ियों से भरे तितरे-बितरे जंगलों में रहना बहुत पसन्द है। यह न तो घने जंगलों में रहता है और न एकदम खुले हुए स्थानों में। यह बहुत ढीठ पक्षी है जो बहुत निकट जाने पर भी नहीं उड़ता। यह अपना अधिक समय किसी पेड़ की डाली पर बैठ कर पेड़ पर के कीड़े-मकोड़ों से अपना पेट भरता रहता है। पेड़ की पपड़ियों को अपनी चोंच से ठोंक-ठोंक कर यह कीड़ों को बाहर निकाल लेता है और उनको चट कर जाता है। इसकी बोली बहुत धीमी होती है। पेड़ की पपड़ियों को ठोंकने के समय यह बराबर बोलता रहता है।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय फरवरी से अप्रैल तक रहता है लेकिन मार्च में इसके अधिक अंडे पाये जाते हैं। यह या तो किसी पेड़ के पुराने खोंथे को सुधार कर अपने घोंसले के लिए लम्बी सुरंग-सी बना लेता है या फिर किसी सूखी-डाल में १०–१५ इंच का लम्बा छेद बनाकर उसमें लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़े रख देता है। मादा समय आने पर इसी में २–३ अंडे देती है जो लम्बोतरे, चमकदार और घुर सफेद होते हैं।

अंडों की नाप लगभग ०.९० × ०.६५ इंच रहती है।

## १७५ ललपिठा कठफोर (Rufous Wood Pecker : Micropternus Brachyurus)

**पर्याय** : आरक्त काष्ठ कूट।

**पहचान** : इस कठफोर का ऊपरी हिस्सा कत्थई और नीचे का फीका और कलछौंह रहता है। पीठ पर काली धारियाँ और डैने और दुम पर सेहर-जैसे निशान रहते हैं।

**रंग-रूप** : १० इंच लम्बा कत्थई रंग का कठफोर जिसके नर और मादा एक-जैसे होते हैं। इसकी पीठ कत्थई और काली धारियों से भरी रहती है। नीचे का हिस्सा ऊपर से कुछ फीका और कलछौंह रहता है। सर का ऊपरी भाग कलछौंह भूरा, डैने और दुम भूरी, जिन पर काली धारियाँ और सेहर-जैसे निशान पड़े रहते हैं। आँख के नीचे के परों के सिरे लाल रहते हैं और गले और ठुड्डी के परों के सिरे भूरे रहते हैं। आँख की पुतली भुरछौंह लाल, चोंच कलछौंह भूरी और टाँगे सिलेटी मायल भूरी रहती हैं।

**निवास** : इस कठफोर की वैसे तो तीन जातियाँ हमारे यहाँ पायी जाती हैं लेकिन तीनों के रंग-रूप में थोड़ा भेद होने पर भी सबका स्वभाव एक-जैसा ही होता है। यहाँ जिस कठफोर का वर्णन दिया जा रहा है वह हमारे यहाँ का प्रसिद्ध पक्षी है और यह हिमालय के पूर्वी भागों में तथा बंगाल, बिहार और मध्य प्रदेश के पूर्वी हिस्सों में पाया जाता है। दूसरी और तीसरी जाति के पक्षी दक्षिण भारत की ओर पाये जाते हैं। ये सभी पक्षी पहाड़ों पर केवल चार-पाँच हजार फुट तक देखे जा सकते हैं। और इन्हें खुले और मैदानी प्रान्त ही अधिक प्रिय हैं।

**विवरण** : ललपिठा कठफोर को घने जंगल पसन्द नहीं हैं। ये थोड़े-बहुत वृक्षों वाले चाय-बागानों, खुले खेतों, बाँस के झुरमुटों तथा तितरे-बितरे जंगलों में ही अपना समय बिताते हैं। केले के पेड़ों पर भी इन्हें देखा जा सकता है जिसके पत्तों के जड़ के पास ये अपनी तेज और नोकीली चोंच से छेद करके उसका रस पीते हैं। यह प्रायः अकेले या जोड़ों में दिखाई पड़ता है और अक्सर जमीन पर या पेड़ की निचली डाली पर बैठ कर अपनी चोंच से "ठुक्-ठुक्" करके पेड़ की पपड़ियों के कीड़ों को चुगता रहता है। पेड़ पर रहने वाली चींटियों को भी यह बड़े स्वाद से खाता है।

ललपिठा कठफोर और इन चींटियों का और भी अधिक सम्बन्ध होता है क्योंकि यह अपने घोंसले के लिए भी इन्हीं चींटियों के ऊपर निर्भर रहता है। इन चीटियों द्वारा बनाये घर में यह अपना घर बना लेता है। इनके घरों का व्यास ८ इंच से लेकर २ फुट तक होता है। इनकी ऊँचाई जमीन से ७ से ३० फुट तक होती है । इन घरों को चीटियाँ किसी दोशाखी डाल पर बनाती हैं। ललपिठा कठफोर इन चीटियों द्वारा बनाये घर में अपना घोंसला बना लेता है। चींटी और ये चिड़ियाँ दोनों एक दूसरे में दखलंदाजी नहीं करतीं।

**घोंसला**: ललपिठा कठफोर के जोड़ा बाँधने का समय फरवरी से जून तक रहता है। इसके अंडे लम्बे बैजावी होते हैं। मादा प्रायः ३ अंडे देती है जो धुर सफेद होते हैं।

अंडे की लम्बाई चौड़ाई १.०० × ०.७५ इंच होती है।

## १७६ सोनपिठा कठफोर (Golden-Backed Wood Pecker: Brachypternus Benghalensis)

**पर्याय**: स्वर्ण पिष्ठ काष्ठकूट, सोरन बढ़ई ।

**पहचान**: काले और सफेद रंग का सुन्दर कठफोर जिसकी पीठ सुनहरी और चोटी चटक लाल रहती है, इसे मैदानों पर पेड़ के तनों पर लगे हुए या एक दूसरे पेड़ पर उड़कर जाते देखा जा सकता है ।

**रंग-रूप** : यह ११ इंच लम्बा पक्षी है जिसके नर के सर का ऊपरी भाग और चोटी चटक लाल रंग की होती है। शरीर के ऊपर के कुछ पर काले और सफेद रहते हैं और सारी पीठ सुनहली रहती है। सर के बगली हिस्से और गरदन सफेद रहती है और एक काली रेखा आँख से गुद्दी तक चली जाती है। गरदन का पिछला भाग और दुम काली रहती है। डैने कंधे के पास काले रहते हैं जो आगे चल कर पिलछौंह जैतूनी हो जाते हैं। गला, टुड्डी और गरदन का ऊपरी हिस्सा काला रहता है। सीने पर काली और सफेद धारियाँ होती हैं और नीचे का शेष भाग हलका भूरापन लिए सफेद हो जाता है। मादा के सर की चोटी का आधा अगला भाग काला रहता है। आँख की पुतली ललछौंह भूरी, चोंच सिलेटी और टाँगे गाढ़ी हरछौंह सिलेटी रहती हैं ।

**निवास**: यह कठफोर हमारे देश का बारहमासी पक्षी है जो यहाँ हिमालय की तराई से धुर दक्षिण तक पाया जाता है। इसकी कई जातियाँ यहाँ पायी जाती हैं जिनके रंग-रूप में थोड़ा भेद होने पर भी उनका स्वभाव एक-जैसा ही रहता है। यहाँ जिस कठफोर का वर्णन दिया जा रहा है वही हमारे देश का सबसे प्रसिद्ध पक्षी है ।

**विवरण**: सोनपिठा कठफोर हमारे यहाँ पाये जाने वाले कठफोरों में सबसे अधिक प्रसिद्ध है। इसके चटक लाल और सुनहरे रंग के कारण इसको पहचानना कठिन नहीं होता। यह मैदान में रहने वाला पक्षी है जिसे न तो घने जंगल ही पसन्द हैं और न ऊँचे पहाड़ ही। खुले मैदानों, खेतों, बाग बगीचों तथा तितरे-बितरे झाड़ी और घास के जंगल इसे बहुत भाते हैं, और यह वहीं अपने भोजन की तलाश में चक्कर लगाता रहता है। इसे हम या तो किसी पेड़ के तने से चिपका हुआ देखते है या फिर एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उड़ कर जाते समय यह आसानी से दिखाई पड़ता है।

पेड़ के तनों पर यह अपने लम्बे पंजे के सहारे सीधा चिपक जाता है। और अपनी तेज चोंच से पेड़ की पपड़ियों को ठोंक-ठोंक कर उसके भीतर रहने वाले कीड़ों को बाहर करके उनसे अपना पेट भरता है। यह अपनी तेज चोंच से पेड़ में सूराख करता है और अपनी लम्बी और चिपचिपी जबान को भीतर डाल कर कीड़े-मकोड़ों और उनके अंडे बच्चों को उसी से चिपका लेता है जो आसानी से इसके पेट में पहुँच जाते हैं। पेड़ पर की चींटियाँ भी इसे बहुत पसन्द हैं। कभी-कभी यह कीड़े-मकोड़ों और चींटियों के लिए जमीन पर भी उतर आता है। यह अकेले या जोड़े में दिखाई पड़ता है।

इसकी उड़ान बोझिल और भारी होती है और इसकी बोली तेज और कर्कश होती है जिसे यह पेड़ पर बैठे-बैठे और उड़ते समय बोलता रहता है।

**घोंसला**: इस कठफोर के जोड़ा बाँधने का समय फरवरी से जुलाई तक रहता है। इसी बीच में ये पेड़ की किसी मोटी डाल या तने में छेद करके अपना घोंसला बनाते हैं, जो ४ से ४० फुट तक की ऊँचाई पर देखे जा सकते हैं। ये छेद थोड़ी दूर तक तो सीधे रहते हैं फिर नीचे की ओर झुक कर काफी चौड़े हो जाते हैं। अन्तिम छोर पर ये उसमें लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़े रख कर उसे मुलायम बना देते हैं। मादा समय आने पर इसमें ३ अंडे देती है जो लम्बोतरे बैजाबी और सिरे की ओर नोकीले रहते हैं। ये धुर सफेद और काफी चमकदार होते हैं।

अंडे लगभग १.१० × ०.८० इंच के रहते हैं।

## १७७ गर्दन ऐंठा (Wryneck : Iynx Torquilla)

**पर्याय** : साचि ग्रीव ।

**पहचान** : सिलेटी और भूरी चिड़िया, जिसका निचला हिस्सा धारीदार रहता है ।

**रंग-रूप** : गर्दन ऐंठा १० इंच का पक्षी है जिसके नर और मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं।



**गर्दन ऐंठा**

इसका ऊपरी भाग सिलेटी और भूरी धारियों और पट्टियों से भरा रहता है और नीचे का हिस्सा ऊपरी भाग से हलका और महीन भूरी धारियों वाला होता है। आँख की पुतली ललछौंह भूरी, चोंच सिलेटी और टाँगे हरछौंह सिलेटी रहती हैं।

**निवास**: गर्दन ऐंठा सारे भारत में पाया जाने वाला पक्षी है जो हिमालय की तराई से ऊपर दक्षिण तक पाया जाता है। इसकी आदतें अन्य कठफोर से मिलती-जुलती रहती हैं और इसे भी घने जंगल की अपेक्षा खुले मैदान, खेत, बाग-बगीचे और तितरे-बितरे जंगल और घास-झाड़ियों से भरे स्थान पसन्द हैं।

**विवरण** : गर्दन ऐंठा यहाँ का मौसमी पक्षी है जो कश्मीर की ओर से हमारे देश में आकर ऊपर दक्षिण तक फैल जाता है। जाड़ा समाप्त होने पर यह यहाँ से वापस चला जाता है लेकिन कुछ पक्षी कश्मीर में रह कर वहीं अपने अंडे देते हैं।

कठफोर की भाँति यह भी पेड़ के तनों और डालियों पर दिखाई पड़ता है जहाँ कीड़े-मकोड़े चींटियों तथा उनके अंडे-बच्चों से यह अपना पेट भरता है। जमीन पर भी यह कीड़े-मकोड़ों के लिए उतरता है। इसकी बोली तेज और कर्कश होती है।

**घोंसला** : गर्दन ऐंठा जैसा ऊपर बताया गया है, हमारे यहाँ का मौसमी पक्षी है, जो जाड़ा शुरू होते ही यहाँ आ जाता है और जाड़ा समाप्त होते-होते उत्तर-पश्चिम की ओर से देश के बाहर चला जाता है।

कुछ पक्षी कश्मीर में रह जाते हैं और यहीं घोंसला बना कर अंडे देते हैं। ये अपने घोंसले किसी पेड़ के पुराने खोंथे को ठीक करके या अपनी तेज चोंच से पेड़ के तने में सूराख करके बनाते है।

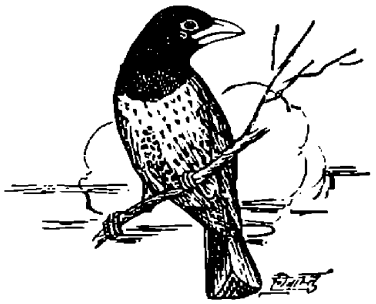
मादा इसमें २-३ अंडे देती है जो धुर सफेद और लम्बोतरे होते हैं।

अंडे लगभग १.०० × ०.७५ इंच के रहते हैं।

## १७८ भायहो (Great Himalayan Barbet : Megalaema Virens)

**पर्याय** : वृहद्, हिमालय पिग्म, निडल, मिओली।

**पहचान** : यह पेड़ों पर रहने वाली चिड़िया है। इसकी तेज और मीठी आवाज से प्रायः इसे पहचानने में आसानी हो जाती है। यह अपने चमकदार परों, पीली चोंच तथा पूँछ के नीचे लाल धब्बे होने के कारण बहुत सुन्दर लगती है।



**भायहो**

**रंग-रूप** : लम्बाई १३ इंच। नर-मादा एक-से होते हैं। सिर और गरदन के पर काले तथा परों के किनारे गहरे नीले, पीठ और बाजू हरछौंह भूरे तथा इन पर हरी और पीली धारियाँ। पूँछ पर घास के रंग का धब्बा। डैने गहरे भूरे तथा उन पर नीले हरे और जैतूनी भूरे रंग की झलक। पूँछ ऊपर की ओर हरी और नीचे की ओर कलछौंह। नीचे के कलछौंह रंग में हलका नीला रंग स्पष्ट झलकता है। छाती का ऊपरी हिस्सा गहरे जैतूनी भूरे रंग का तथा नीचे का भाग नीला और उस के किनारे पीली और भूरी धारियाँ। पूँछ के नीचे गहरे लाल रंग का चित्ता। आँख की पुतलियाँ भूरी-चोंच पीली, बड़ी, चपटी और फैली हुई तथा उस पर छोटे-छोटे बालों की झालर। पंजे हरछौंह सींग के रंग के तथा पंजे की पहली और चौथी उँगली पीछे की ओर तथा दूसरी और तीसरी आगे की ओर। नाखून कमजोर होते हैं क्योंकि ये सामान्य पक्षियों की तरह अड्डे पर बैठती है, और सीधी डालों तथा तनों पर नहीं चढ़ती।

**निवास** : ये हिमालय से लेकर आसाम, बर्मा तथा चीन तक पायी जाती हैं। इसकी दो जातियाँ हैं जो भारत में कश्मीर से लेकर पूर्व में भूटान और आसाम तक मिलती है। ये ४,००० से ८,००० फुट तक की ऊँचाई पर पायी जाती हैं। जाड़ों में निचले भागों में उतर आती है और मैदानों में फैल जाती हैं।

**विवरण** : यह जोड़ा बाँधने के मौसम में छायादार वृक्षों

के नीचे रहती है। ये कई तरह की बोली बोलती हैं, जो कर्कश होने के कारण अप्रिय होती है। एक के बोलने पर दूसरे वृक्ष पर बैठी चिड़ियाँ उसका उत्तर देती हैं। तथा इस कोशिश में रहती है कि उस की तेज बोली से दूसरी चिड़िया हार जाये। इस की उड़ान तेज, होती है। उड़ते समय इसके पंखों से पट-फुट की हलकी-सी आवाज आती है। जाड़ों में भायहो छोटे-छोटे झुंड बना कर खुले हुए पहाड़ी जंगलों में दिखाई पड़ती हैं जहाँ वे फलों से अपना पेट भरते हैं।

**घोंसला** : यह मई तथा जून में जोड़ा बाँधती है। इनके घोंसले वृक्षों की डालों, तनों में सूराख करके बनाये जाते हैं। ये कभी तो जमीन से बहुत ऊँचाई पर, लेकिन कभी-कभी पहुँच के भीतर ही पाये जाते हैं। इनका दरवाज़ा छोटा होता है। और अंडे टूटे-फूटे तिनको पर रखा होता है। मादा अक्सर ४ अंडे देती है, जिनके आकार में विभिन्नता होती है, परन्तु प्रायः अंडे लम्बे गोलाकार होते हैं। इनकी बनावट सुन्दर तथा कोमल होती है और रंग सफेद तथा हलकी चमक लिये होता है।

आकार में ये अंडे १.३७ × ०.९८ इंच के होते हैं।

## १७९ बड़ा बसंता (Green Barbet । Therei ceryx Zeylanicus)

**पर्याय** : हरित पिप्पल, कुतुरझा, कदरंगा, कुतुर।

**पहचान** : यह पेड़ों पर रहने वाली मैदानी चिड़िया है। इसकी कुतुर-कुतुर जैसी तेज आवाज से इनकी पहचान आसानी से हो जाती है। इसका रंग हरा और सिर का रंग भुरछौंह और नीचे का भाग हलका नीला रहता है।

**रंग-रूप** : बड़ा बसंता १० इंच लम्बा पक्षी है जिसके नर-मादा एक-जैसे होते हैं। इसका सिर, गला और सीने का रंग भूरा रहता है जिसके ऊपर तीर-जैसी पतले हलके भूरे रंग के चिह्न पड़े रहते हैं। ऊपर का हिस्सा चमकीला हरा रहता है जिस पर जगह-जगह पर तीर जैसी पतली भूरे रंग की धारियाँ पड़ी होती हैं और अन्त में सफेद चित्तियाँ होती हैं। उड़ान के पर भूरे रहते हैं, जिनके किनारे हलके पीले होते हैं। दुम चमकीली हरी रहती है और नीचे का रंग हलका नीला रहता है। आँख की पुतली ललछौंह भूरी, आँख के चारों ओर से लेकर चोंच की जड़ तक का भाग बिना परों का और नारंगी होता है। चोंच प्याजी और टाँगे हलकी पिलछौंह भूरे रंग की होती हैं। इसकी चोंच उभरी हुई रहती है।

**निवास** : बड़ा बसंता भारत और लंका में पाया जाने वाला पक्षी है जिसकी तीन जातियाँ होती हैं। इसकी छोटी जाति के पक्षी ट्रावनकोर और लंका में पाये जाते हैं। इसकी दूसरी जाति का पक्षी जो अन्य दोनों जातियों में बड़े आकार का होता है और जिसका यहाँ वर्णन दिया जा रहा है, उत्तरी भारत में पाया जाता है। यह हिमालय की तराई से मध्य भारत तक देखा जा सकता है। पूर्व की ओर बंगाल और पश्चिम की ओर इसे गुजरात तक देखना कठिन नहीं होता। यह यहाँ का स्थायी रूप से रहने वाला पक्षी है। बीच वाली जाति के पक्षी बम्बई से लेकर कुर्ग तक तक पाये जाते हैं।

**विवरण** : इस चिड़िया को लोग चाहे शक्ल से न पहचान सकें किन्तु इसकी आवाज से अवश्य पहचान लेते हैं। यह विशुद्ध रूप से पेड़ों पर रहने वाली चिड़िया है। यह घने वृक्षों और नम स्थानों को बहुत पसन्द करती है। यदि ऐसा स्थान पहाड़ों के पास-पड़ोस में हो तो इसे बहुत ही अच्छा लगता है। यह तीन हजार फुट तक की ऊँचाई पर रह सकती है। यह अंजीर आदि जंगली फलों को बड़े स्वाद से खाती है। बरगद और पीपल के फल भी इसे बहुत पसन्द हैं। यह भूमि से काफी ऊँचाई पर पत्तियों के झुरमुटों में रहती है इसी कारण यह बड़ी मुश्किल से दिखलाई पड़ती है। हरे रंग के कारण यह पत्तियों में छिप जाती है और इस प्रकार खतरे से अपना बचाव कर लेती है। इसकी उड़ान तेज किन्तु बोझिल और लहरदार होती है।

बड़े बसंते की आवाज से इसकी उपस्थिति का पता चल जाता है। इसकी आवाज कुतुर-कुतुर जैसी रहती है जिससे लोग इसे कुतुर या कुतुरझा भी कहते हैं। इसकी आवाज साल भर सुनाई पड़ती है किन्तु जनवरी से जून तक यह अधिक सुनाई पड़ती है क्योंकि यह समय इनके जोड़ा बाँधने का होता है। यह कभी-कभी रात में भी बोलती है।

**घोंसला** : बड़े बसंते के जोड़ा बाँधने का समय फरवरी से जून तक रहता है लेकिन मार्च-अप्रैल में इसके अधिक अंडे मिलते हैं। यह अपना घोंसला किसी नरम लकड़ी वाले पेड़ की डाल को काट कर सुरंगनुमा बना लेता है जिसके भीतर जाने का द्वार एक नली की तरह होता है। यह सुरंगनुमा घोंसला बहुत सफाई से काट कर गोलाई से बनाया जाता है जिसे नर और मादा बहुत परिश्रम से बनाते हैं। इसकी ऊँचाई जमीन से ५० फुट तक होती है। इस सुरंगनुमा सूराखों में सिरे की ओर लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़ों को रख कर मादा समय आने पर २ से ४ तक अंडे देती है। अंडे चौड़े और बैजाबी होते हैं जिनका रंग सफेद होता है। अंडों पर थोड़ी चमक भी रहती है

नाप में अंडे लगभग १.२० × ०.८७ इंच के रहते हैं।

## १८० कुदरू (Blue-Throated Barbet : Cyanops Asiatica)

**पर्याय** : नीलकंठ पिप्पल, पुदरुप, कुदरुप।

**पहचान** : यह छोटी-सी चमकीले हरे रंग की चिड़िया है

जिसके सर में काले, लाल और नीले रंग का मेल रहता है। यह हमेशा पेड़ों पर ही रहती है और अपनी तेज कुदरूप-कुदरूप से मिलती-जुलती बोली के कारण आसानी से पहचानी जा सकती है।



कुदरू

**रूप-रंग** : कुदरू ९ इंच की चिड़िया है जिसके नर और मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। सर का ऊपरी भाग लाल रहता है जिसे आँख और कान के ऊपर जाने वाली रेखाएँ काट देती हैं। शरीर का ऊपरी भाग चमकीला हरा रहता है और डैने के उड़ान के पंख कलछौंह भूरे रहते हैं। दुम के नीचे का भाग हलका नीला रहता है। सर के दोनों रुख, गाल और ठुड्डी भी हलकी नीली रहती है। चोंच की जड़ के पास एक लाल बिन्दी पड़ी रहती है और गरदन के दोनों ओर एक-एक लाल चित्ता पड़ा रहता है। नीचे का सारा हिस्सा पिलछौंह हरा रहता है। आँख की पुतली भूरी, चोंच हरछौंह पीली, और टाँगें गंदे हरे रंग की होती हैं। पंजे कलछौंह रहते हैं।

**निवास** : कुदरू भड़कीले रंग की चिड़िया है जो हिमालय की तराइयों से बर्मा और स्याम तक पायी जाती है। इसकी अनेक जातियाँ हैं। यहाँ पर हमारा सम्बन्ध उसी जाति से है जो भारतवर्ष में पायी जाती है। यह उत्तर प्रदेश, बिहार और बंगाल के मैदानी इलाकों से लेकर हिमालय में ६,००० फुट तक की ऊँचाई पर पायी जाती है।

**विवरण** : नीले गले वाली कुदरू घने जंगल की अपेक्षा खुले, पहाड़ों, जंगलों बाग-बगीचों तथा ऐसे गावों में पायी जाती है जहाँ खेतों में विशेष वनस्पतियाँ उग आती हैं। ऐसी जगहों में अनेक प्रकार के जंगली फल होते हैं। इन्हीं फलों के ऊपर यह आश्रित रहती है। यह मनुष्यों से नहीं डरती, और गाँवों के बीच में अपना घोंसला बनाती है। यह विशुद्ध रूप से पेड़ों पर रहने वाली चिड़िया है जो पेड़ों से नीचे कभी नहीं उतरती। शरीर के हरे रंग के कारण यह पत्तियों में नहीं दिखाई देती। पत्तियों में छिप जाने पर भी इसकी आवाज हमेशा सुनाई पड़ती है। बसन्त ऋतु में तो यह खासतौर पर बोलती रहती है।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय अप्रैल से जुलाई तक होता है। यह अपने रहने के लिए एक कोष्ठ किसी पेड़ के तने या डाली में बना लेती है जिसकी ऊँचाई भूमि से १० या १५ फुट होती है। यह प्रायः छोटे आकार के पेड़ अपने कोष्ठ बनाने के लिए चुनती है। इसमें भीतर जाने की सुरंग की लम्बाई लगभग एक फुट होती है। कोष्ठ में ये अपने अंडे सिरे की ओर पड़े कूड़े-करकट में देती है। कभी-कभी ये घास या अन्य वस्तुओं के रेशों को भी अंडों के नीचे रख देती है। मादा कुदरू ३ अंडे देती है। इनका रंग घुर सफेद होता है। कभी-कभी इन पर थोड़ी चमक भी होती है। इनका आकार लम्बोतरा और सिरे की ओर नुकीला होता है।

अंडे की लम्बाई चौड़ाई १.०९ × ०.८३ इंच होती है।

## १८१ ठठेरा (Copper Smith : Xantholaema Haemacephala)

**पर्याय** : कठखोरा, छोटा बसंता, शोगोरस, पिप्पल।

**पहचान** : यह मैदानों के पेड़ों पर रहने वाली छोटी-सी हरे चमकीले रंग की चिड़िया है जो प्रायः गाया करती है। पर गहरे लाल और काले धब्बे होते हैं।

**रंग-रूप** : लम्बाई ६ इंच। माथे पर बड़ा लाल धब्बा। गरदन के सामने कवचनुमा गहरे लाल रंग का धब्बा। आँखों के ऊपर धारी और उसके नीचे एक धब्बा। ठोड़ी और गला चमकीले पीले रंग के गरदन पर के लाल कवच के नीचे सुनहले पीले रंग का पट्टा। आँखों से लेकर नाक के छेदों तक काली धारी और गले के नीचे काला पट्टा। दोनों काली धारियाँ कान के पीछे सिर पर के बड़े काले धब्बे में मिल जाती हैं। ऊपरी शेष पर जैतूनी हरे, पीठ तथा गरदन के किसी किनारे हलका भूरा रंग डैनों का भीतरी हिस्सा हल्का काला, नीचे का हिस्सा काला और सफेद तथा उस पर जैतूनी हरे रंग की धारियाँ विशेषरूप से किनारे की ओर होती है। पूँछ नीचे की ओर हरे नीले रंग की होती है। आँख की पुतलियाँ भूरे-गुलाबी रंग की, चोंच काली, पंजे मूँगे के रंग के और नाखून काले।

**निवास** : यह पक्षी भारत तथा श्रीलंका में सर्वत्र पाया जाता है और पूर्व की ओर मलाया, सुमात्रा और फिलीपाइन्स तक में पाया जाता है। कच्छ तथा दक्षिण मालाबार में ये बहुत कम दिखाई पड़ते हैं। ये बस्ती के आस-पास पायी जाने वाली चिड़ियाँ हैं।

**विवरण** : यह खुले क्षेत्रों में पेड़ों पर निवास करती है। हरी-हरी पत्तियों में यह अपने रंग को मिला देती है। और उन्हीं के बीच इसका रहना उठना-बैठना और खाना, सभी कुछ

होता है। यह झाड़ियों और जमीन पर कम नजर आती है। इसकी उड़ान तेज और सीधी होती है और उड़ते समय ये अपने छोटे पंखों को थरथराती जाती है। यह बड़ी मोटी बोली बोलती है जो ऐसी होती है जैसे कोई छोटी हथौड़ी से किसी धातु पर चोट कर रहा हो। दूसरे शब्दों में इसकी बोली सुनकर ऐसा लगता है जैसे कोई ठठेरा अपने काम में जुटा हो। जब यह बोलते समय इधर-उधर सर करती है तो ऐसा लगता है कि मानों दो ठठेरे एक ही निहाई पर काम कर रहे हों। इसी से इसे ठठेरा कहते हैं। यह विभिन्न प्रकार के जंगली अंजीर के फलों को खाती है।

**घोंसला** : इनके जोड़ा बाँधने का समय फरवरी से मई तक होता है। अंडे पेड़ों की डालों के कोटरे में रखे जाते हैं। घोंसला प्रतिवर्ष नये तिनकों से बड़ा किया जाता है, जिसका दरवाजा गोल छेदनुमा होता है। घोंसला जमीन से ७ से ४० फुट की ऊँचाई पर होता है। अंडा तिनकों इत्यादि पर रखा रहता है। ये ३ या ४ अंडे देती हैं। अंडे लम्बे सँकरे, चिकने तथा अत्यन्त कोमल होते हैं, उन पर चमक नहीं के बराबर होती है। इनका रंग बिल्कुल सफेद होता है और आकार ०.९९ × ०.६९ इंच होता है।

## १८२ नीलकंठ (Blue Jay : Coracias Benghalensis)

**पर्याय** : दिवि, कटनास, भारत चाष।

**पहचान** : यह भारतवर्ष का बहुत प्रसिद्ध और परिचित पक्षी है जिसे हम अपने घरों के निकट और खेतों में आसानी से देखा करते हैं। उड़ते समय इसके पंखों का सुन्दर नीला रंग और दुम के ऊपर का नीला चित्ता साफ दिखलाई पड़ता है।

**रंग-रूप** : लम्बाई १३ इंच। नर-मादा एक-जैसे। सर के ऊपर का रंग निलछौंह हरा, पीठ और गरदन की दोनों बगलों का रंग ललछौंह भूरा, ऊपरी परों का रंग फीका हरछौंह भूरा और दुम की जड़ के ऊपर नीले रंग का धब्बा। डैने में नीले और हरे रंग मिल जाते हैं, और बड़े पंख गहरे बैंजनी नीले रहते हैं। डैने पर एक बादामी नीले रंग की चौड़ी पट्टी होती है। दुम का रंग गहरा नीला होता है जिसके सिरे पर भूरे नीले रंग की पट्टी रहती है। दुम के बीच के दोनों पर फीके हरछौंह रंग के होते हैं। सर और गले के बगली हिस्से का रंग बैंगनी होता है जिस पर सफेद धारियाँ पड़ी रहती हैं। सीने का रंग ललछौंह भूरा जिसके ऊपर हलकी सफेद धारियाँ होती हैं। निचले हिस्से का रंग हलका नीला होता है। आँख की पुतली सिलेटी भूरी, चोंच कलछौंह भूरी और टाँगे भुरछौंह पीली होती हैं। सामने की ३ उँगलियाँ जड़ के पास जुड़ी होती हैं।

**निवास** : नीलकंठ सम्पूर्ण भारत में पाया जाता है। इसकी अनेक जातियाँ होती हैं। यह मैदानी पक्षी है जो हिमालय पर ४,००० फुट की ऊँचाई से ऊपर नहीं पायी जाती। यह यहाँ का स्थायी रूप से रहने वाला पक्षी है, पर अपनी सुविधा के अनुसार यहीं थोड़ा स्थान-परिवर्तन कर लेता है।

**विवरण** : नीलकंठ को खुले स्थानों में रहना बहुत पसन्द है। यह घने जंगलों में न जाकर खेतों, मैदानों और बाग-बगीचों में ही रहता है जहाँ कीड़े-मकोड़ों की बहुतायत रहती है। जोड़ा बाँधने के समय को छोड़ कर यह अकेले ही देखा जा सकता है। अपने बैठने के लिए यह किसी पुराने पेड़ की सूखी डाल, कुएँ के ऊपर की लकड़ी, खँडहर, टेलीग्राफ के खम्भे इत्यादि को चुनता है। इनके न मिलने पर यह किसी काँटेदार झाड़ी या पत्थरों के ढेर पर ही बैठता है। ऐसे स्थानों पर यह स्थिर और चुपचाप हो कर बैठता है और ऐसी अवस्था में इसके शरीर के विभिन्न रंग आस-पास के प्राकृतिक रंगों में मिल जाते हैं। यहीं बैठे-बैठे यह अपनी बड़ी काली आँखों से चारों ओर भूमि पर देखता रहता है और जैसे ही कोई टिड्डा, मकड़ा या और कोई छोटा जीव बाहर निकला नहीं कि यह झपट कर उसे पकड़ लेता है और अपने बैठने के स्थान पर जाकर उसे चट कर जाता है।

लेकिन फरवरी के आरम्भ में नीलकंठ के स्वभाव में परिवर्तन हो जाता है क्योंकि फरवरी के बाद से जुलाई तक इसके जोड़ा बाँधने का समय होता है और इस बीच नर पक्षी मादा को रिझाने के लिए हवा में अपने पंख फैला कर अपना सौंदर्य प्रदर्शन करता है। उड़ते समय यह हवा में उठता-गिरता है और जोरों से पंखों को फड़फड़ा कर कर्कश ध्वनि करता है। इस प्रकार यह सभी को बसन्त के आगमन की सूचना भी देता है। इसकी उड़ान तेज और लहरदार होती है और उड़ते समय यह बराबर अपने पंखों से फड़फड़ाहट करता रहता है। हमारे देश में इसका दर्शन बहुत शुभ माना जाता है और लोगों का विश्वास है कि यह भगवान शिव का पक्षी है जिसे उन्होंने बनाया है।

**घोंसला** : नीलकंठ के जोड़ा बाँधने का समय मार्च से जुलाई तक रहता है। यह अपना घोंसला हमेशा किसी पेड़ पर या दीवाल के छेद में बनाता है। इसके घोंसले भद्दे से होते हैं जो, सन, वनस्पतियों, घास और इसी प्रकार की अन्य वस्तुओं के रेशों से बनाये जाते हैं। ये घोंसले छेद के आकार के अनुसार छोटे-बड़े होते हैं। जहाँ मादा अपने अंडे छेद के अन्दर पड़े छोटे लकड़ी के टुकड़ों और मलबे के ऊपर देती है। अंडों की संख्या ४–५ होती है। अंडे काफी चौड़े, बैजावी और कभी-कभी काफी गोल होते हैं। ये काफी चमकदार और कड़े होते हैं और इनका रंग बिल्कुल सफेद चीनी मिट्टी-जैसा होता है।

अंडों की लम्बाई-चौड़ाई १.३० × १.०५ इंच होती है।

## १८३ पतेना (Green Bee-Eater : Merops Orientalis)

**पर्याय** : प्रख्यात, दिव्यक, बाँस पत्ती ।

**पहचान** : मैदानों में साधारण रूप से पायी जाने वाली चिड़िया, जिसके लम्बे-पतले शरीर, लम्बी चोंच तथा दुम के बीच के बढ़े हुए परों और हरे रंग के कारण इसे आसानी से पहचाना जा सकता है ।

**रंग-रूप** : पतेना की लम्बाई ९ इंच रहती है जिसमें इसके दुम के बीच के २ इंच लम्बे परों की लम्बाई भी शामिल है । इसके नर-मादा एक-जैसे होते हैं इसके शरीर के परों का रंग चमकीला हरा होता है और कुछ स्थानों पर नीले रंग की चमक भी होती है इसी प्रकार का चटक हरा रंग ठोड़ी और गले पर भी होता है । चोटी से लेकर ऊपरी पिछले हिस्से तक के रंग में सुनहरे रंग की आभा होती है । उड़ान के परों का रंग बादामी रहता है तथा बाहर से हरे रंग की आभा के साथ इसके ऊपर कलछौंह बिन्दियाँ रहती हैं । आँख के नीचे और सामने एक चिह्न होता है तथा कंठ पर काले रंग की सुन्दर रेखा होती है । आँख की पुतली खूनी लाल, चोंच काली और टाँगें कलछौंह सिलेटी होती हैं ।

चोंच लम्बी और टेढ़ी होती है । पैर कमजोर और सामने की तीन उँगुलियाँ जड़ के पास जुड़ी रहती हैं । दुम के मध्य के दो पर लम्बे और नोकीले होते हैं ।

**निवास** : पतेना भारत के अलावा लंका, बर्मा, स्याम और चीन में भी पाया जाता है । इन देशों में इसकी अनेक जातियाँ होती हैं । भारतवर्ष में इसकी एक प्रसिद्ध जाति पायी जाती है। साधारणतः यह एक मैदानी पक्षी है लेकिन यह हिमालय में ५,००० से ६,००० फुट तक या इससे अधिक ऊँचाई पर भी दिखाई पड़ता है । यह यहाँ का बारहमासी पक्षी है जो हमारा देश छोड़ कर बाहर नहीं जाता लेकिन अपने सुविधानुसार थोड़ा स्थान-परिवर्तन कर लेता है ।

**विवरण** : पतेना को घने जंगल और नम स्थान पसन्द नहीं हैं । यह खुले स्थानों में ही रहना पसन्द करता है और खेतों तथा ऊसरी स्थानों में अपना अधिक समय बिताता है । यह यहाँ का बहुत परिचित पक्षी है जिसके हरे रंग और टेलीग्राफ के तारों पर बैठने की आदत से लोग इसे आसानी से पहचान लेते हैं । यह पेड़ों, छोटी झाड़ियों और दीवारों पर ही बैठता है किन्तु घोंसला बनाने के समय यह भूमि पर भी उतर आता है । अपनी कमजोर टाँगों के कारण यह जमीन पर फुदककर नहीं चल पाता । यह कीड़े-मकोड़ों का शिकार करके अपना पेट भरता है । यह उड़ कर कीड़े पकड़ लेता है और फिर वापस आकर अपने स्थान पर बैठकर कीड़ों को खाता है । इसकी उड़ान तेज और शानदार होती है जिस समय यह अपनी उड़ान भरता है इसकी उड़ान कुछ लहरदार हो जाती है । इसकी आवाज मधुर और एकसुरी हो जाती है । पतेना को छोटे-छोटे झुंडों में रहना बहुत भाता है । अपने बसेरों में ये मिलजुल कर रहती है । पेड़ के झुरमुटों में बसेरा लेते समय इनकी संख्या २०० से ३०० तक हो जाती है ।

**घोंसला** : पतेना के जोड़ा बाँधने का समय मार्च से लेकर जून तक रहता है। यह अपने अंडे गोलाकार कोष्ठ में देती है जिसे यह किसी मिट्टी के भीटे में खोद कर बनाती है। इसमें प्रवेश करने के लिए एक सुरंग-सी होती है । ये कोष्ठ किसी खड़े किनारे या कटाव के ऊपर बनाये जाते हैं । भीतर जाने की सुरंग की लम्बाई ५ फुट तक होती है । प्रवेश द्वार वृत्ताकार और बहुत सफाई से बनाया जाता है और इसी कोष्ठ के भीतर मादा अपने अंडे फर्श पर ही देती है । मादा समय आने पर ३ से ५ तक अंडे देती है जिनका आकार लगभग गोल होता है । इनका रंग शुद्ध दूधिया सफेद होता है और इन पर कोई चिह्न नहीं होते । अंडे चमकदार होते हैं ।

अंडे लगभग ०.७५ × ०.७ इंच के होते हैं ।

## १८४ पतिरंग (Blue Tailed-Bee-Eater : Merops Superciliosus)

**पर्याय** : नील पुच्छ दिव्यक ।

**पहचान** : पतिरंग मैदानों में काफी संख्या में पायी जाने वाली चिड़िया है जिसे पानी के पास रहना बहुत पसन्द है। इसकी लम्बी पतली शक्ल, लम्बी नोकीली चोंच और दुम के बीच के लम्बे परों के कारण इसकी पहचान आसानी से हो जाती है ।



पतिरंग

मैना से यह आकार में बड़ा और सामान्य रूप से रंग में दबी होती है। इसके गले पर कत्थई चित्ता होता है।

**रंग-रूप** : पतिरंग १२ इंच लम्बी चिड़िया है जिसमें इसकी दुम के बीच के दोनों परों की २ इंच लम्बाई भी शामिल है। इसके नर मादा एक-जैसे होते हैं। इसकी चोंच से लेकर आँखों के बीच से एक चौड़ी काली धारी चली आती है जिसके ऊपर थोड़ा नीला किनारा और नीचे चौड़ा किनारा होता है। शरीर का ऊपरी हिस्सा हरा रहता है और बादामी रंग की आभा दुम के सिरे तक जाती है जो आगे ललछौंह नीली हो जाती है। पंखों का रंग पीठ की अपेक्षा अधिक बादामी हरा रहता है और इसके ऊपर ललछौंह चित्तियाँ रहती हैं। दुम ललछौंह नीली, नीचे से गाढ़ भूरी और बीच के दोनों लम्बे परों के ऊपर काली बिन्दियाँ भरी होती हैं। गले का रंग ललछौंह भूरा होता है जो सीने के पास पहुँच कर हरा हो जाता है। दुम के नीचे का रंग नीला होता है। आँख की पुतली खूनी लाल, चोंच काली और टाँगें धूमिल होती हैं। चोंच लम्बी और टेढ़ी होती है। आगे की तीनों उँगलियाँ जड़ के पास जुड़ी होती हैं और दुम के बीच के दोनों पर बड़े और नुकीले होते हैं। इनकी लम्बाई अन्य परों से दो इंच अधिक होती है।

**निवास** : पतिरंग सारे भारतवर्ष में पाया जाता है इसकी दो जातियाँ यहाँ पायी जाती हैं। पहली जाति हिमालय की वादियों में ३,००० फुट की ऊँचाई पर रहती है। इसका रंग अपेक्षाकृत नीला और नीचे से कुछ कम ताँबिया हरा होता है। दूसरी जाति कश्मीर में होती है। इसके चमकीले पीले गले और नीचे के अंगों के नीले रंग से इसे पहचान लिया जाता है। दोनों का स्वभाव और आदतें एक-जैसी ही होती हैं।

**विवरण** : पतिरंग हमारे देश का बहुत प्रसिद्ध पक्षी है जिसे खेतों और खुले मैदानों में देखना कठिन नहीं होता। इसे खुश्क और सूखे स्थान नहीं भाते और यह पानी के पास ही रहना पसन्द करता है। झीलों, नदियों और तालाबों के पास पहुँचने के लिए ये काफी लम्बी उड़ान भरते हैं। ये ऊँची जगहों से जैसे कि पानी के बीच में खड़े आधे सूखे पेड़ या टेलीग्राफ के तारों पर बैठना पसन्द करते हैं और हवा में उड़ते हुए कीड़ों को लपक कर पकड़ लेते हैं। उसके बाद ये अपने बैठने के स्थान पर लौट कर उसे खाते हैं। शाम के समय पतिरंग के झुंड हवा में उड़ते रहते हैं। यह तेजी से पंख फड़फड़ाते हुए हवा में तैरते हुए कीड़ों को पकड़ते रहते हैं। ये अपने अड्डों पर बैठकर स्वतंत्रतापूर्वक बोलते रहते हैं। इनकी आवाज मधुर होती है। इसका मुख्य भोजन कीड़े-फतिंगे और मधुमक्खियाँ हैं।

**घोंसला** : पतिरंग के जोड़ा बाँधने का समय मार्च से जून तक होता है। ये प्रायः बस्तियों के आस-पास ही रहते हैं। यह अपने गोल कोष्ठ किसी प्राकृतिक टीले या किसी मिट्टी के भीटे में खोद कर बना लेते हैं जिसमें मादा अपने अंडे मिट्टी के ऊपर देती है। इस कोष्ठ में भीतर जाने के लिए एक सुरंग सी होती है जिसकी लम्बाई ४ से ७ फुट तक रहती है। यह सुरंग सामान्यरूप से सीधी नहीं होती है। समय आने पर मादा ४-५ अंडे देती है। अंडों का रंग चुर सफेद तथा उनका आवरण बहुत चमक वाला होता है। अंडे बैजावी और गोल होते हैं।

अंडों की औसत लम्बाई-चौड़ाई लगभग ०.८८ × ०.७५ इंच होती है।

## १८५ कौड़िल्ला (Pied King fisher : Ceryle Rudis)

**पर्याय** : घिरिन परेवा, कर्दिक मीनरंक, फटका, मछराला

**पहचान** : मैदानों में रहने वाली चितकबरी चिड़िया जो हमेशा पानी के पास ही रहती है। यह पानी के ऊपर मँडराती है और मछली पकड़ने के लिए ऊपर से कूद कर गोता लगाती है। इसकी चोंच तेज और लम्बी होती है।

**रंग-रूप** : कौड़िल्ला की लम्बाई १२ इंच रहती है। इसके नर के सर के ऊपर एक छोटी-सी काली कलँगी होती है जिसके ऊपर सफेद धारियाँ रहती हैं। आँख के ऊपर एक स्पष्ट सफेद रेखा होती है और चोंच की जड़ से एक काली रेखा आँखों के बीच से होती हुई उस काली रेखा से मिलती है जो इसके गले के चारों ओर रहती है। गर्दन पर एक स्पष्ट सफेद पट्टी होती है। शरीर के ऊपरी भाग के परों का रंग काला और सफेद रहता है। इसके उड़ान के पंखों का रंग सफेद रहता है जिस पर ऊपर काली पट्टियाँ होती हैं। दुम सफेद होती है लेकिन उसकी जड़ के पास एक काले रंग की चौड़ी पट्टी पड़ी रहती है। निचले हिस्से का रंग रुपहला सफेद रहता है और सीने के एक ओर से दूसरी ओर तक काले रंग के दो घेरे रहते हैं जिनमें ऊपरी घेरा चौड़ा होता है। गले के दोनों ओर काले रंग की चित्तियाँ होती हैं।

मादा के ऊपर पिछला घेरा नहीं होता है और दूसरा घेरा भी बीच में खंडित हो जाता है।

आँख की पुतली भूरी और चोंच और टाँगें काली होती हैं। चोंच लम्बी भारी और नुकीली होती है। पैर कमजोर होते हैं और बाहरी उँगली बीच की उंगली से जुड़ी रहती है।

**निवास** : कौड़िल्ला की कई जातियाँ होती हैं जो भारत के अलावा मिस्र, और चीन में पायी जाती हैं। भारत में पाया जाने वाला कौड़िल्ला सारे भारत में पाया जाता है इसको पहाड़ी क्षेत्रों में २,५०० फुट से ऊपर नहीं देखा जाता। इस ऊँचाई से ऊपर इस जाति की एक दूसरी चिड़िया होती है जिसे "जल-बुतारा" कहते हैं। इसका रंग कौड़िल्ला की ही तरह होता है।

कौड़िल्ला यहाँ की स्थायी रूप से रहने वाली चिड़िया है जो हमारा देश छोड़ कर बाहर नहीं जाती ।

**विवरण** : कौड़िल्ला जंगल के मध्य भाग को छोड़ कर जहाँ कहीं भी पानी होता है, वहाँ पाया जाता है। यह नदियों के किनारों पर काफी संख्या में दिखाई पड़ता है इसके अलावा इसे झीलों, तालाबों, बरसाती, नालों, और रुके पानी के स्थानों में जहाँ पानी में सेवार होती है, देखा जा सकता है। यह समुद्र के किनारे भी दिखाई पड़ता है ।

ऐसे स्थानों पर यह मछली पकड़ते हुए आसानी से दिखाई पड़ता है जो इसका मुख्य भोजन है। यह पानी की सतह से १० से २० फुट की ऊँचाई पर उड़ता रहता है और जैसे ही मछलियों की भीड़ देखता है यह अपनी उड़ान को रोक लेता है और अपने लक्ष्य की ओर चोंच करके ऊपर से कूद कर पानी में गोता लगाता है । जैसे किसी ने ऊपर से कोई ढेला फेंक दिया हो । मछली पकड़ में आ जाने पर यह खुशी से चहचाहता हुआ किसी डाल पर जा बैठता है, किन्तु इसका गोता लगाना हमेशा सफल नहीं होता । कभी-कभी यह मछली पकड़ने का काम बीच में ही रोक देता है और कुछ देर तक आराम करता रहता है। जब यह मछली पकड़ने का काम नहीं करता उस समय यह किसी ऊँचे किनारे या स्थान पर बैठ जाता है । इसके बैठने के स्थानों पर मछलियों के छोटे-छोटे टुकड़े पड़े मिलते हैं । जिस समय यह आराम कर रहा होता है यह अपनी दुम को रोक-रोक कर तेजी से ऊपर और नीचे को ओर हिलाता रहता है ।

**घोंसला** : कौड़िल्ला के जोड़ा बाँधने का समय दिसम्बर से अप्रैल तक रहता है । जिसके बीच कौड़िल्ला अपने अंडे गोल कोष्ट में देती है जो कि १ से ५ फुट लम्बी सुरंग के अन्त में बना होता है । यह कोष्ठ पानी के किनारे के किसी मिट्टी के टीले पर बनाया जाता है । यह घोंसला नहीं बनाती है और अंडे रखने के कोष्ट में मछली के चमड़े या मलबे से चुने छोटे-छोटे टुकड़ों को रख कर उसी पर अपने अंडे देती है ।

समय आने पर मादा ४ से ६ तक अंडे देती है । ये अंडे चौड़े बैजावी और कुछ गोल होते हैं । इनका आवरण बहुत चमकदार होता है और रंग शुद्ध चीनी मिट्टी की तरह सफेद होता है ।

अंडे लगभग १.२० × ०.९५ इंच के होते हैं ।

## १८६ कौड़िल्ली (Common King fisher Alcedo Atthis)

**पर्याय** : प्रख्यात मीनरंक, घिरनी छोटा किलकला, छोटा मछराला ।

**पहचान** : कौड़िल्ली पानी के आस-पास रहने वाली छोटी चिड़िया जिसके ऊपर का हिस्सा हरा और नीला तथा नीचे का ललछौंह भूरा रहता है । चोंच लम्बी तथा पंख चमकदार होते हैं ।

**रंग-रूप** : कौड़िल्ली ७ इंच की चिड़िया है, जिसके नर और मादा एक ही जैसे रहते हैं । इसके सर का ऊपरी भाग काली और नीली धारियों से भरा रहता है । एक ललछौंह भूरी पट्टी चोंच की जड़ से आँख के नीचे होती हुई गरदन तक चली जाती है और आँख के सामने एक काला चित्ता रहता है। चोंच के ऊपर एक चटकीली नीली पट्टी रहती है । और शरीर का ऊपरी हिस्सा चटकीला रहता है जो डैनों के बगल जाते-जाते हरछौंह हो जाता है । डैने के छिपे हिस्से तथा दुम के नीचे का भाग भूरा रहता है । ठोंडी और गला सफेद रहता है और नीचे का सारा हिस्सा ललछौंह भूरा रहता है। आँख की पुतली भूरी, चोंच काली और टाँगें मूँगिया लाल रंग की होती हैं । पंजे ललछौंह रहते हैं ।

इसकी चोंच लम्बी, तेज और नोकीली होती है, पैर कमजोर होते हैं और पैर की तीसरी और चौथी उँगलियाँ थोड़ी दूर तक आपस में जुड़ी रहती हैं ।

**निवास** : कौड़िल्ली की वैसे तो कई जातियाँ हैं लेकिन हमारे यहाँ की प्रसिद्ध कौड़िल्ली घुर दक्षिण भारत को छोड़ कर सारे देश में पायी जाती है । इसे पहाड़ों पर भी ५–६ हजार फुट की ऊँचाई तक देखा जा सकता है । यह यहाँ की स्थायी रूप से रहने वाली चिड़िया है जो थोड़ा स्थान परिवर्तन करके भी यहीं रहती है ।

**विवरण** : कौड़िल्ली पानी के निकट रहने वाली चिड़िया है जो नदी, झील तथा अन्य जलाशयों और समुद्र के किनारों पर दिखाई पड़ती है ।

इसका मुख्य भोजन छोटी मछलियाँ तथा पानी के कीड़े और उनके अंडे-बच्चे हैं । यह पानी के ऊपर हवा में उड़ती रहती है और जैसे ही पानी में किसी मछली को देखती है वैसे ही ऊपर से पानी में सीधा गोता लगाकर मछली को पकड़ कर ऊपर उड़ जाती है । दस-पन्द्रह फुट ऊपर से यह पानी में इस प्रकार सीधी गिरती है जैसे कोई ढेला ऊपर से गिरा हो ।

इसकी उड़ान बहुत तेज और सीधी होती है जो पानी की सतह से ज्यादा ऊँचाई पर नहीं होती। उड़ते समय यह तेज और कर्कश बोली बोलती है और अपने पसन्द किये हुए स्थान पर अपनी जाति की दूसरी चिड़ियों को नहीं आने देती।

**घोंसला** : कौड़िल्ली के जोड़ा बाँधने का समय मार्च से जून तक रहता है। जब यह पानी के किनारे के किसी भीटे या टीले में मिट्टी खोद कर अपना कोष्ठ बनाती है । इसमें जाने के लिए तीन-चार फुट लम्बी सुरंग रहती है और ये कोष्ठ सिरे पर काफी चौड़े रहते हैं ।

मादा समय आने पर इन्हीं कोष्ठों में जमीन पर ५-७ अंडे देती है, जो गोल होते हैं। अंडे धुर सफेद और चमकदार होते हैं।

अंडे लगभग ०.८ × ०.७ इंच के रहते हैं।

## १८७ किलकिला (White-Breasted King fisher : Halcyon Smyrnensis)

**पर्याय** : चंद्रकान्त मीनरंक, दालेल।

**पहचान** : बहुत शोर मचाने वाली चिड़िया जो जल और थल दोनों ही स्थानों पर समानरूप से दिखाई पड़ती है। इसकी लाल चोंच और सफेद सीना, कत्थई सर और हरछौंह नीली पीठ से इसको आसानी से पहचाना जा सकता है।

**रंग-रूप** : किलकिला ११ इंच लम्बा सुन्दर पक्षी है जिसके नर और मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं, इसका सर, गर्दन और नीचे का हिस्सा गाढ़ा कत्थई रहता है और गला ठुड्डी और सीने पर एक बड़ा सफेद चित्ता पड़ा रहता है। ऊपर का शेष भाग हरछौंह नीला रहता है और डैनों के बगल एक कलछौंह पट्टी रहती है। उड़ान के पंख काले होते हैं जिनके सिरे पर सफेद चित्ता होता है। आँख की पुतली भूरी, चोंच गाढ़ी लाल और टाँगें हलकी लाल रंग की रहती है। पंजे धुमैले होते हैं।

इसकी चोंच लम्बी, भारी और नोकीली रहती है। पैर कमजोर होते हैं और दूसरी और तीसरी उँगली थोड़ी दूर तक जुड़ी रहती हैं।

**निवास** : यह सुन्दर पक्षी हमारे देश के अलावा एशिया माइनर, ईरान, लंका बर्मा और दक्षिणी चीन तक फैला हुआ है। हमारे देश में पाये जाने वाला किलकिला हिमालय की ६,००० फुट की ऊँचाई से सारे देश में पाया जाता है। यह यहाँ का स्थायी रूप से रहने वाला पक्षी है जो हमारा देश छोड़ कर बाहर नहीं जाता।

**विवरण** : किलकिला अन्य कौड़िल्लों की भाँति केवल जलाशयों के आस-पास ही नहीं रहता बल्कि यह खुले स्थानों पर भी रहता है जो घने जंगलों से ढके न हों। इसका मुख्य भोजन मेढक, मछलियों के अलावा छिपकलियाँ, चूहे और अन्य कीड़े-मकोड़े हैं जिन्हें ये खुले मैदानों और खेतों में पा जाता है।

यह जहाँ पानी के ऊपर उड़ कर मछलियों को पकड़ता है वहीं खुले मैदानों में किसी ऊँची जगह पर बैठ कर कीड़े-मकोड़े तथा छिपकलियों आदि जीवों पर ऊपर से टूट पड़ता है और उन्हें पकड़ कर अपना पेट भरता है। उड़ते समय यह एक प्रकार की तेज और कर्कश बोली बोलता रहता है। यह न तो घने जंगलों में दिखाई पड़ता है और न एकदम रेगिस्तानी प्रान्तों में ही। इसे इनके अलावा सब प्रकार के खुले और नम स्थान पसन्द हैं।

**घोंसला** : किलकिला के जोड़ा बाँधने का समय मार्च से जुलाई तक रहता है। जब ये अन्य कौड़िल्लों की भाँति पानी के किनारे के किसी ऊँचे भीटे में सूराख करके अपना कोष्ठ बनाते हैं। इसमें भीतर जाने के लिए ५–७ फुट लम्बा सुरंगनुमा रास्ता रहता है जिसके सिरे पर इनका काफी चौड़ा कोष्ठ होता है।

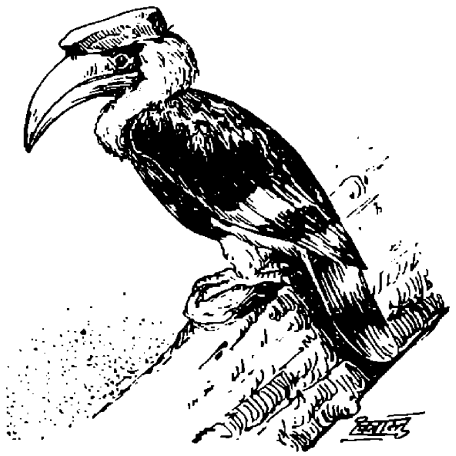
मादा इसी में समय आने पर जमीन पर ही ४ से ७ तक अंडे देती है जो करीब-करीब गोल होते हैं। अंडे धुर सफेद होते हैं और उन पर काफी चमक रहती है।

अंडे लगभग १.१५ १.०५ इंच के रहते हैं।

## १८८ होमराय (Great Hornbill : Dichoceros Bicornis)

**पर्याय** : बनराय, महा वाध्रीणस।

**पहचान** : केवल पश्चिमी घाट और हिमालय के निचले भागों में यह बड़ी कुरूप जंडली चिड़िया रहती है जिसका रंग काला और सफेद होता है। भारी-भरकम, टेढ़ी चोंच के ऊपर रखी टोपी से इसकी पहचान हो जाती है। यह बहुत शोर करती है और उड़ते समय इसके पंखों से बहुत आवाज होती है। इसकी गरदन के ऊपर सफेद रंग होता है जिसकी वजह से पश्चिमी घाट में पायी जाने वाली जाति की चिड़ियों से इसकी पहचान आसानी से हो जाती है।



होमराय

**रंग-रूप** : लम्बाई ५२ इंच। नर-मादा एक-जैसे। सर काला, गरदन का रंग गेहूँआ सफेद, ऊपरी पर और डैने के पंख काले, पंख के आर-पार एक चौड़ी सफेद पट्टी तथा सभी पंखों और उनके मूल तथा अन्त का रंग सफेद होता है, दुम और इसके ऊपर-नीचे के ढकनों का रंग सफेद तथा दुम के अन्त में एक काली चौड़ी पट्टी होती है, सीना काला तथा पेट सफेद होता है।

नर की पुतली खूनी लाल और मादा की मोतिया सफेद होती है। चोंच और टोपी का रंग पीला तथा इसके साथ चोटी पर लाल रंग की आभा होती है। और मध्य में नारंगी रंग होता है। नर की टोपी का अगला और पिछला भाग काला होता है। चोंच का उभार टोपी के बिलकुल सामने होता है। इसका रंग भी काला होता है। मादा की टोपी के पिछले भाग का रंग लाल होता है। आँख के पास की खाल में बाल नहीं होते है तथा रंग प्याजी होता है। आँख की पलक काली तथा टाँगें हरछौंह सिलेटी होती हैं।

चोंच बड़ी, मजबूत और काफी टेढ़ी होती है। इसकी टोपी से सिर और चोंच का मूल स्थान ढक जाता है। यह पीछे से चौरस और गोल तथा बगलों से ढकी हुई तथा सामने दो नोकें निकली रहती हैं। दुम लम्बी गोलाकार होती है। उँगलियाँ जड़ के पास जुड़ी होती हैं।

**निवास** : होमराय भारत, बर्मा, मलाया और सुमात्रा में पायी जाती है। लेकिन सुमात्रा में पायी जाने वाली जाति विलक्षण होती है। भारतवर्ष में यह पश्चिमी घाट, बम्बई के पास से कन्या कुमारी तक और हिमालय की घाटियों में ५,००० फुट की ऊँचाई पर पायी जाती है।

**विवरण** : होमराय जंगली चिड़िया होती है जो प्रायः सबसे बड़े पेड़ पर बैठती है जहाँ पर इस जाति की आधा दर्जन या इससे कुछ ऊपर चिड़ियाँ होती हैं। यह बरबस दिखलाई पड़ जाती है। उडते समय इसके पंखों से निकलती आवाज़ काफी दूर से सुनाई पड़ती है। पेड़ पर बैठ जाने पर ये खूब शोर करती है। ये असाधारण तौर से फड़फड़ाती, कुड़कुड़ाती और चीत्कार करती रहती हैं। इसकी उड़ान में पंखों की फड़-फड़ाहट रुक-रुक कर होती है। वायु में तैरने का काम स्थिर पंखों से करती है।

इसके मुख्य भोजन में सब प्रकार के फल होते हैं। यह फल को चोंच की नोक से पकड़ कर उछालती है और फिर उसको बीच में ही पकड़ कर निगल जाती है। होमराय सर्वभक्षी होती है इसलिए यह कीड़े, छिपकलियाँ, अनाज सभी कुछ फल की तरह उछाल कर खाती है।

इनकी अनोखी टोपी के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं है, यह ठोस न होकर कोष्ठमय और खोखली होती है। कहा जाता है कि बंदी चिड़ियाँ बहुत विध्वंसक होती हैं और अपनी चोंच का प्रयोग कुल्हाड़ी के रूप में करती है। यदि जंगली अवस्था में भी ये अपनी चोंच का ऐसा ही प्रयोग करती हों तो यह टोपी धक्का रोकने का काम करती होगी।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय जनवरी से अप्रैल तक होता है। इसकी जोड़ा बाँधने की आदत में कोई खास बात नहीं होती है। यह एक बार बनाये पेड़ में के कोष्ठ का प्रयोग काफी लम्बे समय तक करती रहती है।

इसके अंडे विभिन्न आकार के होते हैं। इनका आकार बहुत चौड़ा बैज़ावी और दोनों किनारे भुथरे होते हैं। अंडे का आवरण कुछ कड़ा होता है लेकिन इसके ऊपर मुँहासे जैसे दाने और खुरदरापन होता है। इनका रंग शुद्ध सफेद और कुछ चमकदार होता है। कोष्ठ के अन्दर काफी गंदगी रहती है इसलिए अंडे भी गंदे हो जाते हैं और इनके ऊपर कत्थई भूरे रंग के धब्बे पड़ जाते हैं।

अंडों की लम्बाई चौड़ाई २.६० × १.८८ इंच होती है।

## १८९ धनेश (Grey Horn bill : Tockus Birostris)

**पर्याय** : धनसू, धूसर, वाध्रीणस, धनचिरी।

**पहचान** : धनेश सिलेटी रंग की बड़ी-सी चिड़िया है जिसकी सीढ़ीनुमा दुम, लम्बी और टेढ़ी चोंच से इसको आसानी से पहचाना जा सकता है। इसकी चोंच के ऊपर आधी दूर तक का हिस्सा उठा रहता है जिसको टोपी कहते हैं। यह अपना सारा समय पेड़ों पर ही बिताती है।

**रंग-रूप** : लम्बाई २४ इंच। नर-मादा एक-जैसे। ऊपरी हिस्से का रंग हलका भुरछौंह खाकी और आँख के ऊपर भूरी सफेद धारियाँ होती हैं। गाल और कान के परों का रंग कलछौंह खाकी होता है। उड़ान के पंख गहरे भूरे तथा खाकी रहते हैं जिस पर सफेद रंग की बिन्दियाँ होती हैं। दुम लम्बी भूरी और सीढ़ीनुमा होती है। उसके प्रत्येक पर के अन्त में एक काले रंग की पट्टी होती है जिसके ऊपर हरे रंग की चमक और सफेद बिन्दी होती हैं। ठोड़ी से लेकर सीने तक का रंग खाकी होता है जो पेट के पास जाकर सफेद हो जाता है। आँख की पुतली लाल भूरी, चोंच काली और टाँगें गहरी सिलेटी रहती हैं। चोंच बड़ी, टेढ़ी और बगल से दबी रहती है, इसके ऊपर एक छोटी नोकीली नोक निकली होती है जिसे टोपी कहते हैं। पलकों में बरौनियाँ होती हैं।

**निवास** : धनेश हमारे देश में स्थायी रूप से रहने वाली चिड़िया है जो हिमालय की २,००० फुट की ऊँचाई से लेकर सारे भारत के जंगलों में पायी जाती है। यह बम्बई, राजस्थान और पंजाब की ओर नहीं जाती और इसे बंगाल के दक्षिणी भागों में भी देखना कठिन है। यह हमारा देश छोड़कर बाहर नहीं जाती।

**विवरण** : धनेश पेड़ों पर रहने वाली चिड़िया है। यह खुले मैदानों के पुराने पेड़ों पर रहती है। यह घने जंगलों में नहीं जाती बल्कि बागों और बस्तियों में जाना इसे अच्छा लगता है। यह छोटे-छोटे गिरोहों में रहती है। और एक डाली से उड़ कर दूसरी डाली पर पहुँच जाती है। यह सभी प्रकार

के जंगली फल—अंजीर आदि तथा बीज और हरी पत्तियां खाती हैं। इसके अलावा यह सब तरह के कीड़े भी खा लेती है। जब यह पेड़ से किसी खुले मैदान की ओर उड़ती हैं तो इनकी उड़ान भारी, बोझिल और लहरदार रहती है। इसकी आवाज तेज, कर्कश और चील की तरह होती है।

**घोंसला** : धनेश के जोड़ा बाँधने का समय अप्रैल से जून तक होता है। यह अपने विचित्र घोंसले के बनाने के लिए विशेष-रूप से प्रसिद्ध है।

यह अपने अंडे घोंसले में न देकर किसी बड़े पेड़ के तने के छेद में देती है जो पेड़ की १० फुट से लेकर कुछ अधिक ऊँचाई पर रहते हैं। अपने खोथे के लिए यह प्रायः पीपल और सेमल के पेड़ों को पसन्द करती है। अंडे देने के समय मादा पेड़ के खोथे के भीतर चली जाती है और तब तक अन्दर रहती है जब तक बच्चे एक हफ्ते के नहीं हो जाते। यह पहले दो तीन-दिन खोथे के छेद को अपनी बीट से बन्द करने में लगाती हैं। इसकी बीट बहुत लिसलिसी होती है और सूख जाने पर मिट्टी की तरह हो जाती है। इस काम के लिए यह अपनी चपटी चोंच का कड़ी प्रयोग कन्नी के रूप में करती है।

खोथे का मुँह बन्द हो जाने पर उसमें केवल एक छोटी-सी खड़ी दराज-सी रह जाती है। जिसकी चौड़ाई आदमी की उँगुली के बराबर और गहराई २-३ इंच होती है। इसी दराज से नर मादा को भोजन दिया करता है और इस प्रकार मादा के खोथे में बन्द हो जाने पर उसे भोजन के लिए नर के ऊपर आश्रित रहना पड़ता है। नर अपनी चोंच में खाना दबा कर लाता है और दराज के पास की छाल को पंजों से पकड़ लेता है। मादा अपनी चोंच दराज से बाहर निकाल देती है और नर से अपना भोजन प्राप्त करती है।

अंडे सेने के दौरान मादा धनेश बहुत मोटी और गंदी हो जाती है। खोथे से पहली बार बाहर आने पर उसके पंख इतने कड़े हो जाते हैं कि वह मुश्किल से उड़ पाती है।

मादा धनेश ५-६ अंडे देती है। ये अंडे चौड़े अंडाकार, चिकने और बिना चमक के होते हैं। इनका रंग संदली सफेद होता है।

अंडों की औसत लम्बाई चौड़ाई १.७ × १.२२ इंच होती है।

## १९० हुदहुद (Hoopoe : Upupa Epops)

**पर्याय** : मुर्ग सुलेमान, दुबया, सुतार, भारत पुत्र प्रिय, शाह सुलेमान।

**पहचान** : ऊपरी भाग बादामी, डैने और दुम का रंग काला जिस पर सफेद पट्टियाँ। चोंच लम्बी और टेढ़ी, चोंच तथा पंखे जैसे कलँगी, जिसे ये फैलाते और सिकोड़ते रहते हैं। यह यहाँ का बहुत परिचित पक्षी है, जिसे सभी लोग भली भाँति जानते हैं।

**रंग-रूप** : हुदहुद की लम्बाई १२ इंच होती है और इसके नर मादा एक-जैसे होते हैं। इसके सर और पंखे के आकार की कलँगी, जिसके पर पीछे की ओर बड़े होते जाते हैं, का रंग बादामी रहता है। कलँगी के परों के सिरे पर सफेद और काली पट्टियाँ पड़ी होती हैं। पीठ और गरदन हलकी भूरी रहती है और कंधों से लेकर पंखों के मोड़ तक एक इसी रंग का चौड़ा चित्ता पड़ा रहता है। पीठ के पीछे की ओर काली और बदामी सफेद चौड़ी पट्टियाँ होती हैं। डैने के पंख और दुम काली। उड़ान के पंख की जड़ के पास सफेद रंग की तीन-चार पट्टियाँ होती हैं। दुम के बीच का हिस्सा सफेद रहता है। ठोड़ी सफेद, गला और सीना हलका बदामी और सीने का बगली हिस्सा राखीपन लिये भूरा रहता है। शरीर का शेष निचला हिस्सा सफेद रहता है जिस पर छोटी-छोटी काली और खाकी रंग की खड़ी धारियाँ पड़ी रहती हैं। आँख की पुतली लाल भूरी, चोंच कलछौंह सिलेटी और टाँगे गाढ़ी सिलेटी होती हैं। चोंच लम्बी, पतली और टेढ़ी और पंख गोलाकार होते हैं।

**निवास** : हुदहुद यूरोप, अफ्रीका और एशिया में पाया जाने वाला पक्षी है जिसकी अनेक जातियाँ होती हैं। हमारे यहाँ केवल तीन जातियों के हुदहुद पाये जाते हैं। जिनके रंग-रूप में थोड़ा ही भेद रहता है। इनके रहन-सहन और स्वभाव एक-जैसे ही होते हैं। पहली जाति का हुदहुद भारत के उत्तरी और दक्षिणी भागों में पाया जाता है। यह यहाँ का स्थाई रूप से रहने वाला पक्षी है। दूसरी जाति के हुदहुद हिमालय की घाटियों में होते हैं जो जाड़े की ऋतु में मैदानों में आ जाते हैं। यह पंजाब और उत्तर प्रदेश में काफी संख्या में देखने में आते हैं। इस जाति के चोटी के सबसे लम्बे पर के ऊपर बादामी और काले रंग के बीच एक सफेद चित्ता होता है। तीसरी जाति के हुदहुद केवल दक्षिण भारत में पाये जाते हैं। यहाँ पहली जाति के हुदहुद का वर्णन दिया जा रहा है लेकिन दूसरे का स्वभाव भी इसी की तरह होता है।

यहाँ दो अन्य पक्षियों के बारे में बतला देना आवश्यक जान पड़ता है। इनमें से पहली "हमेशा प्यासा" Red headed Trogon (Harpactes Eryths-ocephatus) है, जो हिमालय के पूर्वी भागों और आसाम में पाया जाता है। दूसरा "कफनीचुरी" Malabar Trogon (Harpacts fasciatus) है, जो छोटा नागपुर क्षेत्र में पाया जाता है। हमेशा प्यासा के नर का रंग गुलाबी प्याजी और लाल भूरा होता है। कफनीचूरी के नर का रंग लाल भूरा तथा सर काला और पेट लाल रंग का होता है। ये दोनों चिड़ियाँ वृक्षों पर रहती हैं, और इनकी आवाज कोमल म्याऊँ-म्याऊँ की जैसी होती है।

**विवरण** :हुदहुद घने जंगलों में रहना पसन्द नहीं करता। यह आमतौर पर खुले मैदानों और पेड़ के झुरमुटों, हल्के घास-पात के जंगलों और गाँवों के बाहर रहता है और यह घरों के खंडहरों या खाली इमारतों में घूमता फिरता है। यह भोजन के लिए जमीन पर टहलता दिखाई पड़ता है और इसको घास या दूब के मैदान, रास्ते और ऐसे ही अन्य स्थान बहुत पसन्द हैं। दूब में अधिक समय बिताने के कारण ही इसको लोग दुबया भी कहते हैं। इन स्थानों पर इसे कीड़े-मकोड़े और उनकी इल्लियाँ खूब मिलती हैं, जो इसके भोजन के मुख्य भाग होते हैं। यह जमीन पर बहुत आराम से चलता और दौड़ता है और जमीन पर घास की जड़ों और मिट्टी की दराजों को खोदता और पत्तियों और कूड़ा-करकट को उलटता-पलटता रहता है। यहाँ इसे छिपे हुए कीड़े-मकोड़े और नरम जड़ें प्राप्त होती हैं। चुगते समय थोड़ी भी बाधा पड़ने पर यह उड़कर पेड़ों या इमारतों पर जा बैठता है। हुदहुद जमीन के ऊपर ही अपना चुगने का काम करता है, पेड़ों पर नहीं।

दाना चुगते समय इसकी कलँगी दब कर बन्द हो जाती है और फिर उड़ान भरने के समय खड़ी हो जाती है। साधारण तौर पर इसकी उड़ान धीमी और एक तरह से लहरदार होती है, मानो यह उड़ने में झिझक रहा है।

हुदहुद की आवाज तेज और "हुद् हुद्" से मिलती-जुलती होती है। शायद इसीलिए इसे हुदहुद नाम दिया गया है। यह अपनी आवाज को दो-तीन बार दोहराता रहता है। कभी-कभी यह अपने घोंसले में बैठकर भी अपनी तेज और कर्कश बोली बोला करता है।

हुदहुद का उल्लेख प्राचीन पुस्तकों में मिलता है और प्राचीन मित्त चित्रों में अक्सर इनका चित्रण देखने को मिलता है।

प्राचीन मिस्र और क्रीट के भित्ति-चित्रों में हुदहुद का बहुत सुन्दर चित्रण पाया जाता है। उस समय से वर्तमान काल तक इसका नाम साहित्य और पौराणिक कथाओं में आता रहा है। एक पश्चिमी पौराणिक कथा में बताया गया है कि क्रीट के राजा जैरयूस ( Jerus ) ने अपने को दंडित करने के लिए हुदहुद के रूप को अपनाया था।

मुसलमान देश इसे सुलेमान की प्रिय और विश्वासपात्र चिड़िया जानते हैं। इसीलिए इसे मुर्ग सुलेमान का सुन्दर नाम मिला है। हुदहुद बाइबिल की लैपविंग ( Lapwing ) पक्षी है। साहित्य में भी इसका प्रमुख स्थान है। इसका प्रयोग जादू और औषधियों में भी किया जाता है। इसके विभिन्न अंगों के प्रयोग करने के बारे में लेखकों ने काफी लिखा है कि वह नजर और याददाश्त की शक्ति बढ़ाने के लिए किया जाता है।

**घोंसला** : हुदहुद के जोड़ा बाँधने का समय फरवरी से जुलाई तक रहता है लेकिन अप्रैल और मई में इसके अधिक अंडे मिलते हैं।

हुदहुद का घोंसला बहुत ही साधारण किस्म का होता है। यह घास-फूस, बाल, पत्तियों या परों का ढेर मात्र होता है जिसे यह बड़े भद्दे ढंग से किसी छेद में रख देती है। घोंसले के छेद के लिए अन्धेरे का होना आवश्यक है। वैसे यह कहीं पर पेड़ दीवार और छत यहाँ तक कि किसी सूनी झोंपड़ी के फर्श पर भी मिल जाते हैं।

अंडा देने के समय मादा हुदहुद के शरीर से बहुत तेज दुर्गन्ध निकलती है। इस समय यह घोंसला नहीं छोड़ती और इसके भोजन की व्यवस्था नर करता है। अंडे सेने की अवधि में मादा घोंसले की सफाई नहीं करती। इसलिए घोंसला बहुत गंदा और बदबूदार हो जाता है।

समय आने पर मादा ३ से १० तक अंडे देती है। पहले अंडे से ही सेने का काम शुरू हो जाता है इसलिए घोंसले में विभिन्न कद के बच्चे पाये जाते हैं।

इसके अंडे लम्बोतरे और सिरे की ओर नोकीले होते हैं। अंडे चिकने और बिना चमक के होते हैं और उन पर किसी प्रकार के चिह्न नहीं होते। अंडों का रंग हरछौंह नीला से लेकर पीला जैतूनी भूरा तक होता है। सेने के अन्त समय तक अंडों के ऊपर गंदे भूरे रंग के धब्बे पड़ जाते हैं।

अंडों की औसत लम्बाई चौड़ाई १.०० × ०.६६ इंच होती है।

## १९१ बतासी (Indian Swift : Micropus Affinis)

**पर्याय** : भारत ग्राम दुर्बल, बतसिया।

**पहचान** : बतासी छोटी और काले रंग की चिड़िया है जिसकी दुम की जड़ सफेद रहती है। इसके डैने नोकीले, दुम दुफंकी और पैर कमजोर होते हैं। यह बस्तियों के आस-पास झुंडों में उड़ती रहती है और उड़ते ही उड़ते कीड़े-फतिंगे पकड़ कर अपना पेट भरती रहती है।

**रंग-रूप** : लम्बाई ६ इंच। नर-मादा एक-जैसे इसकी दुम की जड़ के ऊपर आर-पार एक सफेद चौड़ी पट्टी रहती है। ठोड़ी और गला सफेद रहता है। इसके शरीर का रंग गहरा कलछौंह भूरा और कुछ चमकदार होता है। सर के ऊपर और दुम के नीचे का रंग सफेद रहता है और आँख के सामने एक गहरी काली चित्ती होती है। आँख की पुतली गहरी भूरी, चोंच काली और टाँगे ललछौंह भूरी होती हैं। चोंच छोटी तथा जड़ के पास काफी चौड़ी होती है। पंख कड़े और दराँती-दार होते हैं जो तेज रफ्तार से उड़ने के लिए खासतौर से उपयुक्त होते हैं। दुम छोटी और काफी दुफंकी होती है। पैर कमजोर


हंसावर
टिकरी
चकोर
पतेरा
सीरखपर
तूगदार

और जमीन पर चलने के लिए अयोग्य होते हैं। चारों उँगलियाँ आगे की ओर रहती है लेकिन पहली का झुकाव कुछ पीछे की ओर रहता है।

**निवास**: बतासी भारत के अलावा उत्तरी पश्चिमी अफ्रीका दक्षिण पूर्व एशिया, लंका और बर्मा से लेकर मलाया तक मिलती है। इसकी अनेक जातियाँ होती है। यहाँ पर हमारा सम्बन्ध केवल इस जाति विशेष से ही है। यह सम्पूर्ण भारत और लंका में पायी जाती है। कहीं-कहीं यह काफी संख्या में और कहीं बिल्कुल कम दिखाई पड़ती है। इसके इस प्रकार के निवास के कोई स्पष्ट कारण नहीं दिखलाई देते। यह हिमालय के ऊपर काफी ऊँचाई पर नहीं मिलती लेकिन इसे ६,००० फुट की ऊँचाई तक देखा जा सकता है। यह स्थानीय पक्षी है लेकिन अपनी सुविधानुसार थोड़ा-बहुत स्थान परिवर्तन कर लेती है।

इसी के समान किन्तु इससे कुछ बड़ी जाति की एक बतासी यहाँ और पायी जाती है जिसका पुच्छांत सफेद होता है। यह हिमालय और आसाम में पायी जाती है, इसे श्वेत पृष्ठ बतासी ( White Rumped Swift ) कहते हैं।

एक अन्य जाति की बतासी भी हिमालय के क्षेत्रों में पायी जाती है किन्तु इसका पुच्छांत सफेद नहीं होता। इसे सामान्य बतासी ( Common Swift ) कहते हैं।

एक और अल्पाइन बतासी (Alpine Swift) सम्पूर्ण भारतवर्ष में पायी जाती है। इसका आकार भारतीय बतासी से दुगुना होता है। इसके शरीर के निचले हिस्सों के सफेद रंग और सीने के आर-पार की काली पट्टी से इसकी पहचान आसानी से हो जाती है।

एक और बड़ी जाति की बतासी जो दुनिया की सभी चिड़ियों में सबसे तेज उड़ाने वाली होती है और जिसके दुम के तार जैसे लम्बे परों के कारण इसे सूचिकाकार पुच्छ बतासी (Needle-tailed Swift) कहते हैं, हिमालय और दक्षिण-पश्चिम भारत में पायी जाती है।

**विवरण**: भारतीय बतासी हमारी बहुत परिचित चिड़िया है जो छोटे और बड़े समूहों में गाँव और बस्तियों के आस-पास आकाश में उड़ती रहती है। ये उड़ते-उड़ते ही कीड़े-फतिंगों को पकड़ कर अपना पेट भरती हैं और इनके समूह एक ही स्थान पर अपने घोंसले बनाते हैं। इनके घोंसले अक्सर पुरानी इमारतों में पाये जाते हैं। गाँव और शहर के भीतर किसी रिहायशी इमारत, खंडहर तथा मन्दिर आदि कहीं भी, बतासी अपने घोंसले बना लेती है। ये अपने घोंसले पुलों के नीचे, चट्टानों खड़ी पहाड़ियों के नीचे या कगारदार नालों में भी रखती है।

बतासी अपने घोंसलों की बस्तियों में लगातार रहती है। ये एक-एक करके आगे-पीछे जोड़ा बाँध कर अपने घोंसले बनाती हैं। इसलिए इनके घोंसलों की बस्ती में हमेशा अंडे या बच्चे देखे जा सकते हैं। बतासी अपने घोंसले का प्रयोग आराम करने और सोने के लिए भी करती है नहीं तो इनका सारा जीवन हवा में उड़ने, तेजी से उड़ाने भरने, जल्दी-जल्दी पंखों के चलाने और हवा में शिकार करने ही में बीत जाये। कभी-कभी ये अजीब ढंग से चीं-चीं जैसी अवाज करती हैं जिससे इसकी प्रसन्नता और हर्ष का अंदाजा लग सकता है।

अपनी छोटी टाँगों के कारण बतासी पेड़ या जमीन पर बैठने में असमर्थ होती है। अपने छोटे पैरों और पंखों की कड़ाई के कारण यह जमीन पर लुढ़क जाती है और तब बड़ी मुश्किल से उठ कर हवा में उड़ पाती है।

**घोंसला**: बतासी अपने घोंसले झुंडों में बनाती है। ये घोंसले गोल या लम्बोतरे होते हैं जिन्हें ये परों तथा घास-फूस से बनाती हैं। इनको ये अपने लसलसी लार से जोड़ कर बनाती है। इनके मुँह का थूँक या लार परों आदि को जोड़ने में सीमेंट का काम करता है। अपने घोंसलों को ये चट्टानों या छतों के नीचे चिपका देती हैं। कुछ, अपने घोंसले किसी छेद में बना लेती है जिसमें भीतर जाने के लिए बगल से एक छेद रहता है। इनको ठंड बहुत सताती है और बरसात या ठंडक के एक झोके से ही ये आधी अचेत हो जाती हैं।

इसके अंडे अधिक लम्बे और सिरे की ओर अधिक नोकीले होते हैं। ये धुर सफेद होते हैं और इन पर न तो चमक रहती है और न किसी प्रकार के चिह्न ही पड़े रहते हैं।

अंडों की औसत लम्बाई चौड़ाई ०.८५ × ०.५५ इंच होती है।

## १९२ तलचट्टा (Palm Swift : Cypsiurus Batassiensis)

**पर्याय** : बंगताल दुर्बल, चमचिकी, ताड़ी, अबाली।

**पहचान** : तलचट्टा बतासी से छोटा पक्षी है जो ताड़ और खजूर के पेड़ों के चारों ओर मँडराती रहती है। यह बतासी से धीमी उड़ान करने वाला, उससे लम्बी दुम वाला पक्षी है जिसकी दुम के ऊपर सफेद पट्टी नहीं रहती।

**रंग-रूप** : लम्बाई ५ इंच। नर मादा एक-जैसे। इसके ऊपर का हिस्सा धूमिल भूरा, सर गहरा भूरा और दुम के पर उससे भी अधिक भूरे होते हैं। नीचे का रंग खाकी भूरा और ठोड़ी तथा गले का रंग पिलछौंह भूरा रहता हैं।

आँख की पुतली लालछौंह, चोंच काली और टाँगें धूमिल भूरी होती हैं। चोंच काफी छोटी और उँगलियों के दो-दो के जोड़े होते हैं। पहली और दूसरी उँगली भीतर की ओर और तीसरी तथा चौथी बाहर की ओर रहती है। दुम काफी दुफंकी और पंख टेढ़े और नोकीले होते हैं।

**निवास** : तलचट्टा पंजाब तथा माउंट आबू को छोड़ कर सम्पूर्ण भारत में पाया जाता है। इसकी एक दूसरी जाति भी है जो आसाम, बर्मा और सुदूर पूर्व में पायी जाती है।

**विवरण** : तलचट्टा खजूर या ताड़ के वृक्षों पर परोपजीवियों की भाँति आश्रित रहता है। प्रधान रूप से यह ऐसे क्षेत्रों में पाया जाता है जहा खजूर और ताड़ के पेड़ होते हैं। कभी-कभी यह उन जगहों पर भी दिखाई पड़ता है जहाँ ताड़ या खजूर जाति के मिलते-जुलते वृक्ष होते हैं। इसका घोंसला ताड़ के वृक्ष पर होता है और यह अपना सारा जीवन कीड़ों-मकोड़ों और छोटे गुबरीलों की तलाश में लगा देता हैं। इसकी उड़ान अन्य बतासी जाति की चिड़ियों से धीमी होती है। यह कभी-कभी ताड़ के पत्तों के ऊपर-नीचे चलता रहता है जिससे एक प्रकार की खर-खराहट की आवाज आती है।

यद्यपि ये समूहों में रहते हैं, किन्तु प्रायः ३-४ से अधिक तलचट्टे एक पेड़ पर बसेरा नहीं लेते। नागा और गारो पहाड़ियों के निवासी जो अपने घरों के ऊपर ताड़ के पत्तों का छप्पर बनाते हैं उन पर भी कभी-कभी तलचट्टे अपना घोंसला बना लेते हैं।

**घोंसला** : इनके जोड़ा बाँधने का समय साल भर चलता रहता है जो प्रत्येक स्थान के अनुसार अलग-अलग होता है। मादा साल में कम से कम दो बार अंडे देती है।

ताड़ की बड़ी पत्तियाँ जो हवा के कारण झुक कर लटक जाती हैं और जिनके ऊपरी हिस्से भीतर की ओर मुड़ जाते हैं, ये पक्षी पत्ती के सतह के इसी भाग में जो कि भीतर की ओर झुका होता है, अपने घोंसले बनाते हैं। बड़ी पत्तियों की सतह पर मजबूती से हलका छोटा-सा घोंसला चिपका होता है। घोंसले का आकार छोटी जेब की तरह होता है जिसे ये नरम वनस्पतियों के रेशों और परों को अपनी लार से जोड़ कर बनाती हैं। घोंसले का मुख्य ढाँचा बहुत नरम होता है लेकिन ऊपरी किनारे का घेरा एक प्रकार की रस्सी जैसा बटा हुआ होता है जिससे कि वह मादा पक्षी के भार को सह सके।

समय आने पर मादा आमतौर पर ३ अंडे देती है। इनकी संख्या कभी-कभी ४-५ हो जाती हैं। अंडे का आकार लम्बोतरा तथा एक ओर थोड़ा-सा दबा रहता है। ये घुर सफेद और बिना चमक के होते हैं।

अंडे की लम्बाई चौड़ाई ०.७० × ०.५४ इंच होती है।

## १९३ चोटीदार बतासी (Indian Crested Swift : Hemiprocne Coronata)

**पर्याय** : भारत शिखी, दुर्बल चटक।

**पहचान** : इस बतासी के पंख राखी भूरे और दुम चमकदार कलछौंह होती है। नर के कान पर कत्थई रंग का चमकीला चित्ता पड़ा रहता है। और दुम लम्बी और दुफंकी होती है। यह झुंडों में कीड़े-फतिंगों को पकड़ती हुई या पेड़ों पर बैठी देखी जा सकती है। इसकी आवाज काफी तेज होती है।

**रंग-रूप** : लम्बाई ९ इंच। नर की कलँगी गहरी राखी नीली, ऊपरी हिस्से का रंग घूमिल राखी नीला तथा उड़ान के भीतरी पंख भी इसी रंग के होते हैं। डैने का शेष भाग और दुम का रंग काला और हरकौंह रहता है जिसमें नीलेपन की थोड़ी चमक होती है आँख के सामने मखमली काले रंग का चित्ता-सा रहता है और इसके ऊपर एक बहुत पतली सफेद रेखा होती है। चोंच के नीचे एक कत्थई धारी और आँख के पीछे तथा नीचे इसी रंग का एक चित्ता रहता है। ठोड़ी हलकी ललछौंह भूरी और नीचे का हिस्सा राखीपन लिये हलका सिलेटी रहता है जो दुम के नीचे पहुँचते-पहुँचते सफेद हो जाता है।

मादा नर की ही तरह होती है किन्तु इसकी चोंच के नीचे लाल भूरी धारी न होकर सफेद धारी होती है और आँख के पीछे लाल भूरे रंग का चित्ता ऊपर के रंग से मिलता-जुलता रहता है। ठोड़ी राखीपन लिये हलकी सिलेटी रहती है। आँख की पुतली गहरी भूरी, चोंच काली टाँगें प्याजी भूरे रंग की होती हैं। चोंच छोटी, सर के ऊपर कलँगी, पंख लम्बे नोकीले और दुम काफी लम्बी तथा दुफंकी होती है। प्रत्येक बाजू के पर रेशम जैसे मुलायम होते हैं।

**निवास** : चोटीदार बतासी केवल भारत, लंका बर्मा और स्याम में पायी जाती है। इसकी जातियाँ नहीं होती, भारतवर्ष में यह पंजाब और राजस्थान के कुछ भागों को छोड़ कर शेष भागों में पायी जाती हैं। यह यहाँ की स्थायी रूप से रहने वाली चिड़िया है जो पहाड़ों पर ४,००० फुट की ऊँचाई तक दिखाई पड़ती है।

**विवरण** : यह जंगल में रहने वाली चिड़िया है। जिसे जंगलों में छोटे और बड़े झुंडों में रहना अच्छा लगता है। वहाँ यह बड़ी तेजी से चक्करदार उड़ान भरती है और उड़ते ही उड़ते कीड़े फतिंगों को पकड़ कर अपना पेट भरती है।

यह पेड़ों की सबसे ऊँची डाल पर भी बैठती है जो सूखी और बिना पत्तों वाली होती है। बैठने पर इसकी चोटी सीधी और तनी रहती है। यह अपने अड्डे या टहनी पर बैठ जाने के बाद तोते की तरह "की, की" जैसी तेज आवाज करती रहती है। बसेरा लेने के पहले यह बहुत शोर करती है। यदि इसके रहने के निकट पानी, तालाब या नदी-नाले हों तो यह हवा में उड़ती हुई पानी की सतह को छूने के लिए तेजी से उतरती है और पानी को छूकर फिर वक्राकार उड़ती हुई ऊपर चढ़ जाती है।

**घोंसला** : भारतवर्ष में चोटीदार बतासी के जोड़ा बाँधने का समय मार्च से जून तक रहता है। इसके घोंसले का ढाँचा

बहुत सुन्दर होता है । यह छोटी तश्तरी की शक्ल का होता है जिसे यह छाल के टुकड़ों और छोटे-छोटे परों को खड़ी टहनी के साथ अपनी गाढ़ी लार से जोड़ कर बनाती है । घोंसले की मोटाई १।८ इंच से ज्यादा नहीं होती है और इसके सबसे गहरे भाग की गहराई आधे इंच से अधिक नहीं होती है। बाहर की सबसे अधिक नाप २ इंच होती है। यह अपने घोंसला बनाने के लिए ऐसी टहनी चुनती है जो सूखी और सबसे ऊँची हो। कभी-कभी यह अपने घोंसले झाड़ीदार जंगलों में बहुत कम ऊँचाई के पेड़ों पर भी बना लेती है । नीचे से देखने में यह एक गाँठ की तरह लगता है और यदि मादा बार-बार इसमें जाना-आना न रखे तो इसे पहचानना मुश्किल हो जाता है । इसके एक अकेले अंडे से घोंसला पूरी तरह भर जाता है । अंडे को सेने के लिए मादा घोंसले और टहनी पर आड़े होकर बैठती है जिससे उनका भार टहनी पर ही रहे।

इसका अंडा बैंजाबी होता है जिसके दोनों किनारे भुथरे रहते हैं । इस पर चमक नहीं होती है। यह धुर सफेद रहता है जिस पर राखीपन लिये निलछौंह झलक रहती है ।

अंडे की लम्बाई चौड़ाई ०.९४ × ०.६१ इंच होती है ।

## १९४ छपका (Night-Jar : Caprimulgus Asiaticus)

**पर्याय** : छपया, छिप्पिका ।

**पहचान** : छपका नरम परों वाला धुमैले भूरे और खाकी रंग का पक्षी है । जो सूर्यास्त के बाद खुली जगहों में पेड़ों के आस-पास घूमता फिरता देखा जा सकता है ।

मोटर से यात्रा करने वालों ने रात के समय इसे सड़क के बीच अक्सर बैठा देखा होगा । इसकी आँखे मोटर के प्रकाश में बड़ी तेजी से चमकती हैं । भारतवर्ष में पाये जाने वाले छपकों में यह सबसे छोटा है । इसकी सूरत-शक्ल और आवाज को देख सुन कर अन्य छपकों से इसे पहचानना कठिन नहीं होता।

**रंग-रूप** : लम्बाई १० इंच नर मादा एक-जैसे । ऊपरी भाग पिलछौंह खाकी। कलँगी के मध्य के नीचे एक काली चित्ती और पीठ तथा डैनों पर बहुत पतली काली पट्टियाँ । गरदन के पिछले भाग पर हलके भूरे रंग की चौड़ी पट्टी और तितरे-बितरे धूमिल चिह्न होते हैं। पीठ के दोनों बाजुओं पर बड़ी-बड़ी काली चित्तियाँ और हलके बादामी रंग के चिह्न होते हैं । डैने के ऊपर कुछ हलके भूरे चित्ते होते हैं। पहले चार, उड़ान पंखों के ऊपर सफेद या भूरी चित्तियाँ रहती हैं और दुम के बीच के दोनों पर ऊपरी रंग से मिलते-जुलते होते हैं लेकिन इसके साथ खंडित काली आड़ी तिरछी रेखाएँ भी पड़ी रहती हैं । निचला हिस्सा बादामी तथा हलकी खड़ी रेखाओं से भरा रहता है । गले के दोनों ओर सफेद चित्ती होती है । आँख की पुतली गहरी भूरी, चोंच गहरी भूरी और टाँगें प्याजी भूरी होती हैं ।

इसकी आँखे बड़ी और चमकदार, चोंच छोटी, कमजोर और हुकदार होती है जिसकी जड़ के पास लम्बे कड़े बालों की झालर-सी दिखलाई पड़ती है । इसके पंजे में सामने तीन और पीछे एक उँगली होती है। बीच की लम्बी उँगली में भीतर की ओर एक दाँतेदार पंजा-सा लगा होता है । जिसका प्रयोग यह कड़े बालों वाले कीड़ों की चमड़ी निकालने के लिए किया करते हैं । इनके पर कोमल और ढीले ढाले से होते हैं ।

**निवास** : छपका सारे भारत और लंका बर्मा में पाया जाता है। यह पंजाब के पूर्वी और दक्षिणी भागों में कम दिखलाई पड़ता है। जहाँ एक दूसरी जाति का छपका पाया जाता है। यह यहाँ का स्थानीय पक्षी है जो अपनी सुविधानुसार थोड़ा स्थान-परिवर्तन करके भी हमारे देश के बाहर नहीं जाता ।

**विवरण** : छपका मैदानों, खुले और जोते बोये खेतों में जहाँ बाग, आम के झुरमुट घरों के पास होते हैं, काफी संख्या में रहता है । यह दिन में जमीन पर किसी निर्जन स्थान पर झाड़ी या पेड़ के नीचे सोता रहता है और शाम होने पर खुले मैदानों में अपने भोजन की तलाश में निकल पड़ता है । इसकी आदत निशाचर पक्षियों जैसी होती है । अँधेरा होते ही यह अपने स्थान पर पहुँच जाता है और कीड़ों-फतिंगों और गुबरीलों को पकड़ना शुरू कर देता है । इसकी उड़ान भी कमजोर और लहरदार होती है। लम्बी दुम और लम्बे परों वाला यह पक्षी फतिंगे की तरह उड़ता है । इसकी दिशा जैसे अनिश्चित-सी होती है। यह कभी इधर कभी उधर चक्कर लगाता है और गोता लगाकर ऊपर की ओर तेजी से पंखों को फड़फड़ाता हुआ उड़ता है । उड़ान के समय इसके पंख और दुम काफी फैल जाते हैं । इसके कोमल परों के कारण इसकी उड़ान में तनिक भी शोर नहीं होता । बीच की लम्बी उँगली के कारण यह जमीन पर भली भाँति नहीं चल पाता ।

जोड़ा बाँधने के समय छपका एक अजीब तरह की आवाज करता है जो चक्, चक्, चक्, चक् जैसी मालूम देती है । यह अपनी आवाज पहले धीरे से और फिर तेजी से करती है जो काफी दूर तक सुनाई पड़ती है ।

इसके चौड़े मुँह के बारे में कहा जाता है कि यह बकरी या गाय के थनों से दूध पी लेती है लेकिन इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता ।

**घोंसला** : छपका के जोड़ा बाँधने का समय भिन्न-भिन्न स्थानों के अनुसार मार्च से सितम्बर तक बदलता रहता है । यह घोंसला नहीं बनाता । मादा अपने अंडे किसी सुरक्षित स्थान में जमीन पर या किसी पेड़ या झाड़ी के नीचे रख देती है।

समय आने पर मादा प्रायः २ अंडे देती है जो काफी लम्बो-

तरे होते हैं अंडे प्याजी या हल्के पत्थरी रंग के होते हैं जिन पर थोड़ी चमक रहती है। अंडों पर ललछौंह भूरी या निलछौंह भूरी चित्तियाँ, बिन्दियाँ और चित्ते पड़े रहते हैं।

अंडे लगभग १.०४ × ०.७७ इंच के रहते हैं।

## १९५ फूपू (Cuckoo : Cuculus Canorus)

**पर्याय** : श्वेत कोकिल, कुक्कू, कूपक।

**पहचान** : फूपू शक्ल सूरत में बाज की तरह और तेज उड़ने वाली चिड़िया है जिसका ऊपरी भाग राखिया खाकी और निचला हिस्सा सफेद रहता है। इसके सीने से लेकर नीचे तक काले रंग की खड़ी रेखाएँ पड़ी रहती हैं। यह वैसे तो पेड़ों पर छिपी रहती है लेकिन अपनी उपस्थिति की सूचना यह अपनी सुपरिचित आवाज से देती रहती है। स्वभाव में बहुत शर्मीली होने के कारण यह ज्यादातर घने वृक्षों में ही छिपी रहती है।

**रंग-रूप** : लम्बाई १३ इंच। नर का ऊपरी भाग गहरा राखी रहता है और दुम की जड़ के पास हल्के रंग का एक चित्ता पड़ा रहता है। डैने भूरे और चमकदार होते हैं जिसके भीतरी हिस्से पर सफेद खड़ी रेखाएँ रहती हैं। दुम लम्बी और थोड़ी सीढ़ीनुमा होती है जिस पर कलछौंह भूरी सफेद चित्तियाँ पड़ी रहती हैं। ठोड़ी गला और गरदन के बगल और सीने का ऊपरी हिस्सा भुरछौंह राखी रहता है। नीचे का शेष भाग सफेद तथा कलछौंह रंग की खड़ी रेखाओं से भरा होता है।

मादा के रंग में गाढ़े भूरे रंग की झलक होती है। और एक हलके भूरे रंग की अस्पष्ट पट्टी सीने के ऊपर होती है। मादा का रंग नर की अपेक्षा अधिक ललछौंह होता है। आँख की पुतली पीली, चोंच गहरी भूरी, जिसका निचला भाग हरछौंह और टाँगें पीली होती हैं। इसके नथुने गोल, पंख लम्बे और नोकीले रहते हैं और टखनों पर थोड़ी दूर तक पर होते हैं। दुम की जड़ के पास के पर लम्बे, मोटे और कुछ कड़े होते हैं जो एक गद्दी की तरह लगते हैं। उँगलियाँ जोड़ों में होती हैं। पहली और चौथी उँगलियाँ पीछे की ओर मुड़ी रहती हैं।

**निवास** : फूपू हमारे यहाँ की मौसमी चिड़िया है जो संसार के बहुत स्थानों में पायी जाती है। इसकी अनेक जातियाँ होती हैं। इसमें से केवल दो हमारे यहाँ आती हैं। पहली फूपू उत्तरी एशिया तथा पूर्व की ओर जापान तक और दक्षिण की ओर हिमालय तक पायी जाती है। लेकिन दूसरी जाति की फूपू जिसका यहाँ वर्णन दिया जा रहा है, जाड़ों में हिमालय के मध्य भारत तक फैल जाती है, कुछ दक्षिण भारत तक चले जाते हैं। इस फूपू के निचले भाग पर खड़ी रेखाएँ पड़ी रहती हैं।

**विवरण** : फूपू की सुपरिचित बोली वसन्त आगमन की मधुर याद दिलाती है। हिमालय के पहाड़ी क्षेत्रों के लोग तथा सभी यूरोपवासी इसकी आवाज को सुनकर प्रफुल्लित हो उठते हैं। यह बहुत अजीब-सा लगता है कि हमारे देश के लोग और खासकर पहाड़ों के निवासी इस फूपू के प्रजनन में बारे में अधिक नहीं जानते और न उन्हें इस पक्षी में रुचि ही है। यूरोप में इस पक्षी के विषय में काफी लिखा और कहा गया है। सभी सकी इस आदत से परिचित हैं कि यह अपने अंडों के सेने का काम खुद न करके दूसरी पक्षियों से करवा लेती है।

हिमालय पर फूपू का आगमन मार्च के अन्त या अप्रैल के प्रारम्भ में होता है और जून के अन्त तक इसकी बोली सुनी जाती है। नर फूपू की आवाज से कुक--- कू कुक---कू जैसी ध्वनि निकलती है, इसी कारण इसे कुक्कू या फूपू का नाम मिला है। कभी-कभी इस ध्वनि से पूर्व यह कुछ कर्कश ध्वनि भी निकालती है। मादा की आवाज नर की तरह तेज न हो कर धीमी होती है। भारतवर्ष में यह जंगली स्थानों में पायी जाती है किन्तु इसे घने जंगलों की अपेक्षा खुले कृषि योग्य स्थान अधिक पसन्द हैं। इसके मुख्य भोजन में खेती को हानि पहुँचाने वाले कीड़े-मकोड़े और उनकी इल्लियाँ होती हैं।

**घोंसला** : अन्य कोयलों की भाँति फूपू भी अपने अंडों को सेने के लिए दूसरे पक्षियों पर आश्रित रहती हैं। यह दूसरे पक्षियों के घोसले में अपने अंडे देती है और अंडों-बच्चों के सेने का काम उसी से करवाती है। अपने अंडों के सेने और बच्चों के पोषण करवाने के लिए यह कुछ खास पक्षियों को चुनती है जिनमें चिचरी ( Pipit ) और पिद्दा ( Chat ) जाति के पक्षी इसे बहुत पसन्द हैं। अंडे देने के समय यह इनके घोंसले में अपने अंडे दे देती है। घोंसला छोटा होने पर यह घोंसले के बाहर इस प्रकार से चिपक कर बैठती है कि इसका अंडा उछल कर घोंसले के अन्दर पहुँच जाता है। कभी-कभी इस क्रिया में इसका अंडा घोंसले के अन्दर न पहुँच कर नीचे भी गिर जाता है।

कभी-कभी अपने अंडे के लिए यह दूसरे पक्षी के घोंसले से, जिसमें इसे अपने अंडे देना होता है, उस पक्षी के अंडे-बच्चों को घोंसले के नीचे गिरा देती है जिससे उसे अंडा देने की जगह मिल जाये। इस समय इसकी पीठ पर एक गढ़ा-सा बन जाता है जिसमें रख कर यह दूसरे पक्षियों के अंडे-बच्चों को नीचे उछाल देती है और अपने अंडे उसके घोंसले में दे आती है। उस पक्षी की मादा इसके अंडे को अपना ही अंडा समझ कर उसे सेने लगती है और समय आने पर जब उसमें से फूपू का बच्चा निकलता है तो नर और मादा दोनों उसे अपना ही शिशु समझ कर उसे कीड़े-मकोड़े और जोराइयाँ खिलाते रहते हैं। अंत में एक दिन बड़ा होने पर वह घोंसले से उड़ जाता है।

हिमालय में फूपू मई और जून के महीनों में अपने अंडे देती

है। मादा फूपू कितने अंडे देती है, इस विषय में विभिन्न विचार हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है कि यह एक ऋतु में २० तक अंडे देती है। फूपू एक घोंसले में दुबारा अंडे नहीं देती, हालांकि यह एक ही स्थान में कई पक्षियों के घोंसले में अंडे देती है। इसे किसी एक खास जाति की चिड़िया के घोंसले में अंडा देना अच्छा लगता है। यदि एक घोंसले में दो या तीन फूपू हों तो समझना चाहिए कि दो या तीन फूपुओं ने उसमें अंडे दिये हैं।

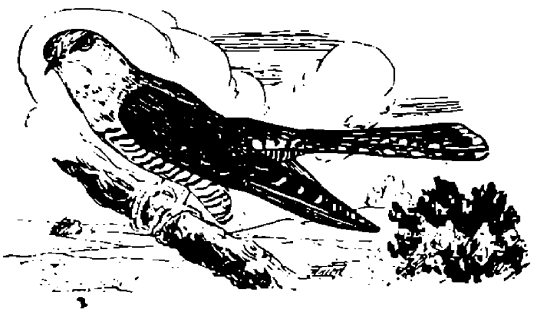
इसके अंडे चौड़े बैंजाबी और हलकी चमक वाले होते हैं। इनका रंग सफेद, प्याजी या पत्थरी होता है। जिन पर भुर-छौंह, पिलछौंह, लाल और भूरी बैंगनी रंग की चित्तियाँ और धारियाँ पड़ी रहती हैं। इन पर छोटी काली चित्तियाँ तो हमेशा ही पड़ी रहती हैं कभी-कभी इनके नीले रंग के अंडे भी पाये जाते हैं।

अंडे की लम्बाई चौड़ाई ०.९७ × ०.७२ इंच होती है।

## १९६ काफल पाक्को (Himalayan Cuckoo : Cuculus Micropterus)

**पर्याय** : भारत श्वेत कोकिल, बऊ कोथा काओ।

**पहचान** : यह भूरे रंग का पक्षी है, जिसका ऊपरी भाग हलका भूरा और निचला भाग भूरा होता है। इसके मुँह पर काले और सफेद चिह्न होते हैं। यह बहुत चंचल और शर्मीला पक्षी है जो समूहों में घनी झाड़ियों में पाया जाता है।



काफल पाई

**रंग-रूप** : लम्बाई १० इंच। नर मादा एक-जैसे। आँख के ऊपर एक सफेद रेखा। जिसके ऊपर और नीचे एक-एक काली रेखा। माथा और चोंच काली।

सम्पूर्ण ऊपरी पर, डैने और पूँछ पत्ती के रंग के भूरे, चोटी काली एवं सर का पिछला भाग राखी। नीचे का सम्पूर्ण हिस्सा चमकीले भूरे रंग का। आँख की पुतली, चोंच और पैर काले।

**निवास** : यह पक्षी हिमालय पर ४,००० फुट की ऊँचाई पर पाया जाता है और वहाँ का आदि निवासी है। इसकी विभिन्न जातियाँ जाड़ों में नीचे उतर कर उत्तर भारत में फैल जाती हैं।

**विवरण** : ये घनी झाड़ियों और पहाड़ों में छोटे-बड़े समूहों में पाये जाते हैं जहाँ वे अपना अधिकांश समय कीड़ों और गिरे हुए फलों की तलाश में बिताते हैं। इसकी बोली काफल पाक्को बऊ कोथा काओ, से मिलती-जुलती होती है। इसी कारण इनको यह सुन्दर नाम मिला है।

पहाड़ों में काफल नाम का एक स्वादिष्ठ फल होता है जिसके फलने के समय ये नीचे उतर आते हैं और कीड़े-फतिंगों के अलावा काफल को बड़े स्वाद से खाते हैं। इनका "काफल पाक्को" नाम उसी फल के कारण पड़ा है जिसका अर्थ हुआ कि काफल पक गये हैं। इसका दूसरा नाम "बऊ कोथा काओ" इसे बंगाल की ओर मिला है जहाँ इसकी बोली को "बऊ कोथा काओ" से मिलती-जुलती माना जाता है। "बऊ कोथा काओ" का अर्थ बंगाली में होता है "बहू कहाँ है कहो"।

**घोंसला** : इसके अंडे देने का समय फरवरी से जून तक रहता है। अन्य कोयलों की भाँति इसकी मादा भी चचरी, पिद्दा तथा चरखी आदि पक्षियों के घोंसले में अपने अंडे दे आती है, जो उसे अपना अंडा समझ कर सोते हैं। फूपू की भाँति यह भी उनके अंडों को नीचे गिराकर उनके घोंसले में अपने अंडे देती है। इसके अंडे चौड़े बैंजाबी और सिरे की ओर कुछ नोकीले और हलकी चमक वाले होते हैं। इनका रंग घूमिल नीला होता है जिस पर ललछौंह भूरी बिंदिया और धब्बे होते हैं।

अंडे लगभग १.० × ०.७५ इंच के होते हैं।

## १९७ पपीहा (Common Hawk-Cuckoo: Hierococeyx Varius)

**पर्याय** : प्रख्यात चातक कापक, उपक, छाक गैली।

**पहचान** : पपीहा आमतौर से मैदानों में पाया जाने वाला पक्षी है जिसकी शक्ल फूपू और बाज से मिलती-जुलती होती है। यह फूपू से इतनी मिलती-जुलती है कि इसकी पहचान करना मुश्किल होता है और इसे इसकी आवाज से ही पहचाना जा सकता है।

**रंग-रूप** : लम्बाई १३ इंच। नर मादा एक-जैसे। ऊपरी हिस्से का रंग हलका सिलेटी, उड़ान के पंख भूरे होते हैं जिनके भीतरी हिस्से पर सफेद पट्टियाँ पड़ी रहती हैं। दुम ललछोंह भूरी होती है जिस पर इसी रंग की गाढ़ी पट्टियाँ पड़ी होती हैं। दुम पर की अन्तिम पट्टी अधिक चौड़ी होती है। ठोड़ी और गला सफेद रहता है जिस पर राखी झलक रहती है। गरदन के सामने का भाग और सीने का रंग ललछौंह बादामी

रहता है और सीने के निचले भाग में पट्टियाँ होती हैं, पेट सफेद रहता है जिस पर हलकी बादामी झलक रहती है और पीछे की ओर खाकी रंग की तितरी-बितरी पट्टियाँ पड़ी रहती हैं। आँख की पुतली पीली, चोंच हरछोंह और ऊपर की ओर काली तथा टाँगें पीली होती हैं।

**विवरण** : पपीहा केवल भारत और लंका में पाया जाता है। भारतवर्ष में यह हिमालय से लेकर दक्षिण भारत तक दिखाई पड़ता है। यह यहाँ का स्थायी रूप से रहने वाला पक्षी है जो अपनी सुविधानुसार थोड़ा-बहुत स्थान परिवर्तन करके भी इसी देश में रहता है।

विवरण : पपीहा घने जंगलों अथवा घने पेड़ों पर रहना पसन्द करता है। अपनी पी कहाँ, पी कहाँ ! से मिलती-जुलती आवाज की वजह से यह बहुत प्रसिद्ध है। अंग्रेजी में इसे ब्रेन फीवर बर्ड ( Brain Fever Bird ) कहते हैं। यह नाम कहीं-कहीं गलती से कोयल को भी दे दिया जाता है जहाँ पपीहा नहीं होता। लेकिन यह नाम वास्तव में पपीहा के लिए ही होता है। इसके दो कारण हैं—पहला तो यह कि इसकी आवाज बेहद उकता देने वाली होती है, दूसरे इसकी आवाज "ब्रेन फीवर" शब्द से मिलती-जुलती होती है। इसकी बोली धीरे-धीरे ऊँची और तेज होती जाती है। इसकी बोली पी कहाँ ! पी कहाँ ! के अलावा पपीहा, पपीहा से मिलती-जुलती होती है शायद इसी कारण इसे पपीहा का नाम मिला है। इसकी आवाज बहुत तीखी और तेज होती है जो काफी दूर से सुनाई पड़ती है लेकिन उसे सुन कर ऐसा मालूम होता है कि मानों यह पास के पेड़ के ऊपर बैठा बोल रहा है। यह लगातार घंटों बोलता रहता है चाहे दिन हो या रात। कभी-कभी तो इसकी बोली सरदर्द बन जाती है। वैसे तो यह किसी भी समय बोलना शुरू कर सकता है लेकिन प्रायः यह बसन्त के प्रारम्भ और वर्ष के प्रारम्भ में जब इसके जोड़ा बाँधने का समय होता है, बोलती है। इसके भोजन में फल-फूल और सभी तरह के कीड़े, मकोड़े और उनका जोराइयाँ शामिल हैं। अन्य कोयलों की भाँति इसे बालदार जोराइयाँ खासतौर से पसन्द हैं जिन्हें बहुत-सी चिड़ियाँ नहीं खातीं।

**घोंसला** : पपीहा के जोड़ा बाँधने का समय अप्रैल से जून तक होता है। अन्य कोयलों की भाँति यह भी अपने अंडे चरखी जाति के किसी दूसरी पक्षी के घोंसले से रखती है। इसके अंडों और घोंसले में रखे दूसरे पक्षियों के अंडों में अन्तर करना बहुत कठिन हो जाता है। क्योंकि इनका रंग उसी तरह का गहरा नीला होता है भले ही ये आकार में कुछ बड़े क्यों न हों। अन्य कोयलों की भाँति यह भी चरखी या जिस दूसरे पक्षी के घोंसले में अपने अंडे देती है, उनमें से उनके अंडे को नीचे गिरा देती है फिर भी जो अंडे शेष रह जाते हैं उनमें से जब बच्चे बाहर निकलते हैं तो इनके बच्चे उन्हें घोंसले से धकेल देते हैं क्योंकि वे आकर में उनसे बड़े होते हैं।

चरखी इनके अंडों को अपना अंडा समझ कर सेती है और जब अंडों से बच्चे निकलते हैं तो उन्हें अपना बच्चा समझ कर खिलाती रहती हैं। लेकिन बड़े होने पर वे एक दिन अपना स्वतंत्र जीवन बिताने के लिए उड़ जाते हैं।

इसके अंडे लगभग १.०० × ०.८ इंच के रहते हैं।

## १९८ वनकोकिल (Indian Plaintive Cuckoo : Cacomantis Merulinus)

**पर्याय** भारतवर्ष-प्रिय जातक, छोटा भरो।

**पहचान** : वनकोकिल छोटे बाज़ की शक्ल सूरत की होती है। इसके पंख नोकीले और दुम सीढ़ीनुमा होती है। बरसात के दिनों में यह जोर की सीटी-जैसी बोली बोलती है। इसके नर का रंग गहरा भुरछौंह सिलेटी होता है और मादा का ऊपरी हिस्सा ललछौंह भूरा रहता है। मादा का गला और नीचे का भाग सफेद रहता है जिस पर काली पट्टियाँ पड़ी रहती हैं।



वनकोकिल

**रंग-रूप** : लम्बाई ९ इंच नर का सारा ऊपरी हिस्सा गहरा राखी और डैने गाढ़े भूरे रहते हैं जिन पर ललछौंह ताँबे-जैसी झलक रहती है। उड़ान के परों के किनारे तथा उनके भीतर की ओर एक सफेद चित्ता रहता है। दुम लगभग काली रहती है जिसके भीतरी परों के ऊपर सफेद टेढ़ी पट्टियाँ होती हैं। शरीर का निचला भाग राखी रहता है जो दुम के नीचे पहुँचते-पहुँचते सफेद हो जाता है।

मादा का सारा ऊपरी हिस्सा चटक कत्थई रहता है और पीठ तथा डैनों पर काली पट्टियाँ रहती हैं। सर, गर्दन और दुम के सिरे पर तितरी-बितरी काली चित्तियाँ पड़ी रहती हैं। दुम ललछौंह भूरी होती है और प्रत्येक पर के अन्तिम छोर पर एक काली पट्टी तथा एक सफेद बिन्दी रहती है। निचला हिस्सा सफेद रहता है जिस पर हलकी काली पट्टियाँ होती। ठोड़ी, गला और सीने के ऊपरी भाग का रंग ललछौंह भूरा रहता है। आँख की पुतली ललछौंह भूरी, चोंच गहरी भूरी और टाँगें

घूमिल नीली या भुरछौंह खाकी होती है । चोंच थोड़ी टेढ़ी, पंख नोकीले, दुम सीढ़ीनुमा और उँगलियाँ जोड़ों में होती हैं । उनमें पहली और चौथी उँगली पीछे की ओर मुड़ी रहती है ।

**निवास** : वनकोकिल सारे भारतवर्ष के अलावा बर्मा और दक्षिण चीन में पायी जाती है । यहाँ पर केवल दो जातियों की वनकोकिल पायी जाती है, जिनका रंग रूप और स्वभाव लगभग एक-जैसा ही रहता है । पहली जाति की वनकोकिल हिमालय से लेकर लंका तक तथा पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी तक पायी जाती है। यह पंजाब के मैदानों, काठियावाड़ और राजस्थान के अनेक हिस्सों में नहीं पायी जाती । दूसरी जाति की वनकोकिल आसाम से लेकर नेपाल तक पायी जाती है । इस जाति के नर के निचले हिस्से का रंग सफेद न हो कर लाल भूरा होता है । दोनों जातियाँ थोड़ा प्रवास गमन करती हैं पर यह ज्ञात नहीं हो सका है कि ये कहाँ प्रवास गमन करती हैं ।

**विवरण** : वनकोकिल खुले और घने जंगलों में सामान्य रूप से पायी जाती है। इसे ऐसे नम स्थान पसन्द हैं जो पानी के निकट होते हैं। यह वैसे तो पेड़ों पर रहने वाली चिड़िया है लेकिन अपने मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े और उनकी जोराइयों के लिए जमीन पर भी उतर आती है। इसके भोजन में कीड़े-मकोड़ों के अलावा चींटियाँ, मकड़ियाँ आदि भी शामिल हैं ।

इसकी उड़ान तेज होती है और ये अक्सर एक दूसरे को खदेड़ती हुई एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर जाती हुई देखी जा सकती है । इसकी बोली तेज होती है जिसे मीठी न कह कर कर्कश ही कहना ठीक होगा । यह पीऊ, पीऊ से मिलती-जुलती होती है जिसे यह किसी पेड़ या झाड़ी के ऊपर से बोलती है ।

**घोंसला** : वनकोकिल के जोड़ा बाँधने का समय जुलाई से अक्तूबर तक होता है । अन्य कोयलों की तरह ये भी परोपजीवी होती हैं और यह अपने अंडे विभिन्न फुदकियों के घोंसले में रखती है । इनके अंडे लम्बे और नोकीले होते हैं । अंडे थोड़ी चमक वाले होते हैं और उनका रंग सफेद या भुरछौंह नीला होता है । अंडों पर हलके ललछौंह चित्ते पड़े रहते हैं ।

अंडे की लम्बाई लगभग ०.७५ × ०.५५ इंच होती है ।

## १९९ चातक (Pied Crested Cuckoo : Clamator Jacobinus)

**पर्याय** : पपीहरा, सारंग चातक ।

**पहचान** : चोटीदार काला पक्षी जिसका ऊपरी हिस्सा काला और नीचे का सफेद रहता है । इनके पंख के एक छोर से दूसरे छोर तक एक सफेद पट्टी होती है । यह वृक्षों पर रहने वाला पक्षी है जो अपनी तेज आवाज से दूसरों का ध्यान अपनी ओर कर लेता है ।

**रंग-रूप** : लम्बाई १३ इंच । नर मादा एक-जैसे । ऊपरी हिस्से तथा कलँगी का रंग काला जिसमें हरी चमक। उड़ान के पंखों का रंग गहरा भूरा रहता है और उन पर सफेद रंग की एक पट्टी एक छोर से दूसरे छोर तक पड़ी रहती है । दुम लम्बी तथा सीढ़ीनुमा होती है जिसके परों के सिरे पर सफेद चित्तियाँ और बाहरी परों पर अधिक चित्तियाँ होती हैं । शरीर का निचला भाग सफेद रहता है लेकिन कभी-कभी परों की जड़ में काले रंग के धब्बे होते हैं । आँख की पुतली ललछौंह भूरी, चोंच काली टाँगे सिलेटी मायल नीली होती हैं । टखने के ऊपरी भाग परदार होते हैं और उँगलियाँ जोड़ों में होती हैं । पहली और चौथी उँगलियाँ पीछे की ओर मुड़ी रहती हैं ।

**निवास** : चातक भारत के अलावा अफ्रीका, लंका और बर्मा के कुछ हिस्सों में पाया जाता है । भारतवर्ष में यह मैदानी तथा पहाड़ी इलाकों में समान रूप से पाया जाता है । हिमालय के प्रदेशों में ८,००० फुट तक की ऊँचाई तक दिखाई पड़ता है ।

**विवरण** : चातक खुले मैदानों सघन जंगलों तथा नम स्थानों और पानी के निकट के स्थानों में रहता है । यह वर्षा ऋतु में जून से अगस्त या सितम्बर तक यहाँ आ जाता है । यद्यपि यह पेड़ों पर रहने वाला पक्षी है फिर भी यह भूमि के पास निचली झाड़ियों पर बैठता है और अपना भोजन जमीन के ऊपर से भी चुगती है । इसके मुख्य भोजन में कीड़े-मकोड़ों की जोराइयाँ चीटियाँ, मकड़ियाँ, गुबरैले, खटमल और छोटे घोंघे आदि हैं। कभी-कभी ये हरी पत्तियाँ भी खाते हैं जो सम्भवतः पाचन की दृष्टिकोण से होता है । यह न शर्मीला पक्षी है और न डरपोक ही । अक्सर एक पपीहा दूसरे का पीछा करता हुआ एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर पहुँच जाता है । अन्य कोयलों की भाँति यह भी बहुत शोर करता है । इसकी बोली तेज और तीखी होती है जो कोयल और पपीहा की आवाज का स्मरण करा देती है ।

**घोंसला** : उत्तरी भारत में चातक के जोड़ा बाँधने का समय जून से अगस्त तक होता है किन्तु नीलगिरि क्षेत्र के चातक अपना जोड़ा जनवरी से मार्च तक बाँधते हैं ।

अन्य कोयलों की भाँति चातक की मादा भी परोपजीवी होती है, अपने अंडे चरखियों और फुदकियों आदि के घोंसले में रखती है । इसके बच्चे भी वास्तविक अधिकारी बच्चों को घोंसले से बाहर गिरा देते हैं ।

इसके अंडे बैंजाबी और दोनों किनारों पर चपटे रहते हैं जिन पर काफी चमक होती है । इनका रंग हलका आसमानी नीला रहता है ।

अंडे की लम्बाई चौड़ाई ०.९४ × ०.७३ इंच होती है ।

## २०० कोयल (Koel : Eudynamis Scolopaceus)

**पर्याय** : श्याम कोकिल, कोइली ।

**पहचान** : कोयल यहाँ की बहुत प्रसिद्ध चिड़िया, जिसका नर काला और मादा एकदम भूरे और सफेद बिन्दियों और धारियों से भरी होती हैं। इसकी कु ऊ ऊ, कु ऊ ऊ जैसी बोली से हम सभी परिचित हैं ।

**रंग-रूप** : कोयल १७ इंच लम्बी चिड़िया है जिसके नर का सारा शरीर काला रहता है और उसमें एक प्रकार की नीली और हरछौंह झलक रहती है ।

मादा एकदम चितली होती है । इसका सारा शरीर हलका भूरा रहता है जिस पर सफेद चित्तियाँ पड़ी रहती हैं । डैने, दुम, पेट और सीने पर चित्तियों के स्थान पर सफेद पट्टियाँ पड़ी रहती हैं । आँख की पुतली चटक लाल, चोंच गंदी हरी और टाँगें गाढ़ी सिलेटी रंग की होती हैं। इसकी दुम लम्बी और सीढ़ी-नुमा रहती है । टखने के सामने की ओर मजबूत चमड़ी होती है और उँगलियाँ जोड़े में रहती हैं । इसमें पहली और चौथी उँगली पीछे की ओर मुड़ी रहती है ।

**निवास** : कोयल सारे भारतवर्ष में पायी जाती है । यह पहाड़ों पर ज्यादा ऊँचाई पर नहीं दिखाई पड़ती है और इसे मैदान के बाग-बगीचे और पेड़ों के झुरमुट ही ज्यादा पसन्द आते हैं । यह यहाँ की स्थायी रूप से रहने वाली चिड़िया है जो यहीं थोड़ा-बहुत स्थान-परिवर्तन करके बाहर नहीं जाती ।

**विवरण** : कोयल फूपू-जैसी चिड़िया है लेकिन इसके नर का रंग घुर काला होता है । मादा फूपू के मादा के ही जैसी होती है ।

कोयल घनी अमराइयों और बाग बगीचों में रहने वाली चिड़िया है जो पेड़ों पर ही रहती है और जमीन पर नहीं उतरती। घने पेड़ों पर यह छिप कर बैठी रहती है और उनके फलों से अपना पेट भरती रहती है । इसके भोजन में बरगद, पीपल और अंजीर के फलों के अलावा कीड़े-मकोड़े भी आते हैं ।

हमारे देश में इसकी बोली से सभी परिचित हैं। बसन्त के आगमन के साथ ही इसकी सुरीली कु ऊ ऊ, कु ऊ ऊ जैसी बोली सुनाई पड़ने लगती है । जिसे यह बार-बार दोहराती रहती है । यदि कोई इसकी बोली की नकल करके बोलता है तो यह अपनी बोली को और तेज करके बोलने लगती है ।

**घोंसला** : कोयल अपने अंडे प्रायः कौवे के घोंसले में देती है । नर पक्षी जो काले रंग का होता है, कौवे के घोंसले के आस-पास उड़ता है और जब कौवे का जोड़ा उसे खदेड़ता है तो मादा कोयल मौका पाकर अपने अंडे कौवे के घोंसले में दे आती है । यह अपने अंडों के लिए स्थान बनाने के लिए कौवे के अंडों को नीचे गिरा देती है । इस प्रकार यह अपने अंडे आस-पास के कई कौवों के घोंसलों में दे आती है ।

जब इसके अंडे कौवे की मादा द्वारा सेये जाने पर फूटते हैं तो इसके बच्चे अक्सर कौवे के बच्चों को उनके घोंसलों के बाहर धकेल देते हैं और घोंसले पर अपना पूरा अधिकार कर लेते हैं ।

कौवे की मादा इनके बच्चों को अपना ही बच्चा समझती है और नर और मादा दोनों इन्हें खिला-पिला कर बड़ा करते हैं। बड़े होने पर कौवों को इसका पता चलता है और तब इनके बच्चे घोंसले से बाहर निकाल दिये जाते हैं ।

कोयल जून के करीब अपने अंडे देती है । यही समय कौवों के अंडा देने का होता है। इसके अंडे कौवों के अंडे से मिलते-जुलते और प्रायः उसी रंग के होते हैं । ये हरे या पत्थरी रंग के होते हैं जिन पर जैतूनी भूरी, ललछौंह भूरी और बैंगनी चित्तियाँ, बिन्दियाँ और धारियाँ पड़ी रहती हैं ।

अंडों की लम्बाई चौड़ाई लगभग १.२० × ०.९ इंच रहती है ।

## २०१ मालकोहा (Small Green-billed Malkoha : Rhopodytes Viridirostris)

**पर्याय** : क्षुत्र हरित-चंचु कैरात ।

**पहचान** : मालकोहा देखने में भट्टी-सी चिड़िया है जिसका रंग राखी और चोंच हरी होती है। दुम लम्बी तथा सफेद चित्तियाँ वाली होती है । यह झाड़ियों में खतरा निकट आते ही भाग कर जा छिपती है।

**रंग-रूप** : लम्बाई १५ इंच । ऊपरी भाग काला राखी जो हरी चमक के साथ पंख और दुम के ऊपर पहुँच कर अधिक गहरा हो जाता है। दुम के परों के ऊपर सफेद चित्तियाँ, निचले हिस्से का रंग गहरा राखी । गले और सीने पर खाकी रंग की सफेद धारियाँ और पेट के ऊपर गेहुँए पीले रंग की झलक रहती है । आँख की पुतली ललछौंह बैंगनी, आँख का बाहरी घेरा सफेद और आँख के पास की बाल रहित खाल नीले रंग की होती है। चोंच का रंग हरा, टाँगें जैतूनी और चोंच गहरी सिलेटी रहती है ।

**निवास** : मालकोहा केवल भारत और लंका में पायी जाती है । यह यहाँ की स्थायी रूप से रहने वाली चिड़िया है जिसकी आँख के छल्ले का रंग खूनी लाल होता है । यह हिमालय के मध्य और पूर्वी भागों और आसाम में पायी जाती है ।

**विवरण** : मालकोहा एक प्रकार की वनकोकिल है जो अपने मनपसन्द स्थान पर रहना पसन्द करती है । इन्हें अकेले या जोड़ों में तितरे-बितरे जंगलों, झाड़ियों तथा पहाड़ी और बाँस

के जंगलों में देखा जा सकता है। यह छिप कर रहने वाली चिड़िया है जो जमीन और झाड़ियों तथा पेड़ों की आड़ में बड़ी चतुराई से छिप कर चलती है। इसे यदि खुले मैदान में कोई देख लेता है तो यह किसी प्रकार से भाग निकलने का मौका खोजा करती है। इसकी उड़ान बहुत कमजोर होती है और थोड़ी दूर की उड़ान भर कर जमीन पर उतर पड़ती है। इसका मुख्य भोजन कीड़े, टिड्डे और इसी प्रकार के कीड़े-मकोड़े हैं।

**घोंसला** : मालकोहा के जोड़ा बाँधने का समय मार्च से अगस्त तक रहता है। जिसके बीच यह पतली टहनियों का ढीला-ढाला सा घोंसला बनाती है जो लकड़ियों का हलका ढाँचा मात्र होता है। ये घोंसले छिछले तश्तरी जैसे होते हैं जिसके भीतरी भाग में हरी पत्तियाँ लगा दी जाती हैं। ये घोंसले किसी काँटेदार झाड़ी में रखे रहते हैं। और भूमि से ५ या ६ फुट ऊपर रहते हैं।

मादा समय आने पर २ अंडे देती है जो बैंजाबी और दोनों ओर गोलाई लिये होते हैं। इनका रंग बिना चमक के मटमैला सफेद रहता है।

अंडे १.१२ × ०.९० इंच के होते हैं।

## २०२ सिरकीर (Sirkeer : Taccocua Leschenaultii)

**पर्याय** : श्रीकीर, जंगली तोता, मूशुक।

**पहचान** : यह धूमिल जैतूनी भूरे रंग की चिड़िया है जो प्रायः भूमि के ऊपर झाड़ियों या घने पेड़ों की आड़ में इधर-उधर घूमा करती है। चोंच चटक लाल और पीले रंग की होती है।

**रंग-रूप** : लम्बाई १७ इंच। नर-मादा एक-जैसे। इसका ऊपरी भाग, पंख और दुम के निचले परों का रंग गहरा जैतूनी हरा भूरा और पंख, दुम तथा परों में थोड़ी-सी चमक के साथ जैतूनी रंग रहता है। दुम के बाहरी पर काले तथा सफेद रंग की चित्तियों से भरे होते हैं। डोंड़ी, गला, सीना और दुम के नीचे का रंग भी जैतूनी भूरा होता है। ठोड़ी के ऊपर का भाग पीला और पेट का रंग गहरा बादामी होता है। आँख की पुतली लालछौंह भूरी, चोंच चटक लाल जिसका ऊपरी भाग पीला और टाँगे सिलेटी रहती हैं। चोंच टेढ़ी और नीचे की ओर झुकी रहती है, पलकें झालरदार रहती हैं जिनसे आँखों का बचाव होता है। दुम लम्बी-चौड़ी और सीढ़ीनुमा रहती है। पैर की दो उँगलियाँ आगे और दो पीछे की ओर रहती हैं।

**निवास** : सिरकीर केवल भारत और लंका में पायी जाती है। इसकी तीन जातियाँ होती हैं। इसकी एक विशेष जाति लंका और दक्षिणी भारत में पायी जाती है। ये तीनों जातियाँ हिमालय की आठ हजार फुट की ऊँचाई तक पायी जाती हैं।

**विवरण** : सिरकीर को झाड़ीदार और छोटे वृक्षों के जंगलों, बागों तथा अन्य ऐसी ही जगहों में रहना पसन्द है, जहाँ इसकी शान्ति और स्वतंत्रता में बाधा न हो और यह आजादी से पेड़ों के झुरमुटों में विश्राम कर सके। यहाँ यह ज्यादातर जमीन पर ही रहती है और फलों, बीजों, बेरियों, टिड्डों, गुबरेलों और इसी किस्म के अन्य कीड़े-मकोड़ों से अपना पेट भरती रहती है। यह उड़ने में कमजोर होती है। इससे खतरा देखकर यह उड़ान न भर कर किसी झाड़ी में घुस जाती है। यह जमीन पर अच्छी तरह से दौड़ लेती है। दौड़ते समय यह अपने शरीर को सीधा रखती है और बीच में रुक-रुक कर चारों ओर देख लेती है।

**घोंसला** : जोड़ा बाँधने के समय ये सौंदर्य-प्रदर्शन के विचित्र ढंग अपनाती है, जिनमें नर-मादा दोनों पक्षी भाग लेते हैं। दोनों अपनी चोंच खोल कर एक दूसरे के नीचे झुक जाते हैं और अपनी दुम को इस प्रकार फैला लेते हैं कि बाहरी परों के काले निशान दिखालाई पड़ने लगते हैं। इस प्रदर्शन के दौरान ये एक प्रकार की टक-टक की आवाज करते हैं, किन्तु वैसे सिरकीर बहुत शान्त और बहुत कम शोर मचाने वाला होता है।

सिरकीर के जोड़ा बाँधने के ठीक समय के बारे में अभी अच्छी तरह से नहीं मालूम हो सका है, किन्तु इनके घोंसले मार्च से अगस्त तक पाये जाते हैं। इसके घोसले का आकार चौड़ी तश्तरी जैसा होता है, जिसे यह छोटी टहनियों से बनाती है और उसके अन्दर हरी पत्तियाँ लगाती है। घोंसले में यह उसी पेड़ की टहनियाँ लगाती है जिसके ऊपर यह अपना घोंसला बनाती है। घोंसले को यहाँ किसी कँटीली दुफंकी डाल पर रखती है जो जमीन से कुछ ही ऊँचाई पर होती है। कभी-कभी यह किसी झाड़ी के ऊपर हीअप ने घोंसले को रख लेती है।

समय आने पर मादा २ या ३ अंडे देती है। अंडे चौड़े और बैंजाबी होते हैं जिन पर खुरदुरे खड़िया मिट्टी जैसे रंग का आवरण होता है। ये घुर सफेद होते हैं। बहुत से अंडों के ऊपर पिलछौंह भूरी चमक भी होती है जो धोने और खुरचने से दूर हो जाती है।

अंडे की लम्बाई-चौड़ाई १.४० × १.०५ इंच होती है।

## २०३ महोख (Crow Pheasant : Centropus Sinensis)

**पर्याय** : कुक्कुम, कूका, डुगडुगी :

**पहचान** : महोख बड़े आकार की लाल भूरे परों वाली चिड़िया है जिसकी शक्ल और दुम की लम्बाई-चौड़ाई को देख कर शिकार की चिड़िया का धोखा हो जाता है। यह बँसबाड़ी, झाड़ियों, बाड़ों और बागों में आसानी से दिखलाई पड़ती है। यह जमीन पर अपना दाना चुगती रहती है।

**रंग-रूप** : लम्बाई १९ इंच। नर मादा एक-जैसे। इसके पंख लाल भूरे, डैने धूमिल चित्तियोंदार और शरीर का शेष भाग काला रहता है। इसके शरीर पर हरे, नीले और बैंजनी रंग की चमक होती है। इसकी आँख की पुतली खूनी लाल, चोंच और टाँगें काली होती हैं। चोंच चौड़ी और नीचे की ओर कुछ मुड़ी रहती है। डैने छोटे और गोलाकार तथा दुम लम्बी और सीढ़ीनुमा होती है। सर, गले और सीने के पर कड़े और खुरदरे होते हैं। पिछले अँगूठे में एक लम्बा और सीधा पंजा होता है।

**निवास** : महोख बहुत स्थानों में पायी जाती है। इसे चीन से लेकर हिमालय तक तथा कश्मीर, आसाम तथा उत्तर प्रदेश के मैदानों से लंका तक देखा जा सकता है। यह यहाँ की स्थायी रूप से रहने वाली चिड़िया है।

इसकी एक अन्य जाति भी है जो आकार में कुछ छोटी होती है। यह हिमालय की तराई, उड़ीसा, बंगाल और भारतवर्ष के दक्षिणी-पश्चिमी भागों तक फैली हुई है।

**विवरण** : महोख भारतवर्ष की बहुत प्रसिद्ध और जानी-मानी चिड़िया है जो जंगलों की अपेक्षा बस्तियों, झाड़ियों के जंगलों तथा ऊसरों में रहना अधिक पसन्द करती है। इसे मुख्य रूप से झाड़ियों और छोटे पेड़ों के झुरमुटों तथा गाँवों में जहाँ नदियों, नहरों तथा अन्य जलाशयों की बहुतायत रहती है, आसानी से देखा जा सकता है। ऐसे स्थानों में यह बड़े इतमीनान से भूमि पर कीड़े-मकोड़ों, गुबरीलों, टिट्डियों, चूहों, छिपकलियों, छोटे साँपों और इसी प्रकार के अन्य छोटे जीवों से अपना पेट भरती रहती है। जरा-सा खतरा देखते ही यह झाड़ियों और घास में घुस जाती है। इसकी आवाज तेज और हूप, हूप, हूप से मिलती-जुलती होती है।

**घोंसला** : महोख बरसात में अपना जोड़ा बाँधती है और इसके अंडे जून से सितम्बर तक पाये जाते हैं।

महोख का घोंसला बड़ा और गुम्मदनुमा होता है जिसमें घुसने के लिए एक ओर एक छेद रहता है, जिससे इसकी दुम बाहर निकली रहती है। कभी-कभी घोंसले का आकार तश्तरी की तरह भी होता है। यह घोंसला जमीन से किसी भी ऊँचाई पर देखा जा सकता है। इसे यह किसी घनी झाड़ी के बीच में घास के बूटे में या पेड़ की किसी दुफंकी डाली पर खुला रख देती है। घोंसला सूखी टहनियों और हरी पत्तियों से अथवा सूखे नरकुलों और कड़ी घास से बनाया जाता है।

समय आने पर मादा ३ से ५ तक अंडे देती है। अंडे चौड़े बैंजाबी और दोनों सिरों पर चपटे रहते हैं। ये घुर सफेद होते हैं जिन पर खुरदरा खड़िया मिट्टी जैसा आवरण चढ़ा रहता है।

अंडे की औसत नाप १.४ × १.२ इंच होती है।

## २०४ परबत्ता (Large Indian Parrakeet : Psittacula Eupatria)

**पर्याय** : भारत राज शुक, पहाड़ी तोता, बरन, चंदन, राय, चंदमनी, शातूती, गागरौनी, चन्ना, चांदा बनई।

**पहचान** : परबत्ता का सारा शरीर हरा, सर बड़ा, चोंच लाल और हुकदार तथा दुम लम्बी और नोकीली होती है। इसकी उड़ान तेज और बोली कर्कश होती है जिससे इसकी पहचान आसानी से हो जाती है। इसके हरे सर, काली ठोढ़ी तथा गले की गुलाबी पट्टी के कारण अन्य तोतों से इसकी पहचान आसानी से हो जाती है।

**रंग-रूप** लम्बी नोकीली दुम-सहित परबत्ता की लम्बाई १९ इंच होती है। नर का ऊपरी भाग हरा रहता है जो पंखों पर अधिक गहरा हो जाता है। माथे और दुम का रंग कुछ अधिक चमकीला होता है। पंखों के मोड़ के पास एक बड़ा गहरा लाल रंग का चित्ता रहता है और दुम के बीच के परों का निचला भाग निलछौंह रहता है, जो ऊपर जाते-जाते पीला हो जाता है। इसके दुम की निचली सतह पीली, नथुने से आँख तक की रेखा काली और गरदन के पीछे और दोनों बाजुओं पर गुलाबी प्याजी पट्टी होती है। ठोढ़ी काली तथा चोंच के निचले भाग से लेकर गुलाबी पट्टी तक काले रंग की एक पट्टी होती है। निचले शरीर का रंग घुमैला पिलछौंह हरा रहता है जो दुम के पास अधिक चमकदार हो जाता है।

मादा के गले के चारों ओर गुलाबी पट्टी और इससे मिलने वाली काली पट्टी नहीं होती। आँख की पुतली पीली और उसके भीतरी घेरे का रंग निलछौंह खाकी रहता है। चोंच गहरी लाल और टांगें गाढ़ी सिलेटी होती हैं। चोंच मोटी, टेढ़ी और नीचे की ओर झुकी रहती है। दुम बहुत लम्बी और सीढ़ीनुमा होती है। बीच के पर नोकीले तथा अन्य परों से बड़े होते हैं। पैर की दो उँगलियाँ आगे तथा दो पीछे की ओर रहती हैं।

**निवास** : परबत्ता भारत, लंका और बर्मा में काफी संख्या में पाया जाता है। इसकी चार जातियाँ होती हैं जिनका विभाजन आकार और रंग के आधार पर किया जाता है। इसकी प्रसिद्ध जाति दक्षिण भारत में हैदराबाद, मैसूर और केरल में पायी जाती है। दूसरी जाति का परबत्ता उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश तथा हिमालय की घाटी में ४,००० फुट की ऊँचाई तक दिखाई पड़ता है। तीसरा परबत्ता अंडमान द्वीप-समूह में पाया जाता है। और चौथा परबत्ता बर्मा में मिलता है। यह यहाँ का स्थायी पक्षी है जो स्थान परिवर्तन नहीं करता।

**विवरण** : परबत्ता ऐसे स्थानों में पाया जाता है जहाँ घने पेड़ होते हैं। यह हमेशा गिरोह में रहता है और केवल जोड़ा बाँधने के समय ही इसके जोड़े अलग-अलग रहते हैं, पर उपयुक्त स्थानों में अनेक जोड़े झुंड बाँध लेते हैं और एक साथ रहते हैं। बड़े-बड़े वृक्षों, बागों और पेड़ों के झुरमुटों में इनके

झुंड के झुंड एक साथ बसेरा लेते हैं। शाम के समय बसेरा लेने के स्थान के लिए इनके झुंड मीलों दूर की, काफी ऊँची, तेज और सीधी उड़ान भरते हैं।

इनके भोजन में तरह-तरह के अनाज, बीज और फल होते हैं। यह खड़ी फसल और फल के बागों को काफी नुकसान पहुँचाता है। उत्तर प्रदेश में इसे लोग लोहे के पिंजड़े में पालते हैं। यह आसानी से पालतू हो जाता है और मनुष्यों की बोली की नकल बखूबी कर लेता है।

**घोंसला** : परवत्ता के जोड़ा बाँधने का समय फरवरी से अप्रैल तक रहता है। यह घोंसला नहीं बनाता है, बल्कि मकान और पेड़ों के तनों में छेद बना कर मादा उसी में अपने अंडे देती है। इन छेदों की ऊँचाई जमीन से काफी ऊपर रहती है। कभी-कभी पेड़ के खोंखों में भी मादा अपनी सुविधानुसार सुधार करके अंडे देती है। समय आने पर मादा २ से ५ तक अंडे देती है जो अंडाकार, खुरदुरे तथा हलकी चमक वाले होते हैं। इनका रंग सफेद और बिना किसी चिह्न के होता है।

अंडों की लम्बाई-चौड़ाई १.३२ × १.०० इंच होती है।

## २०५ तोता (Rose-Ringed Parrakeet: Psittacula krameri)

**पर्याय** : सुग्गा, ढेलहरा, पाटल कण्ठक राज शुक, लैबर तोता, राजू।

**पहचान** : तोता मैदानों का जाना-पहचाना पक्षी है जो प्रायः झुंडों में रहता है। इसके हरे रंग, मोटी और टेढ़ी हुकदार लाल चोंच, लम्बी नोकीली दुम, तीर की तरह तेज उड़ान तथा कर्कश बोली के कारण इसे पहचानने में कठिनाई नहीं होती। इस जाति के तोतों के पंख के ऊपर लाल रंग का चित्ता नहीं होता।

**रंग-रूप** : लम्बाई १६ इंच। नर का ऊपरी भाग चमकीला हरा, सर के पीछे और दोनों रुखों का रंग हलका निलछौंह भूरा रहता है। दुम के बीच के पर हरे, इसके बाद के निलछौंह भूरे और किनारे के पर हरे रहते हैं। नथुने से लेकर आँखों तक एक सुन्दर कलछौंह रेखा रहती है और सामने के अलावा गरदन के चारों ओर एक गुलाबी पट्टी रहती है। जिसके नीचे की पट्टी का रंग काला और नीचे का रंग पिलछौंह हरा होता है।

मादा के गले पर गुलाबी और काली पट्टी के स्थान पर एक घेरा रहता है। आँख की पुतली पीली, चोंच चटक लाल, निचली चोंच कलछौंह और टाँगें धूमिल सिलेटी या हरछौंह रंग की होती हैं।

**निवास** : इस तोते की दो जातियाँ हमारे देश में पायी जाती हैं। इसमें से एक उत्तरी भारत तथा दूसरी दक्षिणी भारत में पायी जाती है। इनमें से बड़ा तोता जिसका निचला जबड़ा लाल या काला होता है, बिलोचिस्तान से लेकर बर्मा तक पाया जाता है। यह हिमालय पर ४,००० फुट से अधिक ऊँचाई पर नहीं दिखाई पड़ता। दूसरा छोटा तोता दक्षिण भारत में लंका तक पाया जाता है। यह यहाँ की स्थायी रूप से रहने वाली चिड़िया है जिसे पर्वत तथा घने जंगलों में रहना पसन्द नहीं है।

**विवरण** : यह तोता भारतवर्ष का बहुत परिचित पक्षी है। जोड़ा बाँधने के समय यह जोड़ों में रहता है, लेकिन अन्य समय ये बड़े-बड़े झुंडों में दिखाई पड़ते हैं। ये बागों तथा खेतों को काफी नुकसान पहुँचाते हैं। इनकी बोली और रंग के बारे में सभी लोग जानते हैं।

आमतौर पर तोता वृक्षों पर रहता है और हर तरह के पेड़ों पर बैठने में कुशल होता है। यह खड़ी फसलों, बागों और पौधों से अपना भोजन प्राप्त करने के लिए उड़कर नीचे आता है और कभी-कभी यह दाने चुगने के लिए भूमि पर भी बैठ जाता है। लेकिन लम्बी दुम तथा अँगूठों के आगे-पीछे होने के कारण इसको जमीन पर बैठने में कठिनाई होती है। पैरों की ऐसी बनावट से इसे पेड़ों पर चढ़ने तथा बीजों को पकड़ने में बहुत सुविधा होती है और ये एक टाँग के बल पर खड़े होकर दूसरी टाँग से फल और बालियों को पकड़ कर बड़ी आसानी से खा लेते हैं। इनकी उड़ान तेज और सीधी होती है। रैन-बसेरे के पूर्व संध्याकाल में इनके झुंड के झुंड एक के बाद एक बसेरों की ओर तेजी से उड़ते हुए दिखलाई पड़ते हैं। इनके बसेरों में कौवे और मुनियाँ भी रहती है। इनकी सामान्य आवाज कर्कश और कर्णकटु होती है किन्तु नर जिस समय जोड़ा बाँधने की प्रक्रिया में होता है, उस समय इसकी आवाज में एक प्रकार की मिठास आ जाती है। नर ऐसी आवाज उस समय करता है जब कि वह मादा के सर को ऊपर उठाता है और स्नेह-चुम्बन के लिए अपनी चोंच को मादा की चोंच में मिला देता है। मादा या तोती कुशल नखरेबाज होती है और जब इसके पास मनपसन्द का जोड़ा होता है तो इसे देखते ही बनता है। तोते को भारतवर्ष में लोग पालते हैं और उसे लोहे के मजबूत पिंजड़ों में रखते हैं। कुछ तोते जल्द ही मनुष्यों की बोली की नकल करना सीख जाते हैं, लेकिन बड़ी जाति वाले तोते और अफ्रीका के रंगीन तोते बात करना नहीं सीख पाते।

**घोंसला** : इनके जोड़ा बाँधने का समय फरवरी से मई तक है, हालाँकि सबसे अधिक अंडे मार्च में पाये जाते हैं।

तोते घोंसला नहीं बनाते। मादा अपने अंडे दीवारों तथा पेड़ों के खोखों में दे देती है। जहाँ पेड़ों में इन्हें खोखे नहीं मिलते वहाँ ये अपनी नोकीली चोंच से पेड़ के तनों में छेद बना

लेते हैं। तोती समय आने पर ४ से ६ तक अंड देती है जो चौड़े बैजावी और सिरे की ओर नोकीली होते हैं। ये धुर सफेद होते हैं। और इन पर थोड़ी चमक भी रहती है। अंडों पर किसी प्रकार के चिह्न नहीं रहते।

अंडे लगभग १.२० × ०.९५ इंच के होती है।

## २०६ सुग्गी (Blossom Headed Parakeet : Psittacula Cyanocephala)

**पर्याय** : दुइयाँ तोता, रक्तांग शुक, तोती, फरेंदा, केर।

**पहचान** : सुग्गी अन्य तोतों की अपेक्षा कद में छोटी होती है। इसको इसके जामुनी रंग के सिर, नारंगी चोंच तथा दुम के ऊपर पड़ी हुई पीली चित्तियों के कारण पहचानने में कठिनाई नहीं होती है।

**रंग-रूप** : लम्बाई १४ इंच। नर का सर बैंगनीपन लिये लाल, जैसी अक्सर जामुन होती है। गरदन के चारों ओर एक काले रंग की पट्टी रहती है जिसके पीछे का कुछ हिस्सा हरा रहता है। सारा ऊपरी हिस्सा पिलछौंह हरा जो पंख और दुम तक जाते-जाते कुछ गाढ़ा हो जाता है, डैनों का रंग हरा रहता है और उसके बीच में गहरे लाल रंग का एक चित्ता पड़ा रहता है। दुम के बीच के पर जड़ के पास नीले रहते हैं जिनके सिरे सफेद होते हैं। दुम के बाकी पर पीले रहते हैं जिनके बाहरी हिस्से हरे रहते हैं। शरीर का निचला भाग चमकीला पिलछौंह हरा होता है।

मादा के सर का रंग धूमिल निलछौंह भूरा होता है और गले की काली पट्टी के स्थान पर पीले रंग का घेरा रहता है। आँख की पुतली पिलछौंह सफेद, चोंच नारंगी पीली, निचली चोंच निलछौंह और टाँगों का रंग धूमिल हरा होता है।

**निवास** : सुग्गी सम्पूर्ण भारतवर्ष, लंका, बर्मा, श्याम और चीन के दक्षिणी भागों में पायी जाती है। इसकी दो जातियाँ हैं। यहाँ हमारा सम्बन्ध केवल पश्चिम की जाति से है जो हमारे देश को स्थायी चिड़िया होते हुए भी यहीं थोड़ा-बहुत स्थान-परिवर्तन कर लेती है।

**विवरण** : सुग्गी जंगल की चिड़िया है, किन्तु घने जंगलों में न रह कर तोतों की भाँति बाग-बगीचों और खेतों के निकट ही रहती है। अन्य तोतों की भाँति यह झुंडों में ही रहती है। यह खेत की बालियों, जंगली पेड़ों के बीज और फल खाती है। अन्य तोतों की तरह यह भी पेड़ों पर ही रहना पसन्द करती है और जमीन पर बहुत कम आती है। इसकी उड़ान सीधी और अन्य तोतों की अपेक्षा अधिक तेज होती है। इसकी आवाज मधुर होती है। भारतवर्ष में लोग इसे बहुत कम पालते हैं।

**घोंसला** : सुग्गी के जोड़ा बाँधने का समय वैसे तो फरवरी से मई तक रहता है लेकिन दक्षिण भारत में इसे दिसम्बर में जोड़ा बाँधते देखा गया है।

यह अपने अंडे किसी पेड़ के खोथे में देती है या किसी पेड़ पर खुद छेद बनाती है, जिसकी ऊँचाई जमीन से बहुत कम होती है। समय आने पर मादा ४–५ अंडे देती है जो अंडाकार और सिरे की ओर नोकीले होते हैं। अंडे धुर सफेद और बिना चमक के होते हैं।

अंडे की लम्बाई-चौड़ाई १.० × ०.८० इंच होती है।

## २०७ मदन गोर तोता (Blue-Winged Parrakeet : Psittacula Columboides)

**पर्याय** : नील पक्ष शुक, मदन सुग्गा।

**पहचान** : यह हमारे यहाँ के प्रसिद्ध तोतों से कुछ छोटा होता है और इसका सर और सीना सिलेटी रहता है।

**रंग-रूप** : मदनगोर तोता १४ इंच का पक्षी है जिसमें इसकी ८ इंच लम्बी दुम भी शामिल है। इसका सारा ऊपरी भाग चटक हरा और नीचे का पिलछौंह हरा रहता है। इसका सर और सीना सिलेटी रंग का होता है और इसके गले के चारों ओर एक काला कंठा रहता है। नर के इस काले कंठे के नीचे एक गाढ़ी हरी रेखा भी रहती है। डैने के पर नीले और हरे रहते हैं जिन पर पीले सेहरे से पड़े रहते हैं। मादा नर से कुछ छोटी होती है। आँख की पुतली पीली, ऊपरी चोंच लाल, निचली चोंच कलछौंह रहती है।

**निवास** : मदनगोर तोता दक्षिण भारत का निवासी है जो वहाँ मालाबार की ओर पश्चिमी पर्वतमालाओं में धुर दक्षिण से बम्बई तक फैला हुआ है। वहाँ इसे पाँच हजार फुट तक देखा जा सकता है, लेकिन नीलगिर पर्वत पर यह कुछ और ऊँचाई तक चला जाता है। यह यहाँ का बारहमासी पक्षी है जो स्थायी रूप से यहीं रहता है।

**विवरण** : इस तोते की प्रायः सभी आदतें अन्य तोतों की भाँति होती हैं। ये झुंड में रहने वाले पक्षी हैं जो बाग-बगीचों के फलों तथा खेतों की फसल का बहुत नुकसान करते हैं। ये वैसे तो पेड़ों पर रहने वाले पक्षी हैं, लेकिन अपनी खुराक के लिए जमीन पर भी उतरते हैं। इनका मुख्य भोजन फल-फूल और गल्ला तथा बीज है। तोतों की तरह इनको भी पिंजड़ों में पाला जाता है। इनकी बोली अन्य तोतों की तरह ही है लेकिन उनसे कम कर्कश होती है।

**घोंसला** : इनके जोड़ा बाँधने का समय जनवरी से मार्च तक रहता है जब किसी दीवाल या पेड़ के सूराख में कूड़े-कबाड़

के ऊपर मादा २ से ४ तक अंडे देती है। अंडों के लिए ये अक्सर किसी पेड़ के मोटे तने में अपनी तेज चोंच से गोल सूराख बना लेते हैं। इनके अंडे कुछ चौड़े बैजावी और सिरे की ओर नोकीले रहते हैं। ये थोड़े चमकीले और धूर सफेद होते हैं।

इनके अंडे करीब १.१२ × .९२ इंच के रहते हैं।

## २०८ करपेंची उल्लू (Mottled Wood Owl : Strix Ocella tum)

**पर्याय** : शबल बनघूक, करेल पेंचक।

**पहचान** : यह बड़े किस्म का उल्लू है। इसका चेहरा कुछ विशेष प्रकार का होता है। इसके शरीर पर काली भूरी तथा सफेद धारियाँ और पीले भूरे धब्बे होते हैं। यह दिन में बड़े पेड़ों पर सोता है और रात में विहार करता है।

**रंग-रूप** : लम्बाई १८ इंच, नर-मादा एक से। सर के ऊपरी हिस्से और गरदन का रंग पीला भूरा। परों के किनारे काले और उन पर सफेद धब्बे। ऊपरी हिस्से के बाकी भाग पर काले सफेद धब्बे और काली धारियाँ। पर का निचला भाग पीला भूरा। पीठ के दोनों ओर परों पर टेढ़ी-मेढ़ी सफेद धारियाँ और इन सफेद धारियों पर काली धारियाँ। पंखों का बाहरी भाग गहरा भूरा तथा उस पर पीले धब्बे तथा धारियाँ। पूँछ जड़ पर पीली भूरी जिस पर पीले धब्बे तथा धारियाँ। सिरे की ओर काले तथा सफेद धब्बे। परों के बाहरी भाग पर सफेद झलक। चेहरे पर सफेद और काले धब्बे और धारियाँ। गले पर बड़ा सफेद धब्बा। निचले पर सफेद और उन पर धारियाँ। आँख की पुतलियाँ गहरी भूरी, पलकें नारंगी, चोंच काली और नाखून धुमैले।

उल्लू की सभी जातियों में निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं :

सिर बड़ा, आँखें बाहर निकली हुई, चपटी तथा गोल आँखों के चारों ओर गोलाई में परों की सुन्दर घनी झालर। चोंच छोटी तथा हुकदार, नाक के छेद परों द्वारा ढके, कानों के छेद बड़े लेकिन परों से ढके हुए। पर मुलायम और घने तथा नाखून तेज और घुमावदार।

**निवास** : यह उल्लू भारत में बहुतायत से पाया जाता है। यह बस्तियों के पास रहने वाली चिड़िया है। हिमालय में इसके स्थान पर भूरा उल्लू मिलता है, जिस पर भूरे धब्बे होते हैं और जो ४,००० फुट की ऊँचाई पर पाया जाता है। श्रीलंका तथा दक्षिणी भारत में इस जाति के दूसरे उल्लू पाये जाते हैं, जिनका रंग गहरा भूरा होता है।

**विवरण** : इसकी आदतों के बारे में बहुत कम जाना जा सका है, क्योंकि यह एकान्त स्थानों में रहता है। वैसे यह घने जंगलों की अपेक्षा पुराने और ऊँचे पेड़ों के खोथों में रहना पसन्द करता है, जहाँ वह सुविधा से दिन बिता सके। ऐसे स्थानों पर यह छाया में दिन भर सोता रहता है और रात में आस-पास की बस्तियों की तरफ शिकार को निकलता है। यह गिलहरी, चूहे इत्यादि खाता है और इस प्रकार फसलों की रक्षा में सहायक होता है। इसकी बोली तेज तथा कठोर होती है।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय नवम्बर से अप्रैल तक होता है। यह अपना घोंसला बनाने में बहुत कम प्रयास करता है। इसके अंडे तने पर या दो डालों के जोड़ों पर या किसी डाल पर बिछी थोड़ी-सी घास-फूस तथा पत्तियों पर रखे होते है। घोंसले जमीन से ८ से २५ फुट की ऊँचाई पर होते हैं। मादा कभी १ और कभी ३ अंडे देती है। अंडा बड़ा, गोल तथा बनावट में खूबसूरत होता है और उस पर बहुत कम चमक होती है। रंग मक्खनी सफेद होता है।

अंडे का आकार औसतन १.९९ × १.६७ इंच होता है।

## २०९ मुआ (Brown Fish Owl : Ketur Zeylonensis)

**पर्याय** : उल्लू, मछारिका उल्लू, बभ्रु मत्स्याद, भूतम।

**पहचान** : यह भारी भरकम शरीर वाली भूरे रंग की चिड़िया है जिसकी पीली आँखों के ऊपर पर नहीं होते हैं। इसका मुँह बिल्ली की तरह होता है। शरीर का रंग सिलेटी भूरा होता है जिस पर धारियाँ पड़ी होती हैं। यह दिन में पेड़ों या जमीन के ऊपर सोती है। इसके पर रहित टखनों को देखकर इसकी पहचान आसानी से हो जाती है।

**रंग-रूप** : लम्बाई २२ इंच। नर-मादा एक-जैसे। ऊपरी भाग ललछौंह भूरा जिस पर काली चौड़ी धारियाँ होती हैं। ऊपरी पीठ और डैनों पर भूरी बिन्दियाँ पड़ी रहती हैं, कंधों पर धूमिल पीले और सफेद रंग की चित्तियाँ होती हैं, डैने और दुम के परों का रंग गहरा भूरा होता है और ऊपर भूरी और सफेद बिन्दियाँ और धारियाँ पड़ी रहती हैं। गला सफेद, निचला हिस्सा सफेदी मायल जिस पर ललछौंह लहरदार धारियाँ होती हैं। आँख की पुतली चमकीली पीली, चोंच हरछौंह सिलेटी और टाँगें धुमैली पीली होती हैं। इस जाति के मुआ की प्रत्येक आँख के ऊपर लम्बे और नोकीले पर के गुच्छे होते हैं जो टखने के ऊपर नहीं होते।

**निवास** : मुआ काफी बड़े भू-भाग में पायी जाती है। पैलेस्टाइन, भारत, बर्मा, लंका और चीन में इसकी अनेक जातियाँ पायी जाती हैं। यह सम्पूर्ण भारतवर्ष में स्थायी रूप से निवास करने वाली चिड़िया है।

**विवरण** : मुआ हमेशा पानी के इर्दगिर्द ही रहती है। इसके भोजन में चिड़िया, छोटे स्तनपायी जीव, मछली, केकड़े इत्यादि होते हैं। भोजन के अनुसार उल्लुओं की अन्य जाति से इसके पैर भिन्न होते हैं। इसके टखने पर-रहित, दानेदार तथा तलवे काँटेदार होते हैं। इस कारण शिकार इसकी पकड़ से सरक कर नहीं निकल पाता। इसके पंजे बड़े तेज और मुड़े होते हैं। इसकी टाँगें मछारंग से मिलती-जुलती होती हैं।

मुआ दिन में किसी घने पेड़ पर या किसी पहाड़ की दराज में सोता रहता है और अँधेरा होते ही अपने शिकार की तलाश में निकट के जलाशय पर पहुँच जाता है। इसकी आवाज जोर की और हु-हू-हू जैसी होती है।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय दिसम्बर से मार्च तक रहता है, लेकिन इसके ज्यादा अंडे फरवरी में पाये जाते हैं। यह अपना घोंसला दराजों, चट्टानों, टीलों, पुराने पेड़ों की खोहों या मछारंग तथा गीधों द्वारा छोड़े हुए घोंसलों में बना लेती है। यह अपने घोंसलों में कुछ लकड़ियाँ, पर, सूखी पत्तियाँ तथा घास रख लेती हैं।

मादा समय आने पर २ अंडे देती है। ये बैजाबी और मजबूत होते हैं और इनका रंग संदली मायल सफेद रहता है।

अंडे लगभग २.३८ १.८८ इंच के होते हैं।

## २१० घुध्घू (Indian Great Horned Owl : Bubo Bengalensis)

**पर्याय** : भारत प्रावार कर्ण उलूक, अभराई का घुध्घू।

**पहचान** : घुध्घू बड़े आकार का गम्भीर पक्षी है। इसके शरीर पर पीले भूरे धब्बे तथा गहरी भूरी धारियाँ होती हैं। इसकी नारंगी रंग की बड़ी-बड़ी आँखों के ऊपर कुछ पर होते हैं। यह सारे दिन चट्टानों, पहाड़ों, दर्रों तथा कभी-कभी पेड़ों पर भी, स्थिर बैठा रहता है।

**रंग-रूप** : लम्बाई २२ इंच। नर-मादा एक-जैसे। इसका सर और गरदन चमकदार पीले रंग की होती है जिस पर गहरी भूरी धारियाँ पड़ी रहती हैं। ऊपरी पर गहरे भूरे तथा उन पर पीले और सफेद धब्बे, जो डैनों के अगल-बगल और पूँछ पर बहुत स्पष्ट होते हैं। सर पर गहरे भूरे रंग के पर, सींग-से उठे रहते हैं। डैने गहरे पीले रंग के और उनके सिरे घुमैले, पूँछ पर भूरी तथा पीली धारियाँ, ठोड़ी तथा गला सफेद और बाकी सब निचले पर पीले रहते हैं। छाती पर गहरे काले तथा भूरे रंग के छींटे और पेट पर तथा उसके पार्श्व भाग में गहरी भूरी आड़ी धारियाँ होती हैं जो पंजों तथा पूँछ की तरफ मिटती जाती हैं। आँख की पुतलियाँ नारंगी पीली, चोंच सींग के रंग की और टाँगें घुमैली होती हैं।

**निवास** : घुध्घू भारत में सर्वत्र पाये जाते हैं। हिमालय के पश्चिमी भाग तथा कश्मीर में ५,००० फूट की ऊँचाई पर और मैदानों में पंजाब से बंगाल तक इन्हें देखा जा सकता है। दक्षिण की तरफ भी ये दिखाई पड़ जाते हैं। परन्तु श्रीलंका में ये नहीं दिखाई पड़ते।

**विवरण** : भारत के बड़ी जाति के उल्लुओं में घुध्घू सबसे प्रसिद्ध है। यह उत्तर तथा मध्य भारत की ओर विशेष रूप से पाया जाता है। इसे पहाड़ी दर्रों, टूटे-फूटे मकानों, झखरीली तथा पथरीली पहाड़ियों में रहना अधिक पसन्द है। यदि इसे इस प्रकार के मनपसन्द स्थान नहीं मिलते तो यह घने वृक्षों की शरण लेता है। यद्यपि यह निशाचर पक्षी है, लेकिन सूरज निकल आने पर भी कभी-कभी यह चट्टानों की चोटियों पर दिखाई पड़ता है। यह मेंढक, छिपकली, साँप, छोटी चिड़ियाँ तथा कीड़े-मकोड़े खाता है। इसकी बोली कर्कश और कठोर होती है। दिन में यह चट्टानों पर सर झुकाये हुए चुपचाप बैठा रहता है।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का मौसम दिसम्बर से मई तक होता है, लेकिन इसके बहुत से घोंसले फरवरी में तथा अप्रैल में भी देखे गये हैं। ये अपना घोंसला नहीं बनाते बल्कि अपने अंडों को पहाड़ियों की दराजों में जमीन खुरच कर रख देते हैं। कभी-कभी इनके अंडे झाड़ियों के नीचे तथा पेड़ों की जड़ों के पास जमीन पर भी रखे मिले हैं। इनके अंडे प्रायः २ या ३ होते हैं पर कभी-कभी ४ तक भी मिलते हैं।

अंडे गोल तथा बड़े होते हैं और इनका रंग हल्का मखमनी होता है। ये बनावट में सुन्दर तथा चमकदार होते है।

अंड़े आकार में २.१० × १.७३ इंच के होते हैं।

## २११ हू हू (Forest Eagle Owl : Huhua Nepalensis)

**पर्याय** : वनश्येनोलूक, हू हू चील।

**पहचान** : इसका ऊपरी भाग हल्का भूरा रहता है जिस पर कत्थई चिह्न और चित्ते पड़े रहते हैं। नीचे का हिस्सा गंदा सफेद होता है जिस पर ललछौंह भूरी धारियाँ और चिह्न रहते हैं।

**रंग-रूप** : हू हू २० इंच लम्बा पक्षी है जिसके नर-मादा एक-जैसे होते हैं। इसका सारा ऊपरी भाग हलके भूरे रंग का होता है जिस पर कत्थई तथा ललछौंह भूरे चिह्न, चित्तियाँ तथा टूटी-फूटी धारियाँ पड़ी रहती हैं। डैने गाढ़े भूरे होते हैं जिन पर सफेदी मायल हलकी भूरी चित्तियाँ और धारियाँ रहती है। दुम भी इसी रंग की होती है। गला सफेद और नीचे का सारा हिस्सा गंदा सफेद और ललछौंह भूरी धारियाँ और चिह्नों से भरा रहता है। आँख की पुतली पीली, चोंच हरछौंह सिलेटी और टाँगें गंदी पीली रहती हैं।

**निवास** : हू हू हिमालय के पूर्वी प्रदेश का पक्षी है जो नेपाल के आगे तक पाया जाता है। जाड़ों में यह उत्तर भारत के पूर्वी प्रदेशों के मैदानों में उतर आता है, लेकिन दक्षिण की ओर इसे देखना संभव नहीं।

**विवरण** : हू हू पहाड़ का शिकारी उल्लू है जिसे खुले पहाड़ी स्थान ज्यादा पसन्द हैं। मैदान में उतरने पर यह झाड़ी से भरे मैदानों और तितरे-बितरे जंगलों को अधिकतर चुनता है। इसकी और सब आदतें घुग्घू-जैसी होती हैं। इसको यह नाम इसकी हू, हू, हुक, से मिलती-जुलती बोली के कारण ही मिला है, जो रात को बहुत डरावनी लगती है।

इसका मुख्य भोजन मेंढक, छिपकली, चूहे, साँप और छोटी चिड़ियाँ हैं।

**घोंसला** : हू हू के जोड़ा बाँधने का समय जनवरी से अप्रैल तक रहता है जब मादा किसी पहाड़ की दराज, खोथे या किसी घनी झाड़ी में जमीन पर ही ३-४ सफेद अंडे देती है। ये अंडे चौड़े और बैजाबी होते हैं।

अंड़े आकार लगभग २.५ × १.५५ इंच होता है।

## २१२ बब्बू (Dusky Horned Owl : Bubo Coromandus

**पर्याय** : गुग, धूमिल प्रावार-कर्ण उलूक।

**पहचान** : इसकी बिल्ली-जैसी आँख तथा गहरे कत्थई रंग पर सफेद छल्लेदार धब्बों के कारण, इसको पहचानने में धोखा नहीं होता। इसके शरीर पर धारियाँ पड़ी होती हैं।



बब्बू

**रंगरूप** : लम्बाई २३ इंच और नर-मादा एक रंग-रूप के। पूरा शरीर हरछौंह भूरा तथा परों पर गहरे रंग की धारियाँ। विशेष रूप से निचले परों पर छल्लेदार सफेद धारियाँ तथा बाजू पर कहीं-कहीं सफेद छींटे। डैने तथा पूँछ के पर भूरे और उनके आर-पार पीले छींटे। डैनों के किनारे पीले। आँख की पुतलियाँ पीली। चोंच कुछ सफेदी लिये हुए सींग के रंग की, पंजे काले तथा जाँघों पर कुछ अधिक सफेद छींटे।

**निवास** : बब्बू उत्तर में पंजाब से बंगाल तक और दक्षिण की तरफ मैसूर तक पाया जाता है लेकिन महाराष्ट्र तथा मलाबार की तरफ बिल्कुल दिखाई नहीं पड़ता।

**बिहरण** : इस जाति का उल्लू घने जंगली स्थानों में रहना बिल्कुल पसन्द नहीं करता। यह खुले स्थानों में बस्ती के आस-पास रहता है। यह विशेष रूप से, उत्तरी भारत के वृक्षों से आच्छादित जलाशयों के आस-पास पाया जाता है। दिन भर तो यह पेड़ों की घनी डालियों पर सोया करता है, लेकिन तीसरे पहर सूरज के डूबने के २ या ३ घंटे पहले से इसकी ऊँ-ऊँ- ऊँ- ऊँ-ऊँ-ओ-ओ-ओ-ओ की बोली सुनाई पड़ने लगती है जो नजदीक से बोली जाने पर भी दूर से आती जान पड़ती है। इसके सर और पीली आंखों को देखकर बिल्ली के मुँह का भ्रम होता है, विशेष रूप से जब यह अपना सर निकाल कर घोंसले से बाहर झाँकता है। यह उल्लू चूहे, छिपकली, मेंढक, छोटे-छोटे पक्षी तथा कीड़े-मकोड़ों को खाता है और कभी-कभी चिड़ियों के बच्चों और अंडों को भी चुरा कर अपना पेट भरता है।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का मौसम दिसम्बर से मार्च तक होता है। घोंसला तिनकों से बड़े प्याले के आकार का बना होता है जो जमीन से ३० से ४० फुट की ऊँचाई पर दो शाखाओं के जोड़ पर रखा रहता है। कभी-कभी यह चीलों तथा गिद्धों के पुराने घोंसलों को भी कुछ और बड़ा आकार देकर अपने प्रयोग में लाता है। जब मादा घोंसले में होती है तब नर किसी आस-पास के वृक्ष पर ही रहता है। इसके सामान्य रूप से २ अंडे होते हैं और ३ या ४ की संख्या में बहुत कम पाये जाते हैं। मादा अंडा देते ही उन्हें सेना प्रारम्भ कर देती है। अंडा बड़ा गोलाकार, बनावट में कुछ भद्दा तथा हलकी चमक वाला और हलके सफेद रंग का होता है, उस पर मक्खनी झलक भी होती है।

अंडा का औसत आकार २.३३ × १.३९ इंच होता है।

## २१३ रेरुआ (Short-eared Owl : Asio flammens )

**पर्याय** : लघु कर्ण उलूक।

**पहचान** : इस उल्लू का ऊपरी हिस्सा गाढ़ा भूरा, जिस पर हलकी भूरी और सफेद चित्तियाँ रहती हैं। नीचे का हिस्सा हलका भूरा जिस पर कलछौंह भूरी या कत्थई आड़ी-आड़ी धारियाँ पड़ी होती हैं।

**रंग-रूप** : यह १५ इंच का उल्लू, अपने निकट संबंधी घुघ्घू से बहुत कुछ मिलता-जुलता होता है। इसके भी माथे पर थोड़े कलछौंह पर सींग की तरह उठे रहते हैं। इसके नर और मादा एक ही जैसे होते हैं।

इसकी गरदन और सर बादामी भूरी और गाढ़ी भूरी लकीरों से भरा रहता है, जिस पर हलकी भूरी और सफेद चित्तियाँ तथा चिह्न पड़े रहते हैं। डैने कलछौंह होते हैं, जिन पर गाढ़ी भूरी धारियाँ पड़ी रहती हैं। दुम हलकी और गाढ़ी भूरी लकीरों से भरी रहती है। नीचे का हिस्सा हलका भूरा होता है जिन पर कलछौंह भूरी धारियाँ पड़ी रहती हैं। गला और टुड्डी सफेद रहती है। आँख की पुतली पीली, चोंच और टाँगें हरछौंह काली होती हैं।

**निवास** : रेरुआ हमारे यहाँ का मौसमी पक्षी है जो जाड़ों में हमारे देश में आकर सारे उत्तर भारत के मैदानों में फैल जाता है और जाड़ा समाप्त होते-होते फिर उत्तर-पश्चिम की ओर लौट जाता है। यह दक्षिण भारत की ओर बहुत कम जाता है।

**विवरण** : इस उल्लू को घने जंगल और पहाड़ों की अपेक्षा ऊँची घास से भरे मैदान ज्यादा पसन्द हैं। वहाँ इन्हें अक्सर हाँके के समय देखा जा सकता है। घास के मैदानों के अलावा यह झाड़ियों के आस-पास भी देखा जा सकता है। यह अक्सर छोटे-छोटे झुंडों में दिखाई पड़ता है।

रेरुआ की और सब आदतें घुघ्घू जैसी होती हैं। इसका मुख्य भोजन चूहे, गिलहरी आदि छोटे जानवर हैं, जिनका यह वैसे तो रात में पर कभी-कभी दिन में भी शिकार करता है।

**घोंसला** : मौसमी पक्षी होने के कारण यह हमारे देश में घोंसला नहीं बनाता और जोड़ा बाँधने के समय हमारे देश से वापस लौट जाता है, लेकिन अन्य उल्लुओं की तरह इसकी मादा भी किसी खोंथे, दराज या झाड़ी में जमीन पर अपने अंडे देती है। ये अंडे चौड़े, बैंजाबी और सफेद होते हैं और इनकी संख्या ३ से ४ तक रहती है।

अंडे करीब १.४५ × १.१५ इंच के रहते हैं।

## २१४ डुंडुल (Collared Scops Owl : Otus Bakkamoena)

**पर्याय** : विडग्रीव ऊर्ध्वकर्ण उलूक, थरकावी चुगद, कुसियल चुगद।

**पहचान** : यह उल्लू छोटे आकार का होता है और कान के पंख तथा गहरे रंग की आँखें इसकी पहचान के साधन हैं। इसके पीले परों पर गहरे भूरे रंग के सुन्दर छींटे होते हैं, जो सर की ओर अधिक घने होते हैं। इसकी मौजूदगी का पता इसके बोले बिना नहीं होता।



डुंडुल

**रंग-रूप** : लम्बाई १० इंच और नर-मादा एक समान। चेहरा हलके भूरे रंग का और उस पर हलकी धारियाँ। आँखों पर चौड़ी धारी, जो सर पर के घब्बेदार काले तथा पीले सफेद परों में मिल जाती है। ऊपरी पर पीले तथा उन पर छल्लेदार तथा धारीदार चिह्न। गरदन के पिछले भाग पर पीला कालर और बाजू के नीचे काले धब्बे वाली धारी। डैने भूरे तथा उन पर पीले धब्बे और किनारे पीले। पूँछ भूरी तथा उस पर पीली आड़ी धारियाँ। निचले पर मक्खनी और उन पर काले छींटे। ठोड़ी के अलावा, पूँछ और जाँघों पर लहरियादार धारियाँ। आँख की पुतलियाँ भूरी, चोंच हरी और पीला रंग लिये हुए सींग के रंग की तथा पंजे हरापन लिये पीले। जाँघों पर घने पर।

**निवास** : यह खूबसूरत उल्लू हमारे देश के पूर्वी प्रदेशों में सर्वत्र पाया जाता है। इसकी कई जातियाँ हैं जो रंग, आकार तथा पंजों पर के परों के आधार पर विभाजित की गयी हैं।

इसकी पहली जाति उत्तर प्रदेश में इलाहाबाद के पूर्वी क्षेत्रों से लेकर आबू पर्वत तक पायी जाती है। दूसरी जाति का उल्लू मध्य भारत से लेकर दक्षिणी बंगाल में मानभूमि तथा संबलपुर तक पाया जाता है। तीसरी जाति का रंग पीला होता है जो सिंध और बिलोचिस्तान में पायी जाती है। हिमालय की निचली पहाड़ी श्रेणियों में ६,००० फुट की ऊँचाई तक इसकी दो और जातियाँ पायी जाती हैं—एक हजारा से गढ़वाल तक और दूसरी नेपाल, सिक्किम और बर्मा में पायी जाती है।

**विवरण** : यह रात्रिचारी पक्षी है जो शाम होते ही जग जाता है और घने वृक्षों के भीतर से थोड़ी-थोड़ी देर बाद हुट-

हुट, हुट, हुट, से मिलती-जुलती बोली बोलता है। उसका यह स्वर प्रातः की पहली किरण के आने तक गूँजता रहता है। यह विशेष रूप से कीड़े-मकोड़ों से अपना पेट भरता है।

**घोंसला** : इनके जोड़ा बाँधने का मौसम जनवरी से अप्रैल तक होता है। अंडे पेड़ के प्राकृतिक खोथों में, जिन्हें ये घास और पत्तियों से घोंसले के आकार का बना लेते हैं, रखे जाते हैं। मादा २ से ५ तक अंडे देती है जो गोलाकार होते हैं। इनका रंग सफेद होता है।

अंडों का आकार औसतन १.२५ × १.०५ इंच होता है।

## २१५ चितला खूसट (Spotted Owl)

**पर्याय** : पृषद् क्षुद्रोलूक, खुसटिया, पेंचा, पिंगाला।

**पहचान** : यह मैदानों की बहुत परिचित उल्लू है, जिसके शरीर पर छोटे-छोटे भूरे तथा सफेद धब्बे होते हैं और आँखें चमकदार पीली होती हैं। यह दिन को भी जागता रहता है और शाम होते ही बड़ा शोर मचाता है। इसे बाग-बगीचों तथा खंडहरों में दो-तीन की संख्या में शाम होते ही देखना कठिन नहीं होता।

**रंग-रूप** : लम्बाई ८ इंच और नर-मादा एक रंग-रूप के। सफेद आँखों के ऊपर माथे पर सफेद धारी। ऊपरी भाग, डैने तथा पूँछ मटमैले भूरे रंग की। सर पर छोटे-छोटे सफेद धब्बे ऊपरी परों पर भी सफेद धब्बे तथा धारियाँ। गरदन के पिछली तरफ सफेद रंग का आधा कालर। बड़े परों पर जगह-जगह आड़ी पीली धारियाँ। पूँछ पर ४ से ६ तक सफेद आड़ी धारियाँ। गले पर चौड़ी भूरी पट्टी जो बीच में कटी होती है। ठोड़ी, गला और गरदन के अगल-बगल का रंग सफेद। निचले पर सफेद तथा उन पर भूरी पट्टियाँ और धब्बे जो पूँछ की ओर नहीं होते आँख की पुतलियाँ सुनहले पीले रंग की तथा चोंच और पंजे हरछौंह पीले।

**निवास** : यह हिमालय की ३,००० फुट ऊँची पहाड़ियों से कन्या कुमारी तक पाये जाते हैं तथा बर्मा और श्याम में भी मिलते हैं। सूक्ष्म रंग-भेद के कारण वे विभिन्न जातियों में विभाजित हैं जिनमें से एक खास किस्म की दक्षिणी भारत में तथा दूसरी महाराष्ट्र में पाती जाती है।

**विवरण** : यह हमारे देश का बहुत परिचित उल्लू है जिसे प्रायः सभी जानते हैं। यह अपना बहुत समय बस्ती के आस-पास खेतों, जंगलों, चट्टानों, खंडहरों, घरों तथा पेड़ों पर बिताता है। यह शाम होते ही अपने रहने के छोटे-से क्षेत्र से निकल कर खूब कोलाहल मचाने लगता है, वैसे ये निशाचर हैं। ये लहराते हुए उड़ते हैं और उड़ते समय इनके डैनों से फटफटाने की आवाज आती है। ये अपने स्थान से दूर नहीं जाते और जमीन से १० या १५ फुट की ऊँचाई पर ही उड़ते हैं। यद्यपि यह रात्रिचारी है, तथापि अन्य उल्लुओं की अपेक्षा यह दिन में कम सोता है। सूर्य के प्रकाश में ये अपने खोथों के आस-पास रहते हैं और दिन में भी चौकन्ने रहते हैं। यह दिन में बहुत कम कोलाहल करते हैं और तीन या चार के समूह में रहते हैं। ये केवल कीड़े-मकोड़े खाते हैं तथा कभी-कभी छोटी-मोटी चिड़ियाँ और छिपकलियों को भी खा लेता है।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का मौसम फरवरी से मई तक है, लेकिन इसके बहुत से घोंसले मार्च और अप्रैल में भी मिलते हैं। यह अपने घोंसले बनाने में कोई खास परिश्रम नहीं करता तथा सूखी घास तथा अन्य कूड़े-करकट से, जो शुरू से ही इसके रहने के खोथे में होता है, घोंसला बना लेता है। इसकी मादा ३ से ६ तक सफेद अंडे देती है।

ये अंडे नाप में १.२५ × १.०४ इंच के होते हैं।

## २१६ करैल (Barn Owl : Tytoalba)

**पर्याय** : कुरया, भारत श्वेतोलूक, रूस्तक, पेचक, पेचा।

**पहचान** : इस उल्लू का पान की शक्ल का मसखरा चेहरा इसे पहचानने के लिए काफी है। ऊपर का हिस्सा हलका भूरा जिस पर तितरी-बितरी गाढ़ी भूरी चित्तियाँ और नीचे का भाग संदली सफेद रहता है।

**रंग-रूप** : करैल १२ इंच का उल्लू है जिसके नर-मादा एक-जैसे रहते हैं। इसका पान की शक्ल का मसखरों-जैसा चेहरा गंदा सफेद रहता है, जिसके चारो ओर भूरा हाशिया होता है। दुम, डैने और शरीर का ऊपरी भाग हलका या सुनहला भूरा रहता है, जिसमें पीठ पर और बगल में तितरी-बितरी गाढ़ी भूरी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं। दुम पर आड़ी भूरी धारियाँ रहती हैं। आँख की पुतली पीली, चोंच और टाँगें प्याजी होती हैं।

**निवास** : करैल को कहीं-कहीं रूस्तक भी कहते हैं। यह हमारे देश में घने जंगलों, ऊँचे पहाड़ों तथा बंजर और रेगिस्तानी मैदानों के अलावा प्रायः सभी स्थानों पर पाया जाता है। सूर्यास्त के बाद इसे पुरानी इमारतों और खंडहरों में देखना कठिन नहीं होता। यह यहाँ का बारहमासी पक्षी है जो हमारा देश छोड़कर बाहर नहीं जाता।

**विवरण** : करैल बहुत ढीठ उल्लू है जिसे हम सूरज डूबते ही घर की छतों, दीवालों तथा आस-पास के पेड़ों पर बैठा देख सकते हैं। इसके बंदर-जैसे चेहरे से इसे पहचानना कठिन नहीं। तेज बोली से इसकी मौजूदगी का पता चल जाता है।

यह किसानों का मित्र पक्षी है जो खेत तथा गल्ला-गोदाम के निकट रहने वाले चूहों की सफाई कर देता है। यह वैसे और भी जीव-जन्तुओं से अपना पेट भरता है, लेकिन चूहे इसे सबसे अधिक पसन्द हैं जिन्हें पकड़ने में यह बिल्लियों की तरह उस्ताद होता है।

**घोंसला** : करैल के जोड़ा के बाँधने का समय उत्तर भारत में फरवरी से जून तक और दक्षिण भारत में नवम्बर से जनवरी तक रहता है, जिसके बीच मादा किसी दीवार के सूराख या दराज में जमीन पर ही अपने अंडे देती है। कभी-कभी जमीन पर थोड़ी घास भी रख दी जाती है।

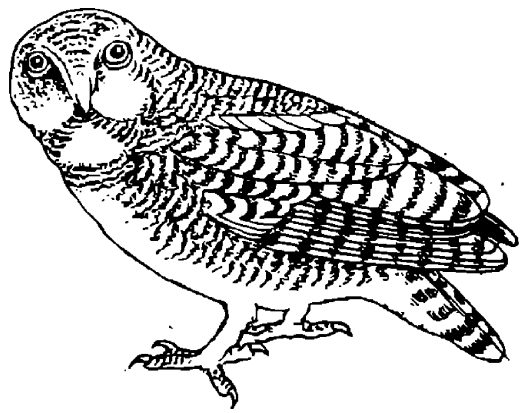
अंडे अंडाकार और धुर सफेद होते हैं और उनकी संख्या ३ से ६ तक रहती है।

इनकी नाप लगभग १.४५ × १.१० इंच होती है।

## २१७ जंगली चुगद (Jungle Owlet : Glaucidium Radiatum)

**पर्याय** : कुचकुचवा, वन क्षुद्रोलूक।

**पहचान** : आकार में छोटे रंग का कलछौंह भूरा उल्लू, जिसके ऊपर कलछौंह भूरे, सफेद और बादामी रंग की धारियाँ होती हैं। यह पेड़ों पर रहता है तथा इसकी आवाज को सुन कर इसे आसानी से पहचाना जा सकता है।



कुचकुचवा जंगली खूसट

**रंग-रूप** : लम्बाई ८ इंच। नर-मादा एक-जैसे। इसका सम्पूर्ण ऊपरी हिस्सा गहरा कलछौंह भूरा, सिर और गरदन के ऊपर हलकी बादामी रंग की सुन्दर पट्टियाँ और शेष भाग पर सफेद रंग की पट्टियाँ होती हैं। डैने के ऊपर सफेद और बादामी रंग के चित्ते तथा कलछौंह भूरे तथा लाल भूरे रंग की पट्टियाँ होती हैं जो घड़ के ऊपर और अधिक स्पष्ट दिखलाई पड़ती हैं। दुम कलछौंह भूरी होती है तथा उसके ऊपर सफेद रंग की आड़ी-तिरछी रेखाएँ पड़ी रहती हैं। निचला भाग भूरे और सफेद रंगका होता है, जिस पर बादामी रंग की कुछ चौड़ी पट्टियाँ होती हैं। काली पट्टियाँ दुम तथा जाँघों के पास समाप्त हो जाती हैं। सीने का ऊपरी भाग और पेट के बीच का रंग सफेद होता है। आँख की पुतली पीली, चोंच हरछौंह सिलेटी और टाँगें हरछौंह पीले रंग की होती हैं।

**निवास** : जंगली चुगद केवल भारत और लंका में पाया जाता है। यह पूर्वी घाट को छोड़ कर सारे भारतवर्ष में पाया जाता है।

**विवरण** : जंगली चुगद प्रायः जंगली और घनी झाड़ियों तथा पेड़ों से भरे हुए मैदानों और नीची पहाड़ियों में रहता है। उत्तर प्रदेश के घने खेतों और घनी अमराइयों में इसको देखना कठिन नहीं होता। यह दुबकने वाला पक्षी जो शोरगुल के बावजूद किसी घनी डाल पर बैठा रहता है यदि इसके साथ कोई छेड़खानी करे तो यह उड़ कर किसी डाल पर तन कर सीधा बैठ जाता है और उस ओर घूर कर देखता रहता है। यदि इसे मालूम हो जाय कि इसे देख लिया गया है तो यह किसी डाली पर छिप कर बैठ जाता है। डाली पर बैठा हुआ ऐसा लगता है मानो सूखी डाल का खुत्था हो। इसे दिन के समय भी दिखलाई देता है।

जंगली चुगद रात के समय निकलता है और नियम के अनुसार सुबह जल्दी ही अपना काम समाप्त कर विश्राम करता है। इसके मुख्य भोजन का समय प्रातः सूर्योदय से एक घंटा पूर्व और सूर्यास्त से एक घंटा बाद होता है। यदि बाधा न पड़े तो इनका जोड़ा घोंसले में जाने के पहले धूप में बैठता है। ये कभी-कभी दोपहर को धूप में और टेलीग्राफ के तारों पर बैठे दिखाई पड़ते हैं।

यह रात और दिन में बोलता है। इसकी आवाज टु-रू-रू-रू जैसी होती है।

इसकी उड़ान तेज होती है। यह सभी प्रकार की छोटी चिड़ियों, टिड्डियों, छिपकलियों, झींगुरों और अन्य कीड़े-मकोड़ों से अपना पेट भरता है।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय मार्च से जून तक होता है। यह घोंसला नहीं बनाता, बल्कि अपने अंडे छोटे पेड़ के किसी छेद में रख देता है, जिसकी ऊँचाई जमीन से १० या २० फुट होती है। समय आने पर मादा ३ या ४ अंडे देती है। ये चौड़े और अंडाकार होते हैं, किन्तु इनके ऊपर चमक नहीं होती। इनका रंग सफेद होता है।

अंडे लगभग १.२५ × १.०५ इंच के होते हैं।

## २१८ राज गिद्ध (King Vulture : Sarcogyps Calvus)

**पर्याय** : कृष्ण कर्णि गृद्ध, राज शगुन, भँवरा, मुल्ला गिद्ध, काला गिद्धि, पांडुचरी गिद्ध।

**पहचान** : इसके काले रंग और बाल रहित लाल सर तथा गले की लटकती हुई खाल के कारण चाहे यह जमीन पर बैठा हो या उड़ रहा हो इसको पहचानने में कठिनाई नहीं होगी । इसकी जांघ पर के सफेद धब्बे दूर से ही साफ दिखाई पड़ते हैं और इसी से इसकी पहचान बिना किसी दुविधा के की जा सकती है । उड़ान के समय इसके पर कुछ नोकीले लगते हैं । इन परों में एक छोर से दूसरे छोर तक एक सफेद रेखा दिखाई पड़ती है ।

**रंग-रूप** : लम्बाई ३२ इंच। नर मादा एक-जैसे । सारा शरीर चमकीला काला जो कंधों, पीठ के निचले भाग और दुम की जड़ पर भूरा हो जाता है । घेघा गहरा भूरा होता है और इसके चारो ओर सफेद रंग के रोएँ होते हैं। जंघों के ऊपर एक-एक सफेद बड़े चित्ते रहते हैं। आँख की पुतली ललछौंह भूरी या पीली, चोंच गहरी भूरी और टाँगें हलके लाल रंग की होती हैं ।

इसके सर और गरदन में बाल नहीं होते। इनका रंग लाल होता है तथा कानों के पीछे परों के गुच्छे से रहते हैं।

**निवास** : राज गिद्ध लंका को छोड़कर बर्मा और सम्पूर्ण भारतवर्ष में पाया जाता है। हिमालय पर ५,८०० फुट तक की ऊँचाई तक इसे देखा जा सकता है । अपने भोजन की तलाश में यह ८,००० फुट की ऊँचाई तक पहुँच जाता है । यह स्थायी रूप से यहाँ का रहने वाला पक्षी है ।

**विवरण** : यद्यपि यह सारे भारतवर्ष में पाया जाता है किन्तु इसकी संख्या अधिक नहीं है। यह अन्य गिद्धों की भाँति झुंडों में नहीं रहता बल्कि अकेले या जोड़े में रहता है । किसी भी मरे हुए जानवर के ऊपर बैठे अन्य गिद्धों के साथ इस जाति के एक या दो गिद्धों को देखा जा सकता है । अन्य जाति के गिद्ध जैसे इसकी इज्जत करते हैं और इसके आने पर इसके रास्ते से हट जाते हैं । इसी कारण इसे राज-गिद्ध कहा जाता है । इसका दूसरा नाम काला-गिद्ध या पांडुचेरी-गिद्ध भी है । इसे बहुत घने जंगल या बिल्कुल रेगिस्तान प्रान्त पसन्द नहीं हैं । यह कृषि योग्य मैदानों के पेड़ों पर रहता है । यह ढलुवा चट्टानों पर नहीं बैठता । उड़ते समय इसके पर पीठ के ऊपर काफी उठे रहते हैं ।

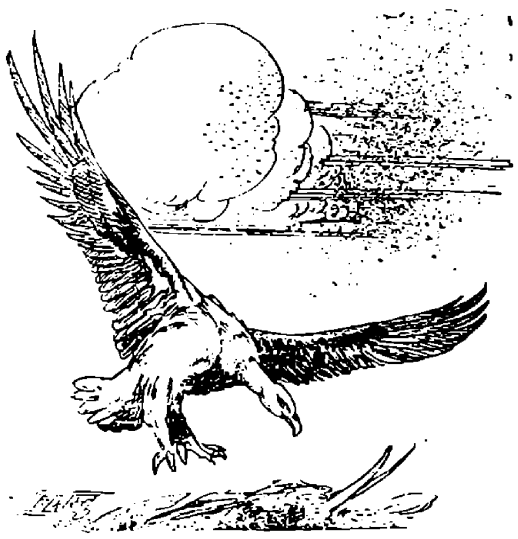
**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय जनवरी के अन्त से लेकर मध्य अप्रैल तक रहता है । लेकिन सबसे अधिक अंडे मार्च के महीनों में मिलते हैं । इसका घोंसला चौरस आकार वाला लकड़ियों से बना होता है । इसके मध्य में पत्तियाँ और सूखी घास लगी होती है । यह अपने घोंसले की मरम्मत करता रहता है जिससे वह कई वर्षों तक चलता रहता है । यह अपना घोंसला पेड़ की चोटी पर बनाता है जिसकी ऊँचाई जमीन से ३० या ४० फुट होती है । जिन स्थानों पर पेड़ नहीं होते वहाँ ये अपने घोंसले नीची काँटेदार झाड़ियों और यहाँ तक कि भूमि के छूने वाली झाड़ियों में भी बना लेता है लेकिन किसी भी परिस्थिति में मादा चट्टान या मकानों के ऊपर अंडे नहीं देती । कभी-कभी यह चील के घोंसले का भी प्रयोग कर लेती है । समय आने पर मादा १ अंडा देती है । इसका आकार गोल और अंडाकार होता है पर इसमें चमक नहीं होती है । अंडे का रंग हरछौंह सफेद होता है ।

अंडे की लम्बाई चौड़ाई लगभग ३.३५ × २.५० इंच होती है।

## २१९ पहाड़ी गिद्ध (Himalayan Griffon : Gyps Himalayensis)

**पर्याय** : हिमालय पाण्डुर, बड़ा गिद्ध ।

**पहचान** : यह बड़े आकार का भूरे रंग का गिद्ध सारे हिमालय में पाया जाता है । नीचे से देखने में यह हलका खाकी लगता है और इसके पंखों के पिछले किनारे और दुम का रंग काला होता है । आकाश में उड़ते समय यह वायुयान की तरह दिखलाई पड़ता है । खाकी रंग के रोएँ सर और गरदन पर होते हैं । जब यह चुपचाप बैठा होता है तो इसके गले की सफेद कंठी स्पष्ट दिखलाई पड़ती है ।



पहाड़ी गिद्ध

**रंग-रूप** : लम्बाई ४ फुट । नर मादा एक-जैसे । इसके सिर के ऊपर कुछ पिलछौंह-सफेद बालों की तरह के पर रहते हैं और गरदन पर पिलछौंह सफेद रोओं के अलावा बाल नहीं होते गरदन के चारो ओर नोकीले परों की कंठी होती है जिसका रंग सफेद और हलका भूरा होता है । पीठ के ऊपर का रंग सफेदी मायल भूरा होता है, जिस पर हलके भूरे रंग की धारियाँ पड़ी रहती हैं । पीठ के पिछले भाग का रंग सफेद होता है जो धूमिल पीले में मिल जाता है । पंख गहरे भूरे जिनके परों के सिरे पर हलकी भूरी बिन्दियाँ और डैने और दुम के पर कलछौंह भूरे होते हैं ।

निचला भाग हलका भूरा और घेघे का रंग अपेक्षाकृत गहरा होता है। निचले भाग पर सफेद चौड़ी धारियाँ होती हैं। आँख की पुतली भुरछौंह पीली, चोंच सिलेटी हरी और टाँगें मटमैली हरछौंह सफेद होती हैं।

**निवास** : यह पहाड़ों पर रहने वाला पक्षी है जो सम्पूर्ण हिमालय पर्वत माला में रहता है। इसके समान अन्य गिद्ध भी होते हैं जो आकार तथा रंग की भिन्नता के कारण इससे अलग कर दिये गये हैं।

**विवरण** : हिमालय पर्वत माला के पहाड़ी स्थानों पर आने जाने वाले लोग पहाड़ी गिद्ध को अच्छी तरह पहचानते हैं। रंग में खाकी तथा आकार में इस बड़े पहाड़ी गिद्ध को आकाश में काफी ऊँचाई पर उड़ते तथा चक्कर काटते किसी भी समय देखा जा सकता है। यह या तो काफी ऊँचाई पर या पहाड़ियों से थोड़ी ऊँचाई पर उड़ता अथवा कर्कश आवाज करता हुआ सीधा तेज उड़ान करता है। इसके पंख कड़े और पीठ की सिधाई में होते हैं इसलिए यह वायुयान-जैसा दिखता है। दूर से देखने पर इसके पंख काफी चौड़े मालूम देते हैं। अन्य गिद्धों की तरह इसके भी आराम करने के निश्चित स्थान होते हैं जो प्रायः किसी चट्टान के ऊपर या पहाड़ के किसी ऊँचे स्थान पर होते हैं। यहाँ यह तुरन्त खाये हुए भोजन को पचाने के लिए बैठ जाता है या जलमग्न चट्टानों पर बैठ कर धूप का सेवन करता है। इनके बैठने के प्रिय स्थानों का प्रयोग सैकड़ों वर्षों से होता आ रहा है अतः इन पर बड़े सफेद धब्बे २-३ मील दूर से दिखलाई पड़ते हैं। मरे हुए जानवरों के खाने के तुरंत बाद ये पास के पेड़ों पर बैठ जाते हैं और पाचन के शुरू होते ही अपने विश्रामस्थलों की ओर मुड़ जाते हैं। इनका मुख्य भोजन मरे पशुओं का सड़ा मांस है। ये कभी खुद शिकार नहीं करते।

**घोंसला** : पहाड़ी गिद्ध के जोड़ा बाँधने का समय दिसम्बर से मार्च तक होता है। जब इनके ४ से ६ तक जोड़े किसी पहाड़ या जलमग्न चट्टान पर एक साथ अपने घोंसले बनाते हैं। इनके घोंसले छोटी-छोटी टहनियों और घास-फूस के होते हैं जो आकार में बड़े और देखने में भद्दे होते हैं।

मादा समय आने पर इसमें १ अंडा देती है जो लम्बा बैजावी और नुकीला होता है। इसका रंग हरछौंह खाकी सफेद होता है। अंडों के ऊपर किसी प्रकार की चमक या निशान नहीं होते लेकिन कभी-कभी इसके ऊपर भूरे रंग की धारियाँ होती हैं।

अंडों की औसत लम्बाई चौड़ाई ३.७५ × २.७५ इंच होती है।

## २२० चमर गिद्ध (White-Backed Vulture : Pesudogyps Bengalensis)

**पर्याय** : श्वेत पृष्ठ गृद्ध।

**पहचान** : आकार में बड़ा, कुबड़ा और चौरस दिखलाई पड़ने वाला यह गिद्ध पेड़ों के ऊपर अपने सर तथा गरदन को कंधों के भीतर छिपाये हुए विश्राम करता रहता है। इसके गहरे सिलेटी रंग तथा दुम के ऊपरी भाग पर के सफेद धब्बे के कारण इसकी पहचान आसानी से हो जाती है। उड़ान के समय यदि यह सफेद धब्बा नहीं दिखलाई पड़ता तो इसके नोकीले पंखों के भीतर और बाजुओं का सफेद रंग साफ दिखलाई पड़ता है। इस वजह से इसकी पहचान आसानी से हो जाती है।

**रंग-रूप** : लम्बाई ३५ इंच। नर मादा एक-जैसे। इनके नंगे सिर और गरदन के ऊपर भूरे रंग के कहीं-कहीं बाल होते हैं। गरदन के पीछे सफेद रोवों का गुच्छा होता है और यहाँ से सफेद रोवों का एक घेरा गरदन के चारों ओर फैल जाता है। ऊपरी हिस्से का रंग कलछौंह भूरा रहता है और दुम की जड़ के ऊपर एक बड़ा सफेद चित्ता होता है। घेघे का रंग काला रहता है जिसके दोनों किनारों पर सफेद रोंयें होते हैं। सीने और पेट का रंग भुरछौंह काला रहता है जिस पर पास-पास पतली लम्बी धारियाँ होती हैं। पंख का भीतरी भाग, डैनों का ऊपरी हिस्सा और जाँघ का रंग सफेद होता है। आँख की पुतली भूरी, सर और गरदन की चमड़ी मटमैली सिलेटी, चोंच गहरी सिलेटी तथा टाँगें कलछौंह होती हैं।

**निवास** : चमर गिद्ध सारे भारतवर्ष में पाया जाता है। यह यहाँ का बारहमासी पक्षी है लेकिन भोजन की सुविधानुसार यह थोड़ा-बहुत स्थान-परिवर्तन भी कर लेता है।

**विवरण** : चमर गिद्ध घनी आबादी वाले शहरों और गाँवों के बाहर नहरों और सड़कों के दोनों ओर पाये जाने वाले बड़े पेड़ों के ऊपर रहता है। इनके सबसे अधिक अंडे नवम्बर, दिसम्बर और जनवरी में पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त यह अपने लिए कुछ मनपसन्द स्थानों को भी चुन लेता है और वहीं पर बैठ कर विश्राम करता रहता है। विश्राम करने के बाद आकाश में बहुत ऊँचे उड़ कर चक्कर काटता रहता है लेकिन इसकी निगाह जमीन पर अपने शिकार को ही खोजती रहती है। इस प्रकार आकाश में चक्कर काटते समय इसके पंख शरीर के बराबर ही रहते हैं।

इतनी ऊँचाई से उड़ते हुए इसके भोजन तलाश करने की प्रणाली के विषय में काफी मतभेद है। कुछ लोगों का कहना है कि यह खाद्य वस्तु का पता देखकर और कुछ का कहना है कि यह सूँघ कर उसका पता लगा लेता है। जो कुछ भी हो, सत्य तो यह है कि इन दोनों के बारे में कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं है।

जहाँ कहीं पशु शव होता है वहाँ पहले एक दो कौवे और आवारा कुत्ते इकट्ठे होते हैं। धीरे-धीरे चीलें आती हैं। इस प्रकार जमाव बढ़ जाता है। इसके बाद एक चमर गिद्ध आता है और फिर अनेक आ जाते हैं और पशुशव की बड़ी हड्डियों को छोड़ कर शेष सब ये लोग खा जाते हैं। ये इतना खा लेते हैं कि पास के पेड़ों तक उड़ कर जाना इनके लिए कठिन हो जाता है।

पास के पेड़ पर बैठ कर ये खाया हुआ भोजन पचाते हैं। जब अपने को उड़ने के लायक समझते हैं तब उड़ कर अपने विश्राम-स्थल पर जाते हैं और वहीं दुबारा भूख लगने तक आराम करते रहते हैं।

**घोंसला** : चमर गिद्ध अपने घोंसले का निर्माण सितम्बर से शुरू करते हैं जो मार्च तक चलता रहता है। इसके अधिक अंडे नवम्बर से जनवरी तक पाये जाते हैं। यह अपना घोंसला चट्टान या इमारत पर न बना कर पेड़ों पर बनाते हैं जो सूखी टहनियों से बने होते हैं। ये भद्दे से होते हैं और पेड़ की किसी दुफंकी डाल पर सबसे ऊँची चोटी पर रखे रहते हैं। ये अपने घोंसलों की मरम्मत करते रहते हैं और उसे अनेक वर्षों तक प्रयोग में लाते रहते हैं।

मादा समय आने पर १ अंडा देती है जो बैंजावी होता है। अंडे का रंग हरछौह सफेद होता है, उस पर चित्ते नहीं होते।

अंडा लगभग ३.२५ × ३.४० इंच का रहता है।

## २२१ गोबर गिद्ध (Neophron or Scavenger Vulture : Neophron Percnopterus)

**पर्याय** : सफेद गिद्ध, श्वेत भास्क, कंक, कालमुर्ग।

**पहचान** : यह गिद्ध अपने गंदे सफेद रंग तथा काले डैने के कारण आसानी से पहचाना जा सकता है। इसके सर पर की नंगी और पीली खाल से इसे पहचानने में और भी आसानी हो जाती है। इसे अक्सर जानवरों की लाश के आस-पास अन्य गिद्धों के साथ देखा जा सकता है।

**रंग-रूप** : इस पक्षी के नर मादा एक ही जैसे होते हैं और कद करीब २४ इंच का रहता है। सारे शरीर का रंग गंदा सफेद, लेकिन डैने काले और कत्थई। सर पर की खाल बिना परों की और पीले रंग की तथा गरदन के चारों ओर बड़े-बड़े परों का एक कंठा-सा। आँख की पुतली गाढ़ी भूरी, चोंच सींग के रंग की, और पैर गुलाबीपन लिये सफेद रहते हैं।

**निवास** : गोबर गिद्ध हमारे देश के आलावा अन्य देशों में भी काफी संख्या में पाये जाते हैं। हमारे देश में यह करीब-करीब सभी जगहों पर पाया जाता है और इसे हम मैदानों में अकेले अथवा झुंड में देख सकते हैं।

**विवरण** : इस गिद्ध को हम अक्सर जानवरों की लाश के आस-पास अथवा कूड़े-करकट के ढेर पर अपना भोजन तलाशते आसानी से देख सकते हैं। यह कभी तो अकेला ही दिखाई पड़ता है और कभी दो-चार अथवा और ज्यादा के गिरोहों में। यह बहुत ही ढीठ पक्षी है, जो अक्सर बाजारों में और भीड़-भाड़ के आस-पास तक चला आता है, जैसे इसे किसी का डर ही न हो यह अन्य गिद्धों की तरह मुर्दाखोर पक्षी है, जिसे सर्व-भक्षी कहना अनुचित न होगा।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय फरवरी से मई तक है, जब यह अपना भद्दा-सा बड़ा घोंसला किसी ऊँचे पेड़ पर बनाता है। इसके घोंसले सूखी टहनियों, ऊन और चिथड़ों आदि से बने होते हैं, जो देखने में बहुत भोंड़े से लगते हैं। मादा समय आने पर करीब ३ अंडे देती है। लेकिन इसके घोंसले में अक्सर २ ही अंडे मिलते हैं। ये अंडे चौड़े और अंडाकार होते हैं, जिनका ऊपरी भाग कभी तो चमकदार और कभी बिना चमक के रहता है। अंडे गंदे सफेद रंग के होते हैं, जिन पर कभी गुलाबी और कभी बादामी झलक रहती है। कुछ अंडों पर बैंगनी और कत्थई रंग की चित्तियाँ और चिह्न भी होते हैं।

अंडे लगभग २.६ १.९८ × इंच के होते हैं।

## २२२ अरगुल (Lammergeier : Gypaetus Barbatus)

**पर्याय** : जटायु गृद्ध, भास, दाढ़ी वाला गिद्ध।

**पहचान** : काफी बड़े आकार का पक्षी जो प्रायः हवा में उड़ते हुए देखा जा सकता है। इसके लम्बे नोकीले डैने और पंखदार दुम से इसको आसानी से पहचाना जा सकता है इसकी ठुड्डी पर कुछ बालनुमा काले पर रहते हैं जो दाढ़ी जैसे लगते हैं। इसका ऊपरी हिस्सा काला रहता है।



अरगुल

**रंग-रूप** : अरगुल ४ फुट लम्बा पक्षी है जिसके नर और

मादा एक ही जैसे होते हैं। इसकी आँख के ऊपर एक काला चिता रहता है। ठोड़ी के नीचे दाढ़ीनुमा बड़े हुए लम्बे और नोकीले पर भी होते हैं। सर और ठोड़ी सफेद होती है जिस पर काली चित्तियाँ पड़ी रहती हैं। ऊपर का अगला हिस्सा और डैने का ऊपरी भाग काला रहता है जिस पर पतली सफेद धारियाँ पड़ी रहती हैं। गरदन और नीचे का हिस्सा सफेद रहता है जिस पर लालछौंह झलक रहती है। सीने पर टूटी-फूटी काली पट्टियों जैसे चिह्न पड़े रहते हैं। पीठ का पिछला हिस्सा और डैने का शेष भाग गाढ़ा सिलेटी होता है। आँख की पुतली नारंगी, चोंच हरछौंह सिलेटी और टाँगें गाढ़ी सिलेटी होती हैं। चोंच ऊँची, दोनों ओर से दबी-दबी-सी और सामने की ओर टेढ़ी रहती है। डैने लम्बे, नोकीले और सीढ़ीनुमा होते हैं।

**निवास** : अरगुल दक्षिण यूरोप, अफ्रीका और मध्य एशिया का प्रसिद्ध पक्षी है जो हमारे देश में हिमालय और उत्तर पश्चिम भारत में पाया जाता है। इसकी कई जातियाँ हैं। लेकिन हमारे यहाँ पाया जाने वाला अरगुल यहाँ का स्थायी पक्षी है जो हमारा देश छोड़ कर बाहर नहीं जाता। मानव सभ्यता के आरम्भ से ही इस पक्षी के बारे में जानकारी मिलती है।

**विवरण** : कुछ अन्य प्रसिद्ध पक्षियों की भाँति अरगुल का वर्णन भी प्राचीन पुस्तकों में मिलता है। संसार के कई देशों में इसके भारी कद और उड़ान के कारण इसे याद किया जाता है।

यह पहाड़ी पक्षी है जो दिन भर पहाड़ की घाटियों में ऊँची उड़ान करता रहता है। जीवित पशुओं का यह शायद ही शिकार करता हो लेकिन मरे हुए जानवरों के पास इसे अन्य गिद्धों की तरह देखा जा सकता है। कभी-कभी यह कूड़ा करकट के ढेर पर उतर कर उसमें से गंदी वस्तुओं से अपना पेट भरता है लेकिन इसे हड्डियाँ सबसे ज्यादा पसन्द हैं। छोटी हड्डियों को तो यह उड़ते-उड़ते ही निगल जाता है लेकिन बड़ी हड्डियों को लेकर यह ऊपर उड़ जाता है और उन्हें किसी पहाड़ की चट्टान पर गिरा देता है जिससे उनके टुकड़े हो जायें। हड्डी के टूट जाने पर यह उन्हें आसानी से निगल जाता है।

उड़ते समय अरगुल अपने पंखों को शरीर की सिधाई में रखता है लेकिन पंखों की बनावट और हवा के दबाव के कारण इसके पंख बीच में झुक जाते हैं और उनका सिरा ऊपर की ओर उठ जाता है। यह आकाश में बिना पंख चलाये काफी समय तक उड़ता रहता है और इधर-उधर मुड़ने के लिए थोड़ा पंखों को चला देता है। ऊपर चढ़ने के लिए यह अपने पंखों को थोड़ा तिरछा कर लेता है और ऊपर चढ़ता चला जाता है। इसी तरह यह अपने पंख झुका कर नीचे उतरता चला जाता है।

अरगुल उड़ने में बहुत उस्ताद होता है और जोड़ा बाँधने के समय जब नर पक्षी प्रणय-लीला दिखाने के लिए मादा के सम्मुख अपनी उड़ान भरता है तब इसका हवाई करतब देखने योग्य होता है।

**घोंसला** : अरगुल के जोड़ा बाँधने का समय नवम्बर से शुरू होकर मार्च तक रहता है लेकिन जनवरी में इसके अंडे काफी संख्या में दिखाई पड़ते हैं।

इसके घोंसले किसी ऊँचे पहाड़ की ऐसी खड़ी चट्टान में रखे रहते हैं जहाँ किसी की पहुँच नहीं हो सकती। ये घोंसले बेडौल, बड़े और भद्दे होते हैं जिन्हें ये सूखी टहनियों, चीथड़ों, हड्डियों और परों आदि को अपनी विष्ठा में सान कर बनाता है।

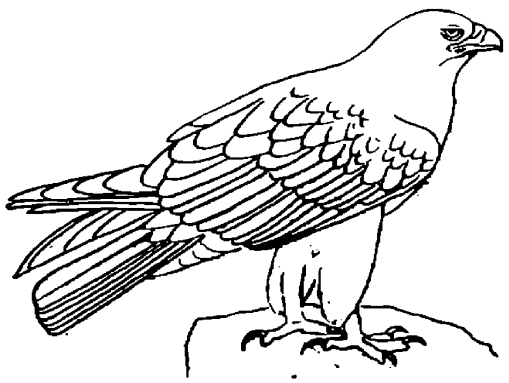
मादा समय आने पर इसमें २-३ अंडे देती है जो चौड़े बैंजावी और सिरे की ओर नोकीले रहते हैं, इनका छिलका खुरदुरा रहता है और इन पर चमक नहीं रहती। अंडों का रंग हलका प्याजी भूरा या लालछौंह भूरा रहता है जिन पर कत्थई और बैंगनी बिन्दियाँ, चित्तियाँ और चित्ते पड़े रहते हैं।

अंडे लगभग ३.२५ × २.६५ इंच के रहते हैं।

## २२३ उकाब (Tawny Eagle : Aquila Rapax)

**पर्याय** : भारत रागी सुपर्ण, ढोलवा, रगर।

**पहचान** : सुन्दर भूरे या कलछौंह भूरे रंग का बड़ा-सा पक्षी जिसका सर चपटा, चोंच टेढ़ी और पंजे मजबूत होते हैं। इसके सुनहरे भूरे रंग से इसको पहचानने में कठिनाई नहीं होती।



उकाब

**रंग-रूप** : उकाब २५ इंच का सुडौल पक्षी है जिसकी मादा इससे कुछ बड़ी लगभग २८ इंच की होती है। नर मादा दोनों का रंग-रूप एक ही जैसा रहता है। इसका रंग सुनहला भूरा रहता है जिसमें कहीं-कहीं कलछौंह झलक रहती है। उड़ान के पंख गाढ़े कलछौंह भूरे रहते हैं जिन पर जड़ के पास सफेद चित्तियाँ और धारियाँ पड़ी रहती हैं। दुम गाढ़ी सिलेटी भूरी रहती है जिस पर आड़ी-तिरछी गाढ़े रंग की धारियाँ पड़ी रहती हैं। आँख की पुतली हरछौंह भूरी, चोंच निलछौंह सिलेटी

जो सिरे पर कलछौंह और नीचे की ओर गंदी पीली रहती है। टाँगें पीली और पंजे काले होते हैं। इसकी चोंच मजबूत और आगे की ओर झुकी रहती है। सर काफी चपटा रहता है और टाँगें परों से ढँकी रहती हैं।

**निवास** : उकाब हमारे देश का बहुत प्रसिद्ध पक्षी है जो उत्तरी भारत में पूर्व से पश्चिम तक पाया जाता है। यह दक्षिण भारत की ओर नहीं जाता और हिमालय पर भी इसे ४ हजार फुट से अधिक ऊँचाई पर बहुत कम देखा जा सकता है। यह यहाँ का बारहमासी पक्षी है जो यहीं स्थायी रूप से रहता है।

**विवरण** : उकाब बहुत घने जंगलों में रहना नहीं पसन्द करता। इसे ऐसे खुले स्थान पसन्द हैं जहाँ वृक्ष हों और जो बहुत नम न होकर खुला और रूखा हो। यह या तो आकाश में काफी ऊँचाई पर गिद्धों की तरह उड़ता रहता है या किसी ऊँची जगह पर बैठ कर किसी मरे हुए जानवर की खोज करता रहता है। इसे गिद्धों की भाँति मुरदाखोर पक्षी नहीं कहा जा सकता क्योंकि यह बहुत बहादुर और दिलेर पक्षी है जो खरगोश, आदि छोटे जानवरों और पक्षियों का शिकार करके अपना पेट भरता है। कभी-कभी यह चरखी आदि पक्षियों के घोंसले पर हमला करके उनके अंडे-बच्चों से अपना पेट भरता है। इसके भोजन में छोटे जीव-जन्तु, चिड़ियाँ, छिपकलियाँ, मेढ़क, साँप तथा टिड्डियाँ आदि शामिल हैं।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय नवम्बर से जून तक है लेकिन जनवरी में इसके सबसे अधिक अंडे पाये जाते हैं।

इसका घोंसला बड़ा और भद्दा-सा होता है जिसे ये सूखी और काँटेदार टहनियों, घास-फूस तथा हरी पत्तियों से बनाता है। घोंसले बबूल और कीकर आदि पेड़ों पर, एकदम चोटी के पास रखते हैं जिस पर यह आसानी से उतर कर बैठ सकता है।

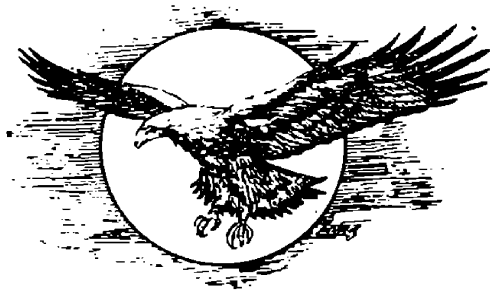
मादा समय आने पर १ से ३ तक अंडे देती है। इसके अंडे चौड़े और बैजावी होते हैं जो सिरे की ओर थोड़े नोकीले रहते हैं। इन पर थोड़ी चमक भी रहती है। अंडों का रंग राखीपन लिये सफेद रहता है। कुछ अंडे सादे ही रहते हैं और कुछ पर भूरी, कत्थई और बैंगनी बिन्दियाँ, चित्तियाँ और धब्बे पड़े रहते हैं।

अंडे लगभग २.६० × २.१० इंच के होते हैं।

## २२४ गरुड़ (Golden Eagle : Aquila Chrysaetus)

**पर्याय** : मुरियारी, हिरण्य सुपर्ण, पक्षिराज।

**पहचान** : यह सुनहले भूरे रंग का पक्षी बड़े कद का होता है। डैने कलछौंह भूरे जिन पर सिरे की ओर सफेद पट्टियाँ होती हैं और टाँगें परों से ढकी रहती हैं।



गरुड़

**रंग-रूप** : यह उकाब से कुछ बड़ा पक्षी है जिसका रंग भी उससे कुछ गहरा रहता है। नर मादा रंग-रूप में एक जैसे होते हैं लेकिन नर जहाँ २७ इंच का होता है वहीं मादा करीब ३० इंच की रहती है। इसका शरीर सुनहले भूरे रंग का रहता है। स्थान-स्थान के पक्षियों के रंग में हलके और गाढ़े का भेद भी रहता है। डैने कलछौंह भूरे होते हैं। जिन पर सिरे की ओर सफेद बिन्दियाँ और धारियाँ पड़ी रहती हैं। डैनों के ऊपर कुछ हलकी भूरी चित्तियाँ भी पड़ी रहती हैं जो उकाब के डैनों पर नहीं रहतीं और इन्हीं चित्तियों से इनको उकाब से अलग करना आसान हो जाता है। दुम सिलेटी मायल गाढ़ी भूरी होती है जिस पर हलके भूरे रंग की आड़ी पट्टियाँ पड़ी रहती हैं। किसी-किसी पक्षी के दोनों गालों पर गाढ़े रंग का बड़ा-सा चित्ता पड़ा रहता है। आँख की पुतली हरछौंह भूरी, चोंच निलछौंह सिलेटी, जिसका सिरा कलछौंह और जड़ के पास का खुला भाग गंदा पीला रहता है। टाँगें पीली होती हैं।

**निवास** : गरुड़ वैसे तो यूरोप और एशिया के सभी ठंढे देशों में काफी संख्या में पाया जाता है। लेकिन हमारे देश में यह केवल हिमालय से चार हजार फुट से ऊँचे स्थानों पर ही देखा जा सकता है। यह इससे नीचे नहीं उतरता और इससे नीचे हम इसके छोटे भाई उकाब को ही देखते हैं जो कद में इससे कुछ छोटा और रंग में इससे कुछ हलका रहता है।

**विवरण** : गरुड़ यूरोप और एशिया के ठंढे मुल्कों का प्रसिद्ध पक्षी है जिसे जरमनी-जैसे देश में राजचिह्न तक में स्थान प्राप्त हैं। हमारे यहाँ यह हिमालय के ऊँचे स्थानों पर ही दिखाई पड़ता है। यह बहुत बहादुर शिकारी पक्षी है जिसकी सब आदतें उकाब-जैसी ही होती हैं। इसकी दुम उकाब से लम्बी होती है और इसका रंग भी उससे कुछ गहरा होता है। यह घने जंगलों की अपेक्षा पहाड़ के खुले स्थानों को ज्यादा पसन्द करता है और अपने शिकार की तलाश में गिद्धों की तरह चक्कर लगाता रहता है। बहुधा इसे ऊँचे पेड़ या पहाड़ की चोटी पर बैठे देखा जा सकता है जहाँ से यह अपने शिकार की टोह लेता रहता है।

जैसे ही इसे कोई चिड़िया या छोटा जानवर दिखाई पड़ता है यह बाज की तरह उसको झपट्टा मार कर अपने पंजों में जकड़ लेता है। इसका मुख्य भोजन चिड़िया, चूहे, गिलहरी आदि छोटे जानवर, साँप, मेंढक और छिपकलियाँ आदि हैं। कभी-कभी यह अपने मजबूत पंजों से खरगोश तक को पकड़ कर उठा ले जाता है।

इसका सर उकाब की तरह चपटा रहता है और चोंच टेढ़ी और मजबूत होती है। इसके पैर परों से ढके रहते हैं और डैने इतने लम्बे होते हैं कि वे बैठे रहने पर इसकी दुम के सिरे तक पहुँच जाते हैं। इसकी शक्ल से ही बहादुरी टपकती है।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय नवम्बर से जून तक रहता है जब यह पतली लकड़ियों और कँटीली डालियों से अपना बड़ा-सा छिछला घोंसला किसी ऊँचे पेड़ की फुनगी के पास बनाता है। घोंसला भीतर की ओर घास-फूस और पत्तियों से मुलायम बना दिया जाता है। समय आने पर मादा इसमें एक से ३ अंडे देती है जो चौड़े, बैंजाबी और सिरे की ओर नोकीले रहते हैं। ये अंडे वैसे तो राखीपन लिये सफेद रहते हैं लेकिन कभी-कभी इन पर थोड़ी बहुत लाल, भूरी तथा बैंगनी धारियाँ, चित्तियाँ और धब्बे भी देखे जाते हैं।

अंडे करीब २.७५ × २.२५ इंच के होते हैं।

## २२५ शाह बाज (Crested Hawk Eagle : Spizaetus cirrhatus)

**पर्याय** : चूडाल श्येनक- सुपर्ण।

**पहचान** : पतले शरीर का बाज जिसका ऊपरी हिस्सा गाढ़ा भूरा और नीचे का या तो सफेद जो दुम की ओर ललछौंह भूरा हो जाता है या ललछौंह धारियों वाला सफेद रहता है। इसकी लम्बी दुम और सर पर की काली चोटी से इसे पहचानना कठिन नहीं होता।



शाह बाज

**रंग-रूप** : शाह बाज २६ इंच लम्बा पक्षी है जिसकी मादा लगभग १९ इंच की होती है। इसके नर और मादा एक ही जैसे होते हैं। इसके सर पर की चोटी काली रहती है। जो सिरे पर सफेद होती है। सर का ऊपरी और बगल का हिस्सा तथा गरदन भूरी होती है जिस पर कलछौंह भूरी धारियाँ पड़ी रहती हैं। शरीर का ऊपरी भाग ललछौंह भूरा रहता है और उड़ान के पंख ऊपर की ओर भूरे और नीचे की ओर सफेद रहते हैं। इन पर काली धारियाँ और चित्ते पड़े रहते हैं। दुम का ऊपरी हिस्सा भूरा और नीचे का सफेद रहता है जिस पर तीन-चार चौड़ी गाढ़ी भूरी पट्टियाँ पड़ी रहती हैं।

इसके नीचे का सारा भाग सफेद होता है, जिस पर गाढ़ी भूरी घनी धारियाँ पड़ी रहती हैं। दुम के नीचे एक भूरा चित्ता रहता है जिस पर सफेद धारियाँ पड़ी रहती हैं। टखनों के पर ललछौंह भूरे और सफेद रहते हैं। आँख की पुतली सिलेटी, चोंच कलछौंह सिलेटी और टाँगें पीली रहती हैं। पंजे काले होते हैं। चोंच मजबूत और नीचे की ओर झुकी रहती है। सर पर कुछ कड़े काले पर चोटी जैसे रहते हैं। टखने परों से भरे होते हैं।

**निवास** : शाह बाज की वैसे कई जातियाँ हमारे देश में पायी जाती हैं लेकिन जिसका वर्णन यहाँ दिया जा रहा है वह हिमालय के तराई के मध्य भारत तक पाया जाता है।

**विवरण** : शाह बाज जंगलों में रहने वाला पक्षी है जो खेतों के निकट के घने वृक्षों में भी दिखाई पड़ता है। यह आकाश में बहुत ऊँचाई पर नहीं उड़ता और इसे वृक्षों के आस-पास थोड़े ही ऊपर उड़ते हुए देखा जा सकता है। यह अपना अधिक समय किसी ऊँचे पेड़ या ऊँचे स्थान पर बिताता है जहाँ से वह अपने शिकार के घात में बैठा रहता है। इसे जैसे ही तीतर, बटेर या खरगोश आदि दिखाई पड़ते हैं यह फौरन उन पर टूट पड़ता है और उनको पकड़ कर किसी ऊँचे स्थान पर जाकर उनसे अपना पेट भरता है। यही नहीं, यह गिलहरियों, छिपकलियों, चूहों और छोटे साँपों को भी पकड़ने में नहीं चूकता। इसकी बोली बहुत तेज और कर्कश होती है और इसके बच्चे भी घोंसले में काफी शोर मचाते रहते हैं।

**घोंसला** : शाह बाज के जोड़ा बाँधने का समय दिसम्बर से अप्रैल तक रहता है लेकिन इसके अधिकांश अंडे जनवरी मास में मिलते हैं। इसका घोंसला बड़ा ढीला-ढाला और गहरा-सा होता है जिसे ये सूखी टहनियों से बनाते हैं। घोंसले के बाहरी हिस्से में ये हरी पत्तियाँ लगा देते हैं और उसे आम आदि वृक्षों की किसी ऊँची दुफंकी डाल पर रखते हैं।

मादा प्रायः १ ही अंडा देती है जो चौड़ा बैंजाबी और सिरे की ओर नोकीला रहता है। अंडे पर चमक नहीं रहती और उसका रंग हरछौंह सफेद होता है। अंडे बिना किसी चिह्न के रहते

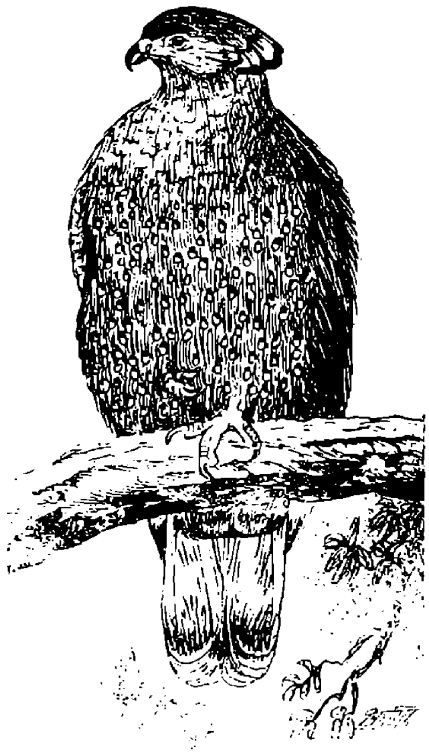
हैं लेकिन कभी-कभी इसके ऐसे अंडे भी मिलते हैं जिन पर पेंदे की ओर कुछ कत्थई अथवा बादामी चित्ते पड़े रहते हैं

अंडे का नाप लगभग २.६० × २.० इंच होती है ।

## २२६ दोगरा चील (Crested Serpent Eagle : Haematornis Chicela)

**पर्याय** : शिखी नागान्तक- सुपर्ण, कर्ज बाज, तिलाई बाज ।

**पहचान** : सर पर की कलँगी सफेद और काले परों वाली, ऊपर का हिस्सा बैंगनी झलक लिये भूरा और नीचे का सारा भाग सफेद और गोल चिह्नों से भरा हुआ रहता है । इसकी आवाज तेज सीटी-जैसी होती है जिससे इसकी पहचान आसानी से हो जाती है ।



दोगरा चील

**रंग-रूप** : लम्बाई २८ इंच । नर मादा एक-जैसे । सर पर की कलँगी छोटी और काले तथा सफेद परों वाली होती है । शरीर का ऊपरी भाग गहरे भूरे रंग का होता है, जिस पर बैंगनी चमक रहती है । और इसके कुछ परों के ऊपर का भाग सफेद होता है। उड़ान के पंख का रंग कलछौंह रहता है तथा ऊपर भूरे रंग की तीन रेखाएँ होती हैं । और नीचे का रंग सफेद-सा होता है । दुम काली और भूरी रहती है जिसके सिरे पर एक सफेद चौड़ी पट्टी होती है । शरीर के नीचे का रंग भूरा, जो गाढ़ा भूरे और सफेद गोल चिह्नों से भरा होता है। सीने पर कुछ पतली गाढ़ी भूरी धारियाँ पड़ी रहती हैं । आँख की पुतली गाढ़ी पीली, चोंच गाढ़ी सिलेटी और टाँगे गंदे पीले रंग की होती है । चोंच अपेक्षाकृत लम्बी और काफी गोलाई लिये टेढ़ी होती है । पंख छोटे और गोल, दुम अपेक्षाकृत लम्बी, टाँगें मजबूत और टखनों के ऊपर पर नहीं होते हैं।

**निवास** : दोगरा चील हिमालय के पश्चिमी भाग से लेकर दक्षिणी चीन तक पायी जाती है । भारतवर्ष में उसकी अनेक जातियाँ पायी जाती हैं । हमारे यहाँ पाये जाने वाला पक्षी उत्तर भारत में हजारा से सिक्किम तक फैला हुआ है । हिमालय पर यह ७,००० फुट की ऊँचाई तक पाया जाता है और नीचे इसे राजपूताना से बंगाल तक देखना कठिन नहीं होता । यह यहाँ स्थायी रूप से रहने वाला पक्षी है लेकिन यह यहीं थोड़ा स्थान-परिवर्तन कर लेता है । इसकी एक दूसरी जाति भी पायी जाती है, जिसको छोटा बाज ( Short-toed Eagle Circaetus ferox ) कहते हैं । इसकी खास बात यह होती है कि यह आकाश में स्थिर होकर मँडराता रहता है । इसके शरीर के ऊपरी भाग का रंग भूरा और नीचे का सफेद होता है । गले के ऊपर धारियाँ और बाजुओं के ऊपर भूरे रंग की अर्ध चन्द्राकार चित्तियाँ होती हैं । इसका सर अन्य चीलों से बड़ा होता है ।

**विवरण** : दोगरा चील सघन जंगलों और काफी पानी वाले स्थानों पर पायी जाती है। इसे खासतौर से हिमालय की वे घाटियाँ पसन्द हैं जहाँ पहाड़ी झरनों में धान की खेती होती है और झरने आम के बड़े-बड़े बागों से होकर गुजरते हैं। इसका मुख्य भोजन साँप, छिपकलियाँ और मेढक आदि हैं लेकिन यह कीड़े-मकोड़े भी खा लेती है । इसकी आवाज तेज सीटीनुमा होती है, जो "कुक्, कुक्" और क्वीर "क्वीर" जैसी लगती है । यह काफी दूर तक सुनाई पड़ती है । यह बहुत निडर होती है और मनुष्यों के पास तक चले जाने पर भी नहीं उड़ती । इसके पंजों में प्रायः कीचड़ लगा होता है जिससे पता चलता है कि यह अपना भोजन प्रायः धान के खेतों और झीलों से इकट्ठा करती है । उड़ते समय डैने चौड़े और गोलाकार दिखलाई पड़ते हैं जो पीछे की ओर झुके होते हैं और इसकी लम्बी दुम थोड़ी फैली हुई होती है। उजड़े और खुले मैदानों की अपेक्षा यह प्रायः जंगलों और सघन पेड़ों से भरी घाटियों के ऊपर उड़ना पसन्द करती है । यह काफी अधिक ऊँचाई पर तेजी से चक्कर लगाती हुई उड़ती है ।

**घोंसला** : दोगरा चील के जोड़ा बाँधने का समय मार्च से मई तक होता है। यह अपना घोंसला पेड़ों के ऊपर किसी दुफंकी डाल पर बनाती है । घोंसले का आकार काफी छोटा होता है और वह आकार में प्याले-जैसा होता है। इसे यह लकड़ियों और छोटी-छोटी टहनियों को लगा कर बनाती है और इसके अन्दर प्रायः हरी पत्तियाँ और घास की जड़ें भी लगाती हैं । मादा केवल १ अंडा देती है जो चौड़ा बैजावी और सिरे की ओर

नोकीला होता है। अंडे का आवरण खुरदुरा होता है और उस पर चमक नहीं रहती। अंडे का रंग निलछौंह या हरछौंह सफेद होता है जिसके ऊपर बैंगनी, बैंगनी भूरी या भुरछौंह लाल रंग की चित्तियाँ पड़ी होती हैं।

अंडे की औसत लम्बाई चौड़ाई २.७५ × २.२ इंच होती है।

## २२७ टीसा (White-Eyed Buzzard : Butastur Teesa)

**पर्याय**: पुण्डरीकाक्ष शरट-सुपर्ण।

**पहचान**: मँझोले कद का बाज जैसा पक्षी जिसका ऊपरी हिस्सा भूरा, दुम ललछौंह भूरी और नीचे के हलके भूरे रंग पर ऊपर की ओर गाढ़ी भूरी लकीरें और नीचे की ओर सफेद चित्तियाँ और पट्टियाँ पड़ी रहती हैं।

**रंग-रूप**: टीसा १७ इंच लम्बा पक्षी है जिसके नर और मादा एक ही जैसे होते हैं। शरीर का ऊपरी हिस्सा भूरा रहता है जिसमें ललछौंह झलक रहती है। डैनों पर सफेद चित्तियाँ और धारियाँ पड़ी रहती हैं और उड़ान के पंख ऊपर भूरे और नीचे सफेद रहते हैं। डैने के सिरे घुर काले होते हैं।

दुम ऊपर ललछौंह भूरी और नीचे सफेदी मायल हलकी भुरी रहती है जिस पर ऊपर की ओर काली पट्टियाँ पड़ी रहती हैं। ठुड्डी और गला सफेद रहता है जिसमें बीच में और दोनों बगल भूरी रे ...हती हैं। सर के दोनों रुख, गरदन और सीना भूरा रहता है जिस पर सीने और पेट पर गाढ़ी भूरी पट्टियाँ और नीचे की ओर सफेद चित्तियाँ और धारियाँ पड़ी रहती हैं। दुम के नीचे एक सफेद चित्ता रहता है जिस पर ललछौंह भुरी पट्टियाँ रहती हैं। आँख की पुतली पिलछौंह सफेद, चोंच जड़ के पास नारंगी और सिरे पर काली और टाँगें गंदी पीली रहती है। पंजे काले होते हैं। चोंच दबीदबी-सी और आगे की ओर झुकी रहती है। डैनों के पंख नोकीले और काले सिरे वाले होते हैं।

**निवास**: टीसा सारे भारतवर्ष में पाया जाता है। यह हिमालय में ४,००० फुट की ऊँचाई से मध्य भारत तक काफी संख्या में मिलता है। लेकिन इसके आगे दक्षिण की ओर यह बहुत कम दिखाई पड़ता है। यह यहाँ का स्थायी रूप से रहने वाला पक्षी है जो यहीं थोड़ा स्थान-परिवर्तन करके यहाँ से बाहर नहीं जाता।

**विवरण**: टीसा को घने जंगल और पहाड़ों की अपेक्षा खुले मैदान और झाड़ियों से भरे प्रदेश पसन्द हैं। यह सुस्त और काहिल चिड़िया है जो अपना अधिक समय किसी ऊँची जगह या टेलीग्राफ के तारों पर बैठकर बिता देती है।

इसका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े और छोटे जीव-जन्तु हैं जिनको पकड़ने के लिए यह अपने स्थान से उड़ती है और उन्हें पकड़ कर फिर अपने स्थान पर लौट जाती है। इसकी उड़ान काफी तेज होती है और जोड़ा बाँधने के समय यह हवा में उड़ कर काफी शोर मचाती है।

**घोंसला**: टीसा के जोड़ा बाँधने का समय मार्च से मई तक रहता है लेकिन इसके सबसे अधिक अंडे अप्रैल में मिलते हैं।

इसका घोंसला ढीलाढाला-सा प्यालेनुमा होता है जिसे यह सूखी टहनियों से बनाता है। घोंसले के भीतर किसी प्रकार अस्तर नहीं दिया जाता और वे जमीन से लगभग २० फुट की ऊँचाई पर किसी दुफंकी डाल पर रखे रहते हैं।

मादा समय आने पर इसनें ३-४ अंडे देती है जो बैंजाबी और थोड़ी-चमक वाले होते हैं। अंडे राखीपन लिये सफेद या निलछौंह सफेद होते हैं जिन पर प्रायः किसी प्रकार के चिह्न नहीं रहते लेकिन कभी-कभी इनके अंडों पर कत्थई चित्तियाँ भी रहती हैं यद्यपि ऐसे अंडे बहुत कम देखे जाते हैं।

अंडों की नाप लगभग १.८५ × १.५० इंच रहती है।

## २२८ पटरस (Palla's Fishing Eagle)

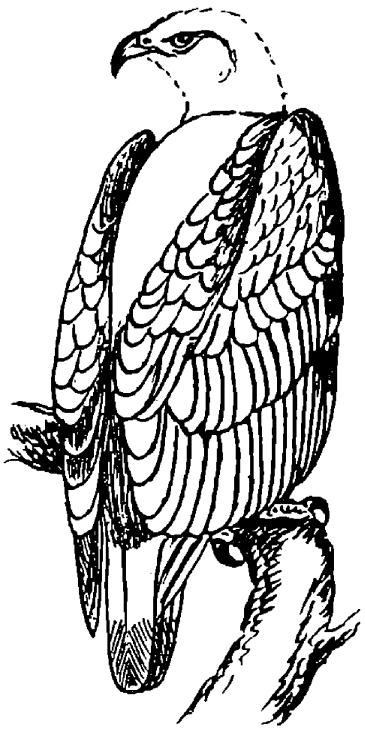
**पर्याय**: पट्टि पुच्छ मत्स्य सुपर्ण, पहवा, मछरंगा, कोरल बाला।

**पहचान**: पटरस भारतवर्ष के उत्तरी भागों में बड़े जलाशयों, बड़ी नदियों और झीलों के पास पाया जाता है। इसके गहरे भूरे पंख तथा सफेद सर और दुम के अन्त के पास की स्पष्ट सफेद पट्टियों के कारण इसकी पहचान आसानी से हो जाती है। इसकी तेज आवाज से हमारा ध्यान इसकी ओर चला जाता है।

**रंग-रूप**: लम्बाई ३३ इंच। नर मादा एक-जैसे। माथा सफेद-सा, सर का ऊपरी भाग और गरदन गेहुँआ जो कि शरीर के ऊपरी भाग, डैनों और दुम के ऊपर गहरा भूरा हो जाता है। दुम के सिरे पर एक सफेद रंग की चौड़ी पट्टी होती है। सर और गरदन तथा गले की दोनों बगलों का रंग सफेद रहता है और शरीर के नीचे का रंग भूरा होता है, जो बाजुओं और पेट के निचले हिस्से पर गहरा हो जाता है। आँख की पुतली सिलेटी पीली, चोंच गाढ़ी सिलेटी और टाँगें मैली सफेद रहती हैं। पंजों का रंग काला होता है। चोंच मजबूत, टेढ़ी और नीचे की ओर काफी झुकी रहती है। सर का ऊपरी भाग काफी चपटा, गर्दन के ऊपर के पर लम्बे और नोकीले, टखनों के ऊपर का हिस्सा परों से भरा रहता है। इसके पर कड़े होते हैं।

**निवास**: पटरस या पहवा हमारे देश के उत्तरी भागों के अलावा दक्षिणी रूस, मध्य एशिया और उत्तरी बर्मा में पाया जाता है। भारतवर्ष में यह समुद्री किनारों पर नहीं दिखाई

पड़ता। यह गंगा नदी के मैदानी इलाकों में काफी संख्या में पाया जाता है। दक्षिण भारत में यह कहाँ तक पाया जाता है इस बारे



पटरस (पहवा)

में अभी तक पूरी जानकारी प्राप्त नहीं हुई है। यह स्थायी रूप से यहाँ रहने वाला पक्षी है जो हमारा देश छोड़ कर बाहर नहीं जाता।

**विवरण**: इस पक्षी से वे लोग अच्छी तरह से परिचित हैं जो अपने काम या सैर सपाटे के सम्बन्ध में उत्तरी भारत की बड़ी नदियों या कछारी मैदानों की झीलों के आस-पास आते-जाते हैं। इसकी आवाज काफी कर्कश होती है। इस पक्षी को किसी बड़े सेमल आदि के वृक्ष या किसी मिट्टी के ऊँचे टीले पर पानी के निकट बैठा या हवा में उड़ते हुए देखा जा सकता है।

यह काफी ऊँचाई तक उड़ जाता है लेकिन वहाँ भी इसकी दुम की सफेद पट्टियों के कारण इसे पहचाना जा सकता है। पटरस का मुख्य भोजन छोटी बड़ी मछलियाँ हैं लेकिन यह मछारंग की तरह झपट कर मछलियों को नहीं पकड़ता बल्कि यह केवल उन मछलियों को पकड़ता है जो छिछले पानी या सूखते हुए तालाबों में बाहर निकल आती हैं। यह बड़ा ताकतवर पक्षी है जो बड़ी मछली को भी आसानी से पकड़ लेता है। जिस समय मछुए मछलियाँ जाल से बाहर निकालते हैं, उस समय यदि कोई मछली वहाँ छूट जाती है तो यह उसे उठा ले जाता है। यह केकड़े, मेढक और अन्य रेंगने वाले जन्तुओं और घायल बत्तखों को भी पकड़ लेता है। पानी के किनारे पर पड़े सड़े-गले मांस को तथा गंगा नदी के किनारे पड़ी लाशों को भी यह खाता है। यही नहीं, यह कुर्री और पनकौआ आदि पक्षियों से भी कभी-कभी मछलियाँ छीन कर अपना पेट भरता है।

**घोंसला**: पटरस के जोड़ा बाँधने का समय नवम्बर से फरवरी तक रहता है। लेकिन इसके सबसे अधिक अंडे दिसम्बर में पाये जाते हैं। इसका घोंसला लकड़ियों से बने चबूतरे जैसा होता है। घोंसले में लगी लकड़ियों में कुछ की मोटाई आदमियों के हाथों की कलाई जैसी होती है। घोंसले के बिचले भाग में ये प्रायः पतली लकड़ियाँ और टहनियाँ लगाते हैं और घोंसले में अंडे के लिए जो स्थान रहता है वह थोड़ा गहरा होता है। ये इसमें पतली टहनियाँ और हरी पत्तियाँ, सरपत और तिनके लगाते हैं। इसका घोंसला मद्दा और ऊबड़-खाबड़ होता है। से बनाने में काफी समय और सामान लगाते हैं। यह अपने घोंसले का प्रयोग लगातार कई वर्षों तक करते रहते हैं। कभी-कभी इसके घोंसलों का प्रयोग बड़े उल्लू, बाज या गिद्ध भी कर लेते हैं।

पटरस अपना घोंसला किसी ऐसे बड़े पेड़ की चोटी पर बनाता है जो किसी झील या नदी के किनारे पर अकेला खड़ा होता है। भारतीय नदियों के किनारे के बड़े सेमल के वृक्ष पटरस को बहुत पसन्द हैं और यह प्रायः उन्हीं पर बैठता और अपने घोंसले बनाता है। समय आने पर मादा इसमें २ या ३ अंडे देती है। अंडे चौड़े बैंजाबी और चिकने होते हैं जिनका रंग राखीपन लिये सफेद रहता है।

अंडे की लम्बाई चौड़ाई २.७७ × २.१७ इंच होती है।

## २२९ मछारंग
(Osprey Pandionhaliaetus)

**पर्याय**: मछरिया, मछमंगा, माछमोराल, बाला, मत्स्य कुरर।

**पहचान**: मछारंग का ऊपरी हिस्सा गाढ़ा भूरा और नीचे का सफेद रहता है। इसे हम अक्सर झपट्टा मार कर मछलियों का शिकार करते देख सकते हैं।

**रंग-रूप**: यह शिकारी पक्षी २२ इंच का होता है जिसके नर और मादा एक ही रंग-रूप के रहते हैं। इसके शरीर का ऊपरी भाग गाढ़ा भूरा होता है और नीचे का सारा हिस्सा सफेद रहता है। इसका सर सफेदी मायल रहता है जिसके दोनों ओर एक-एक गाढ़ी भूरी पट्टी पड़ी रहती है। ऊपर की चोंच आगे की ओर शिकारी पक्षियों की तरह झुकी रहती है। दुम और डैने भी गाढ़े भूरे रहते हैं लेकिन दुम के ऊपर गंदी सफेद आड़ी-आड़ी पट्टियाँ पड़ी रहती हैं। आँख की पुतली ललाई लिये पीली, चोंच कलछौंह और टाँगें पीली होती हैं।

**विवरण** : मछारंग हमारे यहाँ का मौसमी पक्षी है जो जाड़ों में यहाँ आकर सारे उत्तर तथा मध्य भारत के जलाशयों के आस-पास फैल जाता है। यह दक्षिण भारत की ओर भी जाता है लेकिन बहुत कम। इसे घने जंगल और ऊँचे पहाड़ पसन्द नहीं हैं। इसे हम पानी के निकट ही देख सकते हैं।

विवरण: मछारंग को यह नाम उसके मछली के शिकार के कारण ही मिला है जो इसका मुख्य भोजन है। यह हमारे यहाँ का प्रसिद्ध शिकारी पक्षी है जो जाड़ों में देश के चारो ओर मीठे और खारे पानी के स्थानों में फैल जाता है। जाड़ा समाप्त होते ही यह हमारा देश छोड़ देता है।

यह बहुत ही निडर पक्षी है जिसकी आदतें अन्य शिकारी पक्षियों की भाँति होती हैं। यह या तो किसी पेड़ के ठूँठ या ऊँचे टीले पर मछली की घात में बैठा रहता है या उनके लिए हवा में चक्कर लगाता रहता है और जैसे ही कोई मछली पानी में दिखाई पड़ी नहीं, कि यह कौडिल्ले की तरह पानी में कूद कर उसे अपने मजबूत पंजे से पकड़ लेता है। कहीं-कहीं यह छोटे-छोटे झुंडों में रहता है। लेकिन अपने देश में हम इसे प्रायः अकेले या जोड़े में ही देखते हैं।

**घोंसला** : जोड़ा बाँधने के समय मछारंग हमारे देश से लौट जाता है लेकिन अपने यहाँ यह मार्च-अप्रैल में किसी पेड़ की ऊँची दुफंकी डाल पर या किसी पहाड़ के ऊँचे दराज में बड़ा-सा घोंसला बनाता है। ये घोंसले सूखी टहनियों तथा नरकुल आदि के होते हैं जिन्हें यह काई और पानी की नरम घास वगैरह से भीतर की ओर मुलायम बना देता है।

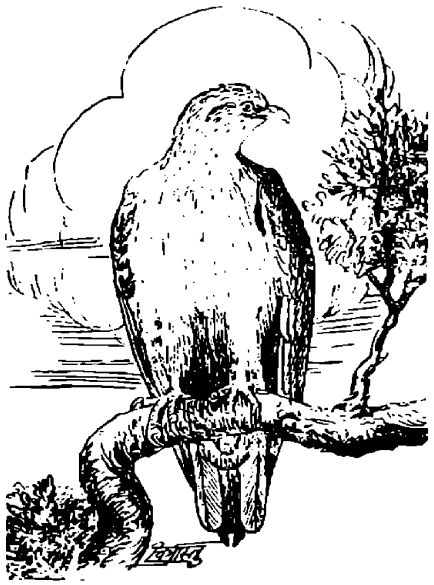
अंडों की संख्या ४ से ६ तक रहती है जो सफेद या निल-छौंह सफेद होते हैं। अंडे चौड़े और बैजावी होते हैं जिनकी नाप लगभग १.९५ × १.५ इंच रहती है।

## २३० खेमकरी
( Brahminy Kite )

**पर्याय**: खैरी चील, खेमराज, रूह मुबारक, क्षेमकरी चिल्ल, शंकर चील, धोबिया चील, बहमनी चील।

**पहचान** : खेमकरी को पहचानने में गलती नहीं हो सकती। सका रंग कत्थई, डैनें के सिरे काले और सर और सीने का रंग सफेद होता है। यह पानी के आस-पास पायी जाती है।

**रंग-रूप** : लम्बाई १९ इंच। नर मादा एक-जैसे। सर गर्दन और आधे पेट के पास तक के निचले भाग का रंग सफेद। शरीर का शेष भाग कत्थई जो पंखों और दुम के नीचे फीका होता है। उड़ान के बाहरी पंख काले और दुम का सिरा सफेद होता है। शरीर के प्रायः सभी परों का रंग गहरा और पतली लकीरों वाला होता है। आँख की पुतली भूरी, चोंच निलछौंह और टाँगें हरछौंह पीली होती हैं। चोंच लम्बी दबी और नीचे की ओर झुकी हुई होती है। दुम गोल रहती है और टखनों के ऊपरी भाग में पर होते हैं।



खेमकरी

**निवास** : खेमकरी सारे भारतवर्ष—श्याम, चीन, मलाया से लेकर आस्ट्रेलिया तक पायी जाती है। भारत में पायी जाने वाली खेमकरी विशेष रंग की होती है यह समुद्री किनारों और अधिक पानी वाले स्थानों में पायी जाती है। उसे रेगिस्तानी क्षेत्रों और घने जंगलों में रहना पसन्द नहीं है। यह स्थानीय रूप से स्थान-परिवर्तन कर लेती है लेकिन यह स्थायी रूप से हमारे देश में रहने वाली चिड़िया है।

**विवरण** : खेमकरी हमारे देश की बहुत प्रसिद्ध और परिचित चिड़िया है जो पानी के आस-पास ही रहती है। यह बम्बई आदि बन्दरगाहों में काफी संख्या में पायी जाती है। यह सड़ी-गली चीजें खाती है और बन्दरगाहों के पानी की सतह पर पड़े हुए कूड़े-कर्कट को अपने पंजों से उठा लेती है। यह जहाज पर लगे मस्तूलों पर बैठ जाती है और जमीन के ऊपर यह प्रायः बहुत चौकन्नी रहती है। यह धान के खेतों के ऊपर इधर-उधर उड़ती रहती है और मेढकों तथा टिड्डों आदि को पकड़ कर अपना पेट भरती है। यह नदियों और झीलों के आस-पास भी शिकार किया करती है। इसकी बोली तेज और कर्कश होती है।

**घोंसला**: खेमकरी के जोड़ा बाँधने का समय दिसम्बर से अप्रैल तक रहता है। इसका घोंसला लकड़ियों का ढीला-ढाला ढाँचा-सा होता है जिसके बिचले गहरे हिस्से में इसके अंडे पड़े होते हैं। यह अपने घोंसले के अन्दर थोड़ी हरी पत्तियाँ, चिथड़े ऊन, बाल और इसी तरह का अन्य सामान लगा लेती है।

इसका घोंसला किसी ऊँचे पेड़ की दुफंकी डाल पर या ताड़ के बिल्कुल ऊपर रहता है जो आमतौर पर जमीन से बहुत ऊँचा होता है। अपने घोंसले के लिए यह पानी के पड़ोस के किसी पेड़ को चुनती है। समय आने पर मादा प्रायः २ अंडे देती है। कभी-कभी ३ अंडे भी देखे गये हैं। अंडे चौड़े, बैजावी और सिरे की ओर थोड़े नोकीले होते हैं। अंडे राखीपन लिये हुए गंदे सफेद होते हैं जिन पर किसी प्रकार के चिह्न नहीं रहते। लेकिन कभी-कभी ऐसे अंडे भी मिले हैं जिन पर पेंदे की ओर थोड़ी गाढ़ी भूरी या कत्थई चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

अंडे लगभग २ × १.६५ इंच के होते हैं।

## २३१ चील (Common Pariah Kite)

**पर्याय** : प्रख्यात चिल्ल, अकासी।

**पहचान** : चील भारतवर्ष की बहुत जानी-पहचानी चिड़िया है जिसका आकार बड़ा, रंग भूरा और उड़ान शानदार होती है। यह काफी ऊँचाई पर उड़ती है और बाजारों और घरों के आस-पास पड़ी हुई गंदी चीजों को खाती है। इसकी दुफंकी दुम से इस की पहचान आसानी से हो जाती है।

**रंग-रूप** : लम्बाई २४ इंच। नर मादा एक-जैसे। शरीर का ऊपरी हिस्सा भूरा, सर का ऊपरी भाग, गरदन का पिछला हिस्सा ऊपरी भाग से हल्का और डैने के बाजू अधिक गाढ़े रंग के होते हैं। आँख के पीछे एक काला धब्बा रहता है और उड़ान के बाहरी पंख कत्थई होते हैं। डैने के और पंखों पर काली आड़ी तिरछी रेखाएँ पड़ी रहती हैं और सिरे की ओर सफेद चित्तियाँ रहती हैं। दुम ऊपर से भूरी और नीचे से सफेद भूरी रहती है जिसके ऊपर काफी संख्या में काली आड़ी-तिरछी रेखाएँ होती हैं। शरीर के ऊपरी भाग की अपेक्षा नीचले भाग का रंग हल्का भूरा होता है और सारे शरीर के ऊपर काले रंग के तीर जैसे चिह्न पड़े रहते हैं। आँख की पुतली भूरी, चोंच काली, टाँगें पीली और पंजे काले होते हैं। इसकी चोंच आगे की ओर झुकी हुई, सर चौरस, पैर छोटे और आधे टखनों तक पर से ढँके होते हैं। डैने लम्बे और नोकीले तथा दुम लम्बी और काफी दुफंकी होती है।

**निवास** : चील हमारे देश की बहुत प्रसिद्ध चिड़िया है जो सारे भारतवर्ष में और लंका में पायी जाती है। यह घने जंगली प्रदेशों में रहना पसन्द नहीं करती और खुले मैदानों और बस्तियों के आस-पास उड़ा करती है। यह हिमालय पर १२,००० फुट तक चढ़ जाती है। यह यहाँ की स्थायी रूप से रहने वाली चिड़िया है जो यहीं थोड़ा-बहुत स्थान परिवर्तन करके हमारे देश से बाहर नहीं जाती।

**विवरण** : चील के बारे में अधिक बतलाने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह यहाँ की बहुत प्रसिद्ध चिड़िया है और इसे हम रोज ही अपने गाँव और बस्तियों के आस-पास देखते हैं। यह बहुत ही निडर चिड़िया है जो अपना जीवन कौवे और गौरैया आदि पक्षियों की तरह मनुष्यों के साथ बिता देती है। यह मनुष्यों द्वारा फेंके गये भोजन को खा लेती है। यह बस्ती, बाजार और गाँवों के ऊपर उड़ती रहती है और थक जाने पर इमारतों और पेड़ों पर जा बैठती है। उड़ते समय यह काफी बड़े दायरे में चक्कर लगाती हुई अपने भोजन की तलाश करती रहती है। इसकी उड़ान शानदार होती है। यह उड़ते समय बड़े आराम से पंखों को थोड़ा चलाकर हवा में तैरती-सी रहती है और नीचे कोई खाने की वस्तु देखकर बड़ी तेजी से झपट्टा मार कर उसे ले उड़ती है और पंजे में दबे हुये भोजन को उड़ते ही उड़ते मुँह में रख लेती है। बड़े-टुकड़ों को यह अपने बैठने के प्रिय स्थान पर बैठ कर बड़े आराम से खाती है। यदि भोजन पर झपट्टा मारने के लिए एक से अधिक चीलें होती हैं तो वे आपस में बड़ा शोरगुल करती हैं जिसकी वजह से कभी-कभी भोजन उनके पंजों से छूट जाता है। चील की आवाज तीखी और म्याऊँ-म्याऊँ जैसी होती है। जोड़ा बाँधने के मौसम में यह और तेज आवाज करती है। हालांकि यह वैसे साल भर बोलती रहती है।

**घोंसला** : चील के जोड़ा बाँधने का समय स्थान के अनुसार बदलता रहता है। यह समय दिसम्बर से मई तक रहता है। लेकिन इसके सबसे अधिक अंडे फरवरी में मिलते हैं।

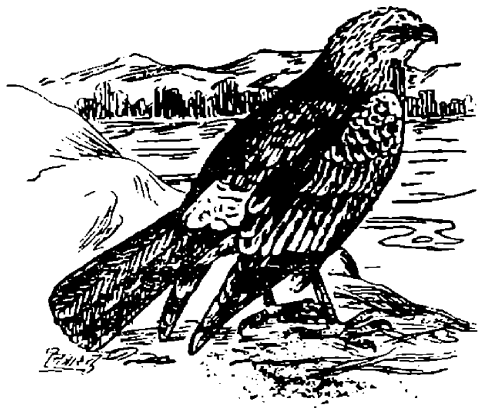
इसका घोंसला बड़ा और भद्दा-सा होता है जो काँटेदार झाड़ियों की टहनियों से बना होता है। इसके अन्दर यह चिथड़े पत्तियों, सन और इसी प्रकार का कूड़ा-करकट लगाती है। यह अपना घोंसला किसी ऊँचे पेड़ की दुफंकी डाल पर रखती है जिसकी ऊँचाई जमीन से २० फुट के लगभग होती है। यह अपने घोंसले के लिए बस्ती और बाजार के बीच में या खेतों के आस-पास के किसी अकेले पेड़ को चुनती है। समय आने पर मादा इसमें १ से ४ तक अंडे देती है लेकिन सामान्य तौर पर इसके २ या ३ अंडे मिलते हैं। अंडे लम्बोतरे बैजावी और सिरे की ओर थोड़े नोकीले रहते हैं जिन पर थोड़ी चमक भी रहती है। अंडे पिलछौंह, हरछौंह और खाकी सफेद होते हैं जिनके ऊपर भूरी, लाल बैंगनी या मटमैले रंग की बिन्दियाँ, चित्तियाँ और धारियाँ पड़ी होती हैं।

अंडों की औसत लम्बाई २.२० × १.७५ इंच होती है।

## २३२ कुतर (Marsh Harrier)

**पर्याय** : कच्छपरी, दस्तमाल, कुडेल, कुलसिर, टीकाबौरी सफेद सिर, मातचील।

**पहचान** : बड़े आकार का पक्षी जिसके पंख और दुम लम्बी होती है। यह दलदली भूमि के ऊपर अपने पंखों को आगे-पीछे हिलाता रहता है और शिकारियों द्वारा घायल की गयी चिड़ियों को झपट्टा मार कर ले उड़ता है। इसका ऊपरी भाग गाढ़ा भूरा और नीचे का हलका भूरा और धारियों से भरा रहता है।



कुतर

**रंग-रूप** : लम्बाई २२ इंच। नर का सर गरदन और सीने का रंग हलका ललछौंह भूरा रहता है जिस पर पतली काली धारियाँ पड़ी रहती हैं। शरीर का ऊपरी हिस्सा गहरा भूरा और नीचे का शेष भाग ललछौंह भूरा और गहरी धारियों वाला होता है, बाहर के छः उड़ान के पंख काले रहते हैं जिनकी जड़ सफेद होती है। शेष उड़ान के परों का रंग रुपहला खाकी होता है। दुम का ऊपरी भाग सिलेटी और निचला भाग पिलछौंह भूरा रहता है। दुम के ढकने का रंग ललछौंह भूरा होता है।

मादा बहुत कुछ नर से मिलती-जुलती होती है लेकिन उसका निचला भाग, ठोड़ी, और गले को छोड़ कर कत्थई रंग का होता है। सीने पर के पर भी ललछौंह होते हैं जिनके किनारे हलके बादामी रहते हैं। आँख की पुतली पीली या पिलछौंह भूरी, चोंच काली, टाँगें पीली और पंजे काले होते हैं।

कुतर का शरीर मजबूत और गठा हुआ होता है और चोंच कमजोर और काफी झुकी हुई होती है। कंठ के छोटे घुँघराले पर गले तक और गर्दन के दोनों बाजुवों तक फूले होते हैं। डैने लम्बे, नोकीले और दुम लम्बी तथा ऊपर की ओर समतल होती है। टाँगें लम्बी और बिना परों की और पंजे काले होते हैं।

**निवास** : कुतर यूरोप, अफ्रीका और एशिया के अधिकांश भागों में पाया जाने वाला पक्षी है जिसे दो जातियों में बाँटा गया है। इसकी एक खास जाति भारतवर्ष में सितम्बर के मध्य में आती है और मार्च के अन्त में या अप्रैल के प्रारम्भ में यहाँ से वापस चली जाती है।

**विवरण** : कुतर बड़े कद का पक्षी है जिसके पैर और डैने लम्बे और शरीर सुडौल और पतला होता है। इसे आमतौर पर दल-दल के मैदानों, झीलों की कीचड़दार जमीन, तालाबों के किनारों और ऐसी जगहों में जहाँ मेढक आदि इकट्ठा होते हैं, काफी संख्या में देखा जा सकता है। यह अपने जीवन का अधिक भाग उड़ने में ही व्यतीत कर देता है। यह आकाश में २०-३० फुट ऊपर उड़ कर भोजन की तलाश में लगा रहता है। इसकी उड़ान हलकी, शानदार और धीमी होती है। यह पहले अपने पंखों को चलाता है फिर बाहर की ओर फैले कड़े पंखों के सहारे नीचे उतरता है और फिर एक तरफ से दूसरी तरफ इस प्रकार से मुड़ता है मानों इसे अपना गन्तव्य स्थान न ज्ञात हो। इसके मुख्य भोजन में मेढ़क आते हैं। वैसे इसे सब प्रकार का मांस अच्छा लगता है। यह शिकारियों द्वारा घायल की गयी चिड़ियों की प्रतीक्षा में रहता है और जैसे ही कोई चिड़िया शिकारियों की पहुँच के बाहर घायल हो कर गिरी नहीं कि यह झट उसे उठा ले जाता है। यह जिस समय शिकार नहीं करता उस समय किसी टीले, खंभे या सूखे पेड़ पर बैठ जाता है। कभी-कभी यह आकाश में काफी ऊँची उड़ान भरता है और काफी दूर तक चक्कर लगाता है इस समय यह अपने डैनों को अपने शरीर की सतह से ऊपर उठाये रखता है जिससे साफ मालूम होता है कि यह केवल आनन्द के लिए उड़ान कर रहा है।

**घोंसला** : उत्तर भारत में कुतर अपना घोंसला अप्रैल के महीने में पानी के किनारे के नरकुलों या दलदल में उत्पन्न होने वाली बनस्पतियों के ऊपर बनाते हैं। ये घोंसले सूखे नरकुलों में पाये जाते हैं। इसके अन्दर ये दलदल में पैदा होने वाली घास का अस्तर लगाते हैं।

मादा समय आने पर इसमें ६ अंडे देती है। इनका आकार चौड़ा बैजाबी रहता है और इसका रंग निलछौंह सफेद होता है जिस पर कोई चिह्न नहीं रहते।

अंडे की औसत लम्बाई चौड़ाई १.९५ × १.५ इंच होती है।

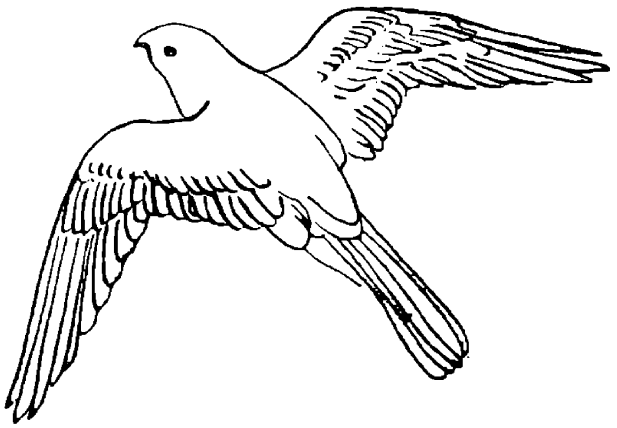
## २३३ बाज (Goshawk)

**पर्याय** : राज बाज, नर बाज, मादा जुर्रा।

**पहचान** : बहुत बहादुर पक्षी जिसका ऊपरी भाग राखीपन लिये भूरा और नीचे का काले और भूरे चिह्नों से भरा हुआ सफेद रहता है।

**रंग-रूप** : बाज लगभग २० इंच लम्बा पक्षी है जिसके नर और मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। मादा नर से ४ इंच बड़ी होती है और उसे जुर्रा कहते हैं। इसके शरीर का ऊपरी भाग

राखीपन लिये भूरा रहता है और सर, गुद्दी तथा गरदन के दोनों बगल का हिस्सा काला रहता है। दुम का ऊपरी भाग हलका भूरा होता है जिसका सिरा सफेद रहता है। नीचे का सारा



बाज

हिस्सा सफेद रहता है जिस पर काली और गाढ़ी भूरी चित्तियाँ और चिह्न पड़े होते हैं। ये चिह्न ऊपर की ओर अधिक रहते हैं। आँख की पुतली नारंगी पीली, चोंच गाढ़ी सिलेटी और टाँगें गंदे पीले रंग की होती हैं। पंजे काले रहते हैं। इसकी चोंच आगे की ओर झुकी हुई और बहुत मजबूत होती है। डैने गोलाकार और पंजे बड़े और मजबूत होते हैं।

**निवास** : बाज हमारे यहाँ हिमालय पर्वत पर पूर्व से पश्चिम तक फैला हुआ है इसे मैदान पसन्द नहीं आते। यह तराइयों में भी बहुत कम दिखाई पड़ता है। यह हमारे देश का स्थायी पक्षी है जो बराबर यहीं रहना पसन्द करता है।

**विवरण** : बाज को शिकारी चिड़ियों का सरदार कहना अनुचित न होगा। यह शिकारी पक्षियों में सबसे बहादुर और कद में भी काफी बड़ा होता है। बाज को खुले मैदानों की अपेक्षा घने जंगल अधिक भाते हैं जिनके ऊपर यह अपने शिकार की तलाश में आकाश में चक्कर लगाता रहता है। इसका अधिक समय हवा में ही बीतता है। यह नीचे किसी शिकार को देख कर ऊपर से तेजी से टूट पड़ता है और उसे अपने चंगुल में पकड़ कर ऊपर उड़ जाता है। इसका मुख्य भोजन छोटे-मोटे जानवर ,साँप, छिपकलियाँ और चिड़ियाँ हैं। यह कबूतर, तीतर, बटेर और जंगली मुरगियों का शिकार बड़ी आसानी से कर लेता है।

बाज को शौकीन लोग शिकार के लिए पालते हैं और इनसे चिड़ियों आदि का शिकार कराते हैं। सिखाये जाने पर शिकरा और बहरी आदि की तरह चिड़ियों और खरगोश आदि को पकड़ कर अपने मालिक के पास आ जाता है।

**घोंसला** : बाज के जोड़ा बाँधने का समय मार्च से जून तक रहता है। यह इसी बीच किसी ऊँचे पेड़ के ऊपर सूखी टहनियों का अपना मद्दा और ढीलढाला-सा घोंसला बनाता है। मादा समय आने पर इसमें ३-४ अंडे देती है, जो प्रायः सफेद ही रहते हैं लेकिन कभी-कभी उन पर थोड़ी कत्थई और बैंगनी चित्तियाँ भी पेंदे की ओर पड़ी रहती हैं।

अंडे लगभग २.१० × १.६५ इंच के रहते हैं।

## २३४ काली चील (Black-Winged Kite : Elanus Caeruleus)

**पर्याय** : कपासी, मसुनवा, कृष्ण-पक्ष चिल्ल, चनवा।

**पहचान** : इसका ऊपरी भाग सिलेटी और नीचे का सफेद रहता है। डैने काले होते हैं।

**रंग-रूप** : यह १३ इंच का पक्षी है। इसका सारा ऊपरी भाग सिलेटी रंग का होता है। नीचे का सारा हिस्सा सफेद रहता है और डैने काले होते हैं। आँख की पुतली लाल, चोंच कलछौंह और टाँगें गंदे पीले रंग की होती हैं।

**निवास** : काली चील हमारे देश की बारहमासी चिड़िया है जो हमारा देश छोड़ कर बाहर नहीं जाती। मौसम के बदलाव के अनुसार यह यहीं थोड़ा रंग परिवर्तन कर लेती है। इसे हम हिमालय की तरह घुर दक्षिण तक देख सकते हैं।

**विवरण** : काली चील का दूसरा नाम कपासी है। इसे हम खेतों के आस-पास और तितरे-बितरे जंगलों में बड़ी आसानी से देख सकते हैं। यह बहुत घने जंगलों और खुले मैदानों में बहुत ही कम दिखाई पड़ती है। अपने शिकार के लिए इसे हम ऊँची घास और झाड़ियों के ऊपर चक्कर लगाते देख सकते हैं। इसकी उड़ान चील की तरह सीधी और तेज न होकर खैरमुतिया की तरह होती है, जो हवा में गोलाई से उड़कर शिकार की टोह लगाती रहती है। इसका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े, छिपकलियाँ, चूहे या छोटे-छोटे जानवर हैं। इसकी चोंच टेढ़ी और पंजे मजबूत होते हैं। लेकिन दुम चील की तरह दुफंकी न होकर छोटी और सीधी होती है।

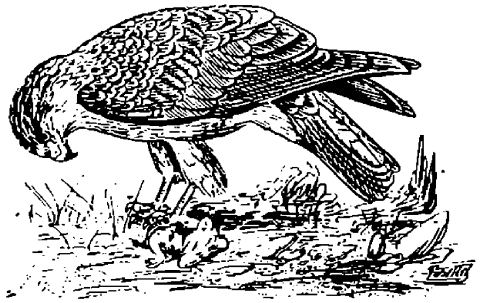
**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने और अंडा देने का समय अलग-अलग स्थानों के अनुसार अलग-अलग रहता है। इस प्रकार इनके अंडे प्रायः सभी महीनों में कहीं न कहीं मिल सकते हैं। इसके घोंसले मद्दे और ढीले-ढाले रहते हैं जिसे ये पतली-पतली लकड़ियों से बनाती हैं। कभी-कभी इन घोंसलों में नरम घास का अस्तर भी दे दिया जाता है। ये घोंसले किसी पेड़ की ऊँची दुफंकी डाल पर रखे रहते है, जिस पर मादा समय आने पर ३-४ अंडे देती है। अंडे कुछ चौड़े बैजाबी होते हैं। इनका रंग भूरापन लिये लाल रहता है। अंडों पर किसी प्रकार की चित्तियाँ नहीं पड़ी रहतीं।

अंडे करीब १.५३ × १.२१ इंच के रहते हैं।

## २३५ मुसमार (Long-legged Buzzard)

**पर्याय** : दीर्घ पाद मूषिक बाज, चुद्दूमर ।

**पहचान** : भारी शरीर वाला पक्षी जो पेड़ों और जमीन के किसी टीले पर चुपचाप सुस्त-सा बैठा रहता है । इसका ऊपरी भाग भूरा डैने के सिरे कलछौंह भूरे और शरीर के नीचे का हिस्सा सफेद रहता है । आकाश में उड़ते समय यह अपनी गोल दुम को फैला लेता है और इसके उड़ान के पंखों के नीचे सफेद टेढ़ा चिह्न स्पष्ट दिखाई पड़ता है ।



मुसमार

**निवास** : मुसमार मैदान का पक्षी है जिसे ऐसे सूखे और रेतीले स्थान ज्यादा पसन्द हैं जहाँ यह चूहे और छिपकलियों का शिकार आसानी से कर सकता है । यह खेतों और दलदलों में भरे हुए स्थानों पर भी दिखाई पड़ता है जिसके आस-पास यह किसी पेड़ या ऊँचे स्थान पर चुपचाप सुस्त-सा बैठा रहता है । इसकी उड़ान सुस्त और बोझिल होती है । लेकिन यह हवा में काफी समय तक उड़ता रहता है । उड़ते समय यह अपनी गोल दुम को फैला लेता है और अपने उड़ान के पंखों को तिरछा करके हवा में तैरता रहता है ।

**घोंसला** : मुसमार के जोड़ा बाँधने का समय मार्च से जुलाई तक रहता है । इसके घोंसले सूखी टहनियों के होते हैं जिनके भीतर यह नरम डालियाँ और पत्तियाँ लगा देता है । ये घोंसले किसी पेड़ या किसी ऊँचे भीटे के सूराख में रखे जाते हैं । मादा समय आने पर इसमें २ से ४ तक अंडे देती है, जो चौड़े और बैजावी होते हैं । अंडों का रंग हरछौंह सफेद रहता है जिन पर घनी कत्थई चित्तियाँ पड़ी रहती हैं ।

अंडों की नाप लगभग २.३० × १.८० इंच होती है ।

**मुसमार**

**रंग-रूप** : मुसमार २२ इंच लम्बा पक्षी है जिसकी मादा इससे २ इंच बड़ी होती है । दोनों का रंग-रूप एक ही जैसा होता है । इसके शरीर का ऊपरी भाग भूरा रहता है जिसके परों के किनारे सफेद और ललछौंह होते हैं । सर के दोनों बगल का हिस्सा पीठ से कुछ हलका होता है । उड़ान के पंख सिरे पर काले होते हैं और उनकी जड़ पर सफेद और सिलेटी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं । दुम ललछौंह भूरी रहती है जिस पर सफेद और काली चित्तियाँ और सिरे की ओर भूरी पट्टी होती है । गला और सीना बादामीपन लिये सफेद रहता है जिस पर गाढ़े भूरे चिह्न पड़े रहते हैं । पेट का हिस्सा सफेद होता है और बाजुओं पर गाढ़े कत्थई चित्ते रहते हैं । आँख की पुतली, भुरझौंह पीली, चोंच गाढ़ी सिलेटी और टाँगें गन्दे पीले रंग की होती हैं । इसकी चोंच और टाँगें कमजोर होती हैं । टाँगों के ऊपरी हिस्से के ऊपर पर रहते हैं और डैने तथा दुम गोलाकार रहती है ।

**निवास** : मुसमार हमारे यहाँ का मौसमी पक्षी है जो अगस्त से नवम्बर तक हमारे देश में उत्तर पश्चिम देशों से आने लगता है और यहाँ जाड़ा बिता कर फरवरी-मार्च में फिर उसी ओर वापस चला जाता है ।

हमारे यहाँ आकर यह सारे उत्तर भारत के मैदानों में मध्य प्रदेश तक फैल जाता है लेकिन इसके आगे यह दक्षिण की ओर नहीं दिखाई पड़ता ।

## २३६ शिकरा (Shikra : Astur Badius)

**पर्याय** : भारत संचान, मादा शिकरा, कथिया : नर-छिपका, तुन्ना ।

**पहचान** : यह बाज की जाति का किन्तु उससे छोटे आकार का सुडौल पक्षी है जिसका ऊपरी भाग सिलेटी भूरा और नीचे का ललछौंह भूरा रहता है । नीचे के सारे हिस्से पर सफेद आड़ी धारियाँ पड़ी रहती हैं । इसे किसी पेड़ पर बैठे हुए या खुले मैदानों के ऊपर उड़ते हुए देख कर इसे पहचानना कठिन नहीं होता ।

**रंग-रूप** : शिकरा १२ इंच लम्बा पक्षी है जिसकी मादा इससे २ इंच बड़ी होती है । नर के शरीर का ऊपरी हिस्सा निलछौंह सिलेटी रहता है और इसके सर के दोनों बगल के हिस्से तथा गरदन, ऊपर के हिस्से से हलके रंग की होती है । उड़ान के पंखों के सिरे कलछौंह होते हैं और डैने के शेष भाग सफेद और काली धारियों से भरा होता है । दुम पर चार-पाँच चौड़ी गाढ़ी भूरी पट्टियाँ पड़ी रहती हैं और ठुड्डी और गला बादामी-पन लिये सफेद रहता है । उसके बीच में एक खड़ी सिलेटी धारी पड़ी रहती है । सीना ललछौंह भूरा रहता है जो सफेद आड़ी धारियों से भरा रहता है । मादा का ऊपरी हिस्सा अधिक भूरा रहता है । आँख की पुतली नारंगी पीली, चोंच सिलेटी और टाँगें पीली रहती हैं । पंजे काले होते हैं । चोंच छोटी, मज-

चूत और नीचे की ओर झुकी रहती है। डैने छोटे और गोलाकार होते हैं और टाँगें लम्बी और मजबूत होती हैं।

**निवास** : शिकरा वैसे तो मध्य एशिया, ईरान और भारत तथा बर्मा में पाया जाता है, लेकिन हमारे देश में पाये जाने वाले पक्षी हिमालय की पाँच हजार फुट की ऊँचाई से घुर दक्षिण तक दिखाई पड़ते हैं। यह यहाँ का स्थायी रूप से रहने वाला पक्षी है। जो यहीं थोड़ा स्थान-परिवर्तन करके बाहर नहीं जाता।

**विवरण** : शिकरा भारत का बहुत प्रसिद्ध पक्षी है जिससे हम सब भली भाँति परिचित हैं। यह बहुत घने जंगलों और रेगिस्तानी प्रदेशों में नहीं रहता। लेकिन इसे हम खुले मैदानों, खेतों, बाग-बगीचों तथा तितरे-बितरे जंगलों और झाड़ियों से भरे स्थानों में आसानी से देख सकते हैं। यह या तो किसी पेड़ की ऊँची डाल पर बैठा रहता है या फिर हवा में चक्कर लगा कर उड़ता रहता है। हवा में तैरते समय कभी-कभी यह अपने पंखों को तेजी से फड़फड़ाता है। यह बहुत शोर मचाने वाला पक्षी है जो जोड़ा बाँधने के समय ज्यादा शोर मचाने लगता है। इसकी बोली तेज कर्कश और टिट्, टिट् से मिलती-जुलती होती है।

यह मेढ़क, छिपकलियों, टिड्डों और छोटी चिड़ियों को मार कर उनसे अपना पेट भरता है। इसे लोग बाज और बहरी की तरह शिकार कराने के लिए पालते हैं। यह बहुत दिलेर और बहादुर पक्षी है जो सिखाये जाने पर तीतर, बटेर और कबूतर आदि पक्षियों को पकड़ लेता है।

इसको शिकार के लिए शिक्षित करने में अधिक समय नहीं लगता और यह थोड़े ही दिनों के बाद चिड़ियों को पकड़ने में उस्ताद हो जाता है।

**घोंसला** : शिकरा के जोड़ा बाँधने का समय अप्रैल से जून तक रहता है जिसके बीच मादा तीन से पाँच तक अंडे देती है। इसका घोंसला सूखी टहनियों का ढीलाढाला-सा रहता है जिसे यह किसी पेड़ की ऊँची दुफंकी डाल पर रखता है और उसके भीतर नरम जड़ों और मुलायम घास का अस्तर लगा देता है। इसके अंडे लम्बोतरे और सिरे की ओर नोकीले रहते हैं और उन पर चमक नहीं होती। अंडे हलके निलछौंह सफेद रहते हैं जिन पर कोई निशान नहीं रहता है लेकिन कभी-कभी उन पर पेंदे की ओर थोड़ी सिलेटी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

अंडे लगभग १.५५ × १.२२ इंच के होते हैं।

## २३७ लगर (Lugger Falcon : Falco Jugger)

**पर्याय** : रघट श्येन, मादा-लगर : नर-जगर।

**पहचान** : भारतवर्ष में स्थायी रूप से रहने वाला बाज जिसका ऊपरी भाग राखी भूरा और नीचे का भूरे चिह्नों से युक्त सफेद रहता है। यह खुले मैदानों में जोड़े में दिखाई पड़ता है। उड़ते समय इसके नोकीले पंख और लम्बी दुम के कारण इसे पहचानना कठिन नहीं होता।

**रंग-रूप** : लगर १६ इंच का पक्षी है जिसकी मादा १८ इंच की होती है। ये दोनों एक ही रंग-रूप के होते हैं। इसका माथा और आँख के ऊपर की रेखा सफेद रहती है जिसे कहीं-कहीं भूरी लकीरें काटती हैं। सर का ऊपरी हिस्सा भूरा रहता है और चोंच की जड़ के पास से एक भूरी पट्टी आँख के नीचे से गले तक चली जाती है। शरीर के ऊपर का सारा भाग राखी मायल भूरा रहता है और उड़ान के पंखों पर भीतर की ओर सफेद पट्टियाँ पड़ी रहती हैं। दुम भूरी जिसके किनारे सफेद और बीच के दो पंखों को छोड़कर सब परों पर सफेद पट्टियाँ पड़ी रहती हैं। शरीर के नीचे का हिस्सा सफेद रहता है जिस पर सीने के पास छोटी-छोटी खड़ी भूरी धारियाँ और पेट के पास भूरे चित्ते पड़े रहते हैं। डैने के दोनों बाजू भूरे रहते हैं। आँख की पुतली गाढ़ी भूरी, चोंच निलछौंह और टाँगें पीली होती हैं। पंजे काले रहते हैं। इसकी झुकी हुई चोंच के सिरे पर एक दाँत-सा रहता है और डैने लम्बे और नोकीले रहते हैं। टाँगों के ऊपरी हिस्से पर थोड़े पर रहते हैं और पंजे टेढ़े और तेज होते हैं।

**निवास** : लगर यहाँ का स्थायी रूप से रहने वाला पक्षी है जो हिमालय की २,५०० फुट की ऊँचाई से घुर दक्षिण भारत तक पाया जाता है। पूर्व की ओर यह बंगाल और पश्चिम की ओर पंजाब तक फैला हुआ है।

**विवरण** : लगर खुले मैदानों का पक्षी है जिसे घने जंगल पसन्द नहीं हैं। यह खेतों के आस-पास जहाँ थोड़े-बहुत पेड़ या बाग-बगीचे होते हैं, काफी संख्या में दिखाई पड़ता है। यह जीवन भर के लिए जोड़ा बाँध लेता है। इसलिए इसे हम अक्सर जोड़े के साथ ही देखते हैं। दोनों पक्षी अपने शिकार की तलाश में चक्कर लगाते रहते हैं। इसके मुख्य भोजन में छोटे जानवर, मेढक, छिपकलियाँ और कीड़े-मकोड़े शामिल हैं। ये अक्सर शिकारियों द्वारा घायल की गयी बत्तखों आदि को भी उठा ले जाते हैं और उनके लिए तालाबों के ऊपर चक्कर लगाते रहते हैं।

इसे भी लोग बाज, बहरी और शिकरे की तरह पालते और इनसे चिड़ियों का शिकार कराते हैं। ये वैसे तो शांत पक्षी हैं लेकिन कभी-कभी उत्तेजित होने पर ये काफी शोर मचाते हैं।

**घोंसला** : लगर के अंडे जनवरी से अप्रैल तक मिलते हैं। लेकिन फरवरी में इनके अंडे अन्य महीनों की अपेक्षा अधिक पाये जाते हैं। अंडों की संख्या ३ से ५ तक रहती है। लगर किसी भीटे या चट्टान के सूराख में थोड़ी सूखी टहनियों को रख कर घोंसला बनाने से छुट्टी पा लेते हैं। कभी-कभी ये

किसी पुरानी इमारत में या किसी पेड़ की सूखी टहनियों का मद्दा-सा घोंसला भी बना लेते हैं जिसके भीतर ये घास-फूस रख कर उसे मुलायम बना देते हैं।

इनके अंडे चौड़े और बैंजाबी होते हैं जो सिरे की ओर नोकीले और बिना चमक के रहते हैं। अंडों का रंग ललछौंह भूरा या बादामी रहता है जिन पर घनी कत्थई और भूरी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

अंडे लगभग २.००×१.५५ इंच के रहते हैं।

## २३८ बहरी (Peregrine Falcon : Falco Peregrinus)

**पर्याय**: क्षिप्र-श्येन, वेगी, मादा बहरी, नर बहरी।

**पहचान**: इसके शरीर का ऊपरी हिस्सा राखीपन लिये भूरा और नीचे का सफेद रहता है, नीचे का पिछला भाग कत्थई चिह्नों से भरा रहता है।

**रंग-रूप**: बहरी २० इंच लम्बी चिड़िया है, जिसके नर १६ इंच के होते हैं। नर-मादा कद में छोटे बड़े-होकर भी एक ही रंग-रूप के रहते हैं। इसका सारा ऊपरी भाग राखीपन लिये भूरा रहता है और गरदन से लेकर नीचे का सारा हिस्सा सफेद होता है जिसमें आधे पेट से पीछे के सारे हिस्से में कत्थई धारियाँ और चिह्न पड़े रहते हैं। दोनों गाल पर भी कत्थई धारियाँ, माथा राखीपन और सीने पर की सफेदी में हलकी भूरी झलक रहती है। आँखों के ऊपर एक टेढ़ी सफेद रेखा पड़ी रहती है और आँख के नीचे एक काली लकीर चोंच की जड़ से गरदन तक चली जाती है। डैने कलछौंह या कत्थई और दुम भूरी होती है जिसका सर सफेद रहता है। आँख की पुतली ललछौंह पीली, चोंच निलछौंह सिलेटी और टाँगें पीली रहती हैं। चोंच टेढ़ी और आगे की ओर झुकी रहती है।

**निवास**: बहरी सारे संसार में पायी जाने वाली शिकारी चिड़िया है जो हमारे देश में जाड़ों में आकर देश के सभी स्थानों में फैल जाती है। जाड़ा समाप्त होते-होते यह उत्तर की ओर लौट जाती है, लेकिन कुछ पक्षी हिमालय में रह जाते हैं।

**विवरण**: यह हमारे यहाँ की बहुत प्रसिद्ध चिड़िया है जो कद में बाज से छोटी होकर भी बहादुरी में उससे कम नहीं होती। इसकी तेजी का मुकाबला कोई शिकारी पक्षी नहीं कर सकता और इसी से इसको "वेगी" भी कहा जाता है। यह ज्यादातर जलाशयों के निकट रहती है जहाँ इसे बत्तखें आसानी से मिल सकती हैं। बत्तखों के अलावा यह तीतर, बटेर, कबूतर फाखता, आदि पक्षियों का भी शिकार करती है। इसे न तो घने जंगल पसन्द हैं और न ऊँचे पहाड़ ही। यह खेत तथा झाड़ियों से भरे मैदानों के अलावा पानी के निकट के स्थानों में ज्यादा दिखाई पड़ती है।

बहरी उड़ने में बहुत तेज होती है और इसके डैने और पंजे भी बहुत मजबूत होते हैं। जब यह तालाबों के ऊपर बत्तखों के झुंड पर हमला करती है तो बहुत-सी बत्तखें डर के मारे अपने पंख समेट लेती हैं और ऊपर से पानी में ढेले की तरह पटापट गिरने लगती हैं। कुछ लोग इसे भी बाज की तरह पाल कर इससे चिड़ियों का शिकार कराते थे, लेकिन अब इसका रिवाज कम होता जा रहा है।

**घोंसला**: हमारे यहाँ का मौसमी पक्षी होने के कारण यह वैसे तो यहाँ घोंसला नहीं बनाता लेकिन हिमालय में रह जाने वाले कुछ पक्षियों के बारे में ऐसा अनुमान है कि वे यहाँ भी अपना सूखी टहनियों का मद्दा-सा घोंसला बनाते हैं जो किसी पहाड़ की ऊँचे दराज़ या ऊँचे पेड़ पर रखे रहते हैं। मादा इसमें गुलाबी या हलके भूरे रंग के ३-४ अंडे देती है जिन पर कत्थई चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

ये अंडे करीब २.००×१.५५ इंच के होते हैं।

## २३९ तुरमुती (Turumtee or Red Headed-Merlin : Falco Chicquera)

**पर्याय**: लोह शीर्ष, वेगी श्येन, मादा-तुरमुती : नर-चेतवा, तुरमुतारी।

**पहचान**: बहुत सुन्दर छोटे कद की राखी रंग की शिकारी चिड़िया जिसका निचला हिस्सा सफेद और कलछौंह धारियों से भरा होता है, अपने चटक कत्थई सर के कारण आसानी से पहचानी जा सकती है जो अक्सर जोड़े में दिखाई पड़ती है।

**रंग-रूप**: तुरमुती १२ इंच की चिड़िया है जिसकी मादा १४ इंच की होती है। इसके नर और मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। इसके सर का ऊपरी हिस्सा, कान के ऊपर का भाग और गाल पर की रेखा चटक कत्थई रंग की होती है। शरीर के ऊपर का भाग राखीपन लिये सिलेटी रहता है और कंधे और पंख के बगली हिस्से पर भूरी धारियाँ पड़ी रहती हैं। उड़ान के बाहरी पंख कलछौंह भूरे रहते हैं जिनका भीतरी हिस्सा सफेद रेखाओं से भरा रहता है। दुम सिलेटी और सिरे पर सफेद रहती है जिस पर महीन काली धारियाँ और सर के पास एक चौड़ी काली पट्टी रहती है। नीचे का सारा भाग सफेद होता है जिस पर सीने और पेट पर तितरी-बितरी कलछौंह धारियाँ और चिह्न पड़े रहते हैं। आँख की पुतली भूरी, चोंच हरछौंह पीली और टाँगें पीली होती हैं। पंजे काले रहते हैं।

**निवास** : तुरमुती हमारे देश के मैदानी भागों में हिमालय की तराई से लेकर घुर दक्षिण तक पायी जाती है। यह यहाँ की बारहमासी चिड़िया है जो हमारा देश छोड़ कर बाहर जाना नहीं पसन्द करती।

**विवरण** : तुरमुती छोटे कद की सुन्दर चिड़िया है जिसे घने जंगल पसन्द नहीं हैं। यह खुले मैदानों और ऐसे खेतों के आस-पास रहती है जहाँ पास-पड़ोस में पेड़ों का झुरमुट या घने बाग-बगीचे हों। यह जीवन भर के लिए जोड़ा बाँधती है इसलिए हम इसे प्रायः जोड़े में ही देखते हैं। दोनों नर और मादा पक्षी मिल कर शिकार करते हैं और हमेशा साथ ही साथ दिखाई पड़ते हैं।

तुरमुती को भी शौकीन लोग बाज़, बहरी और शिकरा की तरह पाल कर शिकार करना सिखाते हैं और यह सिखाये जाने पर छोटी चिड़ियों को पकड़ कर अपने मालिक के पास लाती है।

इसका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े, मेढक, छिपकलियाँ और छोटी चिड़िया हैं जिन्हें नर और मादा दोनों मिलकर पकड़ते हैं। तुरमुती की उड़ान बहुत तेज़, शानदार और संतुलित होती है और यह उड़ते-उड़ते कभी-कभी अपने पंखों को थोड़ा चलाकर हवा में तैरती रहती है। अन्य शिकारी पक्षियों की भाँति यह भी बहुत शोर मचाने वाली चिड़िया है जो कभी-कभी काफी तेज़ बोलती है।

**घोंसला** : तुरमुती के अंडे जनवरी से मई तक दिखाई पड़ते हैं लेकिन मार्च में इनके अंडे काफी संख्या में मिलते हैं। इसके घोंसले सूखी टहनियों के होते हैं जो किसी पेड़ की ऊँची दुफंकी शाख पर रखे होते हैं। ये सुन्दर और गोल प्याले-जैसे होते हैं जिनके भीतर ये नरम जड़ों, पत्तियों और परों को लगाकर उसे मुलायम बना देती हैं। मादा इसमें समय आने पर ३-४ अंडे देती है जो लम्बे, बैंजाबी और थोड़ी चमक वाले होते हैं। अंडों का रंग ललछौंह सफेद रहता है जिन पर कत्थई चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

नाप में ये अंडे लगभग १.६६ × १.२७ इंच के होते हैं।

## २४० खेरमुतिया (Kestrel : Falco Tinnunculus)

**पर्याय** : खभ्रान्ति, करुटिया, नरज़ी।

**पहचान** : खेरमुतिया यहाँ की प्रसिद्ध पक्षी है जिसके पंख नोकीले और दुम पंखे के आकार की होती है। हवा में स्थिर होकर मँडराने की आदत से इसे आसानी से पहचाना जा सकता है। रंग ललछौंह होता है और दुम के सिरे पर एक चौड़ी काली पट्टी पड़ी रहती है। बहुधा जोड़ों में ही दिखाई पड़ती है।

**रंग-रूप** : खेरमुतिया १४ इंच की सुन्दर शिकारी चिड़िया है जिसके नर के सर का ऊपरी भाग और गरदन के दोनों बगल का हिस्सा राखोपन लिये सिलेटी और महीन काली रेखाओं से भरा रहता है। चोंच की जड़ के पास से गाल तक एक सिलेटी पट्टी रहती है और चेहरे के दोनों रुख सफेद और गाढ़ी भूरी धारियों से भरे रहते हैं। शरीर का ऊपरी हिस्सा ललछौंह भूरा रहता है जिस पर काले त्रिकोण जैसे चिह्न पड़े रहते हैं। दुम की जड़ के पास एक राखी भूरा चित्ता रहता है। और उड़ान के पंख गाढ़े भूरे रहते हैं जिनका भीतरी हिस्सा सफेद होता है।

दुम ऊपर हलकी सिलेटी और नीचे सफेद रहती है और उसके ऊपरी हिस्से पर जड़ के पास एक चौड़ी काली पट्टी रहती है। शरीर के नीचे का भाग हलका ललछौंह भूरा होता है और सीने तथा बाजुवों पर भूरी बिन्दियाँ और लकीरें पड़ी रहती हैं।

मादा के शरीर का ऊपरी हिस्सा चटक ललछौंह भूरा रहता है और सर पर तथा कुछ ऊपरी हिस्से पर छोटी-छोटी भुरछौंह काली धारियाँ पड़ी रहती हैं। उड़ान के पंख गाढ़े भूरे होते हैं और दुम ललछौंह भूरी रहती है जिस पर काली धारियाँ पड़ी रहती हैं। दुम के सिरे पर एक चौड़ी काली पट्टी रहती है। शरीर के नीचे का हिस्सा हलका ललछौंह भूरा रहता है और सीने तथा बाजुओं पर भूरी बिन्दियाँ पड़ी रहती हैं। आँख की पुतली गाढ़ी भूरी, चोंच निलछौंह काली, टाँगें ललछौंह पीली और पंजे काले होते हैं।

इसकी चोंच छोटी और आगे की ओर झुकी होती है और उसके आगे की ओर एक दाँत-सा रहता है। डैने लम्बे और नोकीले रहते हैं और दुम लम्बी और थोड़ी सीढ़ीनुमा रहती है।

**निवास** : खेरमुतिया संसार के बहुत देशों में पायी जाती है। इसकी दो जातियाँ हमारे देश में दिखाई पड़ती है जिनके रंग-रूप और स्वभाव में थोड़ा ही भेद रहता है।

यहाँ की प्रसिद्ध खेरमुतिया जिसका यहाँ वर्णन दिया जा रहा है, हिमालय में काफी ऊँचाई तक देखी जाती है। यह जाड़ों में नीचे उतर कर सारे देश में फैल जाती है और जाड़ा समाप्त होते-होते फिर उत्तर की ओर लौट जाती है। इसकी दूसरी जाति दक्षिण भारत में नीलगिरि पर्वत के आस-पास दिखाई पड़ती है और दक्षिण भारत में ट्रावनकोर तक जाड़ों में फैल जाती है। इसे यहाँ की स्थायी चिड़िया कहना ही ठीक होगा क्योंकि यह हमारे देश में ही स्थान-परिवर्तन करके बाहर नहीं जाती।

**विवरण** : खेरमुतिया खुले मैदानों, खेतों, और झाड़ियों आदि से भरे स्थानों पर रहना अधिक पसन्द करती है जहाँ इसे कीड़े-मकोड़े, टिड्डे, चूहे, छिपकलियाँ तथा अन्य छोटे जीव-जन्तु खाने को काफी संख्या में मिल जाते हैं। यह छोटीमोटी चिड़ियों

को भी आसानी से पकड़ लेती है। यह अपना अधिक समय खेतों आदि के ऊपर उड़ती हुई बिताती है और हवा में चक्कर लगाते हुए यदि इसे जमीन पर कोई शिकार दिखाई पड़ता है तो यह ऊपर से सीधे नीचे की ओर तीर की तरह झपट्टा मार कर उसे पकड़ लेती है।

कभी-कभी यह किसी ऊँचे पेड़ या टीले पर बैठ कर अपने शिकार की खोज में इधर-उधर देखती रहती है और किसी जीव-जन्तु को देखते ही ऊपर से झपट कर उसे ले उड़ती है। इसकी उड़ान बहुत संतुलित और सधी हुई होती है। खेरमुतिया एक प्रकार की, की, की, की, जैसी तेज़ बोली बोलती है जिसे मीठी न कहकर कर्कश ही कहना ठीक होगा। जोड़ा बाँधने के समय यह बहुत शोर मचाती है।

**घोंसला** : खेरमुतिया अपना घोंसला किसी भीटे या चट्टान के सूराख या किसी पुरानी इमारत में बनाती है। कभी-कभी इसके घोंसले किसी पेड़ पर भी मिलते हैं। इसके घोंसले सूखी टहनियों और कूड़ा-करकट तथा चिथड़ों द्वारा बनाये जाते हैं जो काफी भद्दे और ढीले-ढाले होते हैं।

मादा समय आने पर इसमें २ से ६ तक अंडे देती है जो चौड़े, बैंजाबी और सिरे की ओर नोकीले रहते हैं। इन पर किसी प्रकार की चमक नहीं रहती। अंडों का रंग ललछौंह रहता है जिन पर गाढ़े रंग की बिन्दियाँ, चित्तियाँ तथा धब्बे पड़े रहते हैं।

अंडे लगभग १.५५ × १.२० इंच के रहते हैं।

## २४१ हारिल (Common Green Pigeon : Crocopus Phoenicopterus )

**पर्याय** : बंग हरिताल, हरियल।

**पहचान** : पिलछौंह हरे रंग का कबूतर जैसा प्रसिद्ध पक्षी जो प्रायः पेड़ों पर ही रहता है। सीना पीला और पेट का हिस्सा राखी मायल सिलेटी रहता है। कंधों पर लाल चित्ता पड़ा रहता है। पंजे बहुत मज़बूत होते हैं।

**रंग-रूप** : नर का माथा, ठोड़ी और गाल धानी, माथे से गुद्दी तक का गाल का ऊपरी भाग राखी, जो गरदन तक पहुँचते-पहुँचते चटक धानी और सुनहला हो जाता है। गरदन के निचले हिस्से पर एक कंजई कंठा, पीठ और पखनियाँ जैतूनी हरी जिसमें पीली झलक। ऊपरी हिस्से में दुम-ढकना उसी रंग का, लेकिन कभी-कभी उसमें राखीपन की झलक। दुम का ऊपरी भाग कंजई, जिसकी जड़ पर एक चौड़ी धानी पट्टी। दुम का निचला भाग भी कंजई और इसकी जड़ पर काली पट्टी। सीना और छत्ते का ऊपरी हिस्सा चटक धानी। उसके नीचे से पेट का भाग राखी, जो नीचे पहुँचते-पहुँचते हरा हो जाता है। निचला दुम-ढकना गंदा कत्थई जिसके पंखों के सिरे सफेद। छोटी पखनी पर एक फासलई पट्टी। बड़ी पखनी और छोटे पंख कलछौंह, लेकिन उनके किनारे पीले। डैने पर काली और पीली स्पष्ट धारी। बड़े पंख गाढ़े मूरे और उनके किनारे पीले। डैने काले। मादा नर से कद में कुछ छोटी और रंग में भी उससे कुछ धुमली। चोंच कुछ सूजी-सूजी-सी, जिसका निचला भाग हरा और ऊपरी सफेदी मायल निलछौंह। आँख बैंगनीपन लिये लाल, आँख का भीतरी छल्ला नीला और बाहरी चटक गुलाबी। टाँगें-नारंगी पीली। नाप लम्बाई १३ इंच।

**निवास** : हारिल हमारे यहाँ का बहुत परचित पक्षी है जिसने अपनी सुन्दर हरी पोशाक के कारण हमारे साहित्य में अपना विशेष स्थान बना लिया है। इसे वैसे तो उत्तर भारत का पक्षी कहना उचित होगा, लेकिन थोड़ी-बहुत संख्या में यह सारे देश में फैला हुआ है। उत्तर की ओर, ये हिमालय की तराइयों में रहना पसन्द करता है और ऊँचे पहाड़ों पर बहुत कम जाता है। दक्षिण की ओर यह मध्य प्रदेश तक तो काफी संख्या में दिखाई पड़ता है, लेकिन इसके और आगे इसकी संख्या बहुत कम हो जाती है। धुर दक्षिण में यह बहुत ही कम या शायद कभी दिखाई पड़ता है।

**विवरण** : हारिल हमारे यहाँ का बहुत प्रसिद्ध और सुन्दर पक्षी है, जिसे छोटे पहाड़, जंगल और खुले मैदान ज्यादा पसन्द हैं। यह ऊँचे पहाड़ी क्षेत्र पर कम ही जाता है और पीपल तथा बरगद एवं अन्य जंगली फलों के पेड़ों पर इनके गिरोह अक्सर दिखाई पड़ते हैं जो अपना अधिक समय वृक्षों पर ही बिताते हैं। यह हमारे यहाँ का बारहमासी पक्षी है, पर अपनी फल-फूल की खुराक की सुविधा के अनुसार थोड़ा बहुत स्थान-परिवर्तन कर लेता है। इनकी सीटी-जैसी बोली बहुत मीठी और सुरीली होती है जो कभी तेज़ और कभी इतनी धीमी हो जाती है कि जल्दी में पता चलाना कठिन हो जाता है। कुछ लोगों का ऐसा अनुमान है कि ये कभी पेड़ से नीचे नहीं उतरते लेकिन यह सही नहीं है, इन्हें पानी पीने के लिए अक्सर जमीन पर ही देखा जा सकता है।

हारिल समय के इतने पाबन्द होते हैं कि इस मामले में इनकी बराबरी मौसमी बत्तखें भी नहीं कर सकतीं। हारिल के समय की पाबन्दी देख कर तो सचमुच बड़ा आश्चर्य होता है। ये जिस तारीख को किसी खास पेड़ पर पहुँचते हैं, दूसरे वर्ष भी करीब-करीब उसी तारीख को वहाँ पहुँच जाते हैं और तब वे उस पेड़ पर बराबर नियमित रूप से पहुँच कर एक नियत समय तक रहते हैं, जब तक वह पेड़ उजड़ या कट नहीं जाता।

हारिल गिरोह बाँध कर जरूर रहते हैं लेकिन इनके गिरोह प्रायः १०–१२ के ही होते हैं। कभी-कभी ये २० तक भी पहुँच जाते हैं। यह दूसरी बात है कि किसी एक पेड़ पर कई गिरोह एक साथ फल खाने के लिए आ जाते हैं। लेकिन जब ये वहाँ से उड़ते हैं तो फिर दस-बारह के छोटे-छोटे गिरोहों में बँट जाते हैं।

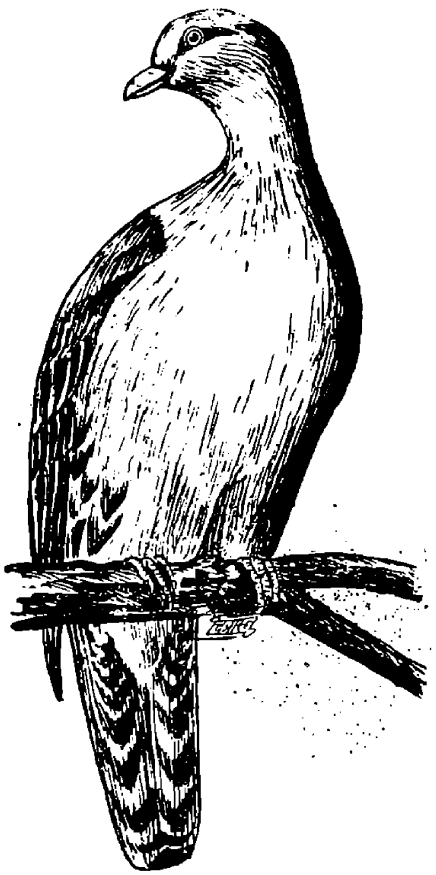
**घोंसला** : हारिल के अंडा देने का समय मार्च से जून तक है जब ये किसी ऊँची डाल पर सूखी टहनियों का तितरा-बितरा-सा घोंसला बनाते हैं। घोंसले को मुलायम करने के लिए घास-फूस तक भी लगाने की तकलीफ नहीं करते, क्योंकि इसे जमीन पर उतरने से नफरत है। इसी भद्दे घोंसले में मादा २ चमकीले सफेद अंडे देती है।

नाप में ये अंडे लगभग १.२५ × ०.९५ इंच के होते हैं।

## २४२ कोकला (Kokla Green Pigeon : Sphenocercus Sphenurus)

**पर्याय** : कोक, हरिताल, कैनाल ।

**पहचान** : कोकला हारिल की शक्ल सूरत की हरे रंग की चिड़िया है जो ज्यादातर पेड़ों पर ही रहती है। इसे इसकी सीटीनुमा तेज बोली के कारण पहचानने में कठिनाई नहीं होती। यह पहाड़ों की चिड़िया है जिसकी पीठ और डैने का कुछ हिस्सा गाढ़ा लाल रहता है, सीना नारंगीपन लिये गुलाबी रहता है। पंजे बहुत मजबूत होते हैं।



कोकला

**रंग-रूप** : सर, गरदन और निचला हिस्सा, घानी। चोटी के पास का कुछ हिस्सा ललछौंह, ऊपरी कुछ नारंगी-गुलाबी, कन्धे पर का कुछ भाग ललछौंह, पीठ का ऊपरी हिस्सा राखी, पीठ के बीच का थोड़ा हिस्सा गंदा ललछौंह और बाकी सारा हिस्सा हरा। पखने कलछौंह, पखनियों के किनारे पीले। दुम हरी जिस पर एक सुनहरी पट्टी। दुम के किनारे के पंख कंजई, नीचे के पर हरे जिनके किनारे घानी। निचला दुम-ढकना हलका बादामी। मादा तो और सब बातों में नर-जैसी, लेकिन उसके छत्ते और डैनों के पास लाली का अभाव। निचला दुम-ढकना हरा जिसमें सफेदी की मिलावट। चोंच हलकी निलछौंह जिसका सिरा सफेदी लिये हुए। आँख गाढ़ी नीली जिसका छल्ला गुलाबी। चोंच और आँख के पास की खाल नीली। टाँगें मूँगे जैसी लाल। नाप—लम्बाई १३ इंच।

**निवास** : कोकला को पहाड़ी हारिल कहना अनुचित न होगा। ये हमारे देश के उत्तरी पहाड़ी प्रान्तों में काफी संख्या में फैले हुए हैं। गरमियों में ये हिमालय के ४,००० से ८,००० फुट के नीचे के प्रदेशों में रहते हैं लेकिन जाड़ों में इन्हें तराइयों में ही देखा जा सकता है। इन्हें हम पूर्वी हिमालय का बारह-मासी पक्षी कह सकते हैं, जहाँ से ये गरमियों में पश्चिमी प्रान्तों में प्रवास-गमन करते हैं।

**विवरण** : कोकला हारिल का निकट सम्बन्धी पक्षी है, जिन्हें प्रकृति ने बहुत सुन्दर पोशाक दी है। इन्हें इनके लाल छत्ते और पीठ के कारण अन्य हारिलों से अलग करना कुछ कठिन नहीं होता। इसके अलावा, ये अपनी मीठी बोली के कारण भी अन्य पक्षियों से अलग रहते हैं और इसी कारण इन्हें कभी-कभी तोता और मैना की तरह जन्म भर पिंजड़े में कैद रहना पड़ता है।

कोकला हारिल की तरह सदा पेड़ पर रहने वाली चिड़िया है जिसका मुख्य भोजन फल है। हारिल की तरह यह भी शायद ही कभी जमीन पर उतरती हो और अपने रंग के कारण, इसको भी पेड़ की पत्तियों में छिपने में बिल्कुल तो नहीं, काफी आसानी हो जाती है क्योंकि इसकी मीठी बोली इसे पकड़ा देती है। यह हारिल की तरह काहिल नहीं होती और इसकी उड़ान भी उससे कहीं तेज और साफ होती है।

**घोंसला** : वैसे तो यह भी हारिल की तरह २०-२५ की गोल में रहती है, लेकिन गरमियों में हम इन्हें अक्सर जोड़े में उड़ते देख सकते हैं। यही अप्रैल से जून तक का समय इनके अंडा देने का भी है। इन दिनों ये अपने घोंसले की तैयारी में बहुत व्यस्त रहते हैं। इनका घोंसला भी हारिल की तरह सूखी लकड़ियों का तितरा-बितरा-सा होता है, जिनमें अक्सर नीचे से ही इनके अंडे दिखाई पड़ते रहते हैं। मादा इसी मामूली-से घोंसले में दो सफेद चमकदार अंडे देती है।

नाप में ये अंडे १.१८ × ०.८९ इंच के होते हैं।

## २४३ राज हारिल (Green Imperial Pigeon : Muscadivora Aenea)

**पर्याय**: राज हरिताल, दुनहल, दुमकल, बड़ा हारिल।

**पहचान**: कबूतर की तरह शक्ल-सूरत का बड़ा हारिल जिसका सर, गरदन और नीचे का सारा हिस्सा राखीमायल सिलेटी रहता है, पीठ और डैने के बगली हिस्से चटक हरे रंग के होते हैं, पेड़ों पर रहने वाला पक्षी जिसके पंजे बहुत मज़बूत होते हैं।

**रंग-रूप**: राज हारिल के नर और मादा एक रंग-रूप के होते हैं और दोनों का कद भी करीब-करीब बराबर और १७ इंच होता है। इसका सर, गरदन और निचले दुम-ढकने को छोड़ कर सारा नीचे का हिस्सा हलके राखी रंग का होता है, जिसमें पैर के पास गुलाबी झलक रहती है। चोंच की जड़ के पास के कुछ पर सफेद रहते हैं, लेकिन किसी-किसी पक्षी के आँख के नीचे एक अर्द्ध-गोलाकार सफेद रेखा भी रहती है। पीठ, दुमगजा, ऊपरी दुम-ढकना और डैने का बाहरी भाग चमकीले गाढ़े हरे रंग का, जिसमें कभी-कभी ताम्बई चमक और पीठ पर जहाँ-तहाँ गाढ़े नीले और बैंगनी घब्बे से होते हैं। दुम भी गाढ़े हरे रंग की, लेकिन उस पर पीठ की तरह ताँबे-जैसी झलक नहीं होती। निचला दुम-ढकना गाढ़ा बैंगनीपन लिये लाल रंग और दुम के नीचे का कुछ भाग गाढ़ा भूरा होता है। बड़े पंख निलछौंह सिलेटी रंग के जिनका एक हिस्सा भूरा। छोटे पंख पीठ-जैसे हरे रंग के और पखनियों का रंग हलका कंजई या राखी। आँख गाढ़ी लाल। चोंच जड़ के पास लाल, बीच में राखी और सिरे पर सफेद। टाँगें निलछौंह लाल।

**निवास**: राज हारिल, जैसा इसके नाम से स्पष्ट है, हारिल की जाति का पक्षी है, जो कद में हारिल से कुछ बड़ा होता है। हमारे देश में यह दक्षिण और पूर्वी भागों में पाया जाता है। दक्षिण में यह पूर्वी और पश्चिमी घाट के पर्वतों से पश्चिम की ओर ट्रावनकोर से बम्बई तक और पूर्व की ओर घुर दक्षिण से लेकर उड़ीसा तक पाया जाता है। बंगाल और असम के जंगली प्रदेशों में भी काफी संख्या में दिखाई पड़ता है और उत्तर की ओर इसे नेपाल-भूटान तथा उसके आस-पास भी देखा जा सकता है। यह यहाँ का बारहमासी पक्षी है, जो यहीं थोड़ा स्थान-परिवर्तन कर बाहर नहीं जाता।

**विवरण**: राज हारिल हमारे देश का बहुत सुन्दर पक्षी है जो घने जंगलों और पहाड़ों में बहुत अच्छी तरह रह लेता है। वैसे तो, यह पहाड़ों पर ६,००० फुट की ऊँचाई तक भी देखा जा सकता है, लेकिन अधिकतर तराइयों से लेकर ३,००० फुट तक दिखाई पड़ता है। राज हारिल प्रायः जोड़े या चार-पाँच के छोटे-छोटे गिरोहों में रहते हैं, लेकिन फलदार वृक्षों पर ये सैकड़ों की तादाद में इकट्ठे हो जाते हैं। इनकी आदतें बिल्कुल हारिलों से मिलती-जुलती होती हैं और उन्हीं की तरह इनका मुख्य भोजन भी जंगली फल-फूल रहता है। राज हारिल को भी इसकी सुन्दरता के कारण शौकीन लोग पिंजड़े में पालते हैं।

**घोंसला**: यहाँ के बारहमासी पक्षी होने के कारण राज हारिल भी अपना घोंसला यहाँ ही बनाते हैं। इनके जोड़ा बाँधने का समय अप्रैल से मई तक रहता है। ये पतली-पतली टहनियों का छिछला-सा घोंसला बनाते हैं जिसके भीतर कभी-कभी थोड़ी घास-फूस भी रख दी जाती है। मादा प्रायः १ सफेद अंडा देती है, जो नाप में १.७८ × १.२८ इंच का रहता है।

## २४४ कबूतर (Blue Rock Pigeon : Columba Livia)

**पर्याय**: नील गिरि पारावत, परैया, परेवा।

**पहचान**: हमारे यहाँ का बहुत ही परिचित पक्षी है जिसे हम सब भलीभाँति जानते हैं। इसका रंग सिलेटी रहता है और डैनों पर दो काली धारियाँ पड़ी रहती हैं। गले के चारों ओर हरी और बैंगनी झलक रहती है। गाँव और बस्तियों तथा खुले मैदानों में काफी संख्या में दिखाई पड़ता है।

**रंग-रूप**: लम्बाई १३ इंच। इसके नर मादा एक-जैसे होते हैं। करीब-करीब सारा बदन सिलेटी, जिसमें गरदन के पास हरी और बैंगनी चमक। सीना, पीठ और डैनों का रंग कुछ गाढ़ा। बड़ी पखनियों और छोटे पंखों के सिरे काले जिसके कारण डैने पर दो स्पष्ट काली धारियाँ। दुम के सिरे पर एक आड़ी काली लकीर और किनारे के परों के सिरे पर सफेद चित्ते। डैने का भीतरी हिस्सा हलका राखी या सफेद। चोंच काली, जिसकी जड़ कुछ सूजी-सूजी और सफेद मायल आँख भूरापन लिये नारंगी, टाँगे-गाढ़ी गुलाबी।

**निवास**: कबूतर को हम सब बहुत अच्छी तरह जानते हैं। इनकी पालतू जाति तो बहुत-से शौकीनों के घरों में भी देखी जा सकती है लेकिन यहाँ इनकी जंगली जाति का ही वर्णन दिया जा रहा है। कबूतर हमारे देश के बाहर भी काफी संख्या में फैले हुए हैं। ये उत्तर-पश्चिम की ओर पाकिस्तान, अफगानिस्तान से लेकर मध्य सागर के किनारों पर और स्पेन तक फैले हुए हैं। अफ्रीका में भी ये काफी संख्या में मिलते हैं, लेकिन वहाँ के कबूतर के रंग में कुछ फर्क हो जाता है।

**विवरण**: कबूतर हमारे देश में प्रायः सभी जगह देखे जा सकते हैं। हमारे यहाँ शहरों में पुराने मकानों की कारनिशों में इनके रहने की खास जगह बन जाती है, तब ये बहुत निडर और ढीठ हो जाते हैं। ये घने बागों और जंगलों में, कच्चे और मिट्टी के कुँओं और मिट्टी के बड़े भीटों में भी काफी संख्या में दिखाई पड़ते हैं। कबूतरों को सुबह शाम खेतों में बड़ी आसानी से देखा जा सकता है, जहाँ इनके झुंड दाना और बीज वगैरह चुगते हैं।

इनकी उड़ान बहुत तेज और फुर्तीली होती है। ये अपने पालतू गिरहबाज कबूतरों के बराबर गिरहबाज़ी भले ही न दिखा सकें, लेकिन उड़ने में इनका पल्ला किसी से कम नहीं रहता।

**घोंसला** : कबूतरों के अंडा देने का समय वैसे तो जनवरी से मई तक कहा जा सकता है, पर ये साल में कई बार अंडे देते हैं। घोंसले के मामले में हारिल से यह कुछ होशियार जरूर होते हैं

लेकिन इनका घोंसला मामूली ही कहा जायेगा। हारिल की तरह यह भी पतली-पतली टहनियों का, लेकिन उससे कुछ अच्छा-सा घोंसला बनाते हैं, जो बीच में कटोरेनुमा होता है। ये घोंसले या तो किसी मकान की कारनिश और दराज में रखे रहते हैं या किसी मिट्टी के भीटे और कच्चे कुओं में खोदे सूराखों में मिलते हैं। मादा इसी समय २ सफेद अंडे देती है।

अंडे लगभग १.४५ × १.१२ इंच के रहते हैं।

## २४५ कालहक फ़ाख़ता (Rufous Turtle-Dove : Streptopelia Orientalis)

**पर्याय** : रक्ताभ घूसर कापोतक, बिनता।

**पहचान** : ललछौंह भूरी चिड़िया जिसके गले और डैनों के दोनों ओर कलछौंह धारियाँ पड़ी रहती हैं। हमारे देश की प्रसिद्ध फाखता जिसे आसानी से बस्तियों के आसपास देखा जा सकता है।

**रंग-रूप** : नर मादा एक-जैसे। लम्बाई १२ इंच। सारे बदन का रंग ललछौंह भूरा, जिसमें माथे और चोटी के पास का हिस्सा राखी। गरदन के दोनों ओर काली चित्तियाँ और डैनों पर सेहरे के से निशान। चोंच की जड़ के पास सफेदी-मायल और कुछ ऊपर सिलेटी। दुमगज़ा और ऊपरी दुम-ढकने गाढ़े कंजई। बड़े पंख और पखनियाँ तथा पंखे कलछौंह जिनके किनारे हलके कत्थई। छोटी पखनियाँ राखी। दुम सिलेटी, जिसका सिरा गाढ़ा कत्थई ठोढ़ी के नीचे का रंग सफेदी लिये हुए और छत्ते पर का रंग गाढ़ा, निचले दुम-ढकने और नीचे का हिस्सा हलका राखी। चोंच ललछौंह, आँख नारंगी। टाँगें गंदी बैंगनी या लाल, पंजे काले।

**निवास** : कालहक फाखता हमारे यहाँ की बारहमासी फाखता तो है, लेकिन यह गरमियों में पहाड़ों पर रहकर, जाड़े में उतर आती है और करीब-करीब सारे देश में फैल जाती है। जाड़ा समाप्त होने पर मौसमी चिड़ियों की तरह, उत्तर की ओर अंडे देने चली जाती हैं। कालहक मध्य प्रदेश तक तो काफी संख्या में मिलती है, लेकिन उससे आगे दक्षिण की ओर इसकी संख्या कम हो जाती है।

**विवरण** : कालहक हमारे यहाँ की प्रसिद्ध फाखता है, जो ज्यादातर गिरोह में रहती है। इन्हें अन्य पड़कियों की तरह खेत और आबादी के आस-पास के बबूल आदि के पेड़ों पर बड़ी आसानी से देखा जा सकता है। ये बहुत सीधी-सादी चिड़िया है। इनका मुख्य भोजन दाना वगैरह है, जिनकी तलाश में ये अक्सर खेतों, मैदानों और बाग-बगीचों में देखी जा सकती है।

**घोंसला** : घोंसले के मामले में प्रायः सभी पड़कियाँ बहुत लापरवाह होती है, इससे कालहक को ही क्यों दोष दिया जाय। ये भी बबूल आदि के छितरे पेड़ों पर अपना बहुत मामूली-सा तितरा-बितरा घोंसला बनाती है। ये किसी दो-पंखी डाल पर दस-बीस सीधी-आड़ी लकड़ियाँ रखकर ही फुसरत पा लेते हैं। मादा इसी में अंडे देकर उन्हें खुला छोड़ देती है जो ऊपर से ही नहीं, अक्सर नीचे से भी दिखाई पड़ते हैं। मादा वैसे तो एक बार में २ ही अंडे देती है लेकिन कबूतर की तरह यह भी साल में कई बार अंडे देती है जो एक दम सफेद रहते हैं।

ये अंडे लगभग १.२२ × ०.९३ इंच के होते हैं।

## २४६ चितरोखा फ़ाख़ता (Spotted Dove : Streptopelia Chinensis)

**पर्याय** : चित्र पक्ष, कपोतक।

**पहचान** : हमारी बहुत परिचित फाखता जिसका ऊपरी हिस्सा कत्थई सिलेटी और काली धारियों और चिह्नों से भरा रहता है। नीचे का हिस्सा ललछौंह सफेद होता है। गाँव और बस्तियों के आस-पास जमीन पर दाना चुगते देखा जा सकता है।

**रंग-रूप** : लम्बाई १२ इंच। मादा नर से छोटी। सर हलका ललछौंह, माथा कंजई। गरदन के ऊपरी हिस्से से पीठ तक का भाग कलछौंह, जिसमें सफेद बिंदियाँ, जो दोनों डैनों की ओर बड़ी हो जाती हैं। इससे ऊपर का हिस्सा भूरा, जिस पर हलकी कत्थई और काली चित्तियाँ तथा लकीरें। डैने के किनारे और दो पखनियाँ हलकी कंजई। दुम के बीच का हिस्सा भूरा। किनारे के पर का नीचे का आधा हिस्सा काला और सिरे का आधा हिस्सा सफेद, गले के पास कुछ सफेदी, निचले हिस्से का रंग हलका ललछौंह। दुम-ढकने और दुम के नीचे का हिस्सा सफेद, चोंच घुमैली या कलछौंह, आँख भूरी, जिसके चारो ओर ललछौंह। टाँगें गाढ़ी बैंगनी झलक, दुम सिरे के पास कुछ पतली होती है।

**निवास** : चितरोखा, कालहक की तरह हमारे यहाँ की परिचित फाखता है, जिन्हें खुले मैदानों से ज्यादा घने जंगल पसन्द हैं। यह हमारे देश में इतनी काफी संख्या में फैले हुए हैं कि इन्हें प्रायः सभी स्थानों में देखा जा सकता है। पहाड़ों

की ओर ये ६,००० फुट से अधिक ऊँचाई पर नहीं जाती, लेकिन इन्हें मध्य प्रदेश के पठारों से कहीं ज्यादा, तराई का भाग पसन्द है।

**विवरण** : चितरोखा अन्य सभी फाखताओं से सुन्दर होता है और सीधाई में औरों से ज्यादा नहीं, तो कम भी नहीं होता। इसे हम बहुधा खेतों, मैदानों और सड़कों तक पर दाना चुगते देख सकते हैं। चितरोखा अक्सर जोड़े में ही दिखाई पड़ते हैं, इससे ऐसा अनुमान है कि ये सदा के लिए जोड़ा बाँध लेते हैं।

**घोंसला** : घोंसले के मामले में चितरोखा भी अन्य फाखताओं की तरह लापरवाह होते हैं। किसी पेड़ की दो-पंखी डाल पर ये भी तितरी-बितरी लकड़ियाँ रख कर अपना मद्दा-सा घोंसला बना लेते हैं। इनके घोंसले ऊँचाई पर तो रहते हैं पर कभी-कभी ये झाड़ी में या किसी मकान की कारनिश पर भी रख दिये जाते हैं। इनके अंडा देने का समय बारहों महीना रहता है जिस बीच मादा कई बार अंडे देती है। हर बार इनके अंडों की संख्या २ रहती है, जो एक दम सफेद और काफी चमकदार रहते हैं।

अंडों की नाप १.०६ × ०.८२ इंच रहती है।

## २४७ टुटरूँ फाखता (Little Brown Dove : Streptopelia Senegalensis)

**पर्याय**। क्षुद्र, धूम्र कपोतक, छोटा फाखता, पड़की, पंडुक।

**पहचान** : छोटी-सी भूरे रंग की पड़की जिसके डैने पर सिलेटी चित्ता और गले के दोनों बगल सफेद बिंदियों से भरी काली पट्टियाँ पड़ी रहती हैं।

**रंग-रूप** : नर मादा एक-सी शक्ल सूरत के। लम्बाई १० इंच। सर, गरदन और सीने का ऊपरी हिस्सा हलकी बैंगनी झलक लिये हुए ललछौंह। ठोड़ी सफेद मायल। गरदन के बगली हिस्सों में कुछ सफेद बिंदियों से भरी काली पट्टी। ऊपरी हिस्सा हलका मटमैला। डैनों के बाहरी हिस्सों पर कंजई पट्टी, बड़े पंख गाढ़े भूरे। दुम के बीच के दो पर मटमैले भूरे, उसके बाद के दोनों बगली पर कंजई, बाहरी दोनों पर और आधी दुम का सिरा कलछौंह और बाकी हिस्सा सफेद। सीने का निचला भाग सफेद मायल। डैनों के किनारे और नीचे का हिस्सा गाढ़ा कंजई। चोंच काली। आँख गाढ़ी भूरी, जिसके किनारे-किनारे सफेदी। टाँगे लाल, पंजे काले।

**निवास** : टुटरूँ को शायद अपनी बोली के कारण यह नाम मिला है। वैसे इसका प्रचलित नाम छोटी पिड़की है। यह हमारे यहाँ की बारहमासी फाखता है, जो थोड़ा-बहुत स्थान-परिवर्तन करने पर भी, हमारे देश के बाहर नहीं जाती। यहाँ यह मालाबार समुद्र तट तथा बंगाल की ओर, अन्य स्थानों की अपेक्षा कम पायी जाती है। हिमालय की ओर यह ५,००० फुट से अधिक ऊँची जगह पर नहीं देखी जा सकती, लेकिन विन्ध्य पर्वतमाला पर इसे काफी संख्या में देखा जा सकता है।

**विवरण** : टुटरूँ सिवाई में तो सब फाखताओं से आगे है ही, ढिठाई में भी किसी से पीछे नहीं है। यह बिल्कुल नजदीक पहुँच जाने पर ही उड़ना पसन्द करता है और मकानों के आस-पास निडर होकर दाने चुगता रहता है। इतना ही नहीं, यह हमारे घर की कारनिश में बिना किसी डर के, गौरैयों की तरह घोंसले बनाने में भी नहीं हिचकता। इस पिड़की को घने जंगलों की अपेक्षा ज्यादा खुले मैदान और खेत पसन्द है, जहाँ इसे दाना चुगते सभी लोगों ने देखा होगा।

**घोंसला** : टुटरूँ का अंडा देने का समय भी बारह महीनों होता है और इसका भी घोंसला अन्य फाखताओं की तरह मद्दा और तितरा-बितरा होता है। ये घोंसले नीचे पेड़ों, झाड़ियों मकानों के सूराखों और कारनिशों के अलावा, कभी-कभी जमीन पर भी मिलते हैं। अन्य फाखताओं की तरह टुटरूँ भी साल में कई बार अंडे देती है, लेकिन हर बार इसके २ ही अंडे होते हैं। ये अंडे चमकीले होते हैं।

नाप में ये अंडे करीब १.०० × ०.८५ इंच के होते हैं।

## २४८ घवर फाखता (Ring Dove : Sreptopelia Risoria)

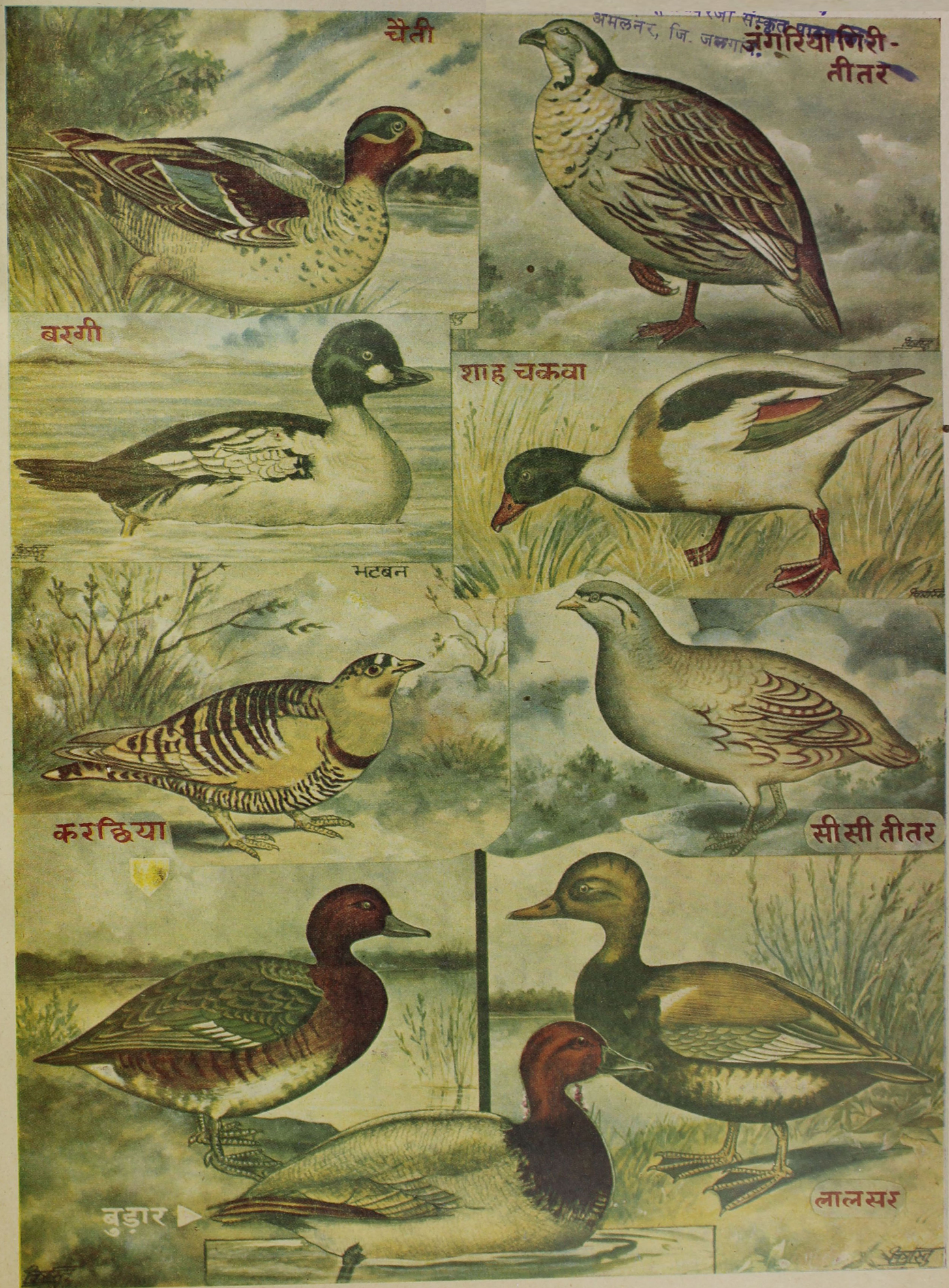
**पर्याय** : धवल कपोतक, घौर फाखता, गुगी, घौला।

**पहचान** : हलके सिलेटी भूरे रंग का फाखता जिसके गले के चारों ओर एक काला कंठा रहता है जिससे इसको पहचानने में कठिनाई नहीं होती। यह यहाँ का बहुत प्रसिद्ध पक्षी है।

**रंग-रूप** : नर मादा समान, लम्बाई १३ इंच। सर और गरदन कंजई, जिसमें बहुत हलके बैंगनीपन की मिलावट। गरदन के ऊपरी हिस्से पर एक काला कंठा, जिसके दोनों किनारे सफेद। ऊपरी हिस्सा हलका भूरा, जो डैने तक आते-आते राखी में बदल जाता है। बड़े पंख गाढ़े भूरे। दुम के बीच के दो पंख हलके भूरे, बाकी कंजई और कलछौंह भूरे और इनके सिरे की ओर काफी सफेदी। सीना हलका बैंगनी-मायल, जो नीचे की ओर पहले राखी, फिर दुम के नीचे पहुँचते-पहुँचते सिलेटी में बदल जाता है। डैनों के किनारे सफेद। चोंच काली, आँख बैंगनी झलक लिए लाल। आँख के छल्ले सफेद-मायल। टाँगे गाढ़ी गुलाबी, पंजे सींग के रंग के।

**निवास** : घवर यहाँ की सबसे अधिक परिचित फाखता है, जो सारे भारत में फैली हुई है। इसे जंगलों से ज्यादा मैदान पसन्द है। उत्तर में हिमालय पर्वतमाला में यह १०,००० फुट की

अमलनेर, जि. जलगाव



ऊँचाई तक पायी जाती है। यह यहाँ का बारहमासी पक्षी है, जो पास-पड़ोस में थोड़ा स्थान-परिवर्तन जरूर कर लेता है।

**विवरण** : धवर टुटरूँ की तरह ढीठ तो नहीं होता, लेकिन यह उतना सीधा जरूर होता है। बाग-बगीचों और बबूल के जंगलों में अक्सर इनके गोल दिखाई पड़ते हैं जो प्रायः पेड़ की चोटी पर बैठे रहते हैं। ये उड़ने में काफी तेज जरूर होते हैं, लेकिन इनका छिपना काफी कठिन होता है। बबूल आदि छितरे पेड़ों के कारण ये वैसे ही दिखाई पड़ते रहते हैं लेकिन यदि ये किसी छतनार पेड़ पर भी बैठें तो भी अपनी घुं-घूं-घूं की बोली के कारण इनका वहाँ ज्यादा देर तक छिपना सम्भव नहीं रहता।

**घोंसला** : धवर के घोंसले वैसे तो ज्यादातर अप्रैल और मई तक मिलते हैं, लेकिन अन्य फाखताओं की तरह यह भी साल में कई बार अंडे देती है, इसलिए इनके घोंसले और अंडे हमें बारहों महीने दिखाई पड़ते हैं। इनका भी घोंसला फाखताओं की तरह तितरा-बितरा-सा रहता है। जो प्रायः बबूल आदि के कँटीले और नीचे पेड़ों या झोड़ियों में रहते हैं। मादा दो सफेद चमकीले अंडे देती है, जिनमें हाथी-दाँत की तरह हलका संदली रंग भी मिला रहता है।

अंडे नाप में १.१६ × ०.९० इंच के रहते हैं।

## २४९ इंटकोहरी फाख़ता (Red Turtle Dove : Oenopopelia Tranquebarica)

**पर्याय** : अरुण कपोतक, सिरोरी, फाखता, घुग्घी, गेरुई फाखता, बिकी, गुलाबी घुग्घी।

**पहचान** : छोटी-सी पड़की जिसका सारा शरीर ललछौंह भूरा और सर सिलेटी रहता है। इसके गले के चारो ओर एक काला कंठा रहता है जिससे इसको पहचानना कठिन नहीं होता।

**रंग-रूप** : लम्बाई लगभग ९ इंच। नर का सर कंजई जो माथे की ओर राखी हो जाता है। गले में धवर की तरह काला कंठा, जिसके ऊपरी हिस्से पर सफेद पट्टी। बदन का ऊपरी हिस्सा ईंट के रंग का। दुमगजा और ऊपरी दुम-ढकने सिलेटी, दुम और बीच के पर राखी-भूरे, बाकी पर जड़ पर ललछौंह और सिरे पर सफेद। ठोड़ी सफेद, लेकिन नीचे का और बाकी हिस्सा ईंट के रंग का। निचला दुम-ढकना राखी पन लिये सफेद। डैने ललछौंह, पंख खैरे। चोंच काली। आँख गाढ़ी भूरी। टाँगें बैंगनी-पन लिये ललछौंह। मादा नर से कुछ छोटी, जिसका ऊपरी हिस्सा राखीपन लिये भूरा, सर डैने और दुम नर के रंग के, लेकिन निचला हिस्सा नर से हलका।

**निवास** : हमारे देश की फाखताओं में इंटकोहरी ही एक ऐसी है, जिसके नर मादा एक रंग-रूप के नहीं होते। यह हमारे यहाँ सारे देश में फैली हुई है, लेकिन न तो इसे बहुत घने जंगल ही पसन्द हैं और एकदम रेगिस्तान ही। अन्य पड़कियों की तरह इसे बस्ती के करीब रहना भी नहीं भाता, इससे ये दूसरी पड़कियों से कम परिचित मानी जाती हैं। इंटकोहरी को घने पेड़ों के आस-पास के खेत बहुत पसन्द हैं। लेकिन इनमें एक खास बात यह जरूर है कि जहाँ भी ये रहती हैं, पास-पड़ोस में पानी का रहना जरूरी होता है।

**विवरण** : इंटकोहरी फाखता को यह सुन्दर नाम इसकी ईंट-जैसी ललछौंह पोशाक के कारण ही मिला है। वैसे तो ये जोड़े में रहती हैं, पर कभी-कभी इनके बड़े-बड़े झुंड भी दिखाई पड़ते हैं। ये भी प्रायः जमीन पर दाने चुगती रहती हैं, जो इनका मुख्य भोजन है। लेकिन इनमें और दूसरी फाखताओं में इतना फर्क जरूर रहता है कि भड़कने पर, औरों की तरह, निकट वाले पेड़ पर न बैठ कर वहाँ से दूर चली जाती हैं। इनकी उड़ान बड़ी तेज होती है।

**घोंसला** : इनके अंडा देने का समय भी करीब-करीब साल भर रहता है, लेकिन मई जून में इनके अंडे ज्यादा तादाद में मिलते हैं। इनका घोंसला भी दूसरी पड़कियों की तर तितरा-बितरा टहनियों और घास-फूस से बना होता है। ये अपना घोंसला मकानों में न बनाकर हमेशा किसी पेड़ पर ही बनाती हैं। इसके लिए यह प्रायः बड़ा ही पेड़ चुनती हैं। प्रायः २०-२५ फुट की ऊँचाई पर किसी शाख के सिरे पर ही इनके घोंसले अक्सर देखे जाते हैं। इनके अंडों की संख्या प्रायः २ होती है, लेकिन कभी-कभी इनके ३ अंडे भी मिल जाते हैं। अंडों का रंग वैसे तो चमकीला सफेद होता है, लेकिन इनमें से अन्य पड़कियों के अंडों से ज्यादा संदली झलक रहती है।

अंडे नाप में १.०२ ०.८ इंच के होते हैं।

## २५० तुसल (Barred-Tailed Cuckoo Dove : Macropygia Tusalia)

**पर्याय** : पट्टि पुच्छ कुरव कपोतक।

**पहचान** : तुसल की चोटी और गरदन का पिछला हिस्सा बैंगनी तथा ऊपर का सारा भाग कत्थई धारियों से भरा हुआ काला रहता है। इसके सीने का ऊपरी हिस्सा चटक और नीचे का धुमैला बैंगनी रहता है।

**रंग-रूप** : लम्बाई लगभग १६ इंच। तुसल के नर और मादा के रंग-रूप में थोड़ा भेद रहता है और कद में भी मादा नर से कुछ मोटी होती है। नर का माथा गोल, ठोड़ी और गला

हलके भूरे रंग का जिसमें हलकी बैंगनी झलक रहती है। चोटी और गरदन का पिछला हिस्सा बैंगनी, ऊपर का सारा भाग काला और कत्थई धारियों से भरा। काली धारियाँ ज्यों-ज्यों दुम की ओर जाती है, त्यों-त्यों चौड़ी होती जाती हैं। दुम भूरापन लिये काली, जिसमें कत्थई धारियाँ। कंधा और सीने का ऊपरी भाग चटक और नीचे का घुमैला बैंगनी, और निचला दुम-ढकना बादामी, पखनियें और छोटे पखने में भी पीठ की तरह काली और कत्थई धारियाँ, लेकिन बड़े पंख और बाहर की ओर के कुछ छोटे पंख गंदे गाढ़े भूरे रंग के।

मादा के ऊपरी भाग का रंग नर की तरह हो कर भी, उससे कुछ हलका रहता है और उसका निचला हिस्सा हलकी बादामी और गाढ़ी भूरी लकीरों से भरा रहता है। बच्चों का रंग बहुत कुछ नर-जैसा ही रहता है। आँख गुलाबी। चोंच गाढ़ी सिलेटी। टाँगें गंदी बैंगनीपन लिये लाल।

**निवास** : तुसल को कबूतरों की अपेक्षा पड़कियों का निकट सम्बन्धी कहना अधिक उचित होगा। यह भी उत्तर भारत की पहाड़ी चिड़िया है, जो हिमालय प्रदेश में कश्मीर से आसाम तक फैली हुई है। हमारे देश से बाहर यह मलाया और बर्मा के पहाड़ी प्रान्तों में भी काफी संख्या में पायी जाती हैं।

**विवरण** : तुसल हमारे यहाँ की भोली-भाली चिड़िया है, जिसे पड़कियों का निकट सम्बन्धी कहना अनुचित न होगा। यह जाड़ों में तो तराइयों के जंगलों में और मैदानों तक फैल जाती है, किन्तु गरमियों में इसे पहाड़ों पर ढाई-तीन हजार फुट की ऊँचाई पर ही अधिक संख्या में देखा जा सकता है।

तुसल की उड़ान बहुत कमजोर और धीमी होती है। इस का मुख्य भोजन तो फल-फूल और पेड़ के नरम कल्ले हैं, लेकिन यह दाना और बीज भी बड़े मज़े से चुनती है। तुसल गिरोह में नहीं दिखाई पड़ती और इन्हें हमेशा जोड़ों में ही देखा जा सकता है। इसका कारण शायद यही है कि ये जीवन भर के लिए जोड़ा बाँध लेते हैं। वैसे तो ये पड़कियों की तरह घूं-घूं-घूं से मिलती-जुलती बोली बोलते हैं, लेकिन अंडा देने का समय निकट आने पर, नर पक्षी मादा के सामने अपना सौन्दर्य प्रदर्शन करने में नहीं चूकता। वह अपने पंख फड़फड़ा कर पहले आकाश में ५०-६० फुट की ऊँचाई पर उड़ जाता है, फिर वहाँ से अपने पंख फैला कर गिरहबाज़ी करता हुआ नीचे उतरता है, और मादा के सामने इसी प्रकार कई बार अपना करतब दिखा कर उसको प्रसन्न करने की कोशिश करता है।

**घोंसला** : तुसल का घोंसला, अन्य पड़कियों से सुन्दर होता है क्योंकि यह अपना घोंसला बनाने में पतली टहनियों के अलावा घास-फूस का भी इस्तेमाल करता है। फिर भी, इसे मामूली घोंसला ही कहना ठीक होगा। यह अपना घोंसला किसी नीचे पेड़ पर १०-१२ फुट की ऊँचाई पर रखता है। मादा मई-जून में १ या २ सफेद अंडे देती है,

अंडे नाप में १.३९ × १.० इंच के रहते हैं।

## २५१ बनचूर (Black-Bellied Sand-Grouse : Pterocles Orientalis)

**पर्याय** : बस्त तीतर, स्याह सीना, कृष्णोदर ककर : बड़ा भट्टा, कटिगा, चूर।

**पहचान** : बनचूर यहाँ का प्रसिद्ध भटतीतर है जिसका शरीर भूरी, सिलेटी, काली तथा कत्थई धारियों, चिह्नों तथा चित्तियों से भरा रहता है। इसकी टाँगें छोटी होती हैं और ये झुंड में जमीन पर ही बैठते हैं।

**रंग-रूप** : लम्बाई लगभग १४ इंच। बनचूर के नर और मादा के रंग-रूप में कुछ फर्क रहता है और कद में मादा नर से कुछ छोटी होती है। नर का माथा और सर का ऊपरी और बगल का हिस्सा भूरापन लिये सिलेटी। ठोड़ी, गला और गरदन कत्थई, जिसके नीचे एक काली पट्टी, पीठ दुमगज़ा और ऊपरी दुम-ढकना सिलेटी, जिस पर पिलछौंह बादामी चित्तियाँ। डैने पर का यह पिलछौंह बादामी रंग फैल कर एक चौड़ी पट्टी का रूप ले लेता है। बड़े पंख गाढ़े सिलेटी और दुम के पर बादामी और काली पट्टियों से भरे। सीना बादामीपन लिये राखी, जिसके बीच में एक चौड़ी काली पट्टी। पेट और शरीर का बगली हिस्सा गहरे काले रंग का और दुम के नीचे का हिस्सा सफेद।

मादा-हलके भूरे रंग की रहती है जिसका सर, गरदन और सीना छोटे-छोटे काले चित्तों से भरा रहता है। उसकी ठोड़ी और गला पिलछौंह रहता है और गरदन के निचले हिस्से पर एक कंठानुमा काली धारी पड़ी रहती है। पीठ, दुमगज़ा और दुम के बीच के पर भूरे रहते हैं, जिन पर बेतरतीबी से काले तिकोने चिह्न पड़े रहते हैं। बड़े पंख हलके सिलेटी रहते हैं और डैने का कुछ भाग नर की तरह पिलछौंह रहता है। दुम भी नर की तरह छोटी होती है और नर ही की तरह मादा का भी पेट और बगल का हिस्सा काला और दुम के नीचे का सफेद रहता है। आँख भूरी। चोंच निलछौंह सिलेटी। टाँगे सिलेटी।

**निवास** : बनचूर हमारे यहाँ का बहुत प्रसिद्ध भटतीतर है जो जाड़ों में बाहर से आकर पंजाब, राजस्थान, कच्छ तथा उत्तर प्रदेश के कुछ पश्चिमी जिलों में फैल जाता है, और जाड़ा समाप्त होने पर फरवरी के अन्त तक, यहाँ से फिर पश्चिम की ओर वापस चला जाता है। हमारे देश के बाहर यह पश्चिमी पाकिस्तान, बिलोचिस्तान से लेकर अफ्रीका के उत्तरी भागों तथा यूरोप के दक्षिण प्रदेशों में स्पेन और पुर्तगाल तक पाया जाता है।

**विवरण** : बनचूर को इसके नीले-काले रंग के कारण कहीं-

कहीं स्याह सीना भी कहते हैं और कहीं-कहीं बड़े कद के कारण बड़ा-पट्टा भी कहा जाता है। यह हमारे यहाँ का मौसमी भटतीतर है, जो हमारे देश में उत्तर पश्चिम की ओर से अक्टूबर में अक्सर आ कर फरवरी के समाप्त होते-होते फिर उसी ओर वापस चला जाता है। बनचूर बड़े-बड़े झुंडों में रहने वाला पक्षी है, जो पठार के खुले मैदानों में अक्सर जमीन पर चराई करता रहता है। अपने मटमैले पिलछौंह, चितकबरे रंग के कारण, यह पास-पड़ोस के रंग में ऐसा छिप जाता है कि इसके बहुत निकट जाने में भी हमारी निगाह इस पर नहीं पड़ती।

बनचूर बड़े झगड़ालू होते हैं और अक्सर इनके गिरोह में के नर पक्षी आपस में लड़ते-झगड़ते रहते हैं। प्रातःकाल जब इनका गिरोह खुले मैदान में धूप सेंकने के लिए बैठता है तो प्रायः सभी पक्षी मिट्टी कुरेद कर अपने बैठने के लिए एक छिछला-सा गढ़ा बना लेते हैं। उसी में वे कुछ देर तक करवट लेते रहते हैं, तो फिर कुछ देर के लिए दूसरी करवट हो जाते हैं। इस प्रकार आराम करते हुए भी यह कभी अपने दुश्मनों से गाफिल नहीं होते और अपने गिरोह में से एक की भी सतर्क रहने वाली बोली को सुनते ही, सब के सब एक साथ भर्र से उड़ जाते हैं।

बनचूर एक प्रकार की तेज बोली बोलते हैं, जो केवल उड़ते समय ही नहीं, बल्कि बैठे रहने पर, चरते समय और पानी पीते समय भी सुनाई पड़ती है। इनका मुख्य भोजन वैसे तो दाना, बीज और नरम कल्ले हैं, लेकिन इसी के साथ ही दीमक आदि छोटे कीड़े से भी परहेज नहीं करते।

**घोंसला** : यहाँ के मौसमी पक्षी होने के कारण, बनचूर हमारे देश में अंडे नहीं देते, लेकिन अफगानिस्तान और बिलोचिस्तान तथा पश्चिमी देशों में इनके घोंसले देखे जा सकते हैं। उन देशों में बनचूर मई-जून में जमीन पर एक छिछला गढ़ा खोद कर अपने अंडे देते हैं, जो संख्या में २ या ३ होते हैं। इन अंडों का रंग हलका भूरा, राखी या संदली रहता है, जिन पर धनी भूरी या बैंगनी-सिलेटी चित्तियाँ धब्बे और चिह्न पड़े रहते हैं।

नाप में ये अंडे लगभग १·८५ × १·२५ इंच के रहते हैं।

## २५२ भटबन (Painted Sand-Grouse : Pterocles Indicus)

**पर्याय** : पहाड़ी, भटतीतर, पालकी, हन्डेरी, गुटिला तीतर चित्रित ककर।

**पहचान** : अन्य भटतीतरों की भाँति भटबन भी चितला पक्षी है जो जमीन पर ही बैठता है। इसका ऊपरी भाग कत्थई भूरा और आड़ी धारियों से भरा हुआ और नीचे का सारा हिस्सा काली सफेद धारियों वाला होता है।

**रंग-रूप** : लम्बाई १० इंच। भटबन के नर और मादा के रंग-रूप में काफी भेद होता है। कद में भी नर मादा से कुछ बड़ा होता है। नर का माथा सफेद, जिसके बीच में एक काली धारी, चोटी ललछौंह भूरी जिस पर खड़ी-खड़ी गाढ़ी कत्थई धारियाँ। गरदन का ऊपरी भाग जैतूनी पीला। ऊपर का सारा हिस्सा कत्थई भूरा जिस पर आड़ी धारियाँ। डैने के बाहरी पर भी पीठ की तरह लेकिन लकीरें कुछ ज्यादा चौड़ी। डैने बड़े, पंख और पखनी गाढ़ी भूरी, छोटे पंखों के कुछ पर काले और कत्थई पट्टियों से भरे। कंधा हलका भूरा, ठोड़ी, गला, सर का बगली हिस्सा और सीना निलछौंह भूरा। सीने पर कत्थई सफेद और काली पट्टियाँ। पेट और नीचे का सारा भाग काली और सफेद लहरियों से भरा। निचले दुम-ढकने पर घनी भूरी और काली धारियाँ।

मादा का माथे से लेकर दुम तक सारा ऊपरी हिस्सा कत्थई और काली लहरों से भरा हुआ। उसकी चोंच की जड़ के पास से आँख के ऊपर होती हुई गरदन तक हलकी भूरी पट्टी। डैने, बड़े पंख, छोटे पंख और पखनी नर-जैसी। ठोड़ी, और गला हलका भूरा। नीचे का सारा हिस्सा भूरी और कत्थई धारियों से भरा। आँख गाढ़ी भूरी, आँख का घेरा हलका पीला। चोंच लाल, टाँगे गंदी पीली।

**निवास** : भटबन बहुत ही सुन्दर भटतीतर है, जिसे दक्षिणी भारत का पक्षी कहना ठीक होगा। यह यहाँ का बारहमासी पक्षी है, जो गुजरात, राजस्थान, कच्छ तथा मध्य भारत से लेकर दक्षिण तक के पठारों पर फैला हुआ है और उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर आदि दक्षिणी जिलों के पहाड़ी भागों में पाया जाता है पूर्व की ओर यह बिहार में राँची आदि पहाड़ी भागों पर भी मिलता है, लेकिन इसके पूर्व की ओर यह नहीं जाता। इसके अलावा इसे बम्बई और मालाबार समुद्र-तट की ओर भी देखा जा सकता है।

**विवरण** : भटबन हमारे यहाँ का बहुत प्रसिद्ध बारहमासी भटतीतर है, जिसकी आदतें अन्य भटतीतरों से कम मिलती हैं। यह एक दम खुले मैदान का पक्षी नहीं है और इसे ऐसे पठारों या पहाड़ी स्थानों पर देखा जा सकता है जहाँ तितरा-बितरा जंगल या झाड़ियों की बहुतायत हो। यह घने जंगलों में नहीं जाता और न ही इसे बड़े-बड़े गिरोह बनाना अच्छा लगता है। यह कभी तो जोड़ें में और कभी ८-१० के छोटे-छोटे गिरोहों में दिखाई पड़ता है, लेकिन कभी-कभी ऐसा जरूर होता है कि इसके छोटे-छोटे गिरोह आपस में मिल कर सौ दो-सौ का गिरोह बना लें और फिर चराई के बाद अलग-अलग हो जाएँ।

इनका मुख्य भोजन दाना, बीज और नरम कल्ले हैं लेकिन ये कभी-कभी दीमक आदि भी खा लेते हैं। भटबन बहुत ही सीधे

और भोले पक्षी हैं। इसकी उड़ान सीधी और तेज़ होती है। लेकिन ये आसमान में ज्यादा ऊँचाई तक जल्दी नहीं चढ़ पाते।

**घोंसला** : भटबन हमारे देश से बाहर न जा कर, यहीं अंडे देते हैं। इनके अंडा देने का समय अप्रैल से जून तक रहता है जब मादा जमीन पर छिछला गढ़ा बना कर उसी में अपने अंडे देती है। ये गढ़े अक्सर किसी झाड़ी या घास के नीचे रहते हैं जिसमें जल्दी ही उन पर दुश्मन की निगाहें न पड़ें। इनके अंडों की संख्या २ से ३ तक रहती है और इनका रंग हलका गंदा गुलाबी होता है। अंडों पर गाढ़ी कत्थई और बैंगनी रंग की बिंदियाँ पड़ी रहती हैं, जो एक सिरे पर कम और दूसरे पर ज्यादा रहती है।

नाप में ये अंडे १.५ × ०.१ इंच के होते हैं।

## २५३ कुहार भटतीतर (Common Sand-Grouse Pterocles Exustus)

**पर्याय** : प्रख्यात ककर, काकर, कुभा तित, बौरी, डंगर।

**पहचान** : यहाँ का बहुत प्रसिद्ध भटतीतर जो अन्य भटतीतरों की भाँति जमीन पर ही झुंड में बैठता है। इसका ऊपरी हिस्सा भूरापन लिये सिलेटी और नीचे पेट का भाग गाढ़ कत्थई रहता है। सीना हलका भूरा रहता है जिस पर एक काली पट्टी पड़ी रहती है।

**रंग-रूप** : लम्बाई १२ इंच। मादा नर से कुछ छोटी और उसकी दुम भी नर से कुछ छोटी होती है। नर की चोटी से दुमगज़े तक का ऊपरी हिस्सा तथा ऊपरी दुम-ढकना भूरापन लिये सिलेटी, जो चोटी की ओर हलका और दुम की ओर गाढ़ा होता है। ठोड़ी गोल और गला गंदा-पीला, जिसमें कभी-कभी नारंगी झलक। डैने के ऊपरी पर गाढ़े कत्थई। पखनी सिलेटी, जिसमें कुछ के सिरे कत्थई। छोटे पंख भूरे, बड़े पंख और डैने कत्थई। बड़े पंख के पाँच परों के किनारे सफेद। सीना हलका भूरा, जिस पर एक काली पट्टी। पेट गाढ़ा कत्थई। निचला दुम-ढकना हलका भूरा। दुम सिलेटी, लेकिन बीच के बढ़े हुए सींकनुमा पर गाढ़े कत्थई, जिनका सिरा काला। मादा का सारा ऊपरी हिस्सा हलका भूरा जिस पर काले-काले चिह्न। सीना भी भूरा और उस पर भी इसी प्रकार के चिह्न। पेट हल्का भूरा, लेकिन उसके आगे के हिस्सों पर गाढ़ी कत्थई धारियाँ। निचला दुम-ढकना हलका-भूरा, दुम, डैने और बगली हिस्से भूरे। चोंच सिलेटी। आखें गाढ़ी पीली। टाँगे सिलेटी।

**निवास** : कुहार भटतीतर यहाँ का सबसे प्रसिद्ध भटतीतर है, जो हमारे देश के पूर्वी भागों को छोड़कर, सारे देश में फैला हुआ है। बंगाल की ओर यह बहुत कम दिखाई पड़ता है और बंगाल और मालाबार के समुद्री तटों के आस-पास तो इसको देखना सम्भव नहीं। ये ऐसे स्थानों को अधिक पसन्द करता है, जहाँ वर्षा कम होती है और जहाँ की भूमि रेतीली, सूखी और समतल होती है। इसी कारण ये पठारों पर अधिक संख्या में दिखाई पड़ते हैं।

**विवरण** : कुहार भटतीतर यहाँ के बारहमासी पक्षी हैं, जिन्हें देश का ऐसा भाग पसन्द है जिसमें बरसात मामूली होती है और जहाँ की जमीन चौरस खुली और सूखी हो। ये ज्यादातर तीस-चालीस के गोलों में रहते हैं और इन्हें सूर्यास्त के समय खुले मैदानों और खेतों के आस-पास दाना वगैरह चुगते हुए देखा जा सकता है जो इनका मुख्य भोजन है। ये कीड़े नहीं खाते, बल्कि दाने आदि से ही अपना पेट भर लेते हैं। थोड़ा दिन चढ़ते ही ये चराई के स्थान को छोड़कर पास के नदी या ताल-तलैया के किनारे पानी पीने चले जाते हैं।

रात को भटतीतर किसी खुले मैदान में बसेरा लेते हैं और उस समय ये दिन की तरह फैले न रहकर आपस में खूब सट जाते हैं, जिससे पहरा देने में आसानी हो।

**घोंसला** : कुहार भटतीतर यहाँ का बारहमासी पक्षी है, जो थोड़ा-बहुत स्थान-परिवर्तन जरूर कर लेता है। इसके घोंसले भी ज्यादातर ऐसे नये जोते हुए खेतों के आस-पास मिलते हैं, जहाँ सरपत और छोटी-छोटी झाड़ियाँ वगैरह हों।

इनके अंडा देने का समय वैसे तो अप्रैल से जून तक है, पर इनके अंडे साल के सभी महीनों में मिल जाते हैं। ये घोंसले न बनाकर, जमीन में ही छिछला गड्ढा-सा बना लेते हैं, जिस में मादा २ या ३ अंडे देती है। इनके अंडों पर चमक-सी रहती है और रंग हलका पत्थरी या संदली होता है, जिन पर गाढ़ी जैतूनी भूरी या बैंगनी बिंदियाँ, धारियाँ व चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

नाप में ये अंडे १.४५ × १.०३ इंच के होते हैं।

## २५४ गुटू भटतीतर (Spotted Sand-Grouse Pterocles Senegallus)

**पर्याय** : बिन्दुकित ककर, नंगू कटिंगो।

**पहचान** : गुटू यहाँ का एक भटतीतर है जो अन्य भटतीतरों की तरह छोटे-बड़े झुंडों में जमीन पर ही रहते हैं। इनका ऊपरी हिस्सा हलका पिलछौंह कंजई और नीचे का, सीने से पेट तक का भाग हलका बादामी रहता है। पेट पर एक बड़ा-सा काला चित्ता पड़ा रहता है जिससे इसकी पहचान आसानी से हो जाती है।

**रंग-रूप** : लम्बाई १३ इंच। नर की चोटी से दुम तक का सारा ऊपरी भाग हलका पिलछौंह-कंजई। ऊपरी दुम-ढकना और दुमगजा पिलछौंह व हलका बादामी। सर के दोनों बगली हिस्से कंजई। ठोड़ी और गला चटक पीला। सीना कंजई। डैने

के ऊपरी पर हलके भूरे। छोटी पखनी भूरी, जिसके सिरे हलके। बीच की बड़ी और ऊपरी पखनी भूरी। डैने पर एक बड़ा-सा पिलछौंह चित्ता। छोटे और बड़े पंख भूरे, जिनके सिरे हलके। सीने से नीचे का सारा हिस्सा हलका पिलछौंह-भूरा, पेट के बीच में एक बड़ा-सा काला चित्ता। दुम के बीच के पर गंदे पिलछौंह, जिनका सिरा काला। दुम के बाकी पर कंजई-भूरे, जिनके सिरे सफेद। निचला दुम-ढकना सफेद या हलका बादामी।

मादा का ऊपर का सारा हिस्सा, डैने के ऊपरी पर और गरदन के दोनों बगली हिस्से, गला और सीना गुलाबीपन लिये भूरा, जिन पर धानी काली चित्तियाँ। गला, सर और गरदन का कुछ भाग पीला, नीचे का कुछ हिस्सा गुलाबीपन लिये भूरा। पेट के बीच में एक काला चित्ता। दुम तथा बड़े और छोटे पंख तथा पखनियाँ भी नर से मिलती-जुलती। चोंच-निलछौंह सिलेटी। आँख भूरी। टाँगे गंदी निलछौंह सिलेटी।

**निवास** : गुटू भटतीतर हमारे देश के लिए अन्य भटतीतरों की तरह मौसमी होने पर भी, पाकिस्तान के रेगिस्तानी हिस्सों तक में बारहों महीना रह जाते हैं। वैसे जाड़े में ये पंजाब, राजस्थान उत्तरी गुजरात और काठियावाड़ तक फैल जाते हैं, लेकिन गर्मी शुरू होते ही अन्य मौसमी पक्षियों की तरह ईराक, मिस्र और एबीसीनियाँ की ओर लौट जाते हैं।

**विवरण** : गुटू अक्सर पाँच से लेकर पचास तक के गोल में रहते हैं। कभी-कभी इनके गोल में नर ही नर रहते हैं और कभी-कभी मादा ही मादा, लेकिन इनके ऐसे भी गोल देखे जाते हैं, जिनमें नर मादा दोनों हों। ये सूखे मैदानों में अपने भोजन के लिए इधर-उधर घूमते रहते हैं और प्रायः मैदानों में सवेरे की धूप सेंकते हुए पड़े रहते हैं। इनका गोल दूसरे भटतीतरों की तरह बड़ा नहीं होता, लेकिन ये जितने भी होते हैं, सब एक साथ सुबह शाम पानी पीने के लिए सूखे मैदानों से उड़ कर ताल-तलैया या झरनों के निकट जाते हुए दिखाई पड़ते हैं। ये मैदान के अलावा खेतों में भी घुस जाते हैं।

गुटू बहुत शोर मचाने वाला भटतीतर है, जो उड़ते समय और एकाएक खतरा निकट देखकर जमीन से उड़ते समय बोलते रहते हैं। इतनी तेज 'क्कीडिल-क्कीडिल' से मिलती तेज बोली दूर से ही सुनाई पड़ती है। ये जमीन पर भी आसानी से नहीं छिप पाते और जब सूरज की किरणें इनके ऊपर पड़ती हैं, तो इनकी पोशाक चमक उठती है।

गुटू को घास-पात के मैदान पसन्द नहीं आते और ये रहने के लिए पठारों, पहाड़ों या रेगिस्तानों का सूखा मैदान चुनते हैं। ये बहुत ढीठ पक्षी हैं। इनका मुख्य भोजन दाना और बीज है लेकिन कभी-कभी ये कीड़े-मकोड़े भी खा लेते हैं।

**घोंसला** : मौसमी पक्षी होने के कारण यह हमारे देश में अंडे नहीं देते, पर इनमें से कुछ पक्षी भारत की सीमा पर रह जाते हैं और वहीं जमीन में छिछले गढ़ों में अंडे देते हैं। इनके अंडों का रंग हलका पिलछौंह पत्थरी होता है, जिस पर जैतूनी भूरी बिन्दियाँ तथा चित्तियाँ होती हैं। अंडे की सतह पर कभी-कभी बैंगनी चित्ते भी होते हैं।

अंडों की नाप १.५ × १.०५ इंच होती है।

## २५५ मोर (Peafowl : Pavo Gristatus)

**पर्याय** : मयूर, मंजूर, मूरैला, ताऊस, लंडूरी, मंजा।

**पहचान** : अपने सुन्दर राष्ट्रीय पक्षी को भला कौन नहीं पहचानता। नर की गरदन और सर गाढ़े चमकीले नीले रंग का रहता है और सर के ऊपर हरे और चमकीले नीले परों की एक कलँगी रहती है। इसका ऊपरी भाग सिलेटीमायल हरा जिस पर काले सेहरनुमा चिह्न और नीचे का चमकीला हरा रहता है। डैने भूरे होते हैं। मादा चितली भूरी रहती है। नर की दुम के पीछे काफी लम्बे पंखे रहते हैं, जिससे इसको पहचानने में भूल नहीं हो सकती।

**रंग-रूप** : नर की लम्बाई लगभग ४५ इंच होती है जो पूँछ समेत ९० इंच हो जाती है। मादा की लम्बाई लगभग ३४ इंच। मोर और मोरनियों के रंग-रूप में काफी भेद होता है। नर का सर और गरदन गाढ़ी चमकीली नीली, जिस पर सर के चारों ओर छोटे-छोटे हरे रंग के घुंघराले पर रहते हैं। माथे के ऊपर एक सुन्दर कलँगी, जिसके सिरे पर छोटे-छोटे चमकीले हरे और नीले पर। शरीर का ऊपरी हिस्सा सिलेटी मायल हरा, जिस पर काले सेहरेनुमा चिह्न।। गरदन के निचले भाग से लेकर नीचे का कुल हिस्सा चमकीला हरा और डैने भूरे। डैने के १० पहले पंख और पखनियाँ कत्थई, कुछ पंख काले और कुछ हलके भूरे, जिन पर तितरी-बितरी काली धारियाँ।

दुम भी भूरी, जिसके ऊपर के लम्बे पर जिन्हें मोर-पंख कहते हैं, काफी लम्बे और रंगीन होते हैं। इनमें से कुछ सिरे पर जा कर गोल हो जाते हैं और उनमें गाढ़े नीले रंग के अर्द्ध-चन्द्राकार चिह्न होते हैं।

मादा भूरे रंग की, जिस के माथे के ऊपर नर की तरह चोटी तो जरूर होती है लेकिन उस के अतिरिक्त उसकी पोशाक में कहीं नर की तरह का चमकीला रंग नहीं होता। ऊपर का रंग भूरा और नीचे का बादामी झलक लिये सफेद। गरदन का निचला भाग नर की तरह हरा और ऊपरी कत्थई। दुम-ढकने तथा डैने का बाहरी हिस्सा भूरी धारियों से भरा। दुम कलछौंह, जिस पर हलकी भूरी बिन्दियाँ। ठोड़ी, गला, सर तथा गरदन का कुछ हिस्सा सफेद। आँख गाढ़ी भूरी। चोंच हरछौंह भूरी या सिलेटी। टाँगें सिलेटी। चेहरे की नंगी खाल राखीपन लिये सफेद और नर की टाँगो में एक खार।

**निवास** : मोर जो राष्ट्रीय पक्षी घोषित हो चुका है, हमारे देश का बहुत प्रसिद्ध पक्षी है। यह भारतवर्ष में बंगाल और पाकिस्तान में सिन्धु नदी के उस पार के हिस्से को छोड़ कर भारत प्रायद्वीप में पाया जाता है। मोर को ज्यादा ऊँचाई पसन्द नहीं। हिमालय की दखिनी ढाल पर ये रहते तो हैं, लेकिन ३-४ हजार फुट से ऊपर नहीं जाते। नदियों, ताल-तलैयों और नहरों के पास-पड़ोस में, जहाँ छोटे-से भी जंगल या घने बाग होते हैं, मोर अक्सर दिखाई पड़ते हैं। इन्हें कभी-कभी राजस्थान के रेतीले मैदानों और ऊसरी स्थानों पर भी देखा जाता है।

**विवरण** : मोर सर्वभक्षी है जिसका भोजन मुख्यतया घास फूस, नरम कल्ले, दाना, बीज, कीड़े-मकोड़े, छिपकली, मेंढक तथा छोटे साँप हैं। हिमालय की तराई से लेकर मध्य प्रदेश के जंगलों और गंगा के किनारे के जंगलों में मोर और जगहों से ज्यादा मिलते हैं जहाँ इन को सबेरे शाम आस-पास के खेतों में दाना चुगते समय देखा जा सकता है। दाना चुगने के बाद ये रात में जंगलों में चले जाते हैं जहाँ ये सबसे ऊँचे पेड़ को बसेरा लेने के लिए चुनते हैं। मोर पीछा करने पर जमीन ही पर बहुत तेजी से भागता है और काफी दबाव पड़ने पर ही इसे अपने भारी शरीर को लेकर उड़ना पड़ता है।

मोर बसेरे के लिए वैसे तो जंगल का सबसे ऊँचा पेड़ तलाशते हैं, लेकिन वे बसेरा प्रायः सबसे निचली ही डाल पर लेते हैं और वहाँ रात को देर से पहुँचते हैं। जाड़ों में तो मोर अक्सर दिन चढ़ने तक डाली पर सोते ही रहते हैं। उसके बाद ये आस-पास के खेतों में चराई पर चले जाते हैं। तेज धूप हो जाने पर ये नजदीक के जंगल में चले जाते हैं, जहाँ नर पक्षी किसी ऊँचे टीले पर बैठ कर बोलता है। इसकी बोली सुनकर मोरनियाँ उस के पास जमा हो जाती हैं और फिर दोपहरी में किसी छायादार जगह में सब आराम करते हैं। शाम को फिर चराई शुरू होती है। मोर कभी-कभी तो उड़ाये जाने पर 'कोक-कोक-कोक' कर के उड़ते हैं और कभी वे 'पिहों-पिहों' कर के मादाओं को बुलाते हैं। कभी वे बिल्कुल बिल्ली की तरह 'मियाऊं-मियाऊं' जैसी बोली बोलते हैं। कभी-कभी चाँदनी रात में इनकी बोली रात भर सुनाई देती है।

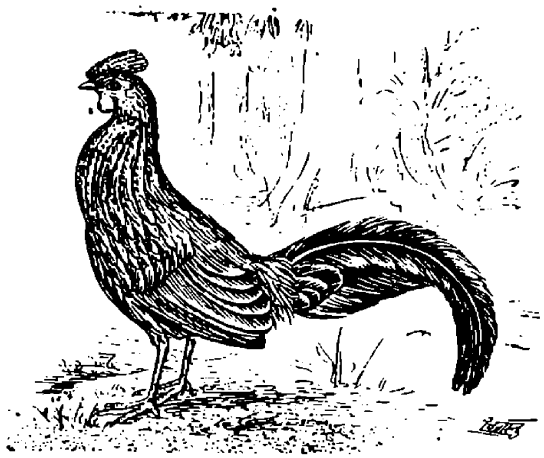
**घोंसला** : मोर बहुपत्नीक पक्षी है और बहुत-सी मादाओं का पूरा रनिवास रखता है। ये मोरनियाँ उसी के आस-पास रहती हैं। इसका जोड़ा बाँधने का समय गरमी के शुरू में आता है, जब नर मोर अपनी नयी भड़कीली पोशाक में बहुत सुन्दर लगता है। इस समय उसकी दुम बहुत ही सुन्दर दिखाई पड़ती है और उसका रंग बहुत चटक हो जाता है। अक्सर सबेरे की चराई के बाद नर अपनी दुम को गोलाकार फैला कर बड़े सुन्दर ढंग से मोरनियों के सामने नाचता है और थोड़ी-थोड़ी देर बाद दुम के परों को कँपाता है। इसके बाद मोरनियों के झुंड में से कोई उसकी थोड़े दिन की प्रेयसी बन जाती है। दूसरे नाच से मोर किसी दूसरी मोरनी को रिझाता है। यह क्रम तब तक चलता रहता है, जब तक कि उसके रनिवास की सब मोरनियों की संख्या समाप्त नहीं हो जाती।

यहाँ के बारहमासी पक्षी होने के कारण, मोर यहीं घोंसला बनाकर अंडे देते हैं। इनके घोंसले किसी झाड़ी के नीचे जमीन पर छिछले गढ़े की शक्ल के होते हैं, जिन में थोड़ी घास-फूस रखकर मोरनी जुलाई-अगस्त में ६-७ अंडे देती है। कभी-कभी मोर गाँवों में छप्परों पर और कभी ऊँचे टीलों पर भी अंडे देते देखे गये हैं। इनके अंडे बहुत चमकीले और आकार में ३.० + २.०५ इंच के लगभग होते हैं, जिनमें कुछ का रंग तो बिल्कुल सफेद होता है और कुछ ललछौंह या हलके गुलाबी रंग के होते हैं। कुछ अंडों पर चित्तियाँ भी होती हैं, लेकिन ज्यादातर बिना चित्ती के ही होते हैं।

## २५६ कुमरी (Grey Jungle-Fowl : Gallus Sonnerati)

**पर्याय** : भूरी, जंगली मुरगी, यवग्रीव वनकुक्कुट।

**पहचान** : कुमरी पालतू मुरगियों की शक्ल-सूरत की होती है जिसके नर का सारा शरीर सिलेटी धारियों से भरा रहता है और मादा का निचला हिस्सा कुछ सफेद रहता है। नर की दुम के पर गोलाई लिये लम्बे और काले होते हैं।



कुमरी

**रंग-रूप** : कुमरी के नर मादा के रंग-रूप में भी भेद होता है और कद में भी नर, मादा से बड़ा होता है। नर की लम्बाई लगभग ३० इंच और उसकी चोटी और गरदन पर के बढ़े हुए पर काले और सिलेटी और उनके बीच में एक सफेद चित्ता और सिरे पर पीला चित्ता। पीठ और दुमगज़े के पर काले, जिनके बीच का हिस्सा सफेद और किनारे का कंजई। ऊपरी दुम-ढकना चमकीला बैंगनी और दुम चमकीली काली। पखनियाँ काली, जिनमें से कुछ के सिरे पर लम्बे कत्थई चित्ते। बड़े पंखों में से

पहले दस पंख भूरे और बाकी काले । निचले हिस्से के सारे पर काले और सिलेटी रहते हैं तथा शरीर के बगली हिस्से पर कत्थई झलक । टाँगों में १.३ इंच लम्बा तेज़ खार ।

मादा का सर भूरा जिस पर चटक भूरी लकीरें। पीठ से लेकर दुम तक का सारा भाग भूरा, जिस पर गाढ़ी भूरी चित्तियाँ और चिह्न । गरदन का ऊपरी भाग गाढ़ा भूरा, जिस पर हलकी बादामी लकीरें । डैने पर भी कत्थई धारियाँ और चिह्न तथा बड़े पंख के पहले दस पंख गाढ़े भूरे और बाकी पिल्छौंह भूरे और काले चिह्नों से भरे। दुम कलछौंह और कत्थई चिह्नों से भरी और गला हलका सिलेटी। नीचे का सारा हिस्सा सफेद और यहाँ के परों के किनारे गाढ़े सिलेटी । आँख नारंगी या पिल्छौंह लाल । चोंच काली, जड़ के पास जैतूनी । टाँगें जैतूनी पीली । सर पर की कलँगी और गले के नीचे लटकने वाली थैलीनुमा मांस की गद्दी गंदे लाल रंग की ।

**निवास** : कुमरी पक्षी दक्षिण भारत की जंगली मुरगी है जो ज्यादातर वहाँ के पहाड़ी जंगलों में पायी जाती है । वैसे, पूर्व की ओर गोदावरी तक, पश्चिम की ओर नर्मदा तक और उत्तर की ओर विन्ध्य पर्वत के पश्चिम से होते हुए अरावली और आबू पर्वत तक का प्रदेश इनके रहने का स्थान कहा जा सकता है ।

जंगली मुरगी की तरह कुमरी को भी ऐसे पहाड़ी जंगल पसन्द है, जिसके आस-पास गाँव और खेत हों, लेकिन यह उसकी तरह झुंड में न रह कर, ज्यादातर अकेली या जोड़े में रहती है । ये जंगलों में कुछ ज्यादा ऊँचाई तक चली जाती है और इसे ५-६ हजार फुट तक देखा जा सकता है ।

**विवरण** : कुमरी बारहमासी पक्षी है, जो यहीं रहता है। प्रवास-गमन नहीं करता। इसकी बोली मुरगियों की तरह न होकर 'कक्-का का-काक' से कुछ मिलती-जुलती होती है, जो अक्टूबर से मई तक सबेरे के समय अक्सर सुनाई पड़ती है । दिन में भी कभी-कभी इसकी आवाज सुनाई पड़ती है, लेकिन ऐसा केवल बदली के दिनों में ही होता है ।

उड़ाये जाने पर ये 'कक-कक-कक' करते हुए जब पेड़ पर बैठते हैं तो काफी देर तक बोलते रहते हैं । कुमरी सबेरे और शाम को घने जंगलों से निकल कर पास-पड़ोस के मैदानों में चरती है और दिन की गरमी में छाये में बैठकर आराम करने लगती है । इन्हें तितरे-बितरे और बाँस के जंगल ज्यादा पसन्द हैं। ये वैसे तो झुंड में न रहकर, जोड़े में या अकेली ही रहती हैं, लेकिन जहाँ पर खाने की सहूलियत होती है, वहाँ ये तब तक गोल में भी रह लेती हैं जब तक वहाँ खाने का भण्डार खत्म नहीं हो जाता । कुमरी शरमीली चिड़िया नहीं है और इन्हें प्रातः काल ऐसे मैदानों और जंगली सड़कों पर, जहाँ इन्हें दाने आदि मिल सकते हों; आसानी से देखा जा सकता है ।

जून में कुमरी के पंख गिरने लगते हैं और बरसात में डैने और दुम के पंख भी गिर जाते हैं । और तब यह एक प्रकार से लुंज हो जाती है तथा उड़ने में असमर्थ हो जाने के कारण, शायद इस बीच वह बोलना भी बन्द कर देती है । लेकिन जब फिर सितम्बर के अन्त में या अक्टूबर में इसके नये पंख निकल आते हैं और यह अपनी पोशाक में बहुत सुन्दर लगने लगती है, तब इसकी बोली से फिर जंगल गूँजने लगते हैं ।

कुमरी की और सब आदतें जंगली मुरगी से मिलती-जुलती हैं और रात में यह पेड़ की किसी सीधी डाल पर उसी की तरह बसेरा भी लेती है । लेकिन यह जंगली मुरगी से कहीं ज्यादा चालाक होती है। ये अपने रहने के जंगल से दो ही चार गज़ बाहर निकल कर चरती है और जरा-सी आहट पाते ही फौरन जंगल में घुस जाती है । ये सर्वभक्षी चिड़िया है, जो दाना, घास व जंगली फल-फूल के अलावा, कीड़े-मकोड़े भी बड़ी खुशी से खाती है।

**घोंसला** : जंगली मुरगी की तरह कुमरी के अंडा देने का समय भी उत्तर और दक्षिण में भिन्न रहता है । कहीं-कहीं इसके अंडे अक्टूबर और नवम्बर में और कहीं-कहीं फरवरी से मई के बीच पाये जाते हैं । मादा उस समय अपना घास-फूस का घोंसला किसी घने जंगल के बीच में जमीन पर ही बनाती है, जिसके लिए यह कई दिन मेहनत करके सूखी घास-पत्ती और लकड़ियाँ जमा करती है । इनके अंडों की संख्या ७ से १२ तक होती है और उनका रंग हलका भूरी या पत्थरी रहता है । वैसे तो ये अंडे सादे ही होते हैं, किन्तु कभी-कभी उन पर भूरी बिंदियाँ भी होती हैं ।

ये अंडे नाप में करीब १.८९ × १.३८ इंच के होते हैं ।

## २५७ जंगली मुरगी (Red Jungle-Fowl : Gallus Gallus)

**पर्याय** : बन मुरगी, बनकुकड़ा, रक्तवन-कुक्कुट ।

**पहचान** : जंगली मुरगी हमारी पालतू मुरगियों के ही रंग-रूप की होती है। नर के गले पर के लम्बे पर नारंगी मायल भूरे रहते हैं और पीठ तथा नीचे का भाग काला रहता है। नर की दुम के दो पंख काफी लम्बे काले और नीचे की ओर झुके रहते हैं । मादा छोटी और चितली होती है ।

**रंग-रूप** : जंगली मुरगी के नर और मादा के रंग-रूप में थोड़ा भेद होता है और कद में भी नर मादा से कुछ बड़ा रहता है । नर की लम्बाई लगभग २८ इंच और उसकी चोटी और गले के लम्बे पर सुनहले भूरे और नारंगी लाल । पीठ काली, जो ऊपरी गरदन के लम्बे परों से ढकी रहती है । दुमगजा कत्थई लाल और दुम काली जिसमें एक प्रकार की हरी चमक । डैने की कुछ पखनियाँ चमकीली काली और कुछ कत्थई । बड़े पंखों

के पहले दस पंख काले और बाकी काले कत्थई। गले के पर नारंगी लाल और नीचे का सारा हिस्सा एकदम काला।

मादा की चोटी कत्थई भूरी और पीठ का सारा हिस्सा पिलछौंह भूरा या बादमी तथा काले और सफेद चिह्नों से भरा। दुम गाढ़ी भूरी, जिसके किनारे पर हलकी भूरी बिंदियाँ। नीचे का सारा भाग ललछौंह कत्थई, जिसमें सीने के पास का रंग कुछ चटक। आँख नारंगी लाल। चोंच गाढ़ी भूरी, जड़ के पास ललछौंह। टाँगें गाढ़ी सिलेटी।

नर की टाँगों में एक तेज़ और टेढ़ा खार रहता है जिसकी लम्बाई लगभग एक इंच होती है। सर की कलँगीनुमा चोटी, जो ऊपर कटी-कटी होती है, गंदे लाल रंग की होती है। मादा की यह चोटी बहुत छोटी होती है। सर के बगल ठोड़ी से लेकर गले की लटकती हुई खाल भी इसी रंग की होती है। नर की दुम के बीच के दो पंख काफी लम्बे टेढ़े और नीचे की ओर तलवार की तरह झुके रहते हैं।

**निवास** : जंगली मुरगी हमारे यहाँ की बहुत प्रसिद्ध चिड़िया है, जिसे ऐसे पहाड़ी जंगल ज्यादा पसन्द हैं, जिनके आस-पास गाँव और खेती होती हो। यह देश के ऐसे स्थानों में तीन-चार हजार फुट की ऊँचाई तक दिखाई पड़ती है। हिमालय की तराई में बंगाल के पूर्वी हिस्सों में और मध्य भारत की पश्चिमी पहाड़ियों से लेकर पूर्वी और उत्तरी पहाड़ियों में, ये मुरगियां फैली हुई हैं। दक्षिण भारत की पहाड़ियों और राजस्थान के पश्चिम के जंगलों की ओर भी ये मिलती हैं। पर इन्हें काठियावाड़, कच्छ और पंजाब में पाना कठिन होता है। उत्तर प्रदेश में भी ये तराई के जंगलों के अलावा, मिर्जापुर की बाँस से भरी पहाड़ियों में काफी संख्या में मिलती हैं।

**विवरण** : जंगली मुरगी यहाँ की बहुत प्रसिद्ध शिकारी चिड़िया है, जो हमारे देश के तराई के भागों में और पहाड़ियों पर के जंगलों में अधिक संख्या में पायी जाती है। इसकी शक्ल-सूरत देशी मुरगी से इतनी मिलती-जुलती है कि यदि दोनों साथ कर दी जाँय तो जल्दी पहचानना कठिन है।

यह दिन के समय तो किसी घनी झाड़ी या बाँस के झुरमुट में घुसी रहती हैं, लेकिन सबेरे और शाम को इनका जोड़ा या गिरोह मैदानों में चराई के लिए निकलता है। देशी मुरगों की तरह ये सबेरे तो बोलते ही हैं, लेकिन चराई के समय इनकी 'कुत्डूं कुं' आसानी से सुनी जा सकती है। ये जंगल के सर्वभक्षी पक्षी हैं, जो गल्ले के अलावा कीड़े-मकोड़े भी आसानी से खाते हैं।

जंगली मुरगी बारहमासी चिड़िया है, जो अपनी सुविधा को देखकर गरमी और बरसात में जंगल के घने भागों में तो चली जाती है, लेकिन यह अपना निश्चित स्थान छोड़कर दूसरे स्थान को नहीं जाती।

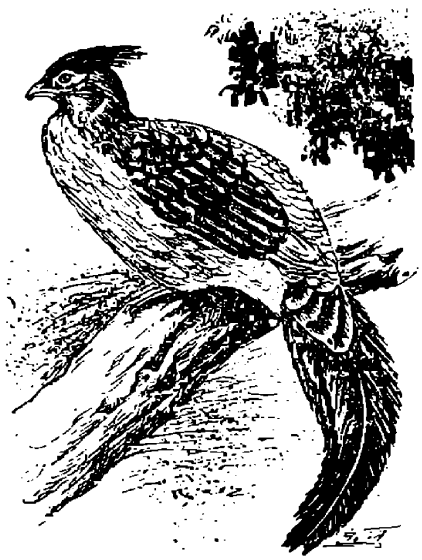
**घोंसला** : जंगली मुरगी के अंडा देने का समय देश के उत्तरी हिस्से में अप्रैल और जून है, पर दक्षिण की ओर जनवरी से मार्च के बीच होता है। मादा जोड़ा बाँधने के समय अक्सर किसी घने बाँस की कोठ में कभी तो घास-फूस रखकर मुलायम कर लेती है, जिसमें वह ८-१० अंडे देती है। इनका रंग हलका पिलछौंह या पत्थरी होता है और ज्यादातर अंडों में कुछ चमक भी होती है।

अंडों की नाप करीब १.५ × १.७५ इंच होती है।

## २५८ कालिज (Common Kalij Pheasant : Gennaeus Leucomelanus)

**पर्याय** : प्रख्यात कालज, कलेमुर, रचावो, कलेसी, कोलसा।

**पहचान** : पहाड़ों पर पाया जाने वाला पक्षी जिसके सर पर काली चोटी रहती है, ऊपर का सारा हिस्सा बैंगनी झलक लिये काला रहता है और नीचे का भाग सफेद रहता है जिस पर खड़ी गाढ़ी भूरी धारियाँ पड़ी रहती हैं।



कालिज

**रंग-रूप** : कालिज के नर मादा के रंग-रूप में भेद होता है। मादा नर से छोटी होती है। नर की लम्बाई लगभग ५० इंच और उसकी चोटी और शरीर का ऊपरी भाग चमकीला काला, जिसमें एक प्रकार की बैंगनी और नीली झलक। पीठ पर परों के किनारे सफेद, जिससे सारा ऊपरी भाग सेहरानुमा जान पड़ता है। डैने और दुम के पर कलछौंह भूरे, जिनमें हरी चमक। शरीर के नीचे का भाग सफेदी मायल गाढ़ा भूरा, जिस पर खड़ी-खड़ी खैर रंग की टूटी-फूटी धारियाँ।

मादा के शरीर का ऊपरी हिस्सा और चोटी कलछौंह भूरी या कत्थई रंग की। पीठ पर काली टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें और वहाँ के परों के सिरे सफेद। डैने और नीचे का हिस्सा नर जैसा, लेकिन

उससे कुछ हलके रंग का। दोनों का गला और ठोड़ी सफेद और दोनों की लम्बी खैरे रंग, नीचे की ओर झुकी दुम के बीच के दो पर हरछौंह काले। आँख नारंगी भूरी, आँख के चारों ओर की बिना परों की खाल चटक लाल। चोंच हलके सींग के रंग की, जिसका सिरा कलछौंह। टाँगें बैंगनीपन लिये हलकी गुलाबी, जिसमें नर की टाँगों में एक मजबूत खार।

**निवास** : कालिज हमारे यहाँ के प्रसिद्ध वनमुर्गों में से एक है, जो हिमालय के मध्य प्रदेश के जंगलों की पट्टी में कुमायूं से कश्मीर तक फैले हैं। इन प्रदेशों में कालिज को अपनी सुविधा के कारण कहीं-कहीं तो काफी देखा जाता है और कहीं-कहीं इनका कतई पता नहीं चलता। जाड़ों और वसन्त के दिनों में, अन्य वनमुर्गों की तरह ये काफी नीचे उतर आते हैं और इनका गिरोह पानी के आस-पास देखा जा सकता है, पर गरमियों में ये फिर नौ-दस हजार फुट की ऊँचाई पर चढ़ जाते हैं।

**विवरण** : ऐसी पहाड़ी घाटियों, जहाँ झरने के आस-पास काफी संख्या में बाँस हों और कुछ खेत भी हों, कालिज के मिलने की ठीक जगह समझनी चाहिए। कालिज भाग और उड़ने में सबसे तेज होने के कारण भी दूसरे वनमुर्गों से अधिक ढीठ होता है और अक्सर जंगल में आबादियों के करीब तक आ जाता है। इसे भी घना जंगल पसन्द नहीं। कालिज बड़े झुंड बनाकर नहीं रहते, ये ४-५ से १० तक तो एक साथ दिखाई पड़ते हैं। पीछा करने पर ये उड़ने की अपेक्षा, भागना ही ज्यादा पसन्द करते हैं। उड़ने पर ये पास के पेड़ों पर बैठना कम पसन्द करते हैं और काफी दूर जाकर ही जमीन पर उतरते हैं।

कालिज उड़ते समय तो जोर से बोलते ही हैं, दिन में वैसे भी इनकी तेज आवाज अक्सर सुनाई पड़ती है। लेकिन आदमियों को करीब आते देखकर अक्सर ऐसे चुपचाप बैठ जाते हैं कि इनकी कुछ आहट भी नहीं मिलती। इनकी आँख से आँख मिली नहीं कि ये मुरदे की तरह पेड़ पर से जमीन पर टपक पड़ते हैं और फिर घास में छिपे-छिपे जमीन ही जमीन दूर भाग जाते हैं। इनका मुख्य भोजन अन्य वनमुर्गों की तरह, फल-फूल, कंद-मूल, दाना और कीड़े-मकोड़े हैं।

**घोंसला** : यहाँ का बारहमासी पक्षी होने के कारण, कालिज यहीं जोड़ा बाँध कर अंडे देता है। जोड़ा बाँधने के समय, नर मादा को रिझाने के लिए पंख फैलाकर अपने डैने इतने तेजी से चलाता है कि उससे ढोल की-सी गम्भीर आवाज निकलती है।

कालिज के अंडे देने का समय मई जून है, जब मादा किसी गढ़े में घास-फूस, सूखी पत्तियाँ आदि भर कर उनके बीच अंडे देती है। ये गढ़े किसी झाड़ी, चट्टान या घास-फूस की आड़ में छिपे रहते हैं। ये अंडे संख्या में ८-९ तक होते हैं, जिनका रंग पत्थरी होता है। इन पर एक प्रकार की चमक भी रहती है।

अंडे नाप में १.९४ × १.४४ इंच के होते हैं।

## २५९ कोकलास (Koklas Pheasant : Pucrasia macrolopha)

**पर्याय** : पालाश जीवक।

**पहचान** : पहाड़ी मुरगियों की जाति का पक्षी, जिसके नर के सर पर काली चोटी रहती है। उसका ऊपरी हिस्सा और डैने राखी रहते हैं और नीचे का भाग कत्थई रहता है।

**रंग-रूप** : कोकलास के नर मादा में थोड़ा फर्क होता है और मादा कद में नर से कुछ छोटी भी होती है। नर की लम्बाई लगभग २५ इंच और मादा की लगभग २१ इंच। नर का सर और चोटी चमकीली काली। शरीर का सारा ऊपरी भाग और डैने राखी, जिसमें बगल का कुछ भाग सफेद। चोटी के बीच के छोटे पर हलके भूरे और गरदन के दोनों बगल का कुछ भाग सफेद। शरीर का सारा ऊपरी भाग और डैने राखी, जिनमें प्रायः सब परों के बीच तक काली धारी। इससे दूर इसका सारा पृष्ठ भाग काली धारियों से भरा जान पड़ता है। बड़े पंख गाढ़े भूरे, जिनके किनारे के पाँच पंख कत्थई। दुम के बीच के पर कत्थई, जिनके सिरे सिलेटी और बाकी पर जड़ के पास काले और कत्थई तथा सिरे पर धुर काले। गरदन का निचला भाग, सीना और पेट गाढ़े कत्थई। बगल का हिस्सा राखी, जिसमें पतली काली धारियाँ। निचले दुम-ढकने के पर कत्थई और उनके सिरे सफेद।

मादा का सारा ऊपरी हिस्सा और डैने का ऊपरी भाग ललछौंह भूरा और उस पर काली धारियाँ और चित्तियाँ। बड़े पंख और दुम नर-जैसी। आँख के ऊपर से चोटी तक काली बिंदियों से भरी हुई एक चौड़ी ललछौंह पट्टी। सर का बगली हिस्सा कत्थई, जिस पर काली धारियाँ। ठोड़ी और गला और गरदन के बगली की पट्टी सफेद। नीचे का हिस्सा सफेद ललछौंह और काले त्रिकोणों से भरा। दुम के नीचे के पर काले और कत्थई तथा उनके सिरे सफेद। आँख गाढ़ी भूरी। चोंच काली। टाँगें हलकी सिलेटी या सींग के रंग की।

**निवास** : कोकलास भी यहाँ का बहुत प्रसिद्ध वनमुर्ग है, जो कुमायूं से कश्मीर के पश्चिमी हिस्सों तक ७,००० से ४,००० फुट की ऊँचाई के जंगलों में फैला है, हिमालय की इसी पट्टी को इसका निवास-स्थान कहा जा सकता है। कोकलास, मोनाल, और चेड़ की तरह, शिकारियों का जाना-पहचाना हुआ पक्षी है।

**विवरण** : कोकलास अक्सर जोड़े में या अकेले दिखाई पड़ते हैं, लेकिन इनके पिलोरे (चूजे) जब तक बड़े नहीं हो जाते, गिरोह में ही रहते हैं, ऐसे जंगलों में, जहाँ घास ज्यादा ऊँची नहीं होती। कोकलास आहट पाते ही या तो उड़ जाते हैं या तो जमीन पर ही बड़ी तेजी से दूर भाग जाते हैं। लेकिन जहाँ इनको छिपने के लिए लम्बी घास मिल जाती है, वहाँ वे तीतरों की तरह ऐसा दबक जाते हैं कि काफी कोशिश करने पर ही उन्हें उड़ने पर मजबूर किया जा सकता है।

कोकलास की उड़ान बहुत तेज होती है और जब ये अचानक पंख मार कर उड़ते हैं तो आदमी चौंक पड़ता है। ये उड़ते समय कभी-कभी बोलते भी हैं। वैसे इनके नर प्रायः नित्य सवेरे और दिन को बोलते ही रहते हैं। घने जंगलों में प्रायः डर कर आस-पास के सभी कोकलास बोलने लगते हैं। इसी तरह से बादल गरजने पर मोरों की तरह से, एक को बोलने पर सभी कोकलास एक साथ बोलने लगते हैं।

कोकलास का मुख्य भोजन नरम पत्तियाँ, कलियाँ, जड़ें और फल-फूल हैं, पर ये कीड़े-मकोड़े भी खा लेते हैं। इनके बसेरा लेने की जगह पेड़ ही हैं, पर ये झाड़ियों में भी रात काट लेते हैं।

**घोंसला** : कोकलास यहाँ का बारहमासी पक्षी है जो यहीं जोड़ा बाँध कर अपने अंडे देता है। कुछ लोगों का ख्याल है कि ये अगर जिन्दगी भर के लिए नहीं तो कई साल के लिए जोड़ाबाँध ही लेते हैं। ये अप्रैल से जून के बीच में घोंसला बना कर अंडे देते हैं, जो ३,००० से १२,००० फुट तक की ऊँचाई पर पाये जाते हैं।

इनका घोंसला जमीन में गढ़ा-सा होता है जिसे ये किसी चट्टान, झाड़ी या किसी पुराने सूखे पेड़ के तने के नीचे खोद लेते हैं। मादा इसी गढ़े में ५-७ अंडे देती है, जो हलके बदामी या पत्थरी रंग के होते हैं और जिन पर गाढ़ी कत्थई चित्तियाँ होती हैं।

अंडों की नाप लगभग २.०८ × १.४७ इंच होती है।

## २६० पोकरास (Nepal Koklas : Pucrasia Nipalensis)

**पर्याय** : नेपाल पालाश जीवक।

**पहचान** : हमारे यहाँ की प्रसिद्ध पहाड़ी मुरगी जिसका रंग-रूप बहुत कुछ कोकलास-जैसा ही होता है। इसको कोकलास से अलग करना कठिन होता है।

**रंग-रूप** : पोकरास के नर मादा के रंग-रूप में थोड़ा भेद होता है, नर का रंग तो करीब-करीब कोकलास के नर-जैसा ही होता है, जिसका यह निकट सम्बन्धी है। इसकी लम्बाई लगभग २२ इंच। ऊपरी गरदन के नीचे और सीने के दोनों बगल का रंग कोकलास की तरह धारीदार न हो कर, धुर काला और उसके किनारे राखी। पीठ, दुमगज़ा और दुम के पर छोटे और काले जिनके किनारे कत्थई। डैने का बाहरी हिस्सा भी काला लेकिन उसके किनारे कत्थई। सीना और पेट काकलास की तरह चटक खैरे रंग का और शरीर का बाकी हिस्सा कोकलास जैसा। मादा कोकलास के मादा जैसी। आँख गाढ़ी भूरी। चोंच काली। टाँगें राखी। नर की टाँग में एक तेज खार होता है।

**निवास** : पोकरास वैसे तो नेपाल का पक्षी है, लेकिन नेपाल के बाहर भारतीय सीमा में भी इन्हें कुछ अन्दर तक आसानी से देखा जा सकता है। इसके अलावा, भारत में या भारत से बाहर नहीं मिलता।

**विवरण** : पोकरास, कोकलास से बहुत मिलता-जुलता और उस जाति का पक्षी है। इसकी आदतें भी वैसे ही होती हैं। ये घने जंगल का रहने वाला पक्षी है, जो खतरा निकट देख कर उड़ने की अपेक्षा, भागना अधिक पसंद करता है। ये पहाड़ों पर बहुत ऊँचाई तक नहीं जाता बल्कि ढाल पर के जंगलों में रहना अधिक पसंद करता है। यह प्रायः अकेला या जोड़े में दिखाई पड़ता है लेकिन कभी-कभी चराई की सुविधा को देखकर बहुत से जोड़े एक ही स्थान में भी इकट्ठे हो जाते हैं। यह भी दबाव पड़ने पर कोकलास की तरह ही, बहुत तेजी उड़ता है। पोकरास भी कोकलास की तरह है कोक-कोक पोकरास कोकरास से मिलती-जुलती बोली बोलते हैं और इसी से शायद इनका नाम पड़ा है। इनका मुख्य भोजन दाना, बीज और कीड़े-मकोड़े हैं।

**घोंसला** : पोकरास के जोड़ा बनाने का समय अप्रैल से जून तक है। तब यह किसी झाड़ी या पत्थर के नीचे छिछले गढ़े में घास-फूस या पत्ती बिछाकर अपना घोंसला बनाते हैं। मादा ५ से ९ तक अंडे देती है जो हलके भूरे रंग के होते हैं और जिन पर कत्थई चित्तियाँ भी पड़ी होती हैं।

नाप में ये अंडे लगभग १.८५ × १.३९ इंच के होते हैं।

## २६१ जोवार (Western Horned Pheasant or Tragopan : Tragopan melanocephalus)

**पर्याय** : सिंह मोनाल, फुल गुर, जिगुराना, नर-बोदल, पश्चिम भृंगी जीवक।

**पहचान** : जोवार का सर, गरदन और चोटी काली रहती है। शरीर का ऊपरी हिस्सा हलका भूरा जिस पर काली और जैतूनी भूरी धारियाँ और बिंदियाँ रहती हैं। दुम काली और सीने का भाग कत्थई तथा नीचे का शेष भाग हलका रहता है।

**रंग-रूप** : सिंह मोनाल की लम्बाई २७ इंच और नर मादा के रंग में फर्क होता है। नर का पूरा सर और गरदन व चोटी काली, जिसका किनारा गाढ़े लाल रंग का, ऊपर का सारा हिस्सा हलके भूरे रंग का, जिस पर काली और जैतूनी भूरी बिंदियाँ और धारियाँ। यहाँ के हर पर के ऊपर एक-एक सफेद चित्ता, जो एक काले घेरे से घिरा रहता है। दुम काली और सिरे के अलावा, भूरी धारियों से भरी। डैने के बड़े पंखों पर भी भूरी पट्टियाँ। नीचे का सारा हिस्सा सिलेटी भूरे रंग का, जिस पर काली और हलके बादामी रंग की बिंदियाँ और धारियाँ। गरदन के ऊपरी भाग का कुछ हिस्सा कत्थई मायल और नीचे का सारा भाग ऊपर की अपेक्षा हलका। यहाँ के सभी परों के सिरों पर एक-एक सफेद चित्ता। इस चित्ते के चारों ओर एक काली रेखा। डैने के बड़े पंख के आधे हिस्से पर हलकी भूरी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं और आधा भाग सादा भूरा। आँख भूरी। चोंच काली। टाँगें प्याजी व सिलेटी। चेहरे पर की नंगी खाल लाल और आँख के पीछे का सींगनुमा मांस का लोथड़ा नीला। नर की टाँग में एक खार रहता है।

**निवास** : जोवार हिमालय प्रदेश का प्रसिद्ध पक्षी है जो गढ़वाल के पश्चिम से कश्मीर तक फैले हुए हैं। ये काफी ऊँचाई पर रहने वाले पक्षी हैं, जो १३ हजार फुट के आस-पास बर्फीले

प्रदेशों में रहना ज्यादा पसन्द करते हैं। लेकिन गरमियों में ये ८ हजार फुट तक उतर आते हैं।

**विवरण** : जोवार गढ़वाल से कश्मीर तक हिमरेखा के निकट रहने वाले प्रसिद्ध पक्षी हैं, जो गरमियों में नीचे उतर कर घने जंगलों में फैल जाते हैं। ये अकेले या छोटे गिरोहों में रहते हैं और अपने रहने के लिए बाँस के घने जंगल पसन्द करते हैं। यह यहाँ के बारहमासी पक्षी हैं जो मौसम के हिसाब से स्थान परिवर्तन तो जरूर कर लेते हैं लेकिन देश से बाहर नहीं जाते। दूसरे वनमुर्गों की तरह ये बराबर बोलते नहीं रहते, खतरा निकट आने पर इनके सतर्क होने की बोली कभी-कभी जरूर सुनाई पड़ जाती है। ये बोली भेड़ के बच्चों से बहुत कुछ मिलती-जुलती है। वैसे तो ये ढीठ होते हैं लेकिन कोई खतरा होने पर पेड़ों के बीच ऐसे छिप जाते हैं कि बोली सुने बिना इनका पता नहीं चलता। इसकी उड़ान बहुत तेज व फुर्तीली होती है। जोवार की बाकी आदतें लूगी से इतनी मिलती-जुलती हैं कि दोहराने की आवश्यकता नहीं है। इनका मुख्य भोजन जंगली फल-फूल, बीज, नरम कल्ले और जड़ें है, परन्तु ये कीड़े-मकोड़े भी खा लेते हैं।

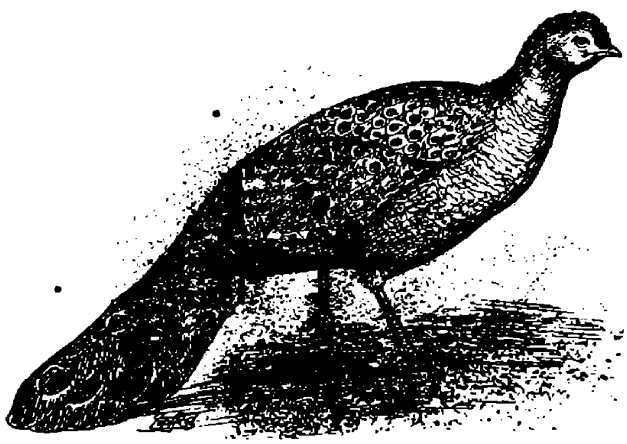
**घोंसला** : लूगी आदि की तरह जोवार मादा भी जमीन के किसी छिछले गढ़े में घास-फूस एकत्र कर ६-७ अंडे देती है, जो हलके भूरे होते हैं और उन पर कत्थई चित्तियाँ पड़ी होती हैं।

नाप में ये अंडे २.४५ × १.७१ इंच के होते हैं।

## २६२ कठमोर (Pocock Pheasant : Polyplectron bicalcaratum)

**पर्याय** : देव दहक, देव दुरग, मनोहर, घूसर जीवंजीवक।

**पहचान** : इस पहाड़ी पक्षी का ऊपरी हिस्सा, डैने और दुम भूरी रहती है। गरदन पर पतली सिलेटी और गाढ़ी भूरी धारियाँ पड़ी रहती हैं। शरीर के ऊपरी भूरे भाग पर सफेद बिंदियाँ पड़ी रहती हैं। इसी प्रकार की सफेद बिंदियाँ नीचे के गाढ़े भूरे भाग पर भी रहती हैं।



कठमोर

**रंग-रूप** : कठमोर के नर और मादा के रंग-रूप में भेद होता है। नर की लम्बाई लगभग २५ इंच और चोटी पर के पर चित्तीदार। गरदन के ऊपरी हिस्से पर पतली-पतली सिलेटी और भूरी धारियाँ। शरीर का सारा ऊपरी भाग, डैने और दुम भूरी, जिस पर सफेद बिंदियाँ। पीठ के अगले भाग और डैने पर के परों पर चमकीले, गोल बैंगनी चित्ते पड़े होते हैं, जिनके चारो ओर एक सफेद घेरा। दुम के परों पर दो-दो बड़े अंडाकार चमकीले या हरे पंखनुमा चित्ते जिनके चारों ओर एक काली और उस पर एक सिलेटी धारी। गला सफेद और नीचे का सारा हिस्सा गाढ़ा भूरा, जिस पर सफेद चित्तियाँ।

मादा का सारा ऊपरी भाग, डैने का बाहरी हिस्सा और दुम गाढ़ी भूरी या कलछौंह, जिसमें दुमगजे पर तिकोने चिह्न पड़े और पीठ तथा डैने के परों पर सिरे के पास काला चित्ता। इस चित्ते में सफेद बिंदियाँ भी होती हैं। दुम के बीच के दो परों को छोड़कर, बाकी सब परों पर दो चमकीली आँख जैसे कलछौंह धब्बे। गला सफेद। नीचे का भाग सारा भूरा जिस पर हलकी बादामी चित्तियाँ। आँख सफेद। चोंच भूरी या कलछौंह। टाँगें गाढ़ी सिलेटी। नर की टाँगों में तीन से चार तक खार और चेहरे की नंगी खाल हलकी पीली।

**निवास** : कठमोर को यह नाम उसकी मोर-जैसी शक्ल-सूरत और रंग-रूप के कारण मिला है। यह हिमालय प्रदेश का पक्षी है और वहाँ लगभग ६ हजार फुट की ऊँचाई तक भूटान से आसाम तक फैला हुआ है। हमारे देश में, यह असम प्रदेश तथा उसके पास-पड़ोस के थोड़े-से अन्य पहाड़ी स्थानों को छोड़कर, और कहीं नहीं पाया जाता है। इस देश के बाहर बर्मा तथा स्याम में जरूर मिलता है।

**विवरण** : कठमोर का दूसरा नाम मनोहर भी है। यह हिमालय का पक्षी है, जो असम के उत्तरी भागों से भूटान तक तराई के आस-पास या ५-६ हजार फुट तक फैला है। कठमोर पहाड़ के निचले भागों में रहने पर भी बहुत ढीठ नहीं होता और अपने रहने के लिए घने जंगलों को ही चुनता है। यह प्रायः अकेला या जोड़े में ही दिखाई पड़ता है और चौकन्ना रहने की आदत के कारण शिकारियों को पास नहीं फटकने देता। सुबह-शाम नर पक्षी किसी पेड़ की ७–८ फुट नीची डाल पर बैठ कर 'क्व, क्व-क्व' से मिलती-जुलती बोली रह-रह कर बोलता है। यही बोली इसकी उपस्थिति का पता दे देती है, लेकिन उसके सहारे उसके बहुत पास तक नहीं पहुँचा जा सकता, क्योंकि जरा भी आहट पाते ही यह उड़ने की अपेक्षा जमीन पर उतर कर भागना और झाड़ी में छिप जाना पसन्द करता है। कठमोर का मुख्य भोजन, मोर और मुरगियों की तरह, दाना, बीज, नरम कल्ले और कीड़े-मकोड़े हैं।

**घोंसला** : कठमोर के जोड़ा बाँधने का समय मई-जून है, तब इसकी मादा किसी घनी झाड़ी के नीचे छिछले गढ़े में घास-

फूस और पर बिछाकर ५-७ सफेद या हलके भूरे अंडे देती है। अंडों की नाप लगभग २.०० × १.४५ इंच होती है।

## २६३ चिलमे (Blood Pheasant : Ithaginis Cruentus)

**पर्याय** : सेल भंग, सामें, सेमा, रक्त कंठ जीवक।

**पहचान** : चिलमे भी पहाड़ी मुरगी है जिसका ऊपरी भाग गाढ़ा सिलेटी रहता है, जिसमें गरदन से पीठ तक परों के बीच में सफेद धारियाँ पड़ी रहती हैं। सर पर भूरे और सिलेटी रंग की चोटी रहती है। ठोड़ी और गला लाल रहता है और सीने पर भी लाल धब्बे रहते हैं।

**रंग-रूप** : चिलमें के नर और मादा एक रंग-रूप के नहीं होते और नर कद में भी मादा से कुछ बड़ा होता है। नर की लम्बाई १८ इंच और उसका माथा, आँख और चोंच के बीच का हिस्सा काला तथा आँख के चारों ओर भी एक काला घेरा, जिसका कुछ भाग लाल। चोंटी का हिस्सा हलका भूरा और चोटी के पर सिलेटी, जिसके बीच में एक भूरी धारी। गरदन से लेकर पीठ तक का हिस्सा गाढ़े सिलेटी रंग का और वहाँ के परों पर एक सफेद धारी। बाकी सारा ऊपरी भाग गाढ़ा, जिस पर तिहरी रेखाओं के छोटे-छोटे टुकड़े। इनमें से बीच की रेखा हलकी हरी और ऊपर तथा नीचे की रेखा काली होती है। डैने के पहले दस पंख भूरे, जिन पर खड़ी-खड़ी धारियाँ, जो सिरे के पास पहुँच कर चौड़ी हो जाती हैं। दुम के पंख हलके सिलेटी रहते हैं और उनकी जड़ के पास का हिस्सा और किनारा लाल। ठोड़ी और गला भी लाल और यहाँ के अधिकांश परों के सिरे और बीच का भाग पिलछौंह। गले के नीचे और गरदन के दोनों बगल के पर हरे और सीने पर ललछौंह धब्बे। दुम के नीचे के पर लाल और ये सिरे पर पीले।

मादा की लम्बाई १६ इंच और उसका माथा और गरदन के बगल के हिस्से चटक बादामी-मायल कत्थई और चोटी तथा गरदन का पिछला हिस्सा सिलेटी रहता है। इस पर गाढ़ी, पतली टेढ़ी-मेढ़ी भूरी और काली धारियाँ। दुम गाढ़ी भूरी रहती है, जिस पर कत्थई बिंदियाँ। ठोड़ी और गला ललछौंह-कत्थई भूरा और नीचे का सारा भाग ललछौंह भूरा जिस पर गाढ़ी भूरी चित्तियाँ और टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें। आँख ललछौंह भूरी। चोंच काली। टाँगें लाल।

नर की टाँगों में वैसे तो दो खार होते हैं लेकिन कभी-कभी उनकी संख्या चार-पाँच तक पहुँच जाती है। प्रायः प्रौढ़ नर की एक टाँग में पाँच और दूसरी में चार खार देख गये हैं।

**निवास** : चिलमे हिमालय का निवासी है जो वहाँ भूटान से तिब्बत तक चली गयी दस हजार से चौदह हजार के बीच की पट्टी में ही पाया जाता है। इसकी पूर्वी और पश्चिमी सीमा का अभी तक ठीक-ठीक पता नहीं चल सका है, लेकिन यह भारतीय सीमा में भी काफी दूर तक और काफी संख्या में पाया जाता है।

**विवरण** : चिलमे हिमालय के ऊँचे प्रदेश का पक्षी है, जो चीड़ के जंगलों में रहना सबसे ज्यादा पसन्द करता है। वहाँ यह छोटे-छोटे गिरोहों में रहता है और उड़ने से अधिक भागना पसन्द करता है। गिरोह के छिटक जाने पर, ये मिलने के लिए अलग-अलग प्रकार की बोली बोलते हैं, जो चील की बोली से मिलती-जुलती है। चिलमें जाड़ों में बरफ में सूराख खोदकर अपने रहने के लिए स्थान बना लेते हैं और उसी में आराम से घंटों बैठे रहते हैं।

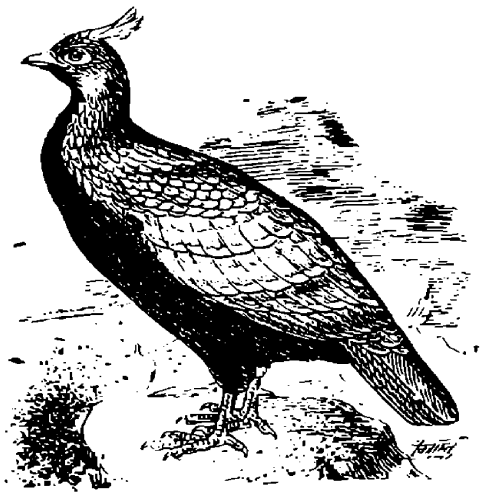
**घोंसला** : चिलमे, तीतरों की तरह मई जून में जमीन पर ही भूरे रंग के ५-७ अंडे देते हैं और उन पर गाढ़ी भूरी चित्तियाँ पड़ी होती हैं।

नाप में ये अंडे १.९५ × १.३१ इंच के होते हैं।

## २६४ मोनाल (Monal : Lophophorus Impejanus)

**पर्याय** : नील मोर, निलगुरु, रतिवा, रबनाल, मयूर कुक्कुट।

**पहचान** : मोनाल पहाड़ी मुरगियों में बहुत प्रसिद्ध है। यह काफी संख्या में ऊँचे पहाड़ों पर मिलता है। नर मादा से भड़कीला होता है। इसकी चोटी और सर चमकीला हरा और ऊपर का भाग कलछौंह बैंगनी रहता है। पंख काले, दुम खैरी और नीचे का भाग काला रहता है।



मोनाल

**रंग-रूप** : मोनाल के नर मादा एक रंग-रूप के नहीं होते और नर कद में मादा से कुछ बड़ा भी होता है और उसकी पोशाक भी मादा से भड़कीली और रंगीन होती है। नर की लम्बाई २८ इंच और मादा की लगभग २५ इंच। नर की चोटी और सर चमकीला-कलछौंह हरा। गरदन का बगली और ऊपरी भाग कलछौंह बैंगनी और डैने का कुछ भाग बैंगनीपन लिये हरा। बड़े पंख काले, दुमगजा सफेद, ऊपरी दुम-ढकना चटक हरा और दुम खैरी। नीचे का हिस्सा काला, जिसमें गले के पास हरी झलक।

मादा के ऊपरी भाग के पर गाढ़े भूरे, जिनके किनारे और बीच का भाग हलका और उन पर लाल भूरी बिंदियाँ और धारियाँ। दुमगजा और ऊपरी दुम-ढकना चटक हरा और दुम खैरी और भूरी पट्टियों से भरी और सिरे पर सफेद। गला और ठोड़ी सफेद और सीना सफेदी-मायल हलका भूरा, जिसके परों के किनारे गाढ़े भूरे। नीचे से बाकी हिस्सों के पर भूरेपन लिये सफेद रहते हैं जिनके किनारे गाढ़े भूरे रहते हैं। बगल का हिस्सा गाढ़ी भूरी लकीरों से भरा। बच्चों का रंग मादा की तरह, लेकिन गले पर एक काला चित्ता। आँख गाढ़ी भूरी, आँख के घेरे की नंगी खाल नीली। टाँगें पिलछौंह हरी, नर की टाँगों में खार भी होते हैं। चोंच गाढ़ी जैतूनी भूरी, मजबूत और टेढ़ी।

**निवास** : शिकार की पहाड़ी चिड़ियों में मोर की तरह मोनाल का नाम बहुत प्रसिद्ध है। अपनी सुन्दरता के कारण इसने सबका मन मोह लिया है। आसाम से कश्मीर तक के हिमालय के १०-१२ हजार फुट ऊँचे सभी क्षेत्रों को मोनाल का निवास-स्थान कह सकते हैं।

हिमालय की पहाड़ी मुरगी (फेजेन्ट) को, उनके रहने के स्थान की ऊँचाई को ध्यान में रखकर तीन मुख्य भागों में विभाजित कर सकते हैं। पहली श्रेणी में मोनाल, चिल-मेह और लुंगी आदि आते हैं, जो सबसे ज्यादा ऊँचाई वाले जंगलों में रहते हैं, जहाँ जंगल और हिम-रेखा की सीमा मिलती है। यह ८ से १५ हजार फुट की ऊँचाई तक की पट्टी कही जा सकती है। दूसरी श्रेणी में ४ से ८ हजार फुट ऊँचाई तक के जंगली प्रान्त आते हैं, इस पट्टी में चेड़, कोकलास और कई जातियों के वनमुर्ग रहते हैं। तीसरी श्रेणी निचले जंगलों की है, जो तराई से ५ हजार फुट तक की कही जा सकती है, इसमें जंगली मुरगी और बनकुकड़ी आदि आती हैं। इस श्रेणी-विभाजन को ध्यान में रखकर यदि हम इनकी आदतों के बारे में जानना चाहेंगे तो हमें काफी आसानी हो जावेगी।

मोनाल हिमालय के सबसे ऊँचे ऐसे जंगलों के निवासी हैं, जो हिम-रेखा से जा मिलते हैं और ऊँचाई में ८ से १५ हजार फुट तक हैं। यों तो ये सभी पहाड़ी जंगलों में रहते हैं पर गढ़वाल की पट्टियों में काफी संख्या में पाये जाते हैं।

**विवरण** : मोनाल हमारे यहाँ की बहुत प्रसिद्ध पहाड़ी मुरगी है, जिसकी मादा 'डफिया' और नर 'मोनाल' कहलाता है। नर के सर पर मोर-जैसी सुन्दर चोटी होती है, जिसके कारण इसे कहीं-कहीं निलमोर भी कहा जाता है। नर की टाँगों में मुरगों की तरह खार भी होते हैं, जो आक्रमण के समय बहुत काम आते हैं। हमारे देश में ४ तरह के मोनाल मिलते हैं, जिनके रंग-रूप में थोड़ा भेद जरूर रहता है, लेकिन चारों का स्वभाव एक-जैसा ही रहता है। मोनाल बारहमासी पक्षी है, जो यहीं अपने सुविधानुसार स्थान-परिवर्तन जरूर कर लेता है, लेकिन बाहर नहीं जाता। बरसात में ये पहाड़ के निचले क्षेत्रों में उतर आते हैं, जहाँ जमीन पर पत्तियाँ गिर कर सड़ती रहती हैं और उनके कारण इनके लिए काफी कीड़े-मकोड़े मिल जाते हैं। जाड़े में भी इसका नीचे उतरना जरूरी होता है, क्योंकि ऊँची चोटियों पर बरफ जमने के कारण यह वहाँ रह नहीं सकते। फिर बसन्त आते बरफ गलने पर ये फिर ऊपर की ओर चढ़ने लगते हैं और यह वार्षिक क्रम जारी रहता है।

इनके नर और मादा अक्सर अलग-अलग गोल बना कर रहते हैं। जोड़ा बाँधने के समय भले ही कुछ दिनों के लिए साथ रहते हों, पर वैसे इन्हें जोड़े में नहीं देखा जा सकता। अंडे सेने के समय भी मादा को नर से किसी किस्म की मदद नहीं मिलती। मोनाल शाम और सुबह के समय सीटीनुमा बोली बोलते हैं। दिन को भी कभी-कभी इनकी तेज बोली इनकी मौजूदगी का पता दे जाती है। ये उड़ने से ज्यादा जमीन पर भागना ही पसन्द करते हैं। यही नहीं, उड़ते समय दो-एक की बोली सुनते ही, पास-पड़ोस के सभी पक्षी सतर्क होकर उड़ने लगते हैं। उड़ते समय इनके ऊपर जब सूरज की सीधी किरणें पड़ती रहती हैं तो उनका सुन्दर रंग और भी चमक उठता है और देखने में बहुत ही भला मालूम देता है।

मोनाल सर्वभक्षी पक्षी होता है। बरसात में तो कीड़े-मकोड़े ही इनका मुख्य खाद्य-पदार्थ रहता है, लेकिन दूसरे मौसमों में ये फल-फल, जड़ें और पत्तियों से भी अपना पेट भर लेते हैं। मोनाल को जमीन कुरेदने की जैसे आदत-सी होती है। जंगल के बीच के छोटे-छोटे मैदानों में मोनालों की चोंच से खुदे गढ़े अक्सर दिखाई पड़ते हैं। इनके बसेरा लेने का कोई निश्चित स्थान नहीं होता। घने जंगलों में पेड़ों पर या चट्टानों के नीचे कहीं बसेरा ले लेते हैं।

**घोंसला** : मोनाल का अंडे देने का समय मई-जून है, जब नर पक्षी मादा को अपने नाच से रिझा कर उससे जोड़ा बाँध लेता है। फिर अंडे देने के बाद से उन्हें सेने और बच्चों के पालने-पोसने तक की सारी जिम्मेदारी मादा के ऊपरी रहती है। डफिया मादा अक्सर किसी झाड़ी, चट्टान या किसी बड़े पेड़ के सूखे तने के नीचे जमीन में गढ़ा खोदकर ५-६ अंडे देती है। इन गाढ़ों के किनारों में कभी-कभी सूखी घास भी लगा दी जाती

है। ये अंडे करीब-करीब २.५५ × १.७८ इंच के होते हैं और उनकी जमीन का रंग संदली या पत्थरी होता है, जिस पर चारो ओर तो कम, पर बीच में घनी खैरी चित्तियाँ पड़ी होती हैं।

## २६५ चेड़ (Cheers Pheasant : Catreus wallichii )

**पर्याय** : सरल जीवक, काहिर, बनचील, हरील, चमन ।

**पहचान** : मोनाल की तरह चेड़ भी हमारा बहुत परिचित पहाड़ी पक्षी है जो पहाड़ के निचले भागों पर भी मिल जाता है। नर की चोटी कंजई भूरी, गले के चारो ओर सफेद कंठा और पीठ तथा डैने के भूरे परों पर काली पट्टियाँ और सिलेटी चिह्न होते हैं। दुम भूरी होती है और नीचे का सारा भाग तितरी-बितरी काली धारियों से भरा हुआ भूरे रंग का रहता है। मादा नर से काफी छोटी होती है।

**रंग-रूप** : चेड़ के नर-मादा के रंग-रूप में थोड़ा भेद होता है और मादा कद में नर से काफी छोटी होती है। नर की लम्बाई लगभग ४० इंच। चोटी भूरी, जिसके परों के सिरे कंजई। गला और गरदन के चारो ओर का कंठा सफेदी-मायल, पीठ और डैने की छोटी पखनियाँ हलकी भूरी, जिन पर काली पट्टियाँ और पंखों के सिरे सिलेटी। उनके बीच में एक हलकी नीली धारी, डैने चटक भूरे, जिन पर स्पष्ट काली पट्टी। दुमगज़ा कत्थई, जिस पर काली पट्टियाँ। दुम भूरी, जिस पर चौड़ी काली और कत्थई पट्टियाँ। नीचे का सारा भाग हलके भूरे रंग का, जिस पर तितरी-बितरी काली धारियाँ।

मादा की चोटी भूरी गरदन का बगली तथा ऊपर का हिस्सा काला और सफेद। ऊपर का सारा भाग कत्थई काला भूरा। दुम भूरी और काली धारियाँ से भरी। गला सफेद-मायल और सीना काला, और सीने के परों के सिरे भूरे। पेट का रंग कत्थई और वहाँ के किनारे हलके। आँख की पुतली चटक नारंगी लाल, जिसके चारों ओर की नंगी और बिना पर की खाल चटक लाल। चोंच हरछौंह भूरी, जिसमें नीली झलक। टाँग सिलेटी भूरी।

**निवास** : चेड़ हमारे यहाँ का सबसे प्रसिद्ध पहाड़ी मुर्ग है, जो हिमालय के ६-७ हजार फुट ऊँचे प्रदेशों में काफी संख्या में फैला है। ये हिमालय में वैसे तो प्रायः सभी जगह थोड़ी-बहुत संख्या में मिल जाते हैं, लेकिन कुमायूँ, गढ़वाल और देहरादून के पहाड़ी जंगलों में सबसे अधिक मिलते हैं।

६–७ हजार फुट ऊँचे और घने जंगलों की पट्टी में इनके रहने का उपयुक्त स्थान जरूर है, लेकिन ज्यादातर तितरे-बितरे जंगलों में ही घूमना पसन्द करते है। जाड़े में कभी इससे नीचे उतर आते हैं और बसन्त के बाद गर्मी होने पर फिर ऊपर चढ़ जाते हैं।

**विवरण** : चेड़ ऐसी पहाड़ियों पर अक्सर दिखाई पड़ते हैं जिनकी चोटी तितरे-बितरे जंगलों से ढकी हों और जहाँ खड़ी ढालों पर छोटी-छोटी झाड़ियाँ भी हों।

चेड़ को न तो खुले पथरीले मैदान ही पसन्द हैं और न बहुत घने जंगल। ये तो घास से ढकी हुई पहाड़ियों और बाँस या चीड़ के छितरे जंगलों में ही ज्यादातर पाये जाते हैं। जोड़े में रहते हुये ये अपना रहने का स्थान अलग बनाते हैं।

यह यहाँ के बारहमासी पक्षी हैं जो देश ही नहीं, बल्कि अपनी पहाड़ी छोड़ कर भी कहीं नहीं जाते। भले ही मौसम के बदलाव के कारण पहाड़ की ऊँची या नीची जगहों पर चले जायें। चेड़ को दिन में घास या झाड़ियों में घुसे रहना पसन्द है और सवेरे शाम को ही चराई पर निकलते हैं। उस समय भी, आदमियों की आहट पाकर तेजी से भाग कर, आस-पास की झाड़ी में या घास में दुबक जाते हैं और फिर बहुत करीब पहुँच जाने पर भी दुबके ही रहते हैं। नर और मादा चेड़ सबेरे और शाम को बोलते ही हैं, बदली के दिनों में इनकी बोली दिन में भी सुनाई पड़ती है। इनका चिट्-चिट्ट-चिटवा-चिटवा स्वर काफी तेज होता है और काफी दूर तक सुनाई पड़ता है।

चेड़ ज्यादातर जड़ें खोदकर खाते हैं, लेकिन फल-फूल, दाने और कीड़े-मकोड़ों से भी परहेज़ नहीं है। इसको अन्य वनमुर्गों की तरह, घास और पत्तियाँ जरूर पसन्द नहीं हैं।

इसकी उड़ान में सुस्ती रहती है और ये ज्यादा दूर उड़ कर नहीं जा सकते, लेकिन उड़ते समय भी बोलते रहते हैं। चेड़ पेड़ों पर कम ही बैठते हैं। इन्हें पेड़ों से ज्यादा जमीन पर ही रात बिताना अच्छा लगता है।

**घोंसला** : चेड़ के अंडा देने का समय अप्रैल से जून तक है, जब मादा किसी झाड़ी या घास के बीच अपना घोंसला बनाकर ८ से १४ तक अंडे देती है। इन अंडों का रंग संदली या पत्थरी होता है, जिसमें थोड़ी-बहुत चमक होती है।

अंडे नाप में २.२२ × १.५६ इंच के होते हैं।

## २६६ लुंगी (Crimson-Horned Pheasant : Tragopan Satyra)

**पर्याय** : रक्त, शृंगीजीवक ।

**पहचान** : लुंगी चटक लाल रंग का पहाड़ी पक्षी है जिसकी गरदन पर काली और भूरी बिंदियाँ और शेष भाग पर सफेद गोल चित्तियाँ पड़ी रहती हैं, सर काला और डैने चितले भूरे होते हैं, दुम भी काली रहती है।

**रंग-रूप** : लुंगी के नर मादा के रंग-रूप और कद में भी भेद होता है। नर कद में मादा से बड़ा और रंग में उससे भड़-

कीला होता है। नर की लम्बाई लगभग २८ इंच और मादा की २४ इंच। नर के सारे शरीर का रंग चटक लाल, जिस पर गदरन से ऊपर की ओर काली और भूरी बिंदियाँ। सारा शरीर सफेद गोल बिंदियों से भरा, जिनका किनारा काला सर और दुम काली। दुमगज़ा और डैने चितले भूरे, जिन पर लाल चित्ते।

मादा चटक भूरे रंग की, जिसका निचला भाग ऊपरी भाग से हलका और उसमें कुछ कलछौंह लकीरें। बच्चों का रंग मादा के रंग के अनुरूप, लेकिन शरीर पर हलकी बादामी लकीरें। आँख गाढ़ी भूरी। टाँगें गुलाबी। चोंच कलछौंह भूरी।

**निवास** : लुंगी उन वनमुर्गों की श्रेणी में है जो हमारे देश में बहुत कम पाये जाते हैं। इसके रहने का स्थान हिमालय के मध्य और पूर्वी ऊँचे जंगलों में है, जो आठ से १० हजार फुट की ऊँचाई तक फैले हैं। लुंगी इस ओर कुमायूं और गढ़वाल के पश्चिम भाग में मिलते हैं और उधर नेपाल तक इनके रहने का स्थान कहा जा सकता है।

ये बारहमासी पक्षी हैं, जो देश छोड़कर बाहर नहीं जाते। गर्मियों में ये ८-१० हजार फुट की ऊँचाई के जगलों में चढ़ जाते हैं और वहाँ के बाँस के जंगलों में पानी के किनारे, अपना अड्डा बना लेते हैं। बरफ के करीब के जगलों में रहते हुए भी, ये बरफ पर नहीं जाते। जगलों में ही रहना ज्यादा पसन्द करते हैं।

**विवरण** : लुंगी हमारे यहाँ के वनमुर्गों में करीब-करीब सबसे सुन्दर पक्षी माना जाता है, लेकिन संख्या में कम होने के कारण, यह हमारी निगाह तले कम पड़ता है। ये बहुत शरमीले पक्षी हैं, जो बहुत मुश्किल से झाड़ी या छिपने की जगह से निकलते हैं। यदि ये इत्तिफाक से कभी बाहर दिखाई पड़ जाँय तो एकदम घास में मुरदे की तरह गिर पड़ते हैं और फिर घास ही घास में छिपे-छिपे दूर निकल जाते हैं।

अप्रैल के महीने में अक्सर इनकी बोली जंगलों में सुनाई पड़ती है, जिसे सुन कर इसके रहने के स्थान का पता चल जाता है। लुंगी सर्वभक्षी पक्षी हैं, जो जड़, पत्तियाँ, नये कल्ले और कीड़े-मकोड़ों से अपना पेट भरता है।

**घोंसला** : लुंगी के जोड़ा बाँधने का समय मई-जून है। इसकी सुन्दर रंगीन पोशाक में इसकी नीली चोटी और चेहरे का नीला और रंगीन रंग बहुत सुन्दर लगता है। पर ये रंगीन पोशाक इसको जोड़ा बाँधने के समय ही मिलती है। इस रंगीन पोशाक को पाकर नर मादा को रिझाने के लिए, रंगीन पोशाक वाले अन्य नर पक्षियाँ की तरह यह भी मादा को अपना नाच दिखाता है।

मादा लुंगी ९-१० हजार फुट की ऊँचाई पर मई-जून में करीब १.८ × २.४५ इंच के अंडे देती हैं, जिनका रग सफेद होता है और उन पर हलके बैंगनी चिह्न होते हैं।

## २६७ परबतिया (Silver Pheasant : Gennaeus Lineatus)

**पर्याय** : श्वेत जीवक।

**पहचान** : परबतिया कालिज से बहुत मिलता-जुलता पक्षी है जिसकी चोटी कालिज की तरह सफेद न होकर काली होती है। इन दोनों में भेद करना कठिन होता है।

**रंग-रूप** : परबतिया की लम्बाई लगभग २५ इंच और नर-मादा के रंग में थोड़ा भेद होता है। नर का रंग बहुत कुछ कालिज से मिलता-जुलता है। केवल इसकी चोटी कालिज की तरह सफेद न होकर, काले रंग की होती है। दुमगजे पर पड़ी सफेद लकीरें, कालिज से कुछ पतली होती हैं और चेहरे पर की नंगी खाल लाल होती है। इसकी मादा तो कालिज की मादा से इतनी मिलती-जुलती होती है कि दोनों में भेद करना कठिन हो जाता है। आँख नारंगी। चोंच हरछौंह सफेद। टाँगें भूरी सिलेटी। नर की टाँगों में एक तेज खार होता है।

**निवास** : परबतिया को नेपाल का कालिज भी कहते हैं क्योंकि यह नेपाल के आस-पास के प्रदेशों में पाया जाता है। नेपाल के बाहर, हमारी सीमा में भी थोड़ी दूर तक आ जाता है।

**विवरण** : परबतिया नेपाल और उसके पड़ोसी देशों का निवासी है। अक्सर जोड़े या सात-आठ के छोटे-छोटे गिरोहों में जंगल के आस-पास के खेतों में चरता दिखाई पड़ता है। ये अक्सर घने पेड़ों पर बैठा रहता है और इसी कारण इस पर जल्दी निगाह नहीं पड़ती, लेकिन यह बोल कर अपनी मौजूदगी का पता दे देता है। जाड़ों में ये पहाड़ों की तराई में घने पेड़ों पर बसेरा लेते हैं। शाम होते ही चराई के बाद वहाँ पहुँच जाते हैं। इनका मुख्य भोजन दाना, बीज, जंगली फल-फूल, नरम कल्ले और कीड़े-मकोड़े हैं।

**घोंसला** : परबतिया कालिज की तरह घोंसला बनाता है। उसकी मादा उसी की तरह जमीन पर ८-१० अंडे देती है। यह हलके भूरे रंग के होते हैं।

नाप में करीब १.८५ × १.५ इंच के होते हैं।

## २६८ चकोत्री (Red Spur-Fowl : Galloperdix Spadicea)

**पर्याय** : बनकुकड़ी, कोकत्री, कस्तूर, लोहित कुक्कुटक।

**पहचान**: घने जंगलों में रहने वाली चिड़िया जिसके नर का शरीर कत्थई और मादा का हलका भूरा और महीन काली लकीरों से भरा रहता है। पैर में काफी लम्बे खार होते हैं।

**रंग-रूप** : चकोत्री के नर-मादा के रंग-रूप में बहुत अन्तर होता है। कद में भी नर मादा से कुछ बड़ा होता है। नर की लम्बाई लगभग १५ इंच। सर का ऊपरी हिस्सा गाढ़ा भूरा, जो माथे की ओर हलका और सिलेटी हो जाता है। गरदन भी सिलेटी मायल शरीर का ऊपरी हिस्सा हलका कत्थई रहता है, जिसमें पीठ के ऊपरी भाग के परों के किनारे सिलेटी और बाकी हिस्सों के पर काली और बादामी टेढ़ी-मेढ़ी लकीरों से भरे। डैने के पंख गाढ़े भूरे। दुम कलछौंह भूरी, जिसमें बीच के पर पीठ-जैसी लकीरों से भरी। ठोड़ी सफेद। सीना और पेट का ऊपरी भाग कत्थई, जिसके परों के किनारे हलके सिलेटी-भूरे। पेट का निचला हिस्सा भूरा और दुम के नीचे का एक कलछौंह भूरा चित्ता। इस चित्ते पर काली लकीरें। मादा का माथा राखिहा भूरा, जो चोंटी, गुद्दी और गरदन तक जाते-जाते गाढ़ा भूरा हो जाता है। शरीर का ऊपरी भाग राखिहा या ललछौंह-भूरा और यहाँ के परों पर दो काली धारियाँ, जिनके कारण पीठ चितली-चितली लगती है। डैने के बड़े पंख गाढ़े भूरे। दुम कलछौंह, जिसके बीच के पर में भूरी धारियाँ। ठोड़ी सफेद और गला जैतूनी भूरा। सीना और बगल का हिस्सा चटक भूरा, जिस पर काली चित्तियाँ। नीचे का शेष भाग भूरा, जिस पर काली चित्तियाँ और दुम के नीचे का भाग ललछौंह। आँख गंदी पीली या नारंगी। चोंच सींग के रंग की भूरी, जड़ के पास ललछौंह। टाँगें लाल। नर की एक टाँग में एक से तीन तक खार होते हैं। ज्यादातर एक टाँग से दूसरी टाँग में एक खार ज्यादा रहता है। मादा के भी एक-एक खार हर एक टाँग में होता है।

**निवास** : बनकुकड़ी हमारे यहाँ की ऐसी बारहमासी चिड़िया है, जो हमारे देश को छोड़कर और किसी देश में नहीं जाती। यह राजस्थान, उत्तरी गुजरात, कच्छ या काठियावाड़ और उत्तर-पश्चिमी पंजाब को छोड़कर, देश के करीब-करीब तमाम पहाड़ी जंगलों के थोड़े-थोड़े हिस्सों में फैली हैं। हिमालय की तराई में यह गोरखपुर से लखीमपुर खीरी तक ही ज्यादा पायी जाती है। इसके अलावा, अरावली और विन्ध्य पर्वतों में कैमूर से अमर कंटक, राजमहल, जबलपुर, मांडला, छोटा उदयपुर तक में भी मिलती है। पश्चिम में सतपुड़ा, वाण गंगा नदी और पंचमढ़ी पहाड़ियों के बीच और दक्षिण में पश्चिमी घाट और ताप्ती की घाटियों से मलाबार तक पायी जाती हैं। नीलगिरि और अन्य पर्वत-श्रेणियों में इनकी कमी नहीं है। सारांश में ये हमारे देश के ऐसे तमाम पथरीले जंगलों में फैली हैं, जहाँ इन्हें घनी छाया, छिपने के लिए छोटी लेकिन घनी झाड़ियाँ और पानी का सहारा मिल सके।

**विवरण** : चकोत्री हमारे यहाँ की प्रसिद्ध चिड़िया है, जिसे पहाड़ी जंगल तो पसन्द हैं, लेकिन जंगली मुरगियों की तरह पहाड़ की बहुत ऊँचाई इन्हें पसन्द नहीं। फिर भी, कभी-कभी वे उनसे कुछ ज्यादा ऊँचाई तक भी चली जाती हैं।

चकोत्री दूसरे मौसमों में भले ही ८–१० के गोल में दिखाई पड़ जाए, लेकिन अंडे देने के समय जोड़े में ही दिखाई पड़ती हैं। ये पास-पड़ोस से झरनों या कुंडों के निकट सिमट जाती हैं। गरमियों में जब पानी के दूसरे छोटे-मोटे स्थान सूख जाते हैं तो चकोत्री कमरी से भी ज्यादा चालाक होती है। सबेरे और शाम को जब ये जंगल के किनारों पर या झाड़ियों से बाहर निकल कर चरती हैं तो इन्हें भले ही कोई देख ले तो देख ले, पर दिन को शायद ही किसी के नजर तले पड़े। जरा-सी आहट पाने पर झाड़ियों में घुस जाती हैं और तब बहुत परेशान करने या झाड़ी काट डालने पर ही उसमें से निकलती है। चकोत्री भी, अन्य पक्षियों की भाँति सर्वभक्षी है और यह घास, पत्ती जड़ और झखेरी के अलावा, कीड़े-मकोड़े भी खूब मज़े में खा लेती है।

**घोंसला** : चकोत्री फरवरी के अन्त से जून के मध्य तक और अक्टूबर से नवम्बर तक अंडे देती है। जब मादा घास-फूस और सूखी टहनियों को किसी घनी झाड़ी या बंसवाड़ी में छिछले गढ़े में रख कर जमीन में ही घोंसला बना लेती है और उसमें ४ से ७ तक अंडे देती है। अंडों का रंग गुलाबी या पत्थरी होता है और नाप में वे करीब १.६७ × १.२८ इंच के होते हैं।

## २६९ असकोल (Painted Spen Fowl : Galloperdix Lunulata)

**पर्याय** : हुटका, चित्रित कुक्कुटक।

**पहचान** : चकोत्री का निकट संबंधी पक्षी जिसके नर का सर और चोंटी काली रहती है। शरीर का ऊपरी भाग गाढ़ा कत्थई और सफेद चित्तियों से भरा और नीचे का सीने के पास का हिस्सा काले चित्तों से भरा हलका भूरा और पेट के पास का कत्थई और सफेद धारियों से भरा होता है।

**रंग-रूप** : लम्बाई लगभग १३ इंच। असकोल के नर और मादा के रंग-रूप में भेद होता है। नर की चोंटी और सर काला, जिस पर सफेद चित्तियाँ। पीठ और पखनियाँ गाढ़ी कत्थई, जिन पर सफेद चित्ते। डैने के कुछ परों में हरी चमक। दुमगज़ा और दुम-ढकना भी गाढ़ा कत्थई और यहाँ के परों पर सफेद चिह्न जिनका सिरा काला। दुम-काली, जिसके ऊपरी कुछ पर कत्थई। गला और गरदन का निचला तथा बगल का हिस्सा काला, जिस पर सफेद धारियाँ। सीना और पेट का ऊपरी हिस्सा हलका भूरा, जिस पर काले चित्ते। बदन का बगली हिस्सा कत्थई और काला तथा सफेद चिह्नों से भरा। पेट का निचला भाग गंदा कत्थई, जिस पर कुछ सफेद धारियाँ। नीचे के हिस्से में काले और कत्थई रंग की मिलावट, मादा की चोंटी काली, जिस पर थोड़ी कत्थई

धारियाँ। सारा ऊपरी भाग गाढ़ा जैतूनी भूरा और दुम काली। डैने के पर गाढ़े भूरे, लेकिन इन पर एक प्रकार की जैतूनी झलक। आँख के ऊपर एक भूरी चितली रेखा और गाल तथा गला भूरा। सीना और गरदन का निचला हिस्सा गंदे जैतूनी-भूरे रंग का और पेट हलका भूरा।

चकोत्री की तरह इसका नर भी मादा से कुछ बड़ा होता है और नर की टाँग में एक से तीन तक लेकिन मादा के एक ही खार होता है जिस पर काले चिह्न होते हैं। पेट का निचला और दुम के नीचे का हिस्सा घुमैले भूरे रंग का होता है। आँख गाढ़ी भूरी। चोंच सींग के रंग की। टाँगें लाल।

**निवास** : असकोल और चकोत्री का निवास-स्थान बहुत मिलता-जुलता है। यह कह देना ठीक होगा कि यह हमारे देश के पूर्वी हिस्सों में ज्यादा पायी जाती है और चकोत्री पश्चिमी भागों में। ऊपर की ओर गंगा-जमुना के आगे नहीं जाती। इससे दक्षिण में यह झांसी, ललितपुर, पूर्वी ग्वालियर से गया तक और राजमहल पर्वत-श्रेणियों से मानभूमि तक फैली है। ठेठ दक्षिण में इसे पूर्वी घाट और बीच के पहाड़ी प्रदेश में भी काफी संख्या में देखा जा सकता है।

**विवरण** : असकोल भी इसी देश की बारहमासी चिड़िया है, जो हमारे देश को छोड़कर और किसी देश में नहीं पायी जाती। चकोत्री से इसकी आदतें बहुत मिलती-जुलती हैं और उन्हीं की तरह इन्हें भी जंगलों वाली नीची पहाड़ियों और बाँस के जंगल पसन्द हैं, जहाँ पानी और खाने का सुभीता हो।

**घोंसला** : असकोल के जोड़ा बाँधने का समय मार्च से मई तक रहता है, जब मादा किसी झाड़ी या चट्टान के नीचे जमीन में गढ़ा खोदकर चार-पाँच सफेद अंडे देती है।

अंडे करीब १.६२ × १.११ इंच के होते हैं।

## २७० घाघस बटेर (Common Grey Quail Coturnix Colurnix)

**पर्याय** : बटेरो, बटई, गुड़गंज, बटेरा, बटरी, बड़गंजा, प्रख्यात घूसर वर्तिका।

**पहचान** : घाघस बटेर यहाँ का बहुत प्रसिद्ध चितला पक्षी है जिसका कद छोटा ही रहता है। इसके ऊपरी भाग पर सफेद, काली, भूरी तथा सिलेटी चित्तियाँ, बिंदियाँ, चिह्न और लकीरें पड़ी रहती हैं जिससे यह जमीन पर बैठा रहने पर आसानी से दिखलाई नहीं पड़ता। सीना, ललछौंह भूरा रहता है जिस पर पिलछौंह धारियाँ पड़ी होती हैं। यह जमीन पर रहने वाली चिड़िया है।

**रंग-रूप** : बटेर के नर और मादा के रंग-रूप में बहुत थोड़ा फर्क होता है और लम्बाई ८ से १० इंच तक होती है। नर के सर का ऊपरी हिस्सा काला, जिसमें भूरी धारियाँ। माँग पर एक हलकी भूरी लकीर, और उसी तरह की कुछ चौड़ी लकीर दोनों आँखों पर भी। सर का बगली हिस्सा सफेद और भूरा तथा ऊपरी हिस्सा हलका भूरा, जिस पर सफेद धारियाँ और गाढ़े भूरे तथा गत्थई चित्ते और चिह्न। डैने के पर भूरे, जिनका बाहरी हिस्सा कत्थई चिह्नों से भरा। दुम के पर कत्थई भूरे, जिन पर पिलछौंह धारियाँ। गले और गरदन का ऊपरी हिस्सा सफेदी-मायल और गरदन के दोनों बगल एक चौड़ी कलछौंह धारी जो कान तक चली जाती है। गले में कलछौंह भूरी बिंदियों की हँसली-जैसी पट्टी, उसके नीचे सीने का हिस्सा ललछौंह भूरा जिसमें, पिलछौंह धारियाँ। सीने के निचले हिस्से तक पहुँचते-पहुँचते सफेद हो जाती है; दोनों बगल के हिस्से कलछौंह बिंदियों और सफेद धारियों से भरे। मादा के गले पर चौड़ी कलछौंह धारी नहीं होती और उसके सीने का हिस्सा अक्सर काली चित्तियों से भरा होता है। आँख पिलछौंह भूरी। चोंच सींग के रंग की। टाँगें पीली और प्याजी भूरी।

**निवास** : घाघस बटेर हमारे यहाँ का प्रसिद्ध मौसमी पक्षी है, जो जाड़ा शुरू होते ही उत्तर-पश्चिम की ओर से हमारे देश में आ जाता है और दक्षिण भारत की ओर बढ़ता चला जाता है। जाड़ा समाप्त होने पर, यह फिर दक्षिण से लौटने लगता है और खेत काटने के साथ-साथ उत्तर पश्चिम के रास्ते अपने देश लौट जाता है। लेकिन इन में से कुछ पक्षी कश्मीर आदि प्रदेशों में रह जाते हैं और यहीं अंडे देते हैं। हमारे देश से बाहर, ये सारे यूरोप, अफीका तथा एशिया के अधिकांश भागों में पाये जाते हैं।

**विवरण** : बटेर यहाँ का बहुत प्रसिद्ध शिकार का पक्षी है, जो देखने में छोटा तीतर जान पड़ता है। यह अपने छोटे कद और भूरे रंग के कारण घास-फूस में ऐसा छिप जाता है कि इस पर जल्दी से निगाह नहीं पड़ती। हम में से ज्यादातर लोगों ने इस को जमीन पर न देखकर उड़ते ही देखा होगा। पास पहुँचने पर, ये जमीन से ऐसे दुबक जाते हैं कि यह अनुमान ही नहीं होता है कि यहीं पैर के ठीक पास कोई गोल-मटोल-सा पक्षी छिपा हुआ है, लेकिन और निकट जाने पर यह बड़ी तेजी से पंख मार कर भर्र से उड़ जाता है।

हमारे देश में घाघस बटेर जाड़ों में आते हैं, लेकिन इनमें कुछ यहाँ रह भी जाते हैं। अगस्त से ही इनका यहाँ आना शुरू हो जाता है जो अक्टूबर तक जारी रहता है। दिसम्बर में जब ये यहाँ से लौटने लगते हैं तो इनके गोल बड़े हो जाते हैं और मार्च तक लौट जाने वालों से देश खाली हो जाता है।

घाघस बटेर हमारे यहाँ का बहुत प्रसिद्ध और परिचित पक्षी है जो अपने स्वादिष्ट मांस के कारण शिकारियों से और अपनी लड़ने की आदत के कारण बटेरबाजों से नहीं बच पाता।

बटेर जमीन में रहने वाला पक्षी है, जो कभी पेड़ पर नहीं बैठता। इसका मुख्य भोजन वैसे तो अनाज है, लेकिन ये कीड़े-मकोड़े भी खाते हैं।

**घोंसला**: हमारे यहाँ का मौसमी पक्षी होने के कारण, बटेर हमारे देश में अंडे नहीं देता लेकिन जैसा कि ऊपर बताया गया है, इनमें से कुछ पक्षियों को गर्मियों में यहीं रहते और अंडे देते देखा गया है। जमीन पर रहने वाले अन्य पक्षियों की तरह, बटेर भी जमीन पर मामूली गढ़ा बनाकर, उसी में घास-फूस रखकर अपना घोंसला बनाते हैं। इसमें मादा मार्च से मई और कभी-कभी सितम्बर तक अंडे देती हैं। अंडों की संख्या ३ से १० तक रहती है। वे ललछौंह भूरे रंग के होते हैं, जिन पर कत्थई या निलछौंह चित्तियाँ और काफी चमक भी रहती है।

नाप में ये अंडे करीब १.१८ × ०.९० इंच के होते हैं।

## २७१ चिनिंग बटेर (Rain Quail : Coturnix Coromandelicus)

**पर्याय**: चीना बटेर, चनक, कृष्णोरस वर्तिका।

**पहचान**: घाघस बटेर से बहुत मिलता-जुलता पक्षी जो अन्य बटेरों की भाँति जमीन पर ही रहता है। यह भी उसी की भाँति चितला पक्षी है लेकिन इसके सीने पर की धारियाँ घाघस से चौड़ी रहती हैं।

**रंग-रूप** : चिनिंग बटेर की लम्बाई लगभग ७ इंच होती है और नर मादा करीब-करीब एक-जैसे ही होते हैं। यह कद में घाघस से कुछ छोटा और रंग-रूप में बहुत कुछ उससे मिलता-जुलता होता है। लेकिन इसके डैने के परों के बाहरी हिस्सों पर घाघस की तरह ललछौंह धारियाँ नहीं होतीं। इसके नर के गले और चेहरे पर के चिह्न ज्यादा काले होते हैं और उनके सीने तथा दोनों बगली हिस्सों पर चौड़ी धारियाँ होती हैं। किसी-किसी नर का पूरा सीना एकदम काला भी होता है। आँख भूरी। चोंच गंदी कलछौंह। पैर पिलछौंह प्याज़ी।

**निवास**: चिनिंग बटेर यहाँ का बारहमासी पक्षी है, जो यहीं थोड़ा स्थान-परिवर्तन तो अवश्य कर लेता है, लेकिन घाघस की तरह हमारे यहाँ से बाहर नहीं जाता। यहाँ यह घुर दक्षिण को छोड़कर, करीब-करीब सारे देश में पाया जाता है। लेकिन प्रायः ऐसे ही स्थानों पर दिखाई पड़ता है जो इसके रहने के लिए उपयुक्त होते हैं। यह घास के खुले मैदानों, खेतों और तितरे-बितरे जंगलों को पसन्द करता है। पहाड़ों पर भी, यह ५–६ हजार फुट की ऊँचाई तक पाया जाता है, लेकिन कश्मीर की ओर बहुत कम दिखाई पड़ता है। उत्तर पश्चिम प्रदेशों में तो इसे केवल बरसात में ही देखना सम्भव होता है।

**विवरण**: चिनिंग की बहुत कुछ आदतें घाघस-जैसी ही होती हैं, इससे उन्हें फिर से दुहराने की आवश्यकता नहीं। घाघस की तरह इसको भी खुले मैदान ज्यादा पसन्द हैं और खेतों या घास के मैदानों में इनकी काफी बड़ी संख्या फैली रहती है। ये गोल में रहने वाले पक्षी नहीं हैं। जोड़ा बाँधने के समय निकट आने पर जोड़े में और चराई के समय पाँच-सात इकट्ठे जरूर दिखाई पड़ते हैं, लेकिन इसके अलावा इन्हें अकेला रहना ही ज्यादा पसन्द है।

चिनिंग का मुख्य भोजन वैसे तो दाना और बीज आदि हैं, लेकिन यह कीड़े-मकोड़े भी खाता है।

**घोंसला**: चिनिंग के जोड़ा बाँधने का समय जून के अन्त से लेकर अक्टूबर तक है, लेकिन मादा ज्यादातर अगस्त-सितम्बर के शुरू में ही अंडे देती है।

घाघस की तरह, यह भी जमीन में छिछला-सा गढ़ा खोद कर, उसके किनारों पर घास-फूस लगा कर अपना मामूली-सा घोंसला बनाते हैं। अंडों की संख्या ४ से १० तक होती है, जिनका रंग पिलछौंह-भूरा होता है और उन पर कलछौंह कत्थई या निलछौंह बिंदियाँ, चित्तियाँ और धब्बे पड़े होते हैं।

अंडे नाप में करीब १.१० × ०.८४ इंच के होते हैं।

## २७२ गिरजा बटई (Jungle Bush Quail : Perdicula Asiatica)

**पर्याय**: जुहार, वन वर्तीर, छोटा बटेर।

**पहचान**: घाघस से छोटा लेकिन उसी जाति का पक्षी, जिसका ऊपरी हिस्सा भूरा और काली धारियों और चित्तियों से भरा रहता है। नीचे का भाग सफेदी मायल भूरा होता है और उस पर आड़ी-आड़ी काली धारियाँ पड़ी रहती हैं। यह भी जमीन पर रहने वाला पक्षी है।

**रंग-रूप** : बटई की लम्बाई लगभग ६ इंच और नर मादा के रंग-रूप में बहुत थोड़ा भेद होता है। नर के माथे पर से दोनों बगल आँखों पर होती हुई, चोंच से गरदन तक की एक काली पट्टी। शरीर का ऊपरी हिस्सा भूरा जिस पर काली चित्तियाँ और धारियाँ। डैने भी भूरे, जो गहरे और भूरे रंग की पट्टियों से भरे। दुम प्याज़ी भूरी, जिस पर भूरी धारियाँ। गला कत्थई और उस के नीचे का हिस्सा सफेदी मायल हलका भूरा, जिस पर आड़ी-आड़ी काली लकीरें। मादा करीब-करीब नर की तरह, लेकिन उसका निचला हिस्सा हलका और फीका भूरा। आँख भूरी, चोंच कलछौंह जड़ के पास निलछौंह सिलेटी। टाँगें पिलछौंह लाल।

**निवास** : गिरजा बटई यहाँ की प्रसिद्ध बटई है, जो कद में बटेर से कुछ छोटी होने के कारण बटई के नाम से पुकारी जाती है। यह हिमालय के निचले प्रदेशों से दक्षिण तक फैली हुई है। यह कश्मीर के निचले भागों से आबू पर्वत तक भी मिलती है, लेकिन पश्चिम की ओर जोधपुर के आगे बहुत कम देखी जाती है। पूर्व की ओर यह बंगाल तक मिलती है। इसे उत्तर प्रदेश, बिहार, उड़ीसा, पश्चिमी बंगाल, मध्य प्रदेश, पश्चिमी घाट और मालाबार के घने जंगलों में आसानी से देखा जा सकता है।

**विवरण** : गिरजा बटई हमारे यहाँ वैसे तो तराई से लेकर सारे देश के मैदानों में फैली हुई है लेकिन कम संख्या में होने के कारण इन्हें हम कहीं कम और कहीं ज्यादा पाते हैं। यह झाड़ियों, खेतों और जंगलों में रहने वाली बारहमासी चिड़िया है, जो कभी-कभी पहाड़ों पर ४ हजार फुट की ऊँचाई तक चढ़ जाती है।

ये वैसे तो ज्यादातर जंगलों में ही रहना पसन्द करती हैं लेकिन इसे खुले, सूखे और ऐसे जंगल भी अच्छे लगते हैं जिनके बीच में सूखी घास के छोटे-छोटे मैदान हों। ये झाड़ियों या घास के मैदानों के आस-पास के खेतों में ही रहती हैं। पर तलाशने पर इनका १०–१५ का झुंड दिखाई पड़ जाना कोई मुश्किल नहीं। इनका झुंड एक स्थान पर स्थायी-सा रहता है और छेड़े जाने पर ये एक साथ ही उड़ जाती हैं और कुछ दूर पर जाकर फिर गोल बनाकर चुनने लगती हैं। खतरा निकट आने पर या भड़क जाने पर बड़ी तेजी से पंख मार कर चारों ओर फैल कर उड़ती हैं और थोड़ी दूर जाने पर उसी तरह अचानक जमीन पर उतर पड़ती हैं जैसे उड़ी थीं। थोड़ी देर बाद ही ये सब बोल-बोल कर एक दूसरे का स्थान जान लेती हैं और शीघ्र ही फिर गोल बन जाता है। बटई का मुख्य भोजन अनाज, घास के बीज, फल और कीड़े-मकोड़े हैं।

**घोंसला** : इनके जोड़ा बाँधने का समय सितम्बर से अप्रैल तक रहता है। ये किसी झाड़ी या घनी घास के नीचे जमीन में गढ़ा खोद कर अपना घोंसला बनाती हैं, जिसके किनारे पर घास-फूस रख दी जाती है। इनके अंडों की संख्या ५–६ और रंग सफेद या हलका भूरा होता है।

अंडे की नाप करीब १.० × ०.८३ इंच होती है।

## २७३ रोली बटई (Rock Bush Quail : Perdicula argoondah)

**पर्याय** : शैल वर्तीर।

**पहचान** : गिरजा बटई-जैसी छोटी चिड़िया, जिसका ऊपरी भाग सिलेटी भूरी और खड़ी आड़ी बादामी धारियों से भरा और नीचे का हिस्सा काली बादामी धारियों वाला होता है। यह भी जमीन पर रहती है।

**रंग-रूप** : लम्बाई लगभग ७ इंच। रोली बटई के नर और मादा के रंग-रूप में भेद रहता है। नर का माथा, चोटी, ठोड़ी और गला और सर का बगली हिस्सा कत्थई। आँख के आगे का थोड़ा हिस्सा और आँख से कान तक की छोटी पट्टी सफेद। शरीर का ऊपरी हिस्सा, दुम तथा डैने का ऊपरी भाग सिलेटी मायल भूरा, जिस पर हलकी बादामी खड़ी और आड़ी धारियाँ। डैने के पंखों पर कत्थई धारियाँ और चित्तियाँ। नीचे का सारा हिस्सा काली बादामी लकीरों से भरा, जो पेट के पिछले भाग तक पहुँचते-पहुँचते समाप्त हो जाती हैं। आँख-लललौंह भूरी। चोंच सिलेटी, टाँगें लाल।

**निवास** : रोली बटई यहाँ की प्रसिद्ध चिड़िया है जो हमारे देश में हिमालय से घुर दक्षिण तक फैली हुई है। पश्चिम की ओर यह जोधपुर, काठियावाड़ और कच्छ तक और पूर्व की ओर उत्तर प्रदेश तक पायी जाती है, लेकिन दक्षिण में यह मालाबार की ओर नहीं दिखाई पड़ती। यह भारत की बारहमासी चिड़िया है।

**विवरण** : रोली बटई गिरजा बटई से कुछ छोटी होती है और संख्या में कम होने के कारण हमारी निगाह इस पर बहुधा नहीं पड़ती। इसे खुले, सूखे और रेतीले मैदान ज्यादा पसन्द हैं और यह अपने लिए पहाड़ियों और पठारों में ऐसे पथरीले मैदानों को भी चुनती है जिसमें झाड़ियाँ हों। ऊँचे पहाड़ों, घने जंगलों और नम स्थानों पर यह नहीं दिखाई पड़ती और न इसे घनी फसल वाले खेत ही पसन्द आते हैं।

प्रायः यह देखा गया है कि रोली और गिरजा बटई एक स्थान पर नहीं दिखाई पड़तीं। दोनों का स्वभाव और रहन-सहन एक-जैसा होने पर भी, जान पड़ता है कि दोनों एक साथ रहना पसन्द नहीं करतीं। इसका मुख्य भोजन दाना, बीज, और कीड़े-मकोड़े हैं।

**घोंसला** : रोली बटई के अंडे देने का समय मई, जून और जुलाई को छोड़ कर करीब-करीब पूरे साल रहता है, लेकिन मार्च और सितम्बर में इनके अंडे अक्सर मिलते हैं। यह किसी झाड़ी के नीचे गढ़ा बनाकर और उसमें घास-फूस रखकर अपना घोंसला बनाती है। मादा ६–७ सफेद या हलके-मटमैले अंडे देती हैं। इन अंडों पर काफी चमक रहती है।

नाप में ये १.० × ०.८५ इंच के करीब होते हैं।

## २७४ ककुनी बटई (Painted Bush Quail : Cryptoplectron erythror hynchum)

**पर्याय** : कदई, चित्र वर्तीर।

**पहचान** : ककुनी यहाँ की प्रसिद्ध बटई है, जिसके शरीर का ऊपरी भाग भूरा और बड़े काले अंडाकार चित्तों से भरा रहता है। नीचे का भाग कत्थई रहता है जिस पर गुलाबीपन लिए सिलेटी चिह्न और काली बिन्दियाँ पड़ी होती हैं। माथा, चोटी और सर का बगली हिस्सा काला रहता है।

**रंग-रूप** : लम्बाई लगभग ७ इंच। ककुनी बटई या कदई के नर और मादा के रंग-रूप में थोड़ा भेद रहता है। नर का माथा, चोटी, ठोड़ी और सर का बगली हिस्सा धुर काला, जिसमें चोटी के पिछले भाग पर एक भूरा चित्ता। गाल और गला सफेद। दोनों आँखों के बीच ही सर के पिछले भाग तक एक सफेद पट्टी। शरीर का ऊपरी भाग भूरा, जिस पर बड़े अंडाकार काले चित्ते। डैने के बाहरी भाग में सफेद लकीरें और बड़े पंख पर कत्थई धारियाँ। नीचे का भाग कत्थई, जिसमें सीने पर गुलाबी मायल सिलेटी चिह्न और काली बिंदिया। शरीर के बगली हिस्से पर भी बड़े-बड़े अंडाकार काले चित्ते।

मादा सर को छोड़ कर बहुत कुछ नर-जैसी लेकिन उसके नीचे का भाग नर से हलका और उसके सीने पर काली बिन्दियाँ बीच में न होकर अगल-बगल में तथा सिलेटी चिह्न नर से कुछ कम। सर पर नर की तरह सफेद चित्ते और धारी नहीं होती तथा माथा, आँख के ऊपर की धारी, सर का बगली हिस्सा, ठोड़ी और गला ललछौंह भूरा होता है। आँख भूरी। चोंच लाल। टाँगें लाल।

**निवास** : ककुनी यहाँ की बारहमासी चिड़िया है जो दक्षिण भारत में पश्चिमी घाट से लेकर महाराष्ट्र, केरल तथा मैसूर में खूब फैली हुई है। नीलगिरि पर्वत पर भी इसे देखना कठिन नहीं, लेकिन यह उत्तर भारत की ओर नहीं देखी जाती। दक्षिण की ओर इसे 'कदई' कहा जाता है।

**विवरण** : ककुनी दक्षिण भारत की बटई है, जो प्रायः १०–१२ के छोटे-छोटे गिरोहों में दिखाई पड़ती है। यह बहुत घने जंगलों में रहना पसन्द नहीं करती और अपने रहने के लिए प्रायः ऐसे जंगल के किनारों को चुनती है जिसके पास-पड़ोस में ऊँची घास या झाड़ियाँ हों। इसे ऐसी पहाड़ियाँ भी बहुत पसन्द आती हैं, जिनमें झाड़ियों की कमी न हो। अगर जंगल में से कोई सड़क जाती हो और उस पर गल्ले से भरी गाड़ियों का आना-जाना रहता हो, तो वहाँ ककुनी बटई गल्ला चुनते-चुनते इतनी ढीठ हो जाती है कि उसके बहुत पास तक बहुत आसानी से पहुँचा जा सकता है।

इसकी बोली 'टूँ-टूँ टूँ-टूँ-टुटूँ-टुटूँ' से बहुत कुछ मिलती-जुलती होती है और इनके भड़के जाने पर एक पक्षी के 'टुटूँ-टुटूँ' करते ही दूसरा पक्षी भी बोल उठता है और फिर धीरे-धीरे सब बोल कर इकट्ठे हो जाते हैं। इनका मुख्य भोजन दाना, बीज, कीड़े-मकोड़े हैं।

**घोंसला** : ककुनी के अंडे देने का समय साल में दो बार आता है, पहला जनवरी से मार्च तक और दूसरा सितम्बर से अक्टबर तक। ये किसी झाड़ी के नीचे छिछला-सा गड्ढा बना कर उसी में घास-फूस बिछा देती हैं और मादा उस में १० से १४ तक अंडे देती है। ये अंडे बहुत हलके बादमी रंग के होते हैं जिन पर किसी प्रकार की चित्तियाँ या बिन्दियाँ नहीं होतीं।

अंडे नाप में १.२५ × ०.९० इंच के होते हैं।

## २७५ सरसैया बटई (E. Painted Bush Quail : Cryptoplectron blewitti)

**पर्याय** : सिरसी, बटई, पश्चिम चित्र वर्तीर।

**पहचान** : सरसैया बटई ककुनी पटई से बहुत मिलता-जुलता पक्षी है। इन दोनों में भेद करना कठिन होता है।

**रंग-रूप** : लम्बाई लगभग ६ इंच। सरसैया बटई के नर और मादा के रंग-रूप में थोड़ा भेद रहता है। नर का रंग ककुनी बटई के नर से बहुत मिलता-जुलता है, लेकिन माथे पर की सफेद पट्टी कुछ ज्यादा चौड़ी और नीचे का कत्थई रंग ककुनी-बटई से कुछ हलका होता है। सीने पर के सिलेटी चिह्न भी कुछ ज्यादा चौड़े, जिससे दूर से इसका सीना सिलेटी-मायल दिखाई पड़ता है।

इसकी मादा भी ककुनी की मादा से इतनी मिलती-जुलती है कि दोनों को जल्द पहचान जाना आसान नहीं होता। इसके निचले हिस्से के कत्थईपन में हलकी सिलेटी झलक होती है और सीने पर के काले चित्ते भी घने होते हैं। आँख-भूरी। चोंच और टाँगें लाल।

**निवास** : सरसैया बटई हमारे यहाँ बारहों महीने रहने वाला पक्षी है, जो मध्य प्रदेश के पूर्वी भागों में सरगुजा से लेकर छोटा नागपुर, बस्तर और पंचमढ़ी की पहाड़ियों के आस-पास ही ज्यादातर दिखाई पड़ता है। इसके अलावा, यह इधर-उधर भी कभी-कभी दिखाई पड़ जाता है, लेकिन यह स्थान परिवर्तन केवल सुविधा को देख कर ही होता है।

**विवरण** : ससैरया बटई भी यहाँ की बारहमासी चिड़िया है। इसके और ककुनी बटई के निवास-स्थान में भेद जरूर होता है, लेकिन दोनों के रंग-रूप और स्वभाव में इतनी समानता होती है कि ककुनी के वर्णन के बाद उसे फिर से दुहराना निरर्थक है। यह छोटे-छोटे गिरोहों में रहने वाली चिड़िया है, जिसकी बोली ककुनी से कुछ हलकी और मुलायम होती है। इसका भोजन भी दाना, गल्ला, कीड़े-मकोड़े ही हैं।

**घोंसला** : सरसैया बटई भी ककुनी की तरह ही घोंसला बनाती है और इसके घोंसले तथा अंडे भी करीब-करीब ककुनी की ही तरह होते हैं। नाप में इसके अंडे ककुनी के अंडों से कुछ छोटे होते हैं ।

अंडे करीब-करीब १.११ × ०.८७ इंच के होते हैं।

## २७६ गोपाल बटई (Painted Quail)

**पर्याय** : कनेली, चित्र वर्तिका।

**पहचान** : गोपाल बटई भी छोटी-सी चितली चिड़िया है जिसके शरीर में काले, सिलेटी और कत्थई रंगों की मिलावट रहती है। ठोड़ी और गला काला रहता है और नीचे का सीने के पास का हिस्सा निलछौंह रहता है। यह भी ज़मीन पर रहती है।

**रंग-रूप** : लम्बाई लगभग ६ इंच। गोपाल बटई के नर और मादा के रंग-रूप में थोड़ा भेद होता है। नर के सारे शरीर में काले, सिलेटी और कत्थई रंग की मिलावट होती है, जिस पर कलछौंह धारियाँ होती हैं। सर के बीचो-बीच माँग पर एक हलकी पट्टी और डैने के दस बड़े पंख भूरे। ठोड़ी और गला काला, जिसके किनारे एक सफेद झालर-सी और उसका किनारा काला। सीना और शरीर का बगली हिस्सा नीला और पैर चटक कत्थई ।

मादा का ऊपरी हिस्सा नर जैसा और डैने के पंख भी वैसे ही, लेकिन उस के गले पर स्याही और सफेदी का प्रभाव होता है । ठोड़ी और गला हलके बादामी रंग और गरदन का निचला भाग, सीना तथा शरीर का बगली हिस्सा भूरे काटे के चिह्नों से भरा। पेट हलका भूरा और चिह्नों से रिक्त, आँख-लाल । चोंच निलछौंह काली । टाँगें-पीली ।

**निवास** : गोपाल बटई यहाँ का प्रसिद्ध बटेर है, जो अपने गोल-मटोल शरीर के कारण गोपाल बटई कहलाता है। यह यहाँ वैसे तो सारे देश में फैली हुई है, लेकिन संख्या में कम होने के कारण यह सुविधाजनक स्थानों में ही दिखाई पड़ती है। हमारे यहाँ यह सबसे ज्यादा बंगाल के नम स्थानों में मिलती है, जहाँ से ये बरसात में देश के दूसरे नम स्थानों में भी फैल जाती है। इसकी ठीक-ठीक सीमा अभी तक निर्धारित नहीं हो सकी है, फिर भी पंजाब से असम तक भी काफी संख्या में देखी जा सकती है। हिमालय के प्रदेशों में भी यह ५-६ हजार फुट तक चढ़ जाती हैं।

**विवरण** : गोपाल बटई, बटेर का ही भाई-बन्धु है, जो अपने छोटे कद के कारण बटई कहा जाता है। यह यहाँ की बारहमासी चिड़िया है, जो नम स्थानों के निकट रहना ज्यादा पसन्द करती है। इसीलिए यह अपनी सुविधा के अनुसार देश के एक स्थान से दूसरे स्थान पर आती-जाती रहती है। इसे रूखे स्थान कतई पसन्द नहीं हैं। बरसात में जब बहुत से स्थान नम हो जाते हैं, तब यह देश के चारो ओर फैल जाती है। इसे घास से भरी नम जगहें और धान के खेतों के किनारे बहुत पसन्द हैं, जहाँ इसे छोटे-छोटे गिरोहों में देखा जा सकता है।

गोपाल बटई का मुख्य भोजन दाना, बीज, फल-फूल और कीड़े-मकोड़े हैं।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय जून-जुलाई है, जब यह प्रायः अकेली या जोड़े में दिखाई पड़ती है। अन्य बटेरों की तरह, यह भी जमीन पर गढ़ा बनाकर और उसमें घास-फूस बिछाकर अपना घोंसला बनाती है। मादा ५–६ अंडे देती है, जो जैतूनी भूरे रंग के होते हैं और उन पर कत्थई भूरी चित्तियाँ पड़ी होती हैं।

अंडे नाप में १.०४ × ०.९५ इंच के होते हैं।

## २७७ गुड़रू बटई (Common Bustared Quail)

**पर्याय** : गुलू, गुन्दरू, प्रख्यात लाव, सलई गुन्दरू।

**पहचान** : ज़मीन पर रहने वाली छोटी-सी चिड़िया जिसके शरीर में काले, सिलेटी तथा कत्थई रंगों की मिलावट रहती है जिससे यह चितली जान पड़ती है। नीचे का भाग भूरा रहता है, जिस पर गरदन के नीचे से सीने तक काली धारियाँ पड़ी रहती हैं।

**रंग-रूप** : लम्बाई लगभग ६ इंच। नर-मादा से कुछ छोटा। गुड़रू के नर और मादा करीब-करीब एक-जैसे होते हैं, लेकिन इन दोनों के ठोड़ी और गले में थोड़ा भेद रहता है। नर के शरीर के ऊपरी हिस्से में काले-कत्थई और भूरे रंग की मिलावट। गला सफेदी-मायल और नीचे का सारा हिस्सा दुम तक भूरे रंग का, जिसमें गरदन के निचले भाग और सीने पर काली धारियाँ। मादा नर-जैसी ही, लेकिन उसकी ठोड़ी, गला और गरदन का निचला भाग एकदम काला। आँख सफेदी-मायल। चोच सिलेटी। टाँगें निलछौंह।

**निवास** : गुड़रू हमारे यहाँ का लवा जाति का छोटा-सा पक्षी है, जो देश के पश्चिमी भागों को छोड़ कर, हिमालय की तराई से दक्षिण तक फैला हुआ है । हिमालय में भी यह नैपाल से पूर्व की ओर ७,००० फुट की ऊँचाई पर पाया जाता है। हमारे देश से बाहर ये चीन, मलाया और श्रीलंका आदि देशों में भी दिखाई पड़ता है।

**विवरण** : गुड़रू उन छोटे कद के पक्षियों में से है, जिन पर सहसा हमारी निगाह नहीं पड़ती । लवा की तरह, यह भी घास के खुले मैदानों, तितरे-बितरे जंगलों तथा झाड़ियों से भरी हुई पहाड़ियों में रहना अधिक पसन्द करता है, लेकिन यह गन्ने के खेतों और बाग-बगीचों में भी अपने रहने का स्थान बना लेता है।

यह अकेले या जोड़े में दिखाई पड़ता है और खतरा निकट देख कर बड़ी तेजी से उड़ कर, फिर थोड़ी-ही दूर पर नीचे उतर पड़ता है। तब किसी झाड़ी या सरपत में ऐसा दुबक जाता है कि दुबारा इसे वहाँ से उड़ाना बहुत कठिन होता है। दूसरे लवों की तरह, इसकी भी मादा हलके स्वर में बोलती है, और नर शायद कभी नहीं बोलता। नर कद में भी मादा से छोटा होता है, जिसे केवल अंडे ही नहीं सेने पड़ते, बल्कि बच्चों की भी देख-रेख करनी पड़ती है। गुड़रू का मुख्य भोजन दाना, बीज और छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े हैं। इनकी और सब आदतें लवों की तरह होती हैं। मादा का रंग नर से कुछ चटक होता है। इसके पंजे में तीन ही अंगूठे होते हैं।

**घोंसला**: यहाँ का बारहमासी पक्षी होने के कारण, गुड़रू जून से सितम्बर तक यहीं जमीन में गढ़ा बनाकर और उसमें घास-फूस एवं पर आदि बिछा कर घोंसला बना लेता है। उसके ऊपर वह कभी-कभी घास का गुम्बदनमा ढकना भी लगा देता है। इसमें जाने के लिए राता बगल से होता है।

मादा ३ से ५ तक अंडे देती है, जो पत्थरी रंग के होते हैं और उन पर भूरी बिंदियाँ और चित्ते पड़े होते हैं।

नाप में ये अंडे ०.८५ × ०.६५ इंच के होते हैं।

## २७८ पहाड़ी बटेर (Mountain Quail : Ophrysia Superciliosa)

**पर्याय**: गिरि वर्तिका।

**पहचान**: पहाड़ी बटेर, अन्य बटेरों के आकार का पक्षी है जिसका शरीर जैतूनी भूरे रंग का रहता है और परों के किनारे काले होते हैं जिससे यह चितला लगता है। नर के सर का बगली हिस्सा, ठोड़ी तथा गला काला रहता है। माथा सफेद होता है। आँख के आस-पास दो-तीन सफेद चित्ते पड़े रहते हैं।

**रंग-रूप**: लम्बाई लगभग ९ इंच। नर और मादा के रंग-रूप में भेद। नर के सर का सारा बगली हिस्सा काला, जिस पर एक सफेद चिता आँख के आगे, दूसरा आँख के पीछे और तीसरा कान के नीचे। माथा सफेद, जहाँ से एक चौड़ी सफेद धारी गरदन तक चली जाती है। इस सफेद धारी के ऊपर इतनी ही चौड़ी एक काली धारी और इन धारियों के बीच चोटी का जो हिस्सा बचता है, वह भूरी और काली धारियों से भरा। ठोड़ी और गला काला। शरीर का ऊपरी और नीचे का हिस्सा तथा डैनों का बाहरी भाग जैतूनी भूरा। परों के किनारे काले। दुम और डैने के दस बड़े पंखे सादे जैतूनी-भूरे और दुम के नीचे का भाग घुर काला, जिसमें सफेद चित्तियाँ।

मादा का माथा और आँख पर की पट्टी सिलेटी मायल गुलाबी और उसके ऊपर उससे कुछ छोटी एक काली पट्टी। चोटी ललछौंह भूरी, जिस पर थोड़ी-सी काली लकीरें। उसकी आँख के सामने और पीछे एक सादा चित्ता और सामने वाले चित्ते के नीचे एक छोटा काला चित्ता। इसके दोनों बगली हिस्से और गला सिलेटी मायल गुलाबी। बदन का सारा ऊपरी भाग, डैनों के बाहरी हिस्से और दुम ललछौंह भूरी, जब कि गरदन पर काली धारियाँ, डैनों पर तिकोने काले चिह्न और दुमगज तथा पीठ पर बड़े-बड़े तिकोने काले चिह्न। दुम पर भी काली धारियाँ और चित्ते तथा पीठ पर एवं डैनों के दस बड़े पंखों पर भूरी चित्तियाँ। नीचे का सारा हिस्सा ललछौंह भूरा, जिस पर काली चित्तियाँ और लकीरें। आँख ललछौंह भूरी। चोंच लाल और टाँगे लाल।

**निवास**: पहाड़ी बटेर उन पक्षियों में है, जो हमारे देश में बहुत कम पाये जाते हैं। इसको तीतर और बटेर के बीच का पक्षी कहना ठीक होगा, क्योंकि यह कद में सब बटेरों से बड़ा होता है और इसके पंख बटेरों के बजाय तीतर से मिलते हैं। हमारे देश में इसके निवास की सीमा अभी ठीक तौर से नहीं जानी जा सकी है, लेकिन ऐसा अनुमान है कि यह जाड़ों में हमारे देश में आकर केवल उत्तर भारत के पहाड़ी प्रदेशों में ही रह जाते हैं। हालाँकि कुछ लोगों का यह भी विश्वास है कि यह हमारे यहाँ का बारहमासी बटेर है, जो हिमालय के प्रान्तों में थोड़ा स्थान-परिवर्तन कर लेता है।

**विवरण**: पहाड़ी बटेर, जैसा कि उसके नाम से स्पष्ट है, पहाड़ का बटेर है, जो कद में हमारे यहाँ के घाघस और चिनिंग बटेरों से कुछ बड़ा होता है। यहाँ यह बहुत कम संख्या में पाया जाता है, इसी से अभी तक इसके बारे में ज्यादा जानकारी नहीं प्राप्त हो सकी है। इसका स्वभाव बहुत कुछ अन्य बटेरों के अनुरूप ही होता है।

यह वैसे तो आठ-दस के छोटे-छोटे गिरोहों में रहता है, लेकिन कभी-कभी इसे जोड़े में भी देखा जा सकता है। यह घास के मैदानों और झाड़ियों में रहना ज्यादा पसन्द करता है, जिसमें यह छिप जाता है।

पहाड़ी बटेर का मुख्य भोजन बीज, दाना, कल्ले और कीड़े-मकोड़े हैं जिनकी तलाश में यह सुबह-शाम झाड़ियों से बाहर निकल कर खुले मैदानों में घूमता-फिरता है। अपने साथियों को सतर्क रहने के लिए यह एक प्रकार की सीटीनुमा तेज बोली बोलता है। सकी मामूली बोली अन्य बटेरों जैसी ही होती है।

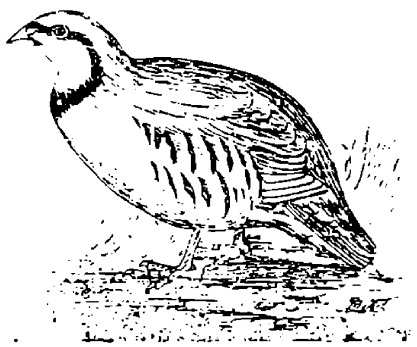
**घोंसला**: इसके जोड़ा बाँधने का समय जून-जुलाई है, जब यह किसी झाड़ी के नीचे गढ़ा बनाकर और उसमें घास-फूस बिछा कर अपना घोंसला तैयार कर लेता है। मादा ६–७ अंडे देती है, जो एकदम सफेद या हलके पत्थरी रंग के होते हैं।

अंडे नाप में करीब १.०० × १.३ इंच के होते हैं।

## २७९ चकोर (Chukor : Alectoris Graca)

**पर्याय** : चुकरू, काउ-काउ, हिमालय रक्त कर्ण चकोर।

**पहचान** : चकोर हमारे देश का बहुत ही प्रसिद्ध पक्षी है। यह पहाड़ों पर ही मिलता है। इसके शरीर का ऊपरी भाग राखी रहता है और कंधों पर ललछौंह झलक रहती है। इसे इसके डैने के पास पड़ी हुई काली और सफेद धारियों और चोंच की जड़ से आँखों पर होती हुई गले के नीचे तक की काली पट्टी के कारण आसानी से पहचाना जाता है।



चकोर

**रंग-रूप** : लम्बाई लगभग १५ इंच। चकोर के नर-मादा का रंग-रूप तो एक-जैसा ही होता है, लेकिन कद में मादा नर से कुछ छोटी होती है। शरीर का ऊपरी हिस्सा राखी, जिसमें कंधों और चोटी पर हलकी ललछौंह झलक। चोटी के बगली हिस्से पर आँख के ऊपर एक भूरी रेखा, जिसका किनारा कंजई। डैने के बाहरी पर राखी और बड़े पंख भूरे। दुम राखी, जिसके बाहरी परों का आधा हिस्सा कत्थई। माथे पर से दोनों ओर आँख पर होती हुई गले के चारों ओर एक काली कंठी और कंठी के भीतर का हिस्सा हलका भूरापन लिये सफेद। ठोड़ी पर एक काला चित्ता और सीना राखी, जिसमें भूरेपन की मिलावट। नीचे का बाकी हिस्सा हलके भूरे रंग का, जो दुम की ओर जाते-जाते गहरा हो जाता है। शरीर के बगली हिस्से पर काली और कत्थई पट्टियाँ। आँख भूरी या पिलछौंह नारंगी। चोंच लाल। टाँगें लाल। नर की टाँगों में एक भोंथरा खार रहता है।

**निवास** : चकोर हमारे यहाँ का शिकार का ही नहीं, वरन् साहित्य का भी प्रसिद्ध पक्षी है, जिसने साहित्य में अपना विशेष स्थान बना लिया है।

इसके निवास-स्थान और रंग-रूप के बारे में जानने से पहले, इसके बारे में कुछ खास-खास बातें जान लेना जरूरी है। चकोर की हमारे यहाँ कई जातियाँ हैं, जो रंग-रूप के थोड़े भेद के कारण अलग कर दी गयी हैं, पर इनके रंग-रूप में जो थोड़ा-सा भेद है, वह इनके भिन्न-भिन्न तापमानों में रहने के कारण ही है।

इनका निवास-स्थान बहुत विस्तृत है। नेपाल से लेकर अफगानिस्तान तक हिमालय पर्वत-माला और उसके दक्षिण में सुलेमान पर्वत में, ये फैले हुए हैं। इसके अलावा, ये पश्चिम की ओर पंजाब और सांभर झील के आस-पास मिलते हैं। हमारे देश के बाहर, ये तुर्किस्तान, ईरान, अरब और यूनान और उधर चीन-तिब्बत और मंगोलिया तक फैले हुए हैं।

चकोर ऐसी भिन्न-भिन्न आबहवा और स्थानों में रहते हैं कि देख कर ताज्जुब होता है। सिंध के रेगिस्तानी मैदानों से लेकर हिमालय के घने जंगलों और तिब्बत के १६,००० फुट ऊँचे पठारों तक इनका फैलाव है। इन स्थानों के तापमान, जलवायु और वर्षा की मात्रा में आकाश और पाताल का अन्तर है। चकोर इन सभी स्थानों के लिए अपने को उपयुक्त बना लेते हैं जिसका सिर्फ नतीजा यही होता है कि भिन्न-भिन्न स्थान के चकोरों के रंग-रूप और कद में फर्क हो जाता है और इसी फर्क के आधार पर वैज्ञानिकों ने अलग-अलग नामकरण किये हैं।

जिन घने हरे-भरे जंगलों की जलवायु और तापमान नम और समशीतोष्ण रहता है वहाँ के चकोर मझोले कद के और गहरे रंग के होते हैं और जहाँ का तापमान नीचा, जंगल तितरे-बितरे या हलके होते हैं, वहाँ के चकोर कद में बड़े होते हैं और उनका रंग भी हलका होता है। रेगिस्तानी, उजाड़ और सूखे पर्वतों के चकोरों का रंग और भी हल्का और उनका कद भी छोटा होता है।

**विवरण** : चकोर हमारे यहाँ का बहुत परिचित पहाड़ी पक्षी है, जिसे ऐसे खुले मैदान ज्यादा पसन्द हैं, जो झाड़ियों और घास से भरे हों। यह ऐसे जंगलों में भी रहना पसन्द करते हैं, जिसके किनारे पर खुले मैदान या खेत हों। हिमालय की हरी घाटियाँ, घास के ढलुए मैदान और खेत का पड़ोस इनके प्रिय स्थान हैं, जहाँ इन्हें आसानी से देखा जा सकता है। ये पीछा करने पर पहले भागना ही पसन्द करते हैं, पर अधिक दबाव पड़ने पर तेजी से उड़ते हैं।

चकोर इतने देशों में फैले रहने पर भी मौसमी चिड़िया न होकर, यहाँ का बारहमासी पक्षी है, जो मौसम के बदलाव के साथ थोड़ा-बहुत स्थान-परिवर्तन जरूर कर लेता है। ये मार्च से अक्टूबर तक ५–६ हजार फुट के ऊपर, जहाँ घास से भरी पहाड़ियाँ हैं और जहाँ नालों और झाड़ियों की भी कमी न हो, काफी संख्या में मिलते हैं। अक्टूबर के बाद ये और निचली गरम पहाड़ियों में उतर आते हैं, जहाँ ये जाड़े भर रहते हैं। धान की कटाई के समय ये काफी तदाद में दिखाई पड़ते हैं। सितम्बर के करीब जब पहाड़ों के आस-पास फसल की कटाई होती है, तो ये खेतों के निकट ही रहते हैं और फिर जाड़ों में गेहूँ आदि के

खेतों की गुआई के समय दाना खाने के लिए आबादियों के निकट पहुँच जाते हैं।

शौकीन लोग इन्हें पिंजड़े में पालने के लिए खरीदते हैं और तीतर की तरह ये भी बहुत लड़ाकू होते हैं। ये बहुत जल्द पालतू हो जाते हैं और तीतर की तरह अपने मालिक के पीछे-पीछे घूमा करते हैं। तीतरों की तरह इन्हें भी लोग लड़ाने के लिए पालते हैं और इसी कारण इन्हें अक्सर बंदी होकर सारा जीवन पिंजड़ों में बिताना पड़ता है।

अन्य तीतरों की तरह चकोर भी सुबह, शाम बोलते हैं पर दिन को भी इनकी बोली अक्सर सुनाई पड़ती है। ये 'चक-चक, जैसी तेज बोली बोलते हैं और शायद इनकी इसी बोली के कारण ही इनको चकोर कहा जाता है।

चकोर का मुख्य भोजन दाना, बीज, जंगली फल-फूल और नरम कल्ले आदि हैं, लेकिन ये कीड़े-मकोड़े भी खाते हैं। इनके अंगारे चुनने की बात में केवल इतनी ही सच्चाई है कि ये छोटे-छोटे अंगारों को रात में चमकने वाले जुगनू आदि समझ कर, उन पर अपनी चोंच चला देते हैं और अंगारे उनके मुँह के भीतर जाते ही बुझ जाते हैं।

चकोर के बारे में दूसरी साहित्यिक किंवदन्ती यह भी है कि यह चन्द्रमा की ओर रात भर गरदन उठा कर देखता रहता है और जैसे-जैसे आकाश में चन्द्रमा घूमता है, उसी प्रकार इसकी गरदन भी घूमती जाती है, लेकिन इसमें असलियत जरा भी नहीं है।

**घोंसला** : इस देश में भिन्न-भिन्न स्थानों में पाये जाने के कारण, चकोर के जोड़ा बाँधने और अंडा देने का समय भी अलग-अलग होता है। यह भी गढ़ों में कुछ घास-फूस रख कर अपना घोंसला बनाते हैं, जिसमें मादा ८-१० अंडे देती है। इनके अंडों का रंग संदलीपन लिये सफेद या हलका पत्थरी रहता है, जिस पर बैंगनी या बादामी रंग की चित्तियाँ पड़ी होती हैं। इन अंडों में काफी चमक भी रहती है।

नाप में ये अंडे करीब १.६८ × १.२५ इंच के होते हैं।

## २८० सी सी तीतर (See See Partridge : Ammoperdix griseogularis)

**पर्याय** : श्रीक तित्तिर।

**पहचान** : सी सी के शरीर का ऊपरी हिस्सा, दुम और छोटी पखनियाँ कंजई भूरी रहती हैं जिन पर दुम की जड़ के पास तिकोने काले चिह्न पड़े रहते हैं। नीचे का हिस्सा गले से पेट तक गुलाबी मायल रहता है जो पीछे जाते-जाते सफेद हो जाता है। आँख पर एक काली रेखा रहती है और कान के पीछे एक चटक भूरा चित्ता पड़ा रहता है।

**रंग-रूप** : लम्बाई लगभग १० इंच। सी सी के नर और मादा के रंग-रूप में थोड़ा भेद रहता है। नर का माथा और आँख पर की रेखा काली, आँख के आगे का भाग सफेद और आंख के पीछे एक-एक सफेद पट्टी रहती है, जिसके नीचे एक पतली समानान्तर रेखा। चोटी और कान पर का हिस्सा, गाल, ठोड़ी, और गला सिलेटी तथा कान के पीछे एक चटक भूरा चित्ता। गरदन के दोनों बगली हिस्सों पर सिलेटी और मटमैली धारियाँ। शरीर का ऊपरी भाग, दुम और छोटी पखनियाँ कंजई-भूरी और दुमगज़े पर तिकोने काले चिह्न। बड़े पंख भूरे और दुम के बीच के परों पर कत्थई चित्तियाँ नीचे गले से पेट तक सारा हिस्सा गुलाबी-मायल, जो दुम से नीचे पहुँचते-पहुँचते हलका होकर करीब-करीब सफेद हो जाता है। शरीर के बगली हिस्सों पर चौड़ी काली और कत्थई धारियाँ।

मादा का सारा शरीर सिलेटी और हलके बादामी रंग की खड़ी आड़ी और लहरदार धारियों से भरा जिसमें दुमगज़े और बगली हिस्सों पर छोटी-छोटी काली धारियाँ भी होती हैं। डैनों और दुम का रंग नर की तरह रहता है। आँख पिलछौंह नारंगी या भूरी चोंच नारंगी। टाँगें पीली।

**निवास** : सी सी यहाँ का प्रसिद्ध पहाड़ी तीतर है, जो हमारे देश में केवल पंजाब में पाया जाता है। हमारे देश से बाहर यह पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बिलोचिस्तान होते हुए ईरान और अदन तक फैला हुआ है। यह अपने ढंग का अकेला ही पक्षी है जो रंग-रूप और कुछ दूसरी बातों में भी दूसरे तीतरों से भिन्न रहता है। यह यहाँ का बारहमासी पक्षी है।

**विवरण** : सी सी खुले, रेतीले और पथरीले मैदानों में रहने वाला तीतर है, जो पहाड़ों पर भी ७ हजार फुट की उँचाई तक पहुँच जाता है। इसे घास से भरे हुए मैदान पहाड़ी जगहों से ज्यादा पसन्द हैं।

सी सी वैसे तो जोड़े में रहता है, लेकिन कभी-कभी ये जोड़े चराई की सुविधा के कारण इकट्ठे होकर छोटे-छोटे झुंडों का रूप धारण कर लेते हैं। यह काफी ढीठ पक्षी है, जो खुले मैदानों में निधड़क घूमा करता है। इसे प्रकृति ने ऐसी मटमैली पोशाक दे रखी है, जो उसके पास-पड़ोस के रंग से इतनी मिल जाती है कि जब यह चुपचाप खड़ा हो तो जल्द इस पर निगाह नहीं पड़ सकती। इसकी बोली 'सू-सी सू-सी' जैसी होती है, इसी कारण इसका 'सी-सी' नाम पड़ा है। खतरा निकट देख कर, यह बटेरों की तरह तेजी से उड़ता है और उड़ते समय भी बोलता रहता है।

सी सी मुरगियों की तरह मिट्टी में नहाने के बड़े शौकीन होते हैं और सबेरे इन्हें खुले मैदानों में जमीन में गढ़ा बना कर मिट्टी में नहाते देखा जा सकता है। इसका मुख्य भोजन घास के बीज हैं, लेकिन यह कीड़े-मकोड़े भी खा लेता है।

**घोंसला** : सी सी के जोड़ा बाँधने का समय अप्रैल से जन

तक रहता है। मादा किसी झाड़ी या पत्थर के नीचे जमीन में गढ़ा-सा बना कर तथा उसमें घास-फूस और पर बिछाकर ८ से १२ तक अंडे देती है। ये अंडे सफेद या हलके भूरे रंग के होते हैं।

अंडे नाप में १.४ × १.१ इंच के लगभग होते हैं।

## २८१ राम चकोर (Snow Cock : Tetraogallus himalayensis)

**पर्याय** : तुल्लू, लूयू, बैरा, हुइनवाल, जेरमोनाल, कुवक, हिम तित्तिर।

**पहचान** : राम चकोर का ऊपरी भाग और डैनों का बाहरी हिस्सा सिलेटी रहता है जिस पर काली लहरदार धारियाँ पड़ी रहती हैं। नीचे का हिस्सा गाढ़ा सिलेटी होता है जिस पर काली चित्तियाँ और बगली हिस्से पर काली और कत्थई धारियाँ पड़ी रहती हैं। यह ऊँचे पहाड़ों पर पाया जाता है।

**रंग-रूप** : लम्बाई लगभग २५ इंच। मादा कद में नर से कुछ छोटी। राम चकोर के नर और मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। इसकी चोटी और गरदन का ऊपरी भाग सिलेटी, शरीर का ऊपरी भाग और डैनों का बाहरी भाग भी सिलेटी, जिस पर पतली-पतली काली लहरदार धारियाँ। दुमगज़ा और डैनों का कुछ भाग कत्थई। दुम के बीच के पर कत्थई सिलेटी, जिस पर काली चित्तियाँ। बाकी पर कत्थई और उन पर भी काले चिह्न। डैने के दस पंख सफेद, जिनके सिरे काले। सर और गरदन का बगली हिस्सा सफेद। एक कत्थई पट्टी आँख से शुरू होकर कान पर होती हुई कंधे तक चली जाती है, जहाँ जाकर वह काफी चौड़ी हो जाती है। एक दूसरी कत्थई पट्टी कंठी की तरह से गले पर, सीना सफेद, जहाँ के परों पर एक आड़ी काली धारी। शरीर का निचला हिस्सा गाढ़ा सिलेटी, जिस पर काली चित्तियाँ और बगली हिस्से पर काली और कत्थई धारियाँ। आँख के पीछे थोड़ी-सी खाल बिना पर की भी होती है, जिसका रंग पीला होता है। आँख-भूरी। चोंच सींग के रंग की। टाँगें लाल। नर की टाँग में एक भोंथरा और बड़ा-सा खार होता है।

**निवास** : राम चकोर हमारे देश के ऊँचे पहाड़ों का बारहमासी पक्षी है, जो यहाँ हिमालय प्रदेश में कुमायूं से कश्मीर तक पाया जाता है। यह हिमालय पर्वत-माला में गरमियों में तो ११ हजार से १८ हजार फुट के बीच की पट्टी में रहता है, लेकिन जाड़ों में ७–८ हजार फुट तक उपर जाता है। हमारे देश से बाहर यह अफगानिस्तान तक फैला हुआ है।

**विवरण** : राम चकोर ऊँचे पहाड़ों पर रहने वाला पक्षी है, जिसे कद में चकोर से बड़ा होने के कारण यह सुन्दर नाम मिला है। इस जाति के दो पक्षी हमारे देश में पाये जाते हैं, जिन्हें क्रमशः राम चकोर और मोर चकोर कहा जाता है। ये दोनों हिमालय पर्वतमाला में ७-८ हजार फुट से ऊँचे स्थानों पर ही रहते हैं। राम चकोर वैसे तो ५-७ के छोटे-छोटे झुंड में रहते हैं, लेकिन कभी-कभी इनका २५-३० का गिरोह भी दिखाई पड़ता है। लेकिन भड़कने पर ये फिर छोटे-छोटे गिरोहों में बँटकर उड़ जाते हैं। राम-चकोर बहुत सतर्क पक्षी है और खुले मैदानों में रहने के कारण इसके निकट तक पहुँचना आसान नहीं होता।

राम चकोर का मुख्य भोजन दाना, बीज और कीड़े-मकोड़े हैं। इनकी बोली सीटीनुमा होती है और ये उड़ते समय भी बराबर बोलते रहते हैं।

**घोंसला** : राम चकोर के जोड़ा बाँधने का समय अप्रैल और मई है, जब मादा किसी पत्थर या झाड़ी के निकट जमीन में गढ़ा खोद कर उसी में अपने अंडे देती है। अंडों की संख्या प्रायः ५ रहती है, जिन पर काफी चमक होती है। उनका रंग हलका पत्थरी होता है, जिसमें जैतूनी या भूरी झलक होती है और कत्थई चित्तियाँ भी पड़ी रहती हैं।

नाप में अंडे करीब २.८ × १.९८ इंच के होते हैं।

## २८२ काला तीतर (Black Partridge : Francolinus Francolinus)

**पर्याय** : सुमान तेरी कुदरत, कृष्ण तित्तिर।

**पहचान** : काला तीतर यहाँ का प्रसिद्ध पक्षी है। पहाड़ों के अलावा यह बड़ी नदियों के कछार में भी मिलता है। इसका शरीर काला और सफेद चिह्नों से भरा रहता है। इसका सीना काला, आँख के नीचे एक सफेद चित्ता रहता है। गले के चारो ओर एक कत्थई कंठा रहता है। इस सुन्दर पक्षी को पहचानना कठिन नहीं होता।

**रंग-रूप** : लम्बाई १३ इंच। नर और मादा के रंग-रूप में थोड़ा भेद होता है। कद में भी मादा नर से कुछ छोटी होती है। नर की गुद्दी और सर का ऊपरी हिस्सा कलछौंह भूरा, जिस पर भूरी और सफेद लकीरें। सर का बगली हिस्सा, ठोड़ी और गला काला। आँख के नीचे एक चौड़ा सफेद चित्ता, गले के चारों ओर एक कत्थई कंठा। पीठ का अगला हिस्सा काला, जिस पर सफेद बिन्दियाँ। बाकी पीठ और दुम काली, जिस पर सफेद धारियाँ। बड़े पंख भूरे, जिन पर हलकी बादामी बिन्दियों वाली लकीरें। नीचे का हिस्सा घुर काला, जिसमें सीने और शरीर के दोनों बगली हिस्सों पर सफेद बिन्दियाँ। पेट का पिछला और दुम के नीचे का भाग हलका कत्थई और सफेद धारियों से भरा।

मादा के शरीर का ऊपरी हिस्सा, डैने और दुम का रंग नर-जैसा, लेकिन काले रंग के स्थान पर गाढ़ा भूरा। नर के कत्थई कंठे की जगह, मादा की गुद्दी पर एक गंदा कत्थई चित्ता। सर के बगल का हिस्सा, हलका बादामी। ठोड़ी और गला सफेदी-मायल नीचे का हिस्सा भूरा जिस पर गाढ़ी भूरी लकीरें और चिह्न बेतरतीबी से पड़े। दुम के नीचे एक कत्थई चित्ता। आँख भूरी। चोंच काली। टाँगें भूरापन लिये लाल। नर की टाँग में एक मोंथरा-सा खार होता है।

**निवास** : काला तीतर हमारे देश का बहुत सुन्दर पक्षी है, जो यहीं मौसम में थोड़ा-बहुत स्थान भले ही बदल ले, लेकिन हमारा देश छोड़ कर दूसरे देशों में नहीं जाता। इनके निवास-स्थान की सीमा पाकिस्तान में सिंध होते हुए, अरावली और आबू के उत्तरी हिस्से के साथ-साथ ग्वालियर तक और वहाँ से सीधे उड़ीसा में चिलका झील तक मानी जा सकती है। इसको हम काले तीतर की दक्खिनी सीमा कह सकते हैं। उत्तरी सीमा बंगाल से हिमालय पर्वत श्रेणी के साथ-साथ पंजाब के उत्तरी भागों तक बनेगी। लेकिन इस बीच में काले तीतर केवल पहाड़ियों तक ही सीमित रहते हों, ऐसी बात नहीं है। वे गंगा आदि बड़ी नदियों के कछार में भी काफी संख्या में मिलते हैं। पानी के निकट रहने वाले पक्षी होने के कारण, ये राजस्थान और उत्तर प्रदेश के सूखे मैदानों में नहीं पाये जाते। हमारे देश के अलावा ये पाकिस्तान अफ़गानिस्तान, बिलोचिस्तान और ईरान तक पाये जाते हैं।

**विवरण** : काले तीतर वैसे तो उत्तर भारत में काफी स्थानों में फैले हुए हैं, लेकिन गंगा-जमुना के झाऊ से भरे हुए कछार इनके रहने के सुन्दर स्थान हैं। जहाँ सरपत और झाऊ के जंगलों में इनकी बोली सुन कर दूर ही से, इनका पता चल जाता है। नर तीतर किसी ऊँचे टीले या बबूल आदि की डाल पर बैठ कर थोड़ी-थोड़ी देर पर बोलता रहता है। बोली 'सुभान तेरी कुदरत'-सी जान पड़ती है, पर आदमियों की आहट पाते ही वह बोलना बन्द करके ऐसा चुपचाप दबक जाता है, जैसे वहाँ कोई पक्षी कभी था ही नहीं।

ये जंगल या कछार को छोड़कर, आस-पास की झाड़ी वाले मैदानों में बहुत ही कम आते हैं। लेकिन जहाँ गन्ने की बहुतायत से खेती होती है, इनके झुंड के झुंड बीस-बीस मील का रास्ता तय करके गन्ने के खेतों में चले आते हैं और शायद कछार समझ कर वहीं रह जाते हैं।

काले तीतर जाड़े के मौसम में और जोड़ा बाँधने के समय बहुत बोलते हैं, पर वैसे बरसात में भी इनकी परिचित बोली सुनी जा सकती है। ये सवेरे के समय ज्यादा बोलते हैं, लेकिन शाम को भी कभी-कभी इनकी 'सुभान तेरी कुदरत' कानों में पड़ ही जाती है।

इनकी चराई का समय प्रातः काल होता है, जब ये इधर-उधर फैल कर कीड़े-मकोड़े खाते रहते हैं। यही इनका मुख्य भोजन है। वैसे कीड़ों के अलावा ये दाना, बीज घास-फूस और जड़ें भी खा लेते हैं। काले तीतर भी बहुधा बरसात में मुरगियों की तरह जमीन में गढ़ा खोद कर उसमें बैठते हैं और मिट्टी में नहाते रहते हैं, कभी-कभी ऐसा ही गढ़ा बनाकर उसमें धूप भी सेंकते रहते हैं। ये गिरोह में न रह कर जोड़ा बांध कर रहते हैं बल्कि कुछ लोगों को तो ऐसा विश्वास है कि ये जिन्दगी भर के लिए जोड़ा बाँध लेते हैं।

इनकी कुछ आदतों के बारे में कभी-कभी बड़ा ताज्जुब होता है। इनमें से कुछ तो ऐसे निडर होते हैं कि निकट जाने पर ही उड़ते हैं और कुछ दूर ही से उड़ जाते हैं। कोई-कोई तो आदमियों की आहट पाकर ही भाग जाते हैं और कोई सड़कों तक पर निधड़क घूमते रहते हैं। इससे ऐसा अनुमान होता है कि जैसी परिस्थिति में इन्हें रहना पड़ता है, अपनी वैसी ही आदत ये बना लेते हैं। ये जमीन पर रहने वाले पक्षी हैं, जिनके नर ही बोलते समय पेड़ की डालियों पर बैठते हैं। इनके नर के पैर में तो खार होता ही है, लेकिन मादा के भी कभी-कभी खार पाया जाता है।

काले तीतर को लोग भूरे तीतर की तरह लड़ने के लिए नहीं पालते, बल्कि अपनी सुन्दर पोशाक और बोली के लिए इन्हें बंदी होना पड़ता है। काले तीतर वैसे तो यहाँ के मौसमी पक्षी नहीं है, लेकिन जाड़ों में पहाड़ की तराइयों में नीचे उतर आते हैं और गरमियों में फिर ५-६ हजार फुट की ऊँचाई तक चढ़ जाते हैं।

**घोंसला** : काले तीतर के अंडा देने का समय जून-जुलाई है, जब मादा किसी सरपत या झाऊ के नीचे एक गढ़ा-सा खोद कर उसमें घास-फूस या सूखी पत्तियाँ बिछाकर अपना घोंसला बनाती है। घोंसले को वह अंडा देने के बाद फिर घास-फूस से ढक देती है ताकि जल्दी में उस पर निगाह न पड़े। इनके अंडों की संख्या १०-१२ और रंग अंगूरी या हरछौंह भूरा होता है, जिन पर चित्तियाँ नहीं होती पर काफी चमक जरूर होती है।

अंडे नाप में लगभग १.५६ × १.२८ इंच के होते हैं।

## २८३ तेलिया तीतर (Painted Partridge : Francolinus pictus)

**पर्याय** : छोटा काला तीतर, कलीतुर, चित्र तित्तिर।

**पहचान** : यह तीतर मैदानों में रहना ज्यादा पसन्द करता है। इसका ऊपरी हिस्सा काला होता है जिस पर सफेद चिह्न पड़े रहते हैं। नीचे का भाग भूरा और सफेद चित्तियों से भरा रहता है। दुम के नीचे का भाग चटक कत्थई रहता है।

**रंग-रूप** : लम्बाई लगभग १२ इंच। नर और मादा में बहुत थोड़ा भेद होता है। नर के माथे और सर के बगली हिस्से कत्थई और चोटी काली, जिस पर पतली-पतली कत्थई

धारियाँ। गीठ, दुमगज़ा और दुम-ढकने काले, जिन पर सफ़ेद काटे के चिह्न, डैनों का ऊपरी हिस्सा काला और पखनियों पर भूरे रंग के चित्ते, कुछ के किनारे भी भूरे। बड़े पंख काले जिन पर ललछौंह पट्टियाँ। गला और ठोड़ी हलके भूरे रंग की, जिन पर थोड़े से काले चित्ते। गरदन का निचला भाग हलका भूरा, जिस पर काली धारियाँ। नीचे का हिस्सा भूरापन लिये सफ़ेद, जो बदन के बगली हिस्सों पर गहरा हो जाता है। नीचे का हिस्सा सफ़ेद चित्तियों से भरा जान पड़ता है। दुम के नीचे का हिस्सा चटक कत्थई। मादा और नर में केवल इतना भेद होता है कि उसके ऊपरी भाग के चित्ते और चिह्न नर के चिह्नों से कुछ छोटे और धुमैले होते हैं और उसके गले पर काले चित्ते नहीं होते। आँख भूरी। चोंच कलछौंह या गाढ़ी भूरी। टाँगें हलके लाल रंग की। टाँगों में अन्य तीतरों की तरह खार नहीं होते।

**निवास** : तेलिया तीतर को छोटा काला तीतर भी कहा जाता है। ये भारतवर्ष का बारहमासी पक्षी है और इस देश के अलावा दूसरे देशों में नहीं पाया जाता। काले तीतर के निवास-स्थान की सीमा को ही हम तेलिया तीतर के निवास-स्थान की उत्तरी सीमा कह सकते हैं। सीमा से दक्षिण की ओर ये काठियावाड़, गुजरात, कच्छ और खानदेश तक और उससे भी आगे आन्ध्र प्रदेश तक फैले हुए हैं। दक्षिण भारत के अन्य प्रदेशों में भी, ये कहीं-कहीं पाये जाते हैं, लेकिन उत्तर की ओर इनका कोई पता नहीं मिलता।

**विवरण** : इन छोटे काले तीतरों को तीतरों का दक्षिणी प्रतिनिधि कहें तो अनुचित न होगा, क्योंकि ये काले तीतर की मादा से शक्ल-सूरत में बहुत कुछ मिलते-जुलते रहते हैं। हाँ, आदत में जरूर दोनों में काफी फर्क है। इस छोटे तीतर को जहाँ ऊँची घास और ज्यादा नम जमीन पसन्द है, वहीं यह पेड़ों पर भी बैठना पसन्द करता है। प्रातः और सायंकाल तो प्रायः पेड़ों पर ही देखा जा सकता है। मादा तो पेड़ के बीच में छिप कर बैठती है, लेकिन नर अलग बैठा बोलता है। इसकी यह बोली जोड़ा बाँधने का समय निकट आने पर और भी तेज हो जाती है।

अन्य तीतरों की तरह, तेलिया तीतर को भी झाड़ी-झंखाड़ और सरपत या झाऊ से भरे मैदान, या उजड़े खेत बहुत पसन्द आते हैं। ये अपने रहने के लिए ऐसे पथरीले छिछले जंगल चुनते हैं, जिनके पास-पड़ोस में नाले और खेत होते हैं। क्योंकि-इन्हें सूखी जगह से पानी के निकट नम जगह ज्यादा पसन्द है। तेलिया तीतर पेड़ पर बैठते जरूर हैं, लेकिन काले तीतर की ही तरह यह भी जमीन पर ही किसी झाड़ी या सरपत के बीच में अपना बसेरा लेते हैं। इनकी बोली एकदम काले तीतर की तरह न होने पर भी, उससे बहुत कुछ मिलती है।

ये उड़ने और भागने में काले तीतर से कहीं तेज होते हैं। इनका भोजन कीड़े-मकोड़े, दाने, नरम कल्ले और पत्तियाँ हैं, दीमक तो सभी तीतरों का बहुत प्रिय भोजन होती ही है। अन्य तीतरों की तरह ये भी अक्सर खाने की तलाश में जमीन कुरेदते हुए दिखाई पड़ते हैं और प्रायः जमीन में गढ़ा खोद कर उसमें मुरगियों की तरह मिट्टी से नहाते हैं। गरमियों में झाड़ी के नीचे मिट्टी कुरेद कर उसी में बैठे रहते हैं और जाड़ों में खुले में लेट कर धूप सेंकते हैं।

**घोंसला** : तेलिया तीतर के अंडा देने का समय जून से सितम्बर तक कहा जा सकता है। तभी इनके घोंसले आसानी से देखे जा सकते हैं। ये घोंसले किसी झाड़ी, गन्ने के खेत या घने सरपत वगैरह के बीच में, जमीन पर ही छिछले गढ़े की शक्ल में होते हैं, जिसमें घास-फूस वगैरह बिछा दी जाती है। मादा ६-७ अंडे देती है, जो हलके पत्थरी या हरछौंह सफ़ेद रंग के होते हैं।

नाप में ये अंड १.४ × १.१८ इंच के होते हैं।

## २८४ तीतर (Grey Partridge: Francolinus Pondicerianus)

**पर्याय** : राम तीतर, मूरा तीतर, गोरा तीतर, सफेद तीतर, गौर तित्तिर।

**पहचान** : यह तीतर हमारे देश का बहुत ही प्रसिद्ध पक्षी है जिसे हम सब ने देखा होगा। भूरे रंग का पक्षी जिसका सारा शरीर सफ़ेद चिह्नों और काली लकीरों से भरा रहता है। माथा और गुद्दी भूरी तथा गला और आँखों पर की पट्टी कत्थई रहती है। यह प्रायः जोड़ों में दिखाई पड़ता है।

**रंग-रूप** : लम्बाई लगभग १२ इंच। नर मादा एक रंग-रूप के, लेकिन नर मादा से कद में कुछ बड़ा। इसके सर का ऊपरी भाग और गुद्दी भूरी, और माथा, गाल और आँख के ऊपर की चौड़ी रेखा कत्थई। शरीर का ऊपरी भाग हलका राखीपन लिये भूरा, जिसमें कत्थईपन की मिलावट। ऊपर के परों पर खड़ी-आड़ी सफ़ेद धारियाँ। इस कारण देखने में यह चितला-सा जान पड़ता है। डैनों के बड़े पंख भूरे, जिन पर सफ़ेद बिन्दियाँ और धारियाँ। दुम भूरी, जिसके बाहरी पर कत्थई भूरे, ठोड़ी और गला ललछौंह बादामी और नीचे का सारा भाग हलका बादामी, जिस पर टेढ़ी-मेढ़ी बेतरतीब कलछौंह भूरी लकीरें। आँख-भूरी। चोंच-सिलेटी। टाँगे गंदी लाल। नर की टाँग में एक तेज खार भी रहता है।

**निवास** : यह तीतर हमारे देश का बहुत प्रसिद्ध और परिचित पक्षी है। यह कुछ स्थानों को छोड़ कर, सारे देश में फैला हुआ है। बंगाल के कुछ भागों में और मालाबार समुद्री तट की ओर अवश्य ही नहीं मिलता, लेकिन खुले और झाड़ी आदि से भरे हुए बाकी स्थानों में सभी जगह देखा जा सकता है। हिमालय

तथा अन्य दूसरे पहाड़ों पर यह १,५०० फुट से ज्यादा ऊँचा नहीं जाता और घने जंगलों में और दलदल वाले स्थानों में भी इसे देख पाना सम्भव नहीं है ।

**विवरण** : तीतर हमारे यहाँ का बहुत प्रसिद्ध पक्षी है । इसके स्वादिष्ट मांस के कारण शिकारी और लड़ने की आदत के कारण शौकीन लोग, सभी इसकी तलाश में रहते हैं । यह बारहमासी पक्षी है, जो यहीं थोड़ा बहुत स्थान-परिवर्तन करके भी, देश से बाहर नहीं जाता ।

गरम, सूखी झाड़ियों और घास से भरे मैदान, जिन के पड़ोस में खेत भी हों, तीतरों के रहने का मुख्य स्थान है, पर उनके रहने और बसेरा लेने का स्थान घनी झाड़ियाँ ही हैं । ये शाम और सवेरे खुले मैदानों में चराई करते हुए जरूर दिखाई पड़ेंगे और इन मैदानों के आस-पास सरपत से भरे नाले हों, तब तो उनमें उनमें तीतर न मिलें, यह सम्भव नहीं ।

तीतर की बोली काले तीतरों की तरह धीमी न होकर, बड़ी तेज होती है । जिसने एक बार भी इन की 'तीन टका-तीन टका- तीन टका' की तेज बोली सुन ली, वह कभी इसे भूल नहीं सकता । देहातों में आज भी शौकीन लोग इन्हें पिंजड़ों में पाले रहते हैं और यह पालतू हो जाने पर अपने मालिक के पीछे-पीछे कुत्ते की तरह चलते रहते हैं । इन्हें लोग बोली के लिए नहीं, बल्कि लड़ने के लिए पालते हैं । लेकिन इनकी लड़ाई बुलबुल की तरह मज़ेदार न होकर, बड़ी खूँखार होती है और एक दूसरे के खार से दोनों प्रतिद्वन्द्वी पक्षी कभी-कभी बुरी तरह घायल हो जाते हैं ।

तीतर कीड़े-मकोड़े-हरी पत्तियाँ, हर किस्म के दाने और घास के बीज बड़े मज़े में खाते हैं और दीमक तो शायद इनको सबसे स्वादिष्ट लगते हैं ।

ये अक्सर जोड़ा बाँध कर रहते हैं, पर जहाँ इनकी संख्या अधिक होती है, वहाँ १०-१५ के झुंड भी दिखाई पड़ जाते हैं ।

**घोंसला** : तीतर अक्सर साल में दो बार अंडे देते हैं । एक तो फरवरी से जून तक, दुबारा जुलाई के अन्त से नवम्बर तक । इनके घोंसले खुली जमीन में छिछले गढ़े की शक्ल के होते हैं, जिसमें कभी-कभी मादा दो चार पर या कुछ सूखी घास बिछा कर ५-७ अंडे देती है ।

अंडों का रंग सफेद या हलका पत्थरी होता है, जिस पर हलकी भूरी चमक होती है ।

अंडे नाप में लगभग १.३ × १.०५ इंच के होते हैं ।

## २८५ पिउरा तीतर (Common Hill Partridge)

**पर्याय** : प्रख्यात गिरि तित्तिर ।

**पहचान** : पिउरा पहाड़ का प्रसिद्ध तीतर है जिसके शरीर का ऊपरी भाग जैतूनी भूरा होता है । डैने और दुम भी इसी रंग की होती है । पीठ और दुमगज़े पर काले चिह्न और छोटी-छोटी रेखाएँ पड़ी रहती हैं । सीना गाढ़ा सिलेटी और पेट राखी मायल सफेद रहा है जिस पर बगल में सफेद चित्तियाँ रहती हैं ।

**रंग-रूप** : लम्बाई लगभग १० इंच । नर और मादा एक ही रंग-रूप के । चोटी का भाग भूरा, जिस पर काली चित्तियाँ आँख के ऊपर एक सिलेटी पट्टी, जिस पर काली बिंदियाँ । गले, सर और गरदन के बगली हिस्से कत्थई, जिन पर काले चित्ते । शरीर का ऊपरी भाग, डैने और दुम जैतूनी भूरी, जिसमें पीठ पर स्पष्ट छोटी-छोटी रेखाएँ और दुमगज़े पर काले रंग के तिकोने और गोल चित्ते । डैने की पखनियां जैतूनी भूरी, जिन पर बड़े अंडाकार काले धब्बे और उनके सिरे कत्थई । चित्तीदार गले के नीचे एक कत्थई चित्ता और उसके नीचे एक काली पट्टी । सीना और शरीर के दोनों बगली हिस्से गाढ़े सिलेटी तथा पेट राखिहा सफेद, जिसमें बगली हिस्सों पर सफेद चित्तियाँ । डैने के पहले दस बड़े पंख भूरे, जिनके सिरों पर कत्थई चित्तियाँ आँख भूरी । चोंच काली । टाँगे हलकी लाल ।

**निवास** : पिउरा यहाँ के मशहूर पहाड़ी तीतर हैं, जो हिमालय के निचले प्रदेशों में ६ हजार फुट तक कुमायूं से आसाम तक पाये जाते हैं । इनका स्वभाव, रहन-सहन और बाकी सब आदतें पहाड़ी तीतरों के अनुरूप होती हैं ।

**विवरण** : पिउरा भी एक प्रसिद्ध पहाड़ी तीतर है जो तराई से लेकर पहाड़ों पर ६ हजार फुट की ऊँचाई तक रहता है । इसकी आदतें रोली से मिलती-जुलती हैं, इससे उन्हें फिर दुहराने की आवश्यकता नहीं । इसका मुख्य भोजन, बीज, दाना और कीड़े-मकोड़े हैं ।

**घोंसला** : यहाँ का बारहमासी पक्षी होने के कारण, पिउरा यहीं मई जून में जोड़ा बाँधते हैं और मादा किसी झाड़ी या पत्थर के नीचे छिछला गढ़ा बना कर उसी में घास-फूस बिछा देती जिसमें वह ७-८ सफेद अंडे देती है ।

अंडों की नाप लगभग १.५५ × १.२३ इंच होती है ।

## २८६ जंगूरिया तीतर (Snow Partridge : Larwa Larwa)

**पर्याय** : कूर मोनाल, तेर तीतर, बर्फ का तीतर, बिजू, तुषार तित्तिर ।

**पहचान** : अन्य तीतरों की भाँति चितकबरा-सा पक्षी, जिसका ऊपरी हिस्सा काली और भूरी लकीरों से भरा रहता है और निचला भाग भूरी और सफेद लकीरों से पूर्ण रहता है।

**रंग-रूप** : लम्बाई लगभग १५ इंच। नर मादा एक रंग-रूप के और कद में एक दूसरे के बराबर। गला, सर के दोनों बगल के हिस्से, सर से लेकर दुम तक का सारा ऊपरी भाग और डैने का बाहरी हिस्सा काली और भूरी-मायल सफेद खड़ी-अड़ी लकीरों से भरा। इन हिस्सों में जहाँ-तहाँ, और खास कर डैने के ऊपर एक प्रकार की कत्थई झलक। डैने के पहले दस पंख काले और बाकी के सिरों पर सफेदी। गले से लेकर नीचे का सारा हिस्सा सफेद और भूरी लकीरों से भरा और दुम के नीचे के पर कत्थई, जिन के सिरों पर सफेदी। आँख भूरी। चोंच लाल। टाँगे लाल। नर की टाँगों में एक मजबूत भोथरा-सा खार रहता है और नर मादा दोनों के पैर में आधे अँगूठे तक उसी तरह के पर, जैसे कुछ सिराजी कबूतरों के होते हैं।

**निवास** : जंगूरिया का दूसरा नाम बर्फ का तीतर ही एक तरह से ठीक है। यह हमारे देश में हिमालय के ऊँचे प्रदेश में सिक्किम से कश्मीर तक पाया जाता है। हमारे देश से बाहर यह चीन के पश्चिमी भागों में भी फैला हुआ है।

**विवरण** : जंगूरिया हमारे देश के हिमालय के बर्फीले क्षेत्रों का तीतर है, जो जाड़ों में भले ही ७–८ हजार फुट नीचे उतर आता हो, लेकिन गरमियों में इसे १२ हजार फुट के ऊपर ही देखना सम्भव होता है।

जंगूरिया बर्फिस्तान में पत्थरों के नीचे और खुली हुई कन्दराओं में अपना काफी समय बिताता है। इसे वैसे तो छोटे-बड़े गिरोहों में भी देखा जा सकता है, किन्तु जोड़ा बाँधने का समय निकट आने पर तो प्रायः जोड़े में ही दिखाई पड़ता है। इनकी उड़ान तेज और मजबूत होती है। जंगूरिया की बोली तेज सीटी से मिलती-जुलती होती है और यह उड़ते समय तथा बैठने पर भी अक्सर बोलता रहता है। इसका मुख्य भोजन काई, जड़ें, और नरम कल्ले हैं।

**घोंसला** : जंगूरिया अन्य तीतरों की तरह किसी झाड़ी या पत्थर के नीचे जमीन पर ही अपने अंडे देता है जो गंदे-गंदे सफेद रंग के होते हैं, जिस पर कत्थई चित्तियाँ पड़ी होती हैं।

नाप में ये अंडे करीब १.६ × १.८० इंच के होते हैं।

## २८७ चीनी तीतर (Chinese Partridge : Arborophila Torqueola

**पर्याय** : चिन गिरि तित्तिर।

**पहचान** : चीनी तीतर हमारे देश में बहुत कम संख्या में दिखाई पड़ते हैं। इनके शरीर का ऊपरी हिस्सा काली और सफेद धारियों से भरा रहता है। गला सफेद तथा सीना सफेद चित्तियों से भरा काला रहता है। पेट काला जिस पर हलके कत्थई चित्ते पड़े रहते हैं।

**रंग-रूप** : लम्बाई लगभग १३ इंच। नर मादा एक रंग-रूप के नहीं होते। नर की चोंच पर जड़ से दोनों ओर एक चौड़ी काली रेखा आँख पर होती हुई गरदन तक चली जाती है, जिसके ऊपर एक समानान्तर कत्थई रेखा भी होती है। इन रेखाओं के बीच का चोटी का भाग काला और कत्थई। काली रेखा के नीचे एक दूसरी काली रेखा और इन दोनों रेखाओं के बीच का हिस्सा सफेद। ठोड़ी और गला सफेद और गरदन का शेष भाग तथा सीना काला, जिस पर सफेद चित्तियाँ। पीठ, दुमगजा और दुम के ढकने काले और सफेद रंग की खड़ी और आड़ी रेखाओं से भरे। डैनों पर एक गाढ़ा कत्थई चित्ता और उसका शेष भाग कलछौंह, जिस पर हलकी कत्थई चित्तियाँ। बड़े पंख गाढ़े भूरे रंग के, जिन पर कत्थई धारियाँ। दुम काली, जिसके सिरे पर सफेद पट्टियाँ पेट और बगल के दोनों हिस्से काले, जिन पर कुछ हलके कत्थई चित्ते। दुम के नीचे के पर गाढ़े कत्थई। मादा का सर करीब-करीब नर-जैसा, लेकिन काली धारियों के स्थान पर भूरी धारियाँ। डैना और नीचे का सारा भाग काली और भूरी धारियों से भरा। पीठ और दुमगजा कलछौंह, जिस पर सफेद और हलकी भूरी धारियाँ और चित्तियाँ। आँख ललछौंह गंदी हरी। चोंच कलछौंह। टाँगें नारंगी। नर की टाँग में एक तेज खार।

**निवास** : चीनी तीतर, जैसा इसके नाम से स्पष्ट है, चीन का निवासी है और दक्षिण चीन से स्याम, बर्मा और मलाया के अलावा, हमारे देश के पूर्वी प्रदेशों की सीमा के भीतर कभी-कभी चला आता है। हमारे देश में ये बहुत ही कम संख्या में पाये जाते हैं, इसलिए इन्हें वास्तव में यहाँ का निवासी न कह कर भूल-भटक कर आने वाले पक्षी ही कहना ज्यादा ठीक होगा।

**विवरण** : चीनी तीतर को खुले हुए सूखे पहाड़ी मैदान और ऐसी ऊँची-नीची पहाड़ियों ज्यादा पसन्द हैं, जिनमें जहाँ-तहाँ झाड़ियों और घास के टुकड़े हों। इसको घने जंगल और नम स्थान पसन्द नहीं। यह ऐसे खेतों के आस-पास रहना भी पसन्द करता है, जो जंगल के निकट हों, या जिन के चारों ओर ऊँची घास और झाड़ियाँ हों।

चीनी तीतर वैसे तो अकेला या जोड़े में रहता है, लेकिन इनके जोड़े कभी-कभी चराई की सुविधा देखकर एक ही जगह जमा भी हो जाते हैं। लेकिन खतरा निकट देख कर वे अपने-अपने जोड़े के साथ फिर इधर-उधर भाग जाते हैं। नर अक्सर

किसी पेड़ की निचली डाल, दीवार अथवा टीले पर ही दो तीन फुट की ऊँचाई पर से बोलता रहता है, जिससे इसकी मौजूदगी का पता आसानी से चल जाता है, लेकिन खतरा निकट देख कर वह फौरन ही नीचे उतर कर दूसरे तीतरों की तरह भाग कर झाड़ी में छिप जाता है। अन्य तीतरों की तरह, इनकी खूराक भी दाना बीज, नरम कल्ले और कीड़े-मकोड़े हैं। इसकी बाकी सब आदतें तीतरों-जैसी ही होती हैं।

**घोंसला** : चीनी तीतर के जोड़ा बाँधने का समय तो मई जून है, लेकिन कहीं-कहीं इसके अंडे सितम्बर तक मिलते हैं। अन्य तीतरों की तरह मादा किसी झाड़ी में जमीन पर एक छिछला गढ़ा बना कर ४-६ तक अंडे देती है, जो हलके भूरे रंग के होते है। इन अंडों पर कभी-कभी हलकी हरछौंह झलक भी होती है।

नाप में ये अंडे करीब १.५ × १.२ इंच के होते हैं।

## २८८ केहा तीतर (Kyha Partridge : Francolinus gularis)

**पर्याय** : खैर, कैजाह, कामरूप तित्तिर।

**पहचान** : केहा के शरीर का ऊपरी भाग धारीदार भूरा रहता है। दुम कत्थई, डैने भी कत्थई और ठोड़ी, गला और गाल भी कत्थई रंग के रहते हैं। नीचे का हिस्सा काले और भूरे चिह्नों से भरा रहता है। गला सफेद होता है।

**रंग-रूप** : केहा की लम्बाई लगभग १४ इंच। और नर मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। आँख के ऊपर एक भूरी पट्टी और आँख के आगे का हिस्सा हलका बादामी। ठोड़ी, गला और गाल कत्थई। शरीर का ऊपरी हिस्सा, दुम के बीच के पर और डैने के बाहरी भाग भूरे, जिस पर कहीं घनी कहीं हलकी भूरी धारियाँ। दुम के बाकी पर कत्थई, जिनके सिरे हलके रंग के। डैने के बड़े पंख खैरे, जो सिरे पर भूरे हो जाते हैं। गले से नीचे का हिस्सा सफेद और यहाँ के परों के किनारे काले और भूरे। दुम के नीचे का भाग हलका ललछौंह। आँख गाढ़ी भूरी। चोंच काली। टाँगे लाल।

**निवास** : केहा को खैर या दलदल का तीतर भी कहते हैं, इससे इसके रहने के स्थान का बहुत कुछ अंदाजा हो जाता है। ऊँची घास और नरकुलों से भरे दलदली जंगल और नदियों के नम कछार, इनके रहने की सबसे अच्छी जगहें मानी जाती हैं। इसका मुख्य निवास-स्थान हिमालय की तराई का वह हिस्सा है, जो पीलीभीति से असम तक चला गया है। केहा घाघरा के कछारों, गंगा के उत्तरी भागों और ब्रह्मपुत्र के कछारों में भी मिलते हैं। पूर्व की ओर ये सुन्दर बन, रंगपुर मालदह आदि में भी फैले हुए हैं, किन्तु इन्हें ज्यादा ऊँचाई पर नहीं देखा जा सकता।

**विवरण** : केहा यहाँ के प्रसिद्ध तीतर हैं, जो अन्य तीतरों की तरह सूखे और वीरान मैदानों की अपेक्षा, पानी के निकट रहना ज्यादा पसन्द करते हैं। इनकी बाकी सब आदतें तीतरों से बहुत अधिक मिलती-जुलती हैं। इनका मुख्य भोजन दाना, बीज, नरम कल्ले और कीड़े-मकोड़े हैं, जिनके लिए यह सुबह शाम खुले मैदानों में चक्कर लगाते रहते हैं। कछार के सरसों आदि के खेत यदि पानी से दूर न हों तो केहा वहाँ जरूर मिलेंगे और सुबह शाम इनकी तीतर की जैसी बोली सुनाई पड़ेगी।

**घोंसला** : मादा अन्य तीतरों की तरह किसी घनी झाड़ी में जमीन के छिछले गढ़े में ५-६ अंडे देती हैं। इन गढ़ों को घास-फूस बिछा कर मुलायम कर लिया जाता है। अंडों का रंग हलका भूरा होता है जिस पर गुलाबी भूरी चित्तियाँ पड़ी होती हैं।

नाप में ये अंडे १.३ × १.०५ इंच के होते हैं।

## २८९ सन तीतर (Assam Black Partridge : Francolinus melanonotus)

**पर्याय** : कामरूप, कृष्ण तित्तिर।

**पहचान** : चोटी का भाग जैतूनी भूरा जिस पर काली बिन्दियाँ। शरीर का ऊपरी भाग भी जैतूनी भूरा जिस पर तीर जैसे चिह्न। सीना गाढ़ा सिलेटी जिसके ऊपरी भाग पर काले चित्ते और पेट हलके राखी रंग का रहता है।

**रंग-रूप** : इस तीतर के नर और मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। चोटी का भाग जैतूनी भूरा, जिस पर काली बिन्दियाँ और धारियाँ। आँख के ऊपर और नीचे की ओर दो काली धारियाँ घेरे रहती है, जो गर्दन पर जा कर आपस में मिल जाती हैं। शरीर के ऊपर का भाग जैतूनी भूरा, जिस पर घने तीर के चिह्न पड़े होते हैं। डैने का बाहरी भाग हलका जैतूनी भूरा, जिस पर अंडाकार काले चित्ते। कुछ पंखों के सिरे कत्थई भी। डैने के शुरू के दस पंख भूरे, जिस पर किसी तरह के चिह्न नहीं होते। ठोड़ी सफेद, लेकिन गला काला। गरदन के बगल का कुछ हिस्सा काला और कुछ कत्थई, जिस पर काली धारियाँ। सीना गाढ़ा सिलेटी, जिसके ऊपरी भाग पर काले चित्ते। पेट हलके राखी रंग का। शरीर के बगली हिस्से भी गाढ़े सिलेटी, जिन पर अंडाकार काले और सफेद चित्ते। आँख भूरी, चोंच काली और टाँगे लाल।

**निवास**। यह असम प्रदेश का पहाड़ी तीतर है, जो उस प्रदेश की पहाड़ियों के अतिरिक्त देश में और कहीं नहीं पाया जाता। हमारे देश के बाहर यह बर्मा के पहाड़ी प्रदेशों में भी पाया जाता है लेकिन संख्या में कम होने के कारण इनके बारे में ज्यादा जानकारी नहीं प्राप्त हो सकी।

**विवरण** : यह असम के जंगलों और पहाड़ों पर रहने वाला

पहाड़ी तीतर है, जो वहाँ के घने जंगलों, खासकर बाँस के जंगलों को अपने रहने के लिए चुनता है। यह 'हिउ हिउ' से मिलती-जुलती बोली बोलता है और कोयल और पपीहे की तरह नकल करके ही इसके निकट तक पहुँचा जा सकता है क्योंकि उसकी आवाज पर यह और भी तेज बोलने लगता है। शिकारी लोग इसी की नकल कर इसके निकट पहुँच पाते हैं। इसका मुख्य भोजन दाना बीज और कीड़े-मकोड़े हैं।

**घोंसला** : अन्य तीतरों की तरह यह भी किसी झाड़ी के नीचे छिछला गढ़ा बना कर और उसमें घास-फूस बिछा कर अपना घोंसला बनाता है, जिसमें मादा ४-६ सफेद अंडे देती है।

अंडे नाप में लगभग १.३३ × १.१ इंच के होते हैं।

## २९० बन तीतर (Green-Legged Hill Partridge)

**पर्याय** : हरा तीतर, लकांक, हरिपाद गिरि तित्तिर।

**पहचान** : बन तीतर के शरीर का ऊपरी हिस्सा गाढ़ा जैतूनी, जिस पर डैने और दुम पर काले तिकोने चिह्न रहते हैं। नीचे का हिस्सा सीने के पास गाढ़ा कत्थई और पेट के पास धुमैला सिलेटी रहता है। सर और गरदन के बगली हिस्से कत्थई होते हैं जिन पर काली बिंदियाँ पड़ी रहती हैं।

**रंग-रूप** : बन तीतर की लम्बाई लगभग ११ इंच और नर मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। चोटी का भाग गाढ़ा कत्थई और दोनों आँखों से गरदन तक जाने वाली पट्टियाँ सिलेटी। यह दोनों पट्टियाँ गुद्दी को घेरे रहती हैं। सर और गरदन के दोनों बगली हिस्से कत्थई, जिन पर काली बिंदियाँ। शरीर का ऊपरी भाग, डैने का बाहरी हिस्सा और दुम गाढ़ी जैतूनी-भूरी, जिसमें पीठ पर के परों के किनारे और भी गाढ़े तथा डैने और दुम पर काले तिकोने चिह्न तथा बिंदियाँ कुछ पखनियों पर काले अंडाकार धब्बे और उनके सिरे कत्थई। ठोड़ी और गला कत्थई, जिसके नीचे एक सफेद चित्ता और फिर एक काली पट्टी। सीना गाढ़ा कत्थई और पेट धुमैले सिलेटी रंग का। शरीर के दोनों बगली हिस्से भी सिलेटी रहते हैं, जिन पर सफेद तिकोने चिह्न और जहाँ-तहाँ कत्थई चमक। आँख भूरी। चोंच लालछौंह। टाँगें हरी गंदी।

**निवास** : बन तीतर भूटान के आस-पास की पहाड़ियों का तीतर है, जो कुछ दूर तक भारतवर्ष की सीमा में भी चला आता है। इसे असम की पहाड़ियों पर ५-६ हजार फुट की ऊँचाई पर देखा जा सकता है। यह हमारे देश में और किसी स्थान पर नहीं पाया जाता।

**विवरण** : ये पक्षी संख्या में इतने कम पाये जाते हैं कि इनके बारे में अधिक बातें नहीं जानी जा सकीं, फिर भी इतना तो स्पष्ट ही है कि इनकी बहुत कुछ आदतें, बोली पिउरा आदि पहाड़ी तीतरों-जैसी ही होती हैं। ये भी अकेले या पाँच-सात के छोटे-छोटे गिरोहों में दिखाई पड़ते हैं और इनका भी मुख्य भोजन बीज, दाना और कीड़े-मकोड़े हैं।

**घोंसला** : यह भी यहाँ के बारहमासी पक्षी हैं, जो मई-जून में जोड़ा बाँधते हैं। इनकी मादा किसी झाड़ी के नीचे जमीन पर छिछला गढ़ा बना कर ५ से ७ तक सफेद अंडे देती है, जो करीब १.५८ × १.२५ इंच के होते हैं।

## २९१ छोटा लवा (Little Button Quail : Turnix dussumieri)

**पर्याय** : घिनवा लवा, दबकी, टुर्रा शीमाज, लिबिया, तूतू बटेरा, लाविका, सरसैया लवा।

**पहचान** : यह छोटी-सी चिड़िया है जिसकी गरदन का ऊपरी भाग भूरा और पीठ काली और पीली धारियों से भरी कत्थई रंग की होती है। सीना भूरा, जो नीचे जाकर गाढ़ा हो जाता है। दोनों बगल कत्थई, काली चित्तियों से भरे रहते हैं। आँख के ऊपर एक भूरी पट्टी जिसमें काली बिंदियाँ रहती हैं।



छोटा लवा

**रंग-रूप** : छोटा लवा की लम्बाई लगभग ५ इंच और नर मादा रंग-रूप में एक-जैसे होते हैं। लेकिन नर मादा से कुछ छोटा होता है। चोटी का रंग भूरा और कलछौंह जिसमें बीच माँग पर एक हलकी भूरी पट्टी। दोनों आँखों के ऊपर होती हुई एक-एक हलकी भूरी पट्टी, जिसमें काली बिंदियाँ। गरदन का ऊपरी भाग भूरा। पीठ के पर कत्थई भूरे, जिनमें काले और पीले रंग की पतली धारियों का मेल। डैने के पर भी भूरे, जिनका बाहरी हिस्सा हलके रंग का। सीना हलके भूरे रंग का, जो नीचे जाकर कुछ गाढ़ा हो जाता है। दोनों बगल कत्थई और काली चित्तियाँ। आँख हलकी पीली। चोंच गाढ़ी सिलेटी। टाँगें सफेदी-मायल प्याजी।

**निवास** : छोटे लवा जो, इसके छोटे कद के कारण, सरसैया लवा भी कहा जाता है, यह वैसे तो हमारे देश में फैला हुआ है लेकिन दक्षिण की ओर कम और मैसूर से आगे और भी कम संख्या में पाया जाता है। यहाँ यह हिमालय के निचले भागों से लेकर गंगा-यमुना के मैदानों में काफी मिलता है और पहाड़ों पर भी ५-६ हजार फुट की ऊँचाई तक चला जाता है। पश्चिम की ओर राजस्थान और पंजाब तक तथा पूर्व की ओर असम तक इन्हें देख पाना कठिन नहीं। यह यहाँ का बारहमासी पक्षी है, जो यहीं थोड़ा-बहुत स्थान परिवर्तन भले ही कर ले पर बाहर नहीं जाता। राजस्थान के खुले मैदानों में इसे केवल बरसात में ही देखा जा सकता है।

**विवरण** : छोटा लवा कुल ५॥ इंच का छोटा-सा पक्षी है, जो देखने में तीतर के बच्चा-सा जान पड़ता है। रंग के अलावा, यह तीतर और बटेरों से इसी बात में भिन्न होता है कि इसके पंजे में तीन ही उँगलियाँ होती हैं। इसकी दुम भी नोकीली और बाहर की ओर कुछ निकली हुई होती है।

चिनिंग बटेर की तरह, यह हमारे यहाँ का बारहमासी पक्षी होने पर भी, उत्तर और पश्चिमहिस्सों में बरसात में ही ज्यादा दिखाई पड़ता है।

छोटा लवा घने जंगल को अधिक पसन्द नहीं करता बल्कि अपना ज्यादातर समय खेतों और घास के मैदानों में ही बिताता है। अपने छोटे कद और छिपने की आदत के कारण यह अक्सर शिकारियों की निगाह से बच जाता है और अगर दबाव में पड़ भी गया तो तेजी से उड़ कर थोड़ी ही दूर जाकर फिर जमीन पर उतर आता है। यह अनाज, नरम कल्ले और कीड़े-मकोड़े से अपना पेट भरता है। मादा नर से कुछ बड़ी भी होती है और हर मामले में नर पर हावी भी रहती है। एक ही नर के लिए अक्सर दो मादाएँ बहुत जोर से लड़ती हैं। फिर मादा अंडा देने के बाद नर को अंडा सेने और बच्चे पालने के लिए छोड़ कर, दूसरे नर की तलाश में चली जाती है। इस प्रकार, हर बार अंडा देने के बाद नर की बदली हो जाती है।

**घोंसला** : यहाँ के बारहमासी पक्षी होने के कारण, छोटे लवे यहीं अप्रैल से अक्टूबर के बीच अंडे देते हैं। सुरक्षित स्थान पर जमीन के किसी छिछले गढ़े में घास-फूस बिछा कर ये अपना घोंसला बना लेते हैं, जिस को घास से इस प्रकार ढक दिया जाता है जैसे किसी ने खेमा खड़ा कर दिया हो। मादा ४ अंडे देती है, जो राखीपन लिये सफेद रंग के होते हैं। इन अंडों पर बादामी या भूरी घनी चित्तियाँ पड़ी होती हैं और अक्सर कलछौंह या गाढ़े कत्थई धब्बे भी होते हैं।

अंडे नाप में लगभग ०.८५ × ०.६५ इंच के होते हैं।

## २९२ लवा (Indian Button Quail: Turnix maculatus)

**पर्याय** : भारत लाविका, कुकनी लवा।

**पहचान** : लवा का ऊपरी हिस्सा मिलेटी भूरा रहता है जिस पर घनी काली और कत्थई रंग की धारियाँ और चित्तियाँ पड़ी रहती हैं। नीचे का हिस्सा सीने के पास काली बिंदियों से भरा ललछौंह और पेट के हलके बादामी रंग का होता है।

**रंग-रूप** : मादा की लम्बाई ६ इंच। नर और मादा के रंग-रूप में बहुत कम भेद, लेकिन नर कद में मादा से छोटा। उसकी चोटी काली, जिसमें परों के किनारे, शरीर के ऊपरी हिस्से का रंग सिलेटी भूरा, जिस पर घनी काली कत्थई रंग की धारियाँ और चित्ते। डैने के कुछ परों पर एक काली बिन्दी और उनके किनारे हलके पीले। गला सफेदी मायल। निचली गरदन तथा सीने का आधा भाग ललछौंह, जिनके किनारों पर काली बिंदियाँ। पेट हलके बादामी रंग का। मादा वैसे तो नर के रंग की ही होती है, लेकिन उसकी गरदन के चारों ओर कंठे की तरह ललाई होती है। आँख सफेद। चोंच पीली। टाँगे पीली।

**निवास** : लवा हमारे यहाँ का बहुत प्रसिद्ध पक्षी है जिस से हम भली भाँति परिचित हैं। इसे भी यहाँ शौकीन और बटेर की तरह लड़ाने के लिए पालते और मांस के लिए इसका शिकार किया जाता है। हमारे देश में, यह हिमालय के दक्षिण तक फैले हुए हैं, लेकिन पश्चिमी भारत की ओर कम पाये जाते हैं। हिमालय में, ये गरमियों में करीब चार हजार फुट तक चले जाते हैं और देश के बाकी भाग में झाड़ियों और सरपत या घास से भरे मैदानों, खेतों और तितरे बितरे जंगलों में रहते हैं, साथ ही साथ खुली पहाड़ियों पर भी अपने रहने का स्थान बना लेते हैं।

**विवरण** : लवा यहाँ का प्रसिद्ध पक्षी होने पर भी, अपने छोटे कद के कारण हमारी निगाह तले बहुत कम पड़ता है, इसी से इसके स्वभाव और रहन-सहन के बारे में ज्यादा नहीं जाना जा सका है। छोटे कद के कारण और प्रायः अकेले या जोड़े में रहने के कारण इनका शिकार भी लोग बहुत कम करते हैं। लवा घास-फूस, सरपत और झाड़ियों से भरे मैदानों और तितरी-बितरी पहाड़ियों को अपने रहने के लिए चुनता है, जहाँ यह प्रायः अकेले या जोड़े में दिखाई पड़ता है। पास आने पर या भड़काये जाने पर यह बहुत तेजी से उड़ता है और थोड़ी दूर जा कर फिर नीचे उतर कर किसी झाड़ी में छिप जाता है।

इनको लोग पिंजड़ों में लड़ाने के लिए पालते हैं और इनकी लड़ाई तीतरों की तरह होती है। तीतर तो अपने पैर के खार से एक दूसरे पर वार करते हैं, लेकिन खार के अभाव के कारण ये अपनी चोंचों से एक दूसरे पर हमला करते हैं।

लवा वैसे बहुत शान्त पक्षी है, जो शायद कभी नहीं बोलता। इसका मुख्य भोजन घास के बीज और फल-फूल तथा कीड़े-मकोड़े हैं।

**घोंसला** : लवा के जोड़ा बाँधने का समय जून से सितम्बर तक है, जब यह किसी झाड़ी या सरपत के नीचे गढ़ा खोद कर उसमें घास-फूस बिछा कर अपना घोंसला बनाता है, जिसके ऊपर यह गुम्बद-सा छा देता है और भीतर जाने के लिए बगल से एक रास्ता रहता है। मादा इसी में प्रायः ४ अंडे देती है, जो पिलछौंह सफेद रहते हैं और जिन पर बैंगनी कत्थई और काली चित्तियाँ होती हैं। इन अंडों पर काली चमक रहती है।

नाप में ये अंडे करीब ०·८६ × ०.७५ इंच के होते हैं।

## २९३ डाउक (White-Breasted Water hen : Amaurornis Phoenicura)

**पर्याय** : सित कंठ, जल कुक्कुटी, बँसमुरगी, किनाटी, खरीम।

**पहचान** : डाउक या बँसमुरगी को बस्तियों के आस-पास देखना कठिन नहीं है। इस पतली सी-लम्बी टाँगों वाली चिड़िया का ऊपरी भाग गाढ़ा कत्थई और नीचे का पेट तक का हिस्सा सफेद रहता है। पेट के आगे दुम तक का भाग भूरा और ललछौंह हो जाता है।

**रंग-रूप** : डाउक की लम्बाई १२ इंच और नर मादा एक रंग-रूप के। इसके शरीर के ऊपर का सारा हिस्सा गाढ़ा कत्थई, जो दूर से काला लगता है। आँख, गाल और गले से लेकर पेट तक का भाग सफेद। इसके आगे का निचला हिस्सा भूरा, जो दुम के नीचे पहुँचते-पहुँचते ललछौंह हो जाता है। बगल का हिस्सा गाढ़ा सिलेटी और डैने कलछौंह-भूरे। दुम गाढ़ी भूरी और और डैने के निचले भाग में एक पतली-सी सफेद धारी।

बच्चों का ऊपरी हिस्सा भूरा और नीचे की सफेदी में कलछौंह झलक-सी होती है। आँख-ललछौंह भूरी। चोंच हरी, जिसका अगला हिस्सा लाल। टाँगें-हरापन लिये पीली।

**निवास** : डाउक हमारे यहाँ की बहुत ही परिचित चिड़िया है, जिसे हम अपने घरों के आस-पास, बगीचों में, झाड़ियों तथा बँसवारियों में बहुत आसानी से देख सकते हैं। यह हमारे देश में प्रायः सभी जगह पायी जाती है और पानी के आस-पास ज्यादा रहती है। यह यहाँ की बारहमासी चिड़िया है जो देश से बाहर नहीं जाती।

**विवरण** : डाउक का दूसरा नाम बनमुरगी भी है जो सब तरह से सार्थक है। यह ताल-तलैयों के किनारों की झाड़ियों और बँसवारियों को अपने रहने का स्थान चुनती है और अक्सर वहीं इधर-उधर घूमती दिखाई पड़ती है। यह वैसे तो बहुत शरमीली चिड़िया है, जो जरा-सी आहट पाते ही भाग कर झाड़ी में छिप जाती है, लेकिन यह इतनी ढीठ भी हो जाती है कि हमारे घरों के आस-पास रहने में भी इसे डर नहीं लगता।

डाउक वैसे तो बहुत शान्त चिड़िया है, लेकिन बरसात आने पर जोड़ा बाँधने के समय इतना शोर मचाती है कि जी ऊब जाता है। अन्य जल मुरगियों की तरह इसके भी अँगूठे बहुत लम्बे होते हैं और बहुत-सी आदतें उन्हीं से मिलती-जुलती हैं। इनका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े और छोटे केंचुए, घोंघे हैं लेकिन यह घास-फूस भी खा लेती हैं। अन्य जलमुरगियों की तरह डाउक का भी सारा समय जमीन पर ही बीतता है और यह पेड़ों पर नहीं बैठतीं।

**घोंसला** : डाउक के जोड़ा बाँधने और अंडा देने का समय जून से सितम्बर तक होता है। तब यह पानी के किनारे किसी घास, झाड़ी या नरकुल के बीच तितरा-बितरा-सा घोंसला बना लेती है, घोंसला घास-फूस या बाँस की पत्तियों का होता है, जिस में मादा ४-६ अंडे देती है।

इसके अंडों का रंग हलका-भूरा या गुलाबीपन लिये सफेद होता है, जिस पर ललछौंह-भूरी या बैंगनी चित्तियाँ होती हैं।

नाप में ये अंडे १.५७ × १.१८ इंच के होते हैं।

## २९४ जलमुरगी (Moor hen : Gallinula Chloropus)

**पर्याय** : अंबु कुक्कुटि, पानीमुरगी, दबकपाइरा, कुकरी।

**पहचान** : जल मुरगी पानी के आस-पास रहने वाली चिड़िया है जिसका सर और गरदन कंजई रहता है, जो सीने तक जाते-जाते सिलेटी हो जाता है। ऊपर का हिस्सा भूरापन लिये जैतूनी रहता है।

**रंग-रूप** : जलमुरगी के नर की लम्बाई १२ इंच। मादा नर से कुछ छोटी, रंग-रूप में नर-मादा एक-जैसे। सर और गरदन का रंग कलछौंह, कंजई, जो सीने तक पहुँच कर सिलेटी हो जाता है। बगली हिस्सा भी इसी रंग का, पर उस में कुछ सफेद पट्टियाँ। ऊपरी हिस्से का रंग भूरापन लिये जैतूनी। दुम के बाहरी पर काले और डैने के कलछौंह भूरे। डैने के किनारे पर सफेद पट्टी। पेट के बीच का हिस्सा सफेदी मायल। निचला दुम-ढकना सफेदी मायल। दुम के नीचे एक सफेद चित्ता। चोंच लाल, सिरे पर धानी। आँख लाल और सिरा धानी। टाँगें धानीपन लिये सिलेटी, हरा, जिसमें जोड़ के ऊपर एक नारंगी छल्ला-सा।

**निवास** : जलमुरगी यहाँ का बारहमासी पक्षी है जो देश छोड़ कर कहीं बाहर नहीं जाता और यहाँ के तालों तथा पानी वाले अन्य स्थानों के सूख जाने पर अपनी सुविधा के अनुसार थोड़ा-सा स्थान-परिवर्तन कर लेता है। इसे ऊँचे पहाड़ ज्यादा पसन्द नहीं हैं और ऊँचे जलाशयों में भी बहुत कम दिखाई पड़ता है। यह नरकुल, काई, सेवार और पानी के घास-फूस से भरे हुए

जलाशयों को पसन्द करता है और नदियों में बहुत कम दिखाई पड़ता है।

**विवरण** : जलमुरगी पानी के निकट रहने वाली प्रसिद्ध चिड़िया है, जिसे हम अपने यहाँ के ऐसे जलाशयों के आस-पास देख सकते हैं जो गाँद, नरकुल और अन्य पानी के पौधों से भरे हों। यह ऐसे ताल और झीलों को इसी कारण पसन्द करती है कि इसे वहाँ छिपने में कठिनाई न हो और यह कोई खतरा निकट देख कर फौरन उसके बीच छिप सके।

यह तैरने में भी किसी से पीछे नहीं रहती और तैरते समय यह अपनी दुम को ऊपर करके कुछ ऐसा झटका देती है कि इसे एक बार देख लेने पर, फिर पहचानने में भूल नहीं हो सकती। ऐसा करने से इसकी दुम के नीचे का सफेद चित्ता साफ दिखाई देने लगता है, जिससे इसको पहचानना और भी सरल हो जाता है। वैसे यह जमीन पर भी अच्छी तरह भाग लेती है, और तब भी इसकी दुम ऊपर की ओर उठी ही रहती है। तो भी, जल-मुरगी को पानी की चिड़िया कहना ही ठीक होगा, क्योंकि इसका सारा दिन पानी में तैरते ही बीतता है, वैसे यह जमीन पर तो अपनी खुराक की तलाश में ही घूमती फिरती दिखाई पड़ती है। इसे पानी में डुबकी लगाना भी खूब आता है। लेकिन खाने की तलाश में नहीं, बल्कि कोई खतरा पड़ने पर ही डुबकी लगाती है। इसकी उड़ान भारी और सुस्त होती है और जब इसे मजबूरन उड़ना ही पड़ता है तो प्रायः पानी की सतह के पास ही उड़कर, थोड़ी ही दूर पर फिर उतर आती है। ज्यादा दूर जाने के लिए मजबूर हो जाने पर, इसकी उड़ान में तेजी भी जरूर आ जाती है। यह कभी-कभी पेड़ों पर भी चढ़ती है और उड़ते समय इसकी गरदन और पैर बगुलों की तरह तन जाते हैं। इसका मुख्य भोजन घास-पात, जड़ें और कल्ले हैं, पर यह छोटे-मोटे घोंघे, कटुए और पानी के कीड़े-मकोड़े भी खूब मजे में खाती हैं।

**घोंसला** : जलमुरगी के अंडा देने का समय मैदानों में जुलाई से सितम्बर तक रहता है, लेकिन पहाड़ी स्थानों में यह मई-जून के महीने में अंडे देती हैं। कभी-कभी यह दोबारा भी अंडे देती हैं, जो जुलाई में अक्सर पाये जाते हैं। जलमुरगी घास-फूस का मद्दा-सा घोंसला बनाती है जो किसी घनी जगह में या तो पानी, या नरकुल और गाँद आदि के पौधों के बीच में रहता है। कभी-कभी यह अपने घोंसले को किनारे पर सूखे में छिपाकर भी रख देती है। मादा ५ से ९ तक, या कभी-कभी उससे भी ज्यादा, अंडे देती है। ये अंडे हलके पत्थरी रंग के होते हैं, जिन पर शुरू में हलकी-गुलाबी झलक भी होती है। अंडों पर गाढ़ी लाल, कत्थई और बैंगनी चित्तियाँ होती हैं।

अंडे नाप में करीब १.६२ × १.२१ इंच के होते हैं।

## २९५ खैरी पनकुकरी (Blue-breasted Banded Rail : Hypotaenidia Striata)

**पर्याय** : नीलोरस्, चित्र कुक्कुटी, गरगरी खैरी।

**पहचान** : इसकी चोटी और ऊपरी गरदन कत्थई, चेहरा सिलेटी और ऊपर का हिस्सा धारीदार भूरा रहता है। नीचे का भाग सफेद और कलछौंह धारियों वाला रहता है। गला सफेद और सीना सिलेटी रंग का होता है।

**रंग-रूप** : लम्बाई लगभग ११ इंच। नर-मादा एक ही जैसे, लेकिन मादा का रंग नर से कुछ हलका। चोटी और गरदन का ऊपरी भाग कत्थई, चेहरा सिलेटी और सारा ऊपरी भाग भूरा, जिस पर धारियाँ। गरदन का आगे का हिस्सा और सीना सिलेटी, नीचे का बाकी सारा हिस्सा और बगल का भाग कलछौंह और सफेद धारियों से भरा। गला सफेद और डैने कत्थई, जिन पर सफेद पट्टी। बच्चों का सारा ऊपरी भाग कलछौंह भूरा, गला और सीना सफेद और नीचे का हिस्सा हलके भूरे रंग का। आँख-लाल। चोंच बैंगनीपन लिये भूरी। टाँगें सिलेटी हरी।

**निवास** : खैरी पनकुकरी को दक्षिण पनकुकरी कहना ज्यादा ठीक होगा, क्योंकि हमारे देश के दक्षिणी भागों में ही ज्यादा पायी जाती है। इसे तामिलनाडु में 'कानाकोली' कहा जाता है। यह सारे दक्षिण भारत में फैली हुई है और कभी-कभी मध्य प्रदेश तक भी खूब देखी जा सकती है। इसके ऊपर की ओर यह बहुत कम दिखाई पड़ती है, लेकिन कभी-कभी थोड़े-से पक्षी उत्तर प्रदेश के दक्षिणी जिलों तक भी आ जाते हैं, यह भी अपनी सुविधा के लिए ही। बंगाल के दक्षिणी भागों में यह काफी संख्या में मिलती है और थोड़ी-बहुत संख्या असम में भी पायी जाती है। हमारे देश के बाहर ये चीन, जापान, बर्मा, इंडोनेशिया, फिलीपाइन द्वीप-समूहों में भी देखी जा सकती है।

**विवरण** : खैरी पनकुकरी वैसे तो यहाँ की बारहमासी चिड़िया है, लेकिन मार्च और अप्रैल के महीने में शायद पूर्व की ओर से कुछ अधिक पक्षी यहाँ प्रवास करके आ जाते हैं, क्योंकि उस समय यहाँ इनकी संख्या बहुत बढ़ जाती है।

अन्य पनकुकरियों की तरह, इसे भी घास-फूस से भरे हुए जलाशयों के किनारे तथा दलदलों के आस-पास देखा जा सकता है, जहाँ यह कीड़े-मकोड़े पकड़ने के लिए चक्कर लगाती रहती है। यह जमीन पर काफी तेजी से चलती है और पानी में तैरने और डुबकी लगाने में भी उस्ताद होती है। इसकी चराई का समय सबेरे होता है, इसके बाद दिन में यह पानी के किनारे किसी झाड़ी या घास के भीतर घुस कर आराम करती रहती है।

चराई के समय यह प्रायः अकेले-अकेले या जोड़े में या ५–७ के छोटे-छोटे गिरोहों में दिखाई पड़ती है। यह पहले तो इधर-उधर बहुत तेजी से भागती फिरती है, फिर अपने शिकार के निकट पहुँच कर बहुत धीरे-धीरे और सावधानी से पैर रखती है। इसके बाद, थोड़ी देर पर एक ही जगह ठहर कर, इधर-उधर

चौकन्नी होकर देखने लगती है कि कहीं कोई खतरा तो नहीं है। वैसे तो यह ढीठ पक्षी है, लेकिन जरा-सा भी खटका या आवाज होने पर, फौरन भाग कर किसी झाड़ी में छिपना पसन्द करती है। यह उड़ने या पानी में तैरने की अपेक्षा, भागना ही उचित समझती है और बहुत दबाव पड़ने पर उड़ती है।

इनकी उड़ान तेज नहीं होती और एक बार हवा में उड़ कर ये पचास-साठ गज की दूरी पर फिर नीचे उतर आती हैं। उड़ते समय इनकी टाँगें नीचे की ओर लटकी रहती हैं, जो पनकुकरियों और जलबोदरियों की विशेषता है। यह बहुत कम बोलने वाली चिड़िया है, लेकिन चराई के समय कभी-कभी इनकी तेज सीटीनुमा बोली सुनाई पड़ जाती है। पानी में भी वैसे तो बहुत कम रहती है, लेकिन घायल होकर पानी में गिर पड़े तो बड़ी खूबी के साथ तैरती है और डुबकी भी लगाती है।

इनका मुख्य भोजन वैसे तो कीड़े-मकोड़े और छोटे घोंघे कटुए-घोंघे हैं, लेकिन उसके साथ-साथ ये घास-पात और बीज वगैरह भी बड़े मजे में खा लेती हैं। यह बहुत आसानी से पालतू बनायी जा सकती है और थोड़े ही दिनों बाद सारस की तरह, मालिक के पीछे-पीछे घूमती-फिरती है।

**घोंसला** : यहाँ का बारहमासी पक्षी होने के कारण, यह यहीं पानी के किनारे अपने घोंसले बना कर अंडे देती है। इनके जोड़ा बाँधने का समय मई से अक्टूबर तक होता है, जिसके बीच ये दो बार अंडे देती हैं। इनका घास-फूस का घोंसला लगभग एक फुट ऊँचा और इससे कुछ कम चौड़ा रहता है, जिसमें ऊपर गढ़ा बना रहता है। घोंसला पानी के किनारे की घास या नरकुल के बीच रखा रहता है। मादा ५-६ अंडे देती है, जो हलके गुलाबी या पत्थरी रंग के होते हैं और जिन पर हलकी बैंगनी और कत्थई चित्तियाँ होती हैं।

अंडे नाप में १.३५ × १.०२ इंच के होते हैं।

## २१६ छोटी जलबोदर (Little Crake: Porzana Parva)

**पर्याय** : क्षुद्र कुक्कुटिका।

**पहचान** : इसका माथा खैरा, ऊपर का सारा भाग भूरा, जिस पर काली धारियाँ और चेहरा सिलेटी रहता है। नीचे का भाग सिलेटी जिसके बगली हिस्से काली और सफेद धारियों से भरे रहते हैं।

**रंग-रूप** : छोटी जलबोदर की लम्बाई लगभग ८" इंच और नर-मादा करीब-करीब एक ही जैसे, लेकिन मादा का रंग नर की अपेक्षा कुछ हलका। वह कद में भी नर से कुछ छोटी। इसका रंग-रूप बहुत कुछ झिल्ली से मिलता-जुलता है और इसकी टाँग और चोंच भी उसी तरह हरे रंग की होती है। माथा खैरा और ऊपर का सारा भाग भूरा, जिस पर काली धारियाँ। चेहरा सिलेटी और आँख के चारो ओर एक कत्थई घेरा, जिसका पिछला भाग लकीरनुमा होकर गाल तक चला आता है। सीना और पेट भी सिलेटी और बगल के दोनों हिस्से काली और सफेद पट्टियों से भरे। लेकिन बड़े पंखों के सिरे झिल्ली की तरह सफेद नहीं होते।

बच्चों का निचला भाग सिलेटी न होकर, हलके भूरे रंग का। आँख लाल। चोंच गंदी हरी। टाँगें पिलछौंह हरी।

**निवास** : छोटी जल बोदर, जैसा उसके नाम से ही स्पष्ट है, छोटे कद की चिड़िया है, जो अन्य पनकुकरियों की तरह पानी के आस-पास अपना समय बिताती है। यह झिल्ली से कद में कुछ बड़ी होती है और देश में केवल पश्चिमी सीमा के पास थोड़ी संख्या में दिखाई पड़ती है। हमारे देश से बाहर, ये पाकिस्तान से दक्षिणी यूरोप तक फैली हुई है। इसे अफीका में भी काफी देखा जा सकता है।

**विवरण** : छोटी जलबोदर भी जलाशयों के निकट रहने वाली चिड़िया है, जो सारे समय या तो कमल आदि के चौड़े पत्तों पर या आस-पास की खुली जगहों में घूमती फिरती है। अन्य जलबोदर तो केवल घायल होने पर ही पानी में डुबकी लगाती हैं और पानी में डुबकी लगाकर अपनी खूराक नहीं तलाशतीं, लेकिन छोटी जलबोदर अपनी खूराक के लिए भी पानी में डुबकी लगाते देखी जा सकती है। यह भी थोड़ी-सी आहट पाते ही आस-पास की झाड़ी में घुस जाती है और फिर बड़ी मुश्किल से बाहर निकलती है। अपनी छिपने की जगह से बाहर निकलने पर यह उड़ कर थोड़ी ही दूर जाकर फिर घनी घास में घुस जाती है। पानी में तैरते समय, यह भी अपनी दुम उठाती-गिराती है और अपनी गरदन को झटकती रहती है।

इनकी बोली तेज और 'किक्-किक्' से मिलती-जुलती है। इसका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े हैं, लेकिन यह थोड़ा-बहुत गल्ला और बीज भी खा लेती है।

**घोंसला** : छोटी जलबोदर के घोंसले हमारे देश में अभी तक नहीं देखे जा सके, लेकिन दूसरे देशों में, जहाँ ये अपने अंडे देती हैं, वहाँ इनके घोंसले भी घास-फूस और काई आदि के होते हैं और वे किसी नरकुल आदि के बीच रखे रहते हैं।

मादा समय आने पर जून से सितम्बर तक के बीच ३-४ अंडे देती है, जो झिल्ली के अंडों से नाप में कुछ बड़े और उसी रंग के होते हैं।

## २१७ पनकुकरी (Indian Water Rail: Rallus aquaticus)

**पर्याय** : भारत जल कुक्कुटी।

**पहचान** : इसका ऊपरी भाग काली और भूरी लकीरों से

भरा रहता है। नीचे के भाग में सीने और पेट का अगला भाग निलछौंह सिलेटी और पेट का पिछला भाग धारीदार रहता है।

**रंग-रूप** : इस पनकुकरी के नर-मादा करीब-करीब एक ही जैसे होते हैं, लेकिन मादा कद में नर से कुछ छोटी होती है। लम्बाई लगभग १२ इंच। शरीर का ऊपरी भाग काली और भूरी लकीरों और चिह्नों से भरा और बगल के हिस्सों में काली और सफेद धारियाँ। गरदन का अगला और नीचे का भाग, सीना, पेट, सीने की ओर का आधा भाग हलका निलछौंह सिलेटी और इन सब जगहों के परों के सिरे सफेदी-मायल या फालसई रंग के। पेट का बाकी पिछला हिस्सा और दुम-ढकना शरीर के बगली हिस्से की तरह धारीदार। इसकी आँख के आगे एक कलछौंह धब्बा, जो आँख के पीछे तक एक रेखा के रूप में चला जाता है। चोंच की जड़ के पास से एक सफेद धारी आँख के मध्य तक, जिससे इसे पहचानना सरल है। आँख लाल। चोंच लाल। टाँगें गंदी गुलाबी।

**निवास** : पनकुकरी हमारे देश की मौसमी चिड़िया है, जो जाड़ों में हमारे देश के उत्तर-पूर्वी देशों से आकर असम से उत्तर प्रदेश तक फैल जाती है। यह असम और बंगाल में तो काफी संख्या में मिलती है, लेकिन पश्चिम की ओर कम दिखाई पड़ती है। उत्तर प्रदेश की पश्चिमी सीमा तक पहुँचते-पहुँचते इनका स्थान छोटी पनकुकरी ले लेती है, जो उत्तर पश्चिमी देशों से आती है। इसे हम मध्य प्रदेश के कुछ ऊपरी हिस्से में जरूर देख सकते हैं, लेकिन उससे आगे यह दक्षिण भारत की ओर नहीं जाती। हमारे देश से बाहर यह जापान, चीन तथा साइबेरिया के दक्षिण-पूर्वी भागों में पायी जाती हैं।

**विवरण** : पनकुकरी यहाँ का बहुत प्रसिद्ध पक्षी है, जो शक्ल-सूरत और स्वभाव में बहुत कुछ जलबोदरियों के अनुरूप होता है। इन सब पक्षियों में इतना थोड़ा भेद है कि इन सबकी अलग-अलग पहचान करना अच्छे शिकारी तथा पक्षिशास्त्र के विद्यार्थियों के लिए ही सम्भव है।

पनकुकरी पानी के निकट रहने वाली चिड़िया है, जो अपना सारा समय पानी या दलदल के आस-पास बिताती है और दिन भर यहीं कीड़े-मकोड़े पकड़-पकड़ कर अपना पेट भरती रहती है। यह ऐसे जलाशयों को पसन्द करती है जिसके किनारे घनी घास, नरकुल अथवा झाड़ियाँ हों, और इस खतरे के समय अपनी शरण दे सकें। नरकुल या झाड़ियों में घुस जाने के बाद इन्हें शिकारी कुत्तों की सहायता के बिना पकड़ने में बहुत कठिनाई होती है। ये अपनी दोनों टाँगें लटकाये, भद्दे तरीके से उड़ती हैं और लगभग तीस-चालीस गज दूर जाकर फिर पानी में उतर पड़ती हैं।

इनका मुख्य भोजन सब प्रकार के कीड़े-मकोड़े तथा छोटे-छोटे घोंघें-कटुए हैं, लेकिन ये घास-पात, गल्ला और बीज भी खाती हैं। ये जमीन पर तो तेजी से दौड़ती हैं, पानी में भी अच्छी तरह तैरती और डुबकी लगाती हैं।

पनकुकरी अकेली अथवा पाँच-सात के छोटे-छोटे गिरोहों में दिखाई पड़ती है और झाड़ियों में छिपी रहने पर अक्सर इनकी तेज और कर्कश आवाज सुनाई पड़ती रहती है, जो मेंढक की 'टर्र-टर्र' जैसी होती है। ये कभी पेड़ पर नहीं बैठती और न ही पेड़ों पर अपना घोंसला बनाती हैं।

**घोंसला** : मौसमी चिड़िया होने के कारण, पनकुकरी हमारे देश में घोंसले नहीं बनाती और इसके लिए यह अपने देश वापस चली जाती है। वहाँ यह मई से जुलाई के बीच किसी जलाशय के किनारे या दलदली प्रदेशों में घास-फूस का घोंसला बना कर उसे पानी में, या उसके निकट घनी घास या नरकुल आदि के बीच बड़ी होशियारी से छिपा देती हैं। इनके घोंसले जमीन या पानी से ५-६ इंच की ऊँचाई पर रहते हैं। मादा ५-६ अंडे देती है, जो हलके भूरे या पत्थरी रंग के होते हैं और जिन पर बैंगनी या गाढ़ी लाल चित्तियाँ और बिंदियाँ होती हैं।

अंडे करीब १.३८ × १.०२ इंच के होते हैं।

## २१८ छोटी पनकुकरी (Water Rail. Rallus Karejewi)

**पर्याय** : जल कुक्कुटी।

**पहचान** : इसकी गरदन का अगला भाग, सीना और पेट का अगला हिस्सा गाढ़ा सिलेटी और पेट का पिछला भाग हलके भूरे रंग का होता है। ऊपर का सारा भाग काली और भूरी लकीरों से भरा रहता है। यह पानी के निकट पायी जाती है।

**रंग-रूप** : इसके नर-मादा एक रंग-रूप के होते हैं, लेकिन नर कद में मादा से कुछ-कुछ बड़ा होता है। लम्बाई लगभग ११ इंच। गरदन का अगला भाग, सीना और पेट के आगे का हिस्सा गाढ़ा सिलेटी। पेट का निचला हिस्सा और निचला दुम-ढकना हलके भूरे या हलके फालसई रंग का। पीठ और ऊपर का सारा भाग काली और भूरी लकीरों से, और बगल का हिस्सा काली और सफेद धारियों से भरा। आँख के आगे एक कलछौंह धब्बा रहता है, जो पनकुकरी के धब्बे से कुछ छोटा होता है। चोंच की जड़ के पास आँख के मध्य तक पनकुकरी की तरह सफेद रेखा भी नहीं होती और सीने तथा अगले पेट पर के परों के सिरे भी भूरे नहीं होते। आँख लाल, चोंच लाल या नारंगी। टाँगें भूरापन लिये गंदी गुलाबी।

**निवास** : जिस प्रकार पनकुकरी शीत काल के आते ही हमारे देश के पूर्वी भागों में फैल जाती है, उसी प्रकार छोटी पनकुकरी देश के उत्तर-पश्चिमी प्रदेशों में बाहर से आकर भर जाती हैं। यह भी यहीं की मौसमी चिड़िया है जो कश्मीर, पंजाब और उत्तर प्रदेश के पश्चिमी जिलों में दिखलाई पड़ती है। हमारे देश से

**बाहर** यह पाकिस्तान, ईरान, अफगानिस्तान, तुर्किस्तान, एशिया माइनर, यूरोप और अफ्रीका में काफी संख्या में पायी जाती हैं। हमारे देश में यह पनकुकरी से कम संख्या में आती हैं।

**विवरण** : छोटी पनकुकरी भी अन्य जलकुकरियों की तरह ऐसे जलाशयों के निकट रहने वाली चिड़िया है, जहाँ इसके छिपने के लिए काफी झाड़ी या घास-फूस हों। यह भी जब एक बार झाड़ी में घुस कर छिप जाती है तो इसे बाहर निकालना आसान नहीं होता। ये पानी में बड़ी खूबी से तैर लेती हैं और डुबकी भी लगा लेती हैं। उड़ते समय इसकी टाँगें भी नीचे की ओर लटकी रहती हैं। इनका भी मुख्य भोजन, कीड़े-मकोड़े, छोटे कटुए-घोंघे और घास-पात हैं।

**घोंसला** : छोटी पनकुकरी मौसमी चिड़िया होने के कारण यहाँ घोंसला नहीं बनाती और अंडा देने के लिए अपने देश लौट जाती है। वहाँ ये मई से जुलाई के बीच घास-फूस का घोंसला बनाती है, जो पानी के किनारे की घनी घास या झाड़ी के बीच रखा रहता है। मादा उसी में समय आने पर ५-६ अंडे देती है, जो संदली या पत्थरी रंग के होते हैं और जिन पर गाढ़ी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

अंडे १.३८ × १.०२ इंच के होते हैं।

## २९९ गोदन (Corn Crake or Land Rail : Crex Crex)

**पर्याय** : शस्य कुक्कुटी।

**पहचान** : गोदन पनकुकरी का निकट सम्बन्धी है जिसके शरीर का ऊपरी भाग गंदा पीला रहता है जिस पर कुछ काली लकीरें पड़ी रहती हैं। डैने कत्थई तथा नीचे का सारा भाग भुरछौंह सफेद रहता है।

**रंग-रूप** : गोदन के नर-मादा एक-जैसे ही होते हैं। लम्बाई लगभग १० इंच। शरीर का ऊपरी भाग गंदा पिलछौंह या बादामी, जिसमें कुछ ललछौंह झलक और कुछ काली लकीरें। बगल के हिस्से पर भूरी और सफेद चारखाने-जैसी धारियाँ और डैने का रंग कत्थई। गरमियों में सर के दोनों बगली हिस्से सिलेटी हो जाते हैं और सीने पर भी हलकी सिलेटी या कंजई झलक आ जाती है। आँख के ऊपर कनपटी तक एक चौड़ी सिलेटी पट्टी। चेहरा और गरदन का बगली हिस्सा हलका बादामी। डैने कत्थई और पखनियाँ, बड़े पंख तथा बगल का हिस्सा ललछौंह, जिन पर सफेद धारियाँ। ठोड़ी और नीचे का सारा भाग भूरापन लिये सफेद। आँख भूरी। चोंच हलकी भूरी। टाँगें हलकी भूरी।

**निवास** : गोदन को जलबोदर और पनकुकरी के बीच की चिड़िया और निकट सम्बन्धी कह सकते हैं, कुछ विद्वान इसे जलबोदरियों के साथ रखते हैं और कुछ पनकुकरियों के साथ।

यह मौसमी पक्षी है, जो जाड़ों में यहाँ उत्तर-पश्चिमी सीमा की ओर से आता है और कश्मीर तक पहुँच जाता है। यह यहाँ बहुत कम संख्या में आता है, इसलिए अभी इसके बारे में अधिक नहीं ज्ञात हो सका है। हमारे देश से बाहर ये सारे यूरोप और अफ्रीका तथा मध्य एशिया में फैले हुए हैं।

**विवरण** : गोदन मौसमी पक्षी है, जो जाड़ों में यहाँ कश्मीर तक आकर, गरमियों से पहले-पहले वापस चला जाता है। यह यहाँ कम ही संख्या में आता है। कभी-कभी २-४ हमारे देश में और भी भीतर की ओर चले आते हैं। इसकी आदतें बहुत कुछ अन्य जलबोदरियों से मिलती-जुलती मान सकते हैं, लेकिन इस बारे में कोई निश्चित सीमा निर्धारित करना उचित नहीं।

इनका मुख्य भोजन पानी के कीड़े-मकोड़े हैं। साथ ही, ये गल्ला, बीज, नरम कल्ले भी खा लेते हैं। इसे पानी और दल-दल के किनारे देखा जा सकता है।

**घोंसला** : गोदन के जोड़ा बाँधने और और अंडा देने का समय जून से सितम्बर तक है। तब यह पानी के किनारे नरकुल आदि के बीच घास-फूस का घोंसला बनाता है। मादा समय आने पर ५-६ पत्थरी अंडे देती है, जिनके एक सिरे पर गाढ़ी भूरी, या बैंगनी चित्तियाँ और बिंदियाँ होती हैं।

ये अंडे १.५० × ०.८५ इंच के होते हैं।

## ३०० कैमा (Purple Coot : Porphyrio poliocephalus)

**पर्याय** : राजीव अंबु कुक्कुट, खैमा, जलबोदर, कलीम।

**पहचान** : नरकुल आदि से भरे हुए जलाशयों में पायी जाने वाली नीली और बैंगनी रंग की चिड़िया, जिसकी दुम के नीचे एक सफेद चित्ता रहता है। इसके पैर अर्ध जालपाद रहते हैं।

**रंग-रूप** : लम्बाई १७ इंच। नर-मादा एक-जैसे, लेकिन मादा कद में कुछ छोटी और हलकी। सर हलका बादामीपन लिये कंजई, जिसका ऊपरी हिस्सा बैंगनीपन लिए सिलेटी। गाल-गला और गुद्दी पर का यही रंग कुछ और गहरा; पीठ, बगली हिस्सा और पेट भी इसी रंग का। डैने के बगली हिस्से और सीना हलका हरापन लिये नीला। डैने और दुमके पर काले। ऊपरी दुम-ढकना निलछौंह। दुम के नीचे एक सफेद चित्ता। चोंच मोटी और दबी-दबी-सी, जो जड़ के पास कुछ ऊपर तक चढ़ी हुई। रंग भूरापन लिये गाढ़ा लाल। आँख गाढ़ी लाल। टाँगें हलकी लाल।

**निवास** : कैमा यहाँ की प्रसिद्ध जलमुरगी है, जो कद में दूसरी जलमुरगियों से कुछ बड़ी होती है और अपने नीले

तथा बैंगनी रंग के कारण दूसरी जलमुरगियों से कुछ बड़ी होती है, और उनसे अलग पहचान ली जाती है। यह हमारे देश की बारहमासी चिड़िया है जिसे यहाँ के दलदलों और नदियों के ऐसे हिस्सों में देखा जा सकता है, जो पानी की घास और नरकुलों आदि से भरे हैं।

**विवरण** : कैमा को कुछ लोग खैमा भी कहते हैं, लेकिन यह ज्यादातर जलमुरगी ही कही जाती है। इसे जलाशयों में नरकुल तथा पानी के अन्य पौधों की टहनियों पर बैठे देखा जा सकता है। यह अपना भारी शरीर लेकर भी पानी के पौधों पर बड़ी आसानी से घूमती रहती है।

यह वैसे तो तैरने में उस्ताद होती है, लेकिन इससे भी ज्यादा चतुराई यह छिपने में दिखाती है। उड़ने से तो जैसे इसे नफरत है और एक जगह से उड़ कर यह थोड़ी दूर पर ही फिर उतर जाती है। यदि इसके रहने के स्थान के आस-पास धान के खेत हों तो यह उनके नये कल्लों को काट कर फसल को बहुत नुकसान पहुँचाती है, क्योंकि इसका मुख्य भोजन खास-पात और नरम कल्ले आदि हैं। इसकी बोली मुरगियों से मिलती-जुलती है।

**घोंसला** : घोंसले के मामले में कैमा की आदत अन्य जलमुरगियों से मिलती-जुलती है। यह भी उन्हीं की तरह मद्दा-सा घास-फूस का घोंसला बनाती है जो कभी पानी की घास या नरकुलों में और कभी किनारे की किसी झाड़ी में २-३ फुट की ऊँचाई पर रहता है। इनका अंडा देने का समय तो जून से सितम्बर तक रहता है, लेकिन एक झील की सभी कैमा प्रायः एक ही समय अंडा देती हैं।

इनके अंडे अन्य जलमुरगियों से बहुत कुछ मिलते-जुलते हैं, लेकिन उनमें चमक बहुत कम होती है और ये चित्तीदार भी होते हैं। नये अंडों का रंग हलका गुलाबीपन लिये पत्थरी होता है। लेकिन कुछ दिन बाद यह गुलाबीपन चला जाता है और घानी लाल बिंदियाँ और हलके बैंगनी चित्ते तथा धब्बे कायम रहते हैं। इनके अंडों की संख्या ६ से ८ तक, और कभी-कभी १० तक भी होती है।

अंडे नाप में प्रायः १.९३ × १.३९ इंच के होते हैं।

## ३०१ कोरा (Water Cock : Gallicrex Cinerea)

**पर्याय** : पनकौरा, कोगड़ा, पनकुकड़ा, जल कुक्कुटभ।

**पहचान** : कोरा या पनकुकड़ा के नर-मादा वैसे तो बादामी रंग के होते हैं जिनका सारा शरीर गाढ़ी भूरी धारियों से भरा होता है लेकिन जोड़ा बाँधने के समय नर कलछौंह सिलेटी रंग का हो जाता है और उसके सर पर लाल रंग की चोटी निकल आती है, जिससे इसको पहचानना कठिन नहीं होता।

**रंग-रूप** : कोरा के नर-मादा एक रंग-रूप के नहीं होते और उनके कद में भी भेद है। नर मादा से काफी बड़ा होता है और उसकी पोशाक भी जोड़ा बाँधने के समय मादा से चमकीली हो जाती है। नर की लम्बाई १८ इंच और मादा की करीब १४ इंच। वैसे तो नर और मादा बादामी रंग के होते हैं और उनका ऊपरी हिस्सा गाढ़ी भूरी पट्टियों से, और निचला हिस्सा गाढ़ी भूरी धारियों से भरा होता है, लेकिन जोड़ा बाँधने के समय कलछौंह सिलेटी रंग का हो जाता है। उसके सर पर मुरगों की तरह लाल रंग की चोटी या खेस निकल आती है, जिससे उसे पहचानने में दिक्कत नहीं होती। मुर्गे-जैसी चोटी के कारण इसको पनकुक्कर या पनकुकड़ा भी कहा जाता है। आँख-नर की लाल, मादा की भूरी। चोंच नर की लाल, मादा की पिलछौंह। टाँगें-नर की लाल, मादा की गाढ़ी भूरी।

**निवास** : कोरा या पनकौरा यहाँ का बारहमासी पक्षी है, जो पूर्वी भागों में अधिक और पश्चिमी भागों में कम संख्या में पाया जाता है। इसे देश के गरम और दलदली भागों में देख पाना यों तो कठिन नहीं है, लेकिन चराई रात में होने के कारण इस पर हमारी नजर जल्दी नहीं पड़ती। देश से बाहर यह जापान, जावा, सुमात्रा आदि द्वीपों में भी काफी संख्या में फैला है।

**विवरण** : कोरा अधिकतर बंगाल और आसाम में पाया जाता है, लेकिन रात को निकलने की आदत के कारण इस पर निगाह कम पड़ती है। फिर भी बहेलिये इन्हें फँसा ही लेते हैं और बड़े बाजारों में यह खूब बिकते हैं।

असम में तो इन्हें मुर्गी की तरह पाला भी जाता है। यह कम ही बोलता है, लेकिन जोड़ा बाँधने के समय इसकी तेज बोली खूब सुनाई पड़ती है। असम के लोग पालतू कोरा के अंडे सेने का भी अनोखा तरीका अपनाते हैं। वे अंडे को रूई में लपेट कर नारियल के आधे कटे खोपड़े में रख कर, अपने पेट से बाँध लेते हैं। इसी प्रकार कुछ दिनों तक बँधा रहने पर अंडा फूट जाता है। कोरा का मुख्य भोजन तो घास-पात और बीज हैं, लेकिन यह कीड़े-मकोड़े और छोटे कटुए-घोंघे भी खा लेता है।

**घोंसला** : कोरा के जोड़ा बाँधने का समय जुलाई से अगस्त तक होता है। जब यह घास-फूस का बड़ा-सा और भद्दा-सा घोंसला बनाता है। यह घोंसला घनी घास या झाड़ी के बीच रहता है, जिसमें मादा पत्थरी रंग के ५-६ अंडे देती है। इन अंडों पर ललछौंह और बैंगनी रंग के चित्ते होते हैं।

ये अंडे नाप में १.५७ × १.१८ इंच के होते हैं।

## ३०२ टिकरी (Common Coot : Fulica atra)

**पर्याय** : टीकी, कारण्ड कुक्कुट, दसारी, दसरनी, आरी, खुरकुल ।

**पहचान** : गाढ़ी कलछौंह सिलेटी रंग की चिड़िया जो अपनी चोंच की जड़ के पास से माथे तक फैले हुए सफेद चकत्ते के कारण आसानी से पहचानी जाती है । यह झुंड में खुले हुए जलाशयों में रहती है। उड़ते समय इनकी टाँगें पीछे की ओर बढ़ी रहती हैं ।

**रंग-रूप** : नर मादा एक-जैसे । लम्बाई लगभग १६ इंच । सारेबदन का रंग कलछौंह सिलेटी या कंजई । जो सर, गरदन और निचले दुम ढकने पर ज्यादा गाढ़ा और निचले हिस्से में हलका । डैने के किनारे सफेद और माथे पर एक सफेद चौड़ा चित्ता । चोंच और माथे की ओर बढ़ा हुआ हिस्सा निलछौंह । आँख लाल । टाँगें हरछौंह सिलेटी, अँगूठे अर्ध जालपाद ।

**निवास** : टिकरी यहाँ की बारहमासी चिड़िया है, जो बड़े-बड़े तालों और पानी की घास तथा नरकुलों से भरे अन्य जलाशयों में रहती है । यह पानी की कमी या तालों के सूखने के कारण, यहीं थोड़ा-बहुत स्थान-परिवर्तन कर लेती है, लेकिन मौसमी बत्तखों की तरह गरमियों में यहाँ से बाहर नहीं जाती। गरमियों में इनमें से अधिकांश पक्षी हिमालय में ६ से ८ हजार फुट की ऊँचाई तक चले जाते हैं और जाड़ों में फिर मैदानों में उतर आते हैं । इसीलिए शीतकाल में इनकी संख्या मैदानों में बढ़ जाती है और ऐसा जान पड़ता है, जैसे यह भी मौसमी पक्षी हों ।

**विवरण** : टिकरी बहुत परिचित चिड़िया है, जिसे बत्तखों का निकट सम्बन्धी कह सकते हैं । जलाशयों में यह बत्तखों के साथ इस तरह हिली-मिली रहती है कि इसे देखकर बत्तखों का ही धोखा हो जाता है । लेकिन इसको जिसने एक बार भी पानी पर कुछ दूर दौड़ कर ऊपर उड़ते देखा है, वह इसको पहचानने में कभी धोखा नहीं खा सकता ।

टिकरी को कुछ लोग टीकी या टीका भी कहते हैं । इनका यह नाम इनके माथे पर के सफेद चित्ते या टीके के कारण पड़ा है जो इनके काले रंग में दूर से ही इतना चमकता है कि पहचानना कठिन नहीं होता ।

टिकरी के पैर बत्तखों की तरह पूरे जालपाद नहीं होते, लेकिन उनके लम्बे अंगूठों से दोनों ओर पत्ती की तरह की पोली खाल बढ़ी रहती है, जिसके कारण यह पानी से उड़ते समय मुश्किल से उठ पाती है और उड़ने से पहले इन्हें चार-छः गज तक पानी की सतह पर दौड़ना पड़ता है । लेकिन एक बार हवा में उड़ जाने पर इनकी उड़ान बहुत तेज हो जाती है । टिकरी वैसे तो गिरोह में रहती है, लेकिन इनका गिरोह बत्तखों की तरह एक साथ नहीं रहता और खतरा होने पर भी ये बत्तखों की तरह एक साथ नहीं उड़ जातीं।

टिकरी अपनी आदतों के कारण जलमुरगियों से कहीं ज्यादा बत्तखों के निकट जान पड़ती है । इसकी शक्ल-सूरत ही नहीं, इसका तैरना और डुबकी लगाना भी बत्तखों के जैसा ही होता है । चराई के समय के अलावा, ये घनी जगहों में खुश न रहकर खुले पानी में तैरती रहती हैं ।

इनका मुख्य भोजन घास-पात, पानी के कीड़े, मछलियाँ और घोंघे-कटुए हैं । इसके अलावा, ये पानी की चिड़ियों के अंडे भी खा लेती हैं । ये ज्यादातर पानी के अन्दर से ही अपनी खुराक तलाशने के लिए तैरती रहती हैं, पर कभी-कभी इन्हें सूखे में भी चराई करते देखा जा सकता है ।

**घोंसला** : टिकरी के अंडा देने का समय मई-जून है । उस समय यह बहुत शोर मचाने लगती हैं और अन्य जलमुरगियों की तरह घास-फूस का भद्दा-सा घोंसला बना लेती हैं । घोंसला या तो पानी में तैरता रहता है, या कभी छिछले पानी में घास या नरकुलों के बीच रखा रहता है । कभी-कभी ये घोंसले किनारे पर की किसी घास वाली जगह या घनी झाड़ी में भी रख देती हैं । इनके अंडों की संख्या ८ से १० तक होती है। उनका रंग हलका बादामी मायल पत्थरी होता है, जिस पर धानी, काली या गाढ़ी भूरी चित्तियाँ और बिंदियाँ होती हैं । अंडों पर थोड़ी चमक भी होती है ।

अंडे नाप में १.९८ × १.४० इंच के होते हैं ।

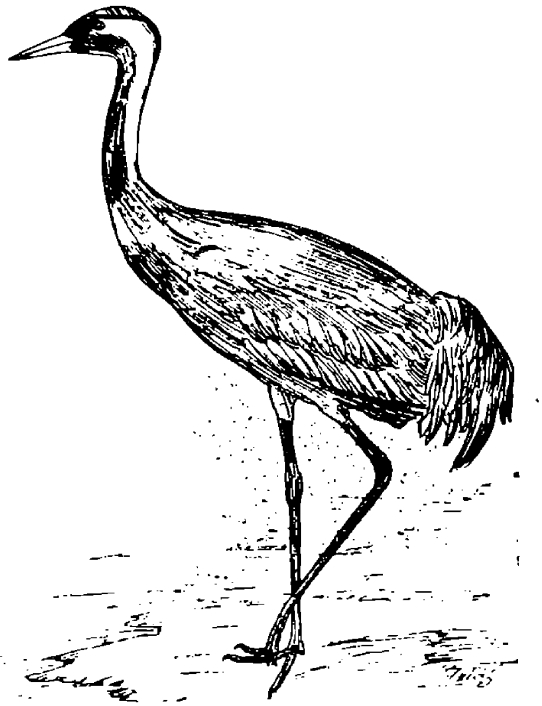
## ३०३ कुलंग (Common Crane : Crus Crus)

**पर्याय** : प्राच्य, क्रौंच, कुंज, कुरंच, कुर्च ।

**पहचान** : सारस से कुछ छोटी लेकिन उसी-शक्ल सूरत की सिलेटी रंग का पक्षी, जिसका सर और गरदन का ऊपरी भाग कलछौंह सफेद रहता है और गुद्दी पर एक लाल चित्ता होता है । पीछे के बढ़े और नीचे झुके हुए पर दुम को ढक लेते हैं । यह खुले मैदानों में रहने वाला पक्षी है ।

**रंग-रूप** : नर मादा एक-जैसे और कद में भी लगभग समान । लम्बाई ४५ इंच । सारा बदन हलका सिलेटी भूरा और डैनों के बड़े और छोटे परों तथा दुम के परों के सिरे काले । चोटी और आँख के आगे का कुछ हिस्सा काले परों से भरा । माथे पर की खाल गंदे लाल रंग की । गुद्दी के निचले हिस्से पर सिलेटी रंग का तिकोना चित्ता । आँख के पीछे से दोनों ओर एक-एक सफेद पट्टी, जो गरदन पर होती हुई गुद्दी के पीछे जाकर मिल जाती है । ठोड़ी, गाल, गला और गरदन का अगला हिस्सा कलछौंह सिलेटी ।

आँख गहरी लाल या नारंगी। चोंच सींग के रंग की और उसका सिरा पिलछौंह। टाँगें काली।



कुलंग

**निवास** : कुलंग सारस की जाति की लम्बी टाँग वाली चिड़िया है, जो सारस की तरह बारहों महीने न रहकर केवल जाड़ों में उत्तर की ओर से आती है और जाड़ा समाप्त होने पर अप्रैल तक फिर उसी ओर चली जाती है। यह उत्तर की ओर पंजाब, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, कच्छ तथा काठियावाड़ और दक्षिण की ओर मद्रास प्रान्त के उत्तरी हिस्सों तक फैल जाती है, लेकिन बिहार, बंगाल आदि पूर्वी प्रान्तों में ये शायद ही कभी दिखाई पड़ती हो।

देश से बाहर यह अफगानिस्तान से लेकर सारे यूरोप और उत्तरी अफ्रीका में पायी जाती है और एशिया में चीन, मंगोलिया और साइबेरिया में भी इनकी कमी नहीं है।

**विवरण** : कुलंग भारतवर्ष में अक्तूबर के प्रथम सप्ताह में आ जाते हैं और अप्रैल के अन्त तक यहाँ से लौटना शुरू कर देते हैं। यह सारस की तरह ही अपना अधिकांश समय पानी के आस-पास ही बिताते हैं। दिन में ये पानी में खड़े-खड़े ही सो भी लेते हैं। सुबह तो ये चराई के लिए अक्सर खेतों में चले जाते हैं, लेकिन बाकी समय इन्हें किसी नदी या ताल के पड़ोस में ही देखा जाता है। इसके अलावा दिन और रात को भी मौका आने पर ये खेतों के दो-एक चक्कर लगा ही आते हैं।

सारस की तरह कुलंग भी एक पैर पर खड़े होकर, गरदन लपेट कर सोते हैं। जाड़ों के दोपहर में नदियों या झीलों के टापुओं में अक्सर इनके झुंडों को इसी तरह आराम करते देखा जा सकता है और इनके गोल दो सौ से तीन सौ तक के होते हैं। खेतों में चरकर पानी के किनारे उतरने के लिए इनका गोल पहले हवा में खूब चक्कर लगाता है, तब कहीं नीचे उतरता है। उतरते समय ये कर्कश स्वर में बोलते हैं और जमीन छूने के लिए इनके लटकते हुए लम्बे पैर ऐसे लगते हैं, जैसे वे टूट गए हों।

कुलंग की बोली सारस-जैसी तो नहीं होती, लेकिन होती कर्कश ही है। ऊपर से उतरते समय या अपने घायल साथियों को जमीन पर भागते देखकर, ये काफी शोर मचाते हैं और ऊपर चले जाने पर भी शोर मचाना कुछ देर तक जारी रहता है।

घायल कुलंग जमीन पर काफी तेजी से भागता है और पास पहुँचने पर पीछा करने वाले पर हमला भी कर देता है। कभी-कभी और कोई रास्ता न देखकर वह पानी में कूद पड़ता है और बेडौल होने पर भी आशा से अधिक तेज तैर लेता है।

कुलंग का मुख्य भोजन वैसे तो गल्ला ही है, लेकिन गल्ले की कमी होने पर ये कीड़े-मकोड़े, घोंघे और छोटी-छोटी मछलियाँ भी खा लेते हैं। सारस की तरह ये भी रात में अक्सर किसी टापू पर एक साथ ही बसेरा लेते हैं और बीच-बीच में बोलते भी रहते हैं।

**घोंसला** : कुलंग हमारे देश में अंडे नहीं देते, इसके लिए इन्हें यूरोप और मंगोलिया आदि देशों में जाना पड़ता है। इनका घोंसला छोटा होता है, किन्तु सारस की ही तरह यह सूखी टहनियों आदि से किसी दलदली स्थान पर, खुले में ही बनाया जाता है। इनके अंडों का रंग भूरा या हलका हरा रंग होता है, जिस पर चित्तियाँ होती हैं।

अंडों की नाप ३.९ × २.४ इंच तक होती है।

## ३०४ करकरा (Demoiselle Crane : Anthropoides Virgo)

**पर्याय** : खर क्रौंच, करेंरेट, करकुची, कालम, गरारा, करकरिया, चुटियल।

**पहचान** : सारस से कद में छोटी चिड़िया जो सिलेटी रंग की होती है और बनावट में अन्य सारसों-जैसी ही रहती है। इसको इसकी आँख के पीछे के कुछ सफेद और मुलायम परों और गले के नीचे के काले रंग के कारण आसानी से पहचाना जाता है।

**रंग-रूप** : करकरा के नर-मादा एक ही रंग-रूप के और कद में भी बराबर होते हैं। इनकी लम्बाई लगभग ३३ इंच होती है। इनके सारे शरीर का रंग हलका सिलेटी लेकिन गरदन के निचले भाग से सीने तक का हिस्सा काला रहता है। सीने के पर और जगहों के परों से कुछ बड़े। दुम के पर भी काले। आँख के पीछे थोड़े से मुलायम सफेद पर रहते हैं, जो इनकी पहचान है। आँख लाल। चोंच गंदी हरी। टाँगें काली।



१. हरदुआ २. बबुना ३. सिपाही बुलबुल ४. जुगजुगी ५. कौड़िल्ला ६. दरजिन फुदरकी
७. बया ८. कौड़िल्ली ९. किलकिला १०. चरखी ११. टिटिहरी

**निवास :** कुलंग की तरह करकरा भी यहाँ का मौसमी पक्षी है जो जाड़ों में बाहर से आता है और भारत में करीब-करीब उन्हीं स्थानों पर मिलता है, जहाँ कुलंग मिलते हैं। इतना जरूर है कि करकरा भारतवर्ष के पश्चिमी और दक्षिणी प्रान्तों में दूसरी जगहों से ज्यादा मिलते हैं। इसके कुछ गोल उत्तर से आकर बिहार और पश्चिमी बंगाल में अक्तूबर तक पहुँचते हैं। दूसरे कुछ गोल पश्चिम की ओर से आकर दक्षिण तक फैल जाते हैं, इनकी संख्या ज्यादा होती है और ये उनसे कुछ पहले यानी आधे अक्तूबर तक आ जाते हैं और देर तक यानी आधी मई तक रहते हैं।

**विवरण :** करकरा सारस की जाति का बहुत सुन्दर पक्षी है, जिसे अंग्रेजी में इसके सुन्दर पोशाक के ही कारण डिमोजेल क्रेन अर्थात् 'श्रीमती सारस' कहा जाता है। यह यहाँ का मौसमी पक्षी है, जो यहाँ जाड़ा शुरू होते ही आ जाता है और जाड़े भर यहाँ बड़े-बड़े गोल बना कर रहता है। उत्तर में तो इनके गोल १००–२०० तक ही सीमित रहते हैं, लेकिन दक्षिण की ओर यह हजारों में होते हैं। कुलंग की तरह ही, सवेरे ये भी खेतों में चराई करते रहते हैं और बाद में किसी नदी या झील के किनारे पहुँच जाते हैं। इनको बड़ी-बड़ी नदियों के रेतीले किनारे बहुत ही पसन्द हैं। लेकिन जहाँ बड़ी-बड़ी नदियाँ नहीं हैं, वहाँ ये बड़े तालों पर ही सन्तोष कर लेते हैं। सवेरे की चराई के बाद, ये दोपहर का समय पानी के किनारे बिताते हैं और एक टाँग पर खड़े होकर ऊँघते रहते हैं। दोपहर के बाद फिर चराई के लिए खेतों का एक चक्कर लगाकर, शाम होते नदी के किनारे या किसी ताल के टापू पर बसेरा लेने के लिए लौट आते हैं।

घायल पक्षी कुलंग की तरह खूब भाग लेते हैं और पकड़ने वाले पर चोंच से बड़े जोर का हमला भी करते हैं। लेकिन ये कुलंग के बराबर तैर नहीं पाते। करकरा कुलंग से ज्यादा शाकाहारी होते हैं और कुछ न मिलने पर वे भले ही कीड़े-मकोड़े खा लेते हों, लेकिन ये मुख्यतया गल्ला, बीज और दाना वगैरह ही खाते हैं। इनकी बोली बहुत कर्कश और "कर्र-कर्र" से मिलती-जुलती होती है, इसी से इसे 'करकरा' का नाम मिला है।

**घोंसला :** मौसमी पक्षी होने के कारण, करकरा यहाँ अंडे नहीं देते, न इनके जोड़ा बाँधने का समय यहाँ आरम्भ होता है। ये मई-जून में जोड़ा बाँधते हैं और तब तक रूस तथा यूरोप के दक्षिणी भागों में पहुँच जाते हैं।

करकरा की प्रणय-लीला और प्रेम-प्रदर्शन बहुत सुन्दर और अद्भुत होता है। जिन लोगों ने जोड़ा बाँधने के समय इनका नाच देखा हो, वह कभी इसे भुला नहीं सकते। वैसे तो, मादा को रिझाने के लिए कई पक्षी नाचते हैं और सारस भी इस प्रकार का प्रदर्शन करते हैं, लेकिन जोड़ा बाँधने का समय निकल आने पर करकरा का तो झुंड का झुंड मादा को प्रसन्न करने के लिए गरदन हिला-हिला कर नाचने लगता है। जोड़ा बँध जाने पर, मादा खुले मैदान में कुछ ऊँची जगह पर ही पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़ों को जोड़ कर, घेरानुमा घोंसला बना लेती है, या जमीन पर ही गढ़ा-सा बना कर उसमें १ या २ अंडे देती है।

इसके अंडों का रंग कुलंग के अंडों से कुछ गहरा भूरा होता है और चित्तियाँ भी उनसे अधिक स्पष्ट होती हैं। नाप में ये कुलंग के अंडों से कुछ छोटे होते हैं।

अंड नाप में लगभग २.२ × १.०५ इंच के होते हैं।

## ३०५ सारस (Indian Saras Crane : Antigone Antigone)

**पर्याय :** सरहंस, भारत सारस, लक्ष्मण, नीलांग, रक्तमस्तक, मणितारक।

**पहचान :** काफी बड़े कद का हमारे यहाँ का प्रसिद्ध पक्षी जो अपनी लम्बी टाँगों, सिलेटी पोशाक और लाल सर के कारण बहुत आसानी से पहचाना जा सकता है। यह प्रायः जोड़े में ही खुले मैदानों, खेतों तथा पानी के आस-पास के दलदल वाले स्थानों में दिखाई पड़ता है।

**रंग-रूप :** सारस के नर-मादा का रंग-रूप एक ही होता है, लेकिन नर मादा से कुछ कद में बड़ा होता है। लम्बाई लगभग ६० इंच। सारे बदन का रंग सिलेटी, जिसमें गरदन के ऊपरी हिस्से का रंग हलका। उसके ऊपर सर का भाग चटक लाल, लेकिन यह सुर्खी कुछ दिनों बाद आती है। माथा राख के रंग का और कान के पास दोनों ओर सिलेटी चित्ते। डैने के सिरे कलछौंह-भूरे, जिनका निचला भाग सफेदी-मायल। आँख-नारंगी। चोंच सींग के रंग की। टाँगें गुलाबी।

**निवास :** सारस हमारे यहाँ की सबसे बड़ी चिड़िया है, जिसे शहर के निवासियों ने भले ही न देखा हो, लेकिन देहातों में रहने वाले लोगों की निगाह पाँच फुट की इस चिड़िया पर न पड़े, यह सम्भव नहीं। इसको गाँव के लोग सत्तराम भी कहते हैं, क्योंकि इसकी बोली कर्कश होने पर भी 'सत्तराम' से बहुत-कुछ मिलती है। भारत में धार्मिक विचारों के कारण, प्रायः इसे लोग नहीं मारते।

सारस बारहमासी चिड़िया है जो सारे देश में फैली हुई है; शायद ही कोई जलाशय इससे खाली होगा। उत्तर भारत के प्रदेश ही इसे अधिक पसन्द हैं, जहाँ यह असम से पंजाब तक दिखाई पड़ती है। दक्षिण की ओर यह मध्य भारत तक ही जाती है, उससे आगे इसे देखना कठिन है। उत्तर भारत में भी यह सब जगह नहीं दिखाई पड़ती। क्योंकि इसे पानी के निकट के स्थान ही पसन्द हैं। बरसात में जब चारों ओर पानी भर जाता है, तो इसके जोड़े ६–७ के छोटे-छोटे गिरोहों में छिछले जलाशयों में मेंढक-मछली की तलाश में इधर-उधर घूमते-फिरते दिखाई पड़ते हैं।

**विवरण** : सारस हमारे देश की बहुत प्रसिद्ध चिड़िया है, जो यहाँ के जलाशयों में अक्सर जोड़े में दिखाई पड़ती हैं। यह अपना जोड़ा जीवन भर के लिए बाँधती है और एक के मर जाने पर, दूसरा अक्सर खाना-पीना छोड़ कर अपनी जान दे देता है।

सारस को अक्सर गाँव के लोग पाल भी लेते हैं और बचपन से पालने पर यह आदमियों से बहुत हिल जाता है और उनके पीछे कुत्तों की तरह फिरा करता है। धार्मिक विचारों के कारण, इनका शिकार लोग बहुत कम करते हैं, इसी कारण यह बहुत ढीठ हो जाता है और बहुत पास जाने पर भी नहीं उड़ता।

सारस का मुख्य भोजन तो गल्ला और बीज वगैरह है, लेकिन यह मेंढक-मछली और कटुए, घोंघे भी बड़े मजे में खाता है।

**घोंसला** : क्रौंच, करकरा तथा कुलंग की तरह, सारस दूसरे देश में जाकर अंडे नहीं देता, बल्कि मई, जून तथा जुलाई में यहीं किसी झील के बीच के टापू को चुन कर वहाँ घास-फूस और लकड़ी से बड़ा-सा घोंसला बनाता है; जो मिट्टी का टीला-सा बनाकर उसी पर रखा रहता है।

जोड़ा बाँधने के समय, यह भी करकरा की तरह नाच कर बड़ा सुन्दर प्रदर्शन करता है, उस समय नर और मादा दोनों अपनी गरदन हिला-हिला कर बड़े सुन्दर ढंग से नाचते हैं और प्रणय-क्रीड़ा करते हैं। उसके बाद समय आने पर मादा १ से ३ तक अंडे देती है, जिनका रंग हलका गुलाबीपन लिये सफेद होता है। इनमें से कुछ पर बदामी और बैंगनी चित्तियाँ भी होती हैं

ये अंडे नाप में ३.९६ × २.५६ इंच के होते हैं।

## ३०६ खरमोर (Lesser Florican or Likh : Sypheotides indica)

**पर्याय** : लघु तृणमयूर, लीख, छोटा चरत, काला चरग, चीनी मोर, केरमोर।

**पहचान** : चरत जाति का लम्बी टाँगों वाला पक्षी जिसका सर गरदन और नीचे का भाग काला और ऊपरी हिस्सा भुरछौंह सफेद और तीर जैसे काले चिह्नों से भरा रहता है कान के पीछे कुछ पंख बढ़े हुए रहते हैं।

**रंग-रूप** : खरमोर के नर और मादा बहुत कुछ एक-जैसे होते हैं, लेकिन जोड़ा बाँधने के समय नर बहुत चमकीला और काले रंग का हो जाता है और उसके सर पर सुन्दर चोटी निकल आती है। साथ ही मादा नर से कुछ बड़ी भी होती है। लम्बाई लगभग १८ इंच रहती है।

नर का जाड़ों में और मादा का बारहों महीने, ऊपरी भाग और बगली हिस्सा हलका बादामी, जिसप र काले चिह्न। सीना, सर और गरदन भी हलकी भूरी, काली बिंदियों तथा चिह्नों से भरी। नीचे का हिस्सा बादमीपन लिये सफेद। दुम और डैने के पंख भूरे, जिन पर टेढ़ी-मेढ़ी काली पट्टियाँ। जोड़ा बाँधने के समय केवल गले पर के सफेद चित्ते को छोड़कर नर की बाकी सारी गरदन और सर चमकीले रंग का हो जाता है। यही नहीं, उसका सीना और बड़ी पखनियाँ भी काली हो जाती है, लेकिन सीने पर एक सफेद पट्टी और डैने और दोनों ओर एक-एक सफेद चित्ता पड़ा ही रहता है। पीठ और दुम हलके बादामी रंग की, जिस पर घानी काली चित्तियाँ और चिह्न। दुम पर कई काली पट्टियाँ। आँख गंदी या भूरी पीली। चोंच पीली और जड़ के पास गुलाबी। टाँगें गंदी पीली।

**निवास** : खरमोर बहुत सुन्दर और प्रसिद्ध पक्षी है, जिसे उसकी सुन्दर और भड़कीली पोशाक के कारण ही यह सुन्दर नाम मिला है। खरमोर का सही निवास-स्थान निश्चित करना कठिन है, क्योंकि यह पक्षी करीब-करीब बारहों महीने इधर-उधर थोड़ा-बहुत स्थान-परिवर्तन करता रहता है और इनमें से कुछ साहसी पक्षी काफी दूर तक चले जाते हैं। फिर भी इनका स्थायी स्थान हम खानदेश, नासिक और अहमदनगर से लेकर पश्चिमी घाट तक ही कह सकते हैं, हालाँकि बरसात में ये मध्य प्रदेश, राजस्थान, काठियावाड़ और गुजरात तक फैल जाते है। कभी-कभी तो ये दिल्ली तक और उत्तर प्रदेश के कुछ पश्चिमी भागों में भी चले जाते हैं। मोर ही की तरह, यह भी भारत का ही पक्षी है, जो बाहर कहीं नहीं मिलता।

**विवरण** : खरमोर तिलोर वंश का सबसे छोटा लेकिन सबसे सुन्दर पक्षी है, जो हमारे देश को छोड़ कर अन्यत्र नहीं पाया जाता। इसे थोड़े ऊबड़-खाबड़ और झाड़ियों से भरे हुए मैदान बहुत पसन्द हैं, लेकिन जाड़े के मौसम में इन्हें खेतों में अधिकतर देखा जा सकता है। खड़ी फसल में तो इनके पास तक पहुँचना आसान नहीं होता, लेकिन कुछ लोग इन बेचारों को अंडा देने के मौसम में, जब इनका ज्यादा मारना आसान होता है, इतनी बड़ी संख्या में मार लेते हैं कि यदि यह पक्षी हमारे देश से लोप ही हो जाए तो आश्चर्य नहीं। इसलिए इनका शिकार एकदम बन्द ही हो जाना चाहिए।

जोड़ा बाँधने के समय नर खरमोर अक्सर मस्त होकर कई गज ऊपर तक उछलता है। अपने रहने के स्थान पर, खरमोर प्रायः पन्द्रह-पन्द्रह मिनट पर एकाएक अपने छिपने की जगह से निकल कर ६-७ फुट ऊपर की ओर उड़ता और बोलता है, फिर पंख फैलाये ही फैलाये नीचे उतर आता है। उतरते समय, इन फैले हुए पंखों से एक खास तरह की आवाज आती है। यह क्रम थोड़ी देर तक चलता ही रहता है। खरमोर का मुख्य भोजन घास-पात, बेर, जंगली फल, पौधों की जड़ें और नये कल्ले हैं, ये छोटी-छोटी छिपकलियाँ और कीड़े-फतिंगे भी खूब खाते हैं।

**घोंसला** : खरमोर हमारे देश से बाहर नहीं जाते और यहीं

दक्षिण की ओर जाकर जुलाई से सितम्बर के बीच में अंडे देते हैं। खरमोर के नर और मादा का रंग वैसे तो भूरा होता है, पर जोड़ा बाँधने के मौसम में नर के पर सुन्दर काले रंग के हो जाते हैं। इस भड़कीली पोशाक, बोली और नाच से किसी दिन सवेरे या बादल घिरे रहने पर दोपहर में भी ये मादा को प्रसन्न करके उससे अपना जोड़ा बाँध लेते हैं।

इनके अंडा देने का समय सितम्बर और अक्टूबर है, जब मादा जमीन पर एक किसी छिछले गड्ढे में २-३ अंडे देती हैं। इनका रंग हलका गंदा-हरा या पत्थरी या हरछौंह-भूरा रहता है और उन पर गाढ़ी-भूरी या कत्थई चित्तियाँ होती हैं।

ये अंडे नाप में लगभग १.७५ × २.० इंच के होते हैं

## ३०७ चरत (Bengal Florican : Houbaropsis bengalensis)

**पर्याय**: वंग तृण मयूर, चरस ।

**पहचान**: खरमोर से कुछ बड़ा और उसी रंग-रूप का पक्षी जिसके नर का रंग जोड़ा बाँधने के समय अधिक भड़कीला और काला हो जाता है। इस समय इसके सर पर मोर जैसी एक कलंगी निकल आती है जिससे इसको पहचानना कठिन नहीं होता।

**रंग-रूप**: चरत के नर की लम्बाई २५ इंच। उसके नर मादा वैसे तो रंग-रूप में बहुत कुछ एक-जैसे होते हैं, लेकिन कद में वह मादा से कुछ छोटा होता है और जोड़ा बाँधने के समय खरमोर की ही तरह नर काला और भड़कीला हो जाता है। उस समय उसका पूरा सर और गरदन तथा नीचे का सारा भाग गहरे काले रंग का हो जाता है और सर पर मोर-जैसी कलंगी निकल आती है। गला, गरदन और सीने के पर घने और बड़े हो जाते हैं। पीठ और कुछ बड़े पंखों का रंग भी काला हो जाता है, जिस पर घनी पिलछौंह भूरी चित्तियाँ और चिह्न पड़े होते हैं। छोटी पखनियाँ और डैने के बाकी बड़े पंख सफेद ही रहते हैं। दुम के बीच के पर बादामी चित्तियों से भरे तथा काले और किनारे एकदम काले हो जाते हैं, लेकिन उनका सिरा सफेद बना रहता है। गरदन के ऊपरी भाग पर, पीठ और गरदन के बीच एक चौड़ी सफेद पट्टी और गले पर एक सफेद चित्ता पड़ा होता है।

नर की जाड़ों में और मादा की बारहों महीने सारी पोशाक बादामी-भूरी रहती है, जिस पर काले चिह्न, बिंदियाँ और टूटी-फूटी-धारियाँ पड़ी होती हैं। दुम पर काली धारी तथा गला, ठोड़ी और कान के पास का हिस्सा सफेद और पेट तथा नीचे का कुछ हिस्सा हलका बादामी या सफेद होता है जिससे दूर से देखने पर यह तीतर की तरह चितले भूरे रंग का दिखाई पड़ता है। आँख पीली, चोंच निलछौंह सिलेटी और जड़ के पास हलकी गुलाबी, टाँगें गंदी पीली।

**निवास**: खरमोर की तरह, चरत भी यहाँ का बारहमासी पक्षी है, जो भारत के अलावा और कहीं नहीं पाया जाता। यह खरमोर से कद में कुछ बड़ा होता है। इसके नर की पोशाक भी जोड़ा बाँधने के समय अधिक सुन्दर और भड़कीली हो जाती है।

चरत असम से लेकर बंगाल, बिहार और उत्तर प्रदेश के तराई के कुछ भागों में फैला हुआ है और वहाँ गंगा के उत्तर की ओर रहता हुआ पंजाब की सीमा तक चला जाता है। इसके अलावा, कभी-कभी इनमें से कुछ पक्षी राजस्थान के भीतर तक भी पाये जाते हैं।

**विवरण**: चरत को यदि हम चराई का पक्षी कहें तो ज्यादा अच्छा होगा। मैदान में रहने का प्रेमी होने पर भी यह न तो एकदम खुले मैदान में ही रहना पसन्द करता है और न ही इतने घने मैदान को अपने लिए चुनता है जिसमें यह न तो आस-पास के दुश्मनों को देख सके और न आसानी से भाग सके। गंगा के बायें किनारे के कछार और तराई के मैदान इसके रहने के लिए सुन्दर और उपयुक्त जगह हैं।

चरत का मुख्य भोजन वैसे तो छोटे-छोटे पौधों के कल्ले और जड़ें हैं, लेकिन इससे कीड़े-मकोड़े भी नहीं बचते। सरसों के कल्ले और फूल को तो यह बड़े मजे से खाता है, साथ ही छोटी-छोटी छिपकली, साँप के बच्चे, टिड्डे और गोबरीले भी इससे बचकर नहीं जाने पाते।

जमीन पर तो चरत बगुले की तरह सीधा होकर बहुत तेज चलता है, लेकिन उड़ते समय बगुले की तरह अपनी टाँगों को पीछे की ओर न फैला कर उन्हें भीतर की ओर समेटे रहता है। खटका होने पर भी यह उड़ने की अपेक्षा जमीन पर भागना ही पसन्द करता है।

जोड़ा बाँधने के मौसम के अलावा यह भी शायद बोलता नहीं, पर इसकी आवाज इतनी कर्कश होती है कि इसका मौन रहना अच्छा है।

**घोंसला**: चरत बारहमासी पक्षी होने के कारण, यही जोड़ा बाँध कर अंडे देता है। इसके जोड़ा बाँधने का समय जून-जुलाई है, जब नर चरत, जो अपने नये पंखों से बहुत सुन्दर लगता है, मोर की तरह मादाओं के सामने नाचता है। नाचते-नाचते यह अपने पंख खोल कर बीस-पचीस फुट तक की ऊँचाई तक हवा में चला जाता है और उड़ते ही उड़ते गा-गाकर वह अपने पंख चलाता है। उसके बाद वह नीचे उतर आता है और तब उसके नाच-गाने से प्रसन्न होकर एक न एक मादा गोल से बाहर निकल आती है और उससे जोड़ा बाँध लेती है। जोड़ा बाँधने के बाद मादा किसी झाड़ी के नीचे किसी छिछले गढ़े में थोड़ी-सी घास-फूस का घोंसला बना कर अंडे देती है, जिसमें से अगस्त के अन्त तक या सितम्बर के शुरू में बच्चे निकल आते हैं।

चूँकि नर मादा को अंडा सेने में किसी प्रकार की मदद नहीं

देता, इसलिए कई-कई मादाएँ एक ही झाड़ी में पास-पास अंडे देती हैं और इनकी गैरहाजिरी में यदि इनके अंडे छू लिये जायें तो न जाने कैसे इन्हें पता चल जाता है और फिर ये अपने अंडों को खुद ही तोड़ डालती हैं।

अंडों का रंग हलका गंदा-हरा या भूरा होता है और वे बहुत छोटी-छोटी और घनी गाढ़ी भूरी चित्तियों से भरे रहते हैं।

नाप में ये अंडे २.५ × १.८ इंच के होते हैं।

## ३०८ सोहन चिड़िया (Great Indian Bustard : Choriotis nigriceps)

**पर्याय**: तूगदार, सोहन, गगन मेड़, हुकना, मारधोंक, घोंघ, घोरार, गुराइन, गुरहना, धर्म चिड़िया, भारत महासारंग।

**पहचान**: तूगदार हमारे देश का बहुत प्रसिद्ध शिकार का पक्षी है जिसके बड़े आकार के कारण इसको पहचानना कठिन नहीं होता। इसके सर का ऊपरी भाग काला, गरदन सफेद और पीठ पर का रंग गाढ़ा भूरा और पतली-पतली काली धारियों से भरा रहता है। नीचे का भाग सफेद रहता है और सीने पर एक काली पट्टी पड़ी रहती है।

**रंग-रूप**: तूगदार के नर-मादा प्रायः एक ही रंग-रूप के होते हैं, लेकिन मादा नर से काफी छोटी होती है। नर की लम्बाई ४५–५० इंच। चोंच की जड़ के पास से गुद्दी तक का सारा ऊपरी हिस्सा काला। सारी गरदन सफेद। पीठ दुमगजा और ऊपरी दुमढकने गाढ़े भूरे जिसपर पतली-पतली लकीरें काले रंग की और पखनी भी गाढ़ी भूरी और काली लकीरों से भरी हुई। बीच की बड़ी पखनी गाढ़ी सिलेटी, छोटे और बड़े पंखों के सिरे सफेद। बगली हिस्सा सिलेटी। दुम पीठ के रंग की, जिसके सिरे पर एक कालछौंह भूरी पट्टी। दुम के किनारे के एक-दो परों के सिरे सफेद। सीने पर एक चौड़ी काली पट्टी, जिसके बाद का सारा नीचे का हिस्सा सफेद। निचला दुमढकना और टाँगों के पास के कुछ पर काले। आँख पीली, चोंच सिलेटी भूरी, टाँगें गंदी पीली।

**निवास**: तूगदार हमारे यहाँ के उन प्रसिद्ध पक्षियों में से एक है जिसे जिसने भी एक बार देखा है, कभी भूला नहीं सकता। ४ फुट ऊँचाई वाला यह भारी-भरकम पक्षी हमारे देश में ज्यादातर पंजाब के मैदानों में पाया जाता है। लेकिन बम्बई, काठियावाड़ और गुजरात में भी इसे देखना कठिन नहीं। यह राजस्थान और विन्ध्य पर्वतमाला के खुले पठारों में भी अक्सर दिखाई पड़ता है और उत्तर प्रदेश में मिर्जापुर आदि दक्षिणी जिलों में भी। लेकिन बिहार, बंगाल की ओर यह कभी नहीं दिखाई पड़ता। यह हमारे देश में ही अपनी सुविधा को देख कर थोड़ा स्थान-परिवर्तन जरूर कर लेता है, लेकिन इस देश को छोड़कर कहीं बाहर नहीं जाता।

**विवरण**: तूगदार हमारे यहाँ का बहुत प्रसिद्ध पक्षी है जो पश्चिमी प्रदेशों के खुले मैदानों और नीचे पठारों में अक्सर दिखाई पड़ता है। ये झाड़ी और घास से भरे हुए सूखे मैदानों को ही अपने रहने के लिए विशेषकर पसन्द करते हैं, जिससे वे आसानी से छिपकर शिकारियों को दूर ही से देख सकें। इन्हें घने जंगल बिल्कुल पसन्द नहीं हैं। लेकिन ये घनी फसल वाले खेतों में अपना अड्डा जरूर बना लेते हैं।

तूगदार के वैसे तो अनेक नाम हैं। कहीं इनको 'हुक-हुका' से मिलती हुई बोली के कारण इनको 'हुकना' कहा जाता है तो कहीं इनके भारी-भरकम शरीर को देख कर लोग इन्हें घोंघ, मलधोंक या करधोंक कहते हैं या अपनी तीतर-जैसी सुन्दर पोशाक के कारण कहीं सोहन चिड़िया कहलाता है तो कहीं इसको हुम, मोरार, करविक या गुरहना के नाम से पुकारा जाता है।

ये वैसे तो अकेले रहते हैं, लेकिन कभी-कभी इन्हें चार-पाँच के गिरोह में भी देखा जा सकता है। जोड़ा बाँधने के समय नर पक्षी, मोर की तरह पाँच-सात मादाओं के साथ दिखाई पड़ता है।

तूगदार सवेरे और शाम को चराई के लिए निकलते हैं और दिन में किसी खेत या घास के बीच में छिप कर आराम करते हैं। ये खेतों में गल्ला और नरम कल्लों के लिए तो जाते हैं, साथ ही साथ वहाँ के कीड़ों-मकोड़ों को भी नहीं छोड़ते। इन्हें गल्ला, कीड़े-मकोड़े ज्यादा पसन्द हैं। ये टिड्डे, गुबरैले, छिपकली और छोटे-मोटे साँपों को भी बड़े मजे से खाते हैं। बरसात के अन्त में ये अक्सर लम्बी घास के बीच में टिड्डों की तलाश में घुसे रहते हैं और जाड़ों में इन्हें नदी और तालाब के किनारे, जहाँ घास के कीड़े-पतिंगों का बाहुल्य रहता है, चक्कर लगाते देखा जा सकता है।

तूगदार बहुत चौकन्ना पक्षी है। इनकी उड़ान बहुत भारी और सुस्त होती है और ये जमीन से ज्यादा ऊपर नहीं जाते। ये अपने भारी पंखों को बराबर चलाते रहते हैं और दूर से देखने पर गिद्ध-से जान पड़ते हैं। भड़क जाने पर ये कई मील तक उड़ कर चले जाते हैं, लेकिन एक साथ ही दो-तीन बार उड़ने पर बहुत थक जाते हैं।

कभी-कभी कुछ पुराने तूगदार नर हिरनों के गिरोह में उसी प्रकार रहने लगते हैं जिस प्रकार अफ्रीका में जेबरा के झुंड के साथ शुतुरमुर्ग रहने लगते हैं। इस प्रकार के सहयोग से दोनों का लाभ होता है और दोनों को एक दूसरे से दुश्मनों का पता चलता रहता है।

**घोंसला**: अन्य बारहमासी पक्षियों की भाँति, तूगदार भी यहीं जोड़ा बाँध कर मार्च से अक्तूबर के बीच अंडा देता है। जोड़ा बाँधने के पहले वह मादाओं के झुंड के सामने उनको रिझाने

के लिए अपने पर फुला कर, उनके सामने मोर की तरह अपना नाच और अन्य प्रदर्शन दिखाता है, जो देखने में बहुत सुन्दर लगता है। उस समय नर के गरदन के नीचे की ओर बढ़ा हुआ हिस्सा बढ़ कर और बड़ा हो जाता है। उसको फुला कर नर मादाओं को रिझाने का काम लेता है। वह उसको धीरे-धीरे फुलाने लगता है और तब तक फुलाता जाता है जब तक उसकी गरदन लटक कर सीने तक नहीं आ जाती और यह बढ़ा हुआ हिस्सा जमीन को छूने नहीं लगता। इसके साथ ही, उसके बदन के सारे पर भी फूल जाते हैं और उसकी दुम के पर भी खड़े होकर एक तरह की आवाज करने लगते हैं। तब वह तन कर सीधा हो जाता है और एक प्रकार की दर्दनाक-सी बोली बोल कर मादाओं के निकट आ जाता है। इस प्रकार के प्रदर्शन के बाद, वह अपने झुंड की सभी मादाओं से अपना जोड़ा बाँधता है और वे अंडा देने की तैयारी में अपने-अपने घोंसले बनाने में लग जाती हैं।

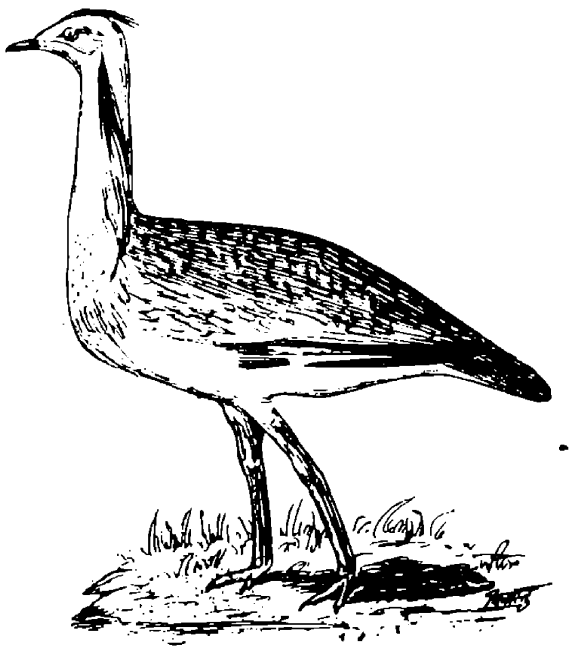
इनका घोंसला खेत या घनी घास के बीच जमीन पर या किसी गढ़े में रहता है जिसमें मादा थोड़ा घास-फूस रख कर १ अंडा देती है। इसके अंडे का रंग हरापन लिये भूरा रहता है। जिस पर कत्थई चित्ते और चिह्न पड़े होते हैं। और उस पर कभी-कभी काफी चमक भी रहती है।

अंडा नाप में लगभग २.७५ × ३.४२ इंच का होता है।

## ३०१ होबार (Houbara : Chlamydotis undulata)

**पर्याय** : पश्चिमोत्तर सारंग।

**पहचान** : होबार यहाँ का शिकार का प्रसिद्ध पक्षी है



होबार

जिसका ऊपरी हिस्सा रेतीला भूरा और काले चिह्नों से भरा रहता है। नीचे का हिस्सा निलछौंह सिलेटी रहता है और सर पर काले और सफेद परों की चोटी रहती है।

**रंग-रूप** : नर-मादा रंग-रूप में करीब-करीब एक जैसे, लेकिन मादा का रंग नर से कुछ हल्का और कद भी नर से कुछ छोटा। नर की लम्बाई ३० इंच।

नर का ऊपरी भाग धूमिल-रेतीला भूरा तथा काले और पीले चिह्नों से भरा। सर पर की चोटी काले सफेद परों की ओर गोल, पास से दोनों कन्धों पर बढ़े हुए कंठानुमा पर, जो शुरू में काले और आगे चलकर सफेद हो जाते हैं। कन्धे पर पहुँच कर, ये पर काफी बड़े हो जाते हैं और नीचे सफेद और सिरे पर काले हो जाते हैं। मादा की चोटी और कन्धे के ये पर छोटे होते हैं। सीने पर के पर भी बड़े और मुलायम और हल्के निलछौंह सिलेटी रंग के। दुम और बगल का हिस्सा ललछौंह भूरा, जिस पर काली लकीरें और चिह्न। दुम के सिरे की ओर दो सिलेटी पट्टियाँ और उनके परों के सिरे सफेद। डैने के पहले पाँच पंख सफेद, जिनका सिरा काला। बाकी पंखों में सफेदी कम होती जाती है और स्याही बढ़ती जाती है। गला और नीचे का सारा हिस्सा सफेद, लेकिन गरदन पिलछौंह भूरी और काली बिन्दियों से भरी।

आँख चटक पीली, चोंच का ऊपरी हिस्सा कलछौंह और निचला हिस्सा हरापन लिये पिलछौंह। टाँगें गंदी पीली होती हैं जिसमें गंदे हरेपन की मिलावट होती है।

**निवास** : होबार यहाँ का निवासी न होकर, मौसमी पक्षी है जो सितम्बर के शुरू में अफगानिस्तान और फारस की ओर से आकर हमारे यहाँ पंजाब, राजस्थान, कच्छ, गुजरात और अरावली पर्वत के उत्तरी भाग में भर जाते हैं। कुछ साहसी पक्षी उत्तर प्रदेश में और कुछ दक्षिण की ओर भी पहुँच जाते हैं, लेकिन ऐसा प्रति वर्ष नहीं होता। इस लिए इन पक्षियों का क्षेत्र भारत का उत्तर-पश्चिम भाग ही मानना ठीक होगा।

जाड़ा समाप्त होते ही, ये अपने अंडे देने का समय निकट आते देखकर, मार्च के अन्त तक फिर अफगानिस्तान और फारस की ओर लौट जाते हैं, जहाँ ये मेसोपोटामिया तक फैल कर अंडे देते हैं और फिर अगस्त के अन्त तक इनका प्रवास गमन शुरू हो जाता है।

**विवरण** : होबार चरत और तिलोर का निकट सम्बन्धी है। ये ज्यादातर जोड़े में या अकेले ही रहते हैं, लेकिन कभी-कभी इनको बीस-बाइस के झुंड में भी देखा जा सकता है। तिलोर की तरह ही, इन्हें गरमी बरदाश्त नहीं होती और वे उस समय बहुत सुस्त हो जाते हैं।

होबार जैसे बोलना जानता ही नहीं। चरते समय, जोड़ा बाँधते समय अथवा घायल होने पर भी इन्हें शायद ही किसी ने बोलते सुना हो। इनका मुख्य भोजन वैसे गल्ला, बीज तथा बेर आदि जंगली फल और जड़ें हैं, लेकिन इन्हें चींटी और टिड्डे और कीड़े-मकोड़े से भी परहेज नहीं।

होबार उड़ने से ज्यादा भागना पसन्द करता है और एक बार यदि यह भाग कर किसी घनी झाड़ी में छिपकर बैठ गया तो फिर बहुत निकट चले जाने पर भी नहीं उड़ता और आहट पाने पर उसी जगह छिपने का उद्योग करता है।

**घोंसला** : होबार भी मौसमी पक्षी होने के कारण, हमारे देश में घोंसला नहीं बनाते और इसके लिए इन्हें ईरान, अफगानिस्तान तथा मेसोपोटामियाँ की ओर जाना पड़ता है। वहाँ तिलोर की तरह, यह भी जमीन के किसी छिछले गढ़े में घास-फूस रख कर २ या ३ अंडे देते हैं, जो जैतूनी भूरे रंग के होते हैं। इन अंडों पर गाढ़ी भूरीचित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

ये अंडे नाप में २.५ × १.९ इंच के होते हैं।

## ३१० खरबानक (Indian Stone Plover Burhinus oedicnemus)

**पर्याय** : करबानक, लंबी, खरमा, भारत पाणविक।

**पहचान** : खरबानक यहाँ का प्रसिद्ध पक्षी है, जिसे टिटहरी और बटान का भाई-बिरादरी कहना अनुचित न होगा। इसके बड़े सर, बड़ी-बड़ी पीली आँखों और लम्बी, मोटी तथा पीली टाँगों के कारण, इसे पहचानने में भूल नहीं हो सकती।

**रंग-रूप** : खरबानक के नर और मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। लम्बाई लगभग १६ इंच। शरीर का रंग राखीपन लिये हलका, जिस पर गाढ़ी भूरी लकीर और चिह्न। पीठ पर ये चित्तियाँ घनी और नीचे की ओर तितरी-बितरी। आँख पर होकर एक काली धारी सर के बगल तक आती है, जिसके ऊपर और नीचे की ओर एक-एक हलकी भूरी लकीर। डैने भूरे, जिन पर काली और सफेद धारियाँ। बड़े पंख कलछौंह-भूरे, दुम रखौली और नीचे का हिस्सा सफेद। गरदन और दुम के नीचे का भाग ललछौंह भूरा। सीने पर खड़ी-खड़ी गाढ़ी भूरी धारियाँ। आँख चटक पीली। चोंच काली, जड़ के पास पीली। टाँगें पीली।

**निवास** : यह हमारे देश का बारहमासी पक्षी है जो सारे देश में खुले और उजाड़ मैदानों में फैला हुआ है। इसकी एक जाति यूरोप के मध्य और दक्षिणी प्रदेशों में तथा दूसरी जाति उत्तरी और पूर्वी अफ्रीका में पायी जाती है। एशिया में भी, यह हमारे देश के अलावा कई प्रदेशों में पाया जाता है।

**विवरण**: खरबानक को ऐसे स्थान ज्यादा पसन्द होते हैं, जो बाग-बगीचों और जंगलों के निकट हों और जिनके पास-पड़ोस में सूखे ताल और नरकुल और सरपत आदि हों। यह एक-दम जमीन पर रहने वाला पक्षी है, जो अपना सारा समय खुले मैदानों में ही घूम कर बिताता है।

खरबानक की आँख काफी बड़ी होती है, जिसके सहारे ये दिन से ज्यादा, रात को अपनी खुराक की तलाश में चक्कर लगाना पसन्द करता है। यह दिन को भी दिखाई पड़ता है, लेकिन संख्या में कम होने के कारण जल्दी हमारी नजर तले नहीं पड़ता। इसके अलावा, अपनी मटमैली पोशाक के कारण भी यह जमीन पर ऐसा छिप जाता है कि इस पर तब तक हमारी निगाह नहीं पड़ती जब तक चीं-चीं करके भागना या उड़ना नहीं शुरू करता। खतरा निकट देख कर यह पर समेट कर जमीन पर लेट जाता है और अपनी गरदन ऊपर उठाकर, रह-रह कर इधर-उधर देखता है। लेकिन दबाव पड़ने पर इसको मजबूरन उड़ना भी पड़ता है। उस समय यह सतर्क करने की बोली बोलता है, लेकिन थोड़ी ही दूरी पर जाकर लहरा कर फिर जमीन पर उतर आता है और इधर-उधर दौड़ने लगता है।

यह वैसे तो अकेले या जोड़े में रहता है, लेकिन कभी-कभी यह आठ-दस पक्षी आस-पास भी दिखाई पड़ते हैं। इनका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े तथा छोटे-मोटे जीव-जन्तु हैं।

**घोंसला** : खरबानक के जोड़ा बाँधने का समय फरवरी से अगस्त तक है, जिसके बीच मादा किसी झाड़ी, घास या सरपत के बीच, जमीन पर ही छिछला-सा गढ़ा बना कर, हलके बादामी रंग के २ अंडे देती है, जिन पर गाढ़ी भूरी, जैतूनी भूरी या काली चित्तियाँ पड़ी होती हैं।

नाप में ये अंडे करीब १.९ × १.३९ इंच के होते हैं।

## ३११ बड़सिरी (Great Stone Plover : Esacus recurvirostris)

**पर्याय** : बड़ा खरबानक, दीर्घ शिर, पाणविक।

**पहचान** : बड़सिरी को बड़ा खरबानक भी कहा जाता है, क्योंकि यह उसका निकट सम्बन्धी ही नहीं, शक्ल-सूरत में भी उसके अनुरूप ही होता है।

**रंग-रूप** : बड़सिरी के नर-मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। लम्बाई लगभग २० इंच। ऊपरी भाग राखी या हलका सिलेटी, जिस पर गाढ़ी भूरी या सिलेटी धारियाँ। नीचे का भाग सफेद। आँख पर होकर एक-एक कलछौंह पट्टी और चोंच की जड़ के पास से भी एक कलछौंह धारी गुद्दी तक। डैने पर काली और सफेद पट्टियाँ और दुम तथा छोटे-बड़े पंख खरबानक-जैसे। डैने पर एक गाढ़ी चौड़ी पट्टी और छठा बड़ा पंख भूरे रंग का आँख पीली, चोंच पीली, जिसका सिरा काला। टाँगें गंदी पीली।

**निवास** : यह हमारे देश में प्रायः सभी बड़ी नदियों के किनारे पाया जाता है, लेकिन संख्या में कम होने के कारण जल्दी

हमारी निगाह तले नहीं पड़ता। इसे मोर की तरह भारतीय पक्षी कहना ठीक होगा, क्योंकि हमारे देश और बर्मा तथा लंका के अलावा, यह दूसरे देशों में नहीं पाया जाता।

**विवरण** : आबी यहाँ का बारहमासी पक्षी है जो कद में खरबानक से कुछ बड़ा, पर शकल-सूरत में भी बहुत कुछ उसी तरह का होता है। यह भी खरबानक की तरह, नदी के किनारे के मैदानों में अकेले या जोड़े में अपने भोजन की तलाश में इधर-उधर दौड़ता रहता है। नुकरी, टिटिहरी तथा बटान की तरह, यह भी जमीन पर काफी तेज दौड़ कर थोड़ी देर के लिए चुपचाप रुक जाता है और उसके बाद फिर दौड़ना शुरू कर देता है।

इसका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े हैं, लेकिन यह घोंघे, सीप, चूहे और मेंढक आदि भी बड़े मजे में खा लेता है।

**घोंसला** : बारहमासी पक्षी होने के कारण, आबी फरवरी से जुलाई के बीच में यहीं अंडे देता है। यह घोंसला बनाने का कष्ट नहीं उठाता और टिटहिरियों की तरह जमीन पर ही इसकी मादा छिछले गढ़े में अंडे दे देती है।

अंडे संख्या में प्रायः २ होते हैं। इनका रंग पत्थरी या संदली रहता है, जिस पर भूरी चित्तियाँ पड़ी होती हैं।

अंडे लगभग २.१५ × १.६ इंच के होते हैं।

## ३१२ नुकरी (Indian Courser : Cursorius Coromandelicus)

**पर्याय** : भारत क्षिप्रचला, सोरन गलरई।

**पहचान** : टिटहरी की जाति की छोटी-सी सफेद लम्बे टाँगों वाली चिड़िया जो पानी के किनारे दौड़ती रहती है। इसका सर और सीना कत्थई तथा पेट काला रहता है, आँखों पर सफेद और काली धारियाँ पड़ी रहती हैं जो इसके पहचानने में बहुत मदद देती हैं।

**रंग-रूप** : नुकरी के नर-मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। लम्बाई लगभग ९ इंच। शरीर का ऊपरी भाग राखीपन लिये भूरा और नीचे का सारा हिस्सा चटक नारंगी भूरा। लेकिन गरदन के नीचे यह नारंगी रंग हलका हो जाता है। सर का ऊपरी हिस्सा और गुद्दी गाढ़ी कत्थई और चोंच से लेकर गरदन तक एक पतली काली रेखा। जिसके कारण इसको पहचानने में धोखा नहीं हो सकता। इस काली रेखा के ऊपर एक सफेद चौड़ी पट्टी, जो आँख के ऊपर से होकर उसके समान्तर गरदन तक चली जाती है। पेट पर एक बड़ा काला चित्ता और ऊपरी दुम-ढकना सफेद। डैने के बाहरी पर और बड़े पंख भूरे और दुम के नीचे के पर सफेद, आँख-भूरी, चोंच काली और टाँगें सफेद।

**निवास** : नुकरी टिटहरी की निकट सम्बन्धी छोटी-सी चिड़िया है जो हमारे देश में आसाम को छोड़ कर सारे भारत में फैली हुई है। यह खरबानक की तरह सूखे और खुले मैदानों में फिरा करती है और संख्या में बहुत कम होने के कारण जल्दी हमारे निगाह-तले नहीं पड़ती। यह बारहमासी चिड़िया है जो अपने खाने-पीने की सुविधा को देख कर यहीं थोड़ा-बहुत स्थान परिवर्तन तो कर लेती है, लेकिन हमारा देश छोड़कर बाहर नहीं जाती।

**विवरण** : लम्बी टाँगों वाली नुकरी यहाँ की बारहमासी चिड़िया है, जो खुले मैदानों में अकेले या आठ-दस की संख्या में घूमती रहती है। इसे जंगल पसन्द नहीं और यह खेतों के आस-पास या खुले ऊसरी मैदानों में अपनी खुराक के लिए चक्कर लगाती रहती है। अन्य टिटिहरियों की तरह, यह भी बहुत तेज चलती है और थोड़ी-थोड़ी दूर पर कुछ देर के लिए एकदम चुप-चाप खड़ी होकर इधर-उधर की आहट लेने लगती है।

खतरा निकट देख कर यह उड़ने की अपेक्षा भागना ही ज्यादा पसन्द करती है और बड़ी तेजी से दौड़ कर किसी झाड़ी या सरपत आदि में छिप जाती है। छिपने का उपयुक्त स्थान न पाने पर ही, यह मजबूर होकर उड़ती है, लेकिन ज्यादा दूर न जाकर थोड़ी ही दूर में यह फिर जमीन पर उतर कर दौड़ना शुरू कर देती है। इसका मुख्य भोजन कीड़े-फतिंगे, जोराइयाँ और छोटे कटुए-घोंघे आदि हैं।

**घोंसला** : नुकरी के अंडा देने का समय मार्च से अगस्त तक है, जब मादा खुले मैदान में जमीन पर ही किसी छिछले गढ़े में २–३ अंडे देती है। इन अंडों का रंग संदली या पत्थरी होता है, जिन पर कत्थई, जैतूनी और काली चित्तियाँ और चिह्न पड़े होते हैं।

अंडे नाप में १.१९ × ०.९७ इंच के होते हैं।

## ३१३ कजरी (Eastern Grey Plover : Squatarola Squatarola)

**पर्याय** : बड़ा बटान, पूर्वीय धूसर, टिट्टिभ।

**पहचान** : कजरी बटान से मिलती-जुलती होती है जिसके शरीर का ऊपरी हिस्सा सफेद, राखी और काली धारियों और चित्तियों से भरा होता है। नीचे का भाग सफेद रहता है जिस पर सीने के पास हलकी पिलछौंह चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

**रंग-रूप** : इसका रंग-रूप बहुत कुछ बटान के अनुरूप होता है और इसके भी नर और मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। लम्बाई लगभग १२ इंच। शरीर का ऊपरी भाग सफेद या हलकी राखी और काली चित्तियों और धारियों से भरा, लेकिन

नीचे का भाग बटान की तरह सफेद। सीने पर हल्की पीली बिंदियों के चिह्न और दुम का रंग काला। डैने भूरे, जिनमें बड़े पंख काले और छोटे धुमैले। गरमियों में इसका पेट भी धुर काले रंग का हो जाता है, जो सीने से एक सफेद पट्टी से अलग रहता है। आँख गाढ़ी पिलछौंह या भूरी। चोंच काली। टाँगें काली।

**निवास**: कजरी को कहीं-कहीं बड़ा बटान भी कहते हैं। बटान की तरह, यह भी यहाँ का मौसमी पक्षी है, जो उत्तर-पूर्व की ओर से जाड़ों में यहाँ आकर, जाड़ा समाप्त होते-होते फिर यहाँ से वापस चला जाता है। जाड़ों में वैसे तो यह सारे देश में फैल जाता है, लेकिन संख्या में बहुत कम होने के कारण हमें जल्दी नहीं दिखाई पड़ता।

**विवरण**: कजरी बटान का निकट सम्बन्धी पक्षी है, जिसकी शक्ल-सूरत और रंग-रूप ही नहीं, बहुत कुछ आदतें भी उससे मिलती-जुलती हैं। कद में बटान से कुछ बड़ा होने पर भी संख्या में बहुत कम होने के कारण हमारी निगाह जल्दी इन पर नहीं पड़ती।

कजरी बटान की तरह बड़े झुंडों में नहीं रहती, और ये अक्सर अकेले जोड़े में या आठ-दस के छोटे गिरोहों में दिखाई पड़ती हैं। अन्य टिटिहरियों की तरह, कजरी भी मैदान में काफी तेज़ दौड़ लेती है और उसकी तरह ही चलते-चलते थोड़ी देर के लिए चुपचाप एक स्थान पर खड़ी हो जाती है। इसकी उड़ान तेज़ होती है और खतरा निकट देख कर, यह एक स्थान से उड़ कर लहराती हुई थोड़ी ही दूर पर फिर जाकर जमीन पर उतर पड़ती है। इसका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े और कटुए, घोंघे हैं।

**घोंसला**: यहाँ का मौसमी पक्षी होने के कारण बड़ा बटान यहाँ अंडे नहीं देता। लेकिन उत्तरी देशों में इसकी मादा जमीन पर किसी छिछले गड्ढे में अपने अंडे देती है, जो संख्या में चार होते हैं। इन अंडों का रंग हलका हरा होता है, जिन पर कत्थई घनी चित्तियाँ पड़ी होती हैं।

ये अंडे २.० × १.४ इंच के होते हैं।

## ३१४ जलमखानी (Bronze-Winged Jacana : Metopidius indicus)

**पर्याय**: जल पिपी, करोई, करटिया, कांस्य पक्ष जलकपोत, टीभू।

**पहचान**: जलमखानी जलमोर-जैसी छोटी-सी चिड़िया है जो पानी में कमल, कुँई तथा पानी के अन्य पौधों पर टहलती रहती है। इसके पंजे काफी लम्बे होते हैं और पीठ और दुम कत्थई रहती है, शरीर का बाकी हिस्सा कलछौंह रहता है।

**रंगरूप**: जलमखानी के नर-मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं लेकिन, मादा नर से कद में कुछ बड़ी होती है। नर की लम्बाई लगभग ११ इंच। सर, गरदन और पैर का अगला हिस्सा धुर काला जिसमें गहरे हरे रंग की झलक। गरदन के पिछले निचले हिस्से में बैंगनी चमक और आँखों के ऊपर एक सफेद धारी जिसके नीचे एक सफेद चित्ता। पीठ और डैने जैतूनी तामड़े रंग के और बड़े पंख काले। इनमें गाढ़े हरे रंग की झलक भी। पीठ का पिछला भाग, दुम और इसढकना कत्थई और पेट का पिछला हिस्सा कलछौंह भूरा।

जिस प्रकार जलमोर के डैने की हड्डी के सिरे पर तेज़ काँटा या खार निकल आता है, उसी प्रकार इनके डैने की हड्डी के सिरे पर भी एक पतली और चपटी तेज़ पत्ती-सी रहती है, जिससे ये आपस में लड़ते समय बहुत घातक वार करते हैं। आँख भूरी। टाँगें गन्दी हरी, उँगलियाँ काफी लम्बी। चोंच हरछौंह पीली, जड़ के पास लालछौंह और उसी से मिला माथे पर एक चौड़ा निलछौंह चकत्ता।

**निवास**: जलमखानी, जलमोर के समान, कमल आदि के पत्तों पर चक्कर लगाने वाली छोटी-सी चिड़िया है, जिसका शरीर जलमोर की तरह पतला न होकर, गठा हुआ और भरा-भरा होता है। यह देश के दक्षिणी भागों में अधिक पायी जाती है, जहाँ इसे प्रायः सभी स्थानों में देखा जा सकता है। उत्तर की ओर इसे पश्चिमी प्रदेशों में प्रायः देखना सम्भव नहीं, लेकिन उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग से लेकर आसाम तक जरूर दिखाई पड़ती है। लेकिन यह बारहमासी यहीं रहती है, हमारा देश छोड़कर बाहर नहीं जाती।

**विवरण**: जलमखानी को कमल और कुँई आदि से भरे जलाशयों में देखना कठिन नहीं होता और इसके कलछौंह शरीर तामड़े रंग की पीठ और खैरी दुम के कारण बड़ी आसानी से पहचाना जा सकता है।

यह जलमोर की तरह ढीठ नहीं होती और आहट के पाते ही पास के नरकुल या घास में घुस जाती है। यदि आस-पास में इसके छिपने के लिये कोई घास न हुई तो यह पानी के भीतर ही घुस जाती है और केवल गरदन पानी के बाहर निकाल कर चुपचाप खड़ी रहती है। जलमोर की तरह यह भी पानी के भीतर और ऊपर बड़ी खूबी से तैर लेती है, लेकिन कमल, कुँई और सिंगाड़े आदि से भरे जलाशयों में, जहाँ यह अपना अधिक समय बिताती है, पानी के भीतर डुबकी लगाने से ज्यादा आसान, पत्तों के ऊपर दौड़ना ही रहता है। और यह बताने की भी आवश्यकता नहीं कि अपनी लम्बी उँगलियों के कारण यह पानी पर के पतों पर ऐसी आसानी से दौड़ लगाती है, जैसे वह खुश्की पर दौड़ रही हो। इसका मुख्य भोजन पानी के कीड़े-मकोड़े और उनके अंडे-बच्चे और दाना-बीज और जड़ें आदि हैं।

**घोंसला**: जलमखानी हमारे यहाँ की बारहमासी चिड़िया

है जो जून से सितम्बर के बीच जोड़ा बाँध कर यहीं अंडे देती है। इसका घोंसला जलमोर की तरह बड़ा-सा होता है, जिसे ये घास-पात तथा सेवार से बनाती हैं। घोंसला गोल होता है और पानी के किनारे या कमल आदि के बीच में पानी में ही तैरता रहता है। इसके बीच में गढ़ा-सा होता है जिसमें मादा प्रायः ४ अंडे देती है। अंडे पत्थरी, भूरे या ललछौंह भूरे रंग के होते हैं और उन पर कत्थई, ललछौंह-भूरी या काली चित्तियाँ, धारियाँ और चित्ते पड़े होते हैं। इनके अंडों में जितनी चमक होती है, उतनी हमारे देश के किसी पक्षी के अंडों में नहीं होती।

नाप में ये अंडे करीब १.४७ × १.०३ इंच के होते हैं।

## ३१५ जलमोर (Pheasant–Tailed Jacana : Hydrophasianus Chirurgus)

**पर्याय** : पोही, पिहुआ, सुरदल, सुकदल, मीवा, जल मंजूर, चित्र बिलाई, असिपुच्छ जल-कपोत।

**पहचान** : जलमखानी-जैसी लम्बे पंजों वाली छोटी-सी भूरे रंग की चिड़िया, जो कमल तथा पानी में उगने वाले अन्य पौधों की पत्तियों पर घूमती-फिरती दिखलाई देती है। इसका ऊपरी हिस्सा भूरा, गरदन सफेद, जिस पर एक खड़ी भूरी रेखा और नीचे का भाग सफेद रहता है। गरमियों में नर की दुम के पीछे ६ इंच लम्बे पर निकल आते हैं।

**रंग-रूप** : जलमोर के नर-मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं, लेकिन इनकी पोशाक गरमियों में बदल जाती है। मादा कद में नर से कुछ बड़ी होती है। नर की लम्बाई १२ इंच। जाड़ों में इसके शरीर का ऊपरी भाग भूरा होता हैं और इसके सर तथा ऊपरी गरदन पर सफेद लकीरें पड़ी रहती हैं। आँख के ऊपर भी सफेद लकीर और वहीं से एक भूरी पीली पट्टी गरदन तक। आँख के पास के बगल तक एक कलछौंह पट्टी जो सीने की ओर जाते-जाते चौड़ी हो जाती है। नीचे का कुल हिस्सा और दुम के बाहरी पंख सफेद। दुम के बीच के पर भूरे और डैने के पर हलकी और भूरी पट्टियों से भरे। दुम के दोनों बगल एक-एक सफेद चित्ता और डैने के बाहरी पंखों का रंग काला।

गरमियों में सर और गरदन का निचला भाग सफेद हो जाता है और गुद्दी से गरदन का ऊपरी हिस्सा सुनहला पीला। ऊपर का बाकी और नीचे का कुल हिस्सा गाढ़ा कत्थई और दोनों बगल के हिस्से सफेद हो जाते हैं। दुम कलछौंह हो जाती है और नर की दुम पर ६ इंच लम्बे पंख निकल आते हैं, जिससे वह बहुत भड़कीला लगने लगता है। आँख भूरी। टाँगें गंदी भूरी। चोंच हरछौंह पीली।

**निवास** : जलमोर को यह सुन्दर नाम उसके सुन्दर पंखों और लम्बी दुम के कारण ही मिला है। यह छोटी-सी रंगीन चिड़िया अपनी लम्बी उँगलियों के कारण, कमल के पत्तों पुरइन पर जलमखानी की तरह घूमती-फिरती रहती है।

हमारे देश में यह प्रायः सभी स्थानों में पायी जाती है और कश्मीर आदि हिमालय के प्रदेशों में इसे ५–६ हजार फुट तक की ऊँचाई पर देखा जा सकता है। यह कमल, कुँई, पुरइन और सिंघाड़े आदि से भरे जलाशयों में ही दिखाई पड़ती है, जिनकी पत्तियों पर चक कर लगाने में इसे सहूलियत हो।

**विवरण** : जलमोर बहुत सुन्दर, छोटा-सा पक्षी है, जिसे हम जलाशयों के कमल आदि के चौड़े पत्तों पर घूमते-फिरते देख सकते हैं। यह बारहमासी पक्षी है, जो पानी की सुविधानुसार यहीं थोड़ा-बहुत स्थान-परिवर्तन भले ही कर ले, लेकिन बाहर जाना पसन्द नहीं करता है। यह कमल और पुरइन से भरे हुए तालाबों को पसन्द करता है, साथ ही खुले तालाबों से भी इसे परहेज नहीं है।

इसके डैने के मोड़ पर एक मजबूत काँटा-सा रहता है और दुम के नीचे के पर गरमियों में बढ़ कर काफी लम्बे और नोकीले हो जाते हैं, जिससे यह बहुत भड़कीला लगने लगता है। यह जलमखानी की तरह बहुत शरमीला नहीं होता, बल्कि इसे बहुत निडर और ढीठ पक्षी कह सकते हैं।

जलमोर का मुख्य भोजन छोटे-छोटे कटुए, घोंघे और पानी के कीड़े-मकोड़े तथा उनके अंडे-बच्चे हैं। साथ ही, घास-पात भी खूब मजे से खाता है। इसकी बोली बिल्लियों से बहुत कुछ मिलती-जुलती है। इसी कारण कहीं-कहीं इसे चित्र-बिलाई भी कहते हैं। यह पानी में तैर लेता है।

**घोंसला** : जलमोर के जोड़ा बाँधने और अंडा देने का समय जून से अगस्त तक है, जब यह अपना घास-पात का बड़ा-सा और भद्दा-सा घोंसला बनाता है। यह घोंसला किसी टापू या धान के खेतों और कभी-कभी पानी में तैरता रहता है। मादा समय आने पर इसमें प्रायः ४ अंडे देती है और इनका रंग गाढ़ा तामड़ा जैसा होता है और इन पर हरछौंह या ललछौंह झलक होती है।

नाप में यह लगभग १.४६ × १.१२ इंच के होते हैं।

## ३१६ टिटिहरी (Red-Wattled Lapwing : Lobivanellus indicus)

**पर्याय** : टिटिटम, शरारी, मणिमुख टिटिटमक।

**पहचान** : टिटिहरी यहाँ की बहुत प्रसिद्ध चिड़िया है, जिसे नदी और तालाबों के किनारे देखना कठिन नहीं। यह अपनी

पीली टाँगों तथा चोंच के ऊपर उभरे हुए लाल रंग के मांस के लोथड़े के कारण बड़ी आसानी से पहचान ली जाती है।

**रंग-रूप** : टिटिहरी के नर-मादा का रंग-रूप एक-जैसा होता है। लम्बाई लगभग १३ इंच। सर, गरदन और सीने का ऊपरी हिस्सा काला लेकिन आँख के पीछे से एक सफेद चौड़ी पट्टी सर के दोनों बगली हिस्सों के बीच से होकर सीने के बगल से होती हुई पेट की सफेदी में जा मिलती है। पीठ का रंग भूरा जिसमें एक प्रकार की हरछौंह तामड़ेपन की झलक। डैने काले जिन पर एक सफेद धारी। पीठ के पिछले भाग के दोनों बगली हिस्से, दुमगज़ा तथा ऊपरी दुमढकना सफेद। दुम सफेद जिसके सिरे के पास एक चौड़ी काली पट्टी और परों के सिरे सफेद। ऊपरी सीने को छोड़कर नीचे का सारा हिस्सा सफेद। आँख के आगे का बढ़ा हुआ गोश्त का लोथड़ा लाल रंग का। आँख ललछौंह भूरी। चोंच लाल, जिसका सिरा काला। टाँगें चटक पीली। बच्चों का सर भूरा और गला सफेद होता है।

**निवास** : टिटिहरी बहुत परिचित, बारहमासी चिड़िया है, जिससे हमारी नदियों और जलाशयों के किनारे कभी खाली नहीं रहते। यह सारे देश में फैली हुई है और हिमालय में भी ६ हजार फुट तक की ऊँचाई तक देखी जा सकती है। हमारे देश के अलावा, पूर्व की ओर ये सुमात्रा, जावा आदि द्वीपों तक और पश्चिम की ओर पाकिस्तान, अफगानिस्तान तथा ईरान तक फैली हुई है।

**विवरण** : टिटिहरी पानी के किनारे-किनारे बहुत तेजी से इधर-उधर अपनी खुराक की तलाश में दौड़ती रहती है और थोड़ी दूर पर एक जगह कुछ देर तक रुककर फिर तेजी से भाग-दौड़ करती है। यह बहुत ढीठ पक्षी है और इसके निकट तक पहुँचना कठिन नहीं होता।

**घोंसला** : टिटिहरी के जोड़ा बाँधने और अंडा देने का समय मार्च से अगस्त तक है, जब मादा रेत या खुले मैदानों में किसी छिछले गढ़े में ४ अंडे देती है, जो पत्थरी या राखीपन लिये हल्के भूरे होते हैं और जिन पर गाढ़ी भूरी कलछौंह घनी चित्तियाँ पड़ी होती हैं।

अंडे नाप में करीब १.६५ × १.२ इंच के होते हैं।

## ३१७. गंगटिटी (Spur-Winged Plover : Hoplopterus duvaucelii)

**पर्याय** : छोटी टिटिहरी, अटी, कंटपक्ष टिटिट्भ।

**पहचान** : गंगा आदि नदियों के किनारे रहने वाली टिटिहरी जिससे हम सभी परिचित हैं। इसका ऊपरी भाग हल्का भूरा और नीचे का सफेद रहता है। सीने पर एक काली पट्टी होती है जो कंधे तक चली जाती है। ये अक्सर जोड़े में रहती है।

**रंग-रूप** : गंगटिटी के नर-मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। लम्बाई लगभग १२ इंच। शरीर का ऊपरी भाग हल्का भूरा और निचला सफेद। सीने पर एक चौड़ी काली पट्टी जो कन्धे तक चली जाती है। डैने भूरे, जिन पर एक काली पट्टी। दुम भी भूरी, जिसके सिरे काले। चोटी और चेहरा धुमैला तथा बड़े पंख काले। सर पर की लम्बी चोटी और डैने के मोड़ पर एक सींग की बनावट का खार। आँख गाढ़ी भूरी। चोंच काली। टाँगें काली।

**निवास** : गंगटिटी को यह नाम शायद इसलिए मिला है कि यह गंगा आदि बड़ी नदियों के किनारे अक्सर देखी जाती है।

हमारे देश में यह गंगा के पूर्व से आसाम तक के हिस्से में पायी जाती है और दक्षिण की ओर इसे गोदावरी के आगे नहीं देखा जा सकता। हमारे देश से बाहर यह बर्मा, दक्षिण-पूर्व यूरोप, स्याम, अफ्रीका और चीन तक फैली हुई है। इसकी दूसरी जातियाँ भी हैं, जो सारे संसार में पायी जाती है। यह यहाँ की बारहमासी चिड़िया है, जो यहीं थोड़ा स्थान परिवर्तन भले ही कर ले, पर यहाँ से बाहर नहीं जाती।

**विवरण** : गगटिटी को कहीं-कहीं अटी भी कहा जाता है। यह बड़ी नदियों के आस-पास रहने वाली यहाँ की प्रसिद्ध चोटीदार टिटिहरी है, जो बारहों महीने हमारे देश में रहती है, यहाँ से बाहर नहीं जाती। अपने लम्बे और मजबूत डैनों के सहारे यह बहुत लम्बी उड़ान कर लेती है और संसार के प्रसिद्ध उड़ाकू पक्षियों का मुकाबला करने में पीछे नहीं रहती। यह अक्सर जोड़े में दिखाई पड़ती है और हवा में उड़ने के अलावा जमीन पर भी अन्य टिटिहरियों की तरह बहुत तेज दौड़ लेती है।

अटी के डैनों पर एक काँटा या खार रहता है, लेकिन उसका क्या उपयोग है, यह नहीं जाना जा सकता। इसका मुख्य भोजन अन्य टिटिहरियों की तरह कीड़े-मकोड़े तथा घोंघे-वगैरह हैं। इसकी बोली भी टिटिहरी-जैसी ही होती है।

**घोंसला** : अटी के अंडा देने का समय भारत के उत्तरी भागों में मार्च से अप्रैल तक है, जब इसकी मादा रेत या खुले मैदान में जमीन पर ही मामूली, छिछला-सा घोंसला बनाकर अंडे देती है और ये अंडे संख्या में ४ होते हैं। इनका रंग हलका पीला होता है जिस पर भूरी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

नाप में ये अंडे करीब १.४५ × १.०७ इंच के होते हैं।

## ३१८ जरदी (Yellow-Wattled Lapwing Lobipluvia Malabarica)

**पर्याय** : गलरई, जिघीरी, पीतमुख, टिट्टिभिक।

**पहचान** : भूरे रंग की टिटिहरी जिसका सर काला, पेट

सफेद और टाँगें पीली होती हैं। चेहरे के पास की उभरी हुई खाल पीली रहती है। इसे खुले मैदानों में देखना कठिन नहीं होता लेकिन यह एकदम रेगिस्तानी स्थानों पर नहीं मिलती।

**रंग-रूप** : जरदी के भी नर-मादा एक रंग-रूप के होते हैं। लम्बाई लगभग १०॥ इंच। सर, ठोढ़ी, गरदन का रंग काला। आँख के पीछे एक सफेद पट्टी, सर के पीछे होती हुई दूसरी आँख तक पहुँच जाती है। सर का बाकी हिस्सा, गरदन तथा सीने का ऊपरी भाग भूरा और पखनियाँ तथा छोटे पंख भी इसी रंग के। बड़े पंख काले और उनके कुछ बाहरी पंखों और पखनियों का हिस्सा सफेद जिससे डैने के ऊपर एक स्पष्ट सफेद पट्टी-सी दीख पड़ती है। दुमगज्जा सफेद और दुम भूरापन लिये सफेद, जिसके सिरे के पास एक काली पट्टी। यह पट्टी दुम के बाहरी परों की ओर जाते-जाते धूमिल हो जाती है। सीने से लेकर दुम के नीचे तक का सारा भाग सफेद। टिटिहरी की तरह, इसकी चोंच की जड़ के पास भी मांस का एक लोथड़ा-सा उभरा रहता है, जो लाल न रहकर पीला होता है। आँख हलकी पीली। चोंच पीली, जिसका सिरा काला। टाँगें पीली।

**निवास** : जरदी टिटिहरी की निकट सम्बन्धी ही नहीं, उससे इतनी मिलती-जुलती हुई चिड़िया है कि यदि दोनों की चोंच की जड़ के पास के उठे हुए मांस के रंग में फर्क न हो, तो दोनों को पहचानना कठिन हो जाए। यह भी हमारे देश का बारह-मासी पक्षी है जो टिटिहरी की तरह ही सारे देश में जलाशयों के किनारे देखा जा सकता है। यह एकदम भारतीय पक्षी है जो हमारे देश के अलावा और दूसरे देशों में नहीं पाया जाता।

**विवरण** : जरदी को यह नाम उसकी पीली टाँगों और चोंच के आगे उठे हुए पीले मांस के लोथड़े के कारण मिला है। इसकी करीब-करीब सब आदतें टिटिहरी से मिलती-जुलती हैं और यह भी पानी के किनारे इधर-उधर कीड़े-फतिंगे तलाश करने में दौड़ा करता है। दौड़ते-दौड़ते थोड़ी देर के लिए रुक जाना और फिर दौड़ने लगना, इस वंश के सभी पक्षियों की खासियत है। यह भी उसमें किसी से पीछे नहीं है।

जरदी प्रायः अकेली या जोड़े में दिखाई पड़ती है, लेकिन कभी-कभी एक जगह दस-बारह पक्षी एक साथ कीड़े-मकोड़े पकड़ते भी दिखाई पड़ जाते हैं। इसका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े और घोंघे-कटुए हैं। यह बहुत ही ढीठ पक्षी है, जो आदमियों को अपने निकट तो जाने देती है, लेकिन बहुत पास जाने पर यह 'टी वी-टी वी' की आवाज तेजी से करके थोड़ी दूर उड़ कर फिर जमीन पर उतर पड़ता है।

**घोंसला** : जरदी के अंडा देने का समय मार्च से जून तक है, जब मादा किसी खुले मैदान या जुते हुए खेत के बीच, जमीन पर ही किसी छिछले गढ़े में अपने अंडे देती है। कभी-कभी यह इस गढ़े के किनारे को मिट्टी या छोटे-छोटे कंकड़ों से ऊँचा भी कर देती है। अंडों की संख्या प्रायः ४ होती है, जो हलके हरे पत्थरी रंग के होते हैं और जिन पर गाढ़ी भूरी, जैतूनी भूरी और बैंगनी घनी चित्तियाँ और चिह्न पड़े रहते हैं।

अंडे करीब १.४५ × १.०७ इंच के होते हैं।

## ३१९ जीरा (Little Ringed Plover : Charadrius Dubius)

**पर्याय** : रेवा-लघु सर्षपी, टिट्टिभ।

**पहचान** : छोटी-सी टिटिहरी, जिसका ऊपरी हिस्सा भूरा और नीचे का सफेद रहता है। एक काली पट्टी आँख के ऊपर से सर के बगल तक चली जाती है। रेतीले और पानी के निकट के पथरीले स्थानों पर आसानी से दिखाई पड़ती है।

**रंग-रूप** : जीरा के नर मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। लम्बाई लगभग ६॥ इंच। शरीर का ऊपरी हिस्सा भूरा और नीचे का सफेद। माथा भी सफेद, जहाँ से एक काली पट्टी आँख के ऊपर होती हुई सर के बगल तक चली जाती है। गले में एक काला कंठा। डैने गाढ़े भूरे, जिसमें बाहरी पंख कलछौंह और भीतरी पंखों के सिरे सफेद। दुम भूरी, जिसके बीच में दो परों को छोड़कर बाकी सब परों के सिरे सफेद। आँख गाढ़ी भूरी, आँख का छल्ला पीला। चोंच काली, जड़ के पास पीली। टाँगें पीली।

**निवास** : जीरा को दक्षिण भारत की ओर 'रेवा' भी कहते हैं। यह बटान परिवार का सबसे छोटा पक्षी है, जो अपने गले के कंठे के कारण बड़ी आसानी से पहचाना जाता है।

यह प्रायः सभी जगह नदियों और झीलों के किनारे दिखाई पड़ते हैं और पहाड़ों पर भी तीन-चार हजार फुट की ऊँचाई तक देखे जा सकते हैं। इन्हें मौसमी पक्षी कहना ही ठीक रहेगा, क्योंकि ये हमारे यहाँ अगस्त तक आ जाते हैं और लगभग नौ महीने यहाँ रहकर अप्रैल मई तक फिर पश्चिम की ओर लौट जाते हैं। अंडा देने के समय तक ये दक्षिण भारत की ओर रहते हैं। हमारे देश से बाहर, ये यूरोप, उत्तर पश्चिमी अफ्रीका और एशिया के उत्तरी भागों में फैले हुए हैं।

**विवरण**: जीरा झुंड में रहने वाली छोटी-सी चिड़िया है, जो नदी और तालाबों के किनारे अक्सर दिखाई पड़ती है। इसके छोटे-छोटे झुंड प्रायः बलुही या पथरीली जमीन के आस-पास रहना पसन्द करते हैं और खतरा निकट देखकर जमीन से थोड़ी ही ऊँचाई पर बड़ी तेजी से कुछ देर तक उड़ने के बाद दूसरी जगह जा बैठती हैं। उड़ते समय ये सीटी-जैसी तेज बोली बोलते हैं और इनकी उड़ान इतनी तेज और लहराती हुई होती है कि उस पर निशाना लगाना कठिन होता है। कभी-कभी ये जोड़ों में भी दिखाई देते हैं और रेत पर कीड़े-मकोड़ों के लिए बड़ी तेजी

से दौड़ते रहते हैं। दौड़ते समय ये थोड़ी-थोड़ी दूर पर रुक जाते हैं और फिर तेजी से दौड़ने लगते हैं। इनकी मुख्य खुराक कीड़े-मकोड़े हैं, जिसके लिये ये कभी-कभी अपने पंजों से कीचड़ को तेजी से मथते हैं, जिससे कीड़े ऊपर आ जाते हैं।

अंडा देने के लिए सभी टिटिहरियाँ प्रायः किसी टापू या सुरक्षित मैदानों को ही चुनती हैं, लेकिन खुले मैदान या रेत में हमेशा दुश्मनों का खतरा बना रहता है। इसीलिए जब कोई आदमी या जानवर इनके अंडों के निकट पहुँचता है तो वे सब आसमान में उड़ कर इतना शोर मचाती है कि वहाँ से भागना ही पड़ता है। उस समय वे सर के इतने पास से उड़ती है कि डर लगता है कि कहीं सर पर चोंच न मार दें।

उन्होंने दुश्मनों को वहाँ से दूर हटाने के लिए एक और तरकीब ढूँढ़ निकाली है। जब किसी को अपने अंडे के निकट जाते देखती हैं तो कभी-कभी अपना एक पंख झुका कर उसके साथ से इस प्रकार लँगड़ाती हुई चलती हैं कि जैसे घायल हो गयी हों। दुश्मन उन्हें घायल समझ कर पकड़ने के लिए उनकी ओर बढ़ता है तो ये धीरे-धीरे उसे अंडों से दूर ले जाती हैं और जब ये देखती हैं कि उनके अंडे काफी पीछे रह गये हैं तो पंख समेट कर या तो भाग जाती हैं या हवा में उड़ जाती हैं। इस प्रकार से चकमा देने में जीरा अन्य सब टिटिहरियों से उस्ताद है। इसे कुत्तों तक को बहका कर दूर ले जाते देखा गया है।

**घोंसला** : जीरा वैसे तो यहाँ के मौसमी पक्षी हैं, लेकिन इनमें से काफी पक्षी प्रति वर्ष दक्षिण भारत की ओर रह जाते हैं और यहीं अंडे देते हैं। इनके अंडा देने का समय मार्च से मई तक है, जब मादा किसी जलाशय के किनारे जमीन पर ही छिछला-सा गड्ढा बना कर ४ अंडे देती है, जिन्हें नर-मादा दोनों बारी-बारी से सेते हैं।

इनके अंडों का रंग पत्थरी या राखी होता है जिस पर गाढ़ी भूरी चित्तियाँ होती हैं।

अंडे लगभग १.१४ × ०.८४ इंच के होते हैं।

## ३२० बटान (Golden Plover: Pluvialis dominica)

**पर्याय** : सोन टिटी, स्वर्ण टिट्टिभ।

**पहचान** : बटान टिटिहरी की एक जाति है, जो पानी के आस-पास ही रहता है। इसकी उड़ान तेज और फुरतीली होती है और उड़ते समय ये सीटीनुमा बोली बोलते हैं। इनका ऊपरी भाग पीली और काली लकीरों से भरा होता है लेकिन नीचे का हिस्सा सफेद रहता है। सर और सीने पर काली पट्टी रहती है जिसको गले का सफेद गोल कंठा काटता है।

**रंग-रूप** : बटान चितले रंग का सुन्दर पक्षी है जिसके नर मादा एक ही रंग-रूप के होते है; नर की लम्बाई लगभग ९॥ इंच। शरीर का ऊपरी भाग पीली और काली लकीरों से भरा, लेकिन नीचे का हिस्सा एकदम सफेद। सीने पर हल्की धारियाँ। गरमियों में पेट का काफी हिस्सा काला हो जाता है। डैने भूरे, जिसमें बड़े पंख काले और छोटे पंख धूमैले। दुम काली। आँख पिलछौंह गाढ़ी भूरी। चोंच काली। टाँगे काली।

**निवास** : बटान हमारे देश का मौसमी पक्षी है, जो प्रति वर्ष जाड़े के प्रारम्भ में अरब से आ कर, जाड़ा समाप्त होते-होते फिर उसी ओर लौट जाता है। हमारे देश से बाहर, ये दक्षिण में आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड तक और उत्तर में साइबेरिया तक फैले हैं।

**विवरण** : बटान चितले रंग का पक्षी है, जो खुराक की तलाश में बड़ी-बड़ी नदियों और जलाशयों के किनारे इधर-उधर दौड़ता दिखाई पड़ता है।

ये मौसमी पक्षी जाड़े के शुरू होते ही पूर्व की ओर से आने लगते हैं और जाड़े भर काफी संख्या में रहते हैं। प्रायः बड़े-छोटे झुंडों में इन्हें जलाशयों के किनारे अथवा दलदलों में बड़ी आसानी से देखा जा सकता है। इनका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े और छोटे-छोटे कटुए-घोंघे आदि हैं।

**घोंसला** : बटान मौसमी पक्षी हैं, जो जाड़ों में यहाँ से वापस चले जाते हैं और वहीं मादा जमीन पर किसी छिछले गढ़े में अंडे देती है। अंडों का रंग पत्थरी होता है जिस पर घनी काली चित्तियाँ पड़ी होती हैं।

नाप में ये अंडे १.९ × १.३ इंच के होते हैं।

## ३२१ लगोड़ (Black-Winged Stilt : Himantopus Himantopus)

**पर्याय** : टींघुर, ललगोन, ललटेंगी, गजपाँव, टिलुआ, लमटँगा, लालगोड़ी, कालपक्ष-प्रवालपाद।

**पहचान** : पतली-सी काले और सफेद रंग की चिड़िया जिसकी चोंच सीधी और लम्बी होती है और टाँगें लम्बी और लाल रंग की रहती हैं। यह छिछले पानी में या पानी के किनारे घूमती-फिरती दिखाई पड़ती है।

**रंग-रूप** : सूजी की तरह, लमटँगा भी चितकबरा पक्षी है, जिसके नर-मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं लेकिन नर की पीठ पर एक प्रकार की हरी झलक आ जाती है। वैसे इसका सर और गरदन का ऊपरी हिस्सा और पीठ से लेकर दुम तक का भाग कलछौंह भूरा, नीचे का सारा हिस्सा धुर सफेद और डैने कलछौंह कत्थई होते हैं। चोंच लम्बी और सीधी रहती है। नर की लम्बाई लगभग १५ इंच।

**निवास** : लमगोड़ा या लमटँगा लम्बी टाँगों वाली चिड़िया है, जैसा उसके नाम से ही स्पष्ट है। लेकिन इसे कहीं-कहीं टींघुर या टिलुआ और बंगाल की ओर ललगोन या ललठेंगी भी कहते हैं।

यह उत्तर भारत का बारहमासी पक्षी है जो जाड़े में सारे देश के जलाशयों और दलदली हिस्सों में फैल जाता है और वहीं अंडे देता है। यह यूरोप, अफ्रीका, तथा एशिया के उत्तरी प्रदेशों में भी काफी संख्या में पाया जाता है।

**विवरण** : लमगोड़ा हमारे यहाँ का प्रसिद्ध पक्षी है, जो अपनी लम्बी लाल टाँगों के कारण दूर ही से पहचान लिया जाता है। हमारे यहाँ पनलवा जाति की तीन चिड़ियाँ आती है जिनमें से एक लमटँगा है, शेष दो सूजी और सामुकभंगा है। बाकी पनलेवे प्रायः भूरे या चितले भूरे होते हैं।

लमगोड़ा प्रायः दलदलों के पास या छिछले जलाशयों और नदियों के किनारे रहने वाला पक्षी है, जो कभी जोड़े में और कभी झुंड में दिखाई पड़ता है।

इसका मुख्य भोजन कीचड़ के कीड़े और घोंघे कटुए हैं, लेकिन ये पानी के दूसरे जीवों को भी खा लेता है। खुश्की पर दौड़ाने के अलावा, यह पानी में भी बड़ी खूबी से तैर लेता है, लेकिन इसकी उड़ान तेज नहीं होती।

**घोंसला** : लमगोड़ा के जोड़ा बाँधने का समय अप्रैल से अगस्त तक है, जब सैकड़ों पक्षी एक ही साथ किसी स्थान पर घोंसला बनाते हैं। इनके घोंसले किसी जलाशय के किनारे जमीन पर छिछले गढ़े की शक्ल के होते हैं, जिसमें मादा थोड़ी-सी घास-फूस रख कर अंडे देती है। अंडों की संख्या ३ या ४ तक होती है। इनका रंग भूरा होता है, जिस पर काली चित्तियाँ होती हैं।

अंडे लगभग १.६४ × १.१३ इंच के होते हैं।

## ३२२ सामुकभंगा (Oyester Catcher : Haematopus ostralegus)

**पर्याय** : दरिया गज-पांज, शंखिनी।

**पहचान** : पानी के किनारे रहने वाला चितकबरा पक्षी जिसकी पीठ काली और नीचे का भाग सफेद रहता है। चोंच लम्बी और सीधी तथा टाँगें लम्बी और ललछौंह रहती हैं।

**रंग-रूप** : सामुकभंगा भी सूजी और लमटँगा की ही तरह चितकबरा पक्षी है, जिसके नर और मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। लम्बाई लगभग १६ इंच। सूजी और लमटँगा में तो स्याही कम और सफेदी ज्यादा रहती है, पर सामुकभंगा में सफेदी कम और स्याही ज्यादा होती है। इसका सारा शरीर काला होता है, जिसमें पेट, डैने का निचला हिस्सा और दुम के पर सफेद होते हैं। बच्चों के गले पर भी एक सफेद कंठा रहता है। चोंच लम्बी, सीधी और मजबूत होती है। चोंच-नारंगी लाल। टाँगें ललछौंह।

**निवास** : सामुकभंगा को यह नाम उसके घोंघे और सूती के मुख्य भोजन के कारण मिला है। यह मौसमी पक्षी है, जो जाड़ों में बाहर से आकर, पश्चिमी समुद्र-तट पर अधिक और पूर्वी समुद्री-तट पर कम, फैल जाता है। इसे जाड़ों में काठियावाड़ के समुद्री तट पर काफी संख्या में देखा जा सकता है। भारत से बाहर यह यूरोप और एशिया के कुछ अन्य देशों में भी काफी संख्या में मिलता है।

**विवरण** : सामुकभंगा सुन्दर-सा चितकबरा पक्षी है, जो अपना अधिक समय समुद्र-तटों पर ही बिताता है। इसी कारण यह ताल-तलैयों और नदी के किनारे नहीं दिखाई पड़ता।

यह अकेला या झुंड में रहने वाला पक्षी है, जो चट्टान-भरे समुद्र-तट को अधिक पसन्द करता है। इसका भोजन सूंती, कटुए, और घोंघे आदि हैं, जिन्हें यह अपनी मजबूत चोंच से बड़ी आसानी से तोड़ डालता है।

सामुकभंगा की उड़ान भी मामूली ही होती है और बोली भी अन्य पनलवों की तरह हलकी सीटीनुमा होती है, जो उड़ते समय अक्सर सुनाई पड़ती है।

**घोंसला** : मौसमी पक्षी होने के कारण, सामुकभंगा हमारे देश में अंडे नहीं देता, लेकिन यूरोप के उत्तरी भागों में और कैस्पियन समुद्र के किनारे ये काफी संख्या में एकत्र होकर जमीन पर पत्थर के बीच अंडे देते हैं जो संख्या में २ से ४ तक होते हैं।

इन अंडों का रंग हलका भूरा होता है, जिस पर गहरी भूरी चित्तियाँ पड़ी होती हैं।

नाप में ये अंडे करीब २.२ × १.५ इंच के होते हैं।

## ३२३ सूजी (Avocet : Recurvirostra avocetta)

**पर्याय** : कुसया चहा, कषीका।

**पहचान** : सूजी पानी के किनारे रहने वाला चितकबरा और पतला-सा पक्षी है जिसका सारा शरीर सफेद और सर तथा गरदन का ऊपरी हिस्सा काला रहता है। इसकी टाँगें लम्बी और सिलेटी रहती हैं और इसकी लम्बी चोंच पतली और ऊपर की ओर झुकी रहती है जिससे इसको आसानी से पहचाना जा सकता है।

**रंग-रूप** : सूजी चितकबरी-सी चिड़िया है, जिनके नर और मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। लम्बाई लगभग १८ इंच। सारा शरीर सफेद लेकिन सर और गरदन का ऊपरी भाग काला, दोनों कंधों पर एक-एक काले चित्ते तथा डैनों का कुछ

हिस्सा काला। चोंच लम्बी, पतली और ऊपर की ओर झुकी काले रंग की। टाँगें सिलेटी-नीली और अगले अँगूठे आपस में एक झिल्ली से जुड़े हुए।

**निवास :** सूजी या कुसया चहा भी मौसमी चिड़िया है, जो जाड़ों में दूसरे देशों से यहाँ आकर सारे भारतवर्ष में फैल जाती है। यह देश के उत्तरी भागों में अधिक दिखाई पड़ती है और दक्षिण भारत में थोड़ी दिखाई पड़ती है। आसाम की ओर तो यह दिखाई ही नहीं पड़ती। अपनी चितली पोशाक और पतली तथा टेढ़ी चोंच के कारण इसे पनलवों से भिन्न पहचानने में जरा भी कठिनाई नहीं होती।

**विवरण :** सूजी को यह सुन्दर नाम उसकी पतली-नोकीली और ऊपर की ओर उठी हुई चोंच के कारण मिला है। यह चितली चिड़िया जाड़ों में सारे देश के ताल-तलैयों, नदियों, झीलों और दलदलों में फैल जाती है। यही नहीं, बल्कि समुद्र के किनारे भी देखी जा सकती है। यह प्रायः छोटे-छोटे झुंडों में रहती हैं। पतले छरहरे बदन तथा लम्बी टाँगों के कारण यह जमीन पर भी बड़ी तेजी से चल लेती है और जलीय पक्षी होने के कारण तैरने में भी उस्ताद होती है। घायल होने पर जमीन से ज्यादा पानी की ही और जाना पसन्द करती है।

सूजी का मुख्य भोजन पानी के कीड़े-मकोड़े तथा कटुए-घोंघे आदि हैं, जिन्हें पकड़ने के लिए यह अपनी लम्बी चोंच को कीचड़ में डाल कर आगे-पीछे फैलाकर अर्धगोलाकार घुमाती है। ऐसा करने से कीचड़ में के कीड़े ऊपर आ जाते हैं और तब इसे उन्हें पकड़ने में आसानी हो जाती है।

**घोंसला :** मौसमी चिड़िया होने के कारण, सूजी यहाँ घोंसला नहीं बनाती, लेकिन विदेशों में यह अन्य पनलवों और टिटिहरियों की तरह, खुले मैदानों में या रेत पर ३-४ अंडे देती है। ये अंडे हल्के भूरे रंग के होते हैं, जिन पर गाढ़ी भूरी चित्तियाँ भी पड़ी होती हैं।

अंडे नाप में २.० × १.४ इंच के होते हैं।

## ३२४ करलू (Curlew : Numenius arquata)

**पर्याय :** गोंच, छोपा, गुलिंदा, नक्त कुररी।

**पहचान :** करलू छिछले पानी तथा कीचड़ वाले स्थानों में रहने वाला पक्षी है जिसका ऊपरी भाग भूरी और कत्थई धारियों और चिह्नों से भरा रहता है। नीचे का हिस्सा सफेद रहता है। चोंच लम्बी और नीचे की ओर झुकी रहती है जिससे इसको पहचानना कठिन नहीं होता।

**रंग-रूप :** करलू की लम्बाई लगभग २४ इंच और नर-मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं, लेकिन कद में मादा नर से कुछ बड़ी होती है। ऊपरी भाग भूरी और कत्थई धारियों तथा चिह्नों से भरा और नीचे का सफेद। थोड़े से ऊपरी पर बीच में हलके भूरे और किनारे पर गहरे भूरे और कुछ परों पर हलकी भूरी या कत्थई धारियाँ और बिंदियाँ। इन सब के कारण, इनकी पीठ चितली-चितली दीख पड़ती है। टाँगें और गरदन लम्बी। चोंच भी काफी लम्बी और नीचे की ओर तलवार-सी झुकी। पैर की उंगलियाँ जड़ के पास थोड़ी दूर तक एक प्रकार की झिल्ली से आपस में जुड़ी होती हैं। चोंच काली, निचली चोंच जड़ के पास हलकी गुलाबी। टाँगें सिलेटी।

**निवास :** करलू के कई नाम हैं, जिनमें गुलिंदा, गोर और गोंच मुख्य हैं। यह बहुत प्रसिद्ध मौसमी पक्षी है, जो अपनी नीचे की ओर झुकी हुई, टेढ़ी तथा लम्बी चोंच के कारण अपने भाई-बन्धुओं से बिल्कुल अलग है।

यह भी जाड़ों में हमारे देश में आकर, जाड़ा समाप्त होते-होते यहाँ से वापस चला जाता है। सामुकमंगा की ही तरह, यह समुद्री तट पर रहने वाला पक्षी है, लेकिन भीतर की ओर भी कुछ दूर तक फैल जाता है और तब बड़ी नदियों, झीलों तथा दलदलों के आस-पास देखा जा सकता है।

**विवरण :** करलू अपने परिवार का शायद सबसे बड़ा पक्षी है, जो अपनी विचित्र टेढ़ी चोंच के कारण बड़ी आसानी से पहचाना जा सकता है। इसकी चोंच सूजी की तरह ऊपर की ओर झुकी न होकर, कौआरी आदि कुछ महावकों की तरह नीचे की ओर झुकी होती है, जिसमें इसे कीचड़ और छिछले जल में से घोंघे-कटुए आदि पकड़ने में बहुत आसानी हो जाती है। घोंघे, सूंती और कटुए आदि के अलावा यह कीचड़ व पानी के कीड़े-मकोड़ों को भी बड़े स्वाद से खाता है। यह प्रायः अकेला या जोड़े में दिखाई पड़ता है, लेकिन कभी-कभी इसके झुंड भी दिखाई पड़े जाते हैं।

करलू की उड़ान बहुत तेज और फुर्तीली न होकर, भारी होती है और बोली भी अजीब-सी करुण होती है जो 'करलू ऊ-ऊ, करलू ऊ-ऊ' से मिलती-जुलती है।

**घोंसला :** करलू भी मौसमी पक्षी होने के कारण अंडा देने के समय इस देश से वापस चला जाता है, लेकिन विदेशों में यह किसी पथरीले मैदान में या रेत में बट्टों के पास अंडे देता है। अंडों की संख्या प्रायः ४ तक होती है, रंग जैतूनी, जिस पर गाढ़ी सिलेटी चित्तियाँ पड़ी होती हैं।

नाप में ये अंडे करीब २.६ × १.८ इंच के होते हैं।

## ३२५ गोइँयार (Whimbrel : Numenius phoeopus)

**पर्याय** : छोटा गुलिंदा, छोटा गोंच, छोटा करलू, उपकुररी।

**पहचान** : करलू की तरह का पक्षी जिसकी टाँगें और गरदन लम्बी तथा चोंच लम्बी और नीचे की ओर झुकी होती हैं। पैर की उँगलियाँ भी उसी की तरह थोड़ी दूर तक जालदार होती हैं। यह पानी के किनारे और कीचड़ वाले स्थानों पर दिखाई पड़ता है।

**रंग-रूप** : करलू की तरह गोइँयार के नर-मादा भी एक ही रंग-रूप के होते हैं और इसकी मादा भी कद में नर से बड़ी होती है। लम्बाई लगभग १७ इंच। चोटी भूरी, जिसके बीच में एक खड़ी सफेद पट्टी। ऊपरी भाग भूरा, जिस पर सफेद धारियाँ और चित्ति। डैने और बगली हिस्से भी भूरी पट्टियों से भरे। पीठ का पिछला भाग और दुमगजा तथा नीचे का सारा हिस्सा सफेद। चोंच काली, टाँगें सिलेटी।

**निवास** : गोइँयार को छोटा करलू भी कहा जाता है, क्योंकि यह शक्ल-सूरत में एकदम करलू-जैसा, पर कद में उससे छोटा होता है। इसकी आदतें भी करलू से मिलती-जुलती हैं और उसी की तरह यह भी हमारे देश में जाड़े में आता है और समुद्री तटों पर तथा कुछ भीतरी हिस्सों में फैल जाता है। लेकिन यह दक्षिण-पूर्व की ओर आस्ट्रेलिया तक पहुँच जाता है, जहाँ करलू नहीं जाता। परन्तु भारत में, संख्या में कम होने के कारण, यह करलू की तरह हर जगह दिखाई नहीं पड़ता।

**विवरण** : शक्ल सूरत में करलू-जैसा, पर कद में कुछ छोटा होने के कारण गोइँयार को छोटा करलू कहना अनुचित न होगा। यह भी अकेले या जोड़े में कीचड़ के आस-पास घूमता दिखाई पड़ता है, लेकिन कभी-कभी इसके छोटे-छोटे झुंड भी दिखाई पड़ जाते हैं। गोइँयार का मुख्य भोजन पानी और कीचड़ के कीड़े-मकोड़े तथा और घोंघे हैं। इसकी बोली कुछ कर्कश और सीटी-नुमा होती है और उड़ान करलू की तरह भारी और मामूली होती है।

**घोंसला** : मौसमी पक्षी होने के कारण गोइँयार यहाँ अंडे नहीं देता, उस समय तक यह यहाँ से वापस चला जाता है। विदेशों में यह किसी खुले मैदान में अपने अंडे देता है, जो संख्या में ३-४ होते हैं। उनका रंग जैतूनी होता है, जिस पर गाढ़ी भूरी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

नाप में ये अंडे २.३ × १.७ इंच के होते हैं।

## ३२६ गुदेरा (Black-Tailed Godwit : Limosa limosa)

**पर्याय** : मलगुजहा, जौराली, सरलिंग, खाग, कालपुच्छ, आरामुखी।

**पहचान** : पानी के निकट के दलदली स्थानों में रहने वाला पक्षी जिसका ऊपरी हिस्सा राखीपन लिये भूरा और नीचे का राखीपन लिये सफेद रहता है। आँख के नीचे चोंच की जड़ तक फैला हुआ सफेद चित्ता इसे पहचानने में बहुत सहायक होता है।

**रंग-रूप** : गुदेरा की लम्बाई लगभग १७ इंच और नर मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं, लेकिन कद में मादा नर से बड़ी होती है। शरीर का ऊपरी भाग राखीपन लिये भूरा और नीचे का राखीपन लिये सफेद। आँख के नीचे एक सफेद चित्ता, जो चोंच की जड़ के पास तक चला जाता है। दुम की जड़ सफेद, लेकिन उसका सिर धुर काला। पंख भूरे।

गरमियों मे इसकी पीठ काली हो जाती है और उस पर कत्थई चित्तियाँ पड़ी होती हैं। सीना ललछौंह हो जाता है, लेकिन उसके बन्द से नीचे का सारा हिस्सा सफेद ही रहता है। आँख भूरी, चोंच हलकी गुलाबी। टाँगे गंदी सिलेटी।

**निवास** : गुदेरा मौसमी और शिकार का पक्षी है, जो जाड़ों में बाहर से आकर उत्तरी और पूर्वी भारत में अधिक और दक्षिणी भारत में थोड़ी संख्या में फैल जाता है। पंजाब, कच्छ, काठियावाड़, राजस्थान, गुजरात, उत्तर प्रदेश, बिहार तथा बंगाल में ये काफी संख्या में दिखाई पड़ते हैं, वहाँ भी ये सब स्थानों पर नहीं मिलते, बल्कि ऐसी जगह चुनते हैं, जो उनके लिए सुविधा-जनक हो। धुर दक्षिण में तो इनको देख पाना बहुत ही कठिन होता है। हमारे देश से बाहर ये चीन, तिब्बत और रूस में साइबेरिया तक दिखाई पड़ते हैं।

**विवरण** : गुदेरा यहाँ का परिचित पक्षी है, जो अकेले तो बहुत कम, लेकिन ५-६ से लेकर सौ तक के झुंडों में अक्सर दिखाई पड़ता है। यह काफी ढीठ पक्षी है और इनके निकट तक बड़ी आसानी से पहुँचा जा सकता है, लेकिन भड़क जाने पर ये कुछ चौकन्ने जरूर हो जाते हैं।

गुदेरा ज्यादातर दलदली क्षेत्रों को अपने रहने के लिए चुनता है, इसलिए बड़ी नदियों के किनारे और उनके मुहानों पर काफी संख्या में देखा जा सकता है। यह हवा में बड़ी काहिली और सुस्ती से ऊपर उठता है, लेकिन एक बार ऊँचाई पर जाकर बहुत देजी से उड़ लेता है। इसका मुख्य भोजन धान है लेकिन यह दूसरा गल्ला भी मजे में खाता है। इनके अलावा, कीड़े-मकोड़ों तथा घोंघे-कटुए से भी ये अपना पेट भरते हैं।

चराई के समय भी इनके झुंड में से कुछ पक्षी तो खेलने और दौड़ने लगते हैं। वे अपना पंख फटफटा कर काफी उछल-कूद मचाते हैं और चराई के बाद भी कभी-कभी एक टाँग पर खड़े-

होकर, हंसावर आदि की तरह, अपनी गरदन घुमा कर और चोंच को पीठ पर रख कर आराम करते हुए देखे जा सकते हैं। ये वैसे तो बोलने वाले पक्षी हैं, लेकिन अंडे देने के समय ये बहुत बोलते हैं। इनकी बोली तेज सीटी-जैसी होती है।

**घोंसला** : मौसमी पक्षी होने के कारण, गुदेरा हमारे देश में अंडे नहीं देते और इनके लिए इन्हें एशिया और यूरोप के उत्तरी देशों में जाना पड़ता है। वहाँ, वे मई जून में घास-फूस का घोंसला बनाते हैं, जो जमीन पर किसी झाड़ी या आस-पास घास में छिपा कर रखा जाता है। गुदेरा प्रायः झुंड में एकत्र होकर घोंसले बनाते हैं और जब कोई आदमी इनके घोंसले के निकट पहुँचता है, तो ये कुररियों की तरह बहुत शोर मचाते हैं और उसके सर के ऊपर चक्कर लगाते हैं। उस समय इसकी बोली भी बड़ी करुण होती है। अंडे फूटने के बाद जब तक इनके बच्चे छोटे रहते हैं, तब तक ये बहुत ढीठ रहते हैं और उस मसय इनके बहुत निकट तक पहुँचा जा सकता है।

इनके अंडे हलके भूरे, बादामी या पत्थरी रंग के होते हैं जिन पर गाढ़ी भूरी, कत्थई और बैंगनी चित्तियाँ होती हैं।

नाप में करीब २.२५ × १.४५ इंच के होते हैं।

## ३२७ पनेवा (Common Sandpiper : Tringa Hypoleucus)

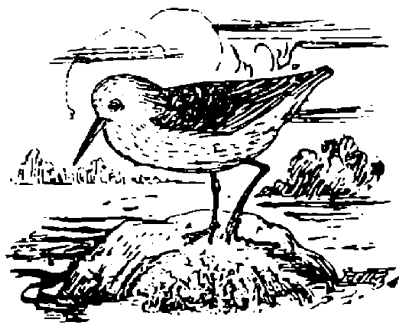
**पर्याय** : कोरान, प्रख्यात जलरंक।

**पहचान** : पतले बनावट की चिड़िया जो छिछले पानी में टहलती रहती है। इसका सारा शरीर सफेद और पीठ भूरी रहती है। टाँगें हरी और लम्बी होती हैं और चोंच लम्बी, सीधी और नोकीली रहती है।

**रंग-रूप** : लम्बाई लगभग ८ इंच। नर-मादा एक ही रंग-रूप के, लेकिन इनकी जाड़े और गरमियों की पोशाक में थोड़ा फर्क हो जाता है। शरीर का ऊपरी भाग मटमैला भूरा, जिसमें जैतूनी झलक। सर और गरदन को छोड़ कर, सारे ऊपरी हिस्से में पिल-छौंह चिह्न। बड़े पंख गाढ़े भूरे और छोटे पंख सफेद, जिन पर एक भूरी पट्टी। सर का बगली हिस्सा, गरदन और सीना राखी-भूरा, जिस पर गाढ़ी भूरी धारियाँ और चिह्न। नीचे का सारा हिस्सा सफेद, जो आँखों के चारो ओर तक फैल जाता है। आँख भूरी। चोंच सिलेटी भूरी और जड़ के पास हरछौंह। टाँगें हलकी हरी।

**निवास** : पनेवा यहाँ का प्रसिद्ध तटचारी पक्षी है, जो जाड़ों में बाहर से आकर हमारे देश में फैल जाता है। हमारे देश में यह उत्तरी भारत में तो कम संख्या में दिखाई पड़ता है लेकिन दक्षिण की ओर काफी फैला रहता है। वहाँ इसको कोरान कहा जाता है। हमारे देश से बाहर यह बर्मा, लंका, आस्ट्रेलिया तथा बीच के द्वीपों पर जाड़ों में देखा जा सकता है।

**विवरण** : पनेवा यहाँ का प्रसिद्ध पक्षी है जो प्रायः अकेला ही दिखाई पड़ता है। यह हमारे यहाँ छोटे बड़े, सभी प्रकार के जलाशयों में किनारे पर दिखाई देता है और पानी के किनारे-किनारे भी अपनी खुराक की तलाश में बड़ी तेजी से चलता-फिरता है। इसे ज्यादा कीचड़ पसन्द नहीं है, बल्कि नदी के बलुए किनारों को सब से अधिक पसन्द करता है, इसीलिए समुद्र-तट पर भी अक्सर दिखाई पड़ जाता है।



पनेवा

पनेवा बहुत चंचल और फुर्तीला पक्षी है, जो खुश्की पर तो तेजी से चलता ही है, जरूरत पड़ने पर बड़ी खूबी से पानी में तैर भी लेता है। यह रह-रह कर अपनी गरदन को झटका देता रहता है और दुम को उठाता-गिराता रहता है। खतरा देख कर 'टीं-टीं-टीं' की आवाज करके उड़ता है, लेकिन ऊँचाई पर न जाकर जमीन से थोड़ा ही ऊपर जाता है और थोड़ी ही दूर पर फिर नीचे उतर पड़ता है। इसका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े और झींगे आदि हैं।

**घोंसला** : यहाँ का मौसमी पक्षी होने के कारण, पनेवा अंडा देने के समय यहाँ से वापस चला जाता है, लेकिन कुछ पक्षी कश्मीर आदि उत्तरी-पश्चिमी प्रदेशों में अंडे भी दे देते हैं। वहाँ किसी पहाड़ी नदी के किनारे, जमीन पर ही किसी छिछले गढ़े में घास-फूस का अपना घोंसला बनाते हैं, जिसमें मादा हलके भूरे रंग के ३-४ अंडे देती है। अंडों पर गाढ़ी-भूरी, कत्थई या बैंगनी चित्तियाँ होती हैं।

अंडों की नाप १.४५ × १.०५ इंच होती है।

## ३२८ टटुआरी (Green Sand piper : Tringa ochropus)

**पर्याय** : हरित जलरंक।

**पहचान** : पानी के निकट प्रायः अकेले ही दिखाई पड़ने वाला पक्षी जिसका माथा और ऊपरी गरदन भूरी और ऊपरी

हिस्सा जैतूनी भूरा रहता है। नीचे का भाग सफेद रहता है। चोंच पतली और लम्बी और टाँगें गंदी हरी होती हैं।

रंग-रूप : लम्बाई लगभग ९ इंच। नर-मादा का रंग-रूप एक-जैसा। सर और गरदन का ऊपरी भाग भूरा, जिसमें एक प्रकार की राखी झलक। शरीर का ऊपरी भाग जैतूनी-भूरा, जिसमें पीठ और कंधों पर सफेद चिह्न और बिन्दियाँ। दुमगज़ा भूरा। दुम सफेद, जिस पर भूरी धारियाँ। दुम की जड़ के पास एक सफेद चित्ता। नीचे का सारा भाग सफेद। गरदन का बगली हिस्सा और सीना भूरी लकीरों से भरा हुआ। डैने भूरे, जिन पर सफेद धारियाँ। आँख भूरी। चोंच घुमैली हरी, सिरे पर कलछौंह। टाँगें गंदी हरी।

निवास : टुटुआरी पनेवा की ही एक जाति है, जो उसी की तरह जाड़ों में यहाँ आकर, जाड़ा समाप्त होते-होते फिर यहाँ से वापस चली जाती है। हमारे देश में पनेवा की तरह, यह जाड़ों में भी प्रायः सब जगह फैल जाती है और कोई भी जलाशय इससे खाली नहीं बचता। लेकिन यह उत्तरी भारत में, दक्षिणी भारत की अपेक्षा, अधिक संख्या में दिखाई पड़ती है। यहाँ यह जुलाई से ही आने लगती है और यहाँ से इसकी वापसी मई के प्रारम्भ तक पूरी हो जाती है।

विवरण : टुटुआरी पनेवा का निकट सम्बन्धी ही है जो शक्ल-सूरत में पनेवा-जैसा ही होता है। यह भी जाड़ों में यहाँ बाहर से आकर उत्तरी भारत में अधिक और दक्षिण भारत में कम संख्या में फैल जाता है। पनेवा की तरह ही यह भी प्रायः अकेला ही दिखाई पड़ता है और इसे भी वैसे ही जलाशयों के किनारे पसन्द हैं, जिन्हें पनेवा अपने रहने के लिए चुनता है।

उड़ते समय यह पनेवा की तरह 'टीं-टीं-टीं' जैसी बोली नहीं बोलता, बल्कि इसकी आवाज तेज सीटी-जैसी होती है। उड़ते समय यह पहले तो कुछ दूर तक हलराता हुआ-सा नीचे-नीचे जाता है, लेकिन कुछ दूर जाने पर आसमान में ऊँचे चढ़ जाता है और वहीं काफी देर तक चक्कर लगाता रहता है।

इसे भी जलाशयों के किनारे-किनारे तेजी से टहलते देखा जा सकता है, जहाँ यह कीड़े-मकोड़े और झींगे आदि पकड़ता रहता है, जो इसका मुख्य भोजन है। पनेवा की तरह यह भी अपनी दुम को ऊपर-नीचे उठाता-गिराता रहता है और रह-रह कर सर को झटका देता रहता है।

टुटुआरी के शिकार का कोई खास नियम नहीं है। यह इतना ढीठ होता है कि गाँव और बस्तियों के बीच की गड़हियों तक में इसे बगुले के साथ घूमते देखा जा सकता है। लेकिन इतना होने पर भी एक बार भड़क जाने पर, यह वहाँ नहीं रुकता और वहाँ से दूर जाना ही उचित समझता है।

घोंसला : टुटुआरी भी पनेवा की तरह यहाँ घोंसला नहीं बनाती। इसके लिए इसे दक्षिण पश्चिमी रूस से लेकर जर्मनी तक के प्रदेशों में जाना पड़ता है, जहाँ यह किसी गिलहरी तथा चरखी आदि के पुराने घोंसले में ही मई से जुलाई के बीच में ४ अंडे देती है। इन अंडों का रंग हरछौंह या हलका बादामी होता है और उन पर गाढ़ी बैंगनी या सिलेटी बिंदियाँ होती हैं।

अंडे १.५ × १.१ इंच के होते हैं।

## ३२९ चुपका (Wood Sand piper Tringa glareola)

पर्याय : चौबाहा, वन जलरंक।

पहचान : पानी के निकट रहने वाला प्रसिद्ध पक्षी जिसका ऊपरी हिस्सा गाढ़ा भूरा और राखी तथा सफेद चित्तियों से भरा रहता है। नीचे का भाग सफेद रहता है। चोंच लम्बी और टाँगें गंदे हरे रंग की होती हैं।

रंग-रूप : चुपका की लम्बाई लगभग ८ इंच। नर-मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। लेकिन इनकी जाड़े और गरमी की पोशाक में फर्क होता है।

माथे से लेकर पीठ तक का सारा ऊपरी भाग गाढ़े भूरे रंग का, जिस पर राखी और सफेद बिंदियाँ। दुमगज़ा सफेद तथा दुम सफेद और काली पट्टियों से भरी। बड़े पंखों पर भूरी धारियाँ और कुछ पखनियों पर सफेद चित्तियाँ। नीचे का सारा भाग सफेद, जो इसकी आँखों के चारों ओर तक फैल जाता है। आँख भूरी। चोंच हरछौंह, जिसका सिरा काला। टाँगें गंदी हरी।

निवास : चुपका भी एक प्रकार का पनेवा ही है, जो जाड़ों में हमारे देश में आकर गरमी शुरू होते-होते फिर यहाँ से वापस चला जाता है। यहाँ आने वाले पनेवों में, शायद ये ही सबसे अधिक संख्या में आते हैं क्योंकि जाड़ों में इनसे कोई भी तालाब, झील और दलदली भाग खाली नहीं रहता।

विवरण : चुपका यहाँ का बहुत प्रसिद्ध पनेवा है, जो जाड़ों में काफी संख्या में हमारे देश में आ जाता है। ये अकेले, जोड़े में या छोटे गिरोहों में नदी, ताल-तलैयों और पानी के अन्य स्थानों के निकट दिखाई पड़ते हैं। इन्हें ऐसे जलाशय ज्यादा पसन्द हैं, जो नरकुल और कीचड़ से भरे हों। ये कीड़े-मकोड़े की तलाश में किनारों पर भी इधर-उधर तेजी से दौड़ते रहते हैं और थोड़ी-थोड़ी देर पर अपनी दुम ऊपर-नीचे करते रहते हैं। इनका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े और छोटे कटुए, घोंघे हैं।

घोंसला : चुपका हमारे यहाँ का मौसमी पक्षी होने के कारण, इस देश में अंडे नहीं देता और इसके लिए इन्हें यूरोप और उत्तरी एशिया के देशों की ओर जाना पड़ता है। वहाँ समय आने पर मादा जमीन पर ही किसी छिछले गढ़े में थोड़ी घास-फूस रख कर ३-४ अंडे देती है, जो जैतूनी रंग के होते

हैं। उन पर लाल और कत्थई चित्तियाँ होती हैं।

नाप में ये अंडे प्रायः १.५ × १.१ इंच के होते हैं।

## ३३० टिमटिमा (Green Shank : Tringa nebularia)

**पर्याय** : टनटना, हरितपाद जलरंक, गोटरा।

**पहचान** : किनारे पर रहने वाला पनेवा जाति का पक्षी जिसका ऊपरी हिस्सा राखीपन लिये भूरा और नीचे का सफेद रहता है। चोंच लम्बी और टाँगें हरी और लम्बी होती हैं, प्रायः पानी के किनारे अकेले ही दिखाई पड़ता है।

**रंग-रूप** : टिमटिमा की लम्बाई १४ इंच और नर मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। सर और गरदन का ऊपरी तथा बगली हिस्सा कलछौंह भूरा और यहाँ के परों के किनारे सफेद। पीठ और डैने राखी-भूरे, जिस पर काली और सफेद धारियाँ। बड़े पंख कलछौंह और छोटे पंख राखी-भूरे। पीठ का पिछला भाग, दुमगज़ा और दुम सफेद। दुम के बीच के परों में भूरी धारियाँ। आँख के ऊपर एक सफेद पट्टी और चोंच की जड़ के पास भी सफेदी-मायल। नीचे का कुल हिस्सा सफेद। आँख भूरी। चोंच गाढ़ी जैतूनी भूरी। टाँगें पिलछौंह भूरी।

**निवास** : टिमटिमा देश में शीत ऋतु के प्रारम्भ में आने वाला प्रसिद्ध मौसमी पक्षी है, जो यहाँ जाड़े भर रह कर गरमी शुरू होते फिर यहाँ से वापस चला जाता है। हमारे देश में ये उत्तर भारत की ओर तो अधिक संख्या में दिखाई पड़ते हैं लेकिन दक्षिण भारत की ओर ये कम ही दिखाई पड़ते हैं। हमारे देश के बाहर ये जाड़ों में बर्मा और श्रीलंका तक फैल जाते हैं।

**विवरण** : टिमटिमा पनेवा और टुटुआरी से मिलता-जुलता पक्षी है, लेकिन कद में उन दोनों से कुछ बड़ा होता है। यह भी अकेले रहने वाला पक्षी है, जिसे कीचड़ से अधिक नदी और जलाशयों के रेतीले किनारे पसन्द हैं। इसकी बहुत कुछ आदतें पनेवा से मिलती-जुलती है और यह भी अपनी खुराक की तलाश में पानी के किनारों पर ही ज्यादा दिखाई पड़ता है। इसका मुख्य भोजन पानी के कीड़े-मकोड़े आदि हैं।

टिमटिमा पनेवा जैसा ढीठ नहीं होता और भड़क जाने पर उड़कर दूर चला जाता है। यह आसमान में जल्द ही ऊपर चढ़ जाता है और उड़ते समय 'टीविट-टीविट' जैसी तेज और कर्कश बोली बोलता रहता है।

**घोंसला** : टिमटिमा यहाँ का मौसमी पक्षी होने के कारण, जोड़ा बाँधने के समय यहाँ से दूसरे देशों में चला जाता है, लेकिन यहाँ देर से आने वाले पक्षियों में से कुछ कश्मीर आदि उत्तरी प्रदेशों में रह कर वहीं अंडे दे देते हैं।

अन्य पनेवों की तरह, टिमटिमा भी जमीन पर किसी छिछले गढ़े में घास-फूस रख कर अपना घोंसला बनाता है, जिसमें मादा मई से जुलाई के बीच ४ अंडे देती है। अंडे भूरे रंग के होते हैं और उन पर कत्थई और सिलेटी चित्तियाँ पड़ी होती हैं।

अंडों की नाप करीब २.० × १.३५ इंच होती है।

## ३३१ टिलुआ (Little Green Shank or Marsh Sand piper : Tringa Stagnatilis)

**पर्याय** : छोटा टिमटिमा, कच्छ जलरंक, छोटा गोटरा।

**पहचान** : टिमटिमा से मिलता-जुलता पक्षी जो किनारे पर दिखाई पड़ता है। इसका भी ऊपरी हिस्सा राखीपन लिये भूरा और नीचे का सफेद रहता है। चोंच लम्बी नोकीली और टाँगें पिलछौंह हरी रहती हैं।

**रंग-रूप** : टिलुआ की लम्बाई लगभग १० इंच और रंग-रूप में टिमटिमा से मिला-जुला। नर और मादा की पोशाक एक-जैसी। माथा और गरदन का ऊपरी तथा बगली हिस्सा कलछौंह, जहाँ के परों के किनारे सफेद। पीठ और डैने राखीपन लिये भूरे, जिनके किनारे काले और सफेद। पंख भूरे और कलछौंह, और उनका किनारा सफेद। पीठ का पिछला भाग, दुमगज़ा और दुम भूरी। दुम के बीच के दोनों परों पर भूरी धारियाँ और आँख के ऊपर एक सफेद पट्टी-सी। नीचे का सारा हिस्सा सफेद।

गरमियों में सर पर भूरी लकीरें पड़ जाती हैं और पीठ पर स्याही अधिक आ जाती है, साथ ही सीने पर भी काली बिंदियाँ पड़ जाती हैं। आँख भूरी, चोंच जैतूनी भूरी, सिरे पर कलछौंह। टाँगें पिलछौंह हरी।

**निवास** : टिलुआ टिमटिमा का निकट सम्बन्धी होने पर भी, कद में उससे छोटा होता है। इसी कारण कहीं-कहीं इसे छोटा टिमटिमा भी कहा जाता है। यह भी हमारे यहाँ का मौसमी पक्षी है, जो जाड़ों में इस देश में आकर जाड़ा बीतते-बीतते यहाँ से वापस चला जाता है। जाड़ों में ये वैसे तो सारे देश में फैल जाते हैं, लेकिन इन्हें हर जगह नहीं देखा जा सकता। इसका कारण यह है कि ये बीच-बीच में जो स्थान पसन्द कर लेते हैं, वहीं काफी संख्या में दिखाई पड़ते हैं, लेकिन बाकी स्थानों पर बिल्कुल नहीं, या बहुत कम।

**विवरण** : टिलुआ भी यहाँ का मौसमी पनेवा है। इसकी बहुत कुछ आदतें अन्य पनेवों की तरह होती हैं। यह अकेले या झुंड में दिखाई पड़ता है और इसे ऐसे जलाशय अधिक पसन्द हैं, जिसमें कीचड़ की बहुतायत हो। वैसे इसे नदियों के किनारे रेत पर भी काफी संख्या में देखा जा सकता है।

टिलुआ बहुत चंचल पक्षी है, जो किनारे पर बहुत तेजी से इधर-उधर दौड़ता रहता है। यह शोर भी काफी मचाता है। लेकिन, जरा-सा भी खटका हुआ नहीं कि इनका पूरा झुंड 'चिक-चिक चीं-चीं' करता हुआ उड़ जाता है और फिर थोड़ी ही दूर पर

उतर कर बड़ी बेफिक्री से कीड़े-मकोड़े और घोंघे, कटुए पकड़ने में लग जाता है।

**घोंसला** : यहाँ का मौसमी पक्षी होने के कारण, यह भी जोड़ा बाँधने के समय यहाँ से फ्रांस के दक्षिण-पूर्वी भाग और रूस के दक्षिणी प्रदेशों तक में अपने अंडे देता है। अन्य पनेवों की तरह, इसकी मादा भी जमीन पर किसी छिछले गढ़े में ३-४ अंडे देती है। ये अंडे हलके-भूरे होते हैं, जिन पर गाढ़ी भूरी चित्तियाँ होती हैं।

नाप में अंडे करीब १.५ × १.१ इंच के होते हैं।

## ३३२ सूरमा (Red Shank : Tringa totanus)

**पर्याय** : आरक्तपाद जलरंक, छोटा बटान।

**पहचान** : किनारे पर रहने वाला पक्षी जिसका ऊपरी हिस्सा मटैला चितला भूरा और नीचे का सफेद रहता है। टाँगें लम्बी और लाल रहती हैं और लम्बी चोंच काली रहती है।

**रंग-रूप** : इसकी लम्बाई लगभग ११ इंच और नर-मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। पीठ का रंग मटमैला चितला भूरा और नीचे का सारा सफेद। डैने के छोटे पंख सफेद पंख समेट रहने पर इसके डैनों पर एक पट्टी-सी दिखाई देती है। दुम सफेद, जिस पर काली पतली-पतली धारियाँ। बच्चों के रंग में अधिक ललाई रहती है। चोंच काली, जड़ के पास ललछौंह। टाँगें नारंगीपन लिये लाल।

**निवास** : सूरमा यहाँ का मौसमी पक्षी है, और ये यहाँ जाड़ों में आकर सारे देश में फैल जाता है। यह समुद्र-तट और दलदली क्षेत्रों में काफी संख्या में पाया जाता है, तो भी सारे देश के जलाशयों के निकट थोड़ी-बहुत संख्या में पहुँच ही जाता है। इन्हें ताल-तलैयों और बड़ी नदियों का किनारा ज्यादा पसद है।

**विवरण** : सूरमा हमारे देश में आने वाला चितला भूरा पक्षी है, जिसे इसकी लाल टाँगों से बहुत आसानी से पहचाना जा सकता है। अन्य पनेवों की तरह, ये भी पानी अथवा कीचड़ के आस-पास अपनी खूराक की तलाश में टहलते रहते हैं। इसके भोजन में पानी के कीड़ों-मकोड़ों के अलावा, छोटे कटुए और घोंघे भी शामिल हैं।

सूरमा की उड़ान तेज और लहराती-सी होती है और एक जगह से भड़काये जाने पर, ये तेज चीं-चीं करते हुए उड़ कर थोड़ी ही दूर पर फिर जमीन पर उतर पड़ते हैं। ये कभी-कभी अकेले या जाड़े में और कभी-कभी छोटे-छोटे गिरोहों में दिखाई पड़ते हैं। उड़ते समय इसके पंख पर की सफेद पट्टी साफ दिखाई पड़ती है जिसके कारण भी इन्हें पहचानने में दिक्कत नहीं पड़ती।

**घोंसला** : यहाँ के मौसमी पक्षी होने के कारण, ये घोंसला यहाँ नहीं बनाते, बल्कि जाड़ा समाप्त होने पर ये विदेशों में जाकर अपने अंडे देते हैं। ये किसी रेतीले या खुले मैदान में जमीन पर ही ३-४ अंडे देते हैं। अंडों का रंग भूरा होता है जिन पर गाढ़ी भूरी चित्तियाँ होती हैं।

नाप में इनके अंडे करीब १.८ × १.२५ इंच के होते हैं।

## ३३३ गेहवाला (Ruff and Reeve : Philomachus pugnax)

**पर्याय** : मट जलरंक।

**पहचान** : यह भी पनेवा की जाति का पक्षी है जो पानी के आस-पास ही दिखाई पड़ता है। इसका ऊपरी भाग मट-मैला भूरा रहता है जिस पर काली बिंदियाँ पड़ी रहती हैं। नीचे का हिस्सा सफेद रहता है, लेकिन सीना ललछौंह रहता है। लम्बी टाँगें नारंगी रंग की होती हैं और चोंच लम्बी नोकीली और काली रहती है।

**रंग-रूप** : गेहवाला के नर-मादा के रंग-रूप में थोड़ा फर्क होता है और कद में भी नर मादा से कुछ बड़ा होता है। इसकी लम्बाई लगभग १२ इंच। शरीर का ऊपरी भाग मटमैला भूरा, जिसपर काली बिंदियाँ। सीना ललछौंह, लेकिन इससे नीचे का सारा हिस्सा सफेद। पंख भी सफेद।

मादा के ऊपरी रंग में कुछ सिलेटी पन, बाकी सारा हिस्सा नर-जैसा। बच्चों का सारा शरीर हलके भूरे रंग का। गरमियों में नर का ऊपरी रंग काला गाढ़ा कत्थई और सिलेटी हो जाता है और उसके गले के चारो ओर के पर बढ़कर कंठानुमा हो जाते हैं, जो सफेद, काले और कत्थई होते हैं। कुछ नरों का सर सफेद होता है। गरमियों में, जब उनके गले के चारो ओर के कंठानुमा पर बढ़ते हैं तो वे एकदम सफेद होते हैं। ऐसे पक्षी गरमियों में बहुत सुन्दर लगते हैं। चोंच काली, जड़ के पास नारंगी। टाँगें नारंगी या गुलाबी।

**निवास** : गेहवाला भी यहाँ का प्रसिद्ध मौसमी पक्षी है, जो जाड़ों में यहाँ आकर सारे देश के जलाशयों के किनारे फैल जाता है और जाड़ा समाप्त होने पर यहाँ से वापस चला जाता है। भारत में, यह दक्षिण भारत तथा बंगाल और असम की ओर कम दिखाई पड़ता है।

**विवरण** : गेहवाला वैसे तो दूसरे पनेवों का निकट सम्बन्धी है, लेकिन इसकी कुछ आदतें सबसे निराली हैं। ये हमारे देश में, जाड़ों के शुरू में ही आ जाते हैं और यहाँ की नदियों, झीलों और तालाबों के अलावा दलदलों के आस-पास अपनी खुराक की तलाश में घूमते-फिरते दिखाई पड़ते हैं। ये ज्यादातर छोटे-

बड़े गिरोहों में ही रहते हैं, जो खतरे का आभास पाते ही तेज चीं-चीं की आवाज के साथ उड़ जाते हैं और फिर थोड़ी ही दूर पर जमीन पर उतर पड़ते हैं। इनका मुख्य भोजन पानी के कीड़े-मकोड़े और छोटे कटुए, घोंघे हैं, लेकिन ये गल्ला और बीज भी बड़े मजे में खाते हैं।

**घोंसला** : गेहवाला मोर की तरह बहुपत्नीक पक्षी और नर संख्या में कम होने के कारण, कई-कई मादाओं का रनिवास रखते हैं। जोड़ा बाँधने के समय ये किसी साफ और चिकनी जगह चुनते हैं, जहाँ नर अपने-अपने गले का कंठा फुलाकर और एक-दूसरे से लड़कर सौन्दर्य और पराक्रम की प्रतियोगिता जीतते हैं। मादाएँ जीतने वाले पक्षी के साथ चली जाती हैं।

अंडा देने के समय तक गेहवाला हमारे देश से वापस चले जाते हैं और यूरोप और एशिया के कुछ भागों में अपने अंडे देते हैं। मादा किसी खुले मैदान में ही किसी जमीन पर किसी छिछले गढ़े में ४ अंडे देती हैं। अंडे जैतूनी रंग के होते हैं और उन पर लाल, कत्थई या गाढ़ी-भूरी चित्तियाँ पड़ी होती हैं।

ये अंडे नाप में करीब १.७५ × १.२ इंच के होते हैं।

## ३३४ पनलवा (Little Stint : Erolia Minuta

**पर्याय** : बिरबिरी, जलरंक।

**पहचान** : पनलवा हमारे यहाँ का मौसमी पक्षी है, जो जाड़ों में बाहर से आकर जाड़ा समाप्त होते-होते फिर यहाँ से वापस चला जाता है। जाड़ों में ये सारे देश में फैल जाता है और हम प्रायः सभी छोटे-बड़े जलाशयों में इसे देख सकते हैं। इसका ऊपरी भाग धारीदार कत्थई और नीचे का सफेद रहता है।

**रंग-रूप** : पनलवा छोटा-सा पक्षी है जिसकी लम्बाई ६ इंच और नर-मादा का रंग-रूप एक-सा होता है। ऊपर का रंग कत्थई, जिस पर गाढ़ी धारियाँ और चिह्न। ये चिह्न गरमियों में कुछ ललछौंह हो जाते हैं। नीचे का रंग सफेद और बड़े पंखों का भी कुछ हिस्सा सफेद। दुम के बाहरी पर भूरापन लिये सिलेटी। आँख भूरी। चोंच काली। टाँगें सिलेटी।

**निवास** : पनलवा यहाँ का बहुत प्रसिद्ध, छोटा-सा मौसमी पक्षी है, जो अगस्त बीतते-बीतते यहाँ आता है और सारा जाड़ा यहीं बिताकर, मई के महीने में यहाँ से वापस चला जाता है।

**विवरण**: पनलवा झुंड में रहने वाला पक्षी है, जो दलदलों के आस-पास, धान के खेतों में और नदियों, तालाबों तथा समुद्र के किनारे बड़ी आसानी से देखा जा सकता है। जाड़े में यह सारे देश में फैल जाता है। चराई के समय इसके छोटे-बड़े झुंड जलाशयों के किनारे दूर-दूर तक फैले रहते हैं, लेकिन जरा-सा खटका होते ही ये सब 'पिट् पिट्' जैसी आवाज करके एक साथ उड़ जाते हैं। फिर थोड़ी देर तक आसमान में नीचे ही नीचे उड़ कर, आस-पास ही जमीन पर उतर पड़ते है। ये बहुत चंचल पक्षी है, जो खंजन की तरह कुछ देर तक भी एक जगह स्थिर हो कर नहीं रह सकता और बराबर इधर-उधर टहलते ही रहते हैं। इसका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े और छोटे घोंघे, कटुए आदि हैं।

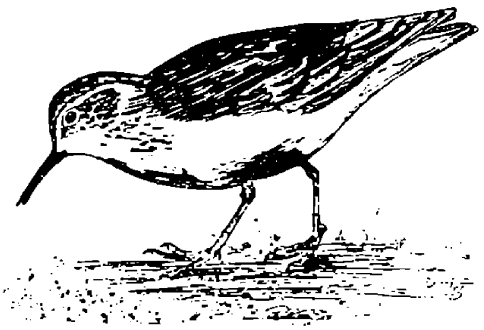
**घोंसला** : पनलवा यहाँ के मौसमी पक्षी है, इसलिए जोड़ा बाँधने के समय ये हमारे देश में नहीं रहते। उत्तर यूरोप तथा साइबेरिया की ओर, इनकी मादा जून-जुलाई में किसी दलदल के करीब घास-फूस का कटोरानुमा सुन्दर-सा घोंसला जमीन पर ही बना कर, उसमें ४ अंडे देती हैं। इन अंडों का रंग पत्थरी या संदली होता है जिसमें एक हल्की-सी झलक रहती है। अंडों पर कत्थई चित्तियाँ पड़ी होती हैं।

नाप में ये अंडे १.१ × ०.८ इंच के होते हैं।

## ३३५ रुझनी (Dunlin : Erolia alpina)

**पर्याय** : गिरि जलरंक।

**पहचान** : किनारे पर रहने वाली छोटी-सी चिड़िया जिसका ऊपरी हिस्सा राखीपन लिये भूरा और नीचे का सफेद रहता है। ऊपरी हिस्से पर पतली धारियाँ पड़ी रहती हैं।



रुझनी

**रंग-रूप** : रुझनी के नर-मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं और इनकी लम्बाई लगभग ७ इंच होती है। ऊपरी हिस्सा राखीपन लिये भूरा, जिस पर हल्की और तितरी-बितरी धारियाँ। नीचे का रंग सफेद। ऊपरी दुमढकना गाढ़ा भूरा। दुम भी भूरी, जिसके बीच के बढ़े हुए पर गाढ़े भूरे और बगल के राखी रंग के। इन परों का सिरा सफेद होता है। गरमियों में इनका सर और पेट काला हो जाता है, लेकिन सीना सफेद बिंदियों से भरा होता है। पंख सफेद ही रहते हैं। चोंच काली। टाँगें काली।

**निवास** : रुझनी पनलवे की ही जाति की छोटी-सी चिड़िया है, जो हमारे देश में जाड़ों में आकर, जाड़ा समाप्त होते ही यहाँ से वापस चली जाती है। यह पश्चिम की ओर से आती है और सारे देश के जलाशयों के किनारों पर देखी जा सकती है। यह दक्षिण तथा पूर्वी भारत की ओर कम दिखाई पड़ती है, पर उत्तरी भारत की ओर इसे काफी संख्या में देखा जा सकता है।

**विवरण** : रुझनी यहाँ की परिचित चिड़िया है, जिसे अन्य पनलवों की तरह पानी और कीचड़ के किनारे अपनी खुराक की तलाश में इधर-उधर टहलते देखा जा सकता है। यह प्रायः अकेली या जोड़े में दिखाई पड़ती है, लेकिन कभी-कभी आठ-दस पक्षी एक साथ भी चरते दिखाई पड़ते हैं। इनका मुख्य भोजन कीचड़, पानी के कीड़े-मकोड़े और घोंघे, कटुए हैं। इसकी उड़ान मामूली ही होती है और खतरा निकट देख कर ये चीं-चीं करके उड़ जाते हैं। फिर वहाँ से ज्यादा दूर न जाकर, थोड़ी ही दूर पर जमीन पर उतर पड़ते हैं।

**घोंसला** : हमारे देश का मौसमी पक्षी होने के कारण, रुझनी यहाँ अंडे नहीं देती, इसके लिए यह दक्षिणी यूरोप और उत्तरी अफ्रीका की ओर वापस चली जाती है। वहाँ इसकी मादा खुली जगह में जमीन पर ही ४ अंडे देती है। ये प्रायः भूरे रंग के होते हैं, जिन पर गाढ़ी भूरी चित्तियाँ होती हैं।

अंडे करीब १.३ × ०.९५ इंच के होते हैं।

## ३३६ गौर (Eastern Knot : Calidris tenuirostris)

**पर्याय** : प्राच्य, पट्टिपुच्छ जलरंक।

**पहचान** : किनारे पर रहने वाला पक्षी जिसका ऊपरी भाग राखी-मायल भूरा रहता है और उस पर पतली-पतली काली धारियाँ पड़ी रहती हैं। नीचे का भाग सफेद रहता है और सीने पर भूरी बिंदियाँ पड़ी रहती हैं। चोंच लम्बी रहती है।

**रंग-रूप** : गौर की लम्बाई लगभग १२ इंच और नर मादा का रंग-रूप एक ही जैसा होता है। लेकिन गरमियों में इनकी पोशाक कुछ बदल जाती है। ऊपरी हिस्सा राखीपन लिये मटमैला भूरा और नीचे का सारा भाग सफेद, जिस पर पतली-पतली काली धारियाँ। सीने पर भूरी बिंदियाँ। गरमियों में इनके सीने का रंग ललछौंह काला हो जाता है।

**निवास** : गौर हमारे यहाँ का प्रसिद्ध पनलवा है, जो जाड़ों में साइबेरिया की ओर से आकर सारे दक्षिण-पूर्वी एशिया में फैल जाता है। इनमें से कुछ तो हमारे देश में चले आते हैं और कुछ आस्ट्रेलिया तक जाने में नहीं हिचकते। उस समय से ये चीन, जापान तथा बीच के सारे द्वीप-समूहों में भर जाते है।

**विवरण** : गौर यहाँ बहुत कम संख्या में आता है, अतः हम इससे ज्यादा परिचित नहीं हैं। यहाँ के जलाशयों के किनारे अन्य पनलवों की तरह ये भी कीड़े-मकोड़े तथा घोंघे-कटुए की तलाश में घूमते-फिरते रहते हैं। ये जमीन पर काफी तेज चलते हैं और प्रायः अकेले, जोड़े में या पांच-सात एक साथ दिखाई पड़ते हैं। गौर की उड़ान मामूली ही होती है। ये खतरा निकट देख कर लहराते हुए उड़ कर थोड़ी ही दूर पर जमीन पर उतर पड़ते हैं और उतरते ही फिर तेजी से इधर-उधर टहलने लगते हैं।

**घोंसला** : मौसमी पक्षी होने के कारण गौर हमारे देश में अंडे नहीं देते। इसके लिए इन्हें फिर अपने देश वापस जाना पड़ता है। वहाँ मादा खुले मैदान में जमीन पर ४ अंडे देती हैं, जो भूरे रंग के होते हैं और जिन पर गाढ़ी भूरी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

नाप में ये अंडे करीब १.८ × १.२५ इंच के होते हैं।

## ३३७ सिमतीतर (Wood cock : Scolopax Rusticola)

**पर्याय** : कमातू, चिजरोल, सिमकुकरा, तूतीतर, मण्डु तित्तर।

**पहचान** : किनारे पर रहने वाला प्रसिद्ध पक्षी जिसका ऊपरी भाग भुरछौंह सिलेटी रहता है और उस पर कत्थई और काली लकीरें और चिह्न पड़े रहते हैं। नीचे का हिस्सा बादामी-पन लिये सफेद रहता है जो गाढ़े भूरे चिह्नों से भरा रहता है। चोंच लम्बी और पतली होती है और टाँगें छोटी और पंजे लम्बे रहते हैं।

**रंग-रूप** : सिमतीतर के नर और मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं, लेकिन मादा कद में नर से कुछ बड़ी रहती है। लम्बाई लगभग १४ इंच। शरीर का ऊपरी हिस्सा भूरापन लिये सिलेटी, जो कत्थई और काले चिह्नों तथा टेढ़ी-मढ़ी लकीरों से भरा रहता है। एक काली रेखा चोंच की जड़ से आँख तक और दूसरी रेखा आँख के नीचे, तथा दो चौड़ी काली पट्टियाँ सर के ऊपर। डैने पर भूरी और कत्थई धारियाँ और बड़े पंखों पर भूरी और कत्थई पट्टियाँ। दुम काली, जिसके परों के सिरे ऊपर की ओर सिलेटी और नीचे की ओर रुपहले। इन परों के किनारों पर कत्थई बिंदियाँ। शरीर के नीचे का हिस्सा भूरापन लिये सफेद, जिसमें ठोड़ी को छोड़ कर बाकी सारा हिस्सा गाढ़े कत्थई चिह्नों से भरा। आँख कलछौंह भूरी। चोंच-हरछौंह भूरी। टाँगें प्याजी भूरी।

**निवास** : सिमतीतर हमारे देश का बहुत प्रसिद्ध पक्षी है, जो सारे हिमालय प्रदेश में ६ हजार फुट से १० हजार फुट तक की

ऊँचाई की पट्टी में पाया जाता है। गरमियों में यह नीचे उतर कर तराई और नीचे की पहाड़ियों पर ४ हजार फुट तक फैल, जाता है। यह तराइयों से लगे मैदानों में भी जहाँ-तहाँ फैल जाता है और दक्षिण भारत के पर्वतों पर भी काफी संख्या में पहुँच जाता है। नीलगिरि पर्वत पर गरमियों में इसको काफी देखा जाता है। हमारे देश से बाहर, ये सारे यूरोप में और एशिया में पाये जाते हैं, यहाँ ये गरमियों और जाड़ों में हमारे देश की तरह स्थान-परिवर्तन करते रहते हैं।

**विवरण** : सिमतीतर शिकार का प्रसिद्ध पक्षी ही नहीं, वरन् एक अनोखा पक्षी भी है, जिसकी बहुत-सी आदतें दूसरी चिड़ियों से भिन्न होती हैं। इसकी पतली और लम्बी चोंच नीचे कीचड़ में से कीड़े-मकोड़े और कटुए पकड़ने के उपयुक्त होती है क्योंकि ऊपरी चोंच का सिरा निचली चोंच से कुछ आगे बढ़ा और सूजा-सूजा होता है। वह इतना मुलायम होता है कि सिमतीतर बिना पूरी चोंच खोले चोंच के थोड़े भाग से ही कीड़े-मकोड़ों को मुँह में डाल सकता है।

सिमतीतर दिन भर किसी घनी झाड़ी या घास और नरकुल के बीच घुसा रहता है और शाम होते ही चराई के लिए बाहर निकलता है। इसीलिए इसकी आँखें काफी बड़ी होती हैं ताकि वह सूर्यास्त के समय की मन्दी रोशनी में भी उल्लू की तरह भली-भाँति देख सके। अपने चितले रंग के कारण, यह जमीन पर घास-फूस और पत्तियों के बीच इस प्रकार छिप जाता है कि निकट पहुँच जाने पर भी, इस पर हमारी निगाह नहीं पड़ती।

यह बहुत शर्मीला पक्षी है जो आहट पाकर झाड़ियों में ऐसा दुबक जाता है कि जल्द बाहर नहीं निकलता। कभी-कभी खतरा देख कर अपने बच्चों को दोनों टाँगों के बीच में दबा कर, एक स्थान से उड़ कर दूसरे स्थान पर चला जाता है। इसका मुख्य भोजन कीचड़ के कीड़े-मकोड़े आदि हैं, लेकिन केंचुए इसको सबसे ज्यादा पसन्द हैं।

**घोंसला** : सिमतीतर के जोड़ा बाँधने का समय मई से जुलाई तक है, जब इसका नर मादा को रिझाने के लिए आसमान में ऊँचे उड़ कर चक्कर लगाने लगता है और फिर धीरे-धीरे अपनी बोली बोलता हुआ नीचे उतरता है। इस तरह वह बार-बार अपने सौन्दर्य का प्रदर्शन करके मादा की स्वीकृति प्राप्त कर लेता है और फिर दोनों घोंसले की तैयारी में लग जाते हैं, जो किसी जलाशय या दलदल के आस-पास जमीन पर घास-पात के बीच में बनाया जाता है। ये जमीन पर किसी छिछले गढ़े में पत्ती और घास-फूस रखकर उसे मुलायम बना देते हैं और मादा इसी घोंसले में हलके भूरे या पत्थरी रंग के ४ अंडे देती है, जिन पर कत्थई या सिलेटी चित्तियाँ और धब्बे होते हैं।

नाप में ये अंडे करीब १.७५ × १.३० इंच के होते हैं।

## ३३८ चहा (Common Snipe : Capella Gallinago)

**पर्याय** : प्रख्यात पंककीर, तिवुद, लिल्पारवी, चहा चिरई, चेगा।

**पहचान** : पानी के निकट रहने वाला प्रसिद्ध शिकार का पक्षी जिसका ऊपरी भाग गाढ़ा भूरा और काली लकीरों से भरा होता है, नीचे का हिस्सा सफेद रहता है चोंच लम्बी और नोकीली रहती है।

**रंग-रूप** : चहे के नर-मादा एक-जैसे होते हैं, लेकिन मादा नर से कुछ बड़ी होती है। लम्बाई लगभग १० इंच। बदन का रंग गाढ़ी और स्पष्ट चित्तियों से भरा और शरीर में सफेदी का हिस्सा कम। सर का ऊपरी हिस्सा काला जिसके बीचोबीच हलके भूरे रंग की एक चौड़ी खड़ी पट्टी। दोनों आँखों के ऊपर सफेदी-मायल धारियाँ और गले का हिस्सा सफेद। चोंच से लेकर आँख तक एक खैरी पट्टी। गरदन और छत्ते का ऊपरी हिस्सा सफेदी-मायल, जिसमें गाढ़ी भूरी चित्तियाँ और धारियाँ। पीठ काली, दोनों कंधों पर चौड़ी ललछौंह भूरी पट्टियाँ और पीठ के निचले भाग पर सफेद धारियाँ। डैने गाढ़े भूरे, पंख के सिरे सफेद और दुम काली, जिसका किनारा नारंगी-भूरा। शरीर का निचला हिस्सा सफेद, लेकिन डैने के नीचे के हिस्से में भूरी धारियाँ। आँख गाढ़ी भूरी। चोंच कलछौंह भरी, जड़ के पास कत्थई। टाँगें जैतूनी।

चोंच लम्बी और पतली, जो सर पर कुछ मोटी हो जाती है। आँख बड़ी और सर में काफी पीछे की ओर। इनकी चोंच काफी लम्बी होती है और करीब-करीब इनके बाकी शरीर के आधे के बराबर होती है। लेकिन कुछ पनलवों की भी चोंच लम्बी होती है, इसलिए इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इन लम्बी चोंच वाले पनलवों के अँगूठे कुछ दूर तक झिल्ली से जुटे रहते हैं।

**निवास** : चहा हमारे यहाँ का बहुत प्रसिद्ध शिकार का पक्षी है, जिसको पहचानना उतना आसान नहीं है, जितना हम सोचते हैं, क्योंकि हमारे देश में चुपका, पनेवा आदि के इतने भाई-बन्धु हैं कि हम उन सबको शुरू में चहा ही समझते हैं। मौसमी पक्षी होने के कारण, ये जाड़ों में बाहर से आकर सारे देश में फैल जाते हैं, लेकिन इनकी संख्या उत्तर भारत में अधिक रहती है।

चहे हमारे यहाँ भरक पक्षी से दस-पन्द्रह दिन बाद आते हैं और सितम्बर के शुरू होते-होते इनकी काफी संख्या यहाँ पहुँच जाती है। यहाँ पूरा जाड़ा बिताकर के मार्च के अन्त में ये लौटते हैं, लेकिन कुछ पक्षी हिमालय के क्षेत्रों तथा घने जंगलों के बीच के जलाशयों में कुछ दिन और भी रह जाते हैं। हमारे देश में चहा और भरक इस तरह से बँटे हुए हैं कि जहाँ एक ज्यादा दिखाई पड़ता है, वहाँ दूसरा बहुत कम या बिल्कुल दिखाई नहीं पड़ता। उत्तर प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, काठियावाड़, कच्छ

और मध्य प्रदेश के पश्चिमी हिस्सों में, चहे अन्य स्थानों की अपेक्षा ज्यादा तादाद में दिखाई पड़ते हैं ।

**विवरण** : चहा झुंड में रहने वाले पक्षी हैं, जिन्हें ताल-तलैयों और झीलों के दलदली किनारे बहुत पसन्द हैं । नरई, गोंद आदि तालाबी घास से ढके हुए तालाबों को चहों का प्रिय अड्डा समझना चाहिए । दिन को जलाशयों के किनारे के अरहर के खेतों में चहों को तलाशने पर निराश नहीं होना पड़ेगा । पानी के निकट रहने पर भी चहे कभी इतने पानी में नहीं जाते कि उनकी छाती भीग जाये । आराम करते समय भी, ये नम या कीचड़ वाली जमीन पर नहीं बैठते । उड़ते समय, चहे अक्सर कुछ दूर तक तो लहराते हुए उड़ते हैं, फिर उनकी उड़ान सीधी हो जाती है ।

चहे का मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े हैं, जिसमें केंचुआ मुख्य है। चहा की चोंच तो जैसे कीचड़ में से कीड़ों को पकड़ने ही के लिए बनायी गई है । यह सिरे पर इस प्रकार घुंडीदार होती है कि चहे अपनी इच्छा से सर्फ सिरे को भी खोल-बंद कर सकता है ।

**घोंसला** : मौसमी पक्षी होने के कारण, चहे हमारे यहाँ कश्मीर को छोड़कर और कहीं अंडे नहीं देता, क्योंकि अंडे देने के समय तक ये हमारे देश से वापस चले जाते हैं ।

जोड़ा बाँधने के समय, चहे अपने परों से एक प्रकार की अजीब-सी आवाज करते हैं । इसके लिए वे ऊपर उड़ जाते हैं और वहाँ से दुम फैलाकर तेजी से नीचे उतरते हैं। इस समय इनकी दुम के किनारों के पंख बाहर की ओर फैले रहते हैं, जिनको हिलाने से एक प्रकार की अजीब-सी आवाज होती है। डर और खतरे के समय भी, चहा इन्हीं परों से आवाज करता है । इस प्रकार मादा को रिझाकर, ये अपना जोड़ा बाँध लेते हैं । फिर उसके बाद घोंसला बनाते हैं और अंडा देने की बारी आती है । ये पानी के किनारे की घास-पात तथा अन्य वनस्पति को दबा-दबा कर गोल गढ़ा-सा बना देते हैं, जिसमें मादा जुलाई में ४ अंडे देती है । अंडों का रंग हरा या जैतूनी होता है जिस पर गाढ़ी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं ।

नाप में अंडे करीब १.६ × १.१ इंच के होते हैं ।

## ३३९ भरक (Pintail Snipe : Capella Stenura)

**पर्याय** : शंकु पंककीर ।

**पहचान** : चहे की एक जाति जिसका रंग-रूप करीब-करीब उसी-जैसा होता है। इसकी भी चोंच चहे की तरह काफी लम्बी रहती है ।

**रंग-रूप** : भरक के नर मादा का रंग-रूप एक ही जैसा होता है, लेकिन कद में मादा नर से कुछ बड़ी होती है । नर की लम्बाई लगभग १०.५ इंच । यह रंग-रूप में चहे से इतना मिलता-जुलता है कि इसका अलग वर्णन करना बहुत मुश्किल है । रंग जरूर चहे से कुछ धूमिल होता है । दोनों को अलग पहचानना भी आसान नहीं होता । सिर्फ इनकी दुमों से ही इन दोनों को पहचानने में मदद मिलती है । चहे की दुम में चौदह या सोलह पर होते हैं, जिनके किनारे के दोनों पर पतले और कड़े होते हैं, लेकिन भरक के केवल बीच के दस पर बड़े रहते हैं और उनके दोनों ओर पतले और सीकेनुमा आठ-आठ पर होते हैं, जिनकी संख्या छब्बीस तक पहुँच जाती है । आँख गाढ़ी भूरी । चोंच कलछौंह भूरी । टाँगें जैतूनी ।

**निवास** : भरक भी हमारे यहाँ का मौसमी पक्षी है, जो प्रति वर्ष जाड़ों में यहाँ आकर, जाड़ा समाप्त होते-होते फिर यहाँ से चला जाता है । वैसे तो ये सारे देश में फैल जाते हैं, लेकिन इनकी अधिक संख्या भारत के दक्षिण-पूर्वी प्रदेशों की ओर ही रहती है । मध्य प्रदेश से कन्याकुमारी तक और बम्बई से बंगाल तक काफी संख्या में पाये जाते हैं । लेकिन असम प्रदेश में दूसरे चहों की अपेक्षा, भरक ही सबसे अधिक पाये जाते हैं। ये भारत में सब से पहले आने वाले चहे हैं, जिनकी वापसी भी सबसे बाद में होती है।

**विवरण** : भरक शक्ल-सूरत में ही नहीं, अपने स्वभाव में भी चहों से इतना मिलता-जुलता है कि उन्हीं बातों को फिर से दुहराना फिजूल है । हाँ, इसकी और चहे की खुराक में थोड़ा बहुत अन्तर रहता है जिसका मुख्य कारण इसकी चोंच है । चहे की चोंच में तो बहुत अधिक स्पर्श-शक्ति होती है, इस कारण उसे कीचड़ के भीतर से कीड़ों को पकड़ने में कठिनाई नहीं होती, लेकिन भरक की चोंच इतनी स्पर्श-शक्ति वाली न होने के कारण, उसे कीचड़ के बजाय किनारे पर के कीड़े-मकोड़ों से ही ज्यादातर अपना पेट भरना पड़ता है । वैसे वह घोंघे, कटुए और बीज आदि भी बहुत मजे में खा लेता है ।

भरक की उड़ान भी चहे-जैसी तेज न होकर, भारी और सुस्त होती है और इसकी बोली में भी थोड़ा फर्क है । इसकी बोली 'तिड़िक-तिड़िक' से मिलती है, लेकिन खतरा निकट देखकर ये बहुत तेजी से बोलता है ।

जोड़ा बाँधने के समय चहे की तरह, भरक भी अपनी दुम के पंखों से आवाज करता है, यद्यपि इसकी दुम के परों में फर्क होने के कारण उनमें से वैसी आवाज नहीं निकलती ।

**घोंसला** : मौसमी पक्षी होने के कारण भरक हमारे देश में अंडे नहीं देते और इसके लिए इन्हें साइबेरिया और पूर्वी प्रदेशों में जाना पड़ता है, जहाँ जून में ये पानी या दलदल के पास पानी की घास या नरकुल के बीच सूखी घास का कटोरानुमा घोंसला बनाते हैं । मादा प्रायः ४ अंडे देती है जो हल्के बादामी या हर-छौंह होते हैं । इन पर गाढ़े भूरे या सिलेटी चित्ते और बिंदियाँ पड़ी होती हैं ।

नाप में ये अंडे १.६० × १.१५ इंच के होते हैं ।

## ३४० बनचहा (Wood Snipe : Capella nemoricola)

**पर्याय** : बन पंककीर।

**पहचान** : अन्य चहों के रंग-रूप का पक्षी, जिसके निचले हिस्से पर धारियां पड़ी रहती हैं। चोंच अन्य चहो की भाँति काफी लम्बी रहती है।

**रंग-रूप** : बनचहा के भी नर-मादा एक रंग-रूप के होते हैं, लेकिन मादा कद में नर से कुछ बड़ी होती है। लम्बाई लगभग १२ इंच। शरीर का ऊपरी भाग काली और भूरी धारियों और रेशेनुमा चिह्नों से भरा। नीचे का भाग सफेद, जिस पर गाढ़ी भूरी टेढ़ी-मेढ़ी धारियाँ। इस प्रकार इसका सारा शरीर चितला दिखता है। डैने के बड़े पंख भूरे और दुम के १८ परों के बीच ६ परों का आकार अधिक चौड़ा।

**निवास** : बनचहा उन पक्षियों की श्रेणी में आता है जो गरमियों में हिमालय के आस-पास रहते हैं, फिर भी हमारे देश के बाहर बहुत कम जाते हैं। जाड़ों में ये पहाड़ों से उतर कर सारे देश में फैल जाते हैं और उस समय इन्हें दक्षिण भारत तक देखना कठिन नहीं होता। इस प्रकार इन्हें बारहमासी पक्षी कहा जा सकता है, जो हमारे देश के भीतर ही स्थान-परिवर्तन कर लेते हैं। बनचहा गरमियों में कश्मीर के पूर्वी भाग से असम तक १,००० से १२,००० फुट की ऊँचाई तक पाये जाते हैं और गरमियों में दक्षिण भारत की पहाड़ियों तक फैल जाते हैं। ये पहाड़ों के पक्षी तो हैं, लेकिन जाड़ों में तराइयों में भी उतर आते हैं।

**विवरण**: बारहमासी पक्षी होने पर भी, संख्या में कम होने के कारण यह हमारी निगाह तले बहुत कम पड़ता है। यह प्रायः अकेले ही रहता है और जोड़ा बाँधने के बाद भी इनके जोड़े दूर-दूर रहते हैं। बनचहा का मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े और छोटे घोंघे-कटुए हैं, लेकन ये गल्ला और बीज भी बड़े मजे में खाते हैं। ये बहुत सुन्दर और शर्मीले पक्षी हैं। इनकी उड़ान बहुत हलकी और कमजोर होती है। इनके रहने का सबसे अच्छा स्थान जंगल के किनारे के दलदबी स्थल हैं। ये वैसे तो बहुत शान्त और कम बोलने वाले पक्षी हैं, लेकिन उड़ते समय कभी-कभी इनकी कड़ी बोली सुनाई पड़ जाती है।

**घोंसला**: बनचहों के जोड़ा बाँधने का समय मई से जुलाई तक है, जब ये हिमालय के ७ हजार फुट तक के ऊँचे प्रदेशों में अन्य चहों की तरह, जमीन पर ही घास-पात रख कर अपना घोंसला बनाते हैं। मादा ४ अंडे देती है। इन अंडों का रंग प्याजी या पत्थरी होता है और उन पर गाढ़ी भूरी कत्थई और काली बिंदियाँ पड़ी होती हैं।

नाप में ये अंडे करीब १.७१ × १.२४ इच के होते हैं।

## ३४१ छोटा चहा (Jack Snipe : Lymnocryptes minimus)

**पर्याय**: अर्ध पंककीर, तिबद पनकौआ।

**पहचान**: यह चहा छोटे कद का होता है, लेकिन इसकी सब आदतें अन्य चहों-जैसी ही होती हैं। इसकी पीठ काली और हरी झलक वाली रहती है। सीना हलका बादामी जिस पर काले चिह्न और पेट सफेद रहता है। चोंच लम्बी रहती है।

**रंग-रूप** : छोटे चहे के नर-मादा भी रंग-रूप में एक-जैसे होते हैं, लेकिन मादा कद में नर से कुछ बड़ी होती है। लम्बाई लगभग ८.५ इंच। पीठ काली, जिसमें एक प्रकार की हरी झलक और कंधे से दुम तक दो पीली पट्टियाँ। सीना हलका बादामी और उस पर गाढ़े चिह्न। नीचे का हिस्सा सफेद और कुछ पंख भी सफेद। डैना चितला भूरा और उसके कुछ पंख सफेद। दुम कुछ नोकीली और गाढ़ी भूरी, जिसमें १२ पर होते हैं। सर पर चहे की तरह खड़ी धारी नहीं होती। आंख गाढ़ी भूरी। चोंच कत्थईपन भूरी। टाँगें पिलछौंह जैतूनी।

**निवास**: छोटा चहा, जैसा उसके नाम से स्पष्ट है, छोटे कद का चहा है, जो हमारे देश में जाड़ों के प्रारम्भ में आता है और जाड़ा समाप्त होते-होते फिर यहाँ से लौट जाता है। यह भी दक्षिण भारत की अपेक्षा उत्तर भारत में ही अधिक संख्या में पाया जाता है, लेकिन यहाँ भी संख्या में कम होने के कारण अक्सर हमारी निगाह तले नहीं पड़ता।

**विवरण**: छोटे चहे के रहने के स्थान प्रायः वही होते हैं, जहाँ दूसरे चहे पाये जाते हैं। लेकिन यह अन्य चहों की अपेक्षा घनी और नम जगह ज्यादा पसन्द करता है। यह घास और नरकुल में ऐसा दबक जाता है कि फिर इसको उड़ाना आसान नहीं होता। एक बार उड़ने पर, यह बिना किसी प्रकार की आवाज़ किए थोड़ा ही ऊपर जाकर, लहराता हुआ फिर नीचे उतर पड़ता है और तुरन्त किसी घनी जगह पर जाकर छिप जाता है। इसकी उड़ान हलकी और कमजोर होती है और यह उड़ कर ज्यादा दूर भी नहीं जाता। वैसे तो यह अकेले ही रहना पसन्द करता है, लेकिन कभी-कभी चार-छः चहे आस-पास भी दिखाई पड़ जाते हैं।

इसका मुख्य भोजन तो पानी और कीचड़ के कीड़े-मकोड़े और घोंघे, कटुए आदि हैं, लेकिन यह गल्ला और बीज वगैरह भी खा लेता है।

**घोंसला**: मौसमी पक्षी होने के कारण, छोटा चहा हमारे देश में अंडे नहीं देता, लेकिन विदेशों में जून के करीब किसी दलदली स्थान में पानी के किनारे जमीन पर ही थोड़ी घास-फूस और पत्ती आदि बिछा कर, इसकी मादा ४ अंडे देती है। यह अंडे चहे के कद के हिसाब से तो बड़े ही कहे जायेंगे। अंडों का रंग हरछौंह होता है, जिस पर गाढ़ी भूरी कत्थई और बैंगनी चित्तियाँ पड़ी होती हैं।

ये अंडे करीब १.५० × १.१० इंच के होते हैं।

## ३४२ ओहारी (Painted Snipe : Rostratula Benyhalensis)

**पर्याय:** चित्रित कुनाल, कोन, राजा चहा, वगरजी, तिबद।

**पहचान:** ओहारी बहुत सुन्दर चहा है, जिसका ऊपरी भाग भूरा और काले और सफेद चिह्नों से भरा रहता है। सीना भूरा और पेट सफेद रहता है। एक चौड़ी हलकी भूरी पट्टी बीच माथे पर रहती है और एक आँख को घेर कर उसके पीछे तक चली जाती है।

**रंग-रूप :** ओहारी के नर-मादा के रंग-रूप में थोड़ा भेद होता है और मादा कद में नर से कुछ बड़ी भी होती है। नर की लम्बाई लगभग १० इंच और उसका ऊपरी हिस्सा जैतूनी भूरा, जिसमें अस्पष्ट-सी काली धारियाँ पड़ी होती हैं। माथे के बीचो-बीच एक चौड़ी भूरी खड़ी पट्टी और इसी प्रकार की एक पट्टी आँख के चारो ओर होकर पीछे तक चली जाती है। डैनों के परों पर चौड़ी, हरी सफेद धारियाँ और भूरी चित्तियाँ और पीठ पर दोनों ओर चौड़ी, हलकी भूरी पट्टी । दुम और दुमगज़ा निलछौंह सिलेटी रहता है, जिसमें काली धानी चित्तियाँ।

गाल सफेदी-मायल और गरदन के दोनों बगली हिस्से और सीना भूरा जिसमें सफेद लकीरें। नीचे का हिस्सा धुर सफेद । मादा के सर पर भी चौड़ी, हलकी भूरी खड़ी पट्टी और आँख को घेरे हुए एक सफेद पट्टी, जो आँख के पीछे तक चली जाती है। सर और गरदन का बाकी हिस्सा हलका कत्थई जो गले की ओर जाकर हलका और ऊपर की ओर जाकर गहरा हो जाता है। पीठ पर दोनों ओर हलके भूरे रंग की पट्टी और डैने चटक जैतूनी हरे, जिन पर काली पतली धारियाँ। दुम और निचला हिस्सा नर-जैसा। चोंच पतली लम्बी, सिरे पर फूली हुई तथा नीचे की ओर झुकी हुई । आँख भूरी। चोंच प्याजी भूरी। टाँगें हरछौंह।

**निवास:** ओहारी सबसे सुन्दर बारहमासी पक्षी है, जो यहाँ ही थोड़ा-बहुत स्थान-परिवर्तन कर लेता है। यह सारे देश में फैला हुआ है और हिमालय में भी उपयुक्त स्थानों पर ५,००० फुट तक पाया जाता है।

**विवरण:** ओहारी यहाँ का प्रसिद्ध बारहमासी पक्षी है, जो अन्य चहों की तरह दलदली जलाशयों के आस-पास काफी संख्या में पाया जाता है। इन्हें ऐसे स्थान ज्यादा पसन्द हैं, जहाँ से थोड़ी दूर पर छिछले पानी की खुली पट्टी और फिर थोड़ी दूर तक घास-फूस और छिपने की जगहें हों। ऐसे स्थानों पर ये प्रायः अकेले या आठ-दस के झुंडों में रहते हैं।

ओहारी का मुख्य भोजन कीचड़ के कीड़े-मकोड़े और छोटे घोंघे, कटुए हैं, लेकिन ये बीज और गल्ला भी मजे में खाते हैं। मादा एक प्रकार की कर्कश बोली बोलती है, लेकिन नर की बोली तेज सीटीनुमा होती है।

खतरे के समय ये फुर्ती से हवा में नहीं उड़ते, बल्कि काहिली से कुछ दूर टाँगों को लटकाये हुए ऊपर उठते हैं। इनकी उड़ान भारी होती है और थोड़ी ही दूर जाकर ये फिर जमीन पर उतर पड़ते हैं। जैसे ही खतरा दूर हो जाता है, ये फिर उसी जगह लौट जाते हैं जहाँ से उड़े थे।

इनको दोपहर के सिवा, सुबह-शाम और रात को भी चरते हुए देखा जा सकता है। चरते समय ये अक्सर पानी से कुछ दूर घास के मैदानों में और खेतों में चले जाते हैं, जहाँ किसी की आहट पाने पर ये फिर पानी के पास की छिपने की जगह में चले जाते हैं। जरूरत पड़ने पर ये बड़े मजे में तैर भी लेते हैं, यद्यपि इन्हें तैरने की आवश्यकता कम ही पड़ती है। ओहारी जोड़ा बाँधने के समय और खतरे को निकट देखकर, अक्सर अपने रंगीन परों को आगे की ओर फैला कर अपनी चोंच से मिला लेता है और दुम को हिलाते हुए एक प्रकार की 'सो-सी-सी' की आवाज करता है।

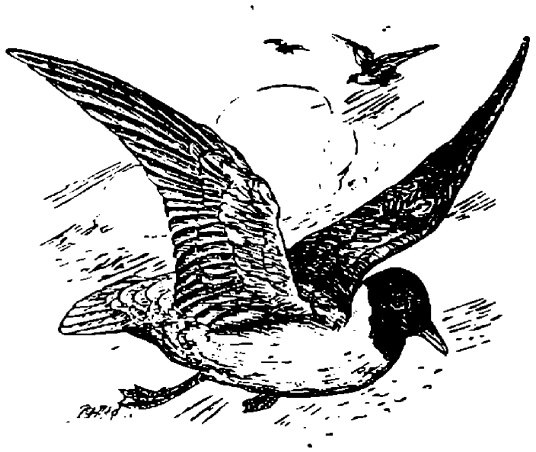
**घोंसला :** ओहारी के जोड़ा बाँधने का समय मई से जुलाई तक है। ये जमीन पर अपना चौड़ा-सा घोंसला बनाते हैं जो बीच में कुछ थोड़ा-सा दबा होता है और घास-फूस और सेवार आदि का बना होता है तथा पानी से लगी किसी घनी झाड़ी में या किनारे पर ही रखा रहता है। मादा इसमें चमकीले पीले रंग के ३-४ अंडे देती है, जिन पर गहरी भूरी और कलछौंह चित्तियाँ और धारियाँ पड़ी होती हैं।

नाप में ये अंडे १.३९ × १ इंच के होते हैं।

## ३४३ सामुद्रिक (Black headed Gull : Larus Ridibundus)

**पर्याय:** काल-शीर्ष गंगा-चिल्ली।

**पहचान :** पानी के ऊपर उड़ने वाली चिड़िया जिसका ऊपरी भाग राखी और नीचे का हिस्सा सफेद रहता है।



सामुद्रिक

**रंग-रूप** : सामुद्रिक १६ इंच लम्बा पक्षी है जिसके नर और मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। इसका सर, गरदन, दुम और नीचे का शेष भाग सफेद रहता है। एक छोटा-सा भूरा चित्ता आँखों के सामने और दूसरा कान के पीछे रहता है। पीठ और डैने राखी होते हैं। डैने के बाहरी पंख सफेद होते हैं जिन पर स्पष्ट काली धारियाँ पड़ी रहती हैं। जाड़ों में इसका पूरा सर, ऊपरी गरदन और पीठ कलछौंह गाढ़ी भूरी हो जाती हैं। आँख की पुतली गाढ़ी भूरी, आँख के छल्ले, चोंच और टाँगें गाढ़ी लाल हो जाती हैं। इसकी चोंच मजबूत, दबी हुई और आगे की ओर झुकी रहती है। डैने लम्बे और पिछला अँगूठा छोटा रहता है। शेष अँगूठे आपस में एक दूसरे से बत्तखों की तरह पतली झिल्ली से जुटे रहते हैं।

**निवास** : सामुद्रिक यूरोप तथा एशिया के दक्षिण-पश्चिम भाग का पक्षी है जो हमारे देश में अन्य मौसमी पक्षियों की तरह अगस्त में आकर मार्च समाप्त होते-होते यहाँ से लौट जाता है। कुछ पक्षी मई तक यहाँ रह जाते हैं। यह कश्मीर तथा समुद्री तटों के अलावा उत्तर भारत की बड़ी नदियों तथा झीलों के निकट काफी संख्या में देखा जा सकता है। दक्षिण की ओर यह ट्रावनकोर तक चला जाता है।

**विवरण** : सामुद्रिक हमारे यहाँ का मौसमी पक्षी है जिसे अंग्रेजी में गल कहते हैं। समुद्र के तट पर रहने के कारण इसको हमारे यहाँ सामुद्रिक कहते हैं। ये वैसे तो समुद्र के किनारे काफी संख्या में दिखाई पड़ते हैं, लेकिन जाड़ों में इन्हें बड़ी नदियों तथा जलाशयों में भी देखा जा सकता है। इन्हें कुररी का भाई-बन्धु कहना अनुचित न होगा। ये उन्हीं की तरह जाल-पाद भी होते हैं।

यह वैसे तो साफ-सुथरी चिड़िया है, लेकिन इसका भोजन बहुत गंदा होता है। कुररियों की तरह पानी में से जिन्दा मछलियों को आसानी से न पकड़ सकने के कारण इसको मुरदाखोर पक्षी बनना पड़ा है। पानी में किसी तरह की लाश को बहते हुए देख कर यह कुररियों के साथ ऊपर उड़ कर उस पर चोंच मारते या उसके साथ-साथ पानी में तैरते दिखाई पड़ते हैं। इनका अधिक समय हवा में उड़ते बीतता है। समुद्र तट पर भी ये पानी में फेंकी हुई सड़ी मछलियों, लाशों तथा इसी प्रकार की अन्य वस्तुओं से अपना पेट भरते हैं। कभी-कभी ये मछली भी पकड़ लेते हैं। ये बहुत शोर मचाने वाले पक्षी हैं जिनकी क्री, क्री जैसी कर्कश बोली इनकी उपस्थिति का पता बता देती हैं। ये प्रायः छोटे-छोटे झुंडों में दिखाई पड़ते हैं।

**घोंसला** : यूरोप आदि देशों में ये अप्रैल के बाद जोड़ा बाँधते हैं और किसी टापू या सुरक्षित बालू के टीलों पर कुररियों की भाँति बहुत पक्षी एक साथ जमीन पर पानी की घास तथा सेवार आदि से अपना भद्दा-सा घोंसला बना कर उसी में २ से ४ तक अंडे देते हैं।

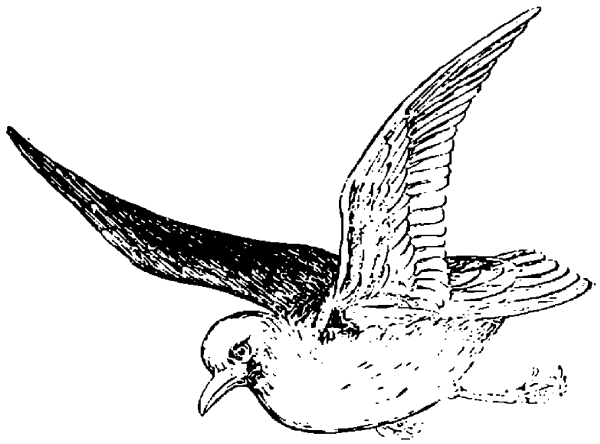
इनके घोंसले चौड़े बैजाबी और सिरे की ओर नोकीले रहते हैं। अंडों का रंग पत्थरी या भूरा रहता है जिन पर बरछीह भूरी या बैंगनी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

अंडे करीब २.०५ × १.५ इंच के होते हैं।

## ३४४ घोमरा (Brown headed Gull : Larus brunneicephalus)

**पर्याय** : बभ्रु-शीर्ष, गंगा-चिल्ली।

**पहचान** : घोमरा के शरीर का ऊपरी भाग राखी और नीचे का सफेद। सामुद्रिक की तरह बड़ी नदियों, समुद्र-तटों तथा जलाशयों के ऊपर उड़ती देखी जा सकती हैं।



घोमरा

**रंग-रूप** : घोमरा सामुद्रिक से कुछ बड़ा पक्षी है। यह १७ इंच से कुछ बड़ा ही रहता है और इसके भी नर-मादा एक-जैसे रहते हैं। इसके शरीर का ऊपरी भाग और डैने राखी रहते हैं। सर, गरदन, दुम तथा नीचे का सारा हिस्सा सफेद होता है। इसके भी आँख के आगे और कान के पीछे भूरे चित्ते रहते हैं। डैने के सिरे काले और भीतर के कुछ पंख सफेद रहते हैं। आँख की पुतली गाढ़ी भूरी, आँख के छल्ले पीले और चोंच तथा टाँगें गहरे लाल रंग की होती हैं। चोंच सामुद्रिक की तरह मजबूत, दबी और आगे की ओर झुकी रहती है। डैने लम्बे और जालपाद रहते हैं।

**निवास** : घोमरा भी हमारे यहाँ का मौसमी पक्षी है जो हमारे यहाँ जाड़ा शुरू होते ही आ जाता है और जाड़ा समाप्त होते-होते यहाँ से वापस चला जाता है। यहाँ यह बड़ी नदियों, जलाशयों तथा समुद्री तटों पर काफी संख्या में देखा जा सकता है।

**विवरण** : घोमरा भी समुद्र के किनारे रहने वाला पक्षी है जिसे हम बड़ी नदियों तथा झीलों में भी देख सकते हैं। ये वैसे तो पानी के ऊपर हवा में अपने शिकार के घात में उड़ते रहते

हैं लेकिन कभी-कभी किसी लाश या ऐसी ही वस्तु को बहते देख कर ये उसके आस-पास पानी में तैरते भी देखे जा सकते हैं। इनका मुख्य भोजन मांस, मछलियाँ तथा हर तरह की लाश हैं। इनकी और सब आदतें सामुद्रिक की ही तरह होती हैं और ये भी उन्हीं की तरह शोर मचाने वाले पक्षी हैं जो एक प्रकार की कर्कश बोली बोलते हैं। ये प्रायः छोटे झुंडों में दिखाई पड़ते हैं।

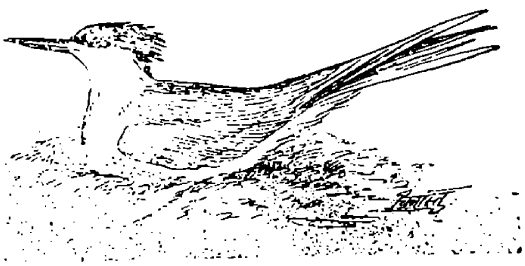
**घोंसला :** घोसरा जोड़ा बाँधने के समय हमारे देश से वापस चले जाते हैं, लेकिन ये यूरोप आदि देशों में अप्रैल से जून तक अपना घास-पात तथा काई आदि का बड़ा और भद्दा-सा घोंसला बनाते हैं। ये घोंसले समुद्र-तट या किसी टापू पर रेत के ऊपर ही रखे रहते हैं। सामुद्रिक की भाँति ये भी काफी बड़ी संख्या में एक साथ ही अपने घोंसले बनाते हैं जिनमें मादा २ से ४ तक अंडे देती है। अंडों का रंग पत्थरी या भूरा रहता है जिन पर कत्थई या बैंगनी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

नाप में ये अंडे करीब २.०७ × १.७ इंच के होते हैं।

## ३४५ कुररी (Whiskered Tern : Chlidonias Hylrida)

**पर्याय :** सिर-कर्ण कुररी, धोबिन, पंक्ति चीर, शरीरी।

**पहचान :** इस कुररी का ऊपरी भाग राखी मायल सिलेटी और नीचे का सफेद। गर्मियों में सर का ऊपरी और बगली हिस्सा काला हो जाता है।



कुररी

**रंग-रूप :** कुररी १० इंच लम्बी चिड़िया है जिसमें इसकी ३ इंच की दुम भी शामिल है। इसके नर और मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। जाड़ों में इसका सर सिलेटी मायल रहता है जिस पर काली घनी धारियाँ पड़ी रहती हैं। आँख के ऊपर ही कनपटी एक काली पट्टी गुद्दी तक चली जाती है। सर का बाकी हिस्सा, गरदन तथा नीचे का सारा भाग सफेद रहता है। ऊपर का हिस्सा राखीपन लिए सिलेटी। डैने, सिलेटी और उसका भीतरी भाग भूरा रहता है। गर्मियों में सर का ऊपरी और बगली हिस्सा काला हो जाता है। पीठ का रंग भी गाढ़ा हो जाता है। गरदन और सीना गाढ़ा सिलेटी हो जाता है और नीचे पेट तक का हिस्सा भी काला हो जाता है। आँख की पुतली भूरी, चोंच लाल और टाँगें गंदे लाल रंग की होती हैं। चोंच सीधी, नोकीली और दबी-दबी-सी रहती है। डैने लम्बे, दुम थोड़ी दुफंकी और पैर जालपाद होते हैं।

**निवास :** कुररी हमारे यहाँ की प्रसिद्ध बारहमासी पक्षी है जो उत्तर भारत के प्रायः सभी नदियों, तालाबों और झीलों के निकट दिखाई पड़ती है। यह वैसे तो ज्यादातर उत्तर भारत में ही रहना पसन्द करती है, लेकिन कुछ पक्षी दक्षिण भारत तक फैल जाते हैं।

**विवरण :** इस कुररी को समुद्र और बड़ी नदियों की अपेक्षा दलदली जलाशय ज्यादा पसन्द हैं। यह धान के खेतों और कमल से भरे तालाबों के आस-पास भी कीड़े-फतिंगे और मछलियों का शिकार करती दिखाई पड़ती है जो इसका मुख्य भोजन है।

शिकार करते समय इनका झुंड किसी तालाब के ऊपर फैल कर इस प्रकार उड़ता है जैसे जंगल में हाका किया जाता है। रास्ते में जो भी पाँखी चिडरा, आदि फतिंगे या पानी के कीड़े इन्हें मिलते हैं वे इनसे बच कर जाने नहीं पाते। कभी-कभी ये छोटी मछलियों को भी पकड़ लेती हैं।

**घोंसला :** कुररी के जोड़ा बाँधने का समय जून से अगस्त तक रहता है जब ये पानी की घास आदि का छिछला और गोल घोंसला बनाती हैं जो अक्सर कमल के चौड़े पत्ते पर रखा रहता है। कभी-कभी ये अपना घोंसला नरकुलों के बीच और कभी-कभी एकदम खुले स्थान पर भी रख देती हैं। ये उत्तर प्रदेश तथा कश्मीर की झीलों में मिलती हैं। समय आने पर मादा इसमें २ से ४ तक अंडे देती है लेकिन ज्यादातर इनके ३ ही अंडे देखने में आते हैं। अंडे कुछ चौड़े और बैजावी होते हैं जिनका सिरा नोकीला रहता है। अंडों का रंग हलका हरा या निलछौंह रहता है जिन पर कलछौंह भूरी या कत्थई बिन्दियाँ, चित्ते तथा चिह्न पड़े रहते हैं।

अंडों की नाप लगभग १.५१ × १.०९ इंच रहती है।

## ३४६ बड़ी कुररी (Common River Tern : Sterna Aurantia)

**पर्याय :** किनाई, गंगा कुररी, बड़ी धोबिन।

**पहचान :** इसका ऊपरी भाग सिलेटी और नीचे का सफेद रहता है। गर्मियों में सर का ऊपरी भाग काला हो जाता है।

**रंग-रूप :** यह कुररी हमारे यहाँ की बहुत प्रसिद्ध चिड़िया है जिसके नर-मादा एक-जैसे होते हैं। इसकी लम्बाई १६ इंच होती है। इसमें इसकी ६ इंच लम्बी दुफंकी दुम भी शामिल है। जाड़ों में इसका ऊपरी भाग सिलेटी रहता है जो सर के ऊपर गहरा और दुम की ओर हलका हो जाता है। नीचे का हिस्सा सफेद रहता है जिसमें एक प्रकार की हलकी राखी झलक रहती है।

गरमियों में इसके सर का ऊपरी भाग और बगल के दोनों हिस्से काले हो जाते हैं और आंख के नीचे एक सफेद चित्ता पड़ जाता है। आंख की पुतली भूरी, चोंच गाढ़ी पीली और टांगें लाल होती हैं। चोंच लम्बी और नोकीली और दबी-दबी-सी रहती है। डैने और दुपंकी दुम काफी लम्बी रहती हैं। पैर छोटे होते हैं जिनके अंगूठे बत्तखों की तरह आपस में एक झिल्ली से जुटे रहते हैं।

**निवास :** कुररी हमारे यहाँ की बारहमासी चिड़िया है जिसे हम अपने देश की प्रायः सभी नदियों, झीलों तथा जराशयों के आस-पास देख सकते हैं।

**विवरण :** कुररी पानी के आस-पास रहने वाली चिड़िया है जो अकेले या छोटे झुंडों में पानी के करीब बीस-तीस फुट ऊपर उड़ती दिखाई पड़ती हैं। इसके पैर बत्तखों की तरह जालपाद होते हैं फिर भी ये पानी में नहीं तैरतीं और न पेड़ पर ही बैठती हैं। पेट भर जाने या थक जाने पर इन्हें बालू पर बैठे देख सकते हैं। उड़ते समय ये अपने मजबूत और लम्बे पंख तेजी से चलाती रहती हैं और नीचे की ओर सर झुका कर मछलियों की टोह लेती रहती हैं। शाम को पानी की सतह से चोंच मिलाकर इनका उड़ना बहुत भला मालूम होता है। इनका मुख्य भोजन मछलियाँ हैं, लेकिन कभी-कभी इन्हें हम नदी में बहते हुए लाशों पर भी चोंच मारते देखते हैं।

**घोंसला :** यह कुररी मार्च से मई के बीच में जोड़ा बाँधती है जिसके बीच इनके झुंड खुली रेत पर छिछला गड्ढा बनाकर अंडे देते हैं। यदि संभव होता है तो ये अंडे देने के लिए ऐसे टापू की तलाश करती हैं जो आदमियों की पहुँच से बाहर हों। इनके अंडों के पास जैसे ही कोई पहुँचता है, ये उसके सर के ऊपर तेज आवाज करते हुए चक्कर लगाने लगती हैं।

मादा एक बार में २ या ३ अंडे देती है, जो चौड़े बैजावी और थोड़े चमकीले होते हैं। अंडों का रंग हरापन लिये राखी या हलका पत्थरी रहता है जिन पर छोटी-छोटी गाढ़ी भूरी या बैंगनी चित्तियाँ और धब्बे पड़े रहते हैं। अंडे रेत के रंग में ऐसे मिल जाते हैं कि बहुत पास जाने पर ही निगाह पड़ती है।

नाप में ये अंडे करीब १.६५ × १.२५ इंच के होते हैं।

## ३४७ कलपेटी कुररी (Black bellied Tern : Sterna Melanogaster)

**पर्याय :** कृष्णोदर कुररी।

**पहचान :** इसका ऊपरी भाग राखी-मायल सिलेटी और नीचे का आगे का हिस्सा सिलेटी भूरा और सीने से पीछे का काला रहता है। सर का ऊपरी भाग भी काला रहता है।

**रंग-रूप :** इस कुररी को इसके काले पेट के कारण ही यह नाम मिला है। यह १३ इंच की चिड़िया है जिसमें इसकी ५ इंच लम्बी दुपंकी दुम भी शामिल है। इसके नर मादा एक-जैसे होते हैं। इसके सिर का ऊपरी तथा दोनों बगली हिस्से काले रहते हैं। ऊपर का सारा हिस्सा राखी-मायल सिलेटी रहता है। डैने भी इसी रंग के होते हैं, लेकिन बाहर के पंखों पर कुछ सफेदी झलक और भीतर के पंखों पर कुछ भूरापन रहता है। ठुड्डी सफेद रहती है जिसमें आगे चलकर सीने तक का हिस्सा सिलेटी मायल भूरा और उसके बाद का कुल हिस्सा घुर काला रहता है।

जोड़ा बाँधने के बाद कुछ समय के लिए हलकी काली टोपी और नीचे का काला भाग सफेदी में बदल जाता है। आंख की पुतली गाढ़ी भूरी, चोंच नारंगी पीली और टांगें नारंगी लाल रहती हैं। पैर बत्तखों की तरह जालपाद होते हैं।

**निवास :** कलपेटी कुररी हमारे देश की बारहमासी चिड़िया है जो बड़ी कुररी से संख्या में कम होकर भी उससे अधिक स्थानों में फैली हुई है। हमारे देश में यह प्रायः सभी नदियों, झीलों तथा जलाशयों के पास कुररियों की भाँति हवा में उड़ती दिखाई पड़ती हैं। पहाड़ों पर यह ढाई हजार फुट से ऊपर नहीं जाती और दक्षिण भारत की अपेक्षा उत्तर भारत में अधिक दिखाई पड़ती हैं।

**विवरण :** अन्य कुररियों की भाँति यह भी पेड़ों पर नहीं बैठती और न पानी में तैरना ही पसन्द करती है। इसकी आदतें दूसरी कुररियों-जैसी ही होती हैं और इसे हम अन्य कुररियों के साथ शिकार करते देख सकते हैं। यह अकेली या छोटे झुंड में पानी के ऊपर उड़ कर मछलियों का शिकार करती है जो इसका मुख्य भोजन है। यह भी मुर्दाखोर होती है और इसे हम नदी में बहती लाशों पर चोंच मारते देख सकते हैं। कभी-कभी यह शाम को खुश्की पर भी फतिंगों को पकड़ कर अपना पेट भरती है। अन्य कुररियों की भाँति यह भी मछली को सर की ओर से खाती है जिससे उसके सुफने दब कर इसके पेट में चले जाएँ और खड़े हो कर इसका गला न फाड़ दें।

**घोंसला :** इसके जोड़ा बाँधने का समय मार्च से मई तक रहता है, जब यह झुंड में किसी टापू या सुरक्षित रेत के टुकड़े पर छिछला-सा गढ़ा बना कर जमीन पर ही अपने अंडे देती है।

अंडों की संख्या २-३ रहती है जो चौड़े-बैजाबी और सिरे की ओर नोकीले रहते हैं। इनका रंग संदली या हलका भूरा रहता है जिन पर ललछौंह या बैंगनीपन लिये भूरे चित्ते और धब्बे पड़े रहते हैं।

नाप में ये अंडे करीब १.२५ × ०.९५ इंच के होते हैं।

## ३४८ छोटी कुररी (Little Tern : Sterna albifrons)

**पर्याय** : कुररिका, छोटी धोबिन ।

**पहचान** : इसका ऊपरी भाग राखीमायल सिलेटी और नीचे का सफेद रहता है। अन्य कुररियों की तरह यह पानी के निकट रहती है।



छोटी कुररी

**रंग-रूप** : यह ९ इंच की छोटी कुररी है जिसमें तीन सवा तीन इंच लम्बी दुम भी शामिल है। इसके नर-मादा एक ही जैसे होते हैं। इसका सारा ऊपरी भाग राखी मायल सिलेटी और नीचे का सफेद होता है। डैने के बाहरी दो पंख भूरे रहते हैं। दुम लम्बी और दुफंकी होती है और डैने भी काफी लम्बे रहते हैं। चोंच नोकीली और दबी-सी रहती है। आँख की पुतली, चोंच गाढ़ी पीली और टाँगें नारंगीपन लिये लाल रंग की होती हैं।

**निवास** : यह कुररी हमारे यहाँ की मौसमी चिड़िया है जो जाड़ों में हमारे देश के सारे उत्तरी भाग में फैल जाती है। दक्षिण की ओर यह गोदावरी नदी के आगे नहीं जाती। जाड़ा समाप्त होते-होते ये फिर अपने देश को लौट जाती हैं।

**विवरण** : छोटी कुररी बड़ी नदियों, झीलों तथा अन्य बड़े जलाशयों के अलावा नदियों के मुहानों और समुद्र-तट पर भी दिखाई पड़ती है। इसका मुख्य भोजन छोटी-छोटी मछलियाँ हैं जिनका शिकार यह अन्य कुररियों की भाँति करती है। इसकी और सब आदतें दूसरी कुररियों के अनुरूप ही होती हैं। इससे इन्हें दोहराना बेकार ही है। ये प्रायः झुंड में दिखाई पड़ती हैं और पानी की सतह से १५–२० फुट की ऊँचाई पर उड़ा करती हैं। ये भी पेड़ों पर नहीं बैठतीं और जालपाद होने पर भी इन्हें बत्तखों की तरह पानी में तैरना पसन्द नहीं आता। इन्हें घने जंगल और ऊँचे पहाड़ भी पसन्द नहीं हैं।

**घोंसला** : इनके जोड़ा बाँधने का समय मार्च से मई तक रहता है, लेकिन उस समय यह हमारा देश छोड़ देती हैं। अपने देश में जाकर ये समुद्र-तट पर अथवा किसी नदी के किनारे बालू में छिछले गढ़े बना कर झुंड में अंडे देती हैं। अंडों की संख्या २ या ३ रहती है जो अंडाकार और सिरे की ओर नोकीले रहते हैं। इनका रंग हलका भूरा राखी रहता है जिन पर कत्थई चित्तियाँ, बिंदियाँ और धब्बे पड़े रहते हैं।

ये अंडे करीब १.२४ × १.०२ इंच के होते हैं।

## ३४९ पनचिरा (Indian Skimmer : Rhynchops Albicollis)

**पर्याय** : भारत शरारि ।

**पहचान** : कुररी-जैसा पक्षी जिसका आधा अगला ऊपरी भाग कलछौंह गाढ़ा भूरा और नीचे का सफेद रहता है। ऊपरी चोंच कुछ छोटी रहती है।

**रंग-रूप** : पनचिरा १७ इंच का पक्षी है जिसके नर और मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। इसके सर का ऊपरी हिस्सा, पीठ और डैने कलछौंह भूरे होते हैं। डैने के भीतरी पंखों के सिरे सफेद, पिछली पीठ, दुम और नीचे का सारा हिस्सा भी सफेद रहता है। दुमगज़े के बीच से होकर एक कलछौंह भूरी पट्टी दुम के बीच के दोनों परों तक चली जाती है। इसकी ऊपरी चोंच निचली चोंच से कुछ छोटी होती है। डैने लम्बे और नोकीले, दुम छोटी, और थोड़ी दुफंकी और पैर छोटे और जलपाद होते हैं। चोंच लम्बी नोकीली और चपटी रहती है। आँख की पुतली भूरी, चोंच गाढ़ नारंगी जिसके सिरे पीले और टाँगें चटक सिंदूरी रंग की रहती हैं।

**निवास** : पनचिरा हमारे देश का बारहमासी पक्षी है जो यहीं थोड़ा स्थान-परिवर्तन करके बाहर नहीं जाता। यह हमारे देश में फैला हुआ है जिसे हम अपने यहाँ की बड़ी नदियों, झीलों, जलाशयों तथा नदी के मुहानों पर देख सकते हैं। यह ऊँचे पहाड़ों और घने जंगलों की ओर नहीं जाता।

**विवरण** : पनचिरा को यह नाम उसकी तेज छुरी-जैसी लम्बी चोंच के कारण मिला है जिसका ऊपरी हिस्सा निचले हिस्से से छोटा रहता है। यह पानी की सतह पर उड़ते समय अपनी चोंच से पानी को चीरता चला जाता है और जो भी मछली इसकी चोंच के सामने आ जाती है वह उसी में बिंध जाती हैं। इसका मुख्य भोजन मछलियाँ हैं।

पनचिरा को हम सभी बड़े और खुले जलाशयों तथा बड़ी नदियों में शिकार करते देख सकते हैं। इसके शिकार का समय सुबह और शाम को रहता है और यह थोड़ी-थोड़ी देर बाद सुस्ताने तथा अपनी पकड़ी हुई मछली को खाने के लिए किनारे पर लौट आता है। कुररियों की भाँति यह भी न तो पेड़ों पर बैठता है और न पानी में तैरना ही पसन्द करता है।

देखने में पनचिरा कुररियों जैसा होकर भी उसकी जाति का पक्षी नहीं है। इसे हम उसका निकट संबंधी जरूर कह सकते हैं। शिकार करते समय पनचिरे अक्सर आठ-दस के झुंड में दिखाई पड़ते हैं जो किनारे की मछलियों को घेर कर उनका शिकार करते हैं। कभी-कभी इन्हें अकेले भी शिकार करते देखा जा सकता है। शिकार करते समय यह अपनी निचली चोंच पानी के भीतर और ऊपरी चोंच पानी से ऊपर रखता है।

**घोंसला** : पनचिरा के जोड़ा बाँधने का समय मार्च से मई तक रहता है, जब ये कुररियों की तरह रेत पर छिछला गढ़ा

बना कर झुंड में एक ही स्थान पर अपने अंडे देते हैं। अंडों की संख्या प्रायः ४ रहती है। इनके अंडे चौड़े बैजाकी और सिरे की ओर नोकीले रहते हैं जिन पर थोड़ी चमक भी रहती है। इनका रंग हरापन अथवा राखीपन लिए सफेद रहता है जिस पर गाढ़ी भूरी कत्थई या बैंगनी बिंदियाँ और चित्ते पड़े रहते हैं।

अंडे करीब १.६० × १.१८ इंच के होते हैं।

## ३५० जलसिंह (Spotted billed Pelican : Pelecanus Philippensis)

**पर्याय** : पीलो, जलसिंघ, हवासिल, हवासिन, गगन मेड़ मेरुआ, पृषत चंचु प्लव, गोरा-पल्लो, पियन।

**पहचान** : बड़ा-सा भारी-भरकम पक्षी जिसकी लम्बी चोंच के नीचे एक थैली-सी लटकती रहती है जिसमें यह मछलियों को भर लेता है। टाँगें छोटी और जालपाद रहती हैं। यह पानी के निकट ही दिखाई पड़ता है।

**रंग-रूप** : जलसिंह के नर-मादा एक ही रंग-रूप होते हैं। सारे शरीर की पोशाक सफेद लेकिन दुम का निचला भाग, दुम-गज़ा और डैने के कुछ पर गुलाबी। चोंटी और गरदन पर के परों में मूरेपन की झलक और डैने पर के कुछ पर कलछौंह। पंखे और दुमढकने काले और दुम का रंग हलका सिलेटी। चोटी और गरदन के बाल घुँघराले, जो देखने में बहुत सुन्दर लगते हैं।

ऊपरी चोंच निचली चोंच से बड़ी और चपटी तथा उसका सिरा मुड़ा हुआ। निचली चोंच के नीचे गंदे बैंगनी रंग की एक लम्बी-सी थैली लटकती है, जो आवश्यकतानुसार काफी फैल सकती है। ऊपरी चोंच का रंग गुलाबीपन लिये पीला, जिस पर घनी काली चित्तियाँ। आँख की पुतली पिलछौंह जिसके चारों ओर खाल पीली।

**निवास** : जलसिंह मौसमी पक्षी है, जो यहाँ जाड़े के प्रारम्भ में आकर, जाड़ा समाप्त होते-होते यहाँ से वापस चला जाता है। यह ज्यादातर गिरोह बाँध कर रहता है। इनके गिरोह प्रायः ऐसे जलाशयों में दिखाई पड़ते हैं, जिनमें पानी कम और मछलियाँ अधिक हैं। छिछले पानी में इन्हें मछलियों के पकड़ने में ज्यादा दिक्कत नहीं होती और ये इस तरह घेर कर उनका शिकार करते हैं कि ताल-तलैयों की मछलियाँ एकदम साफ हो जाती हैं।

जलसिंह मौसमी चिड़िया तो है, लेकिन इनमें से कुछ हमारे देश के दक्षिण भाग में रुक कर, यहीं अंडे दे देती हैं।

**विवरण** : जलसिंह अपने भारी शरीर और छोटे परों के कारण, खुश्की पर ठीक से नहीं चल पाते, इस कारण इनका अधिक समय पानी में ही बीतता है। पानी में ये बड़ी शान से तैरते हैं और अपनी सफेद पोशाक के कारण दूर से ही दिखाई पड़ जाते हैं। ऊपर उड़ते समय ये पानी में कुछ दूर तक घिसटते हैं, लेकिन ऊपर उठ जाने पर इनकी उड़ान बहुत सधी हुई होती है। उड़ते समय ये अपनी गरदन को मोड़कर अपने सर को कंधों के पास कर लेते हैं।

इनका मुख्य भोजन मेंढक, मछली आदि होता है।

**घोंसला** : जलसिंह वैसे तो मौसमी पक्षी है, लेकिन ऊपर जैसा बताया जा चुका है, इनमें से कुछ तमिलनाडु प्रदेश में अंडे देते हैं। यहाँ इनके अंडे देने का समय मई से जून तक होता है।

बर्मा में घने जंगलों में, जहाँ अधिकांश जलसिंह अंडे देने के लिए इकट्ठे होते हैं, झुंड के झुंड बड़े-बड़े घोंसले बनाते हैं, जिनमें मादा प्रायः ३ अंडे देती है। ये अंडे पहले तो सफेद होते हैं, लेकिन धीरे-धीरे उनका रंग मटमैला होने लगता है और फूटने के समय तक एकदम भूरा या कलछौंह हो जाता है।

इनके अंडे लगभग २·६५ × ३·३ इंच के होते हैं।

## ३५१ छोटा पनकौआ (Little Cormorant : Phalacrocorax Niger)

**पर्याय** : जल कौआ, लघु जलकाक, पनकौआ, जोगराबी, पनकौड़ी, पनकौटी।

**पहचान** : काले रंग की पानी की चिड़िया जो पानी में बहुत अच्छी तरह तैरती और डुबकी लगाती है। बीच-बीच में यह पानी के किनारे या बीच की किसी सूखी लकड़ी के ऊपर पंख फैला कर बैठती है। इससे इसको पहचानना कठिन नहीं होता।



छोटा पनकौआ

**रंग-रूप** : पनकौए के नर-मादा एक रंग-रूप के होते हैं। सारा शरीर घुर काला, जिसमें एक प्रकार की हरी-सी चमक होती है। गले के नीचे का हिस्सा सफेद। बड़े पंखे और डैने के ऊपरी ढकने सिलेटी। अंडा देने के समय, गरदन के नीचे की सफेदी गायब हो जाती है। सर तथा गरदन पर कुछ तितरे-बितरे

सफेद पर निकल आते हैं। चोंच-लम्बी और चपटी, जिसका अगला सिरा टेढ़ा और रंग भूरापन लिये। आंख हरछौंह भूरी। टाँगें कलछौंह।

**निवास** : छोटा पनकौआ हमारे यहाँ का बारहमासी पक्षी है जो हिमालय तथा अन्य पहाड़ी स्थानों को छोड़कर, सारे देश के जलाशयों में पाया जाता है। इन्हें बड़े ताल, झील और नदियों में किसी डाल या सूखी लकड़ी पर पंख फैलाये बैठे देखा जा सकता है।

**विवरण** : छोटे जलकौए की शक्ल-सूरत और उसी रंग का एक और पक्षी हमारे यहाँ पाया जाता है, जिसे हम बड़ा जलकौआ कह सकते हैं। इसके नर-मादा भी एक रंग-रूप के होते हैं और इसकी सब आदतें भी छोटे जलकौए की तरह होती हैं, इसलिए उसका अलग से वर्णन करने की आवश्यकता नहीं जान पड़ती।

**घोंसला** : पनकौए के अंडा देने का समय जुलाई से सितम्बर तक है, जिस बीच ये नरकुल या पानी के किनारे किसी छोटे पेड़ पर गिरोह बाँध कर घोंसला बनाते हैं। ये घोंसले कच्ची लकड़ियों के कटोरानुमा होते हैं। मादा ४-५ अंडे देती हैं जिनका रंग शुरू में हरछौंह नीला होता है, लेकिन कुछ दिन बाद भूरा हो जाता है।

अंडों की नाप १.७५ × १.१५ इंच होती है।

## ३५२ पनकौआ (Large Cormorant : Phalacrocorax carbo)

**पर्याय** : बृहद् जलकाक, घोगुर, जलकौआ, पनकौआ।

**पहचान** : यह चमकदार काले रंग की पानी की चिड़िया है। इसे पेड़ों तथा सूखे ठूँठों पर पंख फैला कर बैठने की एक खास आदत के कारण, पहचानने में दिक्कत नहीं पड़ती। यह डुबकी लगाना, तैरना तथा उड़ान भी खूब जानती है।

**रंग-रूप** : लम्बाई २० इंच। नर-मादा एक ही रंग-रूप के। रंग भूरा काला जिसमें हलकी हरी चमक। गले के पास का हिस्सा सफेद। कंधे तथा डैने के ढकने गहरे सुनहले भूरे। परों के किनारे पर चौड़ी काली धारी।

जोड़ा बाँधने के दिनों में, इनके गले के पास का सफेद रंग मिट जाता है और सिर पर छितरे हुए सफेद पर जम जाते हैं। पुतलियाँ हरछौंह भूरी। चोंच भी भूरी जो जोड़ा बाँधने के समय बैंगनी हो जाती है। पंजे काले, परन्तु वे भी जोड़ा बाँधने के समय नीले हो जाते हैं। चोंच पतली, पिचकी, घुमाववदार तथा किनारे पर नोकीली। पूंछ फन्ने-जैसी नोकीली। पंजे चपटे और झिल्ली-दार।

**निवास** : यह बोर्नियो से श्रीलंका तथा भारत तक सर्वत्र पाये जाते हैं। भारत में ये हिमालय तथा दूसरी पर्वत-श्रेणियों पर नहीं पाये जाते। यह चिड़िया विशेष रूप से वहीं पायी जाती है, जहाँ पानी की अधिकता हो।

**विवरण** : यह भारत में समुद्री किनारों, दलदली स्थानों, नदियों तथा तालाबों के किनारों पर बहुतायत से पायी जाती है। यह अकेली भी रहती है तथा दल में भी। पेड़ों पर अपने दल के साथ अड्डा बना लेती है। यह केकड़ा, मेंढक, उनके बच्चे तथा मछलियाँ इत्यादि खाती है और मछलियों को पकड़ने के लिए ही तैरती तथा डुबकी लगाती है। बत्तखों की तुलना में यह पानी में बहुत गहरा तैरती है तथा खतरे की सम्भावना होने पर केवल सर और गरदन ही ऊपर रखती है। ये पानी में से निकलने के लिए कठिनाई से पर फड़फड़ाकर ऊपर उठती है, परन्तु एक बार उड़ान लेने पर यह तेजी से, सफाई के साथ, सर तथा गरदन आगे निकाले हुए तथा परों को ऊपर करके उड़ती है। पानी से बाहर, यह चट्टानों, ठूँठों आदि पर या जमीन पर ही बैठ कर और अपने परों को फैला कर धूप खाती रहती है।

**घोंसला** : भारत में इसके जोड़ा बाधने का मौसम जुलाई से सितम्बर तक है। इनका घोंसला बड़ा तथा प्याले की शक्ल का तथा लकड़ियों का बना होता है। इसके आकार के हिसाब से तो यह छोटा ही होता है। वास्तव में इनके, घोंसले कौओं इत्यादि की अमानत होती है। पुराने घोंसलों की ही प्रति वर्ष मरम्मत कर ली जाती है। इनके अंडे ३ से ४ तक और लम्बाई लिये कुछ गोलाकार होते हैं। ये एक सिरे की ओर नोकीले होते हैं और इनका छिलका कड़ा हरछौंह नीला होता है। अंडे प्रारम्भ में तो सफेद निलछौंह होते हैं, बाद में पीले और भूरे हो जाते हैं।

इनकी नाप १.७५ × १.१५ इंच होती है।

## ३५३ बानवर (Indian Daiter or Snake Bird : Anhinga Melanogaster)

**पर्याय** : नागिन, भारत, मदगु, पनवा, पनडुब्बी, सिली, गोयार।

**पहचान** : बानवर हमारी बहुत परिचित चिड़िया है जिसे कुछ लोग नागिन भी कहते हैं। लम्बी और नोकीली चोंच के कारण, जैसे इसको बानवर जैसा सुन्दर नाम मिला है, वैसे ही साँप जैसी गरदन के कारण, इसका नागिन नाम भी पूर्णतया उपयुक्त है। पानी में तैरते समय यह अपना सारा शरीर पानी के भीतर रखती है, केवल अपनी पतली साँप-जैसी गरदन को

थोड़ी-थोड़ी देर बाद पानी के बाहर निकाल कर इधर-उधर देख कर फिर डुबकी लगा लेती है।

**रंग-रूप** : बानवर की लम्बाई ३ फुट। नर-मादा एक रंग-रूप के। चोटी और निचली गरदन भूरी, लेकिन गरदन का ऊपरी हिस्सा कलछौंह। बाकी शरीर काला और हलका-सा चमकदार। पीठ पर के कुछ पंखों के सिरे भूरे और ढकने के पास के डैनों के पंखों में सफेद धारियाँ। आँखों के ऊपर और गरदन पर भी पतली-पतली सफेद धारियाँ। चोंच पतली लम्बी और बहुत नोकीली, रंग कलछौंह भूरा। आँख पीली। टाँगें काली और जालदार।

**निवास** : बानवर बारहमासी चिड़िया है, जिसे हम देश के पहाड़ी भागों को छोड़कर प्रायः सभी बड़े-बड़े जलाशयों में देख सकते हैं। यह जलकौए की तरह बड़े-बड़े गिरोह में कम दिखाई पड़ती है और अधिकतर पानी के किनारे या पानी के बीच में किसी ठूँठ या डाली पर डैनों को फैलाये बैठी रहती है।

**विवरण**: बानवर डुबकी मारने में बहुत उस्ताद होती है और पानी के भीतर भी मछलियों की तरह तैर कर उनका शिकार किया करती है। यह पानी के बाहर अपनी पतली गरदन निकाल कर फिर पानी में डूब जाती है और फिर भीतर ही भीतर तैर कर बहुत दूर निकल जाती है। यह पनकौओं की तरह समुद्र-तटों पर नहीं दिखाई पड़ती।

बानवर का मुख्य भोजन मेंढक और मछली है, जिन्हें यह पानी के भीतर ही तैर कर पकड़ लेती है और फिर ऊपर आकर उसे हवा में उछाल कर फिर मुँह में इस तरह लील लेती है कि शिकार का सिर उसके मुँह की ओर रहता है।

**घोंसला** : बानवर के अंडा देने का समय जनवरी से फरवरी तक और जून से अगस्त तक रहता है। उस समय यह गिरोह बाँध कर किनारे के किसी पेड़ पर जलकौओं और बगुलों के साथ अपना घोंसला बनाती है। ये घोंसले सूखी टहनियों से बने मामूली से होते हैं। ये कई-कई वर्षों तक इस्तेमाल में आते हैं। इनके अंडों की संख्या ४ से ६ तक होती है, जो पनकौए के अंड़ों की तरह हरापन लिये नीले रंग के होते हैं। उन्हीं की तरह, इन अंडों के ऊपर भी एक सफेद तह-सी रहती है, जो बाद में धीरे-धीरे भूरी हो जाती है।

नाप में ये अंडे लगभग २.१५ × १.७३ इंच के होते हैं।

## ३५४ सफेद बुज्जा (White Ibis : Threskiornis Melanocephalus)

**पर्याय** : श्वेत आटी, मुंडा, दिघार, दो चोरा, हर जोता, बुज्जा।

**पहचान** : बड़े आकार का सफेद पक्षी जो पानी के निकट घूमता-फिरता दिखाई पड़ता है। इसकी टाँगें लम्बी और काली होती हैं और बिना परों वाली लम्बी गरदन, सर और लम्बी टेढ़ी चोंच भी काली रहती हैं।

**रंग-रूप** : सफेद बुज्जा की लम्बाई ३० इंच और नर-मादा एक रंग-रूप के। इसका सर और पूरी गरदन काली जिस पर पर नहीं होते। बाकी सारा सारा शरीर धुर सफेद लेकिन बड़े पंखों के सिरे भूरी चित्तियों से भरे और भीतर की पखनी का रंग सिलेटी। डैने की हड्डी को ढकने वाली खाल भी बिना परों की और उसका रंग चटक लाल। आँख-कलछौंह भूरी। चोंच काली, लम्बी, टेढ़ी और नीचे की ओर झुकी हुई। टाँगें चमकीली काली, जड़ के पास थोड़ी दूर तक जालदार।

**निवास** : मुंडा या सफेद बुज्जा हमारे यहाँ का प्रसिद्ध महाबक है, जिसे उसकी टेढ़ी चोंच तथा काली और लम्बी गरदन के कारण दूर ही से पहचाना जा सकता है। हमारे देश में यह प्रायः सभी जगह पाया जाता है, लेकिन इसे ऐसे ही स्थानों पर देखा जा सकता है, जो पानी और दलदल के निकट होते हैं। यह पहाड़ों पर नहीं मिलता।

**विवरण** : मुंडा यहाँ का बारहमासी पक्षी है, जो अपनी सुविधानुसार यहीं थोड़ा-बहुत स्थान परिवर्तन कर लिया करता है और देश से बाहर नहीं जाता। यह प्रायः ऐसे जलाशयों और दलदल के स्थानों में रहना पसन्द करता है जिसके किनारे और बीच में झाड़िया और पेड़ आदि हों। इसे नदी के किनारे के खेतों और मैदानों में देखा जा सकता है, जहाँ यह छोटे-छोटे गिरोहों में अन्य महाबकों और बगुलों के साथ मेंढक मछली और घोंघे-कटुए पकड़ता रहता है। अपनी लम्बी टाँगों के सहारे यह छिछले पानी और कीचड़ में शिकार की तलाश में घूमता फिरता है और पेट भर जाने के बाद गिरोह में किसी ताल या नदी के किनारे रेत, छिछले पानी या पेड़ पर बैठ कर आराम करता है।

मुंडा को गाँव के लोग 'हर-जोता' कहते हैं क्योंकि अक्सर वे जब बरसात में हल चलाते हैं तो यह उसके पीछे-पीछे मिट्टी से निकलने वाले कीड़ों-मकोड़ों की लालच में चलता रहता है। इसकी बोली बहुत कर्कश होती है, लेकिन यह बहुत कम बोलता है। रात में इनका गिरोह किसी ऊँचे पेड़ पर बसेरा लेता है।

**घोंसला** : मुंडा के जोड़ा बाँधने का समय जून से अगस्त तक है, जब इसकी गरदन की जड़ के पास चारों ओर और सीने पर बड़े-बड़े मुलायम पर निकल आते हैं। जोड़ा बाँधने के बाद ये अपने घोंसले के निर्माण में लग जाते हैं और लगभग ८–१० जोड़े आस-पास के पेड़ों पर पतली-पतली टहनियों से बड़ा-सा गोलाकार घोंसला बना लेते हैं। इनके घोंसले प्रायः अन्य महाबकों और बगुलों से मिलते-जुलते हैं और उनकी बनावट एक तरह से भद्दी होती है।

मादा २ से ४ तक अंडे देती है, जो पहले तो हरछौंह-सफेद होते हैं, लेकिन कुछ दिनों बाद उनका रंग गाढ़ा भूरा हो जाता

है। इन अंडों पर अक्सर छोटी-छोटी बादामी बिंदियाँ भी पड़ी होती हैं।

नाप में येअंडे २.५० × १.७० इंच के रहते हैं।

## ३५५ काला बुज्जा (Black Ibis : Pseudibis Papillosus)

**पर्याय** : कृष्ण आटी, कड़ाकुल, करन काल, मुर्गकेस।

**पहचान** : काला बुज्जा, मुंडा का निकट सम्बन्धी पक्षी है, जो शक्ल-सूरत में मुंडा-जैसा, लेकिन कद में उससे कुछ छोटा और रंग में एकदम काला होता है। यह भी अपनी टेढ़ी-चोंच के कारण दूर ही से पहचाना जा सकता है और इसे भी अन्य महाबकों के साथ छिछले पानी और कीचड़ में मेढक-मछली पकड़ते देखा जा सकता है।

**रंग-रूप** : काला बुज्जा की लम्बाई लगभग २७ इंच और नर-मादा एक ही रंग-रूप के। सारा शरीर कलछौंह गाढ़ा भूरा, पीठ पर हलकी हरी झलक। सर बिना बालों का नंगा, जिस पर काली खाल चढ़ी रहती है और गुद्दी का हिस्सा छोटे-छोटे लाल घुंघराले पंखों से भरा रहता है और दूर ही से चमकता है। इन्हीं लाल परों के कारण देहातों में इसे 'मुर्गकेश' का सुन्दर नाम मिला है। डैने काले और निलछौंह हरी चमक लिये, उन पर बाहर की ओर एक चौड़ा सफेद चित्ता। आँख नारंगी लाल। चोंच हरछौंह सिलेटी। टाँगें ईंट के रंग की।

**निवास** : यह भी सारे देश के मैदानी भागों में पाया जाता है और इसे भी मुंडों की तरह पहाड़ पसन्द नहीं हैं। उसी की तरह यह भी अपने रहने के लिए ऐसे ही स्थानों को चुनता है, जो दलदल, झीलों, तालों और नदियों के पास-पड़ोस में हों। यह खुले मैदानों या खेतों में जोड़े या छोटे गिरोहों में दिखाई पड़ता है।

**विवरण** : काला बुज्जा भी उन महाबकों में से एक है, जो यहाँ बारहों महीने रहते हैं। यह जमीन पर चराई करके रात में किसी ऊँचे पेड़ पर बसेरा लेता है। मुंडा की तरह इसे पानी के पड़ोस की ज्यादा फिक्र नहीं रहती, बल्कि यह खुले मैदानों में ही ज्यादातर दिखाई पड़ता है। अन्य महाबकों की तरह, यह दिन में चराई के बाद भी आराम नहीं करता, बल्कि सारा दिन कीड़े-मकोड़ों, दानों और बीज आदि के लिए चक्कर लगाता रहता है। इसकी भी चोंच मुंडा की तरह लम्बी, टेढ़ी और आगे की ओर झुकी होती है। इनकी बोली शिकारी चिड़ियों की तरह कर्कश और चिल्लाहट-जैसी होती है।

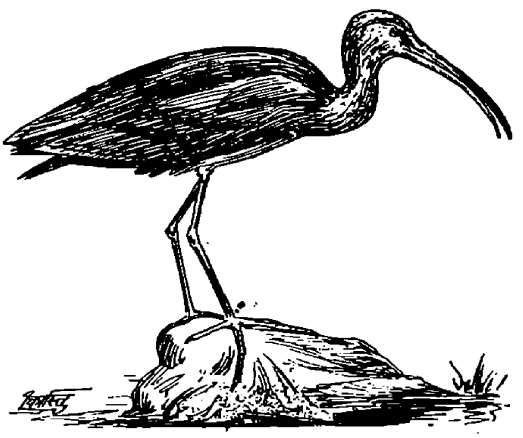
**घोंसला** : यहाँ का बारहमासी पक्षी होने के कारण, काला बुज्जा यहीं घोंसला बना कर अंडे देता है। इसके जोड़ा बाँधने का समय मार्च से नवम्बर तक है, जो भिन्न-भिन्न स्थानों में बदलता रहता है। घोंसले पतली टहनियों को जोड़ कर बनाये जाते हैं, जो मद्दे और गोलाकार होते हैं। घोंसले के भीतरी भाग म यह थोड़ी-सी घास और पर आदि भी बिछा लेते हैं, जिसमें मादा ३–४ अंडे देती है। मुंडों की तरह, यह अपने घोंसले एक साथ नहीं बनाते, बल्कि किसी ऊँचे पेड़ पर अकेले या दो-तीन एक साथ अपना घोंसला बनाते हैं। इनके अंडों का रंग वैसे तो हरा होता है, लेकिन कुछ अंडों पर गाढ़ी भूरी या बादामी चित्तियाँ भी पड़ी होती है।

नाप में ये अंडे २.४३ × १.१७ इंच के होते हैं।

## ३५६ कौआरी (Glossy Ibis : Plegadis falcinellus)

**पर्याय** : पत्राटी, काला कचियाटोरा।

**पहचान** : कौआरी बुज्जा परिवार का सबसे छोटा पक्षी है, जिसकी गरदन अन्य बुज्जों की तरह नंगी नहीं होती, केवल चेहरा-भर बिना बालों का होता है। यह यहाँ का मौसमी पक्षी है, जिसकी अधिक संख्या तो यहाँ जाड़ों में आकर जाड़ा समाप्त होते-होते यहाँ से वापस चली जाती है। लेकिन इनमें से कुछ यहीं रह जाते हैं और यहीं अंडे देते हैं।



कौआरी

**रंग-रूप** : कौआरी की लम्बाई २४ इंच और नर-मादा एक ही जैसे। शरीर का रंग कलछौंह कत्थई और उसमें निलछौंह झलक। सर, डैने और दुम गाढ़ी कलछौंह बैंगनी और उसमें हरी चमक। डैने पर एक लाल चित्ता, जो जाड़ों में गायब हो जाता है। गरदन और सर कलछौंह, सर के थोड़े-से भाग पर बाल नहीं रहते, लेकिन गरमियों में गरदन पर सफेद धारियाँ पड़ी रहती हैं। बच्चों का रंग हलका सिलेटीपन लिये भूरा, उनके डैनों पर लाल चित्ता नहीं होता। आँख भूरी चोंच, भूरी और टेढ़ी, टाँगें भूरी।

**निवास** : यह हमारे देश के प्रायः सभी पानी वाले स्थलों में, अधिकांशतः समुद्र-तट पर पायी जाती है। अन्य बुज्जों की तरह,

यह भी पहाड़ों पर नहीं जाती, बल्कि जलाशयों के निकट के खुले स्थानों को अपने रहने के लिए चुनती है। हमारे देश के बाहर ये यूरोप आदि देशों में काफी संख्या में फैली हुई हैं।

**विवरण** : कौआरी अन्य बुज्जों की तरह यहाँ का बारहमासी पक्षी नहीं है, मौसमी पक्षी है, जिसे अकेले या छोटे-छोटे गिरोहों में, मुंडा और कड़ाकुल की तरह, मैदानों में अपनी खुराक के लिए घूमते-फिरते देखा जा सकता है। इसकी भी चोंच कड़ाकुल-जैसी लम्बी, टेढ़ी और आगे की ओर झुकी हुई होती है और यह भी चराई के समय जमीन पर और बसेरा लेने के समय पेड़ों पर रहता है। इसका मुख्य भोजन पानी के कीड़े-मकोड़े हैं, जिन्हें ये खुश्की और कीचड़ में से पकड़ कर अपना पेट भरता है।

**घोंसला** : कौआरी जून से नवम्बर के बीच में जोड़ा बाँध कर अंडे देती है। इसका घोंसला पतली-पतली टहनियों का होता है, जिसके भीतर यह थोड़ा बहुत घास-फूस और पर वगैरह रखकर उसे मुलायम बना लेती है। मादा नीले रंग के अंडे देती है जो संख्या में प्रायः ३ होते हैं।

नाप में ये अंडे लगभग २.०१ × १.४० इंच के होते हैं।

## ३५७ दाबिल (Spoon Bill : Platalea Leucorodia)

**पर्याय** : दर्वी मुख, चमच बुज्जा, घिनटा।

**पहचान** : दाबिल का दूसरा नाम चमच बुज्जा है, जो इसकी चपटे चिमटे-जैसी चोंच के कारण मिला है। यह बुज्जा का भाई-बन्धु है, लेकिन दोनों की चोंच की बनावट एकदम भिन्न होने के कारण ये दूसरे परिवार के पक्षी जान पड़ते हैं।

**रंग-रूप** : दाबिल के नर-मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। नर की लम्बाई ३३ इंच। सारा शरीर धूप जैसा सफेद, लेकिन प्रौढ़ नर पक्षियों के सीने पर हलका बादामी चित्ता। जोड़ा बाँधने के समय इसके सर के पीछे कुछ पर कलँगी की तरह निकल आते हैं जिन्हें यह उठा-गिरा सकता है। आँख लाल, चोंच काली और सिरे पर पिलछौंह, गोल और चपटी। टाँगें काली जड़ के पास थोड़ी दूर तक जालदार।

**निवास** : दाबिल बारहमासी पक्षी है, जो यहाँ के प्रायः सभी जलाशयों में पाया जाता है। हमारे यहाँ वैसे तो यह सारे देश में फैला है, लेकिन इसे बहुत रूखे और पहाड़ी स्थानों में नहीं देखा जा सकता। यह अपनी सुविधानुसार यहीं थोड़ा-बहुत स्थान-परिवर्तन जरूर कर लेता है, लेकिन देश से बाहर नहीं जाता। हमारे देश के अलावा, दाबिल यूरोप के मध्य तथा दक्षिणी भागों में और अफ्रीका तथा एशिया के भी बहुत से स्थानों में पाया जाता है। इसकी एक और दूसरी जाति चीन, जापान तथा बर्मा में फैली हुई है।

**विवरण** : दाबिल बगुले जैसी लम्बी टाँग और गरदन वाला सफेद पक्षी है, जो अपनी चपटी चोंच के कारण बड़ी आसानी से पहचान लिया जाता है। इसकी यह चपटी चोंच इसके बड़े काम की होती है। यह उसे आधी खोल कर और पानी में डाल कर बड़ी तेजी से इधर-उधर चलाता है, जिससे पानी मथने से कीचड़ में से कीड़े-मकोड़े ऊपर उठते हैं और इसकी चोंच के रास्ते पेट में पहुँच जाते हैं।

दाबिल हमेशा छोटे और बड़े झुंड में दिखाई पड़ता है, जो दिन के समय या तो किसी झील या नदी के किनारे बैठे ऊँघा करता है, या अन्य जलचर चिड़ियों के साथ छिछले पानी में अपनी खुराक की तलाश में इधर-उधर घूमा करता है। इनकी चराई का समय शाम का है, जब ये एक सीधी पंक्ति में आकाश में उड़कर छिछले पानी के स्थल पर पहुँच जाते हैं। कीड़े-मकोड़ों के अलावा, ये काई और घास-पात तथा घोंघे-कटुए और मेढक, मछली भी खाते हैं। इनकी बोली में हलकी घुरघुराहट-जैसी होती है।

**घोंसला** : दाबिल के जोड़ा बाँधने और अंडा देने का समय अगस्त से नवम्बर तक है। उस समय बहुत-से जोड़े मिलकर एक साथ ही किसी बड़े ताल या झील के किनारे के ऊँचे पेड़ों पर अपना घोंसला बनाते हैं और मरम्मत करके कई-कई वर्षों तक उसी में अंडे देते रहते हैं। ये घोंसले पतली-पतली सूखी टहनियों के और मचाननुमा होते हैं, जिनमें मादा ४-५ सफेद अंडे देती है। इन पर गाढ़ी भूरी चित्तियाँ और धब्बे होते हैं

ये अंडे लगभग २.७ × १.८ इंच के होते हैं।

## ३५८ लगलग (White-Necked Stork : Dissoura Episcopus)

**पर्याय** : हाजी लगलग, मनिकजोर, शितिकंठ, महाबक।

**पहचान** : लगलग को कहीं-कहीं हाजी लगलग और कहीं-कहीं मनिकजोर के नाम से पुकारा जाता है। यह हमारे देश का प्रसिद्ध बारहमासी पक्षी है, जो प्रायः अकेला जोड़े में या छोटे-छोटे गिरोहों में पानी के निकट के मैदानों में दिखाई पड़ता है। काले शरीर और सफेद गरदन के कारण इसे पहचानने में भूल नहीं हो सकती।

**रंग-रूप** : लगलग की लम्बाई ३६ इंच और नर-मादा एक ही रंग-रूप के। चोटी काली और हरी झलक वाली, गरदन और नीचे का भाग सफेद। दुम भी सफेद, लेकिन बाकी सारा शरीर घुर काले रंग का, जिसमें हरी और बैंगनी झलक। चेहरे का कुछ भाग नंगा और गंदे सिलेटी रंग का। बच्चों के शरीर में काले के स्थान पर भूरा रंग और उनकी गरदन के पर कुछ बड़े और मुलायम होते हैं। आँख चटक लाल। चोंच काली, लम्बी, मजबूत और नोकीली। टाँगें लाल।

**निवास**: यह सारे देश में फैला है। यहाँ तक कि अन्य महाबकों की तरह इसे पहाड़ों से भी परहेज़ नहीं है। इसे हिमालय पर्वत पर ४,००० फुट तक की ऊँचाई तक बड़ी आसानी से देखा जा सकता है। हमारे देश से बाहर यह अफ्रीका, श्रीलंका तथा बर्मा में भी काफी संख्या में दिखाई पड़ता है।

**विवरण**: लगलग बहुत प्रसिद्ध पक्षी है, जो जलाशयों के पास-पड़ोस के मैदानों में और खेतों में अपने शिकार की तलाश में घूमता-फिरता है। अन्य महाबकों की तरह, दिन की चराई के बाद, यह भी चुपचाप खड़े ही खड़े आराम कर लेता है। इसकी आदतें, अन्य लम्बी टाँगों और गरदन वाले महाबकों-जैसी होती हैं। यह उड़ने में बहुत उस्ताद होता है और इसके गिरोह अक्सर आकाश में बहुत ऊँचाई पर चक्कर लगाते दिखाई पड़ते हैं। इसका मुख्य भोजन मेढक, मछली, कटुए, घोंघे और अन्य कोड़े-मकोड़े हैं।

**घोंसला**: लगलग के जोड़ा बाँधने का समय जून से अगस्त तक है, लेकिन इसके घोंसले साल के प्रायः सभी महीनों में मिल जाते हैं।

यह सूखी टहनियों का, बड़ा और भद्दा-सा गोलाकार घोंसला बनाता है जिसका भीतरी भाग घास-फूस तथा परों से मुलायम कर दिया जाता है। अपने घोंसले के लिए यह किसी ऊँचे पेड़ को चुनता है जो प्रायः किसी जलाशय के किनारे होता है और कभी-कभी यह आबादी के बीच में भी होता है। घोंसला २५–३० फुट की ऊँचाई पर रखा जाता है। इसमें मादा ३-४ अंडे देती है, जो पहले तो निलछौंह सफेद रहते हैं, लेकिन कुछ समय बीतने पर उनका रंग गंदा-भूरा हो जाता है।

ये अंडे नाप में लगभग २.५ × १.८३ इंच के होते हैं।

## ३५९ लोहा सारंग (Black-Necked Stork Dissoura Episcopus)

**पर्याय**: बनरास, लोहार जंग, राम सालिक, कृष्णग्रीव महाबक।

**पहचान**: लोहा-सारंग भी प्रसिद्ध महाबक है, जो अपने सब भाई-बन्धुओं से कद में ऊँचा और बड़ा होता है। यह प्रायः जोड़े में दिखाई पड़ता है और लम्बे कद तथा काली और सफेद पोशाक के कारण, इसे पहचानने में जरा भी भूल नहीं हो सकती।

**रंग-रूप**: लोहा-सारंग के नर-मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं और कद ५२ इंच। सर और गरदन काली, जिसमें बैंगनी और हरी झलक। गुद्दी पर ताँबे के रंग का एक चित्ता। डैने का कुछ भाग और पूरी दुम काली। शरीर का बाकी सब हिस्सा सफेद। उड़ते समय नीचे से देखने से इसके सफेद डैनों में दो काली धारियाँ स्पष्ट दिखाई पड़ती हैं। बच्चों का रंग भूरा, लेकिन निचला भाग और दुमगज़ा सफेद ही होता है। आँख निलछौंह भूरी। चोंच काली, बहुत लम्बी और भारी। टाँगें मूँगे-जैसी लाल, जिसमें तीन अंगूठे जड़ के पास थोड़ी दूर तक जालदार।

**निवास**: वैसे तो यह सारे देश में फैला है, लेकिन संख्या कम होने के कारण यह उतना नहीं दिखाई पड़ता, जितने और दूसरे महाबक। ये प्रायः जलाशयों के आस-पास के मैदानों और रेत में दिखाई पड़ते हैं, जहाँ ये या तो अपने भोजन की तलाश में इधर-उधर घूमते रहते हैं या चराई करने के बाद चुपचाप किसी ऊँचे पेड़ पर, या जमीन पर ही खड़ा-खड़ा आराम करता है। अपनी सुविधा को देखकर, यह थोड़ा बहुत स्थान परिवर्तन जरूर कर लेता है, लेकिन बाहर नहीं जाता।

**विवरण**: लोहा सारंग, लोहार जंग, बनरास तथा राम-सालिक आदि इसके कई नाम प्रचलित हैं। यह यहाँ का लम्बी टाँगों और गरदन वाला प्रसिद्ध पक्षी है जो बड़ी झीलों और नदियों के किनारे, अकेले या जोड़ों में दिखाई पड़ते हैं।

उड़ते समय पहले तो ये सारस की तरह अपने लम्बे पंख धीरे-धीरे चलाकर हवा में काहिली से उड़ते हैं, लेकिन एक बार ऊपर जाने पर ये काफी तेज और अच्छी तरह उड़ लेते हैं। लगलग की तरह ये भी आकाश में काफी ऊँचाई पर चक्कर लगाते रहते हैं और फिर कोई निरापद स्थान देख कर वहीं उतर पड़ते हैं। लोहा सारंग का मुख्य भोजन, अन्य महाबकों की तरह, मेढक, मछली, छिपकलियाँ और घोंघे-कटुए तथा अन्य छोटे-मोटे जीव-जन्तु हैं, जिन्हें ये छिछले पानी, कीचड़ या खुश्की से प्राप्त करते हैं। इनकी और सब आदतें अन्य महाबकों से मिलती-जुलती हैं।

**घोंसला**: लोहासारंग यहाँ का बारहमासी पक्षी है, जो यहीं जोड़ा बाँध कर अंडे देता है। इनके जोड़ा बाँधने का समय अक्टूबर से जनवरी तक है, जब इनका जोड़ा बहुत सुन्दर नाच दिखाता है। नर-मादा दोनों उस समय आमने-सामने खड़े होकर अपने पंख फैलाकर, डैनों को जोर-जोर से हिलाते हैं, यहाँ तक कि दोनों के डैने एक दूसरे से रगड़ खाने लगते हैं। उनके सर भी एक दूसरे से छूने-छूने को हो जाते हैं। फिर दोनों अपनी चोंच के दोनों पल्लों को आपस में लड़ाकर एक तरह की आवाज पैदा करने लगते हैं। यह नाच करीब एक मिनट तक चलता है, जिसके बाद दोनों अलग हो जाते हैं और एक पक्षी आगे और दूसरा उसके पीछे चलता है। कुछ ही देर बाद, वे फिर आमने-सामने होकर पहले-जैसे नाचने लगते हैं। यह क्रम १०–१५ मिनट तक चलता रहता है। उसके बाद दोनों अपने घोंसले के निर्माण में लग जाते हैं। वे किसी ऊँचे पेड़ की फुनगी पर सूखी टहनियों का बड़ा और भद्दा-सा घोंसला बनाते हैं, जो प्रायः अलग-थलग ही होता है। ये घोंसला करीब एक गज चौड़ा, दो गज़ लम्बा और बीच में गहरा होता है। भीतरी भाग घास-फूस आदि से मुलायम कर दिया

जाता है और प्रायः उसकी सालाना मरम्मत करके कई-कई वर्ष तक उसी को इस्तेमाल किया जाता है। मादा उसमें ४–५ सफेद अंडे देती है, जिनमें हलकी नीली-कंजई झलक होती है। कुछ समय बाद ये अंडे गंदे और मटमैले हो जाते हैं।

इन अंडों की नाप लगभग २.९० × २.१० इंच होती है।

## ३६० सुरमई (Black Stork : Ciconia nigra)

**पर्याय :** कृष्ण, महाबक।

**पहचान :** गैंबर को जिस तरह उसके सफेद परों के कारण 'उजली' कहा जाता है, उसी तरह अपनी कलछौंह पोशाक के कारण, यह पक्षी 'सुरमई' नाम से प्रसिद्ध है।

**रंग-रूप :** सुरमई के भी नर मादा एक-जैसे होते हैं। लम्बाई लगभग ४४ इंच। सफेद पेट और सीने को छोड़कर, सारा शरीर कलछौंह, जिसमें हरे और नीलेपन की हलकी झलक। आँख के चारों ओर की खाल नंगी और बिना पर की, लेकिन गैंबर की तरह काली न होकर लाल होती है। बच्चों का रंग कलछौंह नहीं होता बल्कि गाढ़ा गंदा मूरा होता है। आँख लाल। चोंच लाल। टाँगें लाल।

**निवास :** गैंबर की तरह यह भी यहाँ की मौसमी चिड़िया है, जो जाड़ों में यहाँ उत्तर-पश्चिम की ओर से आकर सारे देश में फैल जाती है। यह भी दक्षिण की ओर बहुत कम दिखाई पड़ती है और पहाड़ी प्रदेश में भी जाना पसन्द नहीं करती। भारत में अधिकांशतः यह उत्तर पश्चिमी प्रदेशों में ही दिखाई पड़ती है। विदेशों में यह गरमियों में यूरोप तथा एशिया में और जाड़ों में अफ्रीका में काफी तादाद में देखी जा सकती है।

**विवरण :** सुरमई करीब-करीब गैंबर के बराबर लम्बी टाँगों और गरदन वाली चिड़िया है, जो शक्ल-सूरत में उसके जैसी, लेकिन रंग में उससे एकदम भिन्न होती है। यह भी प्रायः अकेले या छोटे-छोटे गिरोहों में कीचड़, छिछले पानी या खुले मैदानों में अपने भोजन की तलाश में इधर-उधर घूमती-फिरती है। इसकी बहुत कुछ आदतें अन्य महाबकों से मिलती-जुलती हैं और इसका भी मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े, मेंढक, मछली, कटुए और घोंघे हैं। यह भी चराई के समय जमीन पर, और बसेरा लेने के समय पेड़ पर जा बैठती है। और दिन को पेट भर जाने के बाद, इन्हें भी अक्सर आराम करते देखा जा सकता है।

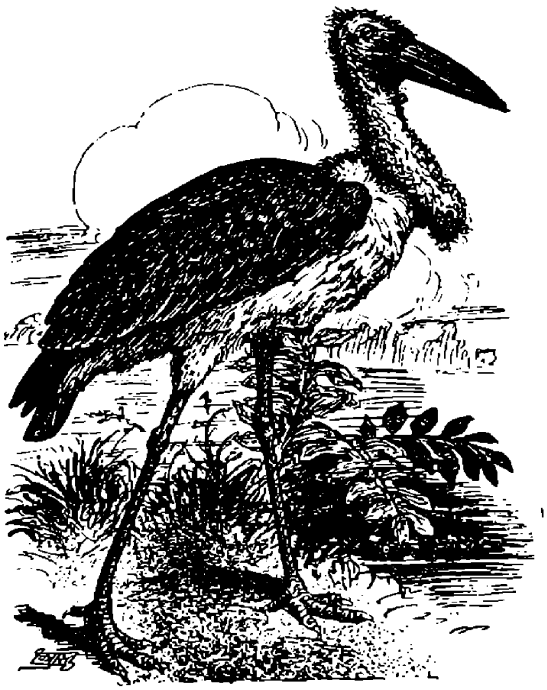
**घोंसला :** सुरमई यहाँ की मौसमी चिड़िया है, इससे जोड़ा बाँधने और अंडा देने के समय यह भी अपने देश को लौट जाती है। वहाँ यह जून से अक्टूबर के बीच में सूखी टहनियों का मद्दा-सा घोंसला बनाती हैं, जो गैंबर की तरह बस्ती के बीच में नहीं होता, बल्कि आबादी से दूर होता है। मादा ३ से ५ तक अंडे देती है।

ये अंडे नाप में लगभग ३.२ × १.५ इंच के होते हैं।

## ३६१ चमरघेंच (Adjutant : Leptoptilos dubius)

**पर्याय :** गंजा, चमर-ढेंक, पड़वा ढेंक, हड़गिल, गलगड़, हरगिला, दस्ता, बृहद् बक, बिसाहिना, गंधैला, चनियार।

**पहचान :** चमरघेंच महाबक परिवार का सबसे बड़ा पक्षी है, जो बहुत ही भद्दा और बदसूरत होता है। अपने चंदुले सर के कारण, कहीं-कहीं यह 'गंजा' भी कहलाता है और लम्बी चोंच तथा गरदन के नीले लटकन वाली थैली के कारण, इसे पहचानने में ज्यादा दिक्कत नहीं होती।



चमरघेंच

**रंग-रूप :** चमरघेंच ५ फुट ऊँचा और लगभग इतना ही लम्बा बृहद्-काय पक्षी है, जिसके नर और मादा एक-जैसे होते हैं। शरीर का रंग चितकबरा और पीठ का ऊपरी हिस्सा और डैने काले तथा गाढ़े सिलेटी और गरदन का ऊपरी हिस्सा, कंधे, सीना और नीचे का सारा भाग सफेद। डैने के बड़े पंख भी सफेद। सर और गरदन पर परों का सर्वथा अभाव और गरदन के नीचे सीने तक लटकती १०–१५ इंच की लम्बी एक थैली। चोंच बहुत लम्बी और भारी। माथा काला। आँख सफेद। चोंच गंदी गुलाबी। टाँगें सफेद मायल, कलछौंह। सर पर की खाल और थैली ललछौंह, जिस पर गरदन की ओर पीलापन होता है। थैली के सिरे पर काली चित्तियाँ।

**निवास** : यह केवल उत्तरी भारत में पाया जाता है और वहाँ के छोटे-बड़े सभी प्रकार के जलाशयों में अकेले या छोटे-छोटे गिरोहों में इसे देखा जा सकता है। यह यहाँ का बारहमासी पक्षी नहीं है, बल्कि बरसात शुरू होते ही ये पूर्व की ओर से आकर देश के उत्तरी भागों में फैल जाते हैं।

**विवरण**: चमरघेंच हमारे यहाँ का मौसमी पक्षी है, जो बरसात शुरू होते-होते ही बर्मा आदि पूर्वी देशों से काफी संख्या में आकर, उत्तर भारत के जलाशयों में फैल जाता है। यह बहुत ही बदसूरत पक्षी है, जो अपने नंगे सर और गरदन पर लटकने वाली थैली के कारण और भी भद्दा दिखाई पड़ता है। ये बहुत गंदा और सर्वभक्षी पक्षी है।

चमरघेंच को उड़ते समय सारस की तरह, कुछ दूर पर जमीन पर दौड़ना पड़ता है, लेकिन एक बार हवा में उठ जाने पर ये बड़ी खूबी से उड़ता है और आकाश में काफी ऊँचाई पर गिद्ध की तरह चक्कर लगाता रहता है।

इसका मुख्य भोजन मेढक, मछली, कटुए, घोंघे, कीड़े-मकोड़े तथा छोटे-मोटे सरीसृप आदि हैं।

**घोंसला**: मौसमी पक्षी होने के कारण, चमरघेंच हमारे देश में अंडे नही देता, लेकिन कुछ पक्षी पूर्वी सीमा के पास अंडे देते समय पाये भी गये हैं। जोड़ा बाँधने के बाद ये किसी ऊँचे पेड़ पर टहनियों का बड़ा और भद्दा-सा घोंसला बनाता है। इसमें मादा ३–४ सफेद अंडे देती है।

अंडे लगभग ३ × २.४५ इंच के होते हैं।

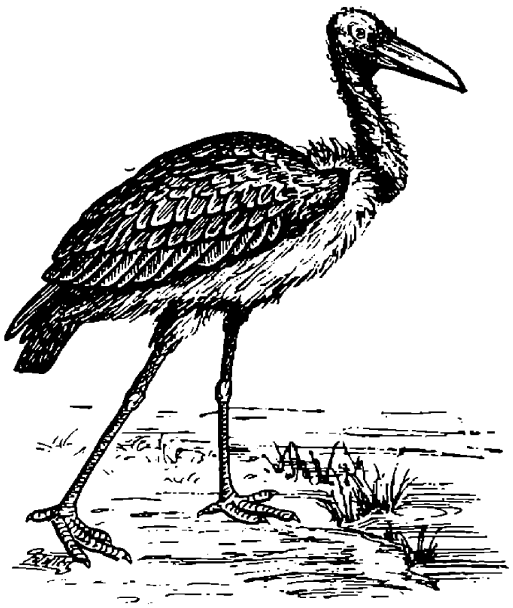
## ३६२ छोटा चमरघेंच (Adju Tant Bird : Leptoptilos javanicus)

**पर्याय** : श्वेताक्ष बृहद-बक, चंदना, चंदियारी, मोहन टिक्की चिजारा, गघैल, बिसहिना छोटा हड़गिल्ला, मदनचूर।

**पहचान** : चमरघेंच से छोटा पक्षी लेकिन उसी जैसा। इसका ऊपरी हिस्सा चितकबरा नीचे का सफेद और सर एकदम नंगा बिना परों वाला। चमरघेंच की तरह इसके गरदन के नीचे थैली नहीं रहती।

**रंग-रूप** : छोटा चमरघेंच ५४ इंच का पक्षी है जिसमें उसकी ११ इंच की लम्बी दुम भी शामिल है। इसके नर और मादा एक ही रंग-रूप के रहते हैं। इसकी गरदन का ऊपरी हिस्सा, दोनों कंधे, सीना और नीचे का कुल भाग सफेद रहता है। सारी पीठ और डैने काले तथा गाढ़े सिलेटी रहते हैं। दुम काली होती है। चमरघेंच की तरह इसका भी सर एकदम नंगा रहता है और गरदन पर भी पर नहीं होते लेकिन उसकी तरह इसकी चोंच गरदन के नीचे थैली नहीं लटकती रहती। इसकी चोंच काफी लम्बी और भारी होती है। नर से मादा काफी छोटी होती है। आँख की पुतली पीली, चोंच और टाँगें ललछौंह होती हैं।

**निवास** : छोटा चमरघेंच हमारे यहाँ का मौसमी पक्षी है जो हमारे यहाँ बरसात के शुरू में आकर और कुछ महीने रहकर यहाँ से वापस चला जाता है। यह हमारे देश में पंजाब, राजस्थान और दक्षिण भारत के पश्चिमी भाग को छोड़ कर सारे देश में फैल जाता है लेकिन बहुत कम संख्या में होने के कारण इन्हें हम बहुत कम ही देख पाते हैं।



छोटा चमरघेंच

**विवरण** : छोटे चमरघेंच को हम अपने यहाँ चमरघेंच की तरह आसानी से नहीं देख पाते क्योंकि पहले तो ये बहुत कम संख्या में यहाँ आते हैं, दूसरे इन्हें घने जंगलों के बीच के जलाशय ज्यादा पसन्द आते हैं। यह चमरघेंच की तरह मुर्दाखोर पक्षी नहीं है और मछलियों, सापों, केकड़ा तथा टिड्डी आदि से अपना पेट भरता है। इसकी और सब आदतें चमरघेंच की तरह होती हैं।

**घोंसला** : मौसमी पक्षी होने के कारण छोटा चमरघेंच हमारे यहाँ अंडे नहीं देता किन्तु इसके कुछ घोंसले हमारे देश की घुर पूर्वी अथवा दक्षिणी सीमा पर मिल जाते हैं जहाँ कुछ पक्षी बारहों महीने देखे जा सकते हैं। इसके जोड़ा बाँधने का समय चमरघेंच की तरह नवम्बर दिसम्बर है जब यह यहाँ से लंका और बर्मा की ओर चला जाता है।

छोटा चमरघेंच किसी ऊँचे पेड़ या पहाड़ के ऊँची कगार पर अपना टहनियों का बड़ा और भद्दा-सा घोंसला बनाता है जिसमें मादा ३–४ अंडे देती है। ये अंडे चौड़े बैंजाबी होते हैं और उनका रंग शुरू में तो सफेद रहता है लेकिन कुछ दिनों बाद इसकी सफेदी में राखी या हलकी भूरी झलक आ जाती है।

अंडे नाप में करीब २.८४ × २.०९ इंच के रहते हैं।

## ३६३ जांघिल (Painted Stork : Ibis Leucocephalus)

**पर्याय** : चित्रित महाबक, रामझंकार, दोरव, कटसरंगा, लंगडक, सोनजंघा, संदल चोंचा।

**पहचान** : जांघिल हमारे यहाँ का प्रसिद्ध महाबक है, जिसे कहीं इसकी तेज बोली के कारण, राम झंकार, और कहीं इसकी पीली चोंच के कारण संबल चोंचा कहते हैं यह सारे देश में जलाशयों या दलदलों के निकट छोटे-छोटे गिरोहों में दिखाई देता है।

**रंग-रूप** : जांघिल के नर मादा एक रंग-रूप के होते हैं और लम्बाई लगभग ४० इंच। सर, सारा गरदन और शरीर सफेद। सीने पर एक चौड़ी, काली पट्टी, जिसमें हरेपन की झलक। डैने काले और उनमें हरी चमक। छोटी पखनियाँ काली और सफेद तथा बड़ी पखनियाँ गुलाबी। डैने के कुछ और पर भी गुलाबी होते हैं, जिनके कारण इनके डैनों का कुछ भाग दूर ही से गुलाबी जान पड़ता है। दुम एकदम काली। चोंच की जड़ से लेकर सर तक का काफी भाग बिना परों का और पीले रंग का। बच्चे भूरे रंग के, जिनकी दुम और डैने काले तथा पेट सफेद। आँख पीली। चोंच नारंगी पीली और जड़ के पास सिलेटी। टाँगें भूरी।

**निवास** : अन्य महाबकों की तरह, यह भी पहाड़ों पर नहीं जाता और दिन में चराई के समय जमीन पर और रात को बसेरा लेते समय पानी के निकट के पेड़ों पर रहता है। हमारे देश से बाहर, यह चीन, आदि देशों में भी काफी संख्या में पाया जाता है। लम्बी टाँगों और पीले रंग की मोटी और लम्बी चोंच के कारण, इसको दूर से ही पहचाना जा सकता है।

**विवरण** : जांघिल यहाँ का बारहमासी पक्षी है, जो यहाँ अपनी सुविधानुसार थोड़ा-बहुत स्थान-परिवर्तन भले कर ले, लेकिन देश से बाहर नहीं जाता। इसकी नारंगी चोंच जड़ के पास काफी मोटी और सिरे तक पहुँचते-पहुँचते पतली और नोकीली हो जाती है। सिरे पर वह नीचे की ओर झुकी रहती है। इसका सर भी बिना परों का और पीले रंग का होता है।

जांघिल को बुज्जा आदि की तरह सूखे स्थान कम पसन्द हैं और इसे प्रायः जलाशयों और कीचड़ आदि से भरे हुए स्थानों पर ही देखा जा सकता है। यह अक्सर छिछले पानी में अपनी आधी चोंच पानी में डुबो कर खड़ा रहता है जैसे ही कोई मेंढक, मछली या कटुआ, घोंघा उसके बीच पड़ता है, यह उसे अपनी मजबूत चोंच से पकड़ कर निगल जाता है। दोपहर के समय पेट भर जाने पर इनका गिरोह अक्सर पानी में खड़े ही खड़े चुपचाप ऊँघता और आराम करता दिखाई पड़ता है और अन्य लम्बी चोंच वाले महाबकों की तरह, यह भी कभी अपना सर हिला कर और चोंच के दोनों पल्लों को लड़ाकर एक तरह की आवाज करता है। यह वैसे तो कम बोलने वाला पक्षी है, लेकिन कभी-कभी बड़े जोर जोर की तेज और कर्कश बोली बोलते हैं। बचपन से पाले जाने पर, सारस की तरह ये भी हिल जाते हैं। और फिर अपने मालिक के पीछे-पीछे कुत्तों की तरह फिरा करते हैं। ये मेंढक, मछली, घोंघे, कटुए तथा पानी के अन्य कीड़े-मकोड़े खाते हैं।

**घोंसला** : जांघिल के जोड़ा बाँधने और अंडा देने का समय अगस्त से मार्च तक है, जब ये लगभग १००–१०० के गिरोह बाँध कर आस-पास के ५–७ पेड़ों पर ही अपने घोंसले बनाते हैं। ये वैसे तो पानी के निकट के पीपल, इमली, बरगद आदि के पेड़ों को चुनते हैं लेकिन कभी-कभी इनके घोंसले आबादी के बीच के पेड़ों पर भी दिखाई पड़ते हैं। ये पतली और सूखी टहनियों के भरे और मचाननुमा घोंसले बनाते हैं, जिनके बीच का भाग कुछ गहरा होता है। मादा २ से ४ तक सफेद अंडे देती है, जिन पर गाढ़ी भूरी चित्तियाँ और धब्बे पड़े होते हैं।

नाप में ये २.७५ × १.८५ इंच के होते हैं।

## ३६४ घोंघिल (Open Bill : Anastomus Oscitans)

**पर्याय** : शिथिल बक, घोंचिल, डोकार, टोंट भंगा, सामुक-खोल।

**पहचान** : घोंघिल को कटुए और घोंघे खाने से ही यह नाम मिला है। यह यहाँ का लम्बी टाँगों और गरदन वाला प्रसिद्ध महाबक है। इसकी चोंच के बीच में कुछ दूर तक संधि रहती है, जिससे इसे पहचानने में ज्यादा दिक्कत नहीं होती।

**रंग-रूप** : घोंघिल की लम्बाई लगभग ३२ इंच और नर-मादा एक-जैसे। सारा शरीर सफेद, लेकिन पंख झड़ने के बाद वह गंदा सिलेटी हो जाता है। यह सिलेटी रंग ऊपर गहरा और नीचे हलका होता है। थोड़े दिनों बाद सिलेटीपन गायब होकर शरीर फिर सफेद हो जाता है। डैने के पंख, दुम और पखनियों के कुछ पर काले और उनमें हरी तथा बैंगनी झलक। चेहरा और गला नंगा, लेकिन माथे पर कुछ पर। बिना परों का भाग कलछौंह। आँख हलकी भूरी। चोंच गंदी हरी और जड़ के पास ललछौंह। चोंच लम्बी, चौड़ी और मजबूत होती है और उसके दोनों पल्ले कुछ खमदार होते हैं, जिसके कारण चोंच बन्द करने पर भी उसके बीच का हिस्सा कुछ खाली रहता है। टाँगें हलकी गुलाबी, उँगलियाँ दूसरे सभी महाबकों से बड़ी।

बच्चों का रंग बड़ों जैसा सिलेटी मायल, लेकिन पीठ भूरी। चेहरे और गले पर नंगी खाल की जगह केवल चोंच से आँख तक एक पतली धारी ही बिना बालों की, बाकी सभी जगहों के ऊपर पर। चोंच काली लेकिन उसके दोनों पल्लों के बीच में संधि नहीं होती।

**निवास** : घोंघिल बारहमासी महाबक है जो जांघिल की तरह यहीं थोड़ा-बहुत स्थान परिवर्तन जरूर कर लेता है लेकिन बाहर नहीं जाता। यह बंगाल और असम की ओर अधिक दिखाई पड़ता है परन्तु थोड़ा-बहुत सारे देश में फैला हुआ है। इसे पानी के निकटवर्ती स्थानों में जोड़े या छोटे गिरोहों में देखा जा सकता है।

**विवरण** : घोंघिल गंदे सिलेटी रंग का प्रसिद्ध महाबक है,

जिसे ताल तलैयों, कीचड़ तथा छिछले पानी में से मेंढक मछली पकड़ते आसानी से देखा जा सकता है। इसका मुख्य भोजन मेंढक मछली, घोंघे, कटुए आदि ही हैं, जिन्हें ये अपनी मजबूत चोंच से बड़ी आसानी से तोड़कर उनके भीतर का नरम मांस खाते हैं।

अन्य महाबकों की तरह यह भी पहाड़ों की ओर नहीं जाता और दिन में चराई के लिए जमीन और रात में बसेरे के लिए पेड़ों का सहारा लेता है। इसकी बाकी सब आदतें अन्य महाबकों-जैसी होती हैं और यह भी उन्हीं की तरह सिर हिलाकर और चोंच के दोनों पल्लों को लड़ाकर विशेष प्रकार की आवाज करता है। यह वैसे तो बहुत कम बोलता है, लेकिन कभी-कभी इसकी कर्कश बोली सुनाई पड़ ही जाती है। घोंघिल यहाँ अन्य महाबकों से अधिक संख्या में पाया जाता है और इसके गिरोह भी उनसे बड़े होते हैं, जो कभी भी आसमान में काफी ऊँचाई पर उड़ते दिखाई पड़ते हैं।

**घोंसला** : घोंघिल बारहमासी पक्षी है जो जुलाई और अगस्त में पतली-पतली टहनियों का गोल मचाननुमा भद्दा-सा घोंसला बनाता है, जो बीच में गहरा होता है। घोंघिल प्रायः चार-पाँच सौ जोड़े एक-साथ मिलकर आस-पास के कुछ ऊँचे पेड़ों पर घोंसले बना लेते हैं, जिसमें एक-एक मादा ४–५ अंडे देती है। ये अंडे पहले तो संदली या सफेद होते हैं, लेकिन कुछ दिन बाद गंदे भूरे रंग के हो जाते हैं।

नाप में ये २.२५ × १.६ इंच के होते हैं।

## ३६५ गैबर (White Stork : Ciconia Ciconia)

**पर्याय** : उजली, राजबक, लगलग, हाजी लगलग, लकलक, घाक।

**पहचान** : गैबर घोंघिल का निकट सम्बन्धी पक्षी है, जिसे कहीं-कहीं सफेद पोशाक के कारण "उजली" भी कहा जाता है। यह शक्ल-सूरत में उसके अनुरूप, लेकिन कद में उससे बड़ा होता है।

**रंग-रूप** : गैबर के नर मादा एक रंग-रूप के और लम्बाई में लगभग ४२ इंच के होते हैं। सारा शरीर सफेद, लेकिन डैने बड़े, पंख काले। छोटे पंखों के किनारे काले और आँखों के चारों ओर की खाल भी काली तथा बिना परों की। आँख-खूनी लाल। चोंच चटक लाल। टाँगें-चटक लाल।

**निवास** : गैबर मौसमी महाबकों में से एक है, जो यहाँ जाड़ों में आकर, जाड़ा समाप्त होते-होते फिर यहाँ से वापस चला जाता है जाड़ों में यह सभी मैदानी भागों में फैल जाता है, लेकिन घुर दक्षिण में और पहाड़ों पर जाना पसन्द नहीं करता। इनकी ज्यादा संख्या देश के उत्तर-पश्चिमी भागों में ही दिखाई पड़ती है। देश से बाहर यह अफ्रीका, पश्चिमी यूरोप और मध्य एशिया में काफी संख्या में दिखाई पड़ते हैं।

**विवरण** : गैबर मौसमी महाबक हैं, जो अपनी सफेद पोशाक और डैने के काले पंखों के कारण बड़ी आसानी से पहचान लिया जाता है। चटक लाल चोंच और टाँगों के कारण भी यह अन्य महाबकों से अलग रहता है।

गैबर के छोटे-छोटे गिरोह छिछले जलाशयों और सड़कों के किनारे कीचड़ और पानी से भरे हुए गढ़ों में अन्य महाबकों के साथ अक्सर मेंढक, मछली और घोंघे-कटुए आदि पकड़ते दिखाई पड़ते हैं। ये खुले मैदानों और खेतों में भी दिखाई पड़ते हैं और चराई के बाद ये भी कभी-कभी चुपचाप ऊँघते और आराम करते रहते हैं। इनकी चोंच न तो बुज्जा की तरह टेढ़ी, न ही घोंघिल की तरह बीच में से खुली होती है बल्कि सीधी और नोकीली रहती है जिससे इसे कीचड़ और छिछले पानी में मछलियों और घोंघे को पकड़ने में बहुत आसानी हो जाती है।

**घोंसला** : अन्य मौसमी पक्षियों की तरह गैबर भी अंडा देने के समय अपने देश को लौट जाता है और वहाँ मई से सितम्बर के बीच में पतली और सूखी टहनियों का घोंसला बनाता है। इसके घोंसले अक्सर ऊँचे मकानों, मीनारों अथवा ऊँची चिमनियों में देखे जा सकते हैं। मादा ३ से ५ तक अंडे देती है।

अंडे सफेद और लगभग ३.२ × १.५ इंच के होते हैं।

## ३६६ आँजन बगुला (Common Heron: Ardea Cinerea)

**पर्याय** : साँई, कबुद, अंजन, प्रख्यात अंजन बक, कबार।

**पहचान** : सिलेटी और सफेद रंग का बगुला जो कद में सब बगुलों से बड़ा होता है। प्रायः अकेला ही पानी में खड़ा रहता है।

**रंग-रूप** : आँजन बगुला ४० इंच का पक्षी है जिसके नर और मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। इसके सर का ऊपरी भाग, चोटी और आँख के पीछे की पट्टी बैंगनी मायल काली होती है। सर का बाकी हिस्सा सफेद रहता है। गरदन भी सफेद रहती है जिसमें ऊपरी भाग पर राखी झलक होती है और निचले भाग पर काली रेखाएँ पड़ी रहती हैं। ऊपर का सारा हिस्सा, दुम और डैने राखीपन लिये सिलेटी। कंधे पर के परों के सिरे सफेद और डैने के बड़े पंख निलछौंह काले रहते हैं। सीने पर मुलायम पर सफेद, जिसके बीच में एक काली पट्टी और नीचे का शेष भाग सफेद रहता है।

आँख की पुतली सुनहली पीली, आँख के आगे का हिस्सा

हरछौंह और बिना परों का। चोंच घुमैली पीली और टाँगें हरछौंह पीली रहती हैं। इसकी चोंच लम्बी नोकीली और दबी रहती है। दुम छोटी, टाँगें और गरदन लम्बी और पैर के अँगूठे पतले और लम्बे होते हैं। बाहर के और बीच के अँगूठे अर्धजालपाद होते हैं और बीच के अँगूठे का नाखून कंघी-जैसा होता है जिससे बगुले अपनी चोटी या कलँगी को सँवार लेते हैं।

**निवास** : आँजन बगुला हमारे देश का बारहमासी पक्षी है जिसे हम अपने देश के सभी प्रकार के जलाशयों में देख सकते हैं। पहाड़ों पर यह पाँच हजार फुट से ऊपर नहीं जाता।

**विवरण** : आँजन बगुला जोड़ा बाँधने की ऋतु में तो अवश्य झुंडों में दिखाई पड़ता है लेकिन वैसे इसे हम प्रायः अकेले ही देखते हैं। झुंड में यह बहुत कम दिखाई पड़ता है। पहाड़ और मैदान की झीलों, नदियों तथा अन्य प्रकार के जलाशयों के निकट यह चुपचाप या तो किनारे पर या छिछले पानी में मछली की घात में खड़ा रहता है, जैसे सो रहा है। लेकिन जैसे ही कोई मेढ़क या मछली निकट आयी नहीं कि इसकी लम्बी गरदन बरछी की तरह उसे छेद लेती है। कभी-कभी यह छिछले पानी में बड़ी सावधानी से कदम रखता हुआ अपने शिकार की टोह में अपनी लम्बी गरदन को आगे की ओर बढ़ा कर चलता है और उसी प्रकार शिकार करता है। उड़ते समय यह अपनी गरदन पीछे की ओर मोड़े रहता है। टाँगों को पीछे फैलाये रहता है। यह उड़ते-उड़ते एक प्रकार की कर्र्, कर्र् जैसी बोली बोलता जाता है। इसका मुख्य भोजन तो मछली और मेढक हैं लेकिन यह छिपकलियाँ, घोंघे, कटुवे और कीड़े-फतिंगे भी खाता है।

**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय मार्च से अगस्त तक रहता है जब टहनियों से अपना भद्दा बड़ा और ढीला-ढाला-सा घोंसला बनाता है। घोंसले के भीतरी भाग को नरम घास-फूस और पत्तियों से मुलायम बना दिया जाता है। ये घोंसले ऊँचे पेड़ पर झुंड में देखे जा सकते हैं और कभी -कभी ये दूसरे बगुलों के साथ एक ही पेड़ पर घोंसले बनाते हैं। समय आने पर मादा इनमें प्रायः ३ अंडे देती है जो थोड़े चौड़े और अंडाकार होते हैं। अंडों का रंग हलका निलछौंह हरा रहता है।

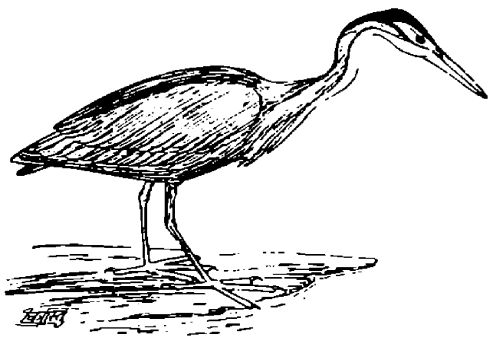
नाप में ये अंडे करीब २.२७ × १.६६ इंच के होते हैं।

## ३६७ नरी बगुला (Purple Heron : Ardea purpurea)

**पर्याय** : नीलारुण बक, लालसाँई, लाल अंजन, खैरा।

**पहचान** : यह आँजन बगुले से कुछ छोटा बगुला जिसका ऊपरी भाग उससे कुछ गाढ़ा, गरदन ललछौंह भूरी और नीचे का हिस्सा हलका कत्थई रहता है।

**रंग-रूप** : नरी बगुला आँजन बगला से कुछ छोटा करीब ३८ इंच का पक्षी है जिसके नर और मादा एक ही जैसे होते हैं। इसके सर के ऊपरी भाग पर चोटी या कलँगी और आँख के पीछे की पट्टी काली रहती है। गरदन ललछौंह भूरी और नीचे का हिस्सा हलका कत्थई होता है। इसके ऊपर का सारा भाग सिलेटी, कंधे के परों के सिरे सफेद और डैने के कुछ बड़े पंख निलछौंह रहते हैं। सीने पर बहुत मुलायम, सफेद पर रहते हैं। आँख की पुतली सुनहली पीली, आँख के आगे का थोड़ानंगा भाग हरछौंह और चोंच घुमैली पीली होती है। टाँगों का रंग हरापन लिये पीला रहता है। दुम छोटी, चोंच लम्बी, नोकीली और दबी हुई। टाँगें और गरदन लम्बी होती हैं। अँगूठे लम्बे और पतले जिनमें बाहर और बीच के थोड़ो दूर तक जालपाद और बीच के अँगूठे का नाखून कंघीनुमा होता है।



नरी बगुला

**निवास** : नरी बगुला भी आँजन की तरह हमारे देश का बारह मासी पक्षी है जो हमें सभी प्रकार के जलाशयों, झीलों, ताल-तलैयों में दिखाई पड़ता है।

**विवरण** : नरी बगुला बहुत शर्मीला बगुला है जो अक्सर दलदली जलाशयों में नरकुल आदि के बीच के खुले हुए पानी के टुकड़ों में शिकार करता दिखाई पड़ता है। यह अकेला भी रहता है और कभी-कभी छोटे-छोटे झुंडों में भी देखा जा सकता है। इसे खुले स्थान कम पसन्द हैं, इसीलिए यह अपने लिए पानी की घास और नरकुलों से भरे हुए तालाबों को चुनता है जहाँ इसकी लम्बी उठी हुई गरदन दूर से ही दिखाई पड़ती है। आहट पाने पर यह छिपना ही ज्यादा पसन्द करता है, लेकिन पास पहुँच जाने पर यह बड़ी कर्कश बोली बोल कर हवा में उड़ जाता है। यह ज्यादातर अँधेरा होने पर अपना शिकार करता है। इसका मुख्य भोजन मछली, मेढक, घोंघे कटुवे, और कीड़े-फतिंगे हैं।

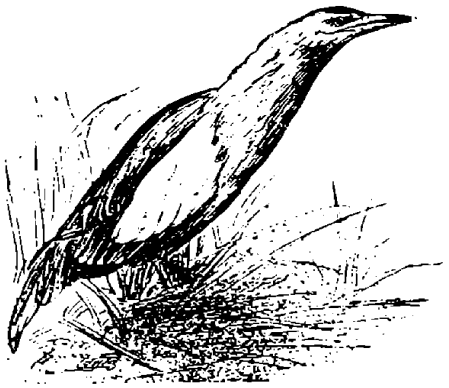
**घोंसला** : इसके जोड़ा बाँधने का समय जुलाई से अगस्त तक रहता है जब यह अपना टहनियों का बड़ा भद्दा और ढीला-ढाला घोंसला किसी छोटे पेड़ के ऊपर बनाता है। प्रायः बहुत-से नरी बगुले एक साथ ही अपने घोंसले बनाते हैं जिसमें मादा ४-५ अंडे देती है। अंडों का रंग हलका निलछौंह हरा रहता है।

नाप में ये अंडे करीब २.१७ × १.५ इंच के होते हैं।

## ३६८ करछिया बगुला (Little Egret : Egretta Garzetta)

**पर्याय** : किलचिया बगुला, क्षुद्र बलाका, पतंखा बगुला, चतौखा बगुला।

**पहचान** : छोटे कद का धुर सफेद बगुला जो पानी के किनारे छोटे झुंडों में दिखाई पड़ता है।



करछिया बगुला

**रंग-रूप** : करछिया बगुला २५ इंच का धुर सफेद पक्षी है जिसके नर और मादा एक ही जैसे होते हैं। इसका सारा शरीर दूध-सा सफेद होता है। जोड़ा बाँधने की ऋतु में इसके सीने पर के मुलायम पर बढ़ जाते हैं और सर पर दो लम्बे पंख कलँगी की तरह निकल आते हैं। पीठ पर के पर भी बढ़ कर दुम को ढक लेते हैं और उस समय यह बहुत भड़कीला लगने लगता है। आँख की पुतली पीली, चोंच काली और आँखके चारों ओरकी थोड़ी नंगी खाल हरछौंह पीली, चोंच काली और अँगूठे पीले रहते हैं। चोंच लम्बी और नोकीली रहती है और गरदन और टाँगें अन्य बगुलों की तरह लम्बी होती हैं।

**निवास** : यह बगुला हमारे देश के प्रायः सभी मैदानी स्थानों में पानी के निकट देखा जा सकता है। यह पहाड़ों पर नहीं पाया जाता।

**विवरण** : करछिया बगुला यहाँ का बहुत प्रसिद्ध सफेद रंग का बगुला है जिसे हम मैदान के प्रायः सभी जलाशयों के निकट देख सकते हैं। यह नदी-नालों, ताल, तलैयों, झील और नदियों के अलावा धान के पानी भरे खेतों में भी देखा जा सकता है।

यह प्रायः छोटे-बड़े झुंडों में रहता है और छिछले पानी तथा पानी के किनारे घूम फिर का मेढक, मछलियाँ पकड़ता रहता है जो इसका मुख्य भोजन है। इनके अलावा यह घोंघे, कटुए, छिपकलियाँ, टिड्डे तथा पानी के निकट रहने वाले अन्य कीड़े-फतिंगों से अपना पेट भरता है।

भोजन कर लेने पर यह जमीन पर या किसी पेड़ पर बैठ कर आराम करता है। इसकी उड़ान सुस्त होती है और उड़ते समय यह अन्य बगुलों की तरह अपनी गरदन भीतर की ओर सिकोड़ लेता है और दोनों टाँगों को पीछे फैला देता है। इसके जोड़ा बाँधने के समय के बढ़े हुए सुन्दर और चमकीले पर अच्छी कीमत पर बिकते हैं जो कलँगियों में लगाने के काम आते हैं। इन्हीं परों के लिए विदेशों में इनको काफी संख्या में पाला जाता था, लेकिन अब इनकी खपत कम हो गयी है।

**घोंसला** : इस बगुले के जोड़ा बाँधने का समय उत्तर भारत में जुलाई से अगस्त तक और दक्षिण भारत में दिसम्बर से फरवरी तक रहता है जब ये बगुले झुंड में किसी ऊँचे पेड़ पर अपना घोंसला बनाते हैं। ये कभी-कभी अन्य बगुलों तथा महाबकों के साथ अपने घोंसले बनाते हैं। कभी-कभी ये घोंसले बस्ती के निकट या बस्ती के भीतर किसी पेड़ पर भी दिखाई पड़ते हैं जो छिछले, भद्दे और टहनियों से बनाये जाते हैं। कभी-कभी इनका भीतरी भाग घास-फूस से मुलायम कर दिया जाता है। मादा समय आने पर इसमें ४ से ५ तक अंडे देती है जो थोड़े चौड़े और बैंजाबी होते हैं। अंडों का रंग हलका निलछौंह हरा रहता है।

ये अंडे करीब १.७५ × १.३२ इंच के होते हैं।

## ३६९ मलंग बगुला (Large Egret : Egretta alba)

**पर्याय** : टर्र बगुला, बड़ा बगुला, ज्येष्ठ बलाका, घार बगुला।

**पहचान** : यह हमारे यहाँ सफेद बगुलों में सबसे बड़ा होता है जो प्रायः अकेले ही रहता है। इसके सर पर कलंगी नहीं होती।



मलंग बगुला

**रंग-रूप** : मलंग ३६ इंच का सफेद बगुला है जो हमारे

देश के सफेद बगुलों में सबसे बड़ा होता है। करछिया की तरह इसके सर पर न तो कलँगी ही रहती है और न जोड़ा-बाँधने की ऋतु में इसके सीने पर लम्बे चमकीले सुन्दर पर ही निकल आते हैं। इसके बड़े कद और दूध जैसी सफेद पोशाक के कारण इसको पहचानने में धोखा नहीं हो सकता। इसके नर और मादा एक ही जैसे होते हैं। आँख की पुतली पीली, चोंच वैसे तो पीली रहती है लेकिन अंडा देने के समय वह काली हो जाती है। टाँगें काली रहती हैं। चोंच लम्बी और नोकीली होती है। टाँगें और गरदन अन्य बगुलों की तरह लम्बी होती हैं। अँगूठे लम्बे और थोड़ी दूर तक जुड़े रहते हैं।

**निवास** : मलंग हमारे देश का बारहमासी पक्षी है जो हमारा देश छोड़कर बाहर नहीं जाता। यह सारे देश में फैला हुआ है और इसे सभी नदियों, तालाबों, झीलों आदि के निकट देखा जा सकता है।

**विवरण** : मलंग सफेद कद का बड़ा बगुला है जो प्रायः सभी तरह के जलाशयों के आस-पास दिखाई पड़ता है। यह पहाड़ की ओर नहीं जाता और मैदानी देशों में ही अपना समय बिताता है। यह प्रायः अकेला ही दिखाई पड़ता है और छिछले पानी में या पानी के किनारे मेढक मछलियों की ताक में चुपचाप खड़ा रहता है। कभी-कभी यह टहल-टहल कर भी शिकार करता है। इसका मुख्य भोजन वैसे तो मेढक और मछलियाँ हैं लेकिन यह घोंघे, कटुए, छिपकलियाँ तथा पानी के निकट के अन्य कीड़े-फतिंगों से भी अपना पेट भरता है।

मलंग की और सब आदतें अन्य बगुलों जैसी होती हैं। इससे उन्हें दुहराने से कोई लाभ नहीं है। उड़ते समय यह अपनी लम्बी गरदन को भीतर की ओर समेट लेता है और अपनी लम्बी टाँगों को पीछे की ओर फैलाये रखता है। इसकी बोली अन्य बगुलों की तरह कर्कश होती है।

**घोंसला** : मलंग के जोड़ा बाँधने का समय उत्तर भारत में जुलाई, अगस्त और दक्षिण भारत में दिसम्बर से फरवरी तक रहता है। ये इसी बीच झुंड में सूखी टहनियों से अपना बड़ा और भद्दा-सा घोंसला बनाते हैं जो किसी ऊँचे पेड़ पर रखा रहता है। बहुत से मलंग एक साथ ही किसी पेड़ पर घोंसला बनाते हैं जो कभी-कभी बस्ती के बहुत निकट रहता है। मादा समय आने पर इसमें ३-४ निलछौंह रंग के अंडे देती है जो थोड़े चौड़े और अंडाकार रहते हैं।

ये अंडे करीब २.११ × १.५५ इंच के होते हैं।

## ३७० गाय बगुला (Cattle Egret : Bubulcus Ibis)

**पर्याय** : सुरखिया बगुला, डोरिया बगुला, गो बलाका बादामी बगुला।

**पहचान** : यह छोटा सफेद बगुला है जिसके सीने और पीठ पर जोड़ा बाँधने के समय नारंगीपन लिये हल्के भूरे पर निकल आते हैं। इसे अक्सर मवेशियों के निकट देखा जा सकता है।

**रंग-रूप** : यह बगुला २० इंच का होता है और इसका सारा शरीर दूध जैसा सफेद रहता है। इसमें और करछिया बगुले में भेद करना कठिन है, लेकिन जोड़ा बाँधने की ऋतु में जब इसके सीने और पीठ पर नारंगीपन लिये हल्के भूरे पर निकल आते हैं तब इसे पहचानना कठिन नहीं होता। सीने के पर महीन बाल-जैसे और पीठ के लम्बे रहते हैं। इसकी चोंच लम्बी और नोकीली होती है और अन्य बगुलों की तरह गरदन और टाँगें भी लम्बी रहती हैं। आँख की पुतली सुनहली पीली, आँख से चोंच तक की नंगी खाल हरछौंह पीली, चोंच पीली और टाँगें काली होती हैं। चोंच लम्बी और नोकीली। टाँगें और गरदन अन्य बगुलों की तरह लम्बी और पैर के अँगूठे लम्बे और थोड़े जालपाद।

**निवास** : गाय बगुला हमारे देश का बारहमासी पक्षी है जो हमारा देश छोड़कर बाहर नहीं जाता। यह सारे देश के सारे मैदानी भागों के जलाशयों तथा खेतों में दिखाई पड़ते हैं। इन्हें न तो रेगिस्तानी हिस्से पसन्द हैं और न पर्वतीय प्रदेश ही। यह चरागाहों में मवेशियों के आस-पास दिखाई पड़ते हैं।

**विवरण** : गाय बगुला हमारे यहाँ के प्रसिद्ध बगुलों में से एक है। बरसात में इसकी नारंगी भूरी पीठ और सीने को देख कर इसको पहचानने में भूल नहीं हो सकती। यह अन्य बगुलों की भाँति पानी के निकट ही नहीं रहता बल्कि इसे हम जलाशयों के साथ ही खुले मैदानों, खेतों तथा चारागाहों में भी देख सकते हैं। पानी के निकट तो यह अन्य झुंड में अन्य बगुलों की तरह मेढक, मछली तथा कटुए और घोंघे का शिकार करते हैं लेकिन खेत और चारागाहों में मवेशियों के साथ-साथ चलते हैं, और जानवरों के चलने से जो कीड़े-फतिंगे घास में से उड़ते हैं ये उनको पकड़ कर उनसे पेट भरते हैं। कभी-कभी ये किसी गाय या भैंस की पीठ पर भी बैठे दिखाई पड़ते हैं और उनके पीठ की कुतकी और किलनियाँ खाते रहते हैं। इनकी और सब आदतें अन्य बगुलों की ही जैसी होती हैं और इनकी बोली भी उन्हीं की तरह कर्कश होती है।

**घोंसला** : गाय बगुले उत्तर भारत में जून से अगस्त तक और दक्षिण भारत में नवम्बर से दिसम्बर तक जोड़ा बाँधकर अपने घोंसले बनाते हैं। अन्य बगुलों की तरह यह भी किसी ऊँचे पेड़ पर झुंड में अपने बड़े और भद्दे घोंसले बनाते हैं जो सूखी लकड़ियों से बनाये जाते हैं। इनके घोंसले और दूसरे बगुलों के साथ ही एक पेड़ पर रखे रहते हैं। मादा समय आने पर इसमें ४–५ अंडे देती है जो थोड़े चौड़े बैंजाबी होते हैं और जिनका

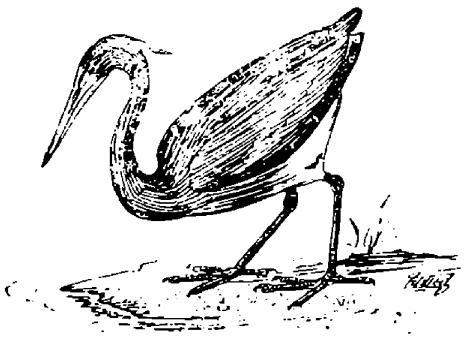
सिरा नोकीला रहता है। अंडे सफेद होते हैं जिन पर हलकी नीली या हरी झलक रहती है।

ये अंडे करीब १.७१ × १.३२ इंच के होते हैं।

## ३७१ चमर बगुली (Paddy Bird : Ardeola Grayi)

**पर्याय** : अंधी बगुली, भारत अंध बक।

**पहचान** : छोटे कद की भूरी और सफेद बगुली जो सभी ताल-तलैयों में देखी जा सकती है।



चमर बगुली

**रंग-रूप** : इस प्रसिद्ध बगुली की लम्बाई १८ इंच की होती है और इसके नर और मादा एक ही जैसे होते हैं। जाड़ों में इसका सर और गरदन का ऊपरी हिस्सा गहरा भूरा और पीठ सिलेटी भूरी रहती है, लेकिन ऊपर का शेष भाग और नीचे का कुल हिस्सा सफेद रहता है। इसके सीने पर भूरी धारियाँ पड़ी रहती हैं और सर पर कुछ लम्बे सफेद पर चोटी की तरह निकले रहते हैं।

बरसात में सर और गरदन पिलछौंह भूरी और ठुड्डी तथा गला सफेद हो जाता है। पीठ कत्थई हो जाती है जिस पर बढ़े हुए बाल-जैसे पतले परों के सिरे सिलेटी रहते हैं। सीने का ऊपरी हिस्सा राखी भूरा और सफेद लकीरों से भरा रहता है।

आँख की पुतली पीली, चोंच जड़ के पास निलछौंह, बीच में हलकी पीली और सिरे पर काली रहती है। टाँगें गंदे हरे रंग की होती हैं।

चोंच लम्बी और नोकीली, गरदन और टाँगें लम्बी तथा पैर के अँगूठे भी अन्य बगुलों की तरह काफी लम्बे रहते हैं।

**निवास** : चमर बगुली हमारे यहाँ की प्रसिद्ध बारहमासी चिड़िया है जो मौसम के बदलाव के साथ यहीं थोड़ा स्थान-परिवर्तन करके भी हमारे देश से बाहर नहीं जाती। इसे हम सारे देश के मैदान तथा जलाशयों में देख सकते हैं। पहाड़ों पर भी यह ३–४ हजार फुट की ऊँचाई तक चली जाती है।

**विवरण** : चमर बगुली यहाँ की बहुत प्रसिद्ध चिड़िया है जिससे हम सभी परिचित हैं। इसे कहीं-कहीं 'अंधी बगुली' भी कहते हैं। यह हमारे यहाँ के सभी छोटे-बड़े तालाबों, झीलों, नदियों तथा गाँव-बस्ती के आसपास की गड़हियों तक में देखी जा सकती है। इसे पानी से और कीचड़ से भरे धान के खेत में भी देखा जा सकता है।

यह बहुत ढीठ चिड़िया है जो निकट चले जाने पर भी नहीं उड़ती। इसके गंदे सिलेटी कत्थई रंग के कारण जल्द इस पर निगाह नहीं पड़ती। इसके शिकार करने का तरीका दूसरे बगुले-जैसा होता है और यह भी या तो थोड़े पानी में या पानी के किनारे चुपचाप खड़ी रहती है या छिछले पानी में धीरे-धीरे पैर बढ़ाकर चलती है, लेकिन जैसे ही कोई मेढक, मछली इसे दिखाई पड़ी नहीं कि इसकी मुड़ी हुई गरदन ऊपर उठ कर तेज बरछी की तरह चलती है और इसकी तेज चोंच मछली को छेद लेती है।

इसका मुख्य भोजन मेढक, मछली तथा कीड़े-फतिंगे हैं। दिन के समय तो ये अकेली ही अपना शिकार करती रहती हैं लेकिन रात में इनका झुंड किसी किनारे के वृक्ष पर एक साथ ही बसेरा लेता है। इनकी और आदतें अन्य बगुलों से मिलती-जुलती होती हैं।

**घोंसला** : चमर बगुली के जोड़ा बाँधने का समय मई से सितम्बर तक रहता है जब यह पतली सूखी टहनियों का तितरा-बितरा-सा घोंसला बनाती है। एक ही पेड़ पर इन बगुलियों के बहुत-से घोंसले देखे जा सकते हैं जहाँ ये हर साल अपने घोंसले बनाया करती हैं। समय आने पर मादा इसमें ४–५ हरछौंह नीले रंग के अंडे देती है।

नाप में ये अंडे करीब १.४८ × १.१७ इंच के रहते हैं।

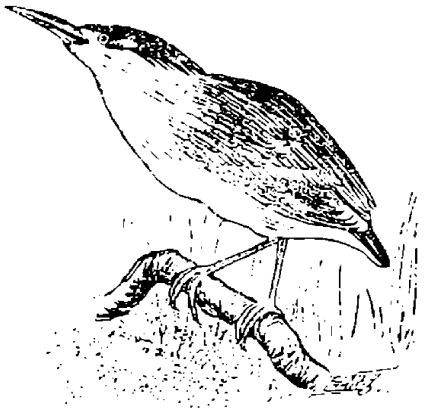
## ३७२ वाक (Night Heron Nycticorax Nycticorax)

**पर्याय** : नक्त बक, कोकराई, गदरी।

**पहचान** : वाक रात में उड़ने वाला बगुला है, जिसकी इस 'वाक-वाक' की बोली के कारण ही यह नाम मिला है। देखने में यह अन्य बगुलों की तरह सुन्दर और सफेद पोशाक वाला नहीं होता और दूर से बगुली या चमर बगुले-सा लगता है।

**रंग-रूप** : वाक की लम्बाई लगभग २३ इंच और नर-मादा एक ही रंग-रूप के। सर का ऊपरी हिस्सा और पीठ काली, जिसमें हरी-सी चमक। चोटी के कुछ बढ़े हुए, लम्बे पर सफेद। माथा और आँख के पीछे की लकीर काली, गाल और नीचे का सारा हिस्सा सफेद। गरदन, बगली हिस्से, डैने, दुमगजा और दुम राखी रंग के, जिसमें हलके गुलाबीपन का मेल। आँख-खूनी लाल, पुतली से चोंच तक की नंगी खाल पिलछौंह हरी। चोंच काली और जड़ के पास पिलछौंह। टाँगें पिलछौंह हरी।

**निवास** : यह सारे देश में फैला है, लेकिन पहाड़ी क्षेत्रों की ओर ५ हजार फुट से ऊपर नहीं जाता।



वाक

**विवरण** : वाक रात्रिचारी बगुला है, जो शक्ल-सूरत में बहुत कुछ चमर बगुली-सा होता है। यह यहाँ का बारहमासी पक्षी है, जो दिन भर किसी पेड़ पर बैठकर ऊँघा करता है, लेकिन रात होते ही 'वाक-वाक' जैसी कर्कश बोली बोलता हुआ इधर-उधर उड़ने लगता है। इसकी चोंच अन्य बगुलों से मजबूत और चौड़ी होती है तथा गरदन भी छोटी और मोटी होती है।

रात्रिचारी होने के अलावा इसकी प्रायः सभी आदतें बगुलों-जैसी होती है। अन्य बगुलों की तरह यह भी जलाशयों के पास पेड़ों पर गिरोह बाँध कर रहता है। दिन भर आराम करने के बाद, सूर्यास्त होते ही ये अपने भोजन की तलाश में अलग-अलग उड़ जाते हैं और सवेरा होने के पहले अपने पेड़ों पर लौट आते हैं। इनका मुख्य भोजन कीड़े, मेंढक, मछलियाँ, घोंघे-कटुए तथा छोटे-मोटे जीव-जन्तु हैं, जिनका ये अन्य बगुलों के ही समान शिकार करते हैं।

**घोंसला** : बारहमासी पक्षी होने के कारण, वाक यहीं अपने घोंसले बनाकर अंडे देता है। इसके अंडे देने का समय मैदानों में जुलाई और अगस्त तथा पहाड़ी क्षेत्रों में अप्रैल और मई के बीच में रहता है। ये पतली टहनियों का घोंसला बनाते हैं जो पेड़ों पर काफी ऊँचाई पर रखे जाते हैं। घोंसले के लिए ये प्रायः ऐसे पेड़ों को ही चुनते हैं, जिन पर दूसरे बगुलों के भी घोंसले हों इसमें मादा वाक प्रायः ४-५ अंडे देती है, जो हलके हरे रंग के होते हैं और उन पर किसी प्रकार की चित्तियाँ या निशान नहीं होते।

नाप में ये अंडे लगभग १.९२ × १.३५ इंच के होते हैं।

## ३७३ खैरी बगुली (Chestnut Bittern : Nycticorax Nycticorax)

**पर्याय** : लाल बगुली, लोहित, क्षुद्र-बक।

**पहचान** : यह छोटी-सी खैरे रंग की बगुली है जो पानी के किनारे घास और नरकुलों में रहती है।

**रंग-रूप** : खैरी बगुली १५ इंच की चिड़िया है जिसके नर और मादा का रंग अलग-अलग होता है। नर का सारा ऊपरी भाग, डैने और दुम खैरा रहता है और नीचे का सारा हिस्सा पिलछौंह भूरा होता है। गले के दोनों ओर सफेद धारी रहती है और सीने के दोनों ओर कुछ पर काले रंग के रहते हैं। मादा का ऊपरी हिस्सा कत्थई भूरा डैने भूरे और नीचे का हिस्सा बादामी रहता है जिस पर गाढ़ी भूरी धारियाँ पड़ी रहती हैं। आँख की पुतली ललछौंह पीली, चोंच पीली, जिसका सिरा कलछौंह और टाँगें पिलछौंह हरी रहती हैं। चोंच मजबूत, लम्बी व नोकीली होती है।

**निवास** : यह बगुली हमारे देश के उत्तरी भागों में ही पायी जाती है जो दक्षिण की ओर नहीं जाती। यह यहाँ की बारहमासी बगुली है जो मौसम के अनुसार यही थोड़ा स्थान-परिवर्तन करके हमारा देश नहीं छोड़ती। उत्तर भारत में यह पश्चिम की अपेक्षा पूर्व की ओर अधिक दिखाई पड़ती है।

**विवरण** : खैरी बगुली एक तो ऐसे ही हमारे यहाँ कम संख्या में पायी जाती है दूसरे इसके शर्मीले स्वभाव और नरकुल और घास से भरे हुए तालाबों के निकट रहने की आदत के कारण इसको जल्द देखना संभव नहीं होता। दिन के समय यह घने नरकुलों के बीच छिपी रहती है और बहुत कोशिश करने पर ही बाहर निकलती है। यह ज्यादातर रात में बाहर निकल कर तालाब के खुले हिस्से की ओर चला जाती है और मेंढक, मछलियों और पानी के कीड़े-मकोड़े, पतिंगों से अपना पेट भरती है। शिकार की घात में यह चुपचाप पानी में व पानी के किनारे बहुत देर तक खड़ी रहती है, जैसे ऊँघ रही हो, लेकिन कभी-कभी यह बहुत तेज और चंचल भी हो जाती है। इनकी बोली हलकी और कर्कश होती है।

**घोंसला** : इनका जोड़ा बाँधने और घोंसला बनाने का समय जून से सितम्बर तक रहता है जब मादा ४ से ५ तक अंडे देती है। ये अपने घोंसले पानी की घास और इसी प्रकार की अन्य बनस्पतियों से बनाते हैं जिसे ये घने नरकुलों के बीच पानी से थोड़े ऊपर रख देते हैं। इनके अंडे चौड़े और बैजावी होते हैं जो प्रायः सफेद ही रहते हैं कभी-कभी इन पर हलकी नीली झलक भी दिखाई पड़ती है।

ये अंडे करीब १.३० × १.०५ इंच के होते हैं।

## ३७४ हंज (Flamingo : Phoenicopterus ruber)

**पर्याय** : राजहंस, काजे-सुर्ख, बलाक, कन थुंटी। हंसावर, ठाकुर जी का बराती।



हंस

**पहचान** : लाल रंग की लम्बी टाँगों तथा सफेद और गुलाबी पोशाक के कारण हंसावर जलाशयों में बहुत भला लगता है। चिड़ियाघरों के छोटे-छोटे कृत्रिम ताल-तलैयों में भी अन्य जलाशय-पक्षियों के बीच राजहंस-सा दीख पड़ता है।

**रंग-रूप** : लम्बाई लगभग ५० इंच। नर का सारा शरीर हलके गुलाबी रंग की झलक लिए सफेद। दुम, सर और गरदन गुलाबी। पंख और पखनियाँ काले और उनके ढकने धुर सफेद, लेकिन नीचे के ढकने लाल। मादा रंग-रूप में करीब-करीब नर की ही तरह, लेकिन कभी-कभी उसकी गरदन, सर, पीठ तथा परों का गुलाबी रंग, नर से हलका होता है। चोंच-गुलाबी, जिसका सिरा काला। आँख पीली। टाँगें लाल।

**निवास** : हंसावर मौसमी चिड़िया है, जिसका मुख्य निवास दक्षिण यूरोप तथा सम्पूर्ण अफ्रीका है। भारत में यह जाड़ों में बत्तखों के साथ आती है और सारे देश में फैल जाती है, फिर जाड़ा समाप्त होते-होते अपने देश को लौट जाती है। जाड़ों में भी ये अधिकांशतः देश के पश्चिमी भागों में ही रह जाते हैं और पूर्व में बंगाल तक थोड़े से ही पक्षी पहुँच पाते हैं।

**विवरण** : हंसावर अन्य मौसमी बत्तखों की तरह हमारे यहाँ बहुत अधिक संख्या में नहीं आतीं। इसीलिए हम इससे अधिक परिचित नहीं हैं। इस सुन्दर पक्षी की चोंच अन्य पक्षियों से भिन्न होती है, जिससे इसे पहचानने में जरा भी कठिनाई नहीं होती। चोंच टेढ़ी और बीच से आगे की ओर झुकी होती है, जिससे इसके खाने का ढंग भी निराला होता है। चराई के समय हंसावर अपने दोनों पैरों को फैलाकर अपनी लम्बी गरदन को पानी तक झुका लेती है और फिर अपनी टेढ़ी चोंच को पानी में डुबोकर, आगे-पीछे या दायें-बायें चलाती है, जिससे पानी में कीचड़ उठता है और उसमें के छोटे-मोटे कीड़े-मकोड़े और वनस्पति के रेशे आदि उभर कर इसके मुँह के भीतर चले जाते हैं।

**घोंसला** : हंसावर वैसे तो हमारे यहाँ की मौसमी चिड़िया है और अंडा देने के समय यह हमारे देश में नहीं रहती, लेकिन इसके घोंसला बनाने का ढंग इतना रोचक है कि उसका संक्षिप्त वर्णन दे देना अनुचित न होगा।

अफ्रीका आदि देशों में, जहाँ ये अंडे देती हैं, जून-जुलाई में हजारों हंसावर इकट्ठा होकर, किसी छिछले पानी के स्थान को चुन लेते हैं। फिर वे वहीं लगभग डेढ़ फुट ऊँचे, मिट्टी के गोल घोंसले बनाते हैं, जो देखने में गोल चबूतरे से लगते हैं। इन मिट्टी के गोल घोंसलों का ऊपरी भाग सपाट और उसके बीच में एक छिछला गढ़ा रहता है। मादा इसी में अंडे देती है और चबूतरे-नुमा घोंसले पर अपने लम्बे पैर समेटकर अंडों को सेने के लिए बैठती है। इनके अंडे एकदम सफेद होते हैं, जिनमें हलकी-सी नीली झलक रहती है। अंडों की संख्या प्रायः २ होती है। अंडे नाप में करीब ३.६ × २.३ इंच के होते हैं।

## ३७५ हंस (Mute Swan : Cygnus olor)

**पर्याय** : मूक हंस, पाक हंस।

**पहचान** : धुर सफेद रंग का बड़े आकार का बहुत ही सुन्दर पक्षी जो हमारे देश में केवल कश्मीर तक ही आता है। इसकी आँख के पीछे का भाग काला रहता है और टाँगें भी घुमैली काली होती हैं।

**रंग-रूप** : नर-मादा दोनों एक ही रंग-रूप के। दोनों का सारा शरीर दूध-सा सफेद, आँख के पीछे के हिस्से काले। चोंच ललछौंह सींग के रंग की, लेकिन उसकी जड़ काली। आँख गाढ़ी भूरी। टाँगें घुमैली काली तथा जालपाद। औसत लम्बाई ४.५ फुट। मादा कद में नर से कुछ छोटी।

**निवास** : हंस पक्षियों का राजा माना जाता है और यह है भी बहुत सुन्दर और शानदार पक्षी लेकिन यह हमारे देश के कुछ उत्तर पश्चिमी प्रदेशों के अतिरिक्त और कहीं नहीं पाया जाता। यह यहाँ का मौसमी पक्षी है जो जाड़ों के आरम्भ में कश्मीर तथा उसके आस-पास के हिमालय के ऊँचे प्रदेशों में थोड़ी ही संख्या में आता है। और मौसमी बत्तखों की तरह, जाड़ा समाप्त होते न होते फिर यहाँ से लौट जाता है।

**विवरण** : सच पूछा जाय तो हमारे देश में यही हंस जाड़ों में आता है और वह भी सारे देश में न फैलकर, केवल कश्मीर के आस-पास के हिस्सों में ही रहकर, वहीं से लौट जाता है। इसे अंग्रेजी में म्यूट स्वान (Mute Swan) अर्थात् मूक हंस कहते हैं, यद्यपि यह एकदम मूक नहीं होता, बल्कि कभी-कभी बत्तखों की तरह घुरघुराता है। संसार में वैसे और भी कई हंस हैं, जिनमें कुछ काले, कुछ सफेद और कुछ चितकबरे होते हैं लेकिन इस हंस को इसकी चोंच के ऊपर के काले कुब्बे के कारण बड़ी आसानी से अलग पहचाना जा सकता है। यह काला कुब्ब केवल नर के ही होता है और वह भी बचपन में नहीं वरन् पुराने हो जाने पर निकलता है। इस कुब्ब के अलावा, इसकी चोंच की जड़ के पास से आँख तक का हिस्सा काला होता है। ये हंस अकेले या जोड़े में न रहकर छोटे-छोटे गिरोहों में रहते हैं और बहुत सीधे और ढीठ होते हैं। सीधे पक्षी को मारना लोग प्रायः पसन्द नहीं करते।

मूक हंस का मुख्य भोजन घास-फूस, काई आदि है, लेकिन ये कभी-कभी कीड़े-मकोड़े और मछलियों के अंडे आदि भी खा लेते हैं। पालतू हो जाने पर हंस अनाज भी खाने लगते हैं, लेकिन जंगली हालत में यह काज तथा बत्तखों की तरह खेती का सफाया करने नहीं आता। ये ज्यादातर पानी में ही अपना समय बिताते हैं और जब किनारे पर घास-फूस की तलाश में आते भी हैं, तो पानी में ही रह कर नरम घास या कल्लों को नोच कर खाते रहते हैं। ये न तो पानी में पनडुब्बियों की तरह ज्यादा डुबकी लगाते हैं और न ही उनकी तरह पानी के भीतर तैरते हैं। अपने भारी

शरीर के कारण मूक हंस जल्द और तेज़ी से हवा में नहीं उठ पाते लेकिन एक बार हवा में पहुँच जाने पर इनकी उड़ान बहुत तेज़ हो जाती है।

**घोंसला** : मूक हंस मौसमी पक्षी है, जो घोंसला बनाने और अंडा देने के समय यहाँ से लौट जाता है और तब दक्षिणी साइबेरिया और पश्चिमी तुर्किस्तान से लेकर जर्मनी, नार्वे और डेनमार्क के जलाशयों के किनारे इनकी मादा घास-फूस का बहुत बड़ा घोंसला बनाकर अंडे देती हैं। मूक हंस के घोंसले प्रायः गोलाकार होते हैं, जिनका निचला भाग दस या बारह फुट चौड़ा रहता है। ये घोंसले पाँच छः फुट ऊँचे होते हैं और इन्हें बनाने में एक-दो गाड़ी घास-पतवार लग जाता है। घोंसले का ऊपरी हिस्सा कटोरेनुमा होता है जिसमें मादा जून-जुलाई के महीने में ४–६ अंडे देती है। ये अंडे पीलापन या हरापन लिये सफेद रंग के और नाप में लगभग ४.५ × ३ इंच के होते हैं।

## ३७६ देवहंस (White-Winged Wood Duck : Asacornis Scutulatus)

**पर्याय** : सितमाल हंस, श्वेत-पक्ष वन हंसक।

**पहचान** : देवहंस उन बारहमासी बत्तखों में से एक है, जिनके बहुत कम संख्या में आने और यहाँ केवल थोड़े ही भागों में पहुँचने के कारण, जिनसे लोग बहुत कम परिचित हैं। अपने बड़े कद के कारण ही इसे देवहंस जैसा सुन्दर नाम मिला है।

**रंग-रूप** : देवहंस का सर और गरदन का ऊपरी भाग सफेद, जिस पर नकटे की तरह छोटी-छोटी काली बिंदियाँ और वे गरदन के ऊपरी हिस्से पर निचले हिस्से से ज्यादा घनी। गरदन का निचला भाग, छत्ता और सीने का बगली हिस्सा चमकीला काला। लेकिन पेट और शरीर के दोनों बगल के हिस्से गाढ़े कत्थई। सारा ऊपरी भाग गाढ़ा कत्थई और निचला भाग तथा दुमढकना कलछौंह कत्थई। डैने पर एक चौड़ा सफेद चित्ता और एक पतली-सी सफेद धारी, जिससे इसे दूर से ही पहचाना जा सकता है।

बड़े पंख गाढ़े भूरे, छोटे सलेटी और पखनियाँ सफेद। दुम कलछौंह, नरों के पुराने होने पर उनकी दुम में हरी-सी चमक आ जाती है। लम्बाई २४ इंच। नर मादा प्रायः एक ही रंग-रूप के। मादा नर से कद में कुछ छोटी और उसका रंग भी नर से कुछ हलका। चोंच पतली और नारंगी, जिसका सिरा और निचला भाग काला और उस पर छोटी-छोटी काली बिंदिया। आँख भूरी और लाल। टाँगे पिलछौंह नारंगी।

**निवास** : देवहंस केवल पूर्वी छोर पर असम प्रदेश में ही पाया जाता है और वहाँ बारहों महीने रहने के कारण, इसे वहाँ की तो बारहमासी चिड़िया कहा ही जा सकता है। असम प्रदेश के बाहर भी कुछ भूले-भटके पक्षी नज़र आ जाते हैं, लेकिन बहुत ही कम संख्या में होने के कारण, हमारी निगाह-तले कम ही पड़ते हैं।

**विवरण** : देवहंस को उसके बड़े कद के कारण ही हंस कहा जाता है, यद्यपि यह हंस का सम्बन्धी न होकर, वास्तव में बत्तखों का भाई-बन्द है। इसे इसकी चित्तीदार सफेद गरदन तथा डैने पर के सफेद बड़े चित्ते के कारण, दूर से ही पहचाना जा सकता है।

देवहंस अपना अधिक समय या तो तराइयों के घने जंगली के जलाशयों में बिताते हैं या किसी पेड़ पर अकेले या जोड़े में बैठे रहते हैं। इन्हें ऐसे जलाशय पसन्द हैं, जिनके चारों ओर घनी घास या नरकुल आदि हों और वहाँ भी ये पाँच-पाँच या छः-छः के छोटे-छोटे गिरोहों में ही दिखाई पड़ते हैं। इनका मुख्य भोजन पानी के कीड़े-मकोड़े, मेढक, मछली, घोंघे, कटुए, घास-पात और गल्ला तथा बीज हैं। इसकी बोली बड़ी बत्तखों से मिलती-जुलती होती है। जोड़ा बाँधने का समय निकट आने पर नर की पीली चोंच लाल हो जाती है और जड़ के पास कुछ सूज भी जाती है।

**घोंसला** : असम में, वहाँ के बारहमासी पक्षी होने के कारण, देवहंस मई-जून में जोड़ा बाँध कर घोंसले की तैयारी में लग जाते हैं और तब ये हमें अक्सर जोड़े में ही दिखलाई पड़ते हैं। जून-जुलाई में नकटे आदि की तरह किसी पेड़ के खोंथे में घास-फूस रखकर मादा, ५–६ अंडे देती है जो पिलछौंह या मटमैले होते हैं।

इसके अंडे ३ × २ इंच के होते हैं।

## ३७७ सवन (Bar-headed Goose : Ansser indicus)

**पर्याय** : सोनाबत, काज़, सवन, कादंब हंस, बिरवा।

**पहचान** : सवन या काज़ हमारे देश की बहुत प्रसिद्ध बड़ी बत है जो जाड़ों में यहाँ सबसे अधिक संख्या में आती है। यह राखीपन लिये भूरे और सफेद रंग की बत है जिसको इसकी गरदन के ऊपर के दोनों काले धारियों के कारण आसानी से पहचाना जा सकता है।

**रंग-रूप** : सर सफेद जिसमें, गुद्दी तक दो कलछौंह पट्टियाँ। गरदन भूरी और बगली गरदन सफेद। शरीर का ऊपरी हिस्सा हलका राखी, जिसमें बहुत हलके राखी एवं पीलेपन की झलक। परों के किनारे पर सफेदी और कुछ खैरापन। निचली पीठ और दुमगज़ा पिलछौंह राखी, दुमगज़ा और दुम के ऊपरी ढकनों के किनारे सफेद। दुम राखी, जिसके किनारे सफेद।

पंख भी राखी, सिरे पर गहरा, लेकिन छोटे पंख तक पहुँचते-पहुँचते धूमिल हो जाता है। पखनी भूरापन लिये कंजई, जो छत्ते तक पहुँचते-पहुँचते राखी हो जाती है। शरीर और दुम का निचला हिस्सा सफेद। बगल के हिस्से कंजई भूरे, जो किनारों पर हल्के हो जाते हैं। नर की लम्बाई लगभग ३२ इंच और सवन नर भी वैसे मादा से कुछ बड़े। बत की तरह सवन के नर भी तीन बरस में प्रौढ़ होते हैं। इस कारण कुछ पुरानी मादाएँ नर पट्ठों से बड़ी दिखती हैं। चोंच नारंगी पीली। आँख भूरी। टाँगे नारंगी।

**निवास**: सोनाबत यहाँ की बहुत प्रसिद्ध बत है जो हमारे यहाँ सवन और काज़ के नाम से ही ज्यादा प्रसिद्ध है। इसकी बहुत-सी आदतें बड़ी बत से मिलती-जुलती हैं, लेकिन एक तो, इसका रंग-रूप उससे नहीं मिलता और दूसरे, इसके बतों से कहीं बड़े-बड़े झुंड यहाँ आते हैं। सवन की दक्षिणी सीमा भी करीब-करीब वही है, जो बतों की। लेकिन वापस लौटते समय, इनमें से काफी पक्षी गरमियों में तिब्बत के तालों में रह जाते हैं और वहीं अंडे देते हैं।

पश्चिम की ओर सवन, बतों से कम जाती हैं, पर दक्षिण की ओर इनमें से कुछ बतें सीमा से आगे तक चली जाती हैं। हिमालय की घाटियों में भी ये पाँच-सात हजार फुट की ऊँचाई तक मिलती हैं।

**विवरण**: मौसमी पक्षी होने के कारण, सवन भी अन्य बड़ी बतों की तरह यहाँ अक्टूबर के आरम्भ में ही आ जाती है और अप्रैल के मध्य तक फसल कटने के बाद ही, फिर उत्तर की ओर लौट जाती है।

सवन की आदतें तथा चराई आदि अन्य बातें बतों से बहुत कुछ मिलती-जुलती हैं। हाँ, एक बात जरूर है कि बड़ी बत से कहीं ज्यादा नदी का किनारा इन्हें पसन्द है और इनके गोल भी बड़ी बतों से कहीं बड़े होते हैं।

बड़ी बतों की तरह सवन भी शाम को कछार या ताल के आस-पास के खेतों में चराई के लिए पहुँच जाती हैं और रात भर यहीं रह कर पेट-भर चर लेती है। फिर सुबह सवेरे नदी या झील आदि के किनारे पहुँच कर, किनारे या टापू की रेत में दिन भर धूप में बैठी ऊँघा करती हैं।

रंग-रूप और गढ़न की दृष्टिकोण से सवन सभी बातों से सुन्दर और आकर्षक होती है। इसी से इनको कहीं-कहीं कल-हंस या हंस-राज का सुन्दर नाम मिला है। लेकिन इनकी बोली अधिक कर्कश होती है, बतों और सवनों के एक साथ गोल होते हुए भी, आपस में नहीं मिलते।

**घोंसला**: भारत के लिए तो मौसमी चिड़िया है जो मंगोलिया और साइबेरिया के दक्षिणी प्रान्तों में घोंसले बनाती है और अंडे देती है। लेकिन इनकी काफी संख्या तिब्बत और लद्दाख की झीलों में भी रह जाती है, जहाँ ये जून-जुलाई में घास फूस और नरकुल से भरे पानी के कनारे अथवा टापुओं पर सेवार और परों से सुन्दर और छिछला-सा घोंसला बनाकर १०-१२ अंडे देती हैं। इन अंडों का रंग पिलछौंह होता है जो कुछ दिनों में गंदे मटमैले रंग में बदल जाता है।

अंडे नाप में ३$\frac{1}{4}$ × २$\frac{1}{4}$ इंच के होते हैं।

## ३७८ बड़ी बत (Grey lag Goose : Anser anser)

**पर्याय**: कलहंस, करिया सवन, कलौक, बड़ी काज़, घित-राज।

**पहचान**: सवन-जैसी बड़े आकार की बत जिसका शरीर कत्थई, भूरी और सफेद धारियों से भरा रहता है। डैने काले और बगली हिस्से सफेद होते हैं। यह यहाँ काफी बड़े गिरोहों में जाड़ा शुरू होते-होते आ जाती हैं।

**रंग-रूप**: सर और गरदन गाढ़े कत्थई, जिसमें कुछ कंजई रंग मिला हुआ। माथा सफेदी मायल। पीठ, पंख, पखनें और पखनी गाढ़ी कत्थई। निचली पीठ और दुम का ऊपरी हिस्सा नीलापन लिये राखी। पंख काले, जिसमें कंजई झलक। बगली हिस्से सफेद। छोटे पंख भी काले, जिनके किनारे सफेद। दुमगज़ा सफेद। दुम भूरी, जिसके किनारे के पर सफेद। छत्ता और पेट का ऊपरी हिस्सा राखीपन लिये सफेद, जिस पर गहरे रंग की पट्टियाँ और दुम का निचला हिस्सा सफेद।

बड़ी बत के वजन और कद में काफी अन्तर रहता है, क्योंकि ये करीब तीन साल में पूर्ण रूप से प्रौढ़ हो पाती है। नर वैसे तो मादा से कुछ बड़ा होता है, पर नर पट्ठे पुरानी मादा से छोटे ही दीख पड़ते हैं। यों, नर की औसत लम्बाई ३२ इंच के लगभग होती है। चोंच हलकी नारंगी, गुलाबी, जिसका सिरा सफेदी मायल। आँख गहरी भूरी। टाँगें घुमैली लाल।

**निवास**: यहाँ आने वाली बतों या कलहंसों में येबड़ी बत और सवन ही ऐसी हैं, जो हमारे देश में अधिक संख्या में आती हैं, इस कारण हम लोग इन्हीं दोनों से अधिक परिचित हैं। बड़ी बत मौसमी चिड़िया है, जो अक्टूबर के अन्त में घूर उत्तर की ओर से हमारे देश में आती है और चार या पाँच महीने यहाँ की नदियों और झीलों में बिताकर, मार्च के अन्त तक फिर अपने देश की ओर लौट जाती हैं।

**विवरण**: बतें यहाँ आकर एक स्थान पर नहीं रहतीं, बल्कि जैसे-जैसे जाड़ा बढ़ने लगता है, ये दक्षिण की ओर खिसकती जाती हैं और जाड़े के समाप्त होने के आस-पास उत्तर की ओर लौटने लगती हैं। फिर रबी की फसल कटते ही, अपने देश को लौट जाती हैं।

हमारे देश में , ये दक्षिण की ओर बहुत आगे न जाकर, मध्य प्रदेश तक ही रह जाती हैं, लेकिन पूरब और पश्चिम में इनका फैलाव असम से पंजाब तक हो जाता है। बड़ी बतें मैदान में ही रहती हों, ऐसी बात नहीं है; इन्हें हिमालय की ४ या ६ हजार फुट की ऊँचाई तक देख पाना भी कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है। बड़ी बतें तालाबों की अपेक्षा, नदियों के किनारे रहना ज्यादा पसन्द करती हैं। दिनचर्या प्रायः यह होती है कि ये शाम को तालाबों या नदियों के किनारे से उड़ कर कछार या पास-पड़ोस के गेहूँ और जौ वगैरह के खेतों में चराई के लिए पहुँच जाती हैं और रात भर में फसल के नरम कल्लों से पेट भरकर अपने स्थान पर लौट जाती हैं। फिर इन्हें दिन भर पानी के किनारे या बीच के टापू पर धूप में सोते या ऊँघते देखा जा सकता है।

बड़ी बत का मुख्य भोजन घास-पात तथा हर किस्म के नरम कल्ले और गल्ला है। ये फसल को वैसे भी काफी नुकसान पहुँचाती है लेकिन जहाँ इनका शिकार कम होता है, वहाँ तो और भी ढीठ हो जाती हैं। जिस खेत में इनका गोल एक रात भी चराई का मौका पा जाए, उसे एकदम ही साफ ही समझना चाहिए।

बड़ी बतें पानी से ज्यादा, सूखे में ही रहना पसन्द करती हैं। जब तक घायल नहीं होती या बहुत ही दबाव में नहीं पड़तीं, तब तक ये पानी में नहीं उतरती और पानी में जाने की अपेक्षा, सूखे की ओर जाकर उड़ जाना ही ज्यादा अच्छा समझती हैं। इनका उड़ने के लिए उठना जितना भद्दा दिखाई पड़ता है, नीचे उतरना उतना ही सुन्दर लगता है। नीचे जब ये ऊपर दो-तीन बार चक्कर लगाकर और हवा में तैर कर उतरती हैं तो देखने में बहुत ही भला मालूम देता है। इन्हें ज्यादातर चालीस-पचास के झुंड में ही देखा जाता है, लेकिन झुंड दो-चार से लेकर हजारों का भी हो सकता है।

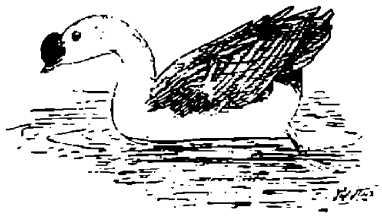
**घोंसला :** बड़ी बत मौसमी चिड़िया होने के कारण हमारे देश में अंडे नहीं देती। इसके लिए ये साइबेरिया और मंगोलिया आदि स्थानों में लौट जाती है, जहाँ पानी के किनारे या किसी टापू पर, नरकुल और खर-पतवार के बीच में घास-फूस का बहुत सुन्दर घोंसला बनाती हैं। ये घोंसले जमीन पर ही रखे रहते हैं। मादा १०–१२ अंडे देती है, जिनका रंग पिलछौंह सफेद होता है और चमक बिलकुल नहीं होती।

नाप में अंडे लगभग ३.७३ × २.३३ इंच के होते हैं।

## ३७९ नकटा (Nukta or Comb Duck : Sarkidiornis Melanotos)

**पर्याय :** नंदीमुख हंसक, नकवा, नकीहंस।

**पहचान :** नकटा को पेड़ की बतक भी कहते हैं, क्योंकि यह ताल के पास-पड़ोस के पेड़ों पर भी अपना काफी समय व्यतीत करती है। इसकी चोंच पर उठे हुए कुब्बक के कारण इसको पहचानना कठिन नहीं होता।



नकटा

**रंग-रूप :** सर और गरदन सफेद, जिसमें चमकीली काली चित्तियाँ। सर, पैर तथा गरदन का ऊपरी हिस्सा करीब-करीब काला। पंख काले, जिसमें बैंगनी चमक। पीठ कलछौंह, दुम के ऊपरी ढकने चमकीले-हरे, पखना और पखनी चमकदार हरी। पंख काले, दुम भी काली, लेकिन बाकी सब निचला हिस्सा सफेद।

नर मादा से बड़े, नर की लम्बाई ३० और मादा की २५-२६ इंच। चोंच काली, नर के चोंच का कुब्ब भी काला। आँख गहरी भूरी। टाँगें हरापन लिए सिलेटी।

**निवास :** यह भी बारहमासी बतख है, जो हमारे देश में करीब-करीब सब जगह फैली हुई है। यह ठंडे पहाड़ों पर जरूर नहीं पायी जाती है और सतलज के उस पार पाकिस्तान में भी नहीं दिखाई देती। दक्षिण की ओर भी इसे कुछ ही स्थानों में देखा जा सकता है।

**विवरण :** नकटा बहुत प्रसिद्ध बत्तख है, जो बहुत ही निडर और ढीठ होती है। यह पेड़ पर की बत्तख कही जाती है। यह अंडे देने के लिए भी पेड़ पर जाती है और रात में भी पेड़ पर बसेरा लेती है, इसी कारण इसे ऐसे ताल ज्यादा पसन्द हैं, जिनका पानी साफ रहता है और जिनके किनारे काफी पेड़ रहते हैं। ये एक ही जगह काफी संख्या में दिखाई देती हैं। इन्हें बड़ी नदियों में बहुत ही कम देखा जा सकता है। नकटे हमारे देश के अलावा दूसरे देशों में नहीं मिलते। इससे इन्हें अपने ही देश का पक्षी कह सकते हैं।

बारहमासी पक्षी होने के कारण ये प्रवास-गमन तो नहीं करते, पर थोड़ा-बहुत स्थान-परिवर्तन जरूर कर लेते हैं। वह भी बरसात शुरू होने के समय, क्योंकि यही समय अंडे देने का होता है। यही कारण है कि हम वर्षा के शुरू होते ही नकटे के जोड़ों को इधर-उधर काफी संख्या में उड़ते देखते हैं। इनकी यह उड़ान अपने घोंसले के लिए सुरक्षित और निरापद स्थान तलाश करने के लिए होती है। गरमी के महीनों में काफी संख्या में राजस्थान, कच्छ और उत्तर प्रदेश से पूरब की ओर बंगाल तक ऐसे स्थानों में चले जाते हैं जहाँ की जलवायु नम रहती है।

ये गिरोह में न रह कर जोड़ा बाँध कर रहते हैं, पर अक्तूबर में इन्हें अन्य बत्तखों के साथ पाँच-सात के गिरोह में देखा जा सकता है। इनकी उड़ान बहुत तेज होती है और ये काफी अच्छी डुबकी भी लगा लेते हैं। रात को पेड़ पर बसेरा लेने के कारण इनकी चराई का वक्त और बत्तखों की तरह, ज्यादातर रात को न होकर दिन को ही होता है और इसलिए दिन में, सवनों की तरह ऊँघने के बजाय, ज्यादातर पानी में ही दीख पड़ती हैं। नकुटा का मुख्य भोजन पौधों की नरम जड़ें, बीज, सेवार और पानी के कीड़े-मकोड़े हैं। ये खेतों को ज्यादा नुकसान नहीं करते हैं। नकुटा बोलता बहुत कम है।

**घोंसला** : नकुटा के अंडा देने का समय जुलाई-अगस्त है। जब यह किसी ताल या झील के किनारे के पेड़ की किसी निचली डाल या कोटर में सूखी लकड़ियों का घोंसला बनाता है। मादा १० या १२ अंडे देती है। घोंसले किनारे के पास या नरकुलों में भी मिले हैं, पर ऐसा बहुत ही कम होता है। इनके अंडों का रंग शुरू में चमकदार हाथीदाँत की तरह का, लेकिन बाद में बे-रौनक हो जाते हैं।

अंडों की नाप २.४१ × १.७२ इंच होती है।

## ३८० छोटी सिलही (Whistling Teal : Dendrocygna Javanica)

**पर्याय** : लघु शरालि, सिलकही, सराल, सरैल, हंसराली, सोराली, सिरीमा।

**पहचान** : कत्थई रंग की मझोले कद की बारहमासी बत्तख जो कीचड़ से भरे जलाशयों में अक्सर दिखाई पड़ती है। यह अक्सर पेड़ों पर भी बैठी देखी जा सकती है और इसकी तेज सीटीनुमा बोली से इसको पहचानना कठिन नहीं होता।

**रंग-रूप** : सर और चाँद धूमिल और हल्के बादामी। चेहरा और गला हल्का भूरा, जो गरदन और पीठ तक पहुँचते-पहुँचते गहरा हो जाता है। पीठ और पंख कलछौंह जिनके किनारे खैरे। दुमगजा चमकीला काला, ऊपरी दुमढकना कत्थई और दुम भूरी। छोटी और बड़ी पखनियों पर गाढ़े बैंगनी लाल रंग की चित्तियाँ। पखने और छोटे तथा बड़े पंख घुमैले काले। गले का निचला भाग सफेदी मायल। गरदन सफेदीपन लिये भूरी। निचला सारा हिस्सा हलका कत्थई और दुम का निचला हिस्सा तथा निचला ढकना सफेद। नर और मादा करीब-करीब बराबर। नर की लम्बाई १७ इंच। चोंच कलछौंह। आँख भूरी और आँख का भीतरी रंग चटक पीला। टाँगें गाढ़ी सलेटी।

**निवास** : सिलही बारहमासी बत्तख है, जो उत्तर-पश्चिमी राजस्थान और पंजाब को छोड़कर बाकी सारे देश में फैली है। यह कहीं कम और कहीं ज्यादा संख्या में पायी जाती है, कहीं स्थायी रूप से भी रहती है। कुछ भागों में सिर्फ यह मौसमी पक्षी की तरह साल के किसी खास महीने में ही जाती है। पश्चिमी पाकिस्तान तथा दक्षिण भारत की ओर यह प्रायः बरसात और जाड़ों में ही जाती है, लेकिन उत्तर प्रदेश और बंगाल के कुछ हिस्सों में बारहो महीने देखी जा सकती है। कश्मीर तथा हिमालय के दूसरे ऊँचे प्रदेशों में तो दिखाई ही नहीं पड़ती।

**विवरण** : सिलही को भी नकुटा की तरह पेड़ की बत्तख कहना ही ज्यादा ठीक होगा, क्योंकि यह रात को तो पेड़ पर बसेरा लेती ही हैं, दिन में भी चराई के बाद का अधिक समय पेड़ों पर ही बिताती हैं। इसे पेड़ों से घिरे ऐसे तालाब, जिनमें गोंद और नरई काफी हो, ज्यादा पसन्द हैं। इसलिए इसे बारहमासी ऐसे ही तालाबों में देखा जा सकता है। इनके गिरोह कभी-कभी नदियों में भी दिखाई पड़ जाते हैं, लेकिन नदियों से ज्यादा इन्हें तालाब ही पसन्द हैं।

सिलही प्रवास-गमन तो करती नहीं, लेकिन खाने की सहूलियत और अंडा देने के समय घोंसले के लिए उपयुक्त स्थान की तलाश में कुछ स्थान-परिवर्तन कर लेती है। यह वैसे तो सैकड़ों के गिरोह में रहती है, लेकिन बरसात शुरू होते ही जोड़ा बाँध लेती है, जो जाड़ों तक कायम रहता है। सिलही उड़ने में सुस्त होती है और उड़ कर भी ये बहुत नीचे ही रहती है।

सिलही तैरने और डुबकी लगाने में भी बड़ी उस्ताद होती है। यों तो, इन्हें अक्सर पानी में या पेड़ पर ही देखा जा सकता है, पर ये जमीन पर भी खूब चल लेती हैं। इनका मुख्य भोजन घास-फूस, पानी के पौधों की जड़ें और धान वगैरह हैं। इनके अलावा, ये कीड़े-मकोड़े भी खा लेती हैं। सिलही जब खतरा निकट देख कर उड़ने को होती है तो एक प्रकार की 'सिस् सिस् सिस्' की आवाज करती है, जो उड़ते समय भी सुनी जा सकती है। इसी कारण इनको सिलही, सिल्ली या सीटीमार कहा जाता है।

**घोंसला** : इनके अंडा देने का समय जुलाई और अगस्त है, जब ये या तो किसी किनारे के पेड़ पर सूखी लकड़ियों का घोंसला बनाती हैं या फिर किसी जल-कौए, बगुले वगैरह के पुराने घोंसले की ही मरम्मत करके काम चला लेती हैं। कभी-कभी ये इतनी भी तकलीफ नहीं उठातीं और मादा किसी पुराने पेड़ के खोंथे में ही अंडे देती हैं। इनके अंडों की संख्या १०–१२ होती है, जो पहले तो सफेद रहते हैं, लेकिन पुराने हो जाने पर उनका रंग पिलछौंह या मटमैला हो जाता है।

नाप में ये अंडे १.८६ × १.४९ इंच के होते हैं।

## ३८१ बड़ी सिलही (Larger Whistling Teal : Dendrocygna fulva)

**पर्याय :** बड़ी सिल्ली, बड़ी चीही, सीटीमार, वृहद् शरालि।

**पहचान :** बड़ी सिलही भी बारहमासी बत्तख है, जो छोटी सिलही की तरह बारहो महीने हमारे ही देश में रहती है। यह रंग-रूप में छोटी सिलही जैसी कत्थई होती है, लेकिन कद में उससे कुछ बड़ी होती है। साथ ही, संख्या में भी उससे कम ही पायी जाती है।

**रंग-रूप :** रंग-रूप में बहुत कुछ छोटी सिलही-जैसी ही होती है, इसीलिए इसका बड़ी सिलही नाम अनुचित नहीं है। सर और गरदन कत्थई जो ऊपर जाकर गाढ़ा हो जाता है। सर से ऊपरी गरदन तक एक गाढ़ी पट्टी। ठोढ़ी, गला और सीना पिलछौंह और गरदन के बीच का भाग सफेदी मायल। पीठ और पंख गहरे भूरे, परों के किनाई कत्थई। पीठ का निचला हिस्सा काला। छोटी पखनी गाढ़ी बैंगनी और लाल। बड़ी पखनी और छोटे तथा बड़े पंख काले। दुम कलछौंह, लेकिन निचला दुमढकना पिलछौंह सफेद। नीचे का सारा हिस्सा कत्थई। चोंच गाढ़ी सिलेटी। आँख भूरी, भीतरी छल्ला सिलेटी। टाँगें गाढ़ी सिलेटी। नर मादा से कुछ बड़ा और उसकी लम्बाई २० इंच।

**निवास :** हमारे देश में ये उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, बंगाल तथा बिहार में काफी संख्या में मिलती है, लेकिन पंजाब, राजस्थान तथा दक्षिण भारत की ओर बहुत कम दिखाई पड़ती है। उत्तरी भारत में भी ये सब जगह एक-सी नहीं फैली है, बल्कि अपनी सुविधा की दृष्टि से ही इन्होंने अपने रहने का स्थान चुन रखा है।

**विवरण :** बड़ी सिलही रंग-रूप में ही नहीं, अपने रहन-सहन, स्वभाव, भोजन तथा अन्य बातों में भी छोटी सिलही से इतना अधिक मिलती-जुलती है कि इन सब बातों को फिर से दुहराने का कोई लाभ नहीं। छोटी सिलही की तरह ये भी पेड़ों से घिरे हुए जलाशयों को ज्यादा पसन्द करती हैं और वहीं इनको बारहों महीने देखा जा सकता है। ये अक्सर गंगा आदि बड़ी-बड़ी नदियों पर उपयुक्त स्थान चुन कर अपना स्थायी निवास बना लेती हैं।

इनका भोजन भी घास-फूस, जड़ें, धान और कीड़े-मकोड़े हैं। छोटी सिलही की तरह ये भी पेड़ों पर अपना काफी समय बिताती और उड़ते समय उन्हीं की तरह सीटी की तरह तेज आवाज करती हैं। लेकिन बड़ी सिलही, छोटी सिलही की तरह, सैकड़ों के गिरोह नहीं बनातीं, बल्कि दस-बारह के छोटे-छोटे गोलों में ही दिखाई पड़ती हैं। ये छोटी सिलही से ज्यादा जंगली होती है।

**घोंसला :** छोटी सिलही की तरह, बड़ी सिलही भी किनारे के किसी पेड़, अथवा किसी सूखे पेड़ के खोखले में लकड़ियाँ आदि रख कर अपना घोंसला बनाती हैं, जिसमें बैठ कर मादा ७-८ अंडे देती है। इन अंडों का रंग शुरू में तो सफेद होता है, लेकिन बाद में वे हलके पिलछौंह या मटमैले हो जाते हैं।

अंडे नाप में लगभग २.२५ × १.७५ इंच के होते हैं।

## ३८२ बेर ( Spotbill : Anas Poecilorhyncha )

**पर्याय :** घर्घर हंसक, गरमपाई, गुगरल, हंजूर, कबरी चोंच।

**पहचान :** बेर नीलसर की मादा की तरह भूरे और काले रंग की बत्तख है जो मझोले कद की होती है। ऊपरी हिस्सा गाढ़ा भूरा और काला और नीचे का हलका बादामी जिस पर भूरी चित्तियाँ पड़ी रहती हैं। इनकी चोंच की जड़ के पास की लाल चित्ती से इनको आसानी से पहचाना जा सकता है।

**रंग-रूप :** नर मादा से कुछ ही बड़ा होता है, जिसकी लम्बाई २५ इंच होती है। चाँद और गुद्दी गाढ़ी बादामी। ऊपरी चोंच से लेकर, आँख से होती हुई एक गाढ़ी भूरी लकीर। आँख का छल्ला, चेहरा और गरदन गंदी पीली, जिसमें छोटी-छोटी भूरी लकीरें। ऊपरी हिस्सा, पंख और दोनों पखनियाँ गाढ़ी भूरी। छोटे पंख चमकीले हरे, जिनके सिरे काले। पीठ का निचला हिस्सा और दुमगजा काला। दुम गाढ़ी भूरी। सीने से लेकर पेट तक का हिस्सा हलका बादामी या मटमैला खैरा। चोंच कलछौंह, जिसकी जड़ पर एक लाल चित्ता और सिरा पीला। आँख भूरी। टाँगें नारंगी पीली या मूँगे के रंग की।

**निवास :** बेर बारहमासी पक्षी है, जो हिमालय के प्रदेशों को छोड़कर सारे देश में फैला है। हिमालय में भी तो ये तराई तक पाया जाता है, लेकिन इससे अधिक ऊँचाई पर इसको नहीं देखा जा सकता। हमारे देश के बाहर भी, यह पूर्वी तथा पश्चिमी पाकिस्तान और बर्मा की ओर काफी मिलता है। यह देश से बाहर न जाकर, यहीं थोड़ा-बहुत स्थान-परिवर्तन कर लेता है और पंजाब तथा राजस्थान आदि के रेगिस्तानी हिस्सों में भी, जहाँ ये गरमियों और जाड़ों में बहुत कम रहता है, बरसात शुरू होते ही झुंड के झुंड पहुँच जाते हैं।

**विवरण :** वैसे तो बेर को पेड़ों से घिरे हुए छोटे और निर्जन ताल ही ज्यादा पसन्द आते हैं लेकिन ये गाँव के निकट के छोटे-बड़े तालों में भी आ जाती हैं। यही नहीं, कभी-कभी इन्हें दरिया के किनारे पर भी देखा जा सकता है। इन्हें ऐसे तालाब ज्यादा पसन्द हैं, जिनके किनारे पर तालाबी गोंद आदि के पेड़ तथा घास वगैरह हों और बीच में काफी खुला पानी का पाट हो। ऐसा इसलिए कि दिन का समय पानी में बिताने के बाद ये शाम को किनारे पर चराई के लिए आ सकें और रात भर चरने के बाद फिर दिन भर के लिए बीच गहरे पानी में जा सकें।

बेर पानी से उठते समय कुछ काहिल जरूर जान पड़ती है, लेकिन हवा में पहुँच जाने पर इनमें नीलसर की तरह तेजी आ जाती है। डुबकी लगाने और तैरने में तो यदि हम इन्हें नीलसर से आगे रखें तो अनुचित न होगा।

बेर सर्वभक्षी होता है, जिनसे कीड़े-मकोड़े, घास-फूस, जड़ें, गल्ला, बीज और छोटे मेंढक आदि, कुछ भी तो नहीं बचने पाता। ये जोड़े या छोटे-छोटे झुंडों में दिखाई पड़ती हैं लेकिन जिस स्थान पर इनकी बहुतायत होती है, वहाँ इनके सौ-डेढ़ सौ के गोल भी दिखाई पड़ते हैं। वैसे, ये गोल में रहती हैं, लेकिन बरसात शुरू होते ही जोड़े बाँधने लगती हैं।

**घोंसला :** बेर के अंडा देने का समय भारत जैसे बड़े देश में स्वभावतः अलग-अलग होगा ही। उत्तर की ओर ये जुलाई और अगस्त में अंडे देती हैं और दक्षिण की ओर नवम्बर-दिसम्बर में। राजस्थान में तो ये साल में दो बार अर्थात् अप्रैल-मई में और फिर अक्टूबर-नवम्बर में अंडे देती पाई गयी हैं।

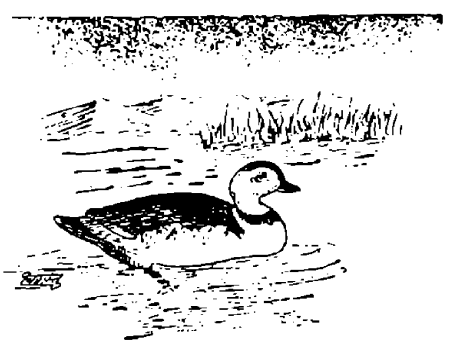
बेर के घोंसले घास-फूस और सेवार के होते हैं, जो नरम परों और रोओं से मुलायम कर दिये जाते हैं। ये या तो किनारे की घास के बीच या निकट के किसी पेड़ पर रहते हैं। मादा ८-१० अंडे देती है, जिनका रंग नये रहने पर धुर सफेद या कंजईपन लिये सफेद होता है, लेकिन बाद में मटमैला सा हो जाता है।

नाप में अंडे करीब-करीब २.१५ × १.७० इंच के होते हैं।

## ३८३ गिर्री (Cotton Teal : Nettapus Coromandelianus)

**पर्याय :** काणक हंस, घिर्री, बावा तरवा, गिरजा, गनगनी, डनडोना, गुरगर्री।

**पहचान :** गिर्री हमारे यहाँ की छोटी-सी बत्तख है जो बारहो महीने यहाँ ही रहती है। नर का ऊपरी भाग चमकीला भूरा रहता है और गले पर एक चौड़ा काला कंठ रहता है। नीचे का हिस्सा सफेद रहता है।



गिर्री

**रंग-रूप :** नर मादा से कुछ बड़ा, लम्बाई १२ इंच। सर का ऊपरी भाग काला। पीठ, पंख और डैने हरापन लिये चटक बैंगनी, दुमगजे के बीच का हिस्सा काला और किनारे सफेद। दुम का ऊपरी हिस्सा कंजई भूरा, जिस पर हलकी चित्तियाँ। दुम कलछौंह भूरी। पंख के सिरे की ओर कालापन लिये एक सफेद चित्ता। छोटे पंखों के किनारे सफेद। पखनी काली, जिसके किनारे पर चमकीली हरी और बीच में बैंगनी चमक। चेहरा, गुद्दी और सारी गरदन सफेद, जिसमें गरदन के निचले भाग में एक काला कंठा। दोनों बगल के हिस्से सफेद, जिसमें टेढ़ी, भूरी लकीरें। निचला सारा हिस्सा और नीचे का दुमढकना धुमैला काला तथा सफेद चित्तियों से भरा। चोंच काली। आँख गाढ़ी लाल। टाँगें हरापन लिये कलछौंह।

**निवास :** गिर्री बारहमासी बत्तख है, जो कद में सभी बारहमासी बत्तखों से छोटी होती है। यह कच्छ, कश्मीर, राजस्थान, पंजाब और समूचे हिमालय प्रदेश को छोड़ भारत के प्रायः सभी प्रदेशों में पायी जाती है। नकुटे की तरह, यह भी एक ही जगह, अपनी सुविधा और अनुकूल वातावरण के कारण कहीं कम और कहीं अधिक संख्या में पायी जाती है।

**विवरण :** बारहमासी चिड़िया होने के कारण, गिर्री यहीं घोंसला बनाकर अंडा देती है और नकुटे की तरह बरसात शुरू होते ही इनकी भी काफी संख्या इधर-उधर उड़ते देखी जा सकती है। यह भी अपनी आवश्यकतानुसार यहीं थोड़ा-बहुत स्थान-परिवर्तन कर लेती है।

गिर्री बहुत ढीठ और निडर होती है, जो गाँव बस्तियों के पास के ताल-तलैयों में भी बड़ी बेफिक्री से तैरा करती है। सिंघाड़े के पौधे या सेवार से भरे हुए छोटे-छोटे ताल, जिनके चारों ओर बबूल के पेड़ हों, गिर्री के रहने के बहुत उपयुक्त स्थान हैं। गिर्री हवा में उठने में तो जरूर सुस्त होती है, लेकिन बाद में इनकी उड़ान नीची और तेज होती है। ये उड़ते समय प्रायः बोलती ही रहती है, लेकिन पानी पर बैठने के बाद भी इनकी बोली सुनाई पड़ती है। नर की बोली काफी तेज होती है जो बहुत कुछ 'बाबा तरवा-बाबा तरवा' से मिलती जुलती है। इसी कारण गाँवों के लोग गिर्री को 'बाबा तरवा' के नाम से भी पुकारते हैं।

गिर्री उड़ने में ही नहीं, बल्कि तैरने और डुबकी लगाने में भी बहुत उस्ताद होती है। उड़ते समय तो यह इतनी तेजी से कन्नी काट कर रुख बदलती है कि देखते ही बनता है। जमीन पर यह शायद ही कभी दिखाई पड़ती हों, क्योंकि इनकी छोटी-छोटी टाँगें इनके हलके से शरीर का बोझा नहीं संभाल सकतीं, यद्यपि इनके शरीर का बोझ ही कितना होता होगा।

गिर्री का मुख्य भोजन धान, पानी के पौधों के दाने और नरम जड़ें हैं, लेकिन कीड़े-मकोड़े खाने में भी इसे कोई हिचक नहीं होती है। वैसे तो दिन की चराई करके रात को किनारे के पेड़ों पर ही बसेरा लेती हैं, लेकिन चाँदनी रातों में कीड़े-मकोड़े के अंडे

और इल्लियाँ खाने के लिए इन्हें कास या गोंद आदि तालाबी-घासों पर भी देखा जा सकता है।

**घोंसला :** गिरियाँ नवम्बर से जून तक तो झुंड में रहती हैं, लेकिन उसके बाद जुलाई में जोड़ा बाँधकर घोंसला बनाती हैं। घोंसले तालाब के आस-पास के किसी घने पेड़ या पुराने पेड़ के खोथे में रहते हैं। घोंसले मादा ही बनाती है, नर साथ जरूर रहता है, लेकिन वह मादा की कुछ मदद नहीं करता।

घोंसला बन जाने पर मादा, नकुटे की मादा की तरह, हाथीदाँत के रंग के ८–१० अंडे देती है, जिसमें नकुटे के अंडों से कम चमक होती है।

नाप में ये १.७ × १.२९ इंच के होते हैं।

## ३८४ शाह चकवा (Sheldrake : Tadorna Tadorna)

**पर्याय :** शाह मुरगाबी, निराजी, उपचक्र, सफेद सुरखाब, ररिया।

**पहचान :** शाह चकवा हरी, सफेद, काली और भूरी पोशाक वाला सुन्दर पक्षी है जो यहाँ थोड़ी संख्या में आने पर भी अपनी सुन्दर और भड़कीली पोशाक के कारण ये दूसरी बत्तखों से अलग ही रहती हैं और इसी रंगीन पोशाक के कारण इनको शाह चकवा जैसा सुन्दर नाम मिला है।

**रंग-रूप :** शाह चकवा की लम्बाई लगभग २ फुट और नर-मादा लगभग एक ही रंग-रूप के होते हैं, लेकिन मादा कद में नर से कुछ छोटी और उसकी चोंच की जड़ के पास नर की चोंच की तरह का उभार नहीं होता। रंग भी नर की तरह चटकीला नहीं होता।

सर और गरदन चमकीले हरे रंग की और फिर सीने तक का हिस्सा सफेद। इस सफेदी के खत्म होते ही एक चौड़ी खैरे रंग की पट्टी, जो पीठ के ऊपरी भाग से चलकर इसका पूरा सीना घेर लेती है। पीठ, दुगमजा और ऊपरी दुमढकना सफेद। दोनों हिस्सों पर एक-एक खड़ी काली पट्टी और सीने के बीच से पेट तक गाढ़ी भूरी पट्टी। दोनों बगल के हिस्से सफेद। दुम का निचला ढकना ललछौंह भूरा, लेकिन दुम एकदम सफेद। दुम का सिरा जरूर काला होता है। पखनियाँ सफेद, पंख गाढ़े भूरे, और छोटे पंख खैरे, जिनके ऊपर के पंख चमकीले हरे। चोंच चटक लाल। आँख की पुतली भूरी और पैर हलके गुलाबी रंग के।

**निवास :** शाह चकवा हमारे देश में बहुत कम संख्या में आते हैं और यहाँ आकर भी उत्तर-पश्चिमी भागों में ही रह जाते हैं। अन्य मौसमी बत्तखों की तरह शीतकाल के आरम्भ होते ही पश्चिमी पाकिस्तान की ओर से इनका आना शुरू हो जाता है। ये पूर्व की ओर बिहार से आगे बहुत कम जाते हैं और दक्षिण की ओर भी इनको मध्य प्रदेश के आगे नहीं देखा जाता।

**विवरण :** शाह चकवा अपने निकट सम्बन्धी सुरखाब की तरह एक स्थान पर अधिक दिनों तक नहीं टिकते। इन्हें ताल-तलैयों की अपेक्षा समुद्र-तट अधिक पसन्द है, जहाँ ये पानी की जगह रेत पर ही अपना अधिक समय बिताते हैं। देश के भीतर, ये बड़ी-बड़ी झीलों और नदियों में ही दिखाई पड़ते हैं। ऐसे छोटे तालाबों में, जिनका पानी गंदा तथा घास और नरकुलों से भरा हो, इन्हें नहीं देखा जा सकता। ये ऐसी ही झीलों को पसन्द करते हैं, जिनका पानी निर्मल हो और किनारों पर घूमने-फिरने की काफी जगह हो। इसलिए इन्हें जलपक्षी न कहकर तटचारी पक्षी कहना अधिक ठीक होगा।

शाह चकवा, पानी की घास-पात के अलावा मछली, मेंढक तथा पानी के अन्य कीड़े-मकोड़ों से अपना पेट भरते हैं। सुरखाब की तरह इनको भी सड़ी-गली और गंदी वस्तुओं से परहेज नहीं रहता है और इन्हें शाकाहार से मांस-मछली ज्यादा पसंद है।

**घोंसला :** शाह चकवा के अंडा देने का समय अप्रैल से जून के प्रारम्भ तक है। जब मादा या तो किसी खरगोश, लोमड़ी आदि के बिल में अपने अंडे दे जाती हैं, या किसी जलाशय के निकट स्वयं बिल बना लेती हैं, जो दस-पन्द्रह फुट लम्बा और घुमावदार होता है। मादा उसमें के अन्तिम छोर पर घास-फूस रख कर अंडे देती हैं, जिनकी संख्या वैसे तो ८ से १२ होती है, लेकिन कभी-कभी १५–१६ अंडे भी पाये गये हैं।

कभी-कभी इन्हें ऐसे बिलों में अंडे देते देखा गया है, जो खाली नहीं थे और जिनमें खरगोश आदि रहते थे। उन जानवरों के साथ रहते हुए अपने अंडों को सेकर बच्चों को सकुशल बाहर किस तरह ले जाती हैं, यह रहस्य अभी तक नहीं खुल सका है। शाह चकवा के नर और मादा दोनों ही बारी-बारी अंडों को सेते हैं। अंडों का रंग हलका संदली या भूरापन लिये सफेद होता है, जो नाप में करीब २.६ × २ इंच के होते हैं।

## ३८५ सुरखाब (Ruddy Sheldrake : Casarca Ferruginea)

**पर्याय :** चकई-चकवा, लोहित चक्रवाक, कोक, कोकनद, लालो, मूंग, केसर पंडिया, बगरी, सरजा।

**पहचान :** सुरखाब हमारे देश का प्रसिद्ध बत्तख है, जिसने अपने रंग-रूप और आबादी के निकट रहने के कारण, अपना नाम हमारे साहित्य में अमर कर लिया है। इसके चकई-चकवा, लालो, कोक, चक्रवाक आदि अनेकों नाम मिलते हैं, पर उनमें से देहातों में 'चकवा' और शिक्षित समाज में सुरखाब ही ज्यादा मशहूर है।

यह नारंगी रंग की मझोले कद की बत्तख है जिससे सभी परिचित हैं।

**रंग-रूप** : नर का माथा और गाल हलका मटमैला पीला। आँख के पास से चोटी और गुद्दी तक का भाग राखीपन लिये सफेद, बाकी गरदन नारंगीपन लिये मटमैली पीली, जिसमें एक काला चमकीला कंठा। पीठ और पंखे नारंगी गंदे पीले। ऊपरी दुमढकने हरापन लिये चमकीले काले। छोटी और बड़ी पखनी सफेद। पखने हरे, जिसमें बैंगनी चमक। पंख काले, छोटे पंख चमकीले हरे। ठोड़ी हल्की पीली तथा छत्ता और निचला हिस्सा नारंगी घुमैला पीला।

मादा नर से कुछ छोटी होती है। उसके गले में काला कंठा नहीं होता और माथे, ठोड़ी तथा चेहरे का रंग ज्यादा हलका होता है। सुरखाब का कद उम्र के हिसाब से कम अधिक होता है, पर नर मादा से कुछ बड़ा ही होता है। नर की औसत लम्बाई २५ इंच। चोंच काली। आँख गहरी भूरी। टाँगें काली या गाढ़ी उन्नाबी।

**निवास** : सुरखाब हमारे देश का मौसमी पक्षी है, जो जाड़े के प्रारम्भ में उत्तर की ओर से आकर गरमियों के प्रारम्भ में फिर उसी ओर लौट जाता है। इनका आगमन सितम्बर के अन्त या अक्टूबर के आरम्भ में शुरू हो जाता है, जब ये कश्मीर की झीलों तथा नेपाल की घाटियों में पहुँच जाते हैं और फिर अक्टूबर तक उत्तर भारत में और नवम्बर में दक्षिण में भी फैल जाते हैं। इनकी वापसी भी दक्षिण की ओर से अन्य बत्तखों की अपेक्षा पहले शुरू होती है, जहाँ ये अप्रैल के शुरू में लौटना आरम्भ कर देते हैं। यहाँ से जाकर ये पूर्व में चीन, जापान और मंगोलिया और पश्चिम में अफगानिस्तान, ईरान आदि देशों में फैल जाते हैं। कुछ पक्षी हमारे देश में कश्मीर और लद्दाख की झीलों और तालों में भी रह जाते हैं और वहीं घोंसला बनाकर अंडे दे देते हैं। ये ठेठ दक्षिण के कुछ हिस्सों को छोड़कर सारे भारत में फैल जाते हैं, जहाँ ये स्थान के अनुकूल या प्रतिकूल होने से कम या अधिक संख्या में देखे जाते हैं। नदियों से, जैसे राजस्थान और काठियावाड़ के रेगिस्तानों में, ये बहुत कम दिखाई पड़ते हैं। सुरखाब मैदानों में ही मिलते हैं, सो बात नहीं है, इन्हें हिमालय में ६–७ हजार फुट की ऊँचाई तक भी जाड़ों में देखा जा सकता है।

**विवरण** : सुरखाब हमारे बहुत परिचित पक्षी हैं, जो इस देश में गोल बाँध कर आते हैं और जाते समय भी गोल बाँध लेते हैं, लेकिन ये जब तक यहाँ रहते हैं, प्रायः इन्हें जोड़े में ही देखा जाता है। यह दूसरी बात है कि इस प्रकार के बीस-पचीस जोड़े एक जगह जमा हो जायँ और गोल की शक्ल में दिखाई पड़ें। वैसे कुछ लोगों का यह भी ख्याल है कि ये जीवन भर के लिए जोड़ा बाँधते हैं, पर अभी तक इसका कोई निश्चित प्रमाण नहीं मिला है।

सुरखाबों को छोटे तालाब पसन्द नहीं हैं, बड़े तालों और झीलों में जरूर मिलते हैं, लेकिन उनसे भी ज्यादा इन्हें बड़ी-बड़ी नदियों के रेतीले किनारे पसन्द हैं। नदियों की बड़ी धारा से कटकर जो छिछले पानी की धाराएँ बन जाती हैं, उनमें सुरखाब के जोड़े अक्सर देखे जा सकते हैं। इनके अलावा नदी के किनारों पर भी थोड़ी-थोड़ी दूर पर इनके जोड़े तैरते दिखाई देते हैं, जो निकट आते ही सर उठा कर एक-दूसरे को कर्कश स्वर से आगाह करने लगते हैं और फिर पंख मार कर तेजी से उड़ जाते हैं।

गाँव और बस्ती के निकट रहने के कारण सुरखाब बहुत ही ढीठ हो जाते हैं, पर ये चालाक इतने होते हैं कि आदमी की आहट पाते ही खिसक जाते हैं। सुरखाब उड़ने में तेज होते ही हैं, तैरने में भी ये किसी से पीछे नहीं रहते। वैसे ये सवन और बत्तों की तरह पानी से ज्यादा किनारे की बत्तखें ही हैं, जो जमीन पर अच्छी तरह चल लेती हैं, लेकिन चराई के लिए ये बड़ी बत्तों की तरह बीच कछार में न उतर कर पानी के पास ही रहना ज्यादा पसन्द करते हैं।

इनका भोजन काफी गंदा होता है। ये वैसे तो अन्य बत्तखों की तरह घास-फूस, जड़ें, सेवार और दाने वगैरह भी खाते हैं, लेकिन कीड़े-मकोड़े, कटुए और छोटे-छोटे मेंढक, मछलियों को भी नहीं छोड़ते। यही नहीं, कुछ लोगों का तो ऐसा भी ख्याल है कि ये कुटरी की तरह मुरदों का सड़ा माँस भी खाते हैं। सुरखाब की बोली कौए की 'काँव-काँव' से मिलती-जुलती होती है। अपने साथी को सतर्क करने के अलावा ये दिन और रात में भी बोलते रहते हैं।

गाँव और बस्ती के निकट की नदियों में और झीलों में इनका जोड़ा निडर होकर रात बिताता है और हमें इनकी बोली रात में अक्सर सुनाई पड़ती है। इसी बोली को सुन कर हमारे साहित्यकारों ने यह सुन्दर कल्पना की है कि सुरखाब का जोड़ा रात को एक दूसरे से अलग हो जाता है और एक को इस किनारे, तो दूसरे को दूसरे किनारे रह कर रात भर वियोग में रहना पड़ता है, और इसी कारण हम इनका करुण स्वर रात को सुनते हैं। वास्तव में यह कवियों की कोरी कल्पना ही है। सुरखाब का जोड़ा रात में साथ ही रहता है। अपने सुन्दर पंखों के कारण और बहुत निडर होने की वजह से ही, साहित्य में इसका जिक्र बहुत ही आया है। इसके अलावा जिस प्रकार मोर हमारे यहाँ मारा नहीं जाता उसी प्रकार बौद्ध देशों में सुरखाब को मारने की मनाही है।

**घोंसला** : सुरखाब हमारे देश में कश्मीर और हिमालय के अन्य प्रदेशों में १२,००० फुट की ऊँचाई पर के तालों में अंडे देते हैं। ये घोंसला बनाने का ज्यादा झंझट नहीं रखते और पहाड़ के सूराखों में इनकी मादा पर वगैरह से जमीन को खूब नरम बनाकर, मई-जून के महीने में ८-१० अंडे देती है। इनके घोंसले प्रायः पानी के निकट ही होते हैं, पर कभी-

कभी आठ-दस मील तक की दूरी पर भी पाये गये हैं। पानी से दूर के घोंसलों के अंडों से जब बच्चे बाहर निकलते हैं, तो सुरखाब इन्हें पीठ पर बैठाकर पानी तक पहुँचा देते हैं। नर और किसी बात में मादा की मदद नहीं करता, लेकिन उसके आस-पास रहकर उसकी रखवाली जरूर करता रहता है और कोई खतरा आने पर फौरन उसे आगाह कर देता है।

इसके अंडों का रंग हाथीदाँत-जैसा या संदली होता है और वे नाप में करीब २.५ × १.८ इंच के होते हैं।

## ३८६ मैल (Gadwall : Chaulelasmus Streperus)

**पर्याय :** मलिन हंसक, बेरखुर, भुअर।

**पहचान :** मैल यहाँ की प्रसिद्ध बत्तख है जिसके मटमैले रंग के कारण ही शायद मैल कहा जाता है। यह मझोले कद की होती है जो हमारे यहाँ काफी संख्या में आती हैं। इसका सर और गरदन धारियों से भरा हुआ सफेद और सिलेटी रहता है। पीठ भूरी होती है जिस पर लहरदार सफेद लकीरें पड़ी होती हैं। नीचे का हिस्सा सफेदी मायल रहता है जिस पर सीने की ओर भूरे चन्द्राकार चिह्न और पीछे की ओर लहरदार भूरी लकीरें पड़ी रहती हैं।

**रंग-रूप :** मैल के नर-मादा के रंग-रूप और कद में अन्तर; नर की लम्बाई २० इंच और वह मादा से कुछ बड़ा। नर का सर और गरदन राखीपन लिये सफेद, जिसमें भूरी चित्तियाँ। पीठ गाढ़ी कत्थई जिसमें सफेद अंडाकार लकीरें। पंख सफेद और कल-छौंह कत्थई लहरियों से भरे। दुमगजा और ऊपरी दुमढकना काला, जिसमें बैंगनी और नीली चमक। दुम कत्थई भूरी जिसके किनारे और सिरे सफेद। छोटी पखनी चमकीली काली। बड़ी पखनी कंजई, जिसमें कुछ सफेदी की झलक। बीच की पखनी गाढ़ी कत्थई। ऊपरी हिस्सा सफेद तथा निचला काला। बड़े पंख भूरापन लिये कंजई। सीना और छत्ता गाढ़ा भूरा, जिसमें सफेद रंग की अर्द्ध चंद्राकार लकीरें। पेट सफेद और उस पर कंजई भूरी घनी चित्तियाँ। निचला दुमढकना चमकीला काला और बगल का हिस्सा सफेद और उस पर भूरी लहरियाँ।

मादा का सर सफेदी लिये काला और उस पर हलकी लकीरें। ऊपरी हिस्सा गाढ़ा भूरा, छोटी पखनी हलकी कत्थई। ठोड़ी और गला सफेद। छत्ता हलका बादामी, जिस पर भूरी चित्तियाँ और बाकी निचला हिस्सा सफेद। चोंच का रंग नर से कुछ हलका। चोंच गाढ़ी उन्नावी। आँख गंदी पीली या गाढ़ी भूरी। टाँगें हलकी नारंगी।

**निवास :** चैती की तरह मैल भी मौसमी बत्तख हैं, जो जाड़ों में काफी संख्या में उत्तर की ओर से आकर लगभग सारे देश में फैल जाते हैं। क्योंकि दक्षिण में मैसूर तक और उत्तर में भारत की उत्तरी सीमा तक के सभी क्षेत्र इसके आवास बन जाते हैं।

हमारे देश के बाहर इनका फैलाव उत्तर-पश्चिम की ओर पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान, ईराक और अन्य देशों सहित सारे यूरोप तक है।

**विवरण :** ये प्रसिद्ध मौसमी बत्तख है, जो जाड़ों में सारे देश में फैल जाती है। मैल को रहने के लिए कोई खास जगह पसन्द नहीं है, ये छोटे-बड़े तालों, नदियों, झीलों और खुले तथा घास, नरकुल आदि से भरे प्रायः सभी जलाशयों में पाये जाते हैं। इसका कारण शायद यही है कि चैती की तरह शायद यह भी हमारे देश में इतनी अधिक संख्या में आते हैं कि इनके लिए कोई खास स्थान पसन्द करना सम्भव नहीं होता। कुछ लोगों का ख्याल है कि चैती ज्यादा संख्या में आती हैं और कुछ लोग इसका सेहरा मैल के सर पर बाँधते हैं। लेकिन यदि चैती को ही पहला नम्बर दिया जाये तो भी निश्चय ही यहाँ आने वाली बत्तखों में दूसरा नम्बर मैल का ही है। मैल हमारे देश के उत्तरी हिस्सों में ही अधिक रह जाते हैं, उसी तरह से, जैसे दक्षिण की ओर तेरा। ये उत्तर भारत में सितम्बर के अन्त तक पहुँच जाते हैं, जहाँ से ये दक्षिण की ओर फैलना शुरू करते हैं और नवम्बर तक उस ओर बढ़ते ही जाते हैं। मार्च में इनका दक्षिण की ओर से लौटना शुरू हो जाता है और अप्रैल के अन्त तक ये हमारे देश से वापस चले जाते हैं।

मैल प्रायः पचीस-तीस के गोल में देखा जा सकता है। ये दोपहर को तो ऊँघते रहते हैं, लेकिन शाम होते ही ये चराई के लिए खेतों या कछारों में चले जाते हैं। चराई के समय ये अपनी गरदन पानी के भीतर और दुम पानी के बाहर रख कर पानी के नीचे जड़ें वगैरह खाते रहते हैं, जो देखने में अजीब-सा लगता है।

मैल का मुख्य भोजन तो धान, बीज, घास-फूस, पानी के पौधों की जड़ें और नरम पत्तियाँ हैं, लेकिन अन्य बत्तखों की तरह इन्हें कीड़े-फतिंगे भी पसन्द हैं, और इनके लिये ये सूखे तक में चली जाती हैं।

**घोंसला :** मैल कश्मीर के कुछ हिस्सों में भी अंडे देती हैं, लेकिन इसके अलावा इनके अंडों का और कहीं पता नहीं चलता। हमारे देश से बाहर, तुर्किस्तान से दक्षिणी यूरोप तक इनके अंडे देने का स्थान है, जहाँ ये मई-जून में पानी के किनारे घास-फूस और सेवार के घोंसले बनाती हैं। घोंसला पानी के किनारे घास या नरकुल के बीच रखा रहता है, जिसमें मादा ८-१० अंडे देती है। अंडे सफेद या संदली होते हैं, जिनमें हलके हरेपन की झलक भी होती है।

नाप में ये अंडे २.६ × १.५ इंच के होते हैं।

## ३८७ पतेरा (Wigeon : Mareca penelope)

**पर्याय** : प्रियाशन हंसक, पतारी, पियासन, फरिया, फराओ।

**पहचान** : चैती की भाँति पतेरा भी यहाँ का बहुत प्रसिद्ध बत्तख है। ये दक्षिण भारत की ओर उत्तर की अपेक्षा अधिक पाये जाते हैं। यह छोटी क़द की बत्तख है जिसका सिर कत्थई और शरीर का ऊपरी भाग पतली काली लहरदार लकीरों से भरा रहता है। सीना लाल, पेट सफेद और बगली हिस्सा काली और सफेद लकीरों से भरा रहता है।

पतेरे जहाँ काफी पहुँच जाते हैं, वहाँ तो ये बड़े-बड़े झुंडों में भी रहते हैं, लेकिन जहाँ ये कम तादाद में रहते हैं, वहाँ अक्सर इन्हें जोड़ों में या पाँच-सात की छोटी-छोटी टोलियों में ही देखा जाता है। इनकी उड़ान बड़ी तेज होती है और ये बहुत जल्दी और सीधे ऊपर उठ जाते हैं। उड़ते समय, एक बड़ी तेज आवाज होती है, जिससे इनको दूर से ही पहचाना जा सकता है। घायल हो जाने पर ये पानी में बड़ी गहरी और लम्बी डुबकी लगाते हैं।

ये अपने रहने के लिए ऐसे बड़े ताल चुनते हैं जिनके किनारे घास वगैरह तो हो लेकिन दलदल न हो, क्योंकि कभी-कभी ये सूखे किनारों पर घूमना पसन्द करते हैं। छोटे तालों तथा बड़ी नदियों की बजाय, ऐसी छोटी-छोटी नदियाँ, जिनकी सतह पर सेवार वगैरह हैं और किनारों पर घास वगैरह हों, इनके रहने के लिए उपयुक्त होती हैं।

पतेरा, अन्य बत्तखों से कहीं ज्यादा घास-फूस से अपना पेट भरते हैं। इसके लिए इन्हें, सवनों की तरह, किनारे या सूखे में जाने में भी कोई हिचक नहीं होती। घास-पात के अलावा, ये कीड़े-मकोड़े, घोंघे और जड़ें वगैरह भी खा लेते हैं लेकिन बहुत कम। इनके खाने का समय ज्यादातर दिन में ही होता है।

**रंग-रूप** : नर की चोटी और माथा हल्का संदली पीला। बाकी सर और गरदन का ऊपरी हिस्सा कत्थई लाल। गाल पर काली चित्तियाँ और पीठ पर काली और सफेद आड़ी-आड़ी लहरियाँ। पंख काले और उनके किनारे सफेद। दुम कलछौंह कंजई। पखनियाँ सफेद, बड़ी पखनियों के सिरे काले और छोटी के बदन से मिले हुए कुछ पर हल्के कंजई। पंख राखीपन लिये भूरे, जिन पर तीन स्पष्ट पट्टियाँ, ऊपर तथा नीचे की पट्टी काली और बीच की चटक हरी। ठोड़ी और गला काला। सीना और छत्ता लाल। पेट सफेद। बगली हिस्सा काला और सफेद लकीरों से भरा हुआ। निचला दुमढकना काला और उसमें हरी चमक।

मादा का सर और गरदन मटमैला पीलापन लिये भूरी और उस पर घुमैली चित्तियाँ। पीठ और पंखे घुमैले और उनके किनारे ललछौंह तथा हरी चमक से रहित। पखनियाँ भूरी और उसके किनारे सफेदी मायल। बगली हिस्सा ललछौंह भूरा, जिसमें कंजई चित्ते, बाकी नर जैसा। चोंच सिलेटीपन लिये नीली और उसका सिरा काला। आँख ललछौंह भूरी। टाँगें घुमैली गाढ़ी सिलेटी।

**निवास** : पतेरा प्रसिद्ध मौसमी बत्तख है। जिस प्रकार मैल उत्तर भारत में ज्यादा रहता है, उसी तरह दक्षिण भारत में पतेरा अधिक संख्या में पाया जाता है। यह जाड़े में हिमालय में और नीचे पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार और बंगाल तक चला जाता है। इसके अलावा, यह मध्यप्रदेश, काठियावाड़ और गुजरात में भी रह जाता है पर ज्यादा नहीं; अधिकांश तो सीधे दक्षिण की ओर ही चले जाते हैं।

देश से बाहर, ये पाकिस्तान, अफगानिस्तान, चीन, जापान, मंगोलिया, यूरोप और अमरीका के कुछ हिस्सों में भी मिलते हैं।

**विवरण** : हमारे देश में पतेरा अक्टूबर के पहले सप्ताह तक आ जाते हैं और अन्य मौसमी बत्तखों की तरह दक्षिण की ओर बढ़ते चले जाते हैं। वहाँ से इनकी वापसी आधे मार्च से शुरू होती है और अप्रैल शुरू होते-होते ये हमारे देश से उत्तर की ओर फिर अपने देश को लौट जाते हैं।

**घोंसला** : अन्य मौसमी बत्तखों की तरह पतेरा भी, हमारे देश में अंडे नहीं देता और इसके लिए इन्हें उत्तरी प्रदेशों की ओर जाना पड़ता है। मादा मई-जून में घोंसला बनाकर हलके संदली रंग के ८–१० अंडे देती है। ये घोंसले पानी के किनारे या किसी टापू पर होते हैं, जिन्हें ये जमीन को थोड़ा-सा खोदकर और उसमें घास-फूस, सेवार तथा मुलायम परों को बिछाकर, घोंसले की शक्ल का बना लेते हैं।

इनके अंडों की नाप करीब २.३ × १.६ इंच होती है।

## ३८८ चैती (Common Teal : Nettion Crecca)

**पर्याय** : रोहिणीक हंसक, छोटी मुरगाबी, केर्रा, सौचुरका, करदो, नरोइब।

**पहचान** : यहाँ की बहुत ही प्रसिद्ध छोटी बत्तख जिससे हम सभी परिचित हैं। हमारे देश में यह जाड़ों में सबसे अधिक संख्या में आती है। इसका सर कत्थई रहता है और सारा शरीर काली और सफेद महीन धारियों से भरा रहता है। डैनों पर चटक हरी और काली पटरी पड़ती रहती है। यह काफी बड़े झुंडों में रहती है।

**रंग-रूप** : नर-मादा का कद तो करीब-करीब बराबर, बल्कि मादा ही मामूली-सी बड़ी। नर की लम्बाई लगभग पन्द्रह इंच। नर का माथा, गाल तथा गरदन का बगली हिस्सा कत्थई भूरा। सर के बगली हिस्से से आँख के पास से होती हुई गुद्दी तक की एक चौड़ी गाढ़ी चमकीली हरी पट्टी। पीठ और पंख पर

काली और सफेद आड़ी लहरियादार पतली लकीरें । कुछ पंख हल्के संदली पीले और उनका कुछ बाहरी हिस्सा गाढ़ा चमकीला काला । दुम हलकी कत्थई, पखनियाँ भूरी, जिनमें कुछ सिलेटी मायल । बीच की पखनियों के सिरे गाढ़े हरे लेकिन किनारे की पखनियों के सिरे काले । इस कारण, डैने पर बगल में काली और बीच में हरी पट्टी-जैसी लगती है । सीने का निचला भाग और छत्ता ललछौंह जिस पर छोटी-छोटी धारियाँ और काली बिन्दियाँ, पेट सफेद । निचले दुमढकने उन्नाबी और उनके किनारे पिलछौंह । चोंच कलछौंह, आँख हल्की भूरी और पैर कंजई भूरे ।

मादा का सर, गरदन और सारा ऊपरी हिस्सा चितला भूरा । परों के किनारे हल्के कत्थई । गला, गाल और आँख के पीछे की पट्टी निलछौंह सफेद, जिस पर काली बिन्दियाँ । निचला हिस्सा हलका पीलापन लिये सफेद । बाकी शरीर नर-जैसा ।

**निवास** : चैती छोटी मौसमी बत्तखों में सबसे प्रसिद्ध है और जाड़ों में प्रायः भारत के सभी क्षेत्रों में फैल जाती है । छोटी बत्तखों में, चैती ही सबसे अधिक संख्या में हमारे देश में आती है और इसी कारण इससे शायद ही कोई अपरिचित हो । इसे 'टी-टी' मुरगाबी' भी कहा जाता है । यह हमारे देश से बाहर, पूर्व में बंगलादेश, बर्मा, श्याम, चीन, मंगोलिया, रूस और साइबेरिया में तथा पश्चिम में पश्चिमी पाकिस्तान, तुर्किस्तान, अफगानिस्तान, ईराक, ईरान तथा एशिया कोचक तक में मिलती है । ये हमारे देश में तो आधे सितम्बर में आ जाती है, लेकिन दक्षिण भारत में पहुँचते-पहुँचते अक्टूबर का पहला सप्ताह लग जाता है । वहाँ से इनकी वापसी अप्रैल के शुरू में आरम्भ हो जाती है और मई लगते-लगते यह अपने देश को लौट जाती है ।

**विवरण** : चैती सबसे प्रसिद्ध छोटी बत्तख है, जो छोटे-बड़े सभी तरह के गोलों में रहती है । इनकी उड़ान बहुत तेज होती है और हवा में कन्नी काटने में भी बहुत उस्ताद होती है । इन्हें बीस-बीस की टोलियों से लेकर सैकड़ों के झुंड में देखा जा सकता है । लेकिन यह बात अक्सर देखी गयी है कि जब इनका गोल बड़ा होता है, तो ये जलाशयों में एक साथ न रहकर छोटे-छोटे गिरोहों में अलग-अलग बँट जाती हैं ।

चैती को कोई खास स्थान, या किसी तरह का अड़ोस-पड़ोस पसन्द नहीं है, ये तो छोटे-बड़े सभी तरह के जलाशयों में उतर पड़ती हैं । कभी-कभी तो दो-चार चैतियों को, तिदारी की तरह, गाँव के पोखरों में भी देखा जा सकता है, जहाँ ये ढीठ हो जाती हैं ।

चैती समतल भूमि पर बहुत आसानी से चल लेती है, लेकिन इसकी चराई के स्थान प्रायः घास, नरकुल और दलदल से भरे किनारे ही होते हैं । इनका मुख्य भोजन तो घास-फूस, और पानी के पौधों की पत्तियाँ और जड़ें हैं, पर कभी-कभी ये कीड़े-मकोड़े और घोंघे-कटुए से भी अपनी भूख मिटा लेती हैं । इनकी बोली बड़ी कर्कश होती है जो रात में अधिक सुनी जाती है ।

**घोंसला** : चैती मौसमी बत्तख है, जो हमारे देश में कहीं भी अंडा नहीं देती । लेकिन कुछ लोगों का यह ख्याल है कि कश्मीर में कुछ चैतियाँ गरमियों में जरूर रहती हैं, यद्यपि अभी तक इसका ठीक-ठीक पता नहीं चल सका है । इसके अंडा देने का समय मई और जून है । अन्य मौसमी बत्तखों की तरह ये हमारे देश से बाहर जाकर उत्तर के देशों में अंडे देती हैं । ये घास-फूस का घोंसला बना कर, उसे पानी के किनारे पर ही जमीन पर रख देती हैं और घने नरकुल आदि के बीच छिपा देती हैं । ये घोंसले परों से मुलायम कर दिये जाते हैं ।

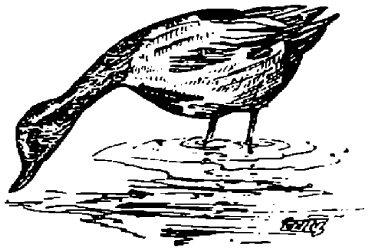
इनके अंडों की तादाद २०–२५ तक पहुँच जाती है और रंग हलका पीलापन लिये हाथीदाँत की तरह होता है ।

नाप में ये अंडे १.७ × १.३ इंच के होते हैं ।

## ३८९ चैता (Gargany or Blue Winged Teal: Querquedula querquedula)

**पर्याय** : साचि हंसक, चैतवा, गंग रोइब, खैरा, गिरिया, छिला हंस ।

**पहचान** : चैती से कुछ बड़ा और लगभग उसी रंग-रूप का पक्षी जिसका ऊपरी हिस्सा हरी चमक वाला भूरा रहता है । गला और गरदन का ऊपरी हिस्सा कत्थई और खड़ी धारियों वाला रहता है और नीचे का हिस्सा पेट की ओर सफेद और सीने की ओर गन्दा पीला और काले चिह्नों से भरा रहता है ।



चैता

**रंग-रूप** : चैता के नर मादा से कुछ बड़े, लम्बाई लगभग १६ इंच । नर-मादा के रूप में भी अन्तर । नर की चोटी, चाँद और गरदन के पीछे तक चली आने वाली धारी केसरिया-भूरी, आँखों के ऊपर से गरदन के बगल तक जाने वाली पट्टी सफेद । गला और ऊपरी गरदन कत्थई और उस पर खड़ी-खड़ी धारियाँ । पीठ भूरी, जिसमें हरी चमक । पंख लम्बे काले, जिनके बीच में एक सफेद पट्टी । पखनियाँ नीलापन लिये कंजई । डैना कंजई झलक लिये हरा और उन पर ऊपर और नीचे सफेद पट्टियाँ । दुम धुमैली कंजई । ऊपर दुमढकने पिलछौंह सफेद और उस पर काली बिंदियाँ, ठोढ़ी काली । सीना और छत्ता हलका मैला-पीला, पर जिसमें अर्द्ध-चन्द्राकार काले चिह्न । पेट सफेद । बगल के हिस्से में आड़ी काली लहरियाँ । निचला हिस्सा और नीचे का

दुमढकना पिलछौंह सफेद और उस पर काली बिंदियाँ। चोंच कलछौंह भूरी। आँख हल्की भूरी। टाँगें कलछौंह।

मादा का सर, गरदन और ऊपरी हिस्सा हलका उन्नाबी। आँख के पास की पट्टी हलकी या धुमैली। पखनियाँ ऊदी, पंख धुमैले जिनमें हरे रंग का प्रायः अभाव, ठोढ़ी, गला, निचला छत्ता, और नीचे का हिस्सा सफेद। बगल के और पेट के निचले हिस्से में भूरी चित्तियाँ।

**निवास** : हमारे देश में चैता का निवास-स्थान वही है, जो चैती का है, लेकिन ये उससे कम संख्या में हमारे यहाँ आती हैं। इसी कारण कभी-कभी ऐसा भी होता है कि किसी स्थान पर ये किसी साल तो बहुत कम पहुँचती हैं, या बिल्कुल ही नहीं पहुँच पातीं। हमारे देश से बाहर ये पूर्वी पाकिस्तान, बर्मा, स्याम, दखिनी चीन और दखिनी-पूर्वी मंगोलिया में और पश्चिम में पश्चिमी पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बिलोचिस्तान, ईरान, अरब, एशिया कोचक और उत्तरी अफ्रीका तथा अमरीका तक फैली हैं।

**विवरण** : चैता प्रसिद्ध मौसमी पक्षी है जो हमारे देश में दूसरी मौसमी बत्तखों से बहुत पहले पहुँच जाता है। इसके बड़े-बड़े गोल अगस्त के अन्त तक तालाबी हिस्सों में दिखाई पड़ने लगते हैं, जो जाड़े भर रहने के बाद मई के अन्त तक वापस लौटते हैं। चैता को ऐसे बड़े ताल और झीलें पसन्द हैं, जिनके किनारे नरई, नरकुल आदि से भरे हों। इसके अलावा, इन्हें न तो बड़ी नदियाँ ही भाती हैं और न ही छोटे तालाब। इनकी चराई का समय, दिन न होकर रात का ही होता है। उस समय ये पास-पड़ोस के जिन धान के खेतों में पड़ती हैं उन्हें एकदम साफ ही कर डालती हैं। ये चैती से ज्यादा चौकन्नी होती हैं।

इनकी उड़ान की तेजी चैती से कुछ कम तेज जरूर होती है, लेकिन कन्नी काटने और मुड़ने में ये उनसे कुछ आगे ही रहती हैं। पानी से उठते समय भी ये, एकदम सीधी न उठकर, कुछ आगे बढ़कर ऊपर को उठती हैं। ये तैरने में तो आगे रहती हैं, डुबकी मारने में भी उनसे कम नहीं होतीं। इनकी बोली जरूर चैती की बोली से ज्यादा कर्कश और तेज होती है। इनका मुख्य भोजन घास-पात, पानी के पौधों की नरम जड़ें कल्ले, पत्तियाँ, धान तथा बीज वगैरह होते हैं। इसके अलावा, ये कीड़े-मकोड़े और कटुए-घोंघे वगैरह भी खा लेते हैं।

**घोंसला** : अन्य मौसमी बत्तखों की तरह, चैता भी हमारे देश से बाहर जाकर ही अंडे देता है। ये अप्रैल-मई में सूखी घास और सेवार का घोंसला बनाते हैं, जिनका भीतरी हिस्सा परों और रोओं से मुलायम कर दिया जाता है। ये घोंसला पानी के किनारे के दलदली भागों में घनी घास या नरकुल के बीच में जमीन पर ही बनाया जाता है। मादा इसमें १० से २० तक अंडे देती है, जिनका रंग पीलापन लिये हाथीदाँत के रंग-जैसा होता है।

ये अंडे १.८ × १.३ इंच के होते हैं।

## ३९० नीलसर (Mallard : Anas Platyrhyncha)

**पर्याय** : नील ग्रीव हंसक, निलरुगी, लिलगाही, निराजी, अमरोलिया हंस।

**पहचान** : नीले सिर वाली सुन्दर बत्तख जिसका सीना कत्थई रहता है और गले पर एक सफेद कंठा होता है। ऊपर का हिस्सा पतली सफेद और भूरी टेढ़ी-मेढ़ी लकीरों से भरा रहता है। नीचे भी इसी प्रकार की सफेद और सिलेटी लकीरें पड़ी रहती हैं। यह यहाँ का बहुत परिचित पक्षी है जिसे सभी शिकारी पहचानते हैं।

**रंग-रूप** : नीलसर के नर-मादा के कद और रंग-रूप दोनों में अन्तर है। मादा नर से छोटी और नर की लम्बाई २४ इंच। नर का सर और गरदन का ऊपरी आधा हिस्सा गाढ़ा चमकीला हरा तथा गाल और माथे के पास करीब-करीब काला जैसा। गरदन में एक सफेद कंठा। ऊपरी गरदन भूरी जिसमें राखी लकीरें। दुमगजा और ऊपरी दुमढकना कलछौंह हरा। दुमगजा और ऊपरी दुमढकना कलछौंह हरा। दुमगजे के किनारे राखीपन लिये सफेद, जिसपर खैरी लहरियाँ। पंख राखीपन लिए सफेद, जिन पर चारखाने-जैसी भूरी लकीरें। पखनी और पंख भूरे। पंख गाढ़े नीले, जिनमें हरी और बैंगनी चमक। सारे परों पर सफेदी। सीना और छत्ता गाढ़े कत्थई। पेट और बगली हिस्से राखीपन लिये सफेद, जिनमें भूरी लकीरें। निचला दुमढकना कलछौंह हरा। दुम राखी भूरी, जिसके बीच के चार पर ऊपर को मुड़े हुए।

मादा का कद नर से छोटा और उसका सारा ऊपरी हिस्सा भूरा। परों के किनारे हल्के कत्थई। सर और गरदन सँदली, जिनमें कलछौंह लकीरें। गला हलका बदामीपन लिये सफेद। छत्ता और निचला हिस्सा पिलछौंह भूरा या बादामी, जिसमें गहरी-गहरी भूरी चित्तियाँ और लकीरें। दुम के चार पर नर की तरह मुड़े हुए नहीं होते। चोंच सिरे पर हरापन लिये राखी और जड़ पर पिलछौंह। आँख लाल या कत्थई। टाँगें नारंगी।

**निवास** : नीलसर बहुत सुन्दर और प्रसिद्ध बत्तख है, जो वैसे तो मौसमी बत्तख है लेकिन कश्मीर आदि उत्तरी प्रान्तों की बारहमासी बत्तख कही जा सकती है।

नीलसर जाड़ों में पंजाब और उत्तर प्रदेश और बिहार के उत्तरी हिस्सों में फैल जाते हैं और उत्तर की ओर हिमालय में ५–६ हजार फुट तक की ऊँचाई तक चले जाते हैं, लेकिन दक्षिण की ओर थोड़ी ही दूर तक और मिलते हैं, वह भी कम संख्या में। राजस्थान आदि सूखे प्रान्तों में तो ये दिखाई ही नहीं पड़ते। नीलसर नीचे के मैदानों में जाड़ों में कुछ तो कश्मीर की झीलों से आते हैं लेकिन अधिकांश तो यारकन्द की ओर से आते हैं। हमारे देश के बाहर, ये मध्य एशिया में बहुत बड़ी तादाद में फैले हैं।

**विवरण :** नीलसर यहाँ अक्टूबर के अन्त तक आ जाते हैं, लेकिन कुछ पक्षी यहाँ इससे भी पहले दिखाई पड़ते हैं। इनकी वापसी का समय भी, अन्य मौसमी पक्षियों की तरह मार्च का अन्तिम सप्ताह ही रहता है।

नीलसर प्रायः ८-१० के झुंड में रहते हैं, लेकिन जाड़ों में जब अंडे देने का समय निकट आने लगता है, तो ये जोड़ा बाँध कर अलग रहने लगते हैं।

नीलसर ज्यादातर रात में ही चराई करते हैं और दिन को अक्सर किनारे पर ऊँघते देखे जा सकते हैं। कभी-कभी इनका छोटा-सा गोल जलाशय के पास किसी छायादार जगह में नरकुल और पानी की घास के बीच तैरता भी दिखाई पड़ता है। इनकी उड़ान बहुत तेज होती है।

नीलसर को कीचड़, घास और नरकुल से भरे तालाबों, नदियों और झीलों के किनारे बखूबी देखा जा सकता है। इसको जमीन पर चलने, तैरने, डुबकी लगाने और हवा में उड़ने आदि सभी की सहूलियतें प्राप्त हैं। छिछले पानी के नीचे अपना भोजन निकालते समय ये अपना सर पानी के भीतर डाल कर दुम ऊपर उठाये रखते हैं। इनकी खुराक में घास-पात, पानी के नरम पौधे, जड़ें, कीड़े-मकोड़े और छोटी-छोटी मछलियाँ भी शामिल हैं।

**घोंसला :** मौसमी बत्तख होने पर भी, नीलसर गरमियों में बड़ी संख्या में कश्मीर की झीलों में रह जाती हैं और यहीं घोंसला बनाकर मई-जून में अंडे देती हैं। इसके अलावा गरमियों में इनकी कुछ संख्या हिमालय में हजार दो हजार फुट की ऊँचाई पर के जलाशयों में भी रह जाती है। इनके घोंसले घास-फूस के होते हैं, जिनको ये परों और रोओं से मुलायम कर लेते हैं। ये घोंसले पानी के आस-पास जमीन पर रहते हैं। मादा ८-१० अंडे देती हैं। अंडों का रंग हलका हरापन लिये संदली होता है।

नाप में ये अंडे करीब-करीब २.२३ × १.६ इंच के होते हैं।

## ३९१ सीखपर (Pintail : Dafila Acuta)

**पर्याय :** शंकु हंसक, पुछार, दिगहंस, दिगुंच, नंदा, कोकरा ली, नेजल हंस।

**पहचान :** सीखपर हमारे देश की बहुत प्रसिद्ध मझोले कद की बत्तख है जिससे सभी परिचित हैं। चैती और सवन की भाँति यह भी जाड़ों में हमारे यहां काफी संख्या में आती है। इसकी दुम के दो लम्बे और बढ़े हुये नोकीले परों के कारण इसको आसानी से पहचाना जा सकता है। इसकी पीठ आड़ी काली धारियों से भरी रहती है। डैने काले होते हैं और सीना सफेद और कलछौंह लकीरों से भरा रहता है। पेट के निचले भाग में कंजई चित्तियाँ रहती हैं।

**रंग-रूप :** सीखपर के नर-मादा के रूप-रंग और कद में भी अन्तर होता है। नर की लम्बाई २५ इंच और वह अपनी लम्बी पूँछ के कारण मादा से बड़ा और वजनी भी होता है। उसका माथा और चोटी केशरियापन लिये भूरी। बाकी सर, सारा ठोढ़ी और गला कत्थई, जिसमें कान के पास कुछ हरी और बैंगनी चमक। सर से चाँद तक दो सफेद धारियाँ। ऊपरी गरदन गाढ़ी उन्नाबी। पीठ पर आड़ी-आड़ी काली और राखी लहरियाँ। पंखे काले। ऊपरी दुमढकने और दुम कंजई भूरी। दुम के दोनों बढ़े हुए पखने काले। बड़े पंख और बीच की पखनी हलकी कत्थई। छोटी पखनी गाढ़ी ऊदी। आँख का छल्ला कलछौंह हरा, जिसमें बैंगनी चमक और किनारे पिलछौंह। छत्ता और पेट सफेद। बगल की ओर सफेद और कलछौंह लकीरें। पेट के निचले हिस्से में कंजई चित्तियाँ और दुम का निचला हिस्सा काला। चोंच काली। आँख गाढ़ी भूरी। टाँगें गाढ़ी सिलेटी।

मादा का कद नर से छोटा। सर और गरदन कत्थई, जिसमें धुमैली लकीरें। ऊपरी हिस्सा केशरिया भूरा। पखनियाँ भूरी, जिनके किनारे सफेद। निचला हिस्सा बहुत हलका बादामी जिसमें घनी भूरी चित्तियाँ। आँख का छल्ला नर से अधिक धुमैला और उसमें हरी चमक भी नहीं होती।

**निवास :** भारत में उत्तर से दक्षिण तक और पूरब से पश्चिम तक, शायद ही कोई ऐसा स्थान होगा जहाँ सीखपर जाड़ों में न पहुँच जाते हों। बल्कि संसार के सभी देशों में सीखपर फैल जाते हैं और यूरोप, अमेरिका, चीन, जापान, मंगोलिया, अफ्रीका, आदि सभी देशों में थोड़ी-बहुत संख्या में देखे जा सकते हैं।

हमारे देश में ये कुछ देर से आते हैं और यहाँ से लौटते भी जल्दी ही हैं, इससे इनका यहाँ ठहरना कुछ ज्यादा नहीं होता। कश्मीर आदि ऊँची जगहों में, ये भले ही सितम्बर में आ जाते हों लेकिन मैदानों में तो इन्हें नवम्बर में ही देखा जा सकता है। इसी तरह अप्रैल शुरू होते-होते इनकी वहाँ से वापसी भी हो जाती है।

**विवरण :** सीखपर जाड़ों में सब जगह फैल जाते हैं और देश का कोई भी भाग इनसे खाली नहीं बचता, फिर भी इनके रहने की कुछ खास जगहें हैं, जहाँ ये अधिक संख्या में दिखाई पड़ते हैं। रात में चराई के लिए ये छोटे-बड़े सभी तरह के जलाशयों में चले जाते हैं, पर अपना दिन का समय तो ऐसे बड़े तालों या झीलों में ही बिताते हैं, जहाँ साफ पानी रहता हो और जिनके किनारों पर और बीच-बीच में घास वगैरह से भरे टापू होते हैं, क्योंकि इनके बीच इन्हें छिपकर बैठने में आसानी हो जाती है। ये जाड़ों में २-४ के गिरोहों में न रहकर, २०–२५ से लेकर १००–२०० तक के झुंडों में रहते हैं और कभी-कभी तो, इनके झुंड में एक सिरे से नर ही नर दिखाई पड़ते हैं।

सीखपर तैरने में काफी तेज होते ही हैं, लेकिन उड़ने में भी बहुत तेज होते हैं। ये यहाँ आने वाली सब बत्तखों से ज्यादा तेज

उड़ते हैं, पर घायल होने पर न तो ये ज्यादा डुबकी ही लगा पाते हैं और न अधिक तैर पाते हैं। ये सूखे पर भी काफी आसानी से और बड़ी खूबसूरती से चल लेते हैं। यह कहना अनुचित न होगा कि जिस प्रकार बड़ी बत्तखों में सवन सबसे सुन्दर बत्तख है, उसी प्रकार छोटी बत्तखों में सीखपर का नम्बर सबसे आगे है।

इनका "सीखपर" नाम इनकी दुम में से निकले हुए दो पतले सीकनुमा परों के कारण पड़ा है और इसी तरह दूसरा नाम "पुछार" भी इनकी लम्बी पूँछ को जाहिर करता है। देहातों में इसके यही नाम अधिक प्रसिद्ध हैं। सीखपर का मुख्य भोजन अन्य बत्तखों की तरह, घास-पात, जड़ें, पत्तियाँ और धान वगैरह हैं, लेकिन इनके खत्म होने पर ये दूसरी बत्तखों की तरह कीड़े-मकोड़े और घोंघे-कटुए पर भी निर्वाह कर लेते हैं। सीखपर वैसे तो चुपचाप बत्तख है, लेकिन चौकन्नी होने पर ये बोलती भी खूब है।

**घोंसला** : सीखपर हमारे देश में अंडे नहीं देते, लेकिन उत्तरी एशिया में जहाँ ये अंडे देते हैं, इनके अंडे मई-जून में पाये जाते हैं। इस समय ये घास-फूस और टहनियों का घोंसला बनाती हैं, जिनके भीतरी किनारे के और बीच के हिस्सों को परों से मुलायम कर दिया जाता है। घोंसले अक्सर घास वगैरह से भरी दलदली जमीन पर रखे मिलते हैं। जिनमें मादा ७–८ अंडे देती है, जो पिलछौंह होते हैं, जिनमें हरेपन की भी कुछ झलक मिलती है। ये अंडे सीखपर का कद देखते हुए, कुछ छोटे ही कहे जायेंगे।

ये अंडे करीब २.२२ × १.४ इंच के ही होते हैं।

## ३९२ तिदारी (Shoveller : Spatula clypeata)

**पर्याय** : खात हंसक, पुनाना, फेनार, घिरह, टोंकरवाला, पंतामुखी, घोबहर, गिनो सरकार, खिखिरिया, संकर।

**पहचान** : तिदारी कीचड़ में रहने वाली बत्तख है जिसकी चौड़ी चोंच के कारण इसको आसानी से पहचाना जा सकता है। इसके सर और गरदन का ऊपरी भाग गाढ़ा भूरा, पीठ नारंगी भूरी, डैने सफेद और नीचे का हिस्सा भी सफेद होता है।

**रंग-रूप** : तिदारी का नर मादा से कद में बड़ा होता है और उसका रंग भी जोड़ा बाँधने के समय मादा से भड़कीला हो जाता है। वैसे भी दोनों के रूप-रंग में अन्तर होता है। नर का सर और गरदन का ऊपरी भाग गाढ़ा भूरा, जिसमें हरी चमक। पीठ गाढ़ी केसरिया भूरी। पंख सफेद, दुमगजा और ऊपरी दुमढकने भूरे जिसमें कलछौंह हरी चमक, दुम के किनारे सफेद। दुम भूरी, कुछ परों के सिर्फ किनारे सफेद और कुछ एकदम सफेद। छोटी पखनी राखीपन लिये नीली। बड़ी पखनी के सिरे सफेद और पंख चटक हरे। बड़े पंख कत्थई भूरे तथा गाढ़ी बैंगनी झलक वाले। सीना और छत्ता सफेद। पेट हलका कत्थई। निचला दुमढकना भूरा जिसमें कलछौंह और हरी चमक।

मादा का सर हलका कत्थई, जिसमें पतली और कलछौंह धारियाँ। बाकी सारा ऊपरी हिस्सा गहरा भूरा। पंख का रंग, नर की तरह चटक न होकर, धुमैला। नीचे का हिस्सा कलछौंह, जिसमें बड़े-बड़े चित्ते। चोंच उन्नाबी। आँखें पीली। टांगें नारंगी।

**निवास** : सिलही और नकुटा को जैसे पेड़ की बत्तख कहा जाता है, वैसे ही तिदारी को कीचड़ की बत्तख कहना अनुचित न होगा। तिदारी यहाँ की मौसमी बत्तख है, जो जाड़ों के शुरू में उत्तर की ओर से आकर, गरमियों के शुरू होते-होते फिर उसी ओर लौट जाती है। यह हमारे देश में घुर दक्षिण तक फैल जाती है और अनुकूल वातावरण के अनुसार अपना स्थान चुन कर जाड़े भर यहाँ रहती हैं। हमारे देश से बाहर ये पाकिस्तान, ईरान, ईराक, अफगानिस्तान, बिलोचिस्तान, चीन, जापान और मंगोलिया आदि देशों में फैल जाती हैं, जहाँ ये छोटे-छोटे गिरोहों में बँट कर रहती हैं।

**विवरण** : तिदारी हमारे देश की प्रसिद्ध मौसमी बत्तख है, जो हमारे देश में अक्टूबर के अन्त तक आ जाती है और अप्रैल के अन्त तक वापस चली जाती है। इन्हें वैसे तो कभी-कभी बड़ी-बड़ी नदियों और तालाबों में भी देखा जा सकता है, लेकिन ज्यादातर तो कीचड़ से भरे तालाबों, ताल-तलैयों में ही दिखाई पड़ती हैं, जो इन्हें बहुत पसन्द हैं। बल्कि कभी-कभी तो ये गाँव के पोखरों में भी पालतू बत्तखों की तरह बड़ी ढिठाई से तैरती दिखाई पड़ती हैं, जैसे इन्हें किसी का डर न हो। इनका मुख्य भोजन घास, सेवार, कीचड़, कीड़े-मकोड़े, कटुए, छोटी-छोटी मछलियाँ और मेंढक हैं, जिन्हें ये अपनी चौड़ी और चपटी चोंच के सहारे कीचड़ में से भी पकड़ लेती हैं। अपनी खुराक के लिए, ये प्रायः ताल के किनारे ही किनारे तैरती रहती हैं और जरूरत पड़ने पर सूखे में आकर, फिर पानी में लौट जाती हैं।

तिदारी गोल में न रह कर, ज्यादातर जोड़ा बाँध कर रहना ही पसन्द करती हैं और अक्सर एक नर के साथ दो मादाएँ देखी जा सकती हैं। उड़ते समय अपने-अपने जोड़ों के अलावा, दूसरों की जिम्मेदारी इन पर नहीं रहती। तिदारी की चोंच और दूसरी बत्तखों की अपेक्षा अधिक चपटी और चौड़ी होती है, जैसे वह कीचड़ के लिए ही बनाई गयी हो। ये अक्सर अपनी निचली चोंच पानी में और ऊपरी चोंच पानी से ऊपर रख कर, अपने सर को दाबिल की तरह आड़ा-आड़ा चलाती हैं, जिससे उसकी चोंच के बीच में कीड़े-मकोड़े और मेंढक, मछलियाँ आ जाती हैं और ये उन्हें चट कर जाती हैं। तिदारी पानी से ऊपर उठने में जरूर सुस्त होती हैं, लेकिन एक बार हवा में पहुँच जाने के बाद इनकी उड़ान में बहुत तेजी आ जाती है।

**घोंसला** : तिदारी वैसे तो मौसमी बत्तख है, लेकिन इनमें से कुछ यहाँ से लौटते समय कश्मीर की झीलों में भी रह जाती हैं और वहीं अंडे दे देती हैं। इनके अंडा देने का समय मई से जुलाई तक रहता है, जब ये जमीन पर घास-फूस और परों का छिछला-सा मुलायम घोंसला बनाकर १० से १२ तक अंडे देती हैं। इन अंडों का रंग हलका हरापन लिये संदली होता है।

नाप में ये लगभग २.० × १.३३ इंच के होते हैं।

## ३९३ बुड़ार (Pochard or Red headed Pochard : Nyroca Ferina)

**पर्याय** : अरुणमज्जिका, रंगामुड़िया, डूबा, डुबारू।

**पहचान** : बुड़ार हमारे देश की बहुत प्रसिद्ध बत्तख है जिसे इसकी डुबकी लगाने की आदत के कारण डूबा और डुबारू भी कहा जाता है। इसका सर और गरदन कत्थई, पीठ का ऊपरी भाग काला और सफेद तथा नीचे का हिस्सा सीने के पास काला और पीछे की ओर सफेद रहता है।

**रंग-रूप** : बुड़ार के नर-मादा करीब-करीब बराबर। मादा नर से जरा-सी ही छोटी। नर की लम्बाई १८ इंच। उसका सर और गरदन चटक कत्थई। पीठ का ऊपरी हिस्सा काला। बाकी पीठ, पखनियाँ और पंख सफेद, जिनमें महीन काली धारियाँ। दुमगजा और ऊपरी दुमढकने काले। दुम कंजई भूरी, बड़े पंख गाढ़े कलछौंह भूरे और छोटे पंख निलछौंह कंजई। छत्ता काला। पेट सफेद। जिसका कुछ हिस्सा पीठ की तरह काली धारियों से भरा। निचले दुमढकने काले। चोंच कलछौंह सिलेटी, जिसका सिरा और जड़ काली। आँख नारंगी पीली। टाँगें सिलेटी।

मादा का माथा, गुद्दी, गरदन का बगली हिस्सा और पीठ हलकी कत्थई। बाकी पीठ नर-जैसी, पर उसमें लहरियाँ घूमिल। गला और गरदन सफेद, जिसमें कुछ ललाई। छत्ता हलका कत्थई, जिसमें सफेद चित्तियाँ, पेट का भाग निचला राखीपन लिये सफेद।

**निवास** : बुड़ार मौसमी पनडुब्बी बत्तख है, जो जाड़ों में उत्तर की ओर से आकर, अन्य मौसमी बत्तखों की तरह गर्मी शुरू होने पर फिर उसी ओर लौट जाती हैं। यह मध्यप्रदेश के दक्षिण या तो बहुत कम मिलती है, या बिल्कुल ही नहीं मिलती। बाकी सारे देश में फैल जाती हैं। भारत से बाहर उत्तर की ओर चीन और पश्चिम की ओर पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईराक, ईरान, एशिया कोचक और यूरोप आदि देशों में फैल जाती हैं।

**विवरण** : बुड़ार का दूसरा नाम डूबा भी है, जो इसके डुबकी लगाने की आदत से पड़ा है। डुबकी लगाने वाली बत्तखों और अन्य बत्तखों में खास फर्क यह होता है कि ये पानी के नीचे डुबकी लगाकर पानी के भीतर ही मछलियो की तरह तैर कर अपना भोजन तलाश करती हैं। इन बत्तखों के डैने कुछ छोटे होते हैं और उड़ते समय जल्दी-जल्दी डैने चलाने से टिन की-की सी आवाज होती है, जो अन्य बत्तखों से भिन्न होती है। दूसरा फर्क इनके पिछले अँगूठे की बनावट में होता है। पानी के भीतर तैरने में आसानी के लिये, अन्य बत्तखों की अपेक्षा इनके अँगूठे कुछ अधिक चौड़े और पतवारनुमा होते हैं, जिससे इन्हें आसानी से पहचाना जा सकता है।

बुड़ार डुबकी लगाने में तो कुशल हैं, लेकिन जमीन पर आसानी से नहीं चल पाते। इनके डैने भी कुछ छोटे होते हैं। इस कारण, उड़ते समय कुछ दूर तो इन्हें डगमगाते हुए जाना पड़ता है लेकिन उसके बाद इनकी उड़ान में काफी तेजी आ जाती है। शायद इसी सुविधा के कारण, ये उड़ने की अपेक्षा डुबकी लगाकर दूर निकल जाना पसन्द करते हैं। इनका यह तैरना मछली से कम तेज नहीं होता।

बुड़ार हमारे देश में कुछ पिछड़कर आते हैं। वैसे तो इनका आना आधे अक्टूबर से शुरू हो जाता है, लेकिन ज्यादातर बुड़ार यहाँ नवम्बर में ही आते हैं। बुड़ार वैसे तो दो-चार की संख्या में, या छोटी-छोटी टोलियों में सभी तालों में मिल जायेंगे, लेकिन इनके हजारों के बड़े-बड़े गोल ऐसे ही तालों या झीलों में दिखाई पड़ सकते हैं, जिनके किनारे पानी की गोंद और नरई आदि घासों से भरे हों और जिसके बीच में खुला पानी हो। यही नहीं, वह ताल गहरा भी जरूर होना चाहिए, जिसमें डुबकी लगाकर ये अपनी खुराक तलाश कर सकें।

बुड़ार को एकदम घास-पात खाने वाली बत्तख कहना अनुचित न होगा, क्योंकि इनके पेट में से शायद ही कभी दो-चार कीड़े-मकोड़े मिल जाते हों तो मिल जाते हों। फिर भी अधिक सम्भव है कि पानी के पौधों, पत्तियों या नरम कल्लों के साथ ही इनके पेट में चले गये होंगे। कुछ न मिलने पर ये घोंघे, कीड़े आदि खाती भी हैं, तो बहुत कम। इनका मुख्य भोजन तो वही घास-फूस, पानी की पौधों की जड़ें और दाने वगैरह ही हैं। ये रात में चराई करती हैं और उसके लिए ये शाम को ही उड़कर चराई के लिए उपयुक्त स्थानों पर चली जाती हैं। वैसे, इन्हें दिन में भी इधर-उधर घास-फूस नोचते देखा जा सकता है।

बुड़ार कम बोलते हैं, लेकिन सतर्क करने के लिये और उड़ते समय भी ये तेज और कर्कश 'कर्र-कर्र' की आवाज करके उड़ते हैं। ये ढीठ भी बहुत होते हैं।

**घोंसला** : ये हमारे देश में अंडे नहीं देते, इसके लिए उन्हें उत्तरी-पश्चिमी देशों में जाना पड़ता है। इनके घोंसले पानी के बिलकुल किनारे, या पानी में उगे नरकुल या घनी घास के बीच रखे रहते हैं। घोंसले घास-फूस के बने होते हैं। मादा अप्रैल से जून तक में १०–२० अंडे देती है। मादा घोंसले को परों

और रोओं से इस कदर भर देती है कि कभी-कभी उससे अंडे तक छिप जाते हैं। अंडों का रंग हलका हरापन लिये मटमैला होता है।

ये अंडे लगभग २.४ × १.७ इंच के होते हैं।

## ३९४ लालसर (Red Crested Pochard : Netta rufina)

**पर्याय :** रक्त चूड़, अरुण चंचु, ललमुड़िया, लाल चोंच, रताबो, छोबरा हंस, बातण।

**पहचान :** लालसर हमारे यहाँ की सुन्दर बत्तख है जिसका सर और गरदन का ऊपरी भाग ललछौंह काही और पीठ, डैने तथा दुम बादामी होती हैं। पंख के डैने सफेद तथा शरीर का निचला भाग काला रहता है।

**रंग-रूप :** नर मादा से काफी भारी, पर कद में उससे जरा ही बड़ा। लम्बाई २१ इंच। नर-मादा के रंग-रूप में भी अन्तर। नर का सर, गला, गाल और गरदन का ऊपरी हिस्सा ललछौंह काही और सर पर इसी से कुछ हलके रंग की मुलायम चोटी। पीठ और डैने तथा दुम बादामी। डैने के मोड़ पर पीठ की ओर बड़ा सा धब्बा। पंख तथा बड़े पंखों के निचले हिस्से सफेद। गरदन का निचला हिस्सा, सीना, छत्ता और पेट गहरा काला। बगल के दोनों हिस्से सफेद। मादा का ऊपरी हिस्सा हलका बादामी और सर तथा गरदन गाढ़ी बादामी। चोटी हलके रंग की और नर से छोटी। पंख आधे हलके राखी और आधे हलके भूरे। बड़े पंखों के निचले हिस्से सफेद, जिसमें कुछ भूरेपन की मिलावट। सीना, छत्ता और बगल के हिस्से बादामी। पेट कंजई और पैर ललछौंह। चोंच चटक गाढ़ी सिंदूरी, जिसका सिरा सफेद। आँख लाल, टाँगें नारंगी।

**निवास :** बुड़ार की तरह लालसर भी हमारे देश की छोटी सी मौसमी पनडुब्बी बत्तख है, जो जाड़ों में काफी संख्या में इस देश के तालों और झीलों में भर जाती है। ये कश्मीर की ओर नहीं जाती हैं, लेकिन कुमाऊं और नेपाल की ओर काफी संख्या में फैली रहती हैं। जाड़ों में पंजाब, उत्तर प्रदेश, बुंदेलखंड, रोहेलखंड, राजस्थान, मध्यप्रदेश, छोटा नागपुर, बंगाल, गुजरात, काठियावाड़ आदि उन सभी उत्तरी क्षेत्रों में, जहाँ-जहाँ बुड़ार जाते हैं, ये भी मिलते हैं, लेकिन दक्षिण की ओर ये उनसे पीछे ही रहते हैं। ये हैदराबाद से आगे न जाकर जाड़ा समाप्त होते-होते वहीं से उत्तर की ओर लौट आते हैं।

लालसर हमारे देश से बाहर पाकिस्तान, ईरान, अफगानिस्तान, बिलोचिस्तान आदि पश्चिमी देशों में भी पाये जाते हैं, लेकिन उत्तरी अफ्रीका की बजाय दक्षिणी यूरोप में स्पेन तक चले जाते हैं। यह भी बुड़ार की तरह भारत में कुछ पिछड़कर आते हैं। अक्टूबर के अन्त से इनका आना शुरू हो जाता है, पर इन्हें ज्यादा संख्या में नवम्बर ही में देखा जा सकता है। इनकी वापसी भी जल्दी होती है। अप्रैल के आरम्भ होते ही यहाँ से लौटना शुरू कर देते हैं और गर्मी शुरू होने से पूर्व ही हमारे देश को छोड़कर उत्तरी-पश्चिमी देशों में अंडे-बच्चे देने के लिए चले जाते हैं।

**विवरण :** पनडुब्बी बत्तख होने के कारण, लालसर को भी गहरे ताल ही पसन्द हैं और ऐसी ही झीलें या ताल इन्हें बहुत ही भाते हैं जिनमें गहराई के साथ-साथ किनारों पर सेवार या काई आदि भी हो। लालसर रहने की सुविधा देखकर दस-बारह की टोलियों में भी रहते हैं और हजारों के गोल में भी।

लालसर की चराई का भी वही कायदा है जो बुड़ार का। वैसे ये रात में तो चराई के लिए दूसरी अच्छी जगहों में ही जाते हैं, लेकिन इन्हें दिन में भी चरते हुए देखा जा सकता है। अन्य पनडुब्बी बत्तखों की तरह, इनको भी उड़ने में कुछ दिक्कत पड़ती है, लेकिन कुछ देर बाद इनकी उड़ान में काफी तेजी आ जाती है।

बुड़ार की तरह लालसर का भी मुख्य भोजन घास-पात, पानी के पौधों की पत्तियाँ और नरम कल्ले हैं, पर वे कीड़े-मकोड़े, घोंघे और छोटे मेंढकों को भी खा लेते हैं। कोई निरापद स्थान पाकर, लालसर दिन के दस बजे तक भले ही किनारे पर चराई कर लें, लेकिन उसके बाद ये तालों में ही दिखाई पड़ते हैं।

**घोंसला :** लालसर भी हमारे देश में अंडे नहीं देते। इसके लिए इन्हें पश्चिमी देशों की ओर ही जाना पड़ता है। वहाँ किसी जलाशय के किनारे या टापू में इनके घास-फूस के बने घोंसले जमीन पर ही रखे मिलते हैं, जिन्हें ये परों आदि से मुलायम बना देते हैं। मादा इन मुलायम घोंसलों में मई-जून में ८–१० अंडे देती है, जिनका रंग पहले तो हरछौंह रहता है, लेकिन पुराने हो जाने पर वे पिस्तई सिलेटी हरे हो जाते हैं।

ये अंडे नाप में २.३ × १.६ इंच के होते हैं।

## ३९५ करछिया (White-Eye : Nyroca nyrosa)

**पर्याय :** मल्लिकाक्ष मज्जिका, लाल बिगरी, भूटी हंस, बरनू, कालीमूड़ी।

**पहचान :** करछिया कत्थई रंग की बत्तख है। जिसका ऊपरी भाग कत्थई जिसमें बैंगनी और हरी झलक रहती है। सीना कत्थई और पेट सफेद रहता है।

**रंग-रूप :** नर-मादा से कुछ बड़ा होता है। उसकी लम्बाई

१७ इंच। नर-मादा के रंग-रूप में भी थोड़ा अन्तर। नर का सर और गरदन गाढ़ा और मोरचे के रंग से मिलता-जुलता, जिसके निचले भाग में एक पतला उन्नाबी रंग का कंठा। पीठ, पंख और पखनियाँ गाढ़ी खैरी, जिसमें बैंगनी और हरी चमक। दुम और ऊपरी दुमढकना कलछौंह भूरे। छोटे पंख सफेद जिनके निचले किनारे काले। बड़े पंख कलछौंह। ठोड़ी सफेद मायल। सीना और छत्ते का रंग सर और गरदन जैसा, लेकिन उससे चटक। निचले दुमढकने सफेद। निचला हिस्सा गाढ़ा सिलेटी।

मादा का सर और गरदन भूरी। ऊपर का हिस्सा केसरिया भूरा। आँख की पुतली कम सफेद। चोंच गाढ़ी सिलेटी। बाकी हिस्से नर जैसे। चोंच निलछौंह काली। आँख सफेद। टाँगें हलकी कंजई।

**निवास :** करछिया उन मौसमी बत्तखों में से है, जो जाड़ों में उत्तर की ओर से हमारे देश में आकर गरमियों के प्रारम्भ में फिर उसी ओर लौट जाती हैं। उनमें से कुछ बत्तखें कश्मीर की झीलों में भी रुक जाती हैं और वहीं घोंसला बना कर अंडे देती हैं। जाड़ों में ये हिमालय से हैदराबाद तक और काठियावाड़ से बंगाल तक फैल जाती हैं, लेकिन यहाँ से आगे इनका पता नहीं चलता। यह दूसरी बात है कि इक्का-दुक्का टोलियाँ घुर दक्षिण की ओर चली जाती हैं। हमारे देश से बाहर, ये दक्षिणी चीन से लेकर पश्चिम की ओर पाकिस्तान, ईरान, तुर्किस्तान और एशिया कोचक तक और सारे दक्षिणी और मध्य यूरोप तक मिलती हैं।

**विवरण :** करछिया अक्टूबर के अन्त में आ जाती है और अप्रैल में इनकी वापसी हो जाती है। ऐसे बड़े और गहरे तालाब जिनके किनारे गोंद, नरई और नरकुल से भरे हों, इनके पसन्द की जगहें हैं, पर इन्हें नदियों और छोटे तालों में भी देखा जा सकता है। इन्हें खुले ताल पसन्द नहीं हैं, ये तो ऐसी गुंजान और घास-फूस से भरी जगहें चाहती हैं, जिसमें ये छिप सकें।

करछिया के उड़ने का तरीका भी निराला है। ये आहट पाने पर या दबाव पड़ने पर, सब की सब एक-साथ नहीं उड़तीं, बल्कि एक-एक या दो-दो उड़ती हैं। पानी से ये भी कुछ दिक्कत से उठती हैं और पिछला अँगूठा काफी चौड़ा और जुड़ा होने के कारण, उठते समय इन्हें काफी दूर तक पानी की सतह पर कुछ दौड़ना पड़ता है, लेकिन एक बार हवा में पहुँच जाने पर ये काफी तेज उड़ लेती हैं। लेकिन अधिकतर ये तालाब को मुश्किल से ही छोड़ती हैं और एक जगह से उड़ कर दूर जाने की अपेक्षा, टिकरी की तरह, थोड़ी दूर पर फिर पानी में गिर जाती हैं। इन्हें ज्यादातर पानी में ही देखा जाता है, जहाँ तैरने में शायद ही कोई पनडुब्बी इनका मुकाबला कर सके।

इनका भोजन घास-पात, जड़ें, कल्ले, बीज, पत्तियाँ और पानी के पौधों की पत्तियाँ हैं, पर ये घोंघे, कीड़े-मकोड़े और छोटी-छोटी मछलियाँ भी काफी मजे में खाती हैं। इनकी चराई का समय शायद हमेशा ही रहता है, क्योंकि ये दूसरी बत्तखों की तरह शाम को चराई के स्थान को नहीं जातीं, बल्कि दिन-रात एक ही स्थान पर चरा करती हैं। पानी में उड़ते समय, ये बड़े कर्कश स्वर में बोलती हैं। इनकी बाकी आदतें पनडुब्बियों की तरह होती हैं।

**घोंसला :** करछिया काफी संख्या में कश्मीर में रह जाती हैं और वहीं घोंसला बनाकर अंडे देती हैं। इनके अंडे भी नीलसर के अंडों की तरह कश्मीर के बाजारों में काफी संख्या में बिकने आते हैं। ये जून में अपने घास-फूस और परों के घोंसले बनाती हैं, जिन्हें ये या तो किसी घनी घास के नीचे जमीन पर या पानी में तैरते हुए खर-पतवार और पानी के पौधों पर रख देती हैं। घोंसले का भीतरी हिस्सा बहुत साफ-सुथरा और मुलायम रहता है। मादा ८–१० अंडे देती है, इनका रंग बहुत हल्का हरापन लिये होता है, जिसमें थोड़ी-सी चमक भी होती है।

अंडों की नाप लगभग २.१ × १.५ इंच होती है।

## ३१६ अबलख (Tufted Pochard : Nyroca fuligula)

**पर्याय :** ब्रह्मपुत्री मज्जिका, रहबारा, रनहारो, बमनिया हंस।

**पहचान :** अबलख यहाँ का प्रसिद्ध बत्तख है जिसका सर, गरदन और ऊपरी भाग काला रहता है जिसमें हरी झलक रहती है। सीना चटकीला तथा पेट सफेद रहता है।

**रंग-रूप :** नर मादा से कुछ ही बड़े, जिनकी लम्बाई १७ इंच। सर और गरदन तथा सर पर की लम्बी रेशमी चोटी चटक काली, जिसमें हरी और बैंगनी झलक। पीठ, डैने और दुमगजा काला, जिसमें हलकी राखी चमक। छत्ता चटकीला और नीचे का हिस्सा सफेद। पंख सफेद, जिसमें छोटे पंखों और पखनियों के किनारे काही और उनके बीच में चमकीली हरी पट्टी। मादा चितली-भूरी और उसका निचला भाग सफेद। चोंच गाढ़ी निलछौंह सिलेटी। जिसका सिरा काला। आँख सुनहली पीली। टाँगें गाढ़ी सिलेटी।

**निवास :** अबलख प्रसिद्ध पनडुब्बी बत्तख है, जो भारत में कम संख्या में आती हैं। ये हिमालय के प्रान्तों में बहुत ही कम हैं। पंजाब और राजस्थान में उससे कुछ ज्यादा और उत्तर प्रदेश, काठियावाड़ और गुजरात में काफी संख्या में जाड़ों में फैल जाते हैं। ये दक्षिण की ओर हैदराबाद से आगे नहीं जाते और पूर्व की ओर भी बंगाल के कुछ ही हिस्सों में पहुँच जाते हैं।

हमारे देश से बाहर ये उत्तर की ओर चीन, मंगोलिया, दक्षिण-

पूर्वी साइबेरिया और पश्चिम की ओर पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईराक और ईरान आदि देशों में पाये जाते हैं। इसके अलावा, ये उत्तरी अफ्रीका और सारे यूरोप में मिलते हैं। अबलख हमारे देश में आधे अक्टूबर से आना शुरू कर देते हैं और अप्रैल के प्रारम्भ तक इनकी यहाँ से वापसी भी हो जाती है।

**विवरण :** अबलख भी लालसर और करछिया आदि की तरह पनडुब्बी बत्तख है। इन्हें भी ऐसे गहरे ताल और झीलें पसन्द हैं, जो नरई, गोंद और नरकुल आदि घासों से भरे हों और जिनके बीच में खुला पानी हो। ये नदियों में बहुत कम मिलते हैं। इनके बड़े-बड़े झुंड अक्सर बड़े तालों में दिखाई पड़ते हैं।

अबलख बहुत भड़कीली बत्तख है, जिनके गोल ज्यादातर बीच ताल में ही रहते हैं। इनकी चराई का समय दिन भी है और रात भी। अबलख की काफी आदतें अन्य पनडुब्बियों-जैसी होती हैं, लेकिन दूसरी पनडुब्बियों की तरह, न तो ये पंख ही जोर से मारती हैं और न पानी से उठने में ही इनको उतनी अधिक कठिनाई होती है। तैरने में भी ये बहुत तेज होती हैं और डुबकी तो गजब की लगाती हैं। पीछा करने पर, उड़ने की जगह पहले ये डुबकी लगाकर भाग जाने की कोशिश करती हैं और अक्सर इनका गोल का गोल पानी के भीतर इस तरह गायब हो जाता है कि ताज्जुब होता है। फिर ये इधर-उधर छिटक कर पानी से निकलते और डूबते रहते हैं। यदि इस तरह भागने से काम न चले तो मजबूत डैनों की मदद लेनी ही पड़ती है।

अबलख बोलते बहुत कम हैं, लेकिन सतर्क होकर उड़ते समय इसकी पनडुब्बियों की-सी 'कर्र-कर्र' की कर्कश आवाज छिपती नहीं। इनका मुख्य भोजन घास-पात से ज्यादा कीड़े-मकोड़े, छोटी मछलियाँ, मेचकुर, घोंघे और पानी के तरह-तरह के जीव-जन्तु हैं।

**घोंसला :** अबलख हमारे देश में अंडे नहीं देते और इसके लिए पश्चिमोत्तर के देशों की ओर जाना पड़ता है। इनका अंडा देने का समय मई-जून है और इनके घोंसले की बनावट में अन्य बत्तखों की ही तरह घास-फूस और परों की बहुतायत रहती है, जो घास-फूस के बीच पानी के किनारे जमीन पर रखे रहते हैं। मादा हरापन लिये हलके रंग के ७-८ चमकीले अंडे देती है।

अंडे लगभग २.३ × १.६५ इंच के होते हैं।

## ३९७ निहनी (Smew : Mergellus albellus)

**पर्याय :** श्वेत कारण्डव, निकन्नी, झाली।

**पहचान :** निहनी का सर, गरदन और सीना सफेद रहता है। ऊपरी हिस्सा काला, डैने काले और सफेद तथा निचला भाग सफेद रहता है जिसके कारण इसको पहचानने में कठिनाई नहीं होती।

**रंग-रूप :** निहनी के नर-मादा के रंग-रूप में थोड़ा-सा भेद होता है और मादा नर से कद में कुछ छोटी होती है। नर की लम्बाई १७.५ इंच और उसका सारा सर, पूरी गरदन, सीना और नीचे का सारा हिस्सा सफेद, जिसमें गुद्दी और चोंच की जड़ से आँख के पीछे तक का भाग काला, हरी झलक वाला। गरदन के ऊपरी भाग के दोनों बगली हिस्सों तक एक काली धारी। शरीर के दोनों बगली हिस्सों पर हलकी पतली टेढ़ी-मेढ़ी राखी रंग की लकीरें। पखनियाँ सफेद और काली। पीठ और दुमगजे का ऊपरी हिस्सा काला। कन्धे और डैने के पर काले और सफेद। निचला दुमगजा और ऊपरी दुमढकना गाढ़ा कंजई। दुम सिलेटी भूरी। डैने के बढ़े हुए पर राखी भूरे। बड़े पंख भूरे और छोटे पंखों के कुछ बाहरी पर काले, जिनके सिरे सफेद। बीच के पर सफेद और नीचे के घुर काले।

मादा के सर और गरदन के ऊपरी हिस्से कत्थई। गरदन का निचला हिस्सा, ठोड़ी और गला सफेद। सीना, पेट और नीचे का सारा भाग सफेद, जिसमें हलकी राखी झलक। शरीर का बगली हिस्सा राखी-भूरा। डैने के परों में सफेद और भूरे रंग की मिलावट। ऊपरी हिस्सा और डैने के बढ़े हुए पर राखी-भूरे। पीठ और दुमगजा काला। दुम भी राखी-भूरी। डैने नर-जैसे। चोंच निलछौंह सलेटी। आँख ललछौंह भूरी। टाँगें निलछौंह सलेटी।

**निवास :** निहनी हमारे देश के लिए मौसमी पक्षी है, जो जाड़ों में अधिक संख्या में ही नहीं आतीं, बल्कि बड़े क्षेत्र में फैल जाती हैं। यह यहाँ शीतकाल के आरम्भ में ही हिमालय के ऊँचे पर्वतों को लाँघ कर पंजाब, गुजरात, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, उड़ीसा तथा मध्य प्रदेश के मध्य तक पहुँच जाती है। पूरब की ओर यह आसाम तक भी चली जाती है, लेकिन थोड़ी ही संख्या में। यहाँ नवम्बर में आकर मार्च तक फिर उत्तर की ओर वापस चली जाती है। हमारे देश से बाहर चीन, जापान, तथा एशिया और यूरोप के उत्तरी भागों में भी इन्हें बड़ी आसानी से देखा जा सकता है।

**विवरण :** निहनी उन मौसमी चिड़ियों की श्रेणी में आती हैं, जो जाड़ों में यहाँ आकर हमारे देश के उत्तरी भागों तक ही रह जाती हैं। यह मध्य भारत से आगे दक्षिण की ओर नहीं जातीं और सारा जाड़ा यहीं बिताकर फिर यहीं से उत्तर की ओर लौट जाती हैं। ये डुबकी लगाने और पानी के भीतर तैरने में पनकौओं के भी कान काटती हैं। इस काम में अपने चौड़े जालदार पैरों के अलावा डैनों का भी सहारा लेती हैं। निहनी प्रायः छोटे-बड़े गिरोहों में रहती है जो जलाशयों में कुछ तो पानी के ऊपर तैरती रहती हैं और कुछ पानी के भीतर मछलियों के शिकार में व्यस्त रहती हैं। यह सब बड़ी चौकन्नी और भड़कने वाली

चिड़िया हैं। ये बहुत ही चंचल होती हैं और अपना अधिक समय पानी में ही बिताती हैं वैसे, ये हवा में भी बहुत खूबी और तेजी से उड़ती हैं।

**घोंसला** : निहनी मौसमी चिड़िया है, जो यहाँ घोंसला नहीं बनातीं, क्योंकि अंडा देने के समय यह हमारे देश से बाहर चली जाती हैं, लेकिन विदेशों में जून, जुलाई के महीने में किसी पुराने पेड़ के खोंथे में ५ से ७ तक अंडे देती हैं। अंडे हलके भूरे रंग के होते हैं और उन पर हलकी-सी चमक भी रहती है।

इन अंडों की नाप लगभग २.१ × १.५ इंच होती है।

## ३९८ आरीचोंच (Goosander : Mergus megranser)

**पर्याय** : कारण्डव।

**पहचान** : आरीचोंच का ऊपरी भाग आगे की ओर काला और पीछे की ओर सिलेटी रहता है। गरदन और शरीर का निचला हिस्सा सफेद मायल गुलाबी होता है, जिससे इसे पहचाना जा सकता है। इसकी चोंच पतली और नोकीली होती है।

**रंग-रूप** : आरीचोंच के नर-मादा एक रंग-रूप के नहीं होते। नर की लम्बाई २६ इंच और उसके सर, चोटी और ऊपरी गरदन का रंग चमकीला काला। गरदन और शरीर का निचला हिस्सा, दोनों बगली हिस्से और निचला दुमढकना सफेद, जिसमें हलकी गुलाबी झलक। दुमगजा भी सफेद, जिस पर हलकी टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें। गुद्दी का अगला भाग सफेद और पिछला भाग काला। पीठ का अगला हिस्सा काला और पिछला हिस्सा सिलेटी। दुम सिलेटी भूरी, जिसके कुछ पर काले। डैने काले। डैने के ऊपर के पर सफेद। बड़ी पखनी सफेद और छोटी पखनी पर काली पट्टी। बड़े पंख भूरे, जिनके किनारे कलछौंह। छोटे पंख के चार पर भूरे और काले, बाकी घुर सफेद।

मादा की गरदन और गला सफेद, जिसमें कुछ ललाई। इसके अलावा सारा सर, चोटी और गरदन कत्थई भूरी। चोटी में सिलेटी झलक। सारा ऊपरी भाग और दुम सिलेटी। डैने के ऊपर के पर और पखनियाँ भी सिलेटी। नीचे का सारा हिस्सा सफेद। सीने और शरीर का बगली हिस्सा सिलेटी। निचला दुम ढकना और डैने के बढ़े हुए पर सफेद। बड़े और छोटे पंख नर-जैसे। चोंच सिंदूरी लाल। आँख भूरापन लिये खूनी।

**निवास** : आरीचोंच यहाँ की बारहमासी चिड़िया है जो हिमालय में कश्मीर से आसाम तक पायी जाती है। जाड़ों में यह पहाड़ी स्थानों से उतर कर दो हजार फुट तक के नीचे स्थानों में भी आ जाती हैं और मैदानी प्रदेशों में फैल जाती हैं। लेकिन गरमियों में इसे दस हजार फुट तक के ऊँचे पहाड़ी जलाशयों में ही देखा जा सकता है। मैदानों में यह पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, आसाम तथा मध्य प्रदेश के कुछ उत्तरी भागों में ही मिलती हैं, लेकिन इसके दक्षिण यह बहुत कम या बिलकुल ही नहीं पायी जातीं। यह मैदानों में नवम्बर तक आ जाती हैं और मार्च के समाप्त होते-होते फिर पहाड़ों पर लौट जाती हैं।

**विवरण** : आरीचोंच को यह सुन्दर नाम इनकी लम्बी और पतली चोंच के कारण मिला है, जिसके ऊपरी और निचले दोनों हिस्सों में आरी-जैसे तेज और महीन दाँते कटे होते हैं। अपनी इस पतली चोंच और चोटी के कारण, यह बहुत आसानी से पहचान ली जाती है। यह भारत की बारहमासी चिड़िया है, जो गरमियों में हिमालय के ऊँचे प्रदेशों में और जाड़े में निचले पहाड़ी जलाशयों में तथा तराई के मैदान की झीलों और नदियों में चली आती है।

इसको ऐसी पहाड़ी नदियाँ ज्यादा पसन्द हैं, जहाँ का पानी साफ और गहरा है। इसका कारण यह है कि इसे पानी में डुबकी लगाकर मछलियों को पकड़ना पड़ता है, जो इसकी मुख्य खुराक है।

पानी में डुबकी लगाने में आरीचोंच को बत्तख ही नहीं, पनकौआ भी नहीं हरा सकता। यह पानी के भीतर भी बहुत देर तक रह लेती हैं और वहाँ मछलियों की तरह बहुत कुशलता से तैर लेती हैं। यह पानी के ऊपर वैसे तो बत्तखों की तरह तैरती हैं लेकिन खतरे का आभास पाने पर यह भी अपने शरीर को, बानवर और पनकौए की तरह पानी के भीतर करके केवल अपनी लम्बी गरदन को बाहर रखती हैं।

इसकी बोली वैसे तो बत्तखों की तरह कर्कश 'क्रोक-क्रोक' से मिलती-जुलती है, लेकिन इनकी मादा और बच्चे एक प्रकार की धीमी सीटी-जैसी आवाज करते हैं। इसकी मादा को जिसने भी अपने छोटे बच्चों के साथ किसी निर्जन पहाड़ी जलाशय में देखा है, वह कभी ऐसे सुन्दर दृश्य को नहीं भुला सकता। मादा कोई खतरा निकट न देखकर बड़े सुख से अपनी गरदन को पीछे की ओर खींच कर और अपने सर को सीने पर रखकर, धूप में ऊँघती रहती है और उसके चारों ओर उसके बच्चे पानी में खेलते रहते हैं। ये बच्चे बड़े ही खिलाड़ी होते हैं, जो कुछ देर सीधे तो कुछ देर उलटे पानी में तैरते हैं। इनका मुख्य भोजन मांस-मछलियाँ हैं।

**घोंसला** : आरीचोंच बारहमासी पक्षी है, जो जाड़ों में यहीं स्थान-परिवर्तन कर लेती हैं और यहीं मई-जून में अंडे देती हैं। यह प्रायः पेड़ के खोथें या पहाड़ों और भीटे के दराजों में अपने अंडे देती हैं, जो संख्या में ८ से १२ तक होते हैं। विदेश में लोग इनके निवास का पता लगा कर पेड़ों में लकड़ी के बक्से भी टाँग देते हैं, जिनमें मादा अपने अंडे देकर उन्हें सेती है। इनके अंडों का रंग संदली या पत्थरी रहता है।

अंडे नाप में लगभग २.५ × १.४ इंच के होते हैं।

## ३९९ पनतिरी (Great Crested Grebe : Podiceps cristatus)

**पर्याय** : वृहत् काल बाल वजुल, शिवहंस ।

**पहचान** : पनतिरी का ऊपरी भाग कत्थई और नीचे का सफेद रहता है। पूरी गरदन सफेद रहती है, जिससे इसको पहचानना कठिन नहीं होता ।

**रंग-रूप** : पनतिरी के नर-मादा एक-जैसे होते हैं । शरीर का ऊपरी भाग कत्थई और नीचे का सफेद। पूरी गरदन सफेद, जिसमें ऊपर का भाग गाढ़ा कत्थई और माथे से लेकर गुद्दी तक का भाग कलछौंह कत्थई। नर के माथे पर छोटी-सी कत्थई रंग की चोटी। दुमगला और दुम सफेद। पीठ पर के कुछ बड़े हुए पर कलछौंह । छोटे और बड़े पंख काले और डैने के अगले भाग पर एक चौड़ा-सा सफेद चिता जो दूर ही से स्पष्ट दिखाई पड़ता है। चोंच पतली और नोकीली तथा काली। टाँगें गंदी हरी।

**निवास** : पनतिरी को बड़ी पनडुब्बी भी कहा जाता है। यह मौसमी चिड़िया है, जो अन्य मौसमी बत्तखों की तरह जाड़ों में बाहर से आकर हमारे देश के उत्तरी भागों में फैल जाती है। यह दक्षिण भारत की ओर बहुत कम, या बिलकुल ही नहीं जाती, लेकिन उत्तर की ओर इसे पंजाब से असम तक काफी संख्या में देखा जा सकता है।

**विवरण** : पनतिरी या बड़ी पनडुब्बी वैसे तो यूरोप और एशिया के बहुत-से भागों में पायी जाती है, लेकिन भारत में इसे केवल जाड़ों में ही देखा जा सकता है। अन्य मौसमी बत्तखों की तरह, यह पूरा जाड़ा यहाँ बिताकर फिर उत्तर-पश्चिम की ओर लौट जाती है। जाड़ों में यह उत्तर भारत की प्रायः सभी बड़ी और खुली झीलों में पायी जाती है और इसको अन्य बत्तखों के गिरोहों के साथ मिलकर चरते और आराम करते देखा जा सकता है।

इसका मुख्य भोजन पानी की घास, काई आदि वनस्पति तथा कीड़े-मकोड़े हैं, जिनको यह पानी में डुबकी लगा कर प्राप्त करती है। यह तैरने और डुबकी लगाने में तो उस्ताद होती ही है, साथ ही उड़ने में भी किसी से पीछे नहीं रहती। पानी से ऊपर उठते समय इसे टीकरी की तरह कुछ दूर तक पानी में दौड़ना पड़ता है, लेकिन एक बार हवा में उठ जाने पर इसकी उड़ान बहुत तेज हो जाती है। उड़ते समय बगुले की तरह, इसकी लम्बी गरदन आगे और टाँगें पीछे की ओर बढ़ी रहती हैं। उस समय इसके डैने काले और सफेद तथा शरीर काला दिखाई पड़ता है। पानी में तैरते समय इसके शरीर का अधिक भाग पानी के भीतर रहता है और इसकी लम्बी गरदन सीधी खड़ी रहती है। इसके पैर का पिछला अँगूठा तो लालसर आदि पनडुब्बी बत्तखों-जैसा ही होता है, लेकिन अगले तीनों अँगूठे पूरे जालदार न होकर टीकरी की तरह पत्ती-जैसे चौड़े और फैले तथा अलग-अलग होते हैं। इसका मुख्य भोजन घास-पात और पानी के कीड़े-मकोड़े हैं, जिनकी तलाश में यह रह-रह कर पानी में डुबकी लगाती रहती है।

**घोंसला** : पनतिरी वैसे तो मौसमी चिड़िया है, लेकिन जाड़ा समाप्त होने पर यह सब की सब यहाँ से वापस नहीं चली जातीं और इनकी काफी बड़ी संख्या यहाँ के उत्तरी जलाशयों में रहकर यहीं अंडे देती है। जोड़ा बाँधने के समय नर-मादा पानी में आमने-सामने आकर एक दूसरे पर पानी उछालते हैं और गरदन को झटका दे-देकर बड़ा सुन्दर प्रदर्शन करते हैं। उस समय नर के सर पर एक काली चोटी निकल आती है और बगल का हिस्सा चटक-कत्थई हो जाता है, जिससे वह और भी सुन्दर और भड़कीला लगने लगता है।

इसके घोंसला बनाने का समय मई से सितम्बर तक है, जब यह पानी के किनारे या पानी में किसी नरकुल के बीच अपना घास-फूस का घोंसला बना कर ४-५ सफेद अंडे देती है। ये अंडे कुछ दिनों बाद भूरे हो जाते हैं।

इसके अंडे लगभग २.१ × १.५ इंच के रहते हैं।

## ४०० डुबडुबी (Little Grebe : Podiceps Ruficollis)

**पर्याय** : लघु वंजुल, पनडुब, पनतिरी, डुबारी, छुराका, तुबीनो।

**पहचान** : डुबडुबी को छोटी पनडुब्बी भी कहा जाता है। छोटे कद और पानी में जल्दी-जल्दी डुबकी लगाने के कारण ही इसे डुबडुबी-जैसा सुन्दर नाम मिला है। यह छोटी-सी कलछौंह भूरी और सफेद रंग की चिड़िया है जो पानी में ही दिखाई पड़ती है।

**रंग-रूप** : डुबडुबी पानी में रहने वाली छोटी-सी चिड़िया है, जिसके नर-मादा एक ही रंग-रूप के होते हैं। गरमियों में इनका माथा, गुद्दी और गरदन का पिछला भाग कलछौंह भूरा हो जाता है। गाल और ठोड़ी कलछौंह और सर तथा गरदन का बगली हिस्सा कत्थई। गला और गरदन का निचला हिस्सा भी कत्थई। पीठ और बड़े पंख हलके-भूरे और उनका निचला हिस्सा सफेद। छोटे पंख एकदम काले और सीना तथा दोनों बगल के हिस्से गाढ़े भूरे। पेट एकदम सफेद और निचला दुमढकना भूरा जिनमें कुछ सफेदी मायल झलक।

जाड़ों में माथा और गरदन का ऊपरी हिस्सा भूरा हो जाता है। ठोड़ी एकदम सफेद। उस समय गरदन का कत्थईपन भी हलका हो

जाता है और नीचे के सफेद भाग में हलकी ललाई आ जाती है। डुबडुबी की चोंच चपटी, पतली और नोकीली होती है और इनके पैर अंगूठे बत्तखों की तरह पूरे जालदार नहीं होते बल्कि दोनों ओर थोड़ी-सी खाल बढ़ी होती है, जो देखने में पत्ती-सी जान पड़ती है। इससे इनको पानी में तैरने में बहुत आसानी होती है। आँख कल-छौंह भूरी। चोंच काली, जिसका सिरा सफेद और जड़ हरछौंह पीली। टाँगें कलछौंह हरी।

**निवास :** डुबडुबी बारहमासी चिड़िया है, जो देश के प्रायः सभी छोटे-बड़े ताल-तलैयों में पायी जाती है। इसे गाँव की पोखरी तक में देखा जा सकता है, जहाँ यह अपना सर पानी में डुबाकर और दुम ऊपर की ओर करके पानी के कीड़े-मकोड़े पकड़ा करती है। यों तो यह हमारे देश के एक छोर से दूसरे छोर तक पायी जाती है, लेकिन इसे ५,००० फुट से ज्यादा ऊँचाई पर देख पाना सम्भव नहीं होता। नीलगिरि पर्वत पर जरूर यह ४,००० फुट तक पायी जाती है। हमारे देश से बाहर यह यूरोप, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड तथा एशिया के अन्य देशों में भी पायी जाती है।

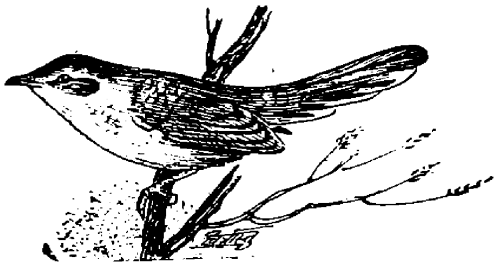
**विवरण :** डुबडुबी पानी में रहने वाली बत्तखों-जैसी चिड़ियों में सबसे छोटी चिड़िया है, जो बारहों महीने हमारे देश में ही रहती है। यह अपना सारा समय पानी में ही बिताती है और इसे सूखे में शायद ही किसी ने देखा हो। इसका पिछला हिस्सा बूँचा-बूँचा-सा होता है और इसके पर बहुत मुलायम।

डुबडुबी ने तैरना करीब-करीब छोड़ दिया है और यह पानी के अन्दर-बाहर तिरती-डूबती सारा समय बिता देती है। यह पानी के भीतर मछलियों की तरह तैर भी लेती है और जरा-सा खतरा देखते ही पानी में डुबकी लगा जाती है। पानी की सतह पर तैरते समय इसके शरीर का ज्यादा हिस्सा पानी के भीतर घुसा रहता है और जब कभी यह उड़ने के लिए मजबूर हो ही जाती है, तो बहुत भद्दे तरीके से ऊपर उठती है, लेकिन हवा में उठ जाने पर यह काफी तेज उड़ लेती है।

डुबडुबी का मुख्य भोजन मछलियाँ और पानी के कीड़े-मकोड़े और उनके अंडे हैं, लेकिन ये घास-पात और काई भी बड़े स्वाद से खाती हैं। दाना खाने वाली दूसरी चिड़ियों की तरह, ये छोटे-छोटे कंकड़ भी खा लेती हैं, जो इनके पेट के दानों को पीसने में सहायक होते हैं।

**घोंसला :** डुबडुबी मई से सितम्बर के बीच पानी की गोद और नरकुल आदि के बीच में अपना घास-फूस का घोंसला बनाती है, जो पानी में ही तैरता रहता है। मादा ३ से ७ तक अंडे देती है, जो पहले तो सफेद रहते हैं, लेकिन कुछ दिनों बाद उनका रंग गंदा-भूरा हो जाता है। मादा डुबडुबी को जब कभी अपने अंडों को छोड़कर कहीं हटना ही पड़ता है, तो वह उन्हें घास-फूस से ढँक देती है। अंडों से जब बच्चे निकलते हैं तो वे धारीदार होते हैं और बाहर निकलते ही बड़ी कुशलता से पानी में चूँ-चूँ करते हुए तैरने लगते हैं।

अंडे लगभग १·४ × १ इंच के होते हैं।



भारतीय पत्नी

# अनुक्रमणिका

हिन्दी समिति

# भारतीय पक्षी

## [ अनुक्रमणिका ]


| | पृष्ठ |
|---|---|
| **अ** | |
| अगिन | १०५ |
| अगिया | १०६ |
| अबलख | २७० |
| अबाबील | ९५ |
| अबाबील-ललपिठी | ९७ |
| अबाली | ९३ |
| अबाली खैरी | ९४ |
| अरगुल | १४९ |
| असकोल | १८४ |
| **आ** | |
| आरी-चोंच | २७२ |
| **उ** | |
| उकाब | १५० |
| उल्लू-करपैंची | १४१ |
| उसर बगेरी | १०८ |
| **ओ** | |
| ओहारी | २३३ |
| **क** | |
| कंडू | ४१ |
| कजरी | २१५ |
| कठगोल | ६० |
| कठफोर-चीतल | ११५ |
| कठफोर-छोटा | ११६ |
| कठफोर-ललपिठा | ११६ |
| कठफोर-सोनपिठा | ११७ |
| कठफोरिया-निलछत्ती | ११ |
| कठफोरिया-ललपेटी | १० |
| कठमोर | १७९ |
| कबूतर | १६६ |
| करकरा | २०८ |
| करछिया | २६९ |
| करलू | २२२ |
| कलचिरी | ३३ |
| करैल | १४५ |
| कस्तूरा | ४२ |
| कस्तूरी | ४३ |
| कस्तूरी ललसिरी | ४३ |
| कसया | ५९ |
| कसया-कलसिरी | ५९ |
| काफल पाक्को | १३३ |
| कालजीत | ४५ |
| कालजीत-मलावार | ४६ |
| कालिज | १७६ |
| किलकिला | १२५ |
| किलहँटा | ७९ |
| कुतर | १५७ |
| कुदरू | ११९ |
| कुमरी | १७४ |
| कुररी | २३५ |
| कुररी-कलपेटी | २३६ |
| कुररी-छोटी | २३७ |
| कुररी-बड़ी | २३५ |
| कुलंग | २०७ |
| कृष्ण पट्टी | ४४ |
| केशराज | ६२ |
| कैमा | २०५ |
| कोकला | १६५ |
| कोकलास | १७७ |
| कोयल | १३६ |
| कोरा | २०६ |
| कौआ-काला | २ |
| कौआ-डोम | १ |
| कौआ-पाती | २ |
| कौआ-पहाड़ी | ३ |
| कौआरी | २४१ |
| कौड़िल्ला | १२३ |
| कौड़िल्ली | १२४ |
| **ख** | |
| खंजन | ९८ |
| खरबानक | २१४ |
| खरमोर | २१० |
| खीहा-दक्षिणी | १७ |
| खीहा-ललमुखी | १८ |
| खूसट-चितला | १४५ |
| खेमकरी | १५६ |
| खैरमुतिया | १६३ |
| खैर | २० |
| खैरैया | ९९ |
| **ग** | |
| गंग टिटी | २१८ |
| गंगरा-काली | ८ |
| गंगरा-पीली | ९ |
| गंगरा-राम | ७ |
| गंगरा-ललसिरी | ९ |
| गंगरा-हरी | ७ |
| गंदम | ९१ |
| गरदन ऐंठा | ११७ |
| गरुड़ | १५१ |
| गलगल | ८० |
| गलार | ७८ |
| गिद्ध-गोबर | १४९ |
| गिद्ध-चमर | १४८ |
| गिद्ध-पहाड़ी | १४७ |
| गिद्ध-राज | १४६ |
| गिरहँ | २५९ |
| गुदेरा | २२३ |
| गुलाब चश्म | १९ |
| गेहवाला | २२७ |
| गैबर | २४७ |
| गोइँयार | २२३ |
| गोदन | २०५ |
| गौगाई | १७ |
| गौर | २२९ |
| गौरैया | ८८ |
| गौरैया-पहाड़ी | ८८ |
| **घ** | |
| घुघ्घू | १४२ |
| घोमरा | २३४ |
| घोंघिल | २४६ |

| | पृष्ठ |
|---|---|
| **च** | |
| चंडूल | १०७ |
| चकोर | १९१ |
| चकोर-राम | १९३ |
| चकोत्री | १८३ |
| चमरघेंच | २४४ |
| चमरघेंच-छोटा | २४५ |
| चरखी | १६ |
| चरखी-कलसिरी | २० |
| चरखी-सतबहिनी | १४ |
| चरखी-सितसिरी | १५ |
| चरखी-सिलेटी | २१ |
| चरत | २११ |
| चहा | २३० |
| चहा-छोटा | २३२ |
| चहा-बन | २३२ |
| चही | ८० |
| चातक | १३५ |
| चिचरी | १०१ |
| चिरटा-छोटा | ९३ |
| चिरटा-पथर | ८९ |
| चिरटा-पहाड़ी | ९० |
| चिरटा-चोटीदार पथर | ९२ |
| चिरटा-ललसिरा | ९१ |
| चिल्लू | १०२ |
| चिलचिल-चितली | १२ |
| चिलचिल-पहाड़ी | १४ |
| चिलचिल-ललसिरी | १२ |
| चिलचिल-सतरंगी | १२ |
| चिलचिल-सितकंठी | ११ |
| चिलम | १८० |
| चील | १५७ |
| चील-काली | १५९ |
| चील-दोगरा | १५३ |
| चुगद-जंगली | १४६ |
| चिड़ुक्का | ८३ |
| चुपका | २१५ |
| चुबिया | ३१ |
| चुरचुरा | १९ |
| चैड़ | १८२ |
| चैता | २६४ |
| चैती | २६३ |

| | पृष्ठ |
|---|---|
| **छ** | |
| छतरदुमा | ५२ |
| छपका | १३१ |
| **ज** | |
| जक्की | ५० |
| जरदी | २१८ |
| जलबोदर-छोटी | २०३ |
| जलमखानी | २१६ |
| जलमोर | २१७ |
| जलसिंह | २३८ |
| जाग | ६ |
| जाँघिल | २४६ |
| जीरा | २१९ |
| जुगजुगी | १११ |
| जोवार | १७८ |
| **ट** | |
| टकटोला | ११४ |
| टिकरी | २०७ |
| टिटहिरी | २१७ |
| टिमटिमा | २२६ |
| टिलुआ | २२६ |
| टीसा | १५४ |
| टुटुआरी | २२४ |
| टेसुआरी | ७७ |
| **ठ** | |
| ठठेरा | १२० |
| **ड** | |
| डाउक | २०१ |
| डिगडाल | ४ |
| डुबडुबी | २७३ |
| डुंडुल | १४४ |
| **ढ** | |
| ढोलना | ३५ |
| **त** | |
| तलचट्टा | १२९ |
| तिदारी | २६७ |
| तिलोरा | ७७ |
| तीतर | १९५ |
| तीतर-काला | १९३ |
| तीतर-केहा | १९८ |

| | पृष्ठ |
|---|---|
| तीतर-चीनी | १९७ |
| तीतर-जंगूरिया | १९६ |
| तीतर-तेल्लिया | १९४ |
| तीतर-पिउरा | १९६ |
| तीतर-बन | १९९ |
| तीतर-सन | १९८ |
| तीतर-सीसी | १९२ |
| तुरकान | ११४ |
| तुरमुती | १६२ |
| तुसल | १६९ |
| तूती-गुलाबी | ८६ |
| तूती-हरी | ८६ |
| तोता | १३९ |
| तोता-मदन गोर | १४० |
| **थ** | |
| थिरथिरा | ३७ |
| थिरथिरा-सितसिरा | ३७ |
| थिरथिरा-सिलेटी | ३८ |
| **द** | |
| दँहगल | ४० |
| दाबिल | २४२ |
| दामा | ४० |
| दूधराज | ५१ |
| **ध** | |
| धनेश | १२६ |
| **न** | |
| नकटा | २५६ |
| नकलोल | ८५ |
| नक्शी | ८५ |
| नानचुरा | २२ |
| निलकटकटिया | ४८ |
| निलकंठी | ३९ |
| निहनी | २७१ |
| नीलकंठ | १२१ |
| नीलमी | ७४ |
| नीलसर | २६५ |
| नुकरी | २१५ |
| **प** | |
| पंडु | ४५ |
| पचानक | ५३ |

| | पृष्ठ |
|---|---|
| पटरस | १५४ |
| पतरिंग | १२२ |
| पतेना | १२२ |
| पतेरा | २६३ |
| पनकुकरी | २०३ |
| पनकुकरी-खैरी | २०२ |
| पनकुकरी-छोटी | २०४ |
| पनकौआ | २३९ |
| पनकौआ-छोटा | २३८ |
| पनचिरी | २३७ |
| पनतिरी | २७३ |
| पनलवा | २८८ |
| पनेवा | २२४ |
| पपीहा | १३३ |
| परबत्ता | १३८ |
| परवतिया | १८३ |
| पवई | ७८ |
| पिद्दा | ३२ |
| पिद्दा-काला | ३२ |
| पिद्दा-घुमैला | ३४ |
| पिदारा | ३४ |
| पिलकिया | १०० |
| पीलक | ७५ |
| पुलो | ३६ |
| पोकरास | १७८ |
| पोदेना | ६४ |
| पोदेना-छोटा | ६४ |
| **फ** | |
| फ़ाखता-इंटकोहरी | १६९ |
| फ़ाखता-काल्हक | १६७ |
| फ़ाखता-चितरोखा | १६७ |
| फ़ाखता-टुटरूँ | १६८ |
| फ़ाखता-घवर | १६८ |
| फुदकी-अबलखी | ६९ |
| फुदकी-चुटचुटिया | ६८ |
| फुदकी-जंगली | ७२ |
| फुदकी-टिकटिकी | ६७ |
| फुदकी- टुनटुनी | ६६ |
| फुदकी-डोरिया | ७१ |
| फुदकी-दरजिन | ६५ |
| फुदकी-धुरिया | ७३ |
| फुदकी-धानी | ६९ |
| फुदकी-पहाड़ी | ७० |
| फुदकी-पिटपिटी | ६६ |
| फुदकी-मछमरनी | ७० |
| फुदकी-सिलेटी | ७२ |
| फुदकी-हरी | ६८ |
| फुपू | १३२ |
| फुलचुही | ११२ |
| फुलसुँघी | ११२ |
| **ब** | |
| बगुला-आँजन | २४७ |
| बगुला-करछिया | २४९ |
| बगुला-गाय | २५० |
| बगुला-नरी | २४८ |
| बगुला-मलंग | २४९ |
| बगुला-वाक | २५१ |
| बगुली-खैरी | २५२ |
| बगुली-चमर | २५१ |
| बगेरी | १०४ |
| बटई-ककुनी | १८८ |
| बटई-गिरजा | १८६ |
| बटई-गोपाल | १८९ |
| बटई-गुड़रू | १८९ |
| बटई-रौली | १८७ |
| बटई-सरसैया | १८८ |
| बटान | २२० |
| बटेर-घाघस | १८५ |
| बटेर-चिनिंग | १८६ |
| बटेर-पहाड़ी | १९० |
| बड़सिरी | २१४ |
| बत-बड़ी | २५५ |
| बतासी | १२२ |
| बतासी-चोटीदार | १३० |
| बनकोकिल | १३४ |
| बनचूर | १७० |
| बन-बकरा | २५ |
| बनसर्रा | ५ |
| बब्बू | १४३ |
| बभंता-बड़ा | ११९ |
| बया | ८१ |
| बया-तेलिया | ८२ |
| बहरी | १६२ |
| बाज | १५८ |
| बावुना | १०९ |
| बानवर | २३९ |
| बुज्जा-काला | २४१ |
| बुज्जा-सफेद | २४० |
| बुड़ार | २६८ |
| बुलबुल-कांगड़ा | २७ |
| बुलबुल-गुलदुम | २६ |
| बुलबुल-पीली | २८ |
| बुलबुल-मछरिया | २९ |
| बुलबुल-सिपाही | २७ |
| बेर | २५८ |
| बैंगनकूटी | ९६ |
| **भ** | |
| भटतीतर-कुहार | १७२ |
| भटतीतर-गुटू | १७२ |
| भटन | १७१ |
| भरक | २३१ |
| भरत | १०३ |
| भरदूल | १०७ |
| भायहो | ११८ |
| भुजंगा | ६१ |
| भृंगराज | ६३ |
| **म** | |
| मछमनी-खैरी | ४९ |
| मछमरनी-नीली | ४८ |
| मछमरनी-पिलपेटी | ४९ |
| मछरेटा | ५१ |
| मछारंग | १५५ |
| महोख | १३७ |
| ममोला | ९८ |
| मालकोहा | १३६ |
| मालती | १०६ |
| मुआ | १४१ |
| मुटरी | ५ |
| मुनियाँ-तेलिया | ८३ |
| मुनियाँ-लाल | ८४ |
| मुरगी-जंगली | १७५ |
| मुरगी-जल | २०१ |
| मुसचिरी | ३०,१०० |
| मुसमार | १६० |
| मैना-अबलखा | ८१ |
| मैना-पहाड़ी | ७६ |
| मैल | २६२ |
| मोनाल | १८० |
| मोर | १७३ |

| | पृष्ठ |
|---|---|
| **र** | |
| राजलाल | ५८ |
| राजी | ८७ |
| रुज्नी | २२८ |
| रूगेल | १०२ |
| रेंगनी-पहाड़ी | २९ |
| रेतल | १०५ |
| रेरुआ | १४३ |
| **ल** | |
| लगलग | २४२ |
| लगर | १६१ |
| लमगोड़ | २२० |
| लवा | २०० |
| लवा-छोटा | १९९ |
| लहटोरा-काजला | ५५ |
| लहटोरा-खरटा | ५६ |
| लहटोरा-दूधिया | ५३ |
| लहटोरा-माटिया | ५४ |
| लहटोरिया | ५५ |
| लालसर | २६९ |
| लीशरा | ९५ |
| लुंगी | १८२ |
| लोहा सारंग | २४३ |

| | पृष्ठ |
|---|---|
| **व** | |
| वन-कोकिल | १३४ |
| वाक | २५१ |
| **श** | |
| शकरखोरा | ११० |
| शकरखोरा-पिलपिठा | १०९ |
| श्यामचिरी | ४७ |
| श्यामा | ४१ |
| शाह्-चकवा | २६० |
| शाह्-बाज | १५२ |
| शिकरा | १६० |
| **स** | |
| सतरंगा | ११३ |
| सवन | २५४ |
| सहेली | ५७ |
| सहेली-छोटी | ५७ |
| सामुक मंगा | २२१ |
| सामुद्रिक | २३३ |
| सारस | २०९ |
| सावां-देसी | ३६ |
| साहिम | ६१ |
| सिफिया | ४७ |
| सिबिया | २२ |
| सिमतीतर | २२९ |

| | पृष्ठ |
|---|---|
| सिरकीर | १३७ |
| सिलही-छोटी | २५७ |
| सिलही-बड़ी | २५८ |
| सीखपर | २६६ |
| सुग्गी | १४० |
| सुरखाब | २६० |
| सुरमई | २४४ |
| सूजी | २२१ |
| सूरमा | २२७ |
| सोहन चिड़िया | २१२ |
| सौबिगा | २३ |
| **ह** | |
| हंज | २५२ |
| हंस | २५३ |
| हंसदेव (देवहंस) | २५४ |
| हरदुआ | ७५ |
| हरेवा | २४ |
| हरेवा-नेपाली | २४ |
| हारिल | १६४ |
| हारिल-राज | १६६ |
| हुदहुद | १२७ |
| हू-हू | १४२ |
| होबार | २१३ |
| होमराय | १२५ |